

प्रबन्ध-सम्पादक :

श्रीचन्द्र रामपुरिया, बी० कॉम०, बी० एल०

संकलक :

आदर्श साहित्य संघ

चुरू ( राजस्थान )

आर्थिक-सहायक :

श्री रामलाल हंसराज गोलछा

विराटनगर ( नेपाल )

दिसम्बर, १९६७

प्रति-संख्या

१०००

पृष्ठांक :

६३२

मुद्रक :

न्यू रोशन प्रिण्टिंग वर्क्स

३१/१, लोअर चित्तपुर रोड

कलकत्ता-१

मूल्य : रु० १३)

**A Y A R O**  
Taha  
**A Y A R - C U L A**

[ THE ACARANGA AND THE ACARANGA-CULA ]

Vacana Pramukha  
**ACARYA TULASI**

*Edited with*  
Original text, Variant readings, Alphabetical index of words,  
Appendices, etc.

*Editor*  
**Muni Nathmal**  
( Nikaya Saciva )

*Publisher*  
**Jain Svetambar Terapanthi Mahasabha**  
(Agam-Sahitya Prakashan Samiti)  
3, Portuguese Church Street  
**CALCUTTA-1 (INDIA)**

**First Edition 1967 ]**

**[ Price : Rs. 13**

*Managing Editor :*

**Shreechand Rampuria, B. Com , B. L.**

*Manuscript Compiled by*

**Adarsha Sahitya Sangh**

**Churu (Rajasthan)**

*Financial Assistance :*

**Ramlal Hansraj Golchha**

**Biratnagar (Nepal)**

*Copies :*

**1000**

*Pages .*

**632**

*Printer :*

**New Roshan Printing Works**

**31/1, Lower chitpur Road.**

**Calcutta-1**

**All rights reserved**

## समर्पण

पवाहिया जेण सुयस्स धारा,  
गणे समत्थे मम माणसे वि ।  
जो हेउभूओ स्स पवायणस्स,  
कालुस्स तस्स प्पणिहाण पुव्वं ॥

जिसने श्रुत की धार बहाई,  
सकल संघ में मेरे मन मे ।  
हेतुभूत श्रुत-सम्पादन मे,  
कालुगणी को विमल भाव से ॥

विनयावनतः  
आचार्य तुलसी





## अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है, उस माली का जो अपने हाथों से उस और सिंचित द्रुम-निकुञ्ज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नों से प्राणवान् बना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन-आगमों का शोधपूर्ण सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमें लगे। संकल्प फलवान् बना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य में संलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोष में मैं उन सबको समभागी बनाना चाहता हूँ, जो इस प्रवृत्ति में सविभागी रहे हैं। संक्षेप में वह संविभाग इस प्रकार है :—

सम्पादक

: मुनि नथमल

( निकाय-सचिव )

सहयोगी : मुनि दुलहराज

पाठ-सशोधन

" : मुनि सुदर्शन

" : मुनि मधुकर

" : मुनि हीरालाल

शब्द-सूची

" : मुनि श्रीचन्द्र

" : मुनि हनुमानमल (सरदारशहर)

सविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिन ने इस गुस्तर प्रवृत्ति में उन्मुक्त भाव से अपना सविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूँ और कामना करता हूँ कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य बने।

—आचार्य तुलसी



## ग्रन्थानुक्रम

समर्पण

अन्तस्तोष

प्रकाशकीय

सम्पादकीय

भूमिका

विषयानुक्रम

आयारो : विसय-सूची

आयार-चूला : विसय-सूची

संकेत-निर्देशिका

आयारो

पृ० १-१०८

आयार-चूला

पृ० १०९-३५८

परिशिष्ट

१ आयारो : संक्षिप्त पाठ, पूर्ण स्थल और आधार-स्थल निर्देश

२. आयार-चूला : संक्षिप्त पाठ, पूर्ण स्थल और आधार-स्थल निर्देश

३. वाचान्तर तथा आलोच्य पाठ

शुद्धिपत्रम्

१-आयारो मूल-पाठ

२-आयार-चूला मूल-पाठ

३-आयारो पाठान्तर

४-आयार-चूला पाठान्तर

५-परिशिष्ट-२

आयारो शब्द-सूची

आयार-चूला शब्द-सूची

शुद्धि और आपूरक-पत्र

१-आयारो शब्द-सूची

२-आयार-चूला शब्द-सूची



## प्रकाशकीय

आगम-सुत्त ग्रन्थमाला का यह द्वितीय ग्रन्थ पाठको के सम्मुख रखते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है। इस ग्रन्थमाला का प्रथम ग्रन्थ 'दसवेआलियं तह उत्तरज्झयणाणि' प्रकाशित हो चुका है, जिसमें दशवैकालिक और उत्तराध्ययन—ये दोनों आगम एक साथ हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रथम अङ्ग आचारांग के दो श्रुतस्कांध क्रमशः 'आयारो' और 'आयार-चूला' के नाम से प्रकाशित हो रहे हैं।

पाठ सशोधन और निर्धारण में जो परिश्रम किया गया है, वह ग्रन्थ के प्रत्येक पृष्ठ से सहज ही समझा जा सकता है। 'जाव' और अन्य पूर्त्य स्थलों की बड़ी खोज के साथ पूर्ति कर दी गई है। इस तरह मूल-पाठ पाठको के लिए सरल, सुवाच्य और बोधगम्य बन गया है। 'जाव' और संक्षिप्त पाठ-पूर्ति का कार्य अद्यावधि प्रकाशित संस्करणों में उपेक्षित रहा और वह अति कठिन कार्य इस प्रकाशन में अत्यन्त अन्वीक्षा और अनुसंधान पूर्वक सम्पन्न हुआ है।

पाद-टिप्पणियों में पाठान्तरो का बोध करा दिया गया है। अन्त में तीन परिशिष्ट और 'आयारो' तथा 'आयार-चूला' दोनों की सम्पूर्ण शब्द-सूची दे दी गई है, जो अन्वेषक विद्वानों के लिए अनेक दृष्टियों से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। शब्द-सूची आज तक के प्रकाशित किसी संस्करण में नहीं है और इसी प्रकाशन में सर्व प्रथम उपलब्ध होती है।

आरम्भ में सम्पादकीय के बाद आचार्य श्री तुलसी द्वारा लिखित पाण्डित्यपूर्ण भूमिका है, जो अनेक विषयों पर नया प्रकाश डालती है। भूमिका की विषय-सूची से उसमें चर्चित विषय पहलुओं का आभास पाठको को हो सकेगा।

इस तरह दो श्रुतस्कन्ध व्याप्त सारा आचारांग आधुनिकतम प्रणाली से सम्पादित हो कर अभिनव रूप में सामने आया है।

आगम-सुत्त ग्रन्थमाला का मूल उद्देश्य है विद्वानों के सम्मुख जैन-आगमों के सुन्दर और प्रामाणिक संस्करण उपस्थित करना, जिससे भावी शोध-खोज का मार्ग प्रशस्त हो। इसी दृष्टि से उक्त ग्रन्थमाला का यह द्वितीय ग्रन्थ अवश्य ही विद्वानों का आदर प्राप्त करेगा।

इस ग्रन्थ के सम्पादन में जिन-जिन विद्वानों एवं प्रकाशन संस्थाओं के ग्रन्थ तथा प्रकाशनों का उपयोग हुआ है, उन सबके प्रति हम हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन करते हैं ।

## पाण्डुलिपि की प्रतिलिपि

आचार्य श्री के तत्त्वावधान में सन्तो द्वारा प्रस्तुत पाण्डुलिपि को नियमानुसार अवधार कर उसकी प्रतिलिपि करने का कार्य आदर्श साहित्य संघ, चुरू द्वारा सम्पन्न हुआ है, जिसके लिए हम संघ के संचालको के प्रति कृतज्ञ हैं ।

## अर्थ-व्यवस्था

इस ग्रन्थ के प्रकाशन का व्यय विराटनगर ( नेपाल ) निवासी श्री रामलालजी हंसराजजी गोलछा द्वारा श्री हंसराजजी हुलासचन्दजी गोलछा की स्वर्गीया माता श्री बापीदेवी ( धर्म-पत्नी श्री रामलालजी गोलछा ) की स्मृति में प्रदत्त निधि से हुआ है । एतदर्थ इस अनुकरणीय अनुदान के लिए गोलछा-परिवार हार्दिक धन्यवाद का पात्र है ।

आगम-साहित्य प्रकाशन समिति की ओर से उक्त निधि से होने वाले प्रकाशन कार्य की देख-रेख के लिए निम्न सज्जनों की एक उपसमिति गठित की गई है :

- (१) श्रीमान् हुलासचन्दजी गोलछा
- (२) " मोहनलालजी बाँठिया
- (३) " श्रीचन्दजी रामपुरिया
- (४) " गोपीचन्दजी चौपड़ा
- (५) " केवलचन्दजी नाहटा

सर्व श्री श्रीचन्द रामपुरिया एवं केवलचन्दजी नाहटा उक्त उपसमिति के संयोजक चुने गये हैं ।

## आगम-साहित्य प्रकाशन-कार्य

महासभा के अन्तर्गत गठित आगम-साहित्य प्रकाशन समिति का प्रकाशन-कार्य ज्यों-ज्यों आगे बढ़ रहा है, त्यों-त्यों हृदय में आनन्द का पारावार नहीं । मैं तो अपने जीवन की एक साथ ही पूरी होते देख रहा हूँ । इस अवसर पर मैं अपने अनन्य बन्धु और साथी सर्व श्री गोविन्दरामजी सरावगी, मोहनलालजी बाँठिया एवं खेमचन्दजी सेठिया को उनकी भुक्त सेवाओं के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूँ ।

## आभार

आचार्य श्री की सुदीर्घ-दृष्टि अत्यन्त भेदिनी है। जहाँ एक ओर जन-मानस की आध्यात्मिक और नैतिक चेतना की जागृति के व्यापक नैतिक आन्दोलनों में उनके अमूल्य जीवन-क्षण लग रहे हैं, वहाँ दूसरी ओर आगम-साहित्य-गत जैन-संस्कृति के मूल-सन्देश को जन-व्यापी बनाने का उनका उपक्रम भी अनन्य और स्तुत्य है। जैन-आगमों को अभिलषित रूप में भारतीय एवं विदेशी विद्वानों के सम्मुख ला देने की आकांक्षा में वाचना प्रमुख के रूप में जो अथक परिश्रम आचार्य श्री तुलसी ने अपने कन्धों पर लिया है उसके लिए जैनी ही नहीं अपितु सारी भारतीय जनता उनके प्रति कृतज्ञ रहेगी।

निकाय सचिव मुनि श्री नयमलजी का सम्पादन-कार्य एवं तैरापन्थ संघ के अन्य विद्वान् मुनिवृन्द के सक्रिय-सहयोग भी वस्तुतः अभिनन्दनीय है।

हम आचार्य श्री और उनके परिवार के प्रति इस जनहितकारी पवित्र प्रवृत्ति के लिए नतमस्तक हैं।

जैन श्वेताम्बर तैरापन्थी महासभा  
३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कलकत्ता-१  
१ दिसम्बर, १९६७

श्रीचन्द्र रानपुरिया  
संयोजक  
आगम-साहित्य प्रकाशन समिति





## सम्पादकीय

### नाम-परिचय

प्रस्तुत ग्रन्थ आगम-ग्रन्थ-माला का द्वितीय ग्रन्थ है। इस माला के प्रथम ग्रन्थ में दो मूल सूत्र सम्पादित हुए थे। इसमें पहला अंग सम्पादित है। शताब्दियों पूर्व जो स्थान आचारांग का था, वह स्थान वर्तमान में मूलसूत्रों का है। इसलिए मूलसूत्र और आचारांग निकट सम्बन्धी हैं।

आचारांग के दो श्रुतस्कन्ध हैं। प्रथम श्रुतस्कन्ध में मूल आचारांग और दूसरे श्रुतस्कन्ध में आचारांग की चार चूलिकाओं का समावेश है। प्रथम श्रुतस्कन्ध का नाम 'आयारो' और दूसरे श्रुतस्कन्ध का नाम 'आयार-चूला' है। इसीलिए प्रस्तुत ग्रन्थ का नाम 'आयारो तह आयार-चूला' रखा गया है।

### ग्रन्थ-बोध

प्रस्तुत ग्रन्थ में पाठान्तर सहित मूलपाठ है। प्रारम्भ में भूमिका और अंत में पाँच परिशिष्ट हैं—

- (१) आयारो संक्षिप्त पूर्ति-स्थल और उसका निर्देश।
- (२) आयार-चूला संक्षिप्त पूर्ति-स्थल और उसका निर्देश।
- (३) आयारो शब्द-सूची।
- (४) आयार-चूला शब्द-सूची और
- (५) शुद्धि-पत्रम्।

### नामानुक्रम

आयार-चूला और निशीथ में प्रयुक्त विशेष नाम प्रायः सदृश हैं, इसलिए आयार-चूला के विशेष नामों का अनुक्रम निशीथ के नामानुक्रम के साथ ही किया जाएगा।

पाठ-सम्पादन में हमने अनेक संकेत-चिन्हों का प्रयोग किया है, उनका स्पष्टीकरण 'संकेत-निर्देशिका' में किया गया है।

### प्रस्तुत पाठ और पाठ-सम्पादन की पद्धति

आचारांग का जो पाठ हमने स्वीकार किया है, उसका आधार कोई एक आदर्श नहीं है। हमने पाठ का स्वीकार प्रयुक्त आदर्शों, चूर्णि और वृत्ति के संदर्भ में समीक्षा-पूर्वक किया है। 'आयारो' के प्रथम अध्ययन के दूसरे उद्देश के तीन सूत्र (२७-२९)

शेष पाँच उद्देशको में भी प्राप्त होते हैं। पाठ-संशोधन में प्रयुक्त आदर्शों तथा आचारांग वृत्ति में यह प्राप्त नहीं है। आचारांग चूर्णि में 'लज्जमाणा पुटोपास' (आयारो, सूत्र १६, पृ० ४) सूत्र से लेकर 'अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए' (आयारो, सूत्र २६, पृ० ६) तक ध्रुवकण्डिका (एक समान पाठ) मानी गई है।<sup>१</sup>

चूर्णि में प्राप्त संकेत के आधार पर हमने द्वितीय उद्देशक में प्राप्त तीन सूत्र (२७-२९) शेष पाँचो उद्देशको में स्वीकृत किए हैं।

आठवें अध्ययन के दूसरे उद्देशक (सू० २१) की चूर्णि<sup>२</sup> में 'कुंभारायतणंसि वा' के स्थान पर अनेक शब्द उपलब्ध होते हैं, जैसे—'उवट्टणगिहे वा, गामदेउलिए वा, कम्मगारसालाए वा, तत्तुवायगसालाए वा, लोहगारसालाए वा।' चूर्णिकार ने आगे लिखा है—'जचियाओ साला सव्वाओ भाणियव्वाओ।' <sup>३</sup>

यहाँ प्रतीत होता है कि 'कुंभारायतणंसि वा' शब्द अन्य अनेक शाला या गृहवाची शब्दों से युक्त था, किन्तु लिपि-दोष के कारण कालक्रम से शेष शब्द छूट गए। चूर्णि के आधार पर पाठ-पद्धति का निश्चय करना संभव नहीं, इसलिए उसे मूलपाठ में स्वीकृत नहीं किया गया।

हमने संक्षिप्त पाठ की पूर्ति भी की है। पाठ संक्षेप की परम्परा श्रुत को कंठाग्र करने की पद्धति और लिपि की सुविधा के कारण प्रचलित हुई। पं० वेचरदास दोशी ने ८-१२-६६ की आचार्यश्री तुलसी के पास एक लेख भेजा था। उसमें इस विषय पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने लिखा है—“प्राचीन जैन-श्रमण लिखने-लिखाने की प्रवृत्ति को आरंभ-रूप समझते थे, फिर भी शास्त्रों की रक्षा के लिए उन्होंने लिखने-लिखाने के आरम्भ-रूप मार्ग को भी अपवाद समझ कर स्वीकार किया। पर जितना कम लिखना पड़े उतना अच्छा, ऐसा समझ कर उन्होंने शास्त्र की रक्षा के लिए ही, हो सके वहाँ तक कम आरंभ करना पड़े, ऐसा रास्ता शोधने का जरूर प्रयास किया। इस रास्ते की शोध से 'वण्णओ' और 'जाव' दो नए शब्द उनको मिले। इन दो शब्दों की सहायता से हजारों श्लोक वा सैकड़ों वाक्य कम लिखने से उनका आरंभ कम हो गया और शास्त्र के आशय में भी किसी प्रकार की न्यूनता नहीं हुई।”

१. देखे—आयारो, पृ० ८ पादटिप्पण सख्याक २; पृ० ११ पादटिप्पण सख्याक २; पृ० १४ पादटिप्पण सख्याक १, पृ० १६ पादटिप्पण सख्याक ३, पृ० १६ पादटिप्पण सख्याक ४।

२. आचारांग चूर्णि, पृ० २६०-२६१।

३. वही, पृ० २६१।

श्रुत को कण्ठस्थ करने की पद्धति, लिपि की सुविधा और कम लिखने की मेनोवृत्ति—पाठ-संक्षेप के ये तीनों कारण संभाव्य हैं। इनसे भले ही आशय की न्यूनता न हुई हो, किन्तु ग्रन्थ-सौन्दर्य अवश्य न्यून हुआ है। पाठक की कठिनाइयाँ भी बढ़ी हैं। जिन मुनियों के समय आगम-साहित्य कण्ठस्थ था, वे 'जाव' या 'वण्ण' द्वारा संकेतित पाठ का अनुसंधान कर पूर्वापर की सम्बन्ध-योजना कर सकते हैं। किन्तु प्रतिलिपियों के आधार पर पढ़ने वाला मुनि-वर्ग ऐसा नहीं कर सकता। उसके लिए 'जाव' या 'वण्ण' द्वारा संकेतित पाठ बहुत लाभदायी सिद्ध नहीं हुआ है। इसका हम प्रत्यक्ष अनुभव कर रहे हैं। इसी कठिनाई तथा ग्रन्थ-सौन्दर्य की दृष्टि से हमारे वाचना प्रमुख आचार्यश्री तुलसी ने चाहा की संक्षेपीकृत पाठ की पुनः पूर्ति की जाए। हमने अधिकांश स्थलों में संक्षिप्त पाठ की पूर्ति की है। उसकी सूचना के लिए बिन्दु-संकेत दिया गया है। आचार्य तथा आचार-चूला के पूर्ति-स्थलों के निर्देश की सूचना प्रथम और द्वितीय परिशिष्ट में दी गई है।

पं० वेचरदास दोशी के अनुसार पाठ का संक्षेपीकरण देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण ने किया था। उन्होंने लिखा है—'देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण ने आगमो को ग्रन्थ-वद्ध करते समय कुछ महत्त्वपूर्ण बातें ध्यान में रखीं। जहाँ-जहाँ शास्त्रों में समान पाठ आए वहाँ-वहाँ उनकी पुनरावृत्ति न करते हुए उनके लिए एक विशेष ग्रन्थ अथवा स्थान का निर्देश कर दिया। जैसे—'जहा उववाइए' 'जहा पण्णवाण' इत्यादि। एक ही ग्रन्थ में वही बात बार-बार आने पर उसे पुनः-पुनः न लिखते हुए 'जाव' शब्द का प्रयोग करते हुए उसका अन्तिम शब्द लिख दिया। जैसे—'णाग कुमार जाव विहरंति', 'तेणं कालेण जाव परिसा णिग्गया' इत्यादि।'<sup>१</sup>

इस परम्परा का प्रारम्भ भले ही देवर्द्धिगणि ने किया हो, किन्तु इसका विकास उनके उत्तरवर्ती-काल में भी होता रहा है। वर्तमान में उपलब्ध आदर्शों में संक्षेपीकृत पाठ की एकरूपता नहीं है। एक आदर्श में कोई मंत्र संक्षिप्त है तो दूसरे में वह समग्र रूप से लिखित है। टीकाकारों ने स्थान-स्थान पर इसका उल्लेख भी किया है। उदाहरण के लिए औपपातिक सूत्र में "अयपायाणि वा जाव अण्णयराइं वा" तथा 'अयवंधणाणि वा जाव अण्णयराइं वा'—ये दो पाठांश मिलते हैं। वृत्तिकार के सामने जो मुख्य आदर्श थे, उनमें ये दोनों संक्षिप्त रूप में थे, किन्तु दूसरे आदर्शों में ये समग्र रूप में भी प्राप्त थे। वृत्तिकार ने इसका उल्लेख किया है।<sup>२</sup> लिपिकर्ता

१. जैन साहित्य का बृहद् इतिहास, पृ० ८१।

२. औपपातिक वृत्ति, पृ० १७७

पुस्तकान्तरे समग्रमिद सूत्रद्वयमस्त्येवेति।

अनेक स्थलो में अपनी सुविधानुसार पूर्वागत पाठ को दूसरी बार नहीं लिखते और उत्तरवती आटशों में उनका अनुसरण होता चला जाता । उदाहरण स्वरूप—रायपसेणइय सूत्र में ‘सन्विड्दीय अकालपरिहीणा’ (स्वीकृत पाठ—हीण) ऐसा पाठ मिलता है ।<sup>१</sup> इस पाठ में अपूर्णता सूचक संकेत भी नहीं है । ‘सन्विड्दीए’ और ‘अकालपरिहीण’ के मध्यवर्ती पाठ की पूर्ति<sup>२</sup> करने पर समग्र पाठ इस प्रकार बनता है—‘सन्विड्दीए सन्विजुत्तीए सन्विबलेणं सन्विमुदएणं सन्विदरेणं सन्विबिभूसाए सन्विबिभूइए सन्विसंभमेणं सन्विपुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकरेणं सन्विदिव्वसुडियसद्सन्निनाएणं महया इड्दीए महया जुइए महया बलेणं महया समुदएणं महया वरत्तुडियजमगसमय-पडुप्पवाइयरवेणं संख-पणव-पडह-भेरि-मल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-सुरय-मुइंग-दुंहुमि-निग्घोस-नाइयखेणं णियग परिवाल सद्धि संपरिवुडा साइ-साइ जाणविमाणाइं वुरुडा समाणा अकालपरिहीणं ।’

आचार-चूला ५।१४ में ‘महद्वणमोल्लाइं’ तथा १५।५६ में ‘महव्वए’ के आगे भी अपूर्णता सूचक संकेत नहीं है ।

प्रमादवश कही-कही अपूर्णता सूचक ‘जाव’ का विपर्यय भी हुआ है, यथा—  
 फासुयं.....लामे सत्ते जाव पडिगाहेज्जा । (१।१०१)  
 बहुकंदंगं... ..लामे सत्ते जाव णो..... । (१।१३४)

### समर्पण-सूत्र

संक्षिप्त पद्धति के अनुसार आचारांग में समर्पण के अनेक रूप मिलते हैं—

जाव— अकिरियं जाव अभूतोवघाइयं (४।११)

तहेव— अक्कोसंति वा तहेव तेल्लादि सिणाणादि सीधोदग वियडादि णिणिणाइ य (७।१६-२०)

अतिरिच्छच्छिन्नं तहेव तिरिच्छच्छिन्नं तहेव (७।३४, ३५)

एवं— एवं णायव्वं जहा सद्पडियाए सव्वा वाइत्तवज्जा रुवपडियाए वि (१२।२-१७)

जहा— पाणाइं जहा पिडेसणाए (५।५)

संख्या— थुणंसि वा (४) (७।११)

असणं वा (४) (१।१२)

से भिक्खु वा २ ।

१. देखें—प० बेचरदास दोशी द्वारा संपादित ‘रायपसेणइय’, पृ० ७३ ।

२. पूर्ति-स्थल के लिए देखें—वही, पृ० ६९, विवरण और पादटिप्पण ।

तं चेव— तं चेव भाणियब्बं णवरं चउत्थाए णाणत्तं (१।१४९-१५४) सेसं तं  
चेव एवं ससरक्खे (१।६५)

हेट्ठिमो— एवं हेट्ठिमो गमो पायादि भाणियब्बो (१३।४०-७५)

## आचारांग का वाचना-भेद

समवायाग में आचारांग की अनेक वाचनाओं का उल्लेख मिलता है।<sup>१</sup> वाचना का अर्थ है—अध्यापन या सूत्र और अर्थ का प्रदान। संक्षिप्त वाचना-भेद अनेक मिलते हैं, किन्तु वर्तमान में मुख्य दो वाचनाएँ प्राप्त हैं—एक प्रस्तुत-वाचना और दूसरी नागार्जुनीय-वाचना। चूर्णि और टीका में नागार्जुनीय वाचना-सम्मत पाठों का उल्लेख किया गया है। देखें—‘आयारो’ पृष्ठ २८ पादटिप्पण संख्यांक ४ और ७, पृष्ठ ४१ पादटिप्पण संख्यांक २, पृष्ठ ४३ पादटिप्पण संख्यांक ३, पृष्ठ ४८ पादटिप्पण संख्यांक ६, पृष्ठ ५४ पादटिप्पण संख्यांक ५४, पृष्ठ ५५ पादटिप्पण संख्यांक १, पृष्ठ ६८ पादटिप्पण संख्यांक २, पृष्ठ ७१ पादटिप्पण संख्यांक ६ और ७, पृष्ठ ७४ पादटिप्पण संख्यांक ७, पृष्ठ ७५ पादटिप्पण संख्यांक ८, पृष्ठ ६४ पादटिप्पण संख्यांक १, पृष्ठ ९९ पादटिप्पण संख्यांक १, पृष्ठ १०१ पादटिप्पण संख्यांक ११।

## आचारांग के उद्धृत पाठ

उत्तरवर्ती अनेक ग्रन्थों में आचारांग के पाठ उद्धृत किए गए हैं। अपराजित-सूरि ने मूलाराधना की टीका में आचारांग के कुछ पाठ उद्धृत किए हैं।<sup>२</sup>

शोध करने पर ऐसा ज्ञात हुआ है कि कई पाठ आचारांग में नहीं हैं, कई पाठ शब्द-भेद से और कई पाठ आशिक रूप में मिलते हैं। तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से दोनों पाठ नीचे दिए जा रहे हैं—

### मूलाराधना

### आचारांग

तथा चोक्तमाचाराङ्गे :—

सुदं मे आउस्सन्तो भगवदा एव भक्खादं ।

×

×

इह खलु संयमाभिमुखो दुविहा इत्थो पुरिसा

जादा भवन्ति । तंजहा—सव्व समण्णा गदे

णो सव्व समागदे चेव । तत्थ जे सव्व

१ समवायाग समवाय १३६, परिस्ता वायणा ।

२ मूलाराधना ४।४२१, टीका पत्र ६१२ ।

समण्णागदे थिरांग / हत्थ पाणि पादे  
सन्विदिय समण्णागदे तस्स णं णो  
कप्पदि एगमवि वत्थं धारिउं-एवं परिहिउं  
एवं अण्णत्थ एगेण पडिलेहणेण ।

अह पुण एव जाणिज्जा—उपातिकते हेमते  
गिम्हे सुपडिवण्णे से अर्थ पडिजुण्णा सुवधि  
पदिट्ठावेज्ज ।

—४।४२१ टीका, पत्र ६११

पडिलेहणं; पादपुंछुणं, सगहं कडासणं अण्णदरं  
उववि पावेज्ज ।

—४।४२१ टीका, पत्र ६११

तथावत्थेसणाए—वुक्त्तं तत्थ एसे हिरिमणे  
सेगं वत्थं वा धारेज्ज पडिलेहणं विदियं,  
तत्थ एसे जुग्गिदे देसे दुवे वत्थाणि धारिज्ज  
पडिलेहणं तदियं । तत्थ एसे परिसाइं अणधि-  
हासस्स तयो वत्थाणि धारेज्ज पडिलेहणं  
चउत्थ । —४।४२१ टीका, पत्र ६११

तथा पाएसणाए कथितं—

हिरिमणे वा जुग्गिदे चाविअण्णे वा तस्सण  
कप्पदि तत्थादिकं पुनश्चोक्तं तत्रैव—पाद  
चरित्तए ।

आलावु पत्तं वा दारुग पत्तं वा मट्टिगपत्तं  
वा, अप्पाणं अप्पवीज अप्पसरिदं तथा  
अप्पकारं पात्र लाभे सति पडिग्गहिस्सामि ।

—४।४२१ टीका, पत्र ६११

भावनायां चोक्तं—

चरिमं चीवरधारी तेण परम चेलके तु जिणे

—४।४२१ टीका पत्र ६११

अह पुण एव जाणेज्जा—उवाइ-  
वक्कते खलु हेमते, गिम्हे पडिवण्णे  
अहापरिजुग्गनाइं वत्थाइं परिट्ठ-  
वेज्जा ।

—१।८, सू० ५०, ६६, ६२

वत्थं पडिग्गहं कंवलं, पायपुंछुणं  
सगहं च कडासणं एतेसु चैव  
जाणेज्जा ।

—१।२ सू० ११२

जे गिग्गये तरुणे जुगवं बलवं  
अप्पायंके थिरसंघयणे से एगं वत्थं  
धारेज्जा णो वितियं

—२।५ सू० २

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा  
अभिकखेज्जा पायं एसित्तए,

तंजहा—अलाउ पायं वा दारु  
पायं वा, मट्टिया पायं वा  
तहप्पगार पायं । —२।६ सू० १  
फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे  
लाभे सते पडिग्गाहेज्जा ।

—२।६ सू० १०

×

×

## शब्दान्तर और रूपान्तर

व्याकरण और आर्ष-प्रयोग-सिद्ध शब्दान्तर एवं रूपान्तर भाषा-शास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। इसलिए उन्हें पाठान्तर से पृथक् रखा है।

### आयारो

अध्ययन १ सूत्र	१	सन्ना	सण्णा ( च, छ ) ।
" १ "	१३	दुस्संबोहे	दुस्संबोधे ( क, च, घ ) ।
" १ "	३४	णियाग०	णियाय० ( क, ख, च, घ ) ।
" १ "	४०	पवय०	पवद० ( ख, च, ग ) ।
" १ "	४७	०मेगेसि	०मेकेसि ( क, घ ) ।
" १ "	५६	पवेइयं	पवेदितं ( क ) , पवेतिय ( घ ) ।
" १ "	६७	सया	सता ( क, च ) ।
" १ "	७३	पवेदिता	पवेदिदा ( क ) ।
" १ "	९०	त णो	तन्नो ( क, घ ) ।
" १ "	९४	पाईणं	पावीणं ( घ ) ; पादीणं ( घ ) ।
" १ "	९५	आवि	यावि ( ख, घ, ) ; संसेतया ( क ) ; संसेदया ( च ) ।
" १ "	११८	संसेयया	संसेयमा ( ख, ) , ससेतया ( क ) ; संसेदया ( च ) ।
" १ "	१२२	०णिब्बाणं	०णेब्बाणं ( क ) ।
" १ "	१३०	०पडिघाय	०पडिघाय ( क, ख, ग, घ ) ।
" २ "	६	विभूसाए	विहूसाए ( क ) ।
" २ "	४१	मीत०	मीत० ( क ) ।
" २ "	६३	०साया	०साता ( क, च, छ ) ।
" २ "	७२	खेतन्ने	खेतन्ने ( घ, छ ) ।
" २ "	८६	०पाउडा	०वाउडा ( क ) ।
" २ "	१०६	अदिस्समाणे	आदिस्समाणे ( क, छ ) ।
" २ "	१३३	मावातए	मावादए ( च ) ।
" २ "	१३४	बहुमाई	बहुमादी ( छ, चू ) ।
" २ "	१६०	सहते	सहई ( ग, घ, च ) ।
" २ "	१६१	अहियाममाणे	अघियासमाणे ( क, च ) ।
" २ "	१७१	इह	इघ ( क ) ।
" २ "	१७५	अणाटियमाणे	अपातियमाणे



३	१७	खेयन्ने	खेदन्ने (च) ।
३	४२	पूरइत्तए	पूरत्तित्तए (छ) ।
३	६०	तहा०	तथा० (क,ग) ।
४	११	सया	सता (क,छ,चू) ।
४	२०	तिरियं	तिरितं (छ) ।
४	२५	असायं	आसायं (ख); अस्सायं (चू) ।
४	४८	पासह	पासहा (च) ।
४	५०	पलिङ्गिदिय	परिङ्गिदिय (क) ।
४	५२	जयाणं	जदाणं (छ) ।
५	६	परिजाणतो	परिजाणतो (क,ख,ग); परियाणतो (घ) ; परियाणतो (च,छ) ।
५	१०	सेवए	सेवे (घ,चू); सेवते (च) ।
५	१७	पलितच्छन्ने	पलितच्छन्ने (घ) ।
५	२६	विपरिणाम०	विप्परिणाम० (क,घ,च) ।
५	३०	समुप्पेह०	समुवेह० (क,ख,ग) ।
५	४४	णियाय	निदाय (क,च,चू) ।
५	५०	०पहे	०पधे (च) ।
५	५०	अण्णहा	अन्नधा (च,छ) ।
५	७२	०वेयण०	०वेतण० (छ) ।
५	८७	काहिए	काधिते (क, च, छ) ।
५	६२	परिव्वयंति	परिव्वतंति (छ) ।
६	१६	कामेहिं	कामेसु (च) ।
६	३०	लाय	लोत (क) ।
६	३०	मायाए	माताए (छ) ।
६	६०	जाइस्सामि	जातिस्सामि (ख,ग,च,छ) ।
८	१	वेयावडियं	वेयापडियं (ग) ।
८	४	०माइयंति	०मादितंति (ख,ग); ०मातितंति (छ) ।
८	३१	निसामिया	निसामित्ता (क), निसामेत्ता (छ) ।
८	८१	अहा	आहा (ख,घ); आधा (च,छ) ।
८	१०७	कहं कहे	कधं कधे (ख,ग,घ,) ।
११	४	वोसज्ज	वोसिज्ज (ख,ग)

अध्ययन १।१ सूत्र	१६	पर-पाए	पर-वादे (छ) ।
„ १।४ „	६	अविसाहिए	अविसाधिते (क,ख,ग) ।
„ १।४ „	६	आयत्त०	आतय० (क,छ) ।

### आयार-चूला

„ १ „ २	आयाय	आताए (अ); आयात (क,घ); आदाय (च) ।
„ १ „ २	अप्पुदए	अप्पोदए (क,व) ।
„ १ „ १२	अणिसट्ठं	अणिसिट्ठं (क, व) ।
„ १ „ १५	पुरिसंतरकडं	पुरिसंतरगडं (छ) ।
„ १ „ २६	अणिसट्ठं	अणिसिट्ठं (अ,च,व) ।
„ १ „ ३१	आसित्ता	असित्ता (अ,क,च,छ) ।
„ १ „ ५२	विगं	वगं (अ,छ) ।
„ १ „ ८३	विल्ल	विहं (घ) ।
„ १ „ ८६	पिहुणेण	पेहुणेण (अ,क,घ) ।
„ १ „ ८६	अप्फासुयं	अप्फासुयं (घ) ।
„ १ „ १०१	दिज्जा	दज्जा (अ,च) ।
„ १ „ १०४	दाडिम०	दालिम० (अ,व,घ) ।
„ १ „ १०५	अहो०	अघो० (क,व,छ) ।
„ १ „ ११८	तिंदुगं	तेंदुगं (च,छ) ।
„ १ „ १४६	पाय०	पाद० (छ,व) ।
„ २ „ ६	पुरिसंतरकडे	पुरिसंतरगडे (छ,व) ।
„ ३ „ ३६	०वडियाए	०पडियाए (क,च,छ) ।
„ ३ „ ३६	वित्तसेज्जा	वित्तोसेज्जा (अ) ।
„ ३ „ ४८	पोक्खरिणीओ	पुक्खरिणीओ (अ) ; पुक्खरिणीओ (व) ।
„ ४ „ २५	पमेडिले	पमेतिले (अ) , पमेदिले (क,च,घ) ।
„ ७ „ १	परदत्तभोई	परदत्तभोगी (अ,च) , परदत्तभोति (घ) , परदत्तभोती (व) ।
„ १३ „ ६	उल्लोल्लेज्ज	उल्लोलेज्ज (क,घ,च,छ,व) ।
„ १० „ १६	गिहपिट्ठ०	गहपट्ठ० (घ,व) ।
„ १३ „ ६	उल्लोल्लेज्ज	उल्लोलेज्ज (क,घ,च,छ,व) ।
„ १५ „ २६	साववेज्जं	सावएज्जं (घ,च); सावतेज्जं (व) ।
„ १५ „ ५८	जाई	जाती (अ,छ,व) ।
„ १५ „ ६८	०भोई	भोजी (क) , ०भोती (छ) ।

## प्रति परिचय

### (अ) आचारांग (दोनों श्रुतस्कन्ध)—

यह प्रति जैन-भवन, कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता-७ की श्री श्रीचन्द्रजी रामपुरिया द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र १८५ है। प्रत्येक पत्र १०॥ इंच लम्बा तथा ४ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में १-१७ तक पंक्तियाँ हैं। प्रत्येक पंक्ति में ४०-४५ तक अक्षर हैं। पत्र के चारों ओर वृत्ति लिखी हुई है। प्रति सुन्दर व कलात्मक है। सम्बत् जगैरह नहीं है।

### (क) दोनों श्रुतस्कन्ध मूलपाठ—

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से श्री मदनचन्द्रजी गोठी द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ६७ है। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा तथा ४ इंच चौड़ा है। पंक्तियाँ १३ हैं। प्रत्येक पंक्ति में ५०-५२ तक अक्षर हैं। प्रति के अंत में लिखा है—

सम्बत् १६७६ वर्षे आषाढ सुदि द्वितीय ४ भौम। श्री मालान्वये राक्याण गोत्रे सं० जटमल पुत्र सं० वेणीदास पुस्तक प्रदत्त श्रीमद् नागपुरीय तपागच्छ सं० श्री मान कीर्ति सूरि शिष्य माघव ज्योतिर्विद्=। अंत के अक्षर किसी अन्य व्यक्ति के मालूम होते हैं। प्रति के बीच में बावडी तथा तीन बड़े-बड़े लाल टीके हैं।

### (ख) आचारांग टब्बा (प्रथम श्रुतस्कन्ध)—

यह प्रति गधैया पुस्तकालय से गोठीजी द्वारा प्राप्त है। इसके ४६ पत्र हैं। पंक्तियाँ पाठ की ७ तथा टब्बे की १४ हैं। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा तथा ४ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पंक्ति में ४२ से ४५ तक पाठ के अक्षर हैं। अंतिम प्रशस्ति निम्नोक्त है—

सम्बत् १७३२ वर्षे श्रावण मासे कृष्ण पक्षे पंचमी तिथौ गुरु वासरे। लिखितं पूज्य ऋषि श्री ५ अमराजी तत् शिष्येण लिपि कृतं मुनि विका॥ आत्मार्थो शुभं भवतु कल्याण मस्तु। सेहुरीया ग्रामे संपूर्ण मस्ति॥

### (ग) आचा० (प्रथम श्रुतस्कन्ध) पंच पाठी (बालावबोध)—

यह प्रति गधैया पुस्तकालय से श्री गोठीजी द्वारा प्राप्त है। इसके ९० पत्र हैं। प्रथम ३ तथा छठा पत्र नहीं है। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा तथा ४ इंच चौड़ा है। मूलपाठ की पंक्तियाँ ५ से १० तक हैं। अक्षर ३० से ३३ तक हैं। अंतिम प्रशस्ति नहीं है।

### (घ) दोनों श्रुतस्कन्ध, (जीर्ण)—

यह प्रति भारतीय संस्कृति विद्या-मंदिर, अहमदाबाद से श्री गोठीजी द्वारा प्राप्त है। इसके ३७ पत्र हैं। प्रत्येक पत्र १३॥ इंच लम्बा, ५ इंच

चौड़ा है। पंक्तियों १७ तथा प्रत्येक पंक्ति में ६० से ६५ तक अक्षर हैं।  
अंतिम प्रशस्ति निम्नोक्त है—

शुभं भवतु । कल्याण मस्तु ॥ छ ॥ संवत् १५७३ वर्षे १० मंगलवार  
समत् ॥ छ ॥ ॥ श्री ॥ छ ॥

प्रति के दीमक लगने से अनेक स्थानों पर छिद्र हो गए हैं।

(च) दोनों श्रुतस्कन्ध, मूलपाठ—

यह प्रति भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अहमदाबाद के लालभाई दलपत-  
भाई ज्ञान भण्डार से मदनचन्दजी गोठी द्वारा प्राप्त हुई है। इसके ७८ पत्र हैं।  
प्रत्येक पत्र में १३ पंक्तियों तथा प्रत्येक पंक्ति में ४० से ४७ तक अक्षर हैं।  
प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा तथा ४॥ इंच चौड़ा है। बीच में वावड़ी है।

(छ) दोनों श्रुतस्कन्ध, वृत्ति सहित (त्रिपाठी)—

यह प्रति गधैया पुस्तकालय सरदारशहर से गोठीजी द्वारा प्राप्त है।  
इसके २९० पत्र हैं। प्रत्येक पत्र ११ इंच लम्बा तथा ४॥ इंच चौड़ा है।  
मूलपाठ की पंक्तियाँ १ से १७ तथा ४५ से ४७ तक अक्षर हैं। अंतिम  
प्रशस्ति निम्नोक्त है—

संवत् १८९९ वर्षे श्रावण शुक्ल पक्षे सप्तम्या तिथौ श्री विक्रमपुर मध्ये  
लिपिकृतं ॥ श्रीरस्तु कल्याणमस्तु । शुभं भूयादिति ॥

(व) (द्वितीय श्रुतस्कन्ध) टट्वा (पंचपाठी)—

यह प्रति गधैया पुस्तकालय सरदारशहर से मदनचन्दजी गोठी द्वारा  
प्राप्त हुई है। इसके ८४ पत्र हैं। प्रत्येक पत्र १०। इंच लम्बा तथा ४॥ इंच  
चौड़ा है। मूलपाठ की पंक्तियाँ ४ से १३ हैं। प्रत्येक पंक्ति में २८ से ३३ तक  
अक्षर हैं। बीच-बीच में वावड़ियाँ हैं। अंतिम प्रशस्ति निम्नोक्त है—

संवत् १७५२ वर्षे भाद्रपद मासे पञ्चम्या तिथौ ओरस गच्छे भट्टारक  
श्री कवचसूरि तत्पट्टे वर्तमान भट्टारक देवगुप्तसूरिभिर्गृहीता नागोरी  
तपागच्छीय पं० श्रीदयालदास पार्श्वार्त् पञ्चत्तरिंशत् ४५ वर्षोत्तरात्  
महतोद्यमेन ।

(घ), (ट्टपा) मुद्रित, प्रकाशिका—श्री सिद्धचक्र साहित्य प्रचारक समिति  
विक्रम संवत् १९६१ ।

(चू), (चूपा) मुद्रित—श्री ऋषभदेवजी केशरीमलजी, रतलाम, वि० १९६८ ।

## सहयोगानुभूति

जैन-परम्परा में वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज से १५०० वर्ष  
पूर्व तक आगम की चार वाचनाएँ हो चुकी हैं। देवर्द्धिगणी के बाद कोई सुनियोजित  
आगम-वाचना नहीं हुई। उनके वाचना-काल में जो आगम लिखे गए थे, वे इस

लम्बी अवधि में बहुत ही अव्यवस्थित हो गए हैं। उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी। आचार्य श्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नहीं हो सका। अन्ततः हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचे कि हमारी वाचना अनुसन्धान पूर्ण, गवेषणा पूर्ण, तटस्थ दृष्टि-समन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने आप सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगम-वाचना का कार्य प्रारम्भ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्य श्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ अध्यापन है। हमारी इस प्रवृत्ति में अध्यापन-कर्म के अनेक अंग हैं—पाठ का अनुसंधान, भाषान्तरण, समीक्षात्मक अध्ययन, तुलनात्मक अध्ययन आदि-आदि। इन सभी प्रवृत्तियों में आचार्य श्री का हमें सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है। यही हमारा इस गुरुतर कार्य में प्रवृत्त होने का शक्ति-बीज है।

मैं आचार्य श्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन कर भार-मुक्त होऊँ, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-संचल पा और अधिक भारी बनें।

प्रस्तुत ग्रन्थ के सम्पादन में मुनि दुलहराजजी का अविकल योग रहा है। पाठ-सम्पादन के कार्य में मुनि सुदर्शनजी, मुनि मधुकरजी और मुनि हीरालालजी ने श्रम और निष्ठापूर्वक योग दिया है।

शब्दानुक्रम आदि कार्य में मुनि श्रीचन्द्रजी 'कमल' अत्यन्त दत्तचित्तता से लगे रहे हैं। मुनि हनुमानमलजी (सरदारशहर) का भी उसमें सहयोग रहा है।

इसका शुद्धि-पत्र तैयार करने में मुनि सागरमलजी 'श्रमण' का सहयोग रहा है।

इसका ग्रन्थ-परिमाण मुनि मोहनलालजी (आमेट) ने तैयार किया है।

कार्य-निष्पत्ति में इनके योग का मूल्यांकन करते हुए मैं इनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

आगम के प्रबन्ध-सम्पादक श्री श्रीचन्द्रजी रामपुरिया, आदर्श साहित्य संघ के संचालक व व्यवस्थापक श्री हनूतमलजी सुराना और श्री जयचन्द्रलालजी दपतरी का भी अविरल योग रहा है। आदर्श साहित्य संघ की सहयुक्त सामग्री ने इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

एक लक्ष्य के लिए समान गति से चलने वाली की समप्रवृत्ति में योग-दान की परम्परा का उल्लेख व्यवहार-पूर्ति मात्र है। वास्तव में यह हम सबका पवित्र कर्त्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है।

सागर-सदन, शाहीबाग,

अहमदाबाद-४

२६ अगस्त, १९६७

मुनि नथमल

भूमिका



## विषय-सूची

१. आगमो का वर्गीकरण	...	...	पृ० १
२. पूर्व	...	...	२
३. अङ्ग-प्रविष्ट और अङ्ग-बाह्य	...	...	४
४. अङ्ग	...	...	६
—नवाङ्ग			
—द्वादशाङ्ग			
५. प्रथम अङ्ग	..	...	७
६. श्रुतस्कष	...	...	८
७. मुख्य-विभाग	...	...	१०
८. आधार-चूला	...	...	११
९. अवान्तर-विभाग	...	...	१२
१०. पद-परिमाण और वर्तमान आकार			१२
११. विषय-वस्तु	...	...	१५
—दार्शनिक-तथ्य			
—श्रद्धा और स्वतंत्र दृष्टि			
—कषोपल			
—समसामयिक विचार			
१२. रचनाकार और रचना-काल	...	...	२०
१३. आचाराग का महत्त्व	...	...	२७
१४. रचनाशैली	...	...	२८
१५. व्याख्या-ग्रन्थ	...	...	३०
१६. उपसंहार	...	...	३२





## १-आगमों का वर्गीकरण

जैन-साहित्य का प्राचीनतम भाग आगम है। समवायांग में आगम के दो रूप प्राप्त होते हैं—(१) द्वादशांग गणिषिटक<sup>१</sup> और (२) चतुर्विंश पूर्व<sup>२</sup>। नन्दी में श्रुत-ज्ञान (आगम) के दो विभाग मिलते हैं—(१) अङ्ग-प्रविष्ट और (२) अङ्ग-वाह्य।<sup>३</sup> आगम-साहित्य में साधु-साध्वियों के अध्ययन-विषयक कृतने उल्लेख प्राप्त होते हैं, वे नव अङ्गों और पूर्वों के अन्तर्गत वर्गीकृत हैं।

(१) अङ्ग-प्रविष्ट, जिनकी प्रतिभा प्रखर नहीं होती थी, के लिए वर्गीकृत हैं—  
यह, जिनकी प्रतिभा प्रखर नहीं होती थी, के लिए वर्गीकृत हैं—  
करते थे। आगम-विच्छेद के अङ्गों में अहिज्जइ (अन्तगड, प्रथम वर्ग)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य गौतम के विषय में प्राप्त है।

सामाख्यमाइयाइ एक्कारसअंगाइ अहिज्जइ (अन्तगड, पंचम वर्ग, प्रथम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि की शिष्या पद्मावती के विषय में प्राप्त है।

सामाख्यमाइयाइ एक्कारसअंगाइ अहिज्जइ (अन्तगड, अष्टम वर्ग, प्रथम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् महावीर की शिष्या काली के विषय में प्राप्त है।

सामाख्यमाइयाइ एक्कारसअंगाइ अहिज्जइ (अन्तगड, पष्ठ वर्ग, १५ वें अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् महावीर के शिष्य अतिमुक्तकुमार के विषय में प्राप्त है।

(२) वारह अङ्गों को पढ़ने वाले—

वारसंगी (अन्तगड, चतुर्थ वर्ग, प्रथम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य जालीकुमार के विषय में प्राप्त है।

(३) चौदह पूर्वों को पढ़ने वाले—

चौदसपुव्वाइ अहिज्जइ (अंतगड, तृतीय वर्ग, नवम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य सुमुखकुमार के विषय में प्राप्त है।

सामाख्यमाइयाइ चौदसपुव्वाइ अहिज्जइ (अंतगड, तृतीय वर्ग, प्रथम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य अणीयमकुमार के विषय में प्राप्त है।

१. समवायांग, प्रकीर्णक समवाय, सू० ८८।

२. वही, समवाय १४, सू० २।

३. नन्दी, सू० ४३।

भगवान् पार्श्व के साठे तीन सौ चतुर्दश-पूर्वी सुनि थे ।<sup>१</sup>

भगवान् महावीर के तीन सौ चतुर्दश-पूर्वी सुनि थे ।<sup>२</sup>

समवायाग और अनुयोगद्वार में अङ्ग-प्रविष्ट और अङ्ग-बाह्य का विभाग नहीं है । सर्व प्रथम यह विभाग नन्दी में मिलता है । अङ्ग-बाह्य की रचना अर्वाचीन स्थविरो ने की है । नन्दी की रचना से पूर्व अनेक अङ्ग-बाह्य ग्रन्थ रचे जा चुके थे और वे चतुर्दश-पूर्वी या दश-पूर्वी स्थविरो द्वारा रचे गए थे । इसलिए उन्हें आगम की कोटि में रखा गया । उसके फलस्वरूप (१) अङ्ग-प्रविष्ट और (२) अङ्ग-बाह्य । यह विभाग तक नहीं हुआ था । यह सबसे पहले नन्दी (वीरगण)

नन्दी की रचना तक आगम के तीन वर्गीकरण हो जात २—(१) ३ . प्रविष्ट और (३) अङ्ग-बाह्य । आज 'अङ्ग-प्रविष्ट' और 'अङ्ग-बाह्य' उपलब्ध होते हैं, किन्तु पूर्व उपलब्ध नहीं है । उनकी अनुपलब्धि ऐतिहासिक दृष्टि से विमर्शनीय है ।

## २-पूर्व

जैन-परम्परा के अनुसार श्रुत-ज्ञान (शाब्द-ज्ञान) का अक्षयकोष 'पूर्व' है । इसके अर्थ और रचना के विषय में सब एकमत नहीं हैं । प्राचीन आचार्यों के मतानुसार 'पूर्व' द्वादशांगी से पहले रचे गए थे, इसलिए इनका नाम 'पूर्व' रखा गया ।<sup>३</sup> आधुनिक विद्वानों का अभिमत यह है कि 'पूर्व' भगवान् पार्श्व की परम्परा की श्रुत-राशि है । यह भगवान् महावीर से पूर्ववर्ती है, इसलिए इसे 'पूर्व' कहा गया है ।<sup>४</sup> दोनों अभिमतों में से किसी को भी मान्य किया जाए, किन्तु इस फलित में कोई अन्तर नहीं आता कि पूर्वा की रचना द्वादशांगी से पहले हुई थी या द्वादशांगी पूर्वों की उत्तरकालीन रचना है ।

वर्तमान में जो द्वादशांगी कारूप प्राप्त है, उसमें 'पूर्व' समाए हुए हैं । बारहवों अङ्ग

१. समवायाग, प्रकीर्णक समवाय, सू० १४ ।

२. वही, सू० १२ ।

३. समवायांग वृत्ति, पत्र १०१ :

प्रथमं पूर्वं तस्य सर्वप्रवचनात् पूर्वं क्रियमाणत्वात् ।

४. नन्दी, मलयगिरि वृत्ति, पत्र २४० :

अन्ये तु व्याचक्षते पूर्वं पूर्वगतसूत्रार्थं मर्हन् भाषते, गणधरा अपि पूर्वं पूर्वगतसूत्रं विरचयन्ति, पश्चादाचारादिकम् ।

दृष्टिवाद है। उसका एक विभाग है पूर्वगत। चौदह पूर्व इसी 'पूर्व' के अन्तर्गत किए गए हैं। भगवान् महावीर ने प्रारम्भ में पूर्वगत का अर्थ 'प्रतिपादित' किया था और गौतम आदि गणधरो ने भी प्रारम्भ में पूर्वगत-श्रुत की रचना की थी। इस अभिमत से यह फलित होता है कि चौदह पूर्व और बारहवाँ अङ्ग—ये दोनों भिन्न नहीं हैं। पूर्वगत-श्रुत बहुत गहन था। सर्व साधारण के लिए वह सुलभ नहीं था। अङ्गों की रचना अल्पमेधा व्यक्तियों के लिए की गई। जिनभद्र गणि क्षमाश्रमण ने बताया है कि 'दृष्टिवाद में समस्त शब्द-ज्ञान का अवतार हो जाता है। फिर भी ग्यारह अङ्गों की रचना अल्पमेधा पुरुषों तथा स्त्रियों के लिए की गई।' ग्यारह अङ्गों को वे ही साधु पढ़ते थे, जिनकी प्रतिभा प्रखर नहीं होती थी। प्रतिभा सम्पन्न मुनि पूर्वों का अध्ययन करते थे। आगम-विच्छेद के क्रम से भी यही फलित होता है कि ग्यारह अङ्ग दृष्टिवाद या पूर्वों से सरल या भिन्न-क्रम में रहे हैं। दिगम्बर-परम्परा के अनुसार वीर-निर्वाण के वासठ वर्ष बाद केवली नहीं रहे। उसके बाद सौ वर्ष तक श्रुत-केवली (चतुर्दश-पूर्वी) रहे। उसके पश्चात् एक सौ तिरासी वर्ष तक दशपूर्वी रहे। इनके पश्चात् दो सौ बीस वर्ष तक ग्यारह अङ्गधर रहे।<sup>२</sup>

उक्त चर्चा से यह स्पष्ट है कि जब तक आचार आदि अङ्गों की रचना नहीं हुई थी, तब तक महावीर की श्रुत-राशि 'चौदह पूर्व' या 'दृष्टिवाद' के नाम से अभिहित होती थी और जब आचार आदि ग्यारह अङ्गों की रचना हो गई, तब दृष्टिवाद को बारहवे अङ्ग के रूप में स्थापित किया गया।

यद्यपि बारह अङ्गों को पढ़ने वाले और चौदह पूर्वों को पढ़ने वाले—ये भिन्न-भिन्न उल्लेख मिलते हैं,<sup>३</sup> फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि चौदह पूर्वों के अध्येता बारह अङ्गों के अध्येता नहीं थे और बारह अङ्गों के अध्येता चतुर्दश-पूर्वी नहीं थे। गौतम स्वामी को 'द्वादशांगवित्' कहा गया है।<sup>४</sup> वे चतुर्दश-पूर्वी और अङ्गधर दोनों थे। यह कहने का प्रकार-मेद रहा है कि श्रुत-केवली को कहीं 'द्वादशांगवित्' और कहीं 'चतुर्दश-पूर्वी' कहा गया।

ग्यारह अङ्ग पूर्वों से सद्भूत या संकलित हैं। इसलिए जो चतुर्दश-पूर्वी होता है,

१. विशेषावश्यक भाष्य, गाथा ५५४ :

जइवि य भूतावाए, सव्वस्स वओगयस्स ओयारो ।

निज्जुहणा तहावि हु, दुम्मेहे पप्प इत्थी य ॥

२. जयधवला, प्रस्तावना पृ० ४६।

३. देखिए—भूमिका का प्रारम्भिक भाग।

४. उत्तराध्ययन, २३।७।

वह स्वभाविक रूप से ही द्वादशांगवित् होता है। बारहवें अङ्ग में चौदह पूर्व समाविष्ट है। इसलिए जो द्वादशांगवित् होता है, वह स्वभावतः ही चतुर्दश-पूर्वी होता है। अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि आगम के प्राचीन वर्गीकरण दो ही हैं— (१) चौदह पूर्व और (२) ग्यारह अङ्ग। द्वादशांगी का स्वतंत्र स्थान नहीं है। यह पूर्वी और अङ्गी का संयुक्त नाम है।

कुछ आधुनिक विद्वानों ने पूर्वी को भगवान् पार्श्व-कालीन और अङ्गी को भगवान् महावीर-कालीन माना है, पर यह अभिमत संगत नहीं है। पूर्वी और अङ्गी की परम्परा भगवान् अरिष्टनेमि और भगवान् पार्श्व के युग में भी रही है। अङ्ग अल्पमेधा व्यक्तियों के लिए रचे गए, यह पहले बताया जा चुका है। भगवान् पार्श्व के युग में सब सुनियो का प्रतिभा-स्तर समान था, यह कैसे माना जा सकता है? प्रतिभा का तारतम्य अपने-अपने युग में सदा रहा है। मनोवैज्ञानिक और व्यावहारिक-दृष्टि से विचार करने पर भी हम इसी बिन्दु पर पहुँचते हैं कि अङ्गी की अपेक्षा भगवान् पार्श्व के शासन में भी रही है। इसलिए इस अभिमत की पुष्टि में कोई साध्य प्राप्त नहीं है कि भगवान् पार्श्व के युग में केवल पूर्व ही थे, अङ्ग नहीं। सामान्य-ज्ञान से यही तथ्य निष्पन्न होता है कि भगवान् महावीर के शासन में पूर्वी और अङ्गी का युग की भाव, भाषा, शैली और अपेक्षा के अनुसार नवीनीकरण हुआ। 'पूर्व' पार्श्व की परम्परा से लिए गए और 'अङ्ग' महावीर की परम्परा में रचे गए, इस अभिमत के समर्थन में संभवतः कल्पना ही प्रधान रही है।

### ३-अङ्ग-प्रविष्ट और अङ्ग-बाह्य

भगवान् महावीर के अस्तिरव-काल में गौतम आदि गणधरो ने पूर्वी और अङ्गी की रचना की, यह सर्व-विश्रुत है। क्या अन्य सुनियो ने आगम-ग्रन्थों की रचना नहीं की—यह प्रश्न सहज ही उठता है। भगवान् महावीर के चौदह हजार शिष्य थे।<sup>१</sup> उनमें सात सौ केवली थे, चार सौ वादी थे। उन्होंने ग्रन्थों की रचना नहीं की, ऐसा सम्भव नहीं लगता। नन्दी में बताया गया है कि भगवान् महावीर के शिष्यों ने चौदह हजार प्रकीर्णक बनाए थे।<sup>२</sup> ये पूर्वी और अङ्गी से अतिरिक्त थे। उस समय अङ्ग-प्रविष्ट और अङ्ग-बाह्य ऐसा वर्गीकरण हुआ, यह प्रमाणित करने के लिए कोई साध्य प्राप्त नहीं है। भगवान् महावीर के निर्वाण के पश्चात् अर्वाचीन आचार्यों ने

१. समवायाग, समवाय १४, सू० ४।

२. नन्दी, सू० ७८.

चौदसपइन्नगसहस्राणि भगवओ वद्धमाणस्स ।

ग्रन्थ रचे, तब संभव है उन्हें आगम की कोटि में रखने या न रखने की चर्चा चली और उनके प्रमाण्य और अप्रमाण्य का प्रश्न भी उठा। चर्चा के बाद चतुर्दश-पूर्वी और दस-पूर्वी स्थविरो द्वारा रचित ग्रन्थों की आगम की कोटि में रखने का निर्णय हुआ किन्तु उन्हें स्वतः प्रमाण नहीं माना गया। उनका प्रमाण्य परतः था। वे द्वादशांगी से अविरोद्ध है, इस कसौटी से कसकर उन्हें आगम की संज्ञा दी गई। उनका परतः प्रमाण्य था, इसीलिए उन्हें अङ्ग-प्रविष्ट की कोटि से भिन्न रखने की आवश्यकता प्रतीत हुई। इस स्थिति के संदर्भ में आगम की अङ्ग-बाह्य कोटि का उद्भव हुआ।

जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण ने अङ्ग-प्रविष्ट और अङ्ग-बाह्य के भेद-निरूपण में तीन हेतु प्रस्तुत किए हैं—

- (१) जो गणधर-कृत होता है।
- (२) जो गणधर द्वारा प्रश्न किए जाने पर तीर्थङ्कर द्वारा प्रतिपादित होता है।
- (३) जो ध्रुव—शाश्वत सत्त्यों से सम्बन्धित होता है, सुदीर्घकालीन होता है—वही श्रुत अङ्ग-प्रविष्ट होता है।<sup>१</sup>

इसके विपरीत (१) जो स्थवि-कृत होता है, (२) जो प्रश्न पूछे बिना तीर्थङ्कर द्वारा प्रतिपादित होता है, (३) जो चल होता है—तात्कालिक या सामयिक होता है—उस श्रुत का नाम अङ्ग-बाह्य है।

अङ्ग-प्रविष्ट और अङ्ग-बाह्य में भेद करने का मुख्य हेतु वक्ता का भेद है।<sup>२</sup> जिस आगम के वक्ता भगवान् महावीर हैं और जिसके संकलयिता गणधर हैं, वह श्रुत-पुरुष के मूल अङ्गों के रूप में स्वीकृत होता है, इसलिए उसे अङ्ग-प्रविष्ट कहा गया है। सर्वार्थसिद्धि के अनुसार वक्ता तीन प्रकार के होते हैं—(१) तीर्थङ्कर, (२) श्रुत-केवली (चतुर्दश-पूर्वी) और (३) आरातीय।<sup>३</sup> आरातीय आचार्यों के द्वारा रचित आगम ही अङ्ग-बाह्य माने गए हैं। आचार्य अकलंक के शब्दों में आरातीय आचार्य-कृत आगम अङ्ग-प्रतिपादित अर्थ से प्रतिविम्बित होते हैं इसीलिए वे अङ्ग-बाह्य कहलाते हैं।<sup>४</sup> अङ्ग-बाह्य आगम श्रुत-पुरुष के प्रत्यंग या उपांग स्थानीय है।

१. विशेषावश्यकभाष्य, गाथा ५५२.

गणधर-धेरकवं वा, आएमा मुक्क-चागरणओ वा।

ध्रुव-चल विसेसओ वा, अगाणगेसु नाणत्तं ॥

२. तत्त्वार्थ भाष्य, १।२०.

वक्तु-विरोपाद् दैविष्यम्।

३. सर्वार्थसिद्धि, १।२० :

त्रयो वक्ताः—सर्वज्ञस्तीर्थकर, इतरो वा श्रुतकेवली आरातीयश्चेति।

४. तत्त्वार्थ-राजवातिक, १।२० :

आरातीयाचार्यकृताङ्गार्थप्रत्यासन्नरूपमङ्गबाह्यम्।

## ४-अङ्ग

द्वादशांगी में संगर्भित बारह आगमों को अङ्ग कहा गया है। अङ्ग शब्द संस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाओं के साहित्य में प्राप्त होता है। वैदिक साहित्य में वेदाध्ययन के सहायक-ग्रन्थों को अङ्ग कहा गया है। उनकी संख्या छह है—

- (१) शिक्षा— शब्दों के उच्चारण-विधान का प्रतिपादक ग्रन्थ।
- (२) कल्प— वेद-विहित कर्मों का क्रमपूर्वक व्यवस्थित प्रतिपादन करने वाला शास्त्र।
- (३) व्याकरण— पद-स्वरूप और पदार्थ-निश्चय का निमित्त-शास्त्र।
- (४) निरुक्त— पदों की व्युत्पत्ति का निरूपण करने वाला शास्त्र।
- (५) छन्द— मंत्रोच्चारण के लिए स्वर-विज्ञान का प्रतिपादक शास्त्र।
- (६) ज्योतिष— यज्ञ-याग आदि कार्यों के लिए समय-शुद्धि का प्रतिपादक शास्त्र।

वैदिक साहित्य में वेद-पुरुष की कल्पना की गई है। उसके अनुसार शिक्षा वेद की नासिका है, कल्प हाथ, व्याकरण मुख, निरुक्त श्रोत्र, छन्द पैर और ज्योतिष नेत्र है। इसलिए ये वेद-शरीर के अङ्ग कहलाते हैं।<sup>१</sup>

पालि-साहित्य में भी 'अङ्ग' शब्द का उपयोग किया गया है। एक स्थान में बुद्ध-वचनों को नवांग और दूसरे स्थान में द्वादशांग कहा गया है।

### नवांग—

- (१) सुत्त— भगवान् बुद्ध के गद्यमय उपदेश।
- (२) गेय्य— गद्य-पद्य मिश्रित अंश।
- (३) वेय्याकरण— व्याख्यापरक ग्रन्थ।
- (४) गायथा— पद्य में रचित ग्रन्थ।
- (५) उदान— बुद्ध के सुख से निकले हुए भावमय प्रीति-उद्गार।
- (६) इतिवुत्तक— छोटे-छोटे व्याख्यान जिनका प्रारम्भ 'बुद्ध ने ऐसे कहा' से होता है।
- (७) जातक— बुद्ध की पूर्व-जन्म-सम्बन्धी कथाएँ।
- (८) अब्भुतधम्म— अदभुत वस्तुओं या योगज-विभूतियों का निरूपण करने वाले ग्रन्थ।
- (९) वेदल्ल— वे उपदेश जो प्रश्नोत्तर की शैली में लिखे गए हैं।<sup>२</sup>

१. पाणिनीय शिक्षा, ४१.१२।

२. सद्धर्मपडरीक सूत्र, पृ० ३४।

## द्वादशांग—

(१) सूत्र, (२) गेय, (३) व्याकरण, (४) गाथा, (५) उदान, (६) अवदान, (७) इतिवृत्तक, (८) निदान, (९) वैपुल्य, (१०) जातक, (११) उपदेश-धर्म और (१२) अदभुत-धर्म ।<sup>१</sup>

जैनागम वारह अंगों में विभक्त है—(१) आचार, (२) सूत्रकृत, (३) स्थान, (४) समवाय, (५) भगवती, (६) ज्ञाता धर्मकथा, (७) उपासकदशा, (८) अन्तकृद्, (९) अनुत्तरोपपातिक, (१०) प्रश्नव्याकरण, (११) विपाक और (१३) दृष्टिवाद ।

‘अङ्ग’ शब्द का प्रयोग भारतीय दर्शन की तीनों प्रमुख धाराओं में प्रयुक्त हुआ है । वैदिक और बौद्ध साहित्य में मुख्य ग्रन्थ वेद और पिटक है । उनके साथ ‘अङ्ग’ शब्द का कोई योग नहीं है । जैन साहित्य में मुख्य ग्रन्थों का वर्गीकरण गणिपिटक है । उसके साथ ‘अङ्ग’ शब्द का योग हुआ है । गणिपिटक के वारह अङ्ग हैं—  
‘दुवालसंगे गणिपिडगे ।’<sup>२</sup>

जैन-परम्परा में श्रुत-पुरुष की कल्पना भी प्राप्त होती है । आचार आदि वारह आगम श्रुत-पुरुष के अङ्गस्थानीय हैं । संभवतः इसीलिए उन्हें वारह अङ्ग कहा गया ।<sup>३</sup> इस प्रकार द्वादशांग गणिपिटक और श्रुत-पुरुष दोनों का विशेषण बनता है ।

## ५-प्रथम अङ्ग

द्वादशांगी में आचारांग का पहला स्थान है ।<sup>४</sup> इस विषय में दो विचारधाराएँ प्राप्त होती हैं । एक धारा के अनुसार आचारांग पहला अङ्ग स्थापनाक्रम की दृष्टि से है, रचना-क्रम की दृष्टि से वह वारहवाँ अङ्ग है । दूसरी धारा के अनुसार रचना-क्रम

१ बौद्ध संस्कृत ग्रन्थ ‘अभिसमयालंकार’ की टीका, पृ० ३५ ।

सूत्रं गेय व्याकरणं, गाथोदानावदानकम् ।

इतिवृत्तक निदानं, वैपुल्यं च सजातकम् ।

उपदेशाद्भुतौ धर्मौ, द्वादशांगमिदं वच ॥

२. समवायाग, प्रकीर्णक समवाय, सूत्र ८८ ।

३. मूलाराधना, ४।५६६ विजयोदया :

श्रुत पुरुष मुखचरणाद्यङ्गस्थानीयत्वादगशब्देनोच्यते ।

४. समवायाग, प्रकीर्णक समवाय, सूत्र ८६ :

से णं अङ्गद्वयाए पढमे ।

(क) नदी, मलयगिरि वृत्ति, पत्र २११ :

स्थापनामधिकृत्य प्रथममङ्गम् ।

(ख) वही, मलयगिरि वृत्ति, पत्र २४० :

(ग) तणधरा: पुनः सूत्ररचना विदधत आचारादिक्रमेण विदधतिस्थापयन्ति वा (च ?) ।



और स्थापना-क्रम दोनों दृष्टियों से आचारांग पहला अङ्ग है। आचार्य मलयगिरि<sup>१</sup> तथा अभयदेवसूरि<sup>२</sup> दोनों ने ही उक्त दोनों विचारधाराओं का उल्लेख किया है। ये धाराएँ उनसे पहले ही प्रचलित थी। अङ्ग पूर्वों से निर्यूद्ध हैं, इस अभिमत के आलोक में देखा जाए तो यही धारा संगत लगती है कि आचारांग स्थापना-क्रम की दृष्टि से पहला अङ्ग है, किन्तु रचना-क्रम की दृष्टि से नहीं। निर्युक्तिकार ने 'आचार' को प्रथम अङ्ग माना है। उनके अनुसार तीर्थङ्कर सर्वप्रथम 'आचार' का और फिर क्रमशः शेष अङ्गों का प्रतिपादन करते हैं।<sup>३</sup> गणधर भी उसी क्रम से अङ्गों की रचना करते हैं।<sup>४</sup> निर्युक्तिकार ने आचारांग की प्रथमता का कारण भी प्रस्तुत किया है। उन्होंने लिखा है—आचारांग में मोक्ष के उपाय (चरण-करण या आचार) का प्रतिपादन किया गया है और यही प्रवचन का सार है। इसलिए द्वादशांगी में आचारांग का प्रथम स्थान है।<sup>५</sup>

इससे प्रतीत होता है कि निर्युक्तिकार इस धारा के समर्थक रहे हैं कि रचना की दृष्टि से आचारांग का प्रथम स्थान है। किन्तु ग्यारह अङ्गों को पूर्वों से निर्यूद्ध माना जाए, उस स्थिति में निर्युक्ति-सम्मत धारा की संगति नहीं बैठती। संभव है, निर्युक्तिकार ने अङ्गों के निर्यूहण की प्रक्रिया का यह क्रम मान्य किया हो कि सर्वप्रथम आचारांग का निर्यूहण और स्थापन होता है तथा तत्पश्चात् सूत्रकृत आदि अङ्गों का। इस सम्भावना को स्वीकार कर लेने पर दोनों धाराओं की बाह्य दूरी रहने पर भी आन्तरिक दूरी समाप्त हो जाती है।

१. (क) समवायांग वृत्ति, पत्र १०१ : प्रथममङ्ग स्थापनामधिकृत्य, रचनापेक्षया तु द्वादशमङ्गम् ।

(ख) वही, पत्र १२१ : गणधरा. पुन. श्रुतरचनां विदधाना आचादिकमेण रचयन्ति स्थापयन्ति च ।

२. आचारांग निर्युक्ति, गाथा ८

सन्वेसि आयारो, तित्थस्स पवत्तणे पढमय.ए ।

सेसाई अंगाड, गङ्कारस आपुपुब्बीए ।

३. वही, गाथा ८ वृत्ति :

गणधरा अप्यनयवानुपुर्व्या सूत्रतया ग्रन्थन्ति ।

४. वही, गाथा ६ :

आयारो अङ्गाणं, पढम अङ्गं दुवालसण्हपि ।

इत्थ य मोक्खो वाओ, एस य सारो पवयणस्स ॥

## ६-श्रुतस्कन्ध

समवायांग में आचारांग के दो श्रुतस्कन्ध बतलाए गए हैं।<sup>१</sup> इससे यह प्रमाणित होता है कि समवायांग में प्राप्ता द्वादशांगी का विवरण भी आचार-चूला की रचना का उत्तरवर्ती है। प्रारम्भ में आचारांग के दो स्कन्ध नहीं थे। आचार्य भद्रबाहु ने आचार-चूला की रचना की, उसके पश्चात् दो स्कन्धों की व्यवस्था की गई। मूलभूत प्रथम अंग का नाम आचारांग अथवा 'ब्रह्मचर्याध्ययन' है। समवायांग में इसके अध्ययनों को 'नव ब्रह्मचर्य' कहा गया है।<sup>२</sup> आचारांग निर्युक्ति में इसे 'नव ब्रह्मचर्याध्ययनात्मक' कहा गया है।<sup>३</sup> द्वितीय श्रुतस्कन्ध के दो नाम हैं—आयारंग (आचारांग) और आचार-चूला (आचार-चूला)।

निर्युक्तिकार ने आचारांग के दस पर्यायवाची नाम बतलाए हैं—

- (१) आयार— यह आचरणीय का प्रतिपादक है, इसलिए आचार है।
- (२) आचाल— यह निविड बंधन को आचालित करता है, इसलिए आचाल है।
- (३) आगाल— यह चेतना को सम घरातल में अवस्थित करता है, इसलिए आगाल है।
- (४) आगर— यह आत्मिक-शुद्धि के रत्नों का उत्पादक है, इसलिए आगर है।
- (५) आसास— यह सन्नस्त चेतना को आश्वासन देने में क्षम है, इसलिए आश्वास है।
- (६) आयरिस— इसमें 'इति कर्तव्यता' देखी जा सकती है, इसलिए यह आदर्श है।
- (७) अङ्ग— यह अन्तस्तल में स्थित अहिंसा आदि को व्यक्त करता है, इसलिए अङ्ग है।
- (८) आर्चिण— इसमें आर्चीर्ण-धर्म का भी प्रतिपादन है, इसलिए यह आर्चीर्ण है।

१ समवायांग, प्रकीर्णक समवाय, सूत्र ८६

दो सुयक्त्रधा।

२- वही, समवाय ६, सूत्र ३

णव वमचेर पण्णत्ता।

३ आचारांग निर्युक्ति, गाथा ११.

णव वंमचेर मइओ।

(९) अजाइ— इससे ज्ञान आदि आचारो की प्रसूति होती है, इसलिए अजाति है ।

(१०) आमोक्ख<sup>१</sup>— यह बंधन-मुक्ति का साधन है, इसलिए आमोक्ख है ।

## ७-मुख्य-विभाग

आचारांग के नौ अध्ययन हैं । समवायांग<sup>२</sup> और आचारांग निर्युक्ति<sup>३</sup> में इन अध्ययनों के जो नाम प्राप्त होते हैं, उनमें थोड़ा भेद है—

समवायांग	आचारांग निर्युक्ति
सत्थपरिण्णा	सत्थपरिण्णा
लोगविजय	लोगविजय
सीओसणिञ्ज	सीओसणिञ्ज
मम्मत्त	सम्मत्त
आवन्ती	लोगसार
धूत	धुय
विमोहायण	महापरिण्णा
उवहाणसुय	विमोक्ख
महपरिण्णा	उवहाणसुय

इनमें नाम-भेद और क्रम-भेद दोनों हैं । पाँचवें अध्ययन का मूल नाम 'लोगसार' ही है । आवन्ती नाम आठि-पद के कारण हुआ है । अनुयोगद्वार में यह उदाहरण रूप में उल्लिखित है ।<sup>४</sup> निर्युक्तिकार ने भी आवन्ती को आदान-पद नाम और लोक्सार को गौण नाम माना है ।<sup>५</sup>

१. आचारांग निर्युक्ति, गाथा ७ :

आयारो आचालो, आगालो आगरो य आसासो ।

आयरिसो अंगंति य, आईण्णाअजाइ आमोक्खा ॥

२. समवायांग, समवाय ६, सू० ३ ।

३. आचारांग निर्युक्ति, गाथा ३१-३२ ।

४. अनुयोगद्वार, सू० १३० : (वृत्ति पत्र १३०) :

से किं ते आयाण पएणं ? (धम्मो संगलं, चूलिया) आवन्ती । तत्र आवन्तीत्याचारस्य पञ्चमाध्ययनं, नत्र ह्यादावेव—'आवन्ती केयावन्ती'त्यालापको विद्यत इत्यादानपदे-नैतन्नाम ।

५. आचारांग निर्युक्ति, गाथा २३८ :

आयाणपएणावन्ति, गोण्णनामेण लोगसारस्ति ।

## ८-आचार-चूला

आचारांग के साथ पाँच चूलाएँ जुड़ी हुई हैं।<sup>१</sup> उनमें से प्रथम चार चूलाओं की द्वितीय श्रुतस्कन्ध के रूप में स्थापना की गई है। पाँचवाँ चूला 'निशीथाध्ययन' की स्थापना स्वतंत्र रूप से की गई है। द्वितीय श्रुतस्कन्ध के प्रथम सात अध्ययन—यह प्रथम चूला है। मात सप्तैकक—द्वितीय चूला है। भावना—तृतीय चूला है। विमुक्ति—चतुर्थ चूला है।<sup>२</sup> इस प्रकार चार चूलाओं के सोलह अध्ययन हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं—

समवायांग <sup>३</sup>	आचारांग निर्युक्ति <sup>४</sup>
(१) पिण्डेषणा	पिण्डेषणा
(२) सिञ्जा	सेञ्जा
(३) इरिया	इरिया
(४) भासज्जयण	भासाजात
(५) वत्येसणा	वत्येसणा
(६) पायेसणा	पायेसणा
(७) ओग्गहपडिमा सत्तिकसत्तय	ओग्गहपडिमा सत्तिककग सत्त
(८) ठाण सत्तिककग	
(९) निसीहिया सत्तिककग	
(१०) उच्चारपासवण सत्तिककग	
(११) सद् सत्तिककग	
(१२) रुव सत्तिककग	
(१३) परकिरिया सत्तिककग	
(१४) अन्नमन्नकिरिया सत्तिककग	

१. आचारांग निर्युक्ति, गाथा ११ :

हवइ य सपचचूलो ।

२. वही, गाथा २६७ :

जावोग्गहपडिमाओ, पढमा सत्तिककगा बिइअ चूला ।

भावण विमुत्ति आचारपकप्पा तिन्नि इअ पंच ॥

३. समवायांग समवाय २५, सूत्र ५ ।

४. आचारांग निर्युक्ति, गाथा २८८-२९० ।

(१५) भावणा

भावणा

(१६) विमुत्ती

विमुत्ती

दोनो श्रुतस्कन्धो के अध्ययनो की संयुक्त संख्या पच्चीस होती है ।<sup>१</sup>

## ६-अवान्तर-विभाग

समवायांग में आचारांग के ८५ उद्देशन-काल वतलाए गए हैं ।<sup>२</sup> एक अध्ययन का उद्देशन-काल एक होता है, वैसे ही एक उद्देशक का भी उद्देशन-काल एक ही होता है । उद्देशक अध्ययन का अवान्तर-विभाग होता है । आचार और आचार-चूला दोनो के उद्देशको की संख्या इस प्रकार है—

अध्ययन	उद्देशक	अध्ययन	उद्देशक
१	७	६	४
२	६	१०	१
३	४	११	३
४	४	१२	३
५	६	१३	२
६	५	१४	२
७	७	१५	२
८	८	१६	२

अंतिम नौ अध्ययनो में उद्देशक नहीं है । इस प्रकार पच्चीस में से सोलह अध्ययनो के ७६ उद्देशक होते हैं ।

## १०-पद-परिमाण और वर्तमान आकार

आचारांग निर्युक्ति के अनुसार आचारांग की पद-संख्या अष्टारह हजार है । समवायांग तथा नन्दी में आचारांग के दो श्रुतस्कन्ध वतला कर फिर अष्टारह हजार पदो की संख्या वतलाई गई है । किन्तु यह पद-संख्या नव ब्रह्मचर्य अध्ययनों की है । निर्युक्तिकार ने इसका स्पष्ट उल्लेख किया है ।<sup>३</sup>

१. समवायांग, समवाय २५, सू० ५ :

आयारस्स णं भगवओ सच्चुलियायस्स पणवीसं अज्झयणा पण्णत्ता ।

२. वही, प्रकीर्णक समवाय, सू० ८६ ।

३. आचारांग निर्युक्ति, गाथा ११ .

णववभचेरमइओ, अट्टारसपयसहस्सिओ वेओ ।

अभयदेव सूरि ने समवायांग के संश्लिष्ट पाठ का विश्लेषण किया है। उन्होंने लिखा है—“दो श्रुतस्कन्ध हैं, यह आचार-चूला सहित आचार का प्रतिपादन है। उसके अष्टारह हजार पद हैं। यह पद परिमाण केवल नव ब्रह्मचर्याध्ययनात्मक आचार का है।”<sup>१</sup> सम्प्रति उपलब्ध आचारांग में अष्टारह हजार पद प्राप्त नहीं हैं। परम्परा से ऐसा माना जाता है कि रचना-काल में आचारांग का पद-परिमाण इतना था, किन्तु काल-क्रम से उसके ग्रन्थभाग का विच्छेद हो गया, इसलिए वर्तमान में पद-परिमाण भी कम हो गया है। दिगम्बर-परम्परा के अनुसार नक्षत्राचार्य, जयपाल, पाण्डुस्वामी, ध्रुवसेन और कंसाचार्य—ये पाँच आचार्य एकादशांगधर और चौदह पूर्वों के एक देश के धारक हुए हैं। सुभद्र, यशोभद्र, यशोवाह और लोहार्य—ये चार आचार्य आचारांग के धारक तथा शेष अंगों और पूर्वों के एक देश के धारक हुए हैं।<sup>२</sup> इनके पश्चात् अर्थात् वीर-निर्वाण ६८३ के पश्चात् आचारांगधर का विच्छेद हो गया। फलतः आचारांग का विच्छेद हो गया। आचारांग का विच्छेद मान लेने पर भी इस तथ्य की स्वीकृति की गई है कि उत्तरवर्ती आचार्य सभी अंगों और पूर्वों के एक देश (अवशिष्ट-भाग) के धारक हुए हैं।<sup>३</sup>

श्वेताम्बर-परम्परा में भी विष्णु सुनि के देहावमान के माथ आचारांग का विच्छेद माना गया है।<sup>४</sup> तित्थोगाली में भी आगम-विच्छेद की चर्चा प्राप्त है। उसके अनुसार आचारांग का विच्छेद वीर-निर्वाण २३०० (ई० १७७३) में बताया गया है। इन परम्पराओं से इतना ही सारांश प्राप्त किया जा सकता है कि आचारांग निर्माण-काल में जितना था, उतना आज नहीं है तथा वह सर्वथा विच्छिन्न भी नहीं। उसका कुछ विच्छेद आचारांगधर आचार्यों के अभाव में हुआ है तथा कुछ विच्छेद विस्मृतिवश व प्रतियों के प्रामाणिक सत्करणों के नष्ट होने से भी हुआ है। इतना सुनिश्चित है कि शीलाक सूरि (अस्तित्व-काल ई० ८वीं शती) को आचारांग का जो अंश प्राप्त था, उसका विच्छेद नहीं हुआ है। अतः तित्थोगाली का विवरण प्रामाणिक नहीं लगता।

१ समवायांग वृत्ति, पत्र १०१

यद् द्वौ श्रुतस्कन्धावित्यादि तदाचारस्य प्रमाणं भणितं, यत् पुनरष्टादश पदसहस्राणि तन्नावब्रह्मचर्याध्ययनात्मकस्य प्रथमश्रुतस्कन्धस्य प्रमाणम्।

२ धवला (षट्खण्डागम) भाग १, पृ० ६६।

३ वही, भाग १, पृ० ६७:

तशे सव्वेसि मग पुव्वान्ण मेग-देमो आडरिय-परपराए आगच्छमाणो धरनेणादिरियं सपत्तो।

४. अभिधान राजेन्द्र, भाग २, पृ० ३४६।

आचारांग का 'महापरिज्ञा' अध्ययन विच्छिन्न हो चुका है—यह श्वेताम्बर-आचार्यों का अभिमत है। उस अध्ययन का विच्छेद वज्रस्वामी (वि० पहली शताब्दी) के पश्चात् तथा शीलांक सूरि (वि० आठवीं शताब्दी) से पूर्व हुआ है। वज्रस्वामी ने महापरिज्ञा अध्ययन से गगनगामिनी-विद्या उद्धृत की थी।<sup>१</sup> इससे स्पष्ट है कि उनके समय में वह अध्ययन प्राप्त था। शीलांक सूरि ने उसके विच्छेद होने का उल्लेख किया है।<sup>२</sup> निर्युक्तिकार ने महापरिज्ञा अध्ययन के विषय का उल्लेख किया है<sup>३</sup> तथा उसकी निर्युक्ति भी की है।<sup>४</sup> इससे लगता है कि चर्चित अध्ययन उनके सामने था। चूर्णिकार के सामने भी महापरिज्ञा अध्ययन रहा है। उन्होंने वृत्तिकार शीलांक सूरि की तरह इसके विच्छेद होने का उल्लेख नहीं किया है। उन्होंने चर्चित अध्ययन के असमनुज्ञात होने का उल्लेख किया है।<sup>५</sup>

यह अध्ययन असमानुज्ञात क्यों और कब हुआ, इसकी चूर्णिकार ने कोई चर्चा नहीं की है। एक अनुश्रुति यह है कि 'महापरिज्ञा' अध्ययन में अनेक मंत्र और विद्याओं का वर्णन था। काल-लब्धि के संदर्भ में उसे पढ़ाने का परिणाम अच्छा नहीं लगा। इसलिए तात्कालिक आचार्यों ने उसे असमनुज्ञात ठहरा दिया—उसका पढ़ना-पढ़ाना निषिद्ध कर दिया। किन्तु निर्युक्तिकार के संदर्भ में हम इस विषय पर विचार करते हैं तो उक्त अनुश्रुति का उससे समर्थन नहीं होता। निर्युक्तिकार के अनुसार आचार-चूला के सात अध्ययन (सप्तैकक) महापरिज्ञा के सात उद्देशकों से

१ (क) आवश्यकनिर्युक्ति, गाथा ७६६, मलयगिरि वृत्ति, पत्र ३६० :

जेणुद्धरिया विज्ञा, आगासगमा महापरिज्ञाओ ।

वदामि अज्जवद्दुरं, अपच्छिमो जो सुयधराण ॥

(ख) प्रसावक चरित, वज्रप्रबन्ध, श्लोक १४८ :

महापरिज्ञाध्ययनाद्, आचारागान्तरस्थितात् ।

श्री वज्र णोद्धता विद्या, तदा गगनगामिनी ॥

२. आचारांग वृत्ति, पत्र २३५ :

अधुना सप्तमाध्ययनस्य महापरिज्ञाख्यस्यावसर, तच्च व्यवच्छिन्नमितिकृत्वाडितिलङ्घ्याष्टमस्य सम्बन्धो वाच्यः ।

३. वही, निर्युक्ति, गाथा ३४ ।

४. वही, निर्युक्ति, गाथा २५२-२५८ :

देखिए—आचारांग वृत्ति, द्वितीय श्रुतस्कन्ध का अंतिम पत्र ।

५. वही, चूर्णि, पृ० २४४ :

महापरिज्ञा ण पडिज्जइ असमणुण्णाया ।

निर्युद्ध किए गए है ।<sup>१</sup> इस उल्लेख के आधार पर सहज ही अनुमान किया जा सकता है कि जो विषय महापरिज्ञा से उद्धृत सात अध्ययनों (सप्तैकको) में है, वही विषय महापरिज्ञा अध्ययन में रहा है । ऐसी संभावना भी की जा सकती है कि महापरिज्ञा से उद्धृत सात अध्ययनों के प्रचलन के बाद उसकी आवश्यकता न रही हो, फलतः वह असमनुज्ञात हो गया हो और क्रमशः विच्छिन्न हो गया हो । अभी तक हमें अनुश्रुति और अनुमान के अतिरिक्त प्रस्तुत अध्ययन के विच्छेद का स्पष्ट प्रमाण प्राप्त नहीं है ।

## ११-विषय-वस्तु

समवायांग और नन्दी में आचारांग का विवरण प्रस्तुत किया गया है । उसके अनुसार प्रस्तुत सूत्र आचार, गोचर, विनय, वैनयिक (विनय-फल), स्थान (उत्थितासन, निषण्णासन और शयितासन), गमन, चक्रमण, भोजन आदि की मात्रा, स्वाध्याय आदि में योग-नियुजन, भाषा, समिति, गुप्ति, शय्या, उपधि, भक्त-पान, उद्गम-उत्थान, एषणा आदि की विशुद्धि, शुद्धाशुद्ध-ग्रहण का विवेक, व्रत, नियम, तप, उपधान आदि का प्रतिपादक है ।<sup>२</sup>

आचार्य समास्वाति ने आचारांग के प्रत्येक अध्ययन का विषय संक्षेप में प्रतिपादित किया है । वह क्रमशः इस प्रकार है<sup>३</sup>—

- (१) षड्जीविकाय यतना
- (२) लौकिक संतान का गौरव-त्याग
- (३) शीत-ऊष्ण आदि परीषही पर विजय
- (४) अप्रकम्पनीय-सम्यक्त्व
- (५) संसार से उद्वेग
- (६) कर्मों को क्षीण करने का उपाय
- (७) वैयावृत्य का उद्योग
- (८) तपस्या की विधि
- (९) स्त्री-संग-त्याग
- (१०) विधि-पूर्वक भिक्षा का ग्रहण
- (११) स्त्री, पशु, क्लीब आदि से रहित शय्या

१. आचारांग निर्युक्ति, गाथा २६० .

सत्तिक्कगाणि सत्तवि, निज्जूढाई महापरिन्नाओ ।

२. (क) समवायांग, प्रकीर्णक समवाय, सू० ८६ ।

(ख) नदी, सू० ८० ।

३. प्रथमरति प्रकरण, ११४-११७ ।



- (१२) गति-शुद्धि
- (१३) भाषा-शुद्धि
- (१४) वस्त्र की एपणा-पद्धति
- (१५) पात्र की एपणा-पद्धति
- (१६) अवग्रह-शुद्धि
- (१७) स्थान-शुद्धि
- (१८) निपट्या-शुद्धि
- (१९) व्युत्सर्ग-शुद्धि
- (२०) शब्दासक्ति-परित्याग
- (२१) रूपासक्ति-परित्याग
- (२२) परक्रिया-वर्जन
- (२३) अन्योन्यक्रिया-वर्जन
- (२४) पंच महाव्रतो की दृढ़ता
- (२५) सर्वसंगो से विमुक्तता

निर्युक्तिकार ने नव ब्रह्मचर्य अध्ययनों के विषय इस प्रकार बतलाए हैं—

- (१) सत्य परिणाम— जीव संयम ।
- (२) लोग विजय— बंध और मुक्ति का प्रबोध ।
- (३) सीओसणिज्ज— सुख-दुःख-तितिक्षा ।
- (४) सम्मत्त— सम्यक्-दृष्टिकोण ।
- (५) लोगसार— असार का परित्याग और लोक में सारभूत रत्नत्रयी की आराधना ।
- (६) धुय— अनासक्ति ।
- (७) महापरिणाम— मोह से उत्पन्न परीपहो और उपसर्गों का सम्यक् सहन ।
- (८) विमोक्ख— निर्याण (अंतक्रिया) की सम्यक्-आराधना ।
- (९) उवहाणमुय— भगवान् महावीर द्वारा आचरित आचार का प्रतिपादन ।<sup>१</sup>

१. आचाराग निर्युक्ति, गाथा ३३-३४ :

जियसंजमो अ लोगो जह वज्झइ जह य तं पजहियव्वं ।

सुहदुक्खतितिकत्ताविय सम्मत्त लोगसारो य ॥

निस्संगया य छट्ठे मोहसमुत्था परीसदुवसणा ।

निज्जाणं अट्टमए नवमे य जिणेण एवति ॥

आचार्य अकलङ्क के अनुसार आचारांग का समय विषय चर्या-विधान<sup>१</sup> तथा श्वराजित सूरि के अनुसार रत्नत्रयी के आचरण का प्रतिपादन है।<sup>२</sup>

जैन-परम्परा में 'आचार' शब्द व्यापक अर्थ में व्यवहृत होता है। आचारांग की व्याख्या के प्रसंग में आचार के पाँच प्रकार बतलाए गए हैं—(१) ज्ञानाचार, (२) दर्शनाचार, (३) चरित्राचार, (४) तपाचार और (५) वीर्याचार।<sup>३</sup> प्रस्तुत सूत्र में इन पाँचों आचारों का निरूपण है।

## दार्शनिक-तथ्य

तत्त्व-दर्शन की दृष्टि से आचारांग एक महत्त्वपूर्ण आगम है। आचार्य मिद्धमेन ने जैन-दर्शन के मूलभूत छह सत्य गिनाए हैं—

- |                    |                                      |
|--------------------|--------------------------------------|
| (१) आत्मा है।      | (४) भोक्ता है।                       |
| (२) वह अविनाशी है। | (५) निर्वाण है।                      |
| (३) कर्त्ता है।    | (६) निर्वाण के उपाय है। <sup>४</sup> |

इनका आचारांग में पूर्ण विस्तार मिलता है। 'आत्मा है'—यह पहला सत्य है। आचारांग का प्रारम्भ इसी सत्य की व्याख्या से हुआ है।<sup>५</sup> इसी व्याख्या के साथ आत्मा के अविनाशित्व का उल्लेख हुआ है।<sup>६</sup> 'पुरुष तू ही तेरा मित्र है'<sup>७</sup>, 'यह सत्य तू ने ही किया है'<sup>८</sup>—ये वाक्य आत्मा के कर्त्तृत्व के उद्बोधक हैं। 'अनुसवेदन' का प्रयोग हुआ है।<sup>९</sup> यह क्रिया की प्रतिक्रिया (भोक्तृत्व) का सचक

१ तत्त्वार्थ राजवातिक, १।२० :

आचारे चर्याविधानं शुद्धचण्डकपचसमितित्रिगुप्तिविकल्प कथ्यते।

२. मूलाराधना, आशवास २, श्लोक १३०, विजयोदया :

रत्नत्रयाचरणनिरूपणपरतया प्रथमभगमाचारे शब्देनोच्यते।

३. समवायाग, प्रकीर्णक समवाय, सूत्र ८६

से समासओ पचविहे ५० तं० णाणायारे दसणायारे चरित्तायारे तवायारे विरियायारे।

४. सम्मति प्रकरण, ३।५५

अत्थि अविणास-धम्मी, करेड वेएइ अत्थि निव्वारणं।

अत्थि य भोक्खोवाओ, छ सम्मत्तस्स ठाणाडं॥

५. आचारांग, १।२।

६. वही, १।४।

७. वही, ३।६२

पुरिसा। तुममेव तुम मितां।

८. वही, २।८७

तुम चेव त सल्लमाहदट्टु।

९. वही, ५।१०३।

है। आचारांग में निर्वाण को 'अनन्य-परम' कहा गया है। वहाँ सब उपाधियों समाप्त हो जाती हैं, इसलिए उससे अन्य कोई परम नहीं है। निर्वाण के उपायभूत सम्यग्-दर्शन, सम्यग्-ज्ञान और सम्यग्-चारित्र का स्थान-स्थान पर प्रतिपादन हुआ है। इन दृष्टियों से आचारांग को जैन-दर्शन का आधारभूत ग्रन्थ कहा जा सकता है।

## श्रद्धा और स्वतंत्र-दृष्टि

आचारांग श्रद्धा का समुद्र है। 'सिद्धी आणाए मेहावी'<sup>१</sup>, 'आणाए मामगं घम्म'<sup>२</sup> आदि वाक्यों में अपने आराध्य के प्रति आत्मार्पण की भावना प्रस्फुटित होती है। आचारांग की श्रद्धा में स्वतंत्र-दृष्टिकोण का स्थान असुरक्षित नहीं है। सत्य की उपलब्धि के तीन साधन बतलाए गए हैं—

१—सहसम्मति,

२—परव्याकरण और

३—श्रुतानुश्रुत<sup>३</sup>।

इन तीन साधनों में पहला साधन है—अपनी बुद्धि के द्वारा सत्य का अवबोध करना। 'मइमं पास'<sup>४</sup>—इस शब्द का प्रयोग भी दृष्टि की स्वतंत्रता को अवकाश देता है। वृत्तिकार ने इसका अर्थ किया है 'न केवलं अहमेव कथयामि त्वमेव पश्य'—केवल मैं ही नहीं करता हूँ, तू स्वयं भी देख। इस प्रकार आचारांग में श्रद्धा और स्वतंत्र-दृष्टि का सुन्दर संगम हुआ है। केवल श्रद्धा और केवल स्वतंत्र-दृष्टि—ये दोनों अतियौ हैं। इनसे अच्छे परिणाम की उपलब्धि नहीं हो सकती। श्रद्धा और स्वतंत्र-दृष्टि का समन्वय ही सत्य-संधान का समुचित मार्ग है।

## कषोपल

आचारांग सबसे प्राचीन सूत्र है, इसलिए यह उत्तरवर्ती सूत्रों के लिए 'कषोपल' के समान है। इसमें वर्णित आचार मूलभूत हैं। वे भगवान् महावीर के मौलिक आचार के सर्वाधिक निकट हैं। उत्तरवर्ती सूत्रों में वर्णित आचार उसका परिवर्धन या विकास है। आचारांग-चूला में भी आचार का परिवर्धन या विकास हुआ है। जो तथ्य मूल आचारांग में नहीं हैं, वे आचार-चूला में प्राप्त होते हैं, तब सहज ही प्रश्न खड़ा

१. आचारांग, ३।८०।

२. वही, ६।४८।

३. वही, १।३।

सह-सम्मदयाए, पर-वागारणेण, अण्णेसि वा अंतिए सोच्चा।

४. वही, ३।१२।

होता है कि उनका आधार क्या है ? दो शताब्दी से-पूर्ववर्ती साहित्य में जो तथ्य नहीं हैं, वे दो शताब्दी बाद लिखे गए साहित्य में कहाँ से आए ? इसका समाधान देने के लिए हमारे पास पर्याप्त साधन सामग्री नहीं है, फिर भी इस विषय में इतना कहा जा सकता है कि सामयिक परिस्थितियों को ध्यान में रख कर वर्तमान आचार्यों ने उत्सर्ग और अपवाद के मिद्धान्त की स्थापना और उसके आधार पर विधि-विधानों का निर्माण किया था। आचार-चूला उसी शृङ्खला की प्रथम कड़ी है। जैन-आचार की समीक्षा करते समय इस तथ्य की विस्मृति नहीं होनी चाहिए कि आचारांग में वर्णित आचार मौलिक है और महावीर-कालीन है तथा जो आचार आचारांग में वर्णित नहीं है, वह उत्तरवर्ती है तथा उसको प्रारम्भ-तिथि अन्वेषणीय है। -

## समसामयिक विचार

आचारांग में वैदिक, औपनिषदिक और बौद्ध विचारधाराओं के संदर्भ में अनेक तथ्यों का प्रतिपादन हुआ है। वैदिक-साधना को हम अरण्य-साधना कह सकते हैं। वैदिक-धारणा के अनुसार धर्म की साधना के लिए मनुष्य को अरण्य में रहना आवश्यक है। वैदिक ऋषि तत्त्वचिन्ता के लिए भी अरण्य में रहते थे। अरण्यक-साहित्य उसी अरण्यवास की निष्पत्ति है। भगवान् महावीर ने अरण्यवास की अनिवार्यता मान्य नहीं की। उन्होंने कहा—“साधना गाँव में भी हो सकती है और अरण्य में भी हो सकती है।”<sup>१</sup>

“धर्म का उपदेश जैसे बड़े लोगों को दिया जा सकता है, वैसे ही छोटे लोगों को दिया जा सकता है।”<sup>२</sup> उच्च-वर्ग को ही धर्म सुनने का अधिकार है, शूद्र को धर्म सुनने का अधिकार नहीं है, इस सिद्धान्त के प्रतिवाद में ही भगवान् महावीर ने उक्त विचार का प्रतिपादन किया था।

“न कोई व्यक्ति हीन है और न कोई व्यक्ति उच्च है”<sup>३</sup>—इस विचार का प्रतिपादन जातिवाद के विरुद्ध किया गया था।

इस प्रकार उपनिषद्, गीता और बौद्ध-साहित्य के संदर्भ में आचारांग का तुलनात्मक अध्ययन करने पर विचारधारा के अनेक मौलिक स्रोत हमें प्राप्त हो सकते हैं।

१. आचारांग, ८।१४

गामे वा अट्ठवा रण्णे, ‘धम्ममायाणह—पवेदित माट्ठेण मड्ढिया।

२. वही, २।१७४

जहा पुण्णस्स कत्थइ, तहा तुच्छस्स कत्थइ।

जहा तुच्छरम कत्थइ, तहा पुण्णस्स कत्थइ॥

३. वही, २।४६

णो हीणे, णो अइरित्ते।

## १२-रचनाकार और रचना-काल

परम्परा से यह जाना जाता है कि आचारांग की रचना गणधर सुवर्मा स्वामी ने की और तीर्थ-प्रवर्तन के समय में ही की। ऐतिहासिक तथा भाषाशास्त्रीय दृष्टि से विचार करने पर भी ऐसा प्रतीत होता है कि आचारांग सफलवध आगमों में सबसे प्राचीन है। इसकी रचना-शैली अन्य आगमों से भिन्न है। डॉ० हर्मन जेकोबी ने इसकी तुलना ब्राह्मण सूत्रों की शैली से की है। उनके अनुसार ब्राह्मण सूत्रों के वाक्य परस्पर सम्बन्धित हैं, किन्तु आचारांग के वाक्य परस्पर सम्बन्धित नहीं हैं। उन्होंने लिखा है—“आचारांग के वाक्य उस समय के प्रसिद्ध धार्मिक-ग्रन्थों से उद्धृत किए गए हैं, ऐसा लगता है। मेरा यह अनुमान गद्य के मध्य आने वाले पद्यों या पदों के संदर्भ में पूर्ण सत्य है। क्योंकि उन पद्यों या पदों की सूत्रकृतांग, उत्तराध्ययन तथा दशवैकालिक के पदों से तुलना होती है।”<sup>१</sup>

डॉ० जेकोबी का अभिमत निराधार नहीं है। द्वादशांगी पृथों से निर्यूद्ध है तथा दशवैकालिक का निर्यूहण भी पृथों से किया गया है। इसलिए बहुत संभव है कि इन सबके समान पदों का निर्यूहण-स्थल एक है।

आचारांग के वाक्य परस्पर सम्बन्धित नहीं हैं, इस अभिमत में आंशिक सच्चाई भी है और वह इसलिए है कि वर्तमान में आचारांग का खण्डित रूप प्राप्त है। अखण्ड रूप में जो सम्बन्ध-शृङ्खला प्राप्त हो सकती है, वह खण्डित रूप में नहीं हो सकती।

इसका तीसरा कारण व्याख्या-पद्धति का भेद भी है। आगम-साहित्य के व्याख्यान की दो पद्धतियाँ हैं—

(१) छिन्नच्छेदनयिक और

(२) अछिन्नच्छेदनयिक।

प्रथम पद्धति के अनुसार प्रत्येक वाक्य तथा श्लोक अपने आपमें परिपूर्ण होता है। पूर्व या अग्रिम वाक्य तथा श्लोक से उसकी सम्बन्ध-योजना नहीं की जाती।

---

१ *The Sacred Books of the East, Vol. XXII, Introduction, Page 48:* They do not read like a logical discussion, but like a Sermon made up by quotations from some then well-known sacred books. In fact the fragments of verses and whole verses which are liberally interspersed in the prose texts go far to prove the correctness of my conjecture; for many of these 'dissecta membra' are very similar to verses or Pādas of verses occurring in the Sūtrakṛtāṅga, Uttarādhyaṇa and Dasavaikāhika Sūtras.

द्वितीय पद्धति के अनुसार प्रत्येक वाक्य तथा श्लोक की पूर्व या अग्रिम वाक्य तथा श्लोक के साथ सम्बन्ध-योजना की जाती है ।

आचाराग की व्याख्या छिन्नच्छेदनयिक-पद्धति से करने पर वाक्यों की विसम्बद्धता प्रतीत होती है । यदि अच्छिन्नच्छेदनयिक-पद्धति से उसकी व्याख्या की जाए तो उसमें सर्वत्र विसम्बद्धता प्रतीत नहीं होगी ।

आचार-चूला की रचना-शैली आचाराग से सर्वथा भिन्न है । उसकी रचना भी आचाराग के उत्तर-काल में हुई है । निर्युक्तिकार ने आचार-चूला को स्थविर-कर्तृक माना है ।<sup>१</sup> चूर्णिकार ने स्थविर का अर्थ 'गणधर'<sup>२</sup> और वृत्तिकार ने 'चतुर्दश पूर्ववित्'<sup>३</sup> किया है । इन सब में स्थविर का नाम उल्लिखित नहीं है । अन्यत्र उपलब्ध माध्यो के आधार पर वहाँ 'स्थविर' शब्द चतुर्दशपूर्वी भद्रवाहु के लिए प्रयुक्त हुआ जान पड़ता है । इसकी चर्चा 'दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन' (पृष्ठ ५३-५७) में की जा चुकी है ।

आचाराग का गूढ़ अर्थ आचाराय (आचार-चूला) में स्पष्ट हो जाए, इस दृष्टि से भद्रवाहु स्वामी ने आचाराग का अर्थ 'आचाराय में प्रविभक्त' किया । निर्युक्तिकार ने पाँचो चूलाओं के निर्वहण-स्थलों का निर्देश किया है ।<sup>४</sup>

- १ आचाराग निर्युक्ति, गाथा २८७  
थेरेहिज्जुगहट्ठा, सीसहिअ होउ पागडत्थं च ।  
आयाराओ अत्थो. आयारगेमु पविभत्तो ॥
- २ आचाराग चूर्ण, पृ० ३२६  
येरा गणधरा ।
- ३ आच'राग वृत्ति, पत्र २६०  
'स्थविरै' श्रुतपुद्गैश्चतुर्दशपूर्वविद्भि ।
- ४ आचाराग निर्युक्ति, गाथा २८८-२९१  
विद्अस्म य पंचमए अट्टमगस्स विडवमि उडेमे ।  
भणिओ पिडो मिज्जा, वत्थ पाट्ठमहो चेव ॥  
पंचमसस्म चउत्थे डरिया, वणिज्जई समासेण ।  
उट्ठस्म य पंचमए, भासज्जाव विद्याणाहि ॥  
नत्तिक्काणि सत्तवि, निज्जुद्धाड महापरिन्नाओ ।  
सन्धपरिन्ना भावण, निज्जुद्धाओ धुयविमुत्तो ॥  
आयारपक्कपो पुण, पच्चक्काणस्स तइयवत्थुओ ।  
आयारनामधिज्जा, वोमडमा पाहुडच्छेया ॥

## निर्यूहण-स्थल : आचारांग

अध्ययन उद्देशक

२	५
८	२
५	४
६	५
७	१-७
१	
६	२-४

## निर्यूह-अध्ययन : अचार-चूला

अध्ययन

१, २, ५, ६, ७
१, २, ५, ६, ७
३
४
८-१४
१५
१६

प्रत्याख्यान पूर्व के तृतीय वस्तु का

आचार नामक वीसवाँ प्राश्रुत

आचार-प्रकल्प—निशीथ

नियुक्तिकार ने केवल निर्यूहण-स्थल के अध्ययनों और उद्देशको का निर्देश किया है। चूर्णिकार और वृत्तिकार ने कही-कही उनके सूत्रों का भी निर्देश किया है।

चूर्णि के अनुसार आचार-चूला के १, २, ५, ६ और ७ अध्ययनों के निर्यूहण-सूत्र ये हैं—

१—जमिणं विरुवरूवेहिं सत्येहि लोगस्स कम्मसमारंभा कज्जंति तजहा—अप्पणो से पुत्ताणं धूयाणं.....

(अध्ययन २, उ० ५, सू० १०४, पृ० ३३)।

सव्वामगंधं वा परिणाय

(अ० २, उ० ५, सू० १०८, पृ० ३३)।

वत्थं पडिग्गहं कंवलं पायपुच्छणं उग्गहं च कडासणं

(अ० २, उ० ५, सू० ११२, पृ० ३३)।

त भिक्खुं उवसं कमित्तु गाहावई बूया—आवसंतो ! समणा अहं खलु तव अट्ठाए असणं वा (४) वत्थं वा पडिग्गहं वा कंवलं वा पायपुच्छणं वा पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामित्त्वं आच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठुं चेतेमि आवसहं वा समुत्तिस्सणीमि

(अ० ८, उ० २, सू० २१, पृ० ८०-८१)।

वृत्तिकार के अनुसार—

सव्वामगंधं परिणाय निरामगंधो परिव्वए अदिस्समाणे कय-विक्कएसु

(अ० २, उ० ५, सू० १०८, पृ० ३३)।

भिक्षु परक्कमेज्जा चिट्ठेज्ज वा निसीएज्ज वा तुयट्ठिज्ज वा सुमाणंसि वा.....(यावद् वहिया विहरिज्जा)<sup>१</sup> तं भिक्षु उवसंकमित्तु गाहावती ब्रूया—  
आउसंतो समणा ! अहं खलु तव अट्ठाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं  
वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंवलं वा पायपुल्लणं वा पाणाइं भयाइं जीवाइं सत्ताइ  
समारब्भ ससुहिस्स कीय पामिच्चं—

(अ०८, उ०२, सू०२१, पृ०८०-८१) ।

वत्थं पडिग्गहं कंवलं पायपुल्लणं उग्गहं च कडामणं

(अ०२७०५, सू०११२, पृ०३३) ।

चूर्णि के अनुसार आचार-चूला के तीसरे अध्ययन के निर्यूहण-सूत्र ये हैं—

२—गामाणुगामं दूइज्ज माणस्स—

(अ०५, उ० ४, सू०६२, पृ०५६) ।

तद्दिट्ठीए.....

(अ०५, उ०४, सू०६८, पृ०६०) ।

...पलीवाहरे पासिय पाणे गच्छेज्जा—

(अ०५, उ०४, सू०६९, पृ०६०) ।

से अभिक्कममाणे.....

(अ०५, उ०४, सू०७०, पृ०६०) ।

वृत्तिकार के अनुसार—

गामाणुगामं दूइज्जमाणस्स दुल्लजातं दुप्परक्कंत—

(अ०५, उ०४, सू०६२, पृ०५६) ।

चूर्णि के अनुसार आचार-चूला के चौथे अध्ययन के निर्यूहण-सूत्र यह है—

३—पार्हणं पड्डीणं दाहिणं उदीणं आइक्खे विभए किट्ठे—

(अ०६, उ०५, सू०१०१, पृ०७५) ।

वृत्ति के अनुसार—

‘आइक्खे विभए किट्ठे वेयवी’<sup>२</sup>—

(अ०६, उ०५, सू०१०१, पृ०७५) ।

निर्युक्ति, चूर्णि और वृत्ति में प्राप्त निर्देशों के अध्ययन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि आचार-चूला आचारांग से उद्धृत नहीं है, किन्तु आचारांग के संक्षिप्त

१. यह वृत्तिगत पाठ है तथा अग्रिम पंक्तियों में भी वृत्तिगत पाठ कुछ भिन्न है ।

२. वृत्ति में पाठ इस प्रकार है—आइक्खे विट्ठेयड किट्ठे घम्मकामी ।



पाठ का विस्तार है। निर्युक्तिकार ने इस ओर संकेत भी किया है।<sup>१</sup> आचाराग्र (आचार-चूला) में जो 'अग्र' शब्द है, वह यहाँ 'उपकाराग्र' के अर्थ में प्रयुक्त है। चूर्णिकार ने उपकाराग्र का अर्थ किया है 'पूर्वोक्त का विस्तार और अनुक्त का प्रतिपादन करने वाला'। 'आचाराग्र' आचारांग में प्रतिपादित अर्थ का विस्तार और अप्रतिपादित अर्थ का प्रतिपादन करता है, इसीलिए उसे आचार का अग्र-स्थान दिया गया।<sup>२</sup>

आचार-चूला में उक्त का प्रतिपादन और अनुक्त का विस्तार—ये दोनों मिलते हैं। इसके प्रथम सात अध्ययनों में उक्त का विशदीकरण है। पन्द्रहवें अध्ययन में भगवान् महावीर का जीवन-वृत्त है, वह अनुक्त का प्रतिपादन है। प्रस्तुत अध्ययन आचार के प्रथम अध्ययन (शस्त्र-परिक्षा) से निर्युद्ध है। उसमें महावीर का जीवन-वृत्त नहीं है। महाव्रतो की भावना प्रथम अध्ययन की पुरक है।

निर्युहण के विषय में यह अनुमान भी किया जा सकता है कि आचारांग में पिण्ड, शय्या आदि से सम्बन्धित सूत्रों का अर्थांगम विस्तृत था। भद्रबाहु स्वामी ने उस अर्थांगम को सूत्रांगम का रूप देकर उसको चूला के रूप में स्थापित कर दिया। आचारप्रकल्प (निशीथ) आचार से निर्युद्ध नहीं है, किन्तु पूर्वगत आचार-वस्तु से निर्युद्ध है। दोनों में नाम साम्य है, इसीलिए आचाराग्र को आचार से निर्युद्ध कहा गया है। प्रथम दो चूलाओं में सात-सात अध्ययन रखे गए, तीसरी और चौथी चूला में एक-एक अध्ययन रखा गया। इस व्यवस्था के पीछे क्या रहस्य है, सहज ही यह जिज्ञासा उभरती है। आचारप्रकल्प के बीस उद्देशक हैं और उसे एक (पाँचवी) चूला माना गया, यह उपयुक्त है। क्योंकि वे सब एक विषय से सम्बन्धित हैं। दूसरी चूला के सात अध्ययन भी आचार के एक अध्ययन से निर्युद्ध हैं तथा पन्द्रहवों और सोलहवों भी एक-एक अध्ययन से निर्युद्ध हैं, इसलिए इन्हें एक-एक चूला मानना उचित है। प्रथम सात अध्ययनों में पाँच अध्ययनों का निर्युहण-स्थल समान है। पाँचवें और छठे का निर्युहण-स्थल भिन्न-भिन्न है। फिर भी उन्हें एक चूला में रखा गया, उसका कारण विषय-साम्य प्रतीत होता है। प्रथम चूला के सातों अध्ययन ईर्या, भापा और एषणा ममिनि से सम्बन्धित हैं, इसीलिए उन्हें एक प्रकरण में वर्गीकृत किया गया।

१. आचाराग निर्युक्ति, गाथा २८६

उवयारेण उ पगथ, आचारसेव उवरिमाइ तु।

रुखस्स म पव्वयस्स य, जह अमाइ तहेयाइ ॥

२. आचाराग चूर्णिक, पृ० २८६.

उपक राग्रं तु यत् पूर्वोक्तस्य विस्तरतोऽनुक्तस्य च प्रतिपादनं उपकारे वर्तते तद् यथा दशवैकालिकस्य चूडे, अयमेव वा श्रुतस्कन्ध आचारस्येत्यतोऽपकाराग्नेयाधिकारः।

पाँचों चूनाएँ एक ही व्यक्ति द्वारा कृत है या भिन्न-भिन्न व्यक्तियों द्वारा, यह प्रश्न भी सर्वास्थित होता है। नियुक्तिकार ने 'स्थविर' शब्द का प्रयोग बहुवचन में किया है।<sup>१</sup> उसके आधार पर आचार-चूला के अनेक-कर्तृत्व होने की कल्पना की जा सकती है। यदि स्थविर शब्द का बहुवचन सम्मान-सूचक हो, तो अनेक-कर्तृत्व की कल्पना आधारहीन हो जाती है। स्थविर शब्द का बहुवचन में प्रयोग अनेक व्यक्तियों के लिए है अथवा सम्मान-सूचन के लिए इसका निर्णय करना बड़ा कठिन है। आचारांग के विशेष उपयोगी स्थलों का विस्तार किसी एक ही व्यक्ति ने विशेष प्रयोजन की पूर्ति के लिए किया, ऐसा प्रतीत होता है।

आचारांग में पिण्डैषणा आदि के नियम बिखरे हुए थे तथा अर्थागम के द्वारा प्रतिपादित थे। उनका सूत्रागम के रूप में एकत्र संकलन करने की कल्पना आचार्य के मन में हुई और उन्होंने वैसा किया। आचार-चूला एक विषय के बिखरे हुए अर्थों का संकलन है, इसकी सूचना चूर्णिकार ने भी दी है।<sup>२</sup> आचार-चूला में जिन विषयों का निषेध किया गया है, उन्हीं को प्रायश्चित्त-विधि निशीथ में निर्दिष्ट है। आचार सम्बन्धी नियमों का संकलन और उनके अतिक्रमण का प्रायश्चित्त—इन दोनों को व्यवस्थित रूप देने की कल्पना किसी एक ही मास्तिष्क की है और वह छेदसूत्र के कर्त्ता चतुर्दशपूर्वी भद्रबाहु की ही होनी चाहिए।

श्वेताम्बर-साहित्य में निशीथ को 'कालिक सूत्र' माना है। वह अनंग-प्रविष्ट की कोटि में आता है।<sup>३</sup> चार चूलाओं को आचारांग के द्वितीय श्रुतस्कंध के रूप में मान्यता दी गई है।<sup>४</sup> वे अंग-प्रविष्ट की कोटि में मान्य हैं।

दिगम्बर-साहित्य में निशीथ की गणना आरातीय आचार्य कृत चौदह अंग-वाह्य सूत्रों में की है।<sup>५</sup> समवायांग तथा नंदी में आचारांग के पच्चीस अध्ययन बतलाए गए हैं।<sup>६</sup> यह संख्या आचारांग के नौ अध्ययनों के साथ चार आचार-चूलाओं के सोलह अध्ययनों का योग करने से निष्पन्न हो जाती है।

१. आचारांग निर्गुक्ति, गाथा २८७।

२. आचारांग चूर्ण, पृ० ३२६

पिंडीकृतो पृथक्-पृथक्, पिंडस्म पिंडेसणासु कतो, सेज्जत्थो सेज्जासु, एवं सेसाणवि।

३. नदी-सूत्र ७७।

४. वही, सूत्र ८०।

५. गोम्मटसार, ३६६-३६७।

६. (क) समवायांग, समवाय २५, सूत्र ५।

आचारस्स ण भगवओ नवुलियायस्स पणवीस अज्झयणा पण्णात्ता।

(ख) नदी, सूत्र ८०:

पणवीसं अज्झयणा।

उक्त साह्यो के आधारे पर इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि निशीथ की रचना एक स्वतंत्र ग्रन्थ के रूप में की गई तथा नंदी सूत्र की रचना (आगम संकलन-काल) तक उसका स्थान स्वतंत्र रहा फिर उसे आचारांग की एक चूला के रूप में मान्य किया गया। यह मान्यता निर्युक्ति की रचना से पूर्व स्थिर हो चुकी थी। इसीलिए निर्युक्तिकार ने पद-परिमाण की दृष्टि से आचारांग को बहु और बहुतर माना है।<sup>१</sup> शीलांक सूरि के अनुसार चार चूलाओं का योग करने पर आचारांग का पद-परिमाण 'बहु' होता है और निशीथ नामक पाँचवी चूला का योग करने पर उसका पद-परिमाण 'बहुतर' हो जाता है।<sup>२</sup> वर्तमान में निशीथ का समावेश छेद-सूत्रों के वर्ग में किया जाता है, यह भी नंदी की रचना के उत्तरकाल में हुआ है। उपयोगिता की दृष्टि से भले उसे स्वतंत्र ग्रन्थ माना जाए या छेद-सूत्रों के वर्ग में समाविष्ट किया जाए, किन्तु उसकी रचना के पीछे जो परिकल्पना है, वह शेष चार चूलाओं की परिकल्पना से भिन्न नहीं है। अतः पाँचों चूलाओं को अनेक-कर्तृक मानने की अपेक्षा एक कर्तृक मानने में अधिक संगति है।

समवायांग सूत्र में चूलिका वर्जित आचारांग, सूत्रकृतांग और स्थानांग के सत्तावन अध्ययन बतलाए गए हैं। इनमें सूत्रकृतांग के तेईस अध्ययन और स्थानांग के दस अध्ययन (स्थान) हैं। आचारांग के ६ अध्ययन, आचार-चूला के १५ अध्ययन (चौथी चूला—१६वें अध्ययन को छोड़ कर शेष तीन चूलाओं के पन्द्रह अध्ययन) इस प्रकार सत्तावन अध्ययन होते हैं।<sup>३</sup>

वृत्तिकार अभयदेव सूरि<sup>४</sup> ने विमुक्ति (चौथी चूला) का वर्जन किस आधार पर किया, यह ज्ञात नहीं है और सूत्रकार ने केवल सत्तावन की संख्या पूरी करने के लिए विमुक्ति अध्ययन का वर्जन किया या इसके पीछे कोई दूसरा दृष्टिकोण था, इसका निश्चित उत्तर नहीं दिया जा सकता।

१. आचारांग निर्युक्ति, गाथा ११ :

हवइ य सपचचूलो बहुबहुतरओ पयगोण ।

२. आचारांग वृत्ति, पत्र ६ :

तत्र चतुश्चूलिकार्त्तमकद्वितीयश्रुतस्कन्धप्रक्षेपाद्बहुः, निशीथाख्यपञ्चमचूलिकाप्रक्षेपाद्-बहुतरः ।

३. समवायांग, समवाय ५७, सूत्र १ -

तिण्ह गणिपिडगाणं आयारचुलियावज्जाण सत्तावन्न अज्झयणा पण्णत्ता, तज्जा—आयारे, सूयगडे, ठाणे ।

४. वही, वृत्ति, पत्र ६९ :

आचारस्य श्रुतस्कन्धद्वयरूपस्य प्रथमाङ्गस्य चूलिका—सर्वान्तिममध्ययनं विमुक्त्यभिधानमाचारचूलिका तद् वर्जनाम् ।

आचारांग से सीधा सम्बन्ध प्रथम तीन चूलिकाओं (१५ अध्ययनों) का है। प्रथम दो चूलिकाओं का सम्बन्ध आचार से है तथा तीसरी चूलिका (पन्द्रहवें अध्ययन) का सम्बन्ध नौवें अध्ययन में वर्णित महावीर की साधना से है। 'विमुक्ति' का आचारांग से सीधा सम्बन्ध नहीं है। इसी तथ्य की सूचना इस गणना में दी है—ऐसी कल्पना की जा सकती है।

आवश्यक चूर्ण में एक नई चर्चा प्राप्त होती है। उनके अनुसार स्थूलिभद्र की वहन यक्षा महाविदेह क्षेत्र में गई थी। जब वह बापम आ रही थी, तब सीमंथर भगवान् ने उसे दो अध्ययन दिए—(१) भावना और (२) विमुक्ति।<sup>१</sup>

आचार्य हेमचन्द्र ने परिशिष्ट पर्व में इस घटना में दो अध्ययनों का सम्बर्धन किया है। उनके अनुसार साध्वी यक्षा ने भगवान् सीमंथर से चार अध्ययन प्राप्त किए थे—(१) भावना, (२) विमुक्ति, (३) रतिवाक्या (रतिकल्प) और (४) विविक्त-चर्या। संघ ने प्रथम दो अध्ययन आचारांग की तीसरी और चौथी चूलिकाओं के रूप में और अंतिम दो अध्ययन दशवैकालिक की चूलिकाओं के रूप में स्थापित किये।<sup>२</sup>

आचारांग निर्युक्ति और दशवैकालिक निर्युक्ति में उक्त घटना का उल्लेख नहीं है। आवश्यक चूर्ण में इस घटना का समावेश कैसे हुआ और आचार्य हेमचन्द्र ने उसमें सम्बर्धन कैसे किया, इसका प्रामाण्य प्राप्त किए बिना इस बारे में कुछ कहना कठिन है। आचारांग निर्युक्ति के आधार पर इतना ही कहा जा सकता है कि ये चूलिकाएँ स्थविर कृत हैं।

## १३-आचारांग का महत्त्व

आचारांग आचार का प्रतिपादक सूत्र है, इसलिए यह सब अंगों का सार माना गया है। निर्युक्तिकार ने निर्युक्ति गाथा १६ में स्वयं जिज्ञासा की—'अंगार्णं किं सारो?' अंगों का सार क्या है? इसके उत्तर की भाषा में उन्होंने लिखा है—'आयारो' अर्थात् अंगों का सार आचार है।

आचारांग में मोक्ष का उपाय बताया गया है, इसलिए यह समूचे प्रवचन का सार है।<sup>३</sup>

१. आवश्यक चूर्ण. पृ० १८८ :

सिरिओ पन्वइतो अठभत्तट्ठेणं कालगतो महाविदेहो य पुच्छिका गता अज्जा दो वि अज्झयणाणि भावणा विमोत्ती य आणित्तणि ।

२. परिशिष्ट पर्व, ६।१।८३-१०० ।

३. आचारांग निर्युक्ति, गाथा ६ ।

आचारांग के अध्ययन से भ्रमण-धर्म ज्ञात होता है, इसलिए आचारधर पहला गणिस्थान (आचार्य होने का प्रथम कारण) कहलाता है ।<sup>१</sup>

आचारांग मुनि-जीवन का आधारभूत आगम है, इसलिए इसका अध्ययन सर्व प्रथम किया जाता था । नौ ब्रह्मचर्य अध्ययनों का वाचन किए बिना उत्तम या ऊपर के आगमों का वाचन करने पर चातुर्मासिक प्रायश्चित्त का विधान किया गया है ।<sup>२</sup>

आचारांग पढ़ने के बाद ही धर्मानुयोग, गणितानुयोग और द्रव्यानुयोग पढ़े जाते थे ।<sup>३</sup> नव दीक्षित मुनि की उपस्थापना आचारांग के शस्त्र-परिज्ञा अध्ययन द्वारा की जाती थी । वह पिण्डकल्पी (मिक्षा लाने योग्य) भी आचारांग के अध्ययन से होता था ।<sup>४</sup> आचारांग का अध्ययन किए बिना सूत्रकृत आदि अर्हों का अध्ययन विहित नहीं था ।<sup>५</sup> उक्त उद्धरणों से आचारांग का महत्त्व-ख्यापन होना है और साथ-साथ उसके प्रतिपाद्य विषय-आचार का भी महत्त्व-ख्यापन होता है ।

## १४-रचना-शैली

सूत्रकृतांग चूर्णि में सूत्र-रचना की चार शैलियों का निर्देश मिलता है—(१) गद्य, (२) पद्य, (३) कथ्य और (४) गेय ।<sup>६</sup>

१. आचारांग निर्युक्ति, गाथा १० :

आयारम्मि अहीए, ज नाओ होइ समणधम्मो उ ।

तम्हा आयारधरो, भण्णइ पढम गणिट्ठाणं ॥

२. निशीथ, ११।१ :

जे भिक्खु णव बंभचेराई अवाएत्ता उत्तम सुय वाएह, वाएंत वा सातिज्जति ।

३. निशीथ चूर्णि (निशीथ सूत्र, चतुर्थ विभाग), पृ० २५३ :

अहवा—ब्रमचेरादी आयार अवाएत्ता धम्माणुओ<sup>७</sup> इतिभासियादि वाएति, अहवा—

सूरपण्णत्तियाइगणियाणुओगं वाएति, अहवा—दिट्ठिवातं दवियाणुओगं वाएति,

अहवा—जदा चरणाणुओगो वातित्तो तदा धम्माणुओगं अवाएत्ता गणियाणुओग

वाएति, एव उक्कमो चारणियाए सव्वो वि भासियव्वो ।

४. व्यवहारभाष्य, ३।१७४-१७५ ।

५. निशीथ चूर्णि (निशीथ सूत्र, चतुर्थ विभाग), पृ० २५२ ;

अंगं जहा आयारो तं अवाएत्ता सुयगडगं वाएति ।

६. सूत्रकृतांग चूर्णि, पृ० ७ :

तं चउव्विध, तज्जहा—गद्यं पद्यं कथ्यं गेयं । गद्यं—चूर्णिग्रन्थः ब्रह्मचर्यादि, पद्यं गाथासोलसगादि, कथनीयं कथ्यं जहा उत्तरज्झयणाणि इतिभासिताणि णायानि य, गेयं णाम सरसंचारेण जघा काविलिज्जे ‘अग्र वे असासवमि संसारमि दुक्खपडराए ।’

(१) गद्य— चूर्णि ग्रन्थ, जैसे—ब्रह्मचर्य अध्ययन ।

(२) पद्य— जैसे—गाथाषोडशक ( सूत्रकृतांग के प्रथम श्रुतस्कंध का १६वाँ अध्ययन )

(३) कथ्य— कथनीय, जैसे—उत्तराध्ययन, ऋषिभाषित, शाता ।

(४) गेय— स्वरयुक्त, जैसे—कापिलीय (उत्तराध्ययन का ८वाँ अध्ययन) ।

दशवैकालिक निर्युक्ति में ग्रथित और प्रकीर्णक—इन दो शैलियों की चर्चा मिलती है ।<sup>१</sup> ग्रथित शैली का अर्थ है 'रचनाशैली' और प्रकीर्णक का अर्थ है 'कथा-शैली' ।<sup>२</sup> ग्रथित शैली के चार प्रकार बतलाए गए हैं—(१) गद्य, (२) पद्य, (३) गेय और (४) चूर्ण ।<sup>३</sup>

दशवैकालिक निर्युक्ति में जो प्रकीर्णक है, वही सूत्रकृतांग चूर्णि में कथ्य है । सूत्रकृतांग चूर्णि में ब्रह्मचर्याध्ययन (प्रथम आचारांग) की गद्य की कोटि में रखा है और उसे चूर्णि ग्रन्थ माना है । किन्तु दशवैकालिक चूर्णि में ब्रह्मचर्याध्ययन को चौर्य पद माना है ।<sup>४</sup> हरिभद्र का भी यही अभिमत है ।<sup>५</sup> आचारांग की रचना गद्य-शैली की नहीं है, इसलिए दशवैकालिक चूर्णि का अभिमत संगत लगता है ।

निर्युक्तिकार ने चौर्य-पद की व्याख्या इस प्रकार की है—“जो अर्थ-बहुल, महार्थ हृद्य, निपात और उपसर्ग से गंभीर, बहुपाद, अव्यवच्छिन्न (विराम रहित), गम और नय से विशुद्ध होता है, वह चौर्यपद है ।”<sup>६</sup> चौर्य की परिभाषा में आया हुआ 'बहुपाद'

१. दशवैकालिक निर्युक्ति, गाथा १६६ :

नोमाउगपि दुविह, गहियं च पद्मनयं च बोद्धव्यं ।

गहिय चउप्पयार, पद्मनय होइ गेगविहं ॥

२. दशवैकालिक हारिभद्रीय वृत्ति, पत्र ८७ :

ग्रथित रचित बद्धमित्यनथान्तरम्, अतोऽन्यत्प्रकीर्णकं—प्रकीर्णककथोपयोगिज्ञान-पदमित्यर्थः ।

३. दशवैकालिक निर्युक्ति, गाथा १७० :

गज्ज पज्ज गेयं, चुण्णं च चउज्विह तु गहियपय ।

तिसमुट्ठाण सव्वं, इइ वेति सलक्खणा कइणो ॥

४. दशवैकालिक चूर्णि, पृ० ७८ :

इदाणि चुण्णपद भण्णइ, जहा वमचेराणि ।

५. दशवैकालिक हारिभद्रीय टीका, पत्र ८८ :

चौर्यं पदं ब्रह्मचर्याध्ययनपदवत् ।

६. दशवैकालिक निर्युक्ति, गाथा १७४ :

अथबहुलं महत्तयं, हेउनिवाओवसगगंभीरं ।

बहुपायमवोच्छिन्नं, गमणयसुद्धं च चण्णपयं ॥

शब्द यहाँ बहुत महत्त्वपूर्ण है। जिस रचना में कोई पाद नहीं होता, वह गद्य और जिसमें गद्य भाग के साथ-साथ बहुतपाद (चरण) होते हैं, वह चौर्ण है। संक्षेप में गद्य को 'अपाद' और चौर्ण को 'बहुपाद' कहा जा सकता है। आचारांग में सैकड़ों पाद हैं, इसलिए वह चौर्णशैली की रचना है।

यह आश्चर्य की बात है कि समवायांग<sup>१</sup> तथा नन्दी<sup>२</sup> में आचारांग के संख्येय वेष्टको और संख्येय श्लोको का उल्लेख है तथा चूर्णि और वृत्ति साहित्य में इसे चौर्णपद की कोटि में रखा गया है, फिर भी इसके प्रकीर्ण पादों की ओर जैन विद्वानों ने ध्यान नहीं दिया। आचारांग में गद्य भाग के साथ-साथ विपुल मात्रा में पद्य भाग है—इस रहस्य के उद्घाटन का श्रेय डॉ० शुत्रिण को है। उन्होंने स्व-संपादित आचारांग में पद्य भाग का पृथक् अंकन किया है।

आचारांग के ८ वें अध्ययन के ७ वें उद्देशक तक की रचना चौर्णशैली में है और ८ वों उद्देशक तथा ९ वों अध्ययन पद्यात्मक है। आचार-चूला के १५ अध्ययन मुख्यतया गद्यात्मक हैं, कहीं-कहीं पद या संग्रह-गाथाएँ प्राप्त हैं। १६ वों अध्ययन पद्यात्मक है।

## १५-व्याख्या-ग्रन्थ

आचारांग के उपलब्ध व्याख्या ग्रन्थों में सर्वाधिक प्राचीन निर्युक्ति है। इसके कर्ता द्वितीय भद्रबाहु (वि० पाँचवीं छठी शताब्दी) हैं।

दूसरा स्थान चूर्णि का है। निर्युक्ति पद्यमय है और चूर्णि गद्यमय। परम्परा से इसके कर्ता जिनदास महत्तर माने जाते हैं। किन्तु ऐतिहासिक शोध के आधार पर इसकी पुष्टि नहीं हुई है। अंग शब्द का निक्षेप करते हुए चूर्णिकार ने द्रव्य-अंग की व्याख्या के लिए चत्तरंगिज्ज (उत्तराध्ययन का तृतीय अध्ययन) की भाँति—ऐसा उल्लेख किया है।<sup>३</sup> इस वाक्याश से उत्तराध्ययन और आचारांग की चूर्णि के एक कर्ता होने की कल्पना की जा सकती है। यदि आचारांग और उत्तराध्ययन के चूर्णिकार एक हों तो उनका परिचय उत्तराध्ययन चूर्णि के अनुसार 'गोपालिक महत्तर शिष्य' के रूप में मिलता है।<sup>४</sup>

१. समवायांग, प्रकीर्णक समवाय, सूत्र ८९।

२. नन्दी, सूत्र ८०:

संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा।

३. आचारांग चूर्णि, पृ० ४।

दम्बंग जह्वा चत्तरंगिज्जे।

४. उत्तराध्ययन चूर्णि, पृ० २३३।

आचारांग का तीसरा व्याख्या-ग्रन्थ 'टीका' है। चूर्णि और वृत्ति—ये दोनों निर्युक्ति के आधार पर चलते हैं। निर्युक्ति का शब्द-शरीर संक्षिप्त है, किन्तु दिशा-सूचन व ऐतिहासिक दृष्टि से वह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। चूर्णि का शब्द-शरीर टीका की अपेक्षा संक्षिप्त है, किन्तु अर्थाभिव्यक्ति व ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत मूल्यवान् है। टीका का शब्द-शरीर उपलब्ध व्याख्या-ग्रन्थों में सबसे बड़ा है। इसके कर्त्ता शीलाङ्क सूरि हैं। उन्होंने अपना दूसरा नाम 'तत्त्वादित्य' बतलाया है।<sup>१</sup> आचारांग की पुष्पिका के अनुसार उन्होंने आचारांग (प्रथम श्रुतस्कन्ध) की टीका गुप्त सम्बत् ७७२, भाद्र शुक्ला-पंचमी के दिन 'गम्भूता' (उत्तर गुजरात में घाटण का पार्श्ववर्ती 'गांभू' नामक गाँव) में पूर्ण की थी।<sup>२</sup>

शीलाङ्क सूरि का अस्तित्व-काल ई० स० ८ वीं शती माना जाता है।<sup>३</sup>

दीपिका : रचयिता—अंचल गच्छ के मेरुतंग सूरि के शिष्य माणिक्यशेखर सूरि।

दीपिका : रचयिता—खरतर गच्छ के जिनसमुद्र सूरि के पट्टधर जिनहंस सूरि।

अवचूरि : रचयिता—हर्षकल्लोल के शिष्य लक्ष्मीकल्लोल। रचना वि० सं०

१६०६ (?)।

बालाबबोध : रचयिता—पार्श्वचन्द्र सूरि।

पद्यानुवाद और वार्तिक : इन दोनों के कर्त्ता श्रीमज्जयाचार्य (विक्रम की २० वीं शती) हैं। पद्यानुवाद—आचारांग के प्रथम श्रुतस्कन्ध की राजस्थानी में पद्यात्मक व्याख्या है। वार्तिक आचार-चूला पर लिखा गया है। उसके चर्चास्पद विषयों के स्पष्टीकरण के लिए प्रस्तुत वार्तिक बहुत महत्त्वपूर्ण है।

ऊपर की पंक्तियों में हमने व्याख्या-ग्रन्थों की चर्चा की है। प्रस्तुत शीर्षक में अनुपलब्ध व्याख्या-ग्रन्थों पर दृष्टि डाल लेना आवश्यक है। आर्य गन्धहस्ती ने

१ आचारांग वृत्ति, पत्र २८७ :

ब्रह्मचर्याख्यश्रुतस्कन्धस्य निर्वृत्ति कुलीनशीलाचार्येण तत्त्वादित्यापरनाम्ना बाहुरिसाधुसहायेन कृता टीका परिसमाप्ता।

२ वही, पत्र २८७ :

द्वाप्तसप्तत्यधिकेषु हि शतेषु, सप्तसु गतेषु गुप्तानाम्।

संवत्सरेषु मासि च, भाद्रपदे शुक्लपञ्चम्याम्॥

शीलाचार्येणकृता, गम्भूतायां स्थितेन टीकैषा।

सम्यगुपपुज्य शोध्य, मात्सर्यविनाकृतैरार्यैः॥

३ जीतकल्पसूत्र, प्रस्तावना, पृ० ११-१५ :

पुष्पिकागत रचना-सर्वत् भिन्न-भिन्न आदर्शों में भिन्न-भिन्न प्रकार का मिलता है। देखिए—'जैन आगम साहित्य भां गुजरात', पृ० १७६।



आचारांग के प्रथम अध्ययन 'शस्त्र-परिज्ञा' की टीका में उसी का संक्षिप्त सार संकलन किया है। आचारांग टीका में उन्होने लिखा है—

शस्त्रपरिज्ञाविवरणमतिबहुगहनं च गन्धहस्तिकृदम् ।

तस्मात् सुखबोधार्थं गृह्णाम्यहमज्ञसा सारम् ॥३॥

(आचारांग वृत्ति, पत्र १)

शस्त्रपरिज्ञाविवरणमतिगहनमितीव किल घृतं पूज्यैः ।

श्रीगन्धहस्तिमिश्रैर्विवृणोमि ततोऽहमवशिष्टम् ॥२॥

(आचारांग वृत्ति, पत्र ७४)

हिमवंत थेरावली के अनुसार आर्य गन्धहस्ती ने वारह अङ्गो पर विवरण लिखा था। आचारांग सूत्र का विवरण विक्रम सम्वत् के दो सौ वर्ष बाद लिखा गया।<sup>१</sup> ऊपर उद्धृत आचारांग वृत्ति के श्लोकों से इस अभिमत की पुष्टि नहीं होती कि आर्य गन्धहस्ती ने समग्र आचारांग पर विवरण लिखा था।

## १६-उपसंहार

प्रस्तुत भूमिका में आचार और आचार-चूला का संक्षिप्त पर्यालोचन किया गया है। भाषाशास्त्रीय अध्ययन, तुलनात्मक अध्ययन, छन्द-विमर्श, व्याकरण-विमर्श आदि-आदि विषयों की विशद समीक्षा अपेक्षित है। इसकी सम्पूर्ति 'आचारांग : एक समीक्षात्मक अध्ययन' में की जाएगी।

सागर-सदन

अहमदाबाद

१५ अगस्त, १९६७

आचार्य तुलसी

## भूमिका में प्रयुक्त ग्रन्थ-सूची

अनुयोगद्वार

अभिधानराजेन्द्र कोष

अभियसमयालंकार की टीका (बौद्ध संस्कृत-ग्रन्थ)

आचारांग ('आयारो तह आयार-चूला' में मुद्रित)

आचारांग चूर्ण

आचारांग निर्युक्ति

आचारांग वृत्ति

आवश्यक चूर्ण

आवश्यक निर्युक्ति

उत्तराध्ययन ('दसवेअलियं तह उत्तरज्झयणाणि' में मुद्रित)

उत्तराध्ययन चूर्ण

गोम्मटसार

जयधवला

जितकल्पसूत्र

तत्त्वार्थ भाष्य

तित्योगाली

तत्त्वार्थ राजवार्तिक

दशवैकालिक चूर्ण

दशवैकालिक निर्युक्ति

दशवैकालिक, हारिमद्वीय टीका

धवला (पट्खण्डागम)

निशीथ

निशीथ चूर्ण

नंदी

नंदी, मलयगिरि वृत्ति

( ख )

परिशिष्ट पर्व

पाणिनीय शिक्षा

प्रभावक चरित

प्रशमरति प्रकरण

प्राकृत साहित्य का इतिहास

मूलाराधना

विशेषावश्यक भाष्य

व्यवहार भाष्य

सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र ( डॉ० नलिनाक्ष दत्त का देवनागरी संस्करण, रायल  
एशियाटिक सोसायटी, कलकत्ता, सन् १९५३ )

सम्मति तर्क प्रकरण

समवायांग (संशोधित प्रति)

समवायांग वृत्ति

सर्वार्थसिद्धि

सूत्रकृतांग चूर्ण

सेक्रेड बुक्स ऑफ दी ईस्ट, वी खं० २२, ४५

हिमवन्त थेरावली

आयारो  
तह  
आयार-चूला



## आयारो : विसय-सूची

१. सत्थ-परिणा	जीवसंयम-निरुवणं	पृ० १-२२
पढमो उद्देशो	जीवाणं अत्थित्थ-पदं	१
वीओ उद्देशो	पुढवीकाय-परुवणा-पदं	३
तइओ उद्देशो	आउकाय-परुवणा-पदं	७
चउत्थो उद्देशो	तेउकाय-परुवणा-पदं	१०
पंचमो उद्देशो	वणस्सइकाय-परुवणा-पदं	१३
छट्ठो उद्देशो	तसकाय-परुवणा-पदं	१६
सत्तमो उद्देशो	वाउकाय-परुवणा-पदं	१६
२. लोग-विजओ	सद्दादि विसयलोग-विजय-निरुवणं	२३-३८
पढमो उद्देशो	सयणासत्ति-निसेध-पदं	२३
वीओ उद्देशो	संजमदढत्त-पदं	२६
तइओ उद्देशो	माणवज्जण-अत्थनिस्सारता-पदं	२८
चउत्थो उद्देशो	भोग-भोगी-अवाय-पदं	३१
पंचमो उद्देशो	लोगनिस्सा-पदं	३३
छट्ठो उद्देशो	लोगं पइ अममाइय-पदं	३६
३. सीओसणिज्जं	सुह-दुक्ख-तित्तिक्खा-निरुवणं	३९-४६
पढमो उद्देशो	सुत्त-जागरण-पदं	३९
वीओ उद्देशो	सुत्ताणं दुक्खाणुभव-पदं	४१
तइओ उद्देशो	'न दुक्खसहणमित्तेण समणो होइ'	
	त्ति निरुवण-पदं	४३
चउत्थो उद्देशो	कसाय-पाव-विरइ-संजम-मोक्ख-पदं	४५
४. सम्मत्तं	सम्मत्त-निरुवणं	४७-५३
पढमो उद्देशो	सम्मावाय-पदं—सम्मदंसण-पदं	४७
वीओ उद्देशो	धम्मप्पवाइय-परिक्खा-पदं—सम्मनाण-पदं	४८
तइओ उद्देशो	वालतवेण मोक्ख-निसेध-पदं—सम्मत्तव-पदं	५१
चउत्थो उद्देशो	समासवयणेण नियमण-पदं—सम्मचरित्त-पदं	५२

५. लोग-सारो	लोग-सार-तत्त-निरुवणं	५४-६५
पढमो उद्देसो	हिंसग-विसयारंभण-एगचर-पदं	५४
बीओ उद्देसो	विरयाविरय-पदं	५६
तइओ उद्देसो	अपरिग्गह-निव्विण्णकामभोग-पदं	५७
चउत्थो उद्देसो	अव्वत्त-एगचर-पच्चवाय-पदं	५९
पंचमो उद्देसो	हरउवमा-तवसंजमगुत्ति-निस्संगया-पदं	६१
छट्ठो उद्देसो	उम्मग्ग-रागदोसवज्जणा-पदं	६३
६. धुयं	निस्संगया-निरुवणं	६६-७७
पढमो उद्देसो	सयण-विधूणण-पदं	६६
बीओ उद्देसो	कम्म-विधूणण-पदं	६९
तइओ उद्देसो	उवगरण-सरीर-विधूणण-पदं	७१
चउत्थो उद्देसो	गारवत्तिग-विधूणण-पदं	७३
पंचमो उद्देसो	उवसग्ग-सम्माण-विधूणण-पदं	७५
७. ×	×	
८. विमोक्खो	निज्जाण-निरुवणं	७८-९७
पढमो उद्देसो	असमणुन्न-विमोक्ख-पदं	७८
बीओ उद्देसो	अकप्पिय-विमोक्ख-पडिसेहण-	
	सब्भावकहण-पदं	८०
तइओ उद्देसो	अंगचेट्ठं पइ संकियस्स संकानिवारण-पदं	८३
चउत्थो उद्देसो	वेहाणस-गिद्धपिट्ठ-भरण-पदं	८५
पंचमो उद्देसो	गेलण्ण-भत्तपरिण्णा-पदं	८६
छट्ठो उद्देसो	एगत्त-इंगिणि-भरण-पदं	८९
सत्तमो उद्देसो	भिक्खुडिमा-पाओवगमण-पदं	९१
अट्ठमो उद्देसो	अणुपुव्व विहारिणं सलेहण-अणसण-पदं	९४
९. उवहाण-सुयं	महावीराइण्णसाहणा-निरुवणं	९८-१०६
पढमो उद्देसो	भगवओ चरिआ-पदं	९८
बीओ उद्देसो	भगवओ सेज्जा-पदं	१०१
तइओ उद्देसो	भगवओ परीसह-उवसग्ग-पदं	१०३
चउत्थो उद्देसो	भगवओ अतिगिच्छा-पदं	१०४

## आयार-चूला : विसय-सूची

१. पिंडेसणा	सूत्र क्रमांक	पृ० १११-१६९
पढमो उद्देसो		१११-११७
सचित्त-संसत्त-असणादि-पदं	१-३	१११
ओसहि-आदि-पदं	४-७	११२
अण्णउत्तिय-गारत्तिय-सद्धि-पद	८-११	११३
अस्सिपडियाए-पदं	१२-१५	११४
समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-पदं	१६-१८	११६
कुल-पदं	१९-२०	११७
वीओ उद्देसो		११७-१२२
अट्टमी-आदि-पव्व-पदं	२१-२२	११७
कुल-पदं	२३	११८
महामह-पदं	२४-२५	११९
संखडि-पदं	२६-३०	१२०
तइओ उद्देसो		१२२-१२६
संखडि-पद	३१-३५	१२२
विचिगिन्हा-समावण-पदं	३६	१२५
सव्वभङ्गाभायाए-पदं	३७-४०	१२५
कुल-पदं	४१	१२६
चउत्थो उद्देसो		१२६-१३०
संखडि-पदं	४२-४३	१२६
खीरिणीगावी-पद	४४-४५	१२८
माइट्ठाण-पदं	४६-४८	१२९



## पंचमो उद्देशो

१३०-१३५

माइट्टाण-पदं	४६	१३०
विसमट्टाण-परक्कम-पदं	५०-५१	१३१
वियाल-परक्कम-पदं	५२	१३२
विसमट्टाण-परक्कम-पदं	५३	१३२
कटक-बोदिया-पदं	५४	१३३
अणावायमसंलोय-चिट्ठण-पदं	५५-५६	१३३
परिभायण-संभुजण-पदं	५७	१३४
पुब्बपविट्ठसमणादि-उवाइक्कमण-पदं	५८-६०	१३५

## छट्टो उद्देशो

१३५-१४२

भत्तट्ठ-समुदितपाणाणं उज्जुगमण-पदं	६१	१३५
गाहावइकुल-पविट्ठस्स अकरणिज्ज-पदं	६२	१३६
पुरेक्कम-आदि-पदं	६३-८१	१३७
पिड्डय-आदि-कोट्टण-पदं	८२	१४०
लौण-पदं	८३	१४१
अगणि-णिक्खित्त-पदं	८४-८६	१४१

## सत्तमो उद्देशो

१४२-१४८

मालोहड-पदं	८७-८९	१४२
मट्ठिओलित्त-पदं	९०-९१	१४३
पुढविकाय-पइट्ठिय-पदं	९२	१४४
आउकाय-पइट्ठिय-पदं	९३	१४४
अगणिकाय-पइट्ठिय-पदं	९४-९५	१४४
अच्चुसिण-वीयण-पदं	९६	१४५
वणस्सइकाय-पइट्ठिय-पदं	९७	१४६
तसकाय-पइट्ठिय-पदं	९८	१४६
पाणग-जाय-पदं	९९-१०३	१४६

अद्वमो उद्देशो		१४८-१५५
पाणग-जाय-पदं	१०४	१४८
गंध-आघायण-पदं	१०५	१४९
सालुय-आदि-पदं	१०६	१५०
पिप्पलि-आदि-पदं	१०७	१५०
पलंद-जाय-पदं	१०८	१५०
पदाल-जाय-पदं	१०९	१५१
सरडुय-जाय-पदं	११०	१५१
मंथु-जाय-पदं	१११	१५१
आमडाग-आदि-पदं	११२	१५२
उच्छु-मेरग-आदि-पदं	११३	१५२
उप्पल-आदि-पदं	११४	१५२
अगवीय-आदि-पदं	११५	१५३
उच्छु-पदं	११६	१५३
लसुण-पदं	११७	१५४
अत्थिय-आदि-पद	११८	१५४
कण-आदि-पदं	११९-१२०	१५४
नवमो उद्देशो		१५५-१५९
पच्छाकम्म-पद	१२१	१५५
पुरापच्छासंथुय-कुल-पदं	१२२-१२३	१५६
नन्नत्थ-गिलाणाए-पदं	१२४	१५७
माइट्ठाण-पदं	१२५-१२७	१५८
बहिधानीहड-पद	१२८-१२९	१५९
दसमो उद्देशो		१६०-१६४
माइट्ठाण-पदं	१३०-१३२	१६०
बहु-उज्झिय-धम्मिय-पदं	१३३-१३५	१६१
अजाणया लोण-दाण-पदं	१३६	१६३

एगारसमो उद्देसो	१६४-१६९
माइट्ठाण-पदं	१३८ १६४
मणुण-भोयण-जाय-पदं	१३९ १६५
पिडेसणा-पाणेसणा-पदं	१४०-१५५ १६५
२. सेज्जा	१७०-१९९
पढमो उद्देसो	१७०-१७९
उवस्सयएसणा-पदं	१-२ १७०
अस्सिपडियाए-उवस्सय-पदं	३-६ १७०
समण-माहणाइ समुद्दिस्स-उवस्सय-पदं	७-९ १७२
परिकम्मिय-उवस्सय-पदं	१०-१३ १७३
बहिया निस्सारिय-उवस्सय-पदं	१४-१७ १७४
अंतलिक्ख-जाय-उवस्सय-पदं	१८-१९ १७५
सागारिय-उवस्सय-पदं	२०-२६ १७६
बीओ उद्देसो	१८०-१८८
सागारिय-उवस्सय-पदं	२७-३० १८०
तण-पलालाच्छाइय-उवस्सय-पदं	३१-३२ १८२
वज्जियव्व-उवस्सय-पदं	३३-३४ १८२
उवट्ठाण-किरिया-पदं	३५ १८३
अभिवक्त-किरिया-पदं	३६ १८३
अणभिवक्त-किरिया-पदं	३७ १८४
वज्ज-किरिया-पदं	३८ १८५
महावज्ज-किरिया-पदं	३९ १८६
सावज्ज-किरिया-पदं	४० १८६
महासावज्ज-किरिया-पदं	४१ १८७
अप्पसावज्ज-किरिया-पदं	४२-४३ १८८

तइओ उद्देसो		१८८-१९९
उवस्सय-छलणा-पदं	४४	१८८
उवस्सय-जयण-पदं	४५-४६	१८९
उवस्सय-जायणा-पदं	४७	१९०
सेज्जायर-णाम-गोय-पदं	४८	१९१
उवस्सय-विसुद्धि-पदं	४९-५६	१९१
संथारग-पदं	५७-६१	१९३
संथारग-पडिमा-पदं	६२-६७	१९४
संथारग-पच्चप्पण-पदं	६८-६९	१९६
उच्चार-पासवण-भूमि-पदं	७०-७१	१९७
सयण-विहि-पदं	७२-७७	१९७
३. इरिया		२००-२२०
पढमो उद्देसो		२००-२०८
वासावास-पदं	१-३	२००
गामाणुगाम-विहार-पदं	४-१३	२०१
नावा-विहार-पदं	१४-२३	२०५
बीओ उद्देसो		२०८-२१३
नावा-विहार-पदं	२४-३३	२०८
जवासंतारिम-उदग-पदं	३४-४०	२१०
विसमंद्वाण-परक्कम-पदं	४१-४३	२१२
अभिणिचारिय-पदं	४४	२१२
पाडिपहिय-पदं	४५-४६	२१३
तइओ उद्देसो		२१४-२२०
अंगचेट्ठापुव्वं निष्काण-पदं	४७-४९	२१४
आयरिय-उवज्जाय-सद्धि-विहार-पदं	५०-५१	२१५
आहारातिणिय-सद्धि-विहार-पदं	५२-५३	२१६

पाडिपहिय-पदं	५४-५८	२१६
वियाल-पदं	५६	२१६
आमोसग-पदं	६०-६२	२१६

#### ४. भासजातं २२१-२३३

##### पढमो उद्देशो २२१-२२६

वइ-अणायार-पदं	१-२	२२१
सोडस-वयण-पदं	३-४	२२१
अणुवीइ-णिट्ठाभासि-पदं	५	२२२
भासाजात-पदं	६-६	२२३
सावज्ज-असावज्ज-पदं	१०-११	२२३
आमतणीभासा-पदं	१२-१५	२२४
विधि-निसिद्ध भासा-पदं	१६-१८	२२५

##### बीओ उद्देशो २२६-२३३

कक्कस-भासा-पदं	१६	२२६
अकक्कस-भासा-पदं	२०	२२७
सावज्ज-असावज्जभासा-पदं	२१-३७	२२८
अणुवीइ-णिट्ठा-भासि-पदं	३८-३९	२३३

#### ५. वत्थेसणा २३४-२५१

##### पढमो उद्देशो २३४-२४६

वत्थजाय-पदं	१-३	२३४
अद्धजोयण-मेरा-पदं	४	२३४
अस्सिपडियाए-पदं	५-८	२३४
समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-वत्थ-पदं	९-११	२३६
भिक्षु-पडियाए-कीयमाइ-पदं	१२-१३	२३७
वत्थ-पदं	१४-१५	२३७

वत्थ-पडिमा-पदं	१६-२१	२३८
संगार-वयण-पदं	२२	२४०
वत्थ-आघसण-पदं	२३	२४१
वत्थ-उच्छोलण-पदं	२४	२४२
वत्थ-विसोहण-पदं	२५	२४२
वत्थ-पडिलेहण-पदं	२६-२७	२४३
सअंडाइ-वत्थ-पदं	२८	२४३
अप्पंडाइ-वत्थ-पदं	२९-३०	२४४
वत्थ-परिकम्म-पदं	३१-३४	२४४
वत्थ-आयावण-पदं	३५-४०	२४५
बीओ उद्देसो		२४६-२५१
णो घोएज्जा-एएज्जा-पदं	४१	२४६
सव्वचीवरमायाए पदं	४२-४५	२४६
पाडिहारिय-वत्थ-पदं	४६-४७	२४७
वत्थ-विकिया-पदं	४८	२४९
आमोसग-पदं	४९-५१	२४९
६. पाएसणा		२५२-२६९
पढमो उद्देसो		२५२-२६४
पायजाय-पद	१	२५२
एगपाय-पद	२	२५२
अद्धजोयण-मेरा-पद	३	२५२
अस्सिपडियाए-पदं	४-७	२५२
समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-पाय-पद	८-१०	२५४
भिक्खु-पडियाए-कीयमाइ-पदं	११-१२	२५५
पाय-पदं	१३	२५५
पाय-वघण-पद	१४	२५६
पाय-पडिमा-पद	१५-२०	२५६

संगार-वयण-पदं	२१	२५८
पाय-अठभंगण-पदं	२२	२५८
पाय-आघंसण-पदं	२३	२५९
पाय-उच्छोलण-पदं	२४	२५९
पाय-विसोहण-पदं	२५	२६०
सपाण-भोयण-पडिगह-पदं	२६	२६०
पडिगह-पडिलेहण-पदं	२७-२८	२६१
सअंडाड-पाय-पदं	२९	२६१
अप्पंडाड-पाय-पदं	३०-३१	२६२
पाय-परिकम्म-पदं	३२-३७	२६२
पाय-आयावण-पदं	३८-४३	२६३
बीओ उद्देसो		२६४-२६९
पडिगह-पेहा-पदं	४४-४५	२६४
सीओदग-पदं	४६	२६५
उदउल्ल-पदं	४७-४९	२६५
सपडिगह-मायाए-पदं	५०-५३	२६५
पडिहारिय-पडिगह-पदं	५४-५५	२६६
पायविकिया-पदं	५६	२६७
आमोसग-पदं	५७-५९	२६८
७. ओगह-पडिमा		२७०-२८३
पढमो उद्देसो		२७०-२७५
अदिन्नादाण-पदं	१-२	२७०
ओगह-पदं	३-२२	२७०
बीओ उद्देसो		२७५-२८३
ओगह-पदं	२३-२४	२७५
अंव-पदं	२५-३१	२७६

उच्छु-पदं	३२-३८	२७८
लसुण-पद	३६-४५	२७६
ओग्गह-पदं	४६-४७	२८०
ओग्गह-पडिमा-पदं	४८-५६	२८१
पचविह-ओग्गह-पदं	५७-५८	२८३
८. ठाण-सत्तिक्कयं		२८४-२९२
ठाण-एसणा-पदं	१-२	२८४
अस्मिपडियाए-ठाण-पदं	३-६	२८४
समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-ठाण-पदं	७-६	२८६
परिकम्मिय-ठाण-पदं	१०-१३	२८७
वहियानिस्सारिय-ठाण-पद	१४-१५	२८८
ठाण-पडिमा-पदं	१६-२१	२८८
सयारग-पच्चप्पण-पदं	२२-२३	२८९
उच्चार-पासवण-भूमि-पदं	२४-२५	२९०
ठाण-विहि-पदं	२६-३१	२९०
९. णिसीहिया-सत्तिक्कयं		२९३-२९७
णिसीहिया-एसणा-पदं	१-२	२९३
अस्मिपडियाए णिसीहिया-पदं	३-६	२९३
समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-णिसीहिया-पदं	७-६	२९५
परिकम्मिय-णिसीहिया-पदं	१०-१३	२९६
वहियानिस्सारिय-णिसीहिया-पदं	१४-१७	२९७
१०. उच्चार-पासवण-सत्तिक्कयं		२९८-३०४
पाय-पुच्छण-पदं	१	२९८
थंडिल-पदं	२-२६	२९८
११. सह-सत्तिक्कयं		३०५-३१०
वितत-सह-कण्णसाय-पडिया-पदं	१	३०५



तत-सद्-कणसोय-पडिया-पदं	२	३०५
ताल-सद्-कणसोय-पडिया-पदं	३	३०५
भुसिर-सद्-कणसोय-पडिया-पदं	४	३०६
विविह-सद्-कणसोय-पडिया-पदं	५-१८	३०६
सदासत्ति-पदं	१६-२०	३०६
१२. रूव-सत्तिक्कयं		३११-३१५
विविह-रूव-चक्खुदंसण-पडिया-पदं	१-१५	३११
रूवासत्ति-पदं	१६-१७	३१४
१३. परकिरिया-सत्तिक्कयं	}	३१६-३२८
१४. अन्नुन्नकिरिया-सत्तिक्कयं		
किरिया-पदं	१	३१६
पाद-परिकम्म-पदं	२-११	३१६
काय-परिकम्म-पदं	१२-१८	३१७
वण-परिकम्म-पदं	१६-२७	३१८
गंड-परिकम्म-पदं	२८-३४	३१९
मल-णीहरण-पदं	३५-३६	३२१
वाल-रोम-पदं	३७	३२१
लिक्ख-जूया-पदं	३८	३२१
पाद-परिकम्म-पदं	३९-४८	३२१
काय-परिकम्म-पदं	४९-५५	३२३
वण-परिकम्म-पदं	५६-६४	३२४
गंड-परिकम्म-पदं	६५-७१	३२५
मल-णीहरण-पदं	७२-७३	३२६
वाल-रोम-पदं	७४	३२७
लिक्ख-जूया-पदं	७५	३२७
आभरण-आविधण-पदं	७६	३२७
पाद-परिकम्म-पदं	७७-७८	३२८
तिगिच्छा-पदं	७९-८०	३२८

१५. भावणा

३२६-३५५

भगवओ-चवणादि-णक्खत्त-पद	१-२	३२६
गब्भ-पदं	३	३२६
चवण-पदं	४	३३०
गब्भ-साहरण-पदं	५-७	३३०
जम्म-पदं	८-११	३३१
नामकरण-पदं	१२-१३	३३२
बाल-पद	१४	३३३
विवाह-पदं	१५	३३३
नाम-पदं	१६	३३३
परिवार-पदं	१७-२४	३३४
माउ-पिउ-काल-पदं	२५	३३५
अभिणिक्खमणाभिप्पाय-पद	२६	३३६
देवागमण-पद	२७	३३७
अलकरण-सिबियाकरण-पदं	२८	३३७
अभिणिक्खमण-पद	२९	३४०
लोय-पद	३०-३१	३४१
समाइय-गहण-पद	३२	३४१
मणपज्जवनाण-लद्धि-पद	३३	३४२
अभिग्गह-पद	३४	३४२
विहार-पद	३५-३७	३४३
केवलनाण-लद्धि-पद	३८-३९	३४३
देवागमण-पदं	४०-	३४४
घम्मोवदेस-पदं	४१-४२	३४५
सभावण-महव्वय-पदं	४३-७८	३४५

१६. विमुत्ती

३५६-३५८

अणिच्च-पदं	१	३५६
पव्वय-दिट्ठंत-पदं	२-३	३५६
रुप्प-दिट्ठंत-पदं	४-८	३५६
भुजंगतय-दिट्ठंत-पद	९	३५७
समुद्द-दिट्ठंत-पदं	१०-१२	३५८

## संकेत-निर्देशिका

- • ये दोनो बिन्दु पाठ-पूर्ति के द्योतक हैं। पाठ-पूर्ति के प्रारम्भ में भरे बिन्दु (●) और उसके समापन में रिक्त बिन्दु (○) का संकेत किया गया है।
- (?) कोष्ठकवर्ती प्रश्न-चिन्ह आदर्शों में अप्राप्त किन्तु पूर्व पद्धति के अनुसार आवश्यक पाठ के अस्तित्व का सूचक है। देखें, पृष्ठ १७४, सूत्र १४
- ( ) क—पूर्व पद्धति के अनुसार आदर्शों में प्राप्त किन्तु प्रस्तुत प्रकरण में अनावश्यक पाठ को कोष्ठक में रखा गया है। देखें, पृष्ठ १७१, सूत्र ५।
- ( ) ख—संग्रह गाथाएँ भी कोष्ठक के अन्तर्गत रखी गई हैं। देखें, पृष्ठ १५, सूत्र २४
- ( ) ग—तेरहवें और चौदहवें अध्ययन में भेद करने वाले शब्द कोष्ठक में रखे गए हैं।
- ( ) कोष्ठकवर्ती संख्यांक पूर्ति-आधार-स्थल के अध्ययन और सूत्रांक के सूचक हैं। देखें, पृष्ठ १६६, सूत्र ५१
- (जाव २।३६) कोष्ठक में जाव के आगे जो सूत्रांक है, वे पूर्ति-आधार-स्थल के अध्ययन और सूत्रांक के सूचक हैं। देखें, पृष्ठ १८४, सूत्र ३७
- (जाव) एक ही सूत्र में समान पाठ-पद्धति के सूचक जाव शब्दों में से एक की पूर्ति की गई है तथा पुनरागत जाव शब्द के लिए कोष्ठक का प्रयोग किया गया है। देखें, पृष्ठ १६७, सूत्र १४४।
- '' यह दो या उससे अधिक शब्दों के स्थान पर पाठान्तर होने का सूचक है। देखें, पृष्ठ १, सू० २८।
- गहरे अक्षर पद्य-भाग के सूचक हैं। देखें, पृष्ठ ७, सूत्र ३५
- पाठ के संलग्न दिया गया एक बिन्दु अपूर्ण पाठ का द्योतक है।
- × क्रास पाठ नहीं होने का द्योतक है।
- वृपा० वृत्ति सम्मत पाठान्तर।
- चूपा० चूर्ण सम्मत पाठान्तर।
- असण वा ४ } असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा
- असण वा (४) }

आयारो

.

.



पदमं अज्मयणं

## सत्थ-परिण्णा

पढमो उद्देसो

१-सुयं मे आउसं । तेणं भगवया एवमक्खायं<sup>१</sup>—

इहमेगेसि नो सन्ना भवइ, तंजहा—

पुरत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

दाहिणाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

पच्चत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

उत्तराओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

उड्ढाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

‘अहे वा दिसाओ’<sup>२</sup> आगओ अहमंसि,

‘अण्णयरीओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

अणुदिसाओ वा’<sup>३</sup> आगओ अहमंसि ।

२-एवमेगेसि णो णातं भवति<sup>४</sup>—

अत्थि मे आया उववाइए,<sup>५</sup>

णत्थि मे आया उववाइए,

के अहं आसी ?

के वा इओ चुओ<sup>६</sup> इह पेच्चा भविस्सामि ?

---

१—० मखाय (ख) ।

२—अहे दिसाओ वा ( क, ख, ग, घ, च ), अहो दिसाओ वा ( छ ) ।

३—अण्णयरीओ वा दिसाओ वा अणुदिसाओ ( क, ग, छ ) ; अन्नयरीओ दिसाओ वा अणुदिसाओ वा ( घ ) ; अन्नत्तराए दिसाओ वा अणुदिसाओ वा ( च ) ।

४—भवति, त जहा ( चू ) ।

५—ओववातिते ( क ) ; उववाइए ( च ) ।

६—चते ( घ ) ।

३-सेज्जं पुण जाणेज्जा—

सह-सम्मइयाए,<sup>१</sup>

पर-वागरणेणं,

अण्णेसिं वा अंतिए सोच्चा, तंजहा—

पुरत्थिमाओ<sup>२</sup> वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

<sup>३</sup> दक्खिणाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

पच्चत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

उत्तराओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

उड्ढाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

अहे वा दिसाओ आगओ अहमंसि,<sup>\*</sup>

अण्णयरीओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

अणुदिसाओ वा आगओ अहमंसि ।

४-एवमेगेसिं जं णातं<sup>३</sup> भवइ-अत्थि मे आया उववाइए ।

जो इमाओ 'दिसाओ अणुदिसाओ वा'<sup>४</sup> अणुसंचरइ,"

सव्वाओ दिसाओ सव्वाओ अणुदिसाओ 'जो आगओ

अणुसंचरइ'<sup>५</sup>—सोहं ।

५-से आयावाई, लोगावाई, कम्मावाई, किरियावाई ।

६-अकरिस्सं च'ऽहं, कारावेसुं<sup>६</sup> च'ऽहं, करओ यावि समणुन्ने  
भविस्सामि ।

१-सम्मूतियाए ( चू ), समदियाए ( क ), सहसमुड्याओ ( घ ); सहस्समुड्ढए ( च ) ।

२-पुरत्थि<sup>०</sup> ( ख, च ) ।

३-णाण ( ख ), णाय ( घ ) ।

४-दिमाओ वा अणुदिमाओ ( ख, छ ), दिसाओ वा अणुदिसाओ ( चू, वृ ) ।

५-अणुसमरइ, अणुसमरति ( चूपा ); अणुसमरइ ( वृपा ) ।

—X ( क, ख, ग, च ) ।

६-काराविस्स ( क, ख, ग, ), कारावेस्म ( च ); कारावेस्सं ( घ ) ।

७-एयावंति सव्वावंति लोगंसि कम्म-समारंभा परिजाणियंवा भवंति ।

८-अपरिणाय-कम्मे<sup>१</sup> खलु अयं पुरिसे,

जो इमाओ दिसाओ वा अणुदिसाओ वा अणुसंचरइ,

सव्वाओ दिसाओ सव्वाओ अणुदिसाओ सहेति ।

अणेगरूवाओ जोणीओ संघेइ,<sup>२</sup>

विरूवरूवे फासे य<sup>३</sup> पडिसंवेदेइ<sup>४</sup> ।

९-तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेइया ।

१०-इमस्स चेव जीवियस्स—

परिवदण-माणण-पूयणाए,

जाई-मरण-मोयणाए,<sup>५</sup>

दुक्ख-पडिघायहेउं ।

११-एयावंति सव्वावंति लोगंसि कम्म-समारंभा परिजाणियंवा भवंति ।

१२-जस्से ते लोगंसि कम्म-समारंभा परिणाय भवंति, से हु मुणी परिणाय-कम्मे ।

—त्ति वेमि ।

वीओ उद्देसो

१३-अट्टे लोए परिजुण्णे, दुस्संवोहे अविजाणए ।

१—<sup>०</sup> कम्मा ( क, घ ) ।

२—संघावति ( चू ), संघेइ ( चूपा ), संघावड ( वृपा ) ।

३—X ( क, ख, ग, घ, च ) ।

४—<sup>०</sup> सवेतेइ ( क ) ; <sup>०</sup> सवेयड ( घ, च ) ।

५—<sup>०</sup> भोग्यणाए ( वृपा ) ।



- १४—अस्सिं लोए पच्चहिण<sup>१</sup>,  
 तत्थ तत्थ पुढो पास<sup>२</sup>,  
 आतुरा<sup>३</sup> परितावेति ।
- १५—संति पाणा पुढोसिया ।
- १६—लज्जमाणा पुढो पास ।
- १७—अणगारा मो<sup>४</sup>त्ति एगे पवयमाणा ।
- १८—जमिणं विरूवरूवेहि सत्थेहिं पुढवि-कम्म-समारंभेणं पुढवि-  
 सत्थं समारंभेमाणे<sup>५</sup> अण्णे व<sup>६</sup>णेगरूवे<sup>७</sup> पाणे विहिसति ।
- १९—तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेइया ।
- २०—इमस्स चेव जीवियस्स—  
 परिवंदण-माणण-पूयणाए,  
 जाई-मरण-मोयणाए,  
 दुक्ख-पडिघायहेउं ।
- २१—से सयमेव पुढवि-सत्थं समारंभइ, अण्णेहिं वा पुढवि-सत्थं  
 समारंभावेइ, अण्णे वा पुढवि-सत्थं समारंभंते<sup>८</sup> समणुजाणइ ।
- २२—तं से अहियाए, तं से अबोहीए ।
- २३—से तं संवुडभमाणे, आयाणीयं समुट्ठाए ।
- २४—सोच्चा खलु भगवओ अणगाराणं वा<sup>९</sup> अंतिए इहमेगेसिं णातं  
 भवति—  
 एस खलु गंथे,

---

१—पच्चविण ( च ) ।

२—<sup>०</sup> पासे ( क, घ ) ।

३—आतुरा अस्सि ( वृ ) ।

४—समारंभमाणा ( ख, ग, छ ) ।

५—अणेग <sup>०</sup> ( घ, च ) ।

६—समारंभमाणे ( घ ) ।

७—x ( घ ) ।

एस खलु मोहे,  
एस खलु मारे,  
एस खलु णरए<sup>१</sup> ।

२५—इच्चत्थं गट्ठिए लोए ।

२६—जमिणं 'विख्वरूवेहि सत्येहि'<sup>२</sup> पुढवि-कम्म-समारंभेणं पुढवि-  
सत्थं संमारंभमाणे<sup>३</sup> अण्णे व'णेगरूवे पाणे विहिंसइ ।

२७—से बेमि—

अप्पेगे अंधमब्भे<sup>४</sup>, अप्पेगे अंधमच्छे<sup>५</sup> ।

२८—अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे,  
अप्पेगे 'गुप्फमब्भे अप्पेगे गुप्फमच्छे,  
अप्पेगे जंधमब्भे, अप्पेगे जंधमच्छे,  
अप्पेगे जाणुमब्भे<sup>६</sup> अप्पेगे जाणुमच्छे,  
अप्पेगे ऊरुमब्भे, अप्पेगे ऊरुमच्छे,  
अप्पेगे कडिमब्भे, अप्पेगे कडिमच्छे,  
अप्पेगे णाभिमब्भे, अप्पेगे णाभिमच्छे,  
अप्पेगे उयरमब्भे, अप्पेगे उयरमच्छे,  
अप्पेगे पासमब्भे, अप्पेगे पासमच्छे,  
अप्पेगे पिट्टमब्भे<sup>७</sup>, अप्पेगे पिट्टमच्छे,  
अप्पेगे उरमब्भे, अप्पेगे उरमच्छे,

१—निरए ( क, ख, घ, च ) ।

२—<sup>०</sup> रूवेसु सत्येसु ( क, च, छ ) ।

३—समारंभमाणे ( घ ) ।

४—अत्त<sup>०</sup> ( च ) ।

५—<sup>०</sup> मच्चे ( घ ) ।

६—पुप्फमब्भे अप्पेगे एवं जंधापुप्फमब्भे अप्पेगे जाणुमब्भे ( च ) ।

७—पुट्ठि<sup>०</sup> ( क ) ; पिट्ठि<sup>०</sup> ( ख, ग, च ) ; पट्ठि<sup>०</sup> ( घ ) ।

अप्पेगे हिययमब्भे, अप्पेगे हिययमच्छे,  
 अप्पेगे थणमब्भे, अप्पेगे थणमच्छे,  
 अप्पेगे खंधमब्भे, अप्पेगे खंधमच्छे,  
 अप्पेगे बाहुमब्भे, अप्पेगे बाहुमच्छे,  
 अप्पेगे हत्थमब्भे, अप्पेगे हत्थमच्छे,  
 अप्पेगे अंगुलिमब्भे, अप्पेगे अंगुलिमच्छे,  
 अप्पेगे णहमब्भे, अप्पेगे णहमच्छे,  
 अप्पेगे गीवमब्भे, अप्पेगे गीवमच्छे,  
 अप्पेगे हणुयमब्भे<sup>१</sup>, अप्पेगे हणुयमच्छे,  
 अप्पेगे होट्टमब्भे<sup>२</sup>, अप्पेगे होट्टमच्छे,  
 अप्पेगे दंतमब्भे, अप्पेगे दंतमच्छे,  
 अप्पेगे जिब्भमब्भे, अप्पेगे जिब्भमच्छे,  
 अप्पेगे तालुमब्भे, अप्पेगे तालुमच्छे,  
 अप्पेगे गलमब्भे, अप्पेगे गलमच्छे,  
 अप्पेगे गंडमब्भे, अप्पेगे गंडमच्छे,  
 अप्पेगे कण्णमब्भे, अप्पेगे कण्णमच्छे,  
 अप्पेगे णासमब्भे<sup>३</sup>, अप्पेगे णासमच्छे,  
 अप्पेगे अच्छिमब्भे, अप्पेगे अच्छिमच्छे,  
 अप्पेगे भमुहमब्भे, अप्पेगे भमुहमच्छे,  
 अप्पेगे णिडालमब्भे, अप्पेगे णिडालमच्छे,  
 अप्पेगे सीसमब्भे<sup>४</sup>, अप्पेगे सीसमच्छे ।

२९-अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए ।

१-हणु<sup>०</sup> ( क, घ, च, छ ) ।

२-उट्ठ<sup>०</sup> ( घ ) ।

३-नक्क<sup>०</sup> ( घ, च ) ।

४-सिर<sup>०</sup> ( च ) ।

पढम अज्मयण ( तइओ उद्देसो )

३०—एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिणात्ता भवंति ।

३१—एत्थ सत्थ असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिणात्ता भवंति ।

३२—तं परिणाय मेहावी—

नेव सयं पुढवि-सत्थ समारंभेज्जा, जेवण्णेहि पुढवि-सत्थं समारभावेज्जा, जेवण्णे पुढवि-सत्थं समारभते समणुजाणेज्जा ।

३३—जस्से ते पुढवि-कम्म-समारभा<sup>१</sup> परिणात्ता भवति, से ह्व मुणी परिणात्त-कम्मे ।

—त्ति वेमि ।

तइओ उद्देसो

३४—से वेमि—

से<sup>२</sup> जहावि अणगारे उज्जुकडे, णियागपडिवण्णे<sup>३</sup>, अमायं कुब्बमाणे वियाहिए ।

३५—जाए सद्धाए णिक्खन्तो ।

तमेवअणुपालिया<sup>४</sup> ।

‘विजहित्तु विसोत्तियं’<sup>५</sup> ।

३६—पणया वीरा महावीहि ।

१—° काय ° ( च ) ।

२—X ( क, छ ) ।

३—निकाय ° ( चू, वृषा ) ।

४—तामेव ° ( घ, च ), ° अणुपालेज्जा ( वृ ) ।

५—तिन्नोहूजसि विसोत्तिय ( चू ); विजहिता पुब्ब सजोग ( वृषा ); विजहिता ( ख, ग, घ, च ) ।

३७—लोगं च आणाए अभिसमेच्चा<sup>१</sup> अकुतोभयं ।

३८—से बेमि—

णेव सयं लोगं अब्भाइक्खेज्जा, णेव अत्ताणं अब्भाइक्खेज्जा ।

जे लोयं अब्भाइक्खइ, से अत्ताणं अब्भाइक्खइ ।

जे अत्ताणं अब्भाइक्खइ, से लोयं अब्भाइक्खइ ।

३९—लज्जमाणा<sup>२</sup> पुढो पास ।

४०—अणगारा मो'त्ति एगे पवयमाणा ।

४१—जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं उदय-कम्म-समारंभेणं उदय-  
सत्थं-समारंभमाणे अण्णे व'णेगरूवे<sup>३</sup> पाणे विहिसति ।

४२—तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेदिता ।

४३—इमस्स चेव जीवियस्स—

परिवंदण-माणण-पूयणाए,

जाई-मरण-मोयणाए,

दुक्ख-पडिघायहेउं ।

४४—से सयमेव उदय-सत्थं समारंभति, अण्णेहिं वा उदय-सत्थं  
समारंभावेति, अन्ने वा<sup>४</sup> उदय-सत्थं समारंभंते समणुजाणति ।

४५—तं से अहियाए, तं से अबोहीए ।

४६—से तं संबुज्झमाणे, आयाणीयं समुट्ठाए ।

१—<sup>०</sup> समिच्चा ( ख, घ ) ।

२—एस आढत्त पुढविक्काइय उहेसयगमेण ध्रुवगडिया सुत्तत्थतो भाणियन्वा, अप्पेगे  
अधमब्भे ( च ) ।

३—अणेग <sup>०</sup> ( ग, घ ) ।

४—X ( ख, ग ) ।

पदमं अज्मयणं ( तद्दो उद्देसो )

४७—सोच्चा खलु<sup>१</sup> भगवओ अणगाराणं वा<sup>२</sup> अंतिए इहमेगेसि  
णायं भवति—  
एस खलु गथे,  
एस खलु मोहे,  
एस खलु मारे,  
एस खलु णरणे ।

४८—इच्चत्थं गट्टिए लोए ।

४९—जमिण 'विरूवरूवेहिं सत्थेहि'<sup>३</sup> उदय-कम्म-समारंभेणं उदय-  
सत्थं समारंभमाणे अण्णे व'णेगरूवे<sup>४</sup> पाणे विहिसति ।

५०—से बेमि—

अप्पेगे अंधमब्भे, अप्पेगे अंधमच्छे ।

५१—अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे । ( १।२८ )

५२—अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए ।

५३—से बेमि—

संति पाणा उदय-निस्सिया जीवा अणेगा ।

५४—इहं<sup>५</sup> च खलु भो ! अणगाराणं उदय-जीवा वियाहिया ।

५५—सत्थं चेत्य<sup>६</sup> अणुवीइ पास<sup>७</sup> ।

५६—'पुटो सत्थं'<sup>८</sup> पवेइयं ।

५७—अदुवा अदिन्नादाणं ।

१—× ( घ, च ) ।

२—× ( क, ख, ग ) ।

३—<sup>०</sup> रूवेसु सत्थेसु ( च ) ।

४—अणेग<sup>०</sup> ( घ, च ) ।

५—इह ( छ ) ।

६—चेत्थ ( क, ख, छ ) ।

७—पास ( घ, च ) ।

८—पुटोपास ( वपा ) ।

५८-कप्पइ णे,<sup>१</sup>

कप्पइ णे पाउं,

अदुवा विभूसाए ।

५९-पुढो सत्थेहिं विउट्ठति ।

६०-एत्थऽवि तेसिं णो णिकरणाए ।

६१-एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया भवंति ।

६२-एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति ।

६३-तं परिण्णाय मेहावी—

णेव सय उदय-सत्थं समारंभेज्जा, णेवन्नेहिं उदय-सत्थं  
समारंभावेज्जा, उदय-सत्थं समारंभंतेऽवि अण्णे ण  
समणुजाणेज्जा ।

६४-जस्से ते उदय-सत्थ-समारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणो  
परिण्णात-कम्मे ।

—त्ति बेमि ।

### चउत्थो उद्देसो

६५-से<sup>२</sup> बेमि—

णेव सयं लोगं अब्भाइक्खेज्जा, णेव अत्ताण अब्भाइक्खेज्जा ।

जे लोगं अब्भाइक्खइ, से अत्ताणं अब्भाइक्खइ,

जे अत्ताण अब्भाइक्खइ, से लोग अब्भाइक्खइ ।

६६-जे दीहलोग-सत्थस्स खेयन्ने, से असत्थस्स खेयन्ने ।

जे असत्थस्स खेयन्ने, से दीहलोग-सत्थस्स खेयन्ने ।

६७-वीरेहिं एयं अभिभूय दिट्ठं ।

संजतेहि, सया जतेहिं, सया अप्पमत्तेहिं ।

१-णो ( घ ) ।

२-सेय मिण ( च ) ।

६८—जे पमत्ते गुणट्टिए,<sup>१</sup> से हु दंढे पवुच्चति ।

६९—तं परिणाय मेहावी—

इयाणि णो जमहं पुव्वमकासी पमाएणं ।

७०—लज्जमाणा पुट्ठो पास<sup>२</sup> ।

७१—अणगारा मो'त्ति एगे पवयमाणा ।

७२—जमिणं विख्वरूवेहि सत्थेहि अगणि-कम्म-समारंभेणं अगणि-  
सत्थं समारंभमाणे, अण्णे व'णेरूवे पाणे विहिंसति ।

७३—तत्थ खलु<sup>३</sup> भगवया परिण्णा पवेइत्ता ।

७४—इमस्स चेव जीवियस्स—

परिवंदण-माणण-पूयणाए,

जाई-मरण-मोयणाए,

दुक्ख-पडिघायहेउं ।

७५—से सयमेव अगणि-सत्थ समारंभइ, अण्णेहि वा अगणि-सत्थं  
समारंभावेइ, अण्णे वा अगणि-सत्थं समारंभमाणे  
समणुजाणइ ।

७६—तं से अहियाए, तं से अबोहीए ।

७७—से तं संवुज्झमाणे, आयाणीयं समुट्ठाए ।

७८—सोच्चा खलु भगवओ अणगाराणं वा अंतिए इहमेगेहि णायं  
भवति—

एस खलु गथे,

एस खलु मोहे,

एस खलु मारे,

एस खलु णराए ।

१—गुणट्ठी ( क, वृ ), गुणट्टीए ( ख, ग ) ।

२—धुवगडिअ भणिरूण जाव से वेमि ( चृ ) ।

३—x ( च ) ।



७१—इच्चत्थं गढिए लोए ।

८०—जमिणं विरूवरूवेहि सत्थेहि अगणि-कम्म-समारंभेणं  
अगणि-सत्थं समारंभमाणे अण्णे व'णेगरूवे पाणे विहिसति ।

८१—से बेमि—

अप्पेगे अंधमब्भे, अप्पेगे अंधमच्छे ।

८२—अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे । (१।२८)

८३—अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उह्वए ।

८४—से बेमि—

संति पाणा पुढवि-णिस्सिया, तण-णिस्सिया, पत्त-णिस्सिया,  
कट्ठ-णिस्सिया, गोमय-णिस्सिया, कयवर-णिस्सिया :

संति संपातिमा पाणा, आहच्च संपयंति य' ।

अगणिं च खलु पुट्ठा, एगे संघायमावज्जंति ॥

८५—जे तत्थ संघायमावज्जंति, ते तत्थ परियावज्जंति<sup>१</sup> ।

जे तत्थ परियावज्जंति, ते तत्थ उदायंति ।

८६—एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चते आरंभा अपरिण्णाय  
भवंति ।

८७—एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चते आरंभा परिण्णाय  
भवंति ।

८८—तं परिण्णाय मेहावी—

नेव सयं अगणि-सत्थं समारंभेज्जा, नेवन्ने हि अगणि-सत्थं  
समारंभावेज्जा अगणि-सत्थं समारंभमाणे अन्ते न समणु  
जाणेज्जा ।

१—× ( क, ख, ग, च ) ।

२—° विज्जति ( क, ख, छ ) ।

८९—जस्से ते अगणि-कम्म-समारंभा परिणायया भवंति, से हु  
मुणी परिणाय-कम्मे ।

—त्ति वेमि ।

### पंचमो उद्देशो

१०—‘तं णो’<sup>१</sup> करिस्सामि समुट्ठाए ।

११—मंता<sup>२</sup> मइमं अभयं विदित्ता ।

१२—त जे णो करए, एसोवरए, एत्थोवरए, एस—

अणगारे<sup>३</sup>त्ति पवुच्चइ ।

१३—जे गुणे से आवट्टे, जे आवट्टे से गुणे ।

१४—उड्ढं अहं<sup>४</sup> तिरियं पाईणं<sup>५</sup> पासमाणे रुवाइं पासति<sup>६</sup>,  
‘सुणमाणे सट्ठाइं सुणेति’<sup>७</sup> ।

१५—उड्ढं अहं तिरियं पाईणं मुच्छमाणे रुवेसु मुच्छति,  
सट्ठेसु आवि ।

१६—एस लोए वियाहिए ।

१७—एत्थ अगुत्ते अणाणाए ।

१८—पुणो-पुणो गुणासाए,  
वंकसमायारे,  
पमत्ते गारमावसे ।

१—ते णो ( च ) ।

२—मत्ता ( क, घ, च ) ।

३—अव ( वृ ) ; अहे य ( ख ) ।

४—पासियाइं दरिसेति ( चू ) ; पस्समाणो रुवाइं पासइ ( चूपा ) ।

५—सुणिमाणि सुणेति ( चू ), सुणमाणो सट्ठाइं सुणेति । एवं गंधरसफासेहि वि  
भाणियक्क ( चूपा ) ।

- ६६—लज्जमाणा पुढो पास<sup>१</sup> ।
- १००—अणगारा मो'त्ति एगे पवयमाणा ।
- १०१—जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं वणस्सइ-कम्म-समारंभेणं  
वणस्सइ-सत्थं समारंभमाणे अण्णे व'णेरूवे<sup>२</sup> पाणे  
विहिसति ।
- १०२—तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेदिता ।
- १०३—इमस्स चेव जीवियस्स—  
परिवंदण-माणण-पूयणाए,  
जातो-मरण-मोयणाए,  
दुक्ख-पडिघायहेउं ।
- १०४—से सयमेव वणस्सइ-सत्थं समारंभइ, अण्णेहि वा वणस्सइ-  
सत्थं समारंभावेइ, अण्णे वा वणस्सइ-सत्थं समारंभमाणे  
समण्जाणइ ।
- १०५—तं से अहियाए, तं से अबोहीए ।
- १०६—से तं संबुज्झमाणे,  
आयाणीयं समुट्ठाए ।
- १०७—सोच्चा भगवओ, अणगाराण वा अंतिए इहमेगेसि णायं  
भवति—  
एस खलु गंथे,  
एस खलु मोहे,  
एस खलु मारे,  
एस खलु णिरए ।

---

<sup>१</sup>—बुव गडिया ( वृ ) ।

<sup>२</sup>—अणेग ° ( ख, ग, च ) ।

१०८—इच्चत्थं गट्ठि ए लोए ।

१०९—जमिणं विरूवरूवेहि सत्थेहि वणस्सइ-कम्म-समारंभेणं  
वणस्सइ-सत्थं समारंभमाणे अण्णे वणेगरूवे पाणे  
विहिसति<sup>१</sup> ।

११०—से वेमि—

अप्पेगे अधमब्भे, अप्पेगे अधमच्छे ।

१११—अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे । ( १।२८ )

११२—अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उट्ठवए ।

११३—से वेमि—

इमपि जाइ-धम्मय, एयंपि जाइ-धम्मय ।

इमपि बुद्धि-धम्मय, एयंपि बुद्धि-धम्मयं ।

इमंपि चित्तमतयं, एयंपि चित्तमतयं ।

इमपि छिन्न मिलाति, एयंपि छिन्न मिलाति ।

इमपि आहारग, एयंपि आहारगं ।

इमंपि अणिच्चयं, एयंपि अणिच्चयं ।

इमंपि असासय, एयंपि असासयं ।

इमपि चयावचइयं, एयंपि चयावचइयं,<sup>२</sup> ।

इमंपि विपरिणामधम्मयं, एयंपि विपरिणामधम्मयं ।

११४—एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाता  
भवन्ति ।

११५—एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया  
भवन्ति ।

<sup>१</sup>—विहिसति ( ख, ग ) । अशुद्धि प्रतिमाति ।

<sup>२</sup>—चयावचइय ( चू, क, घ, च, छ ), चयावचय ( ख, ग ) ।

११६—तं परिणाय मेहावी—

णेव सयं वणस्सइ-सत्थं समारंभेज्जा, णेवणोहिं वणस्सइ-सत्थं  
समारंभावेज्जा, णेवणे वणस्सइ-सत्थं समारंभंते  
समणुजाणेज्जा ।

११७—जस्सेते वणस्सइ-सत्थ-समारंभा परिणाय भवंति, से हु  
मुणी परिणाय-कम्मे ।

—त्ति बेमि ।

### छट्ठो उद्देशो

११८—से बेमि—संति'मे तसा पाणा, तंजहा—अंडया, पोयया,  
जराउया, रसया, संसेयया, संमुच्छिमा, उब्भिया, उववाइया ।

११९—एस—संसारेत्ति<sup>१</sup> पवुच्चति ।

१२०—मंदस्स अवियाणओ ।

१२१—णिज्झाइत्ता पडिलेहिता पत्तेयं परिणिव्वाणं ।

१२२—सव्वेसिं पाणाणं, सव्वेसिं भूयाणं, सव्वेसिं जीवाणं, सव्वेसिं  
सत्ताणं, अस्सायं<sup>२</sup> अपरिणिव्वाणं महब्भयं दुक्खं—त्ति बेमि ।

१२३—तसंति पाणा पदिसोदिसासु य ।

१२४—तत्थ तत्थ पुढो पास, आउरा परितावेत्ति<sup>३</sup> ।

१—ससारिती ( क, ख ) ।

२—असायं ( क्वचित् ) ।

३—अट्टा 'ति जाव परितावेत्ति' धुवगडिया ( च्चु ) ।

१२५-संति पाणा पुढोसिया ।

१२६-लज्जमाणा पुढो पास ।

१२७-अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणा ।

१२८-जमिणं विरूवरूवेहि सत्थेहिं तसकाय-समारंभेणं तसकाय-सत्थं  
समारंभमाणे अण्णे व'णेगरूवे पाणे विहिंसति ।

१२९-तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेइया ।

१३०-इमस्स चेव जीवियस्स-

परिवंदण-माणण-पूयणाए,

इ-मरण-मोयणाए,

दुक्खपडिघायहेउं ।

१३१-से सयमेव तसकाय-सत्थं समारंभति, अण्णेहिं वा तसकाय-  
सत्थं समारंभावेइ, अण्णे वा<sup>१</sup> तसकाय-सत्थं समारंभमाणे  
समणुजाणइ ।

१३२-तं से अहियाए, तं से अबोहीए ।

१३३-से तं संवुज्झमाणे, आयाणीयं समुट्ठाए ।

१३४-सोच्चा भगवओ, अणगाराणं 'वा अंतिए'<sup>२</sup> इहमेगेसिं णायं  
भवइ-

एस खलु गथे,

एस खलु मोहे,

एस खलु मारे,

एस खलु णरए ।

१३५-इच्चत्थं गट्ठिए लोए ।

१-वि ( घ ) ।

२-X ( क ) । सर्वत्र नास्ति ।

१३६—जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं तसकाय-समारंभेणं तसकाय-  
सत्थं समारंभमाणे अण्णे व'णेरूवे पाणे विहिंसति ।

१३७—से बेमि—

अप्पेगे अधमब्भे, अप्पेगे अंधमच्छे ।

१३८—अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे । (१।२८)

१३९—अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए ।

१४०—से बेमि—

अप्पेगे अच्चाए वहति, अप्पेगे अजिणाए वहंति,<sup>१</sup>

अप्पेगे मंसाए वहंति, अप्पेगे सोणियाए वहंति,

° अप्पेगे हिययाए<sup>२</sup> वहति, अप्पेगे पित्ताए वहति,

अप्पेगे वसाए वहंति, अप्पेगे पिच्छाए वहंति,

अप्पेगे पुच्छाए वहंति, अप्पेगे बालाए वहंति,

अप्पेगे सिंगाए वहति, अप्पेगे विसाणाए वहंति,

अप्पेगे दंताए वहंति, अप्पेगे दाढाए वहंति,

अप्पेगे नहाए वहति, अप्पेगे ण्हारुणीए वहति,

अप्पेगे अट्ठीए वहंति, अप्पेगे अट्ठिमिजाए वहंति,

अप्पेगे अट्ठाए वहंति, अप्पेगे अणट्ठाए ° वहंति,

अप्पेगे 'हिंसिसु मेत्ति वा'<sup>३</sup> वहंति,

अप्पेगे हिंसंति मेत्ति वा वहति,

अप्पेगे हिंसिस्संति मेत्ति वा वहंति ।

१४१—एत्थं सत्थं समारभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिणया  
भवन्ति ।

१—हणति ( च ), वधति ( क ), हिंसति ( घ ) ।

२—हितयाए ( क, च ) ।

३—हिंसिसु इति वा ( ख, ग ) ।

१४२—एत्थं सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चते आरंभा परिणायया भवन्ति ।

१४३—तं परिणाय मेहावी—

णेवसयं तसकाय-सत्थं समारंभेज्जा; णेवण्णेहि तसकाय-सत्थं समारंभावेज्जा, णेवण्णे तसकाय-सत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा ।

१४४—जस्से ते तसकाय-सत्थ-समारंभा परिणायया भवन्ति, से हु मुणी परिणाय-कम्मे ।

—त्ति बेमि ।

### सत्तमो उद्देशो

१४५—‘पहू एजस्स’<sup>१</sup> दुगंछणाए ।

१४६—आयक-दंसी ‘अहियं’ति नच्चा ।

१४७—जे अज्झत्थं जाणइ, से बहिया जाणइ ।

जे बहिया जाणइ, से अज्झत्थं जाणइ ।

१४८—एयं तुलमन्नेसिं ।

१४९—इह<sup>२</sup> संति-गया दविया, णावकंखन्ति जीविउं<sup>३</sup> ।

१५०—लज्जमाणा<sup>४</sup> पुढो पास ।

१५१—अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणा ।

१५२—जमिणं विख्वख्वेहिं सत्येहि वाउकम्म-समारंभेणं वाउ-सत्थं समारंभमाणे अण्णे व’णेगख्वे पाणे विहिसति ।

१—पहू य एजस्स ( वृ ), पम्पु एजस्स ( क ) ।

२—इति ( च्चा ) ।

३—जीविय ( क, छ ) ।

४—अट्टा परिजुण्णा आकंपिता जाव आतुरा परितारिता ध्रुव गडिया ( च्चु ) ।



१५३-तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेइया ।

१५४-इमस्स चेव जीवियस्स—

परिवंदण-माणण-पूयणाए,

जाई-मरण-मोयणाए,

दुक्ख-पडिघायहेउं ।

१५५-से सयमेव वाउ-सत्थं समारंभति, अन्नेहिं वा वाउ-सत्थं  
समारंभावेति, अन्ने वा वाउ-सत्थं समारंभंते समणुजाणइ ।

१५६-तं से अहियाए, तं से अबोहीए ।

१५७-से तं संवुज्झमाणे, आयाणीयं समुट्ठाए ।

१५८-सोच्चा भगवओ, अणगाराणं वा अंतिए इहमेगेसि णायं  
भवइ—

एस खलु गंथे,

एस खलु मोहे,

एस खलु मारे,

एस खलु णिरए ।

१५९-इच्चत्थं गट्ठिए लोए ।

१६०-जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहि वाउकम्म-समारंभेणं वाउ-सत्थं  
समारंभमाणे अण्णे व'णेगरूवे पाणे विहिंसति ।

१६१-से बेमि—

अप्पेगे अंधमब्भे, अप्पेगे अंधमच्छे ।

१६२-अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे । (१।२८)

१६३-अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्वए ।

१६४-से बेमि—

संति संपाइमा पाणा, आहच्च संपयंति य ।

फरिसं च खलु पुट्ठा, एगे संघायमावज्जंति ।

१६५—जे तत्थ संधायमावज्जंति, ते तत्थ परियावज्जंति,  
जे तत्थ परियावज्जंति, ते तत्थ उद्दायंति ।

१६६—एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्च्वेते आरंभा अपरिण्णाया  
भवन्ति ।

१६७—एत्थ सत्थ असमारंभमाणस्स इच्च्वेते आरंभा परिण्णाया  
भवन्ति ।

१६८—तं परिण्णाय मेहावी—

णेव सयं वाउ-सत्थं समारंभेज्जा, णेवण्णेहि वाउ-सत्थं समा-  
रंभावेज्जा, णेवन्ने वाउ-सत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा ।

१६९—जस्से ते वाउ-सत्थ-समारंभा परिण्णाया भवन्ति, से हु मुणी  
परिण्णाय-कम्मे ।

—त्ति बेमि ।

१७०—एत्थं पि जाणे उवादीयमाणा ।

१७१—जे आयारे न रमन्ति ।

१७२—आरंभमाणा विणयं वयन्ति ।

१७३—छंदोवणीया अज्झोववण्णा ।

१७४—‘आरंभसत्ता पकरेति संगं’<sup>१</sup> ।

१७५—से वसुमं सव्व-समन्नागय-पन्ताणेणं अप्पाणेणं अकरणिज्जं  
पावं कम्मं ।

१७६—तं<sup>२</sup> णो अन्नेसि ।

१—‘आरंभसत्ता पकरेति संग’, अस्य पाठस्यानन्तरं चूर्ण्या निम्न-पाठ उपलभ्यते—  
‘एत्थ वि जाण अणुवाइयमाणा, जे आयारे रमन्ति, अणारंभमाणा विणयं वदन्ति,  
पसत्थ छंदोवणीता, तत्थेव अज्झोववण्णा आरंभे असत्ता णो पगरे’ति संग’ ।

२—X ( ख, ग, छ ) ।

१७७—तं परिणाय मेहात्री—

णेव सयं छज्जीव-णिकाय-सत्थं समारंभेज्जा, णेवन्नेहि  
छज्जीव-णिकाय-सत्थं समारंभावेज्जा, णेवन्ते छज्जीव-  
णिकाय-सत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा ।

१७८—जस्से ते छज्जीव-णिकाय-सत्थ-समारंभा परिणायया भवंति,  
से हु मुणी परिणाय-कम्मे ।

--त्ति वेमि ।

\*

बीअं अज्भयण

## लोगविजओ

पढमो उद्देसो

१—जे गुणे से मूलद्वाने, जे मूलद्वाने से गुणे ।

२—इति से गुणद्वी महता परियावेणं 'पुणो पुणो'<sup>१</sup> वसे पमत्ते<sup>२</sup>—  
माया मे, पिया मे, भाया में, भइणी मे, भज्जा मे, पुत्ता मे,  
धूया मे, 'सुण्हा मे'<sup>३</sup>, सहि-सयण-संगथ-संथुया मे,  
'विवि(चि?)त्तोवगरण-परियट्ठण-भोयण-अच्छायणं'<sup>४</sup> मे,  
इच्चत्थं<sup>५</sup> गट्ठिए लोए—वसे पमत्ते ।

३—अहो यं राओ य परितप्पमाणे, कालाकाल-समुट्ठाई,  
संजांगट्ठी अट्ठालोभी, आलुं पै सहसक्कारे<sup>६</sup>,  
विणिविट्ठचित्ते<sup>७</sup>,  
एत्थ सत्थे<sup>८</sup> पुणो पुणो ।

---

१—X ( क, ख, ग, घ, च ) ।

२—पमत्ते, त-जहा ( क, ख, ग, घ, च ) ।

३—सुण्हा मे, सहाया मे ( घ ) ।

४—विवित्तो<sup>९</sup> ( ख, च ) ।

५—च्छायण ( क ), अच्छादयण ( च ) ।

६—इच्चत्थ से ( क ), इच्चत्थ इत्थ से ( ग ), इच्चत्थ एत्थ से ( च ) ।

७—X ( क, ख, ग, घ ) ।

८—सहसाकारे ( क, ख, ग, छ ), सहसकारे ( च ) ।

९—<sup>०</sup> चिट्ठे ( च, वृ, च ) ।

१०—सत्ते ( च, वृपा ) ।

४-अप्पं च खलु आउं इहमेगेसि<sup>१</sup> माणवाणं, तंजहा—

सोय-परिण्णाणेहि<sup>२</sup> परिहायमाणेहि,

चक्खु-परिण्णाणेहि परिहायमाणेहि,

घाण-परिण्णाणेहि परिहायमाणेहि,

रस-परिण्णाणेहि परिहायमाणेहि,

फास-परिण्णाणेहि परिहायमाणेहि ।

५-अभिवक्तं<sup>३</sup> च खलु वयं स पेहाए<sup>४</sup> ।

६-तओ से एगया मूढ-भावं जणयंति<sup>५</sup> ।

७-जेहि वा सद्धि संवसति<sup>६</sup> 'ते वा ण'<sup>७</sup> एगया णियगा तं  
पुविं परिवयंति, सो वा ते णियगे पच्छा परिवएज्जा ।

८-नालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा ।

तुमं पि तेसि नालं ताणाए वा, सरणाए वा ।

९-से ण हस्साए<sup>८</sup>, ण किड्ढाए, ण रतीए, ण विभूसाए ।

१०-इच्चेवं समुट्ठिए 'अहोविहाराए' ।

११-अंतरं च खलु इमं सपेहाए<sup>९</sup>—“धीरे मुहुत्तमविणो पमायए” ।

१२-वयो<sup>१०</sup> अच्चेइ जोव्वणं व ।

१३-जीविए इह जे पमत्ता ।

१-इधम्मकेसि चि ( च ) ।

२-° पण्णाणेण ( च, क ) ।

३-अहिवक्त ( क ), अहिक्त ( घ ), अतिक्तं ( च ) ।

४-‘सपेहाए’ ( ख, ग, च ) अशुद्धमिदम् ।

५-जणयति ( वृ ), जणयति ( वृषा ) ।

६-संवसति ( घ, छ ) ।

७-ते वण ( क, छ ); ते विण ( घ ); त एव ण ( वृ ) ।

८-हसाए ( क, ख, ग, छ ) ।

९-सपेहाए ( ग, घ, छ ) ।

१०-वयो ( क, ख, ग ) ।

१४—से हंता, छेत्ता, भेत्ता, लुंपित्ता, विलुंपित्ता, उद्दवित्ता, उत्तासइत्ता ।

१५—अकडं 'करिस्सामि'त्ति मण्णमाणे ।

१६—जेहि वा सद्धि संवसति 'ते वाण'<sup>१</sup> एगया णियगा त पुब्बिं पोसेति,

सो वा ते नियगे पच्छा पोसेज्जा ।

१७—नालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा ।

तुमंपि तेसिं नालं ताणाए वा, सरणाए वा ।

१८—उवाइय<sup>२</sup>—सेसेण<sup>३</sup> वा सन्निहि-सन्निचओ कज्जइ.<sup>४</sup> इहमेगेसि असंजयाणं<sup>५</sup> भोयणाए ।

१९—तओ से एगया रोग-समुप्पाया समुप्पज्जंति ।

२०—जेहि वा सद्धि संवसति ते वा ण एगया णियगा तं<sup>६</sup> पुब्बिं परिहरंति, सो वा ते नियगे पच्छा परिहरेज्जा ।

२१—नालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा ।

तुमंपि तेसि नालं ताणाए वा, सरणाए वा ।

२२—जाणित्तु दुक्खं पत्तेयं<sup>७</sup> सायं ।

२३—अणभिव्वकंतं<sup>८</sup> च खलु वयं 'स पेहाए'<sup>९</sup> ।

२४—खणं जाणाहि पंडिए !

१—त एव वा ण ( वृ ), ते व ण ( ख ) ।

२—उवादीत ° ( क, च ) ।

३—सेस तेण ( क, ख, घ, च, छ ) ।

४—किज्जइ ( ख, ग, छ ) ।

५—माणवाण ( च ) ।

६—X ( क, ख, ग, घ ) ।

७—पत्तेय ( क, ख, ग, घ, च ) ।

८—अणतिक्कतं ( क ) ।

९—सपेहाए ( छ ) । १३२ सूत्र वृत्तौ 'स प्रेथ्य' अत्र च 'सप्रेथ्य' कथमिदम् ?

२५—जाव सोय-‘पण्णाणा अपरिहीणा’,<sup>१</sup>

जाव णेत-पण्णाणा अपरिहीणा,

जाव घाण-पण्णाणा अपरिहीणा,

जाव जीह-पण्णाणा अपरिहीणा,

जाव फास-पण्णाणा अपरिहीणा ।

२६—इच्छेतेहिं विरूवरूवेहिं पन्नाणेहि अपरिहीणेहि<sup>२</sup> आयट्ठं सम्मं  
समणुवासिज्जासि ।

—त्ति बेमि ।

### बीओ उद्देशो

२७—अरइं आउट्टे से मेहावी ।

२८—खणंसि मुक्के ।

२९—अणाणाए ‘पुट्ठा वि’<sup>३</sup> एगे<sup>४</sup> णियट्ठंति ।

३०—मंदा मोहेण पाउडा ।

३१—“अपरिग्गहा भविस्सामो” समुट्ठाए,  
लद्धे कामे ऽहिगाहंति<sup>५</sup> ।

३२—अणाणाए मुणिणो पडिल्लेहंति ।

३३—एत्थ मोहे पुणो पुणो सन्ता ।

३४—णो हत्वाए णो पाराए ।

१—परिण्णाणेहि अपरिहायमाणेहि ( क, ख, ग, घ, छ ) सर्वत्र ।

२—अपरिहीयमाणेहि ( क, ख, ग, घ, छ, वृ ) ।

३—पुट्ठा ( वृ ) ।

४—X ( वृ ) ।

५—अभिगाहति ( क ) ; अभिगाहति ( ख, छ ), अभिगाहति ( ग ) ।

- ३५—विमुक्का<sup>१</sup> हु ते जणा, जे जणा पारगामिणो ।  
 ३६—लोभं अलोभेण दुगंछमाणे, लद्धे कामे नाभिगाहइ<sup>२</sup> ।  
 ३७—विणावि<sup>३</sup> लोभं निक्खम्म,  
 'एस अकम्मे'<sup>४</sup> जाणति पासति ।  
 ३८—पडिलेहाए णावकंखति ।  
 ३९—एस—अणगारे<sup>५</sup>त्ति पबुच्चति ।  
 ४०—अहो य<sup>६</sup> राओ य परितप्पमाणे, कालाकालसमुट्ठाई,  
 संजोगट्ठी अट्ठालोभी, आलुं पे सहसक्कारे,<sup>६</sup>  
 विणिविट्ठचित्ते,  
 एत्थ सत्थे पुणो पुणो ।  
 ४१—से आय-बले, 'से णाइ-बले'<sup>७</sup>, से मित्त-बले, से पेच्च-बले,  
 से देव-बले, से राय-बले, से चोर-बले, से अतिहि-बले,  
 से किवण-बले,<sup>८</sup> से समण-बले ।  
 ४२—इच्चेतेहिं विरूवरूवेहिं कज्जेहिं 'दंड-समायाणं'<sup>९</sup> ।  
 ४३—सपेहाए भया कज्जति,<sup>१०</sup> ।  
 ४४—'पाव-मोक्खो' त्ति मण्णमाणे ।  
 ४५—अदु वा आसंसाए ।

१—विमुक्ता ( क, ख, ग, घ, छ ) ।

२—णोभिगाहइ ( क, च ) ।

३—विणइत्तु ( क, घ, च, वृषा ) ।

४—एसअकम्मे ( घ, छ ) ।

५—X ( क, ख ) ।

६—सहसक्कारे ( क, ख, ग ) ।

७—से णाइ-बले, से सयण-बले ( क, ख, ग, घ, च ) ।

८—किविण-<sup>०</sup> ( क, ख, ग ) ।

९—दंड समारमति ( चु ) ।

१०—दंड-समायाण कज्जइ ( चूपा ) ।



४६—तं परिणाय मेहावी—

णेव सयं एएहिं कज्जेहिं दंडं समारंभेज्जा, णेव'ण्णं' एएहिं  
कज्जेहिं दंडं समारंभावेज्जा, 'णेव'ण्णं एएहिं कज्जेहिं  
दंडं समारंभंतं समणुजाणेज्जा' ।

४७—एस मग्गे—आरिएहिं<sup>३</sup> पवेइए ।

४८—जहेत्य कुसले णोवलिपिज्जासि ।

—त्ति बेमि ।

तइओ उइसो

४९—'से असइं उच्चा-नोए, असइं णीया-नोए ।

णो हीणे, णो अइरित्ते'<sup>४</sup>,

णो पीहए'<sup>५</sup> ।

५०—इति<sup>६</sup> संखाय के गोया-वादी ? के माणा-वादी ?

कंसि वा एगे गिज्जे ?

५१—तम्हा पंडिए णो हरिसे, णो कुज्जे ।

५२—भूएहिं<sup>७</sup> जाण पडिलेह सातं ।

१—णेव अन्नेहिं ( छ ) ।

२—एएहिं कज्जेहिं दंडं समारंभते वि अण्णे ण समणुजाणिज्जा ( क, ख, ग, घ, च ) ।

३—आरिएहिं ( क, ख, घ ) ।

४—नागार्जुनीया —एगमेगे खलु जीवे अईअद्वाए असइं उच्चा-नोए असइं णीया-नोए  
कंडगट्टुए णो हीणे नो अइरित्ते ( चू, वृ ) ।

५—पीहेइ ( ख, ग ) ।

६—एय ( चू ) ।

७—नागार्जुनीया —पुरिसेणं खलु दुक्खविवागगवेमएणं । पुज्जि नाव जीवाभिगमे कायव्वे,  
जाइं च इच्छिताणिच्छे. तं साता-सातं वियाणिया हिसोवरती कायव्वे ( चू ) ।

नागार्जुनीया :—पुरिसेणं खलु दुक्खुव्वे सुहेसए ( वृ ) ।

५३—समिते एयाणुपस्सी ।

५४—तंजहा—अंधत्तं, बहिरत्तं, मूयत्तं, काणत्तं, कुंटत्तं, खुज्जत्तं,  
वडभत्तं, सामत्तं, सबलत्तं ।

५५—सहपमाएणं अणेग-रूवाओ जोणीओ संघाति<sup>१</sup>,  
विरूवरूवे फासे पडिसंवेदेइ<sup>२</sup> ।

५६—से अबुज्झमाणे 'हतोवहते जाइ-मरणं अणुपरियट्टमाणे'<sup>३</sup> ।

५७—जीवियं पुढो पियं इहमेगेसि माणवाणं,  
खेत्त-वत्थु ममायमाणाणं ।

५८—आरत्तं विरत्तं मणिकुंडलं सह हिरण्णेण इत्थियाओ,  
परिगिज्झ तत्थेव रत्ता ।

५९—ण एत्थ तवो वा, दमो वा, णियमो वा दिस्सति ।

६०—संपुण्णं बाले जीविउ-कामे, लालप्पमाणे मूढे विप्परियासु<sup>४</sup>वेइ<sup>५</sup> ।

६१—इणमेव णावकंखंति, जे जणा धुव-चारिणो ।

जाती-मरणं परिन्नाय, चरे संकमणे दढे ॥

६२—णत्थि कालस्स णागमो ।

६३—सव्वे पाणा पियाउया<sup>५</sup>, सुइ-साया दुक्ख-पडिक्कला, अप्पिय-  
वहा, पिय-जीविणो जीविउ-कामा ।

६४—सव्वेसि जीवियं पियं ।

६५—तं परिगिज्झ दुपयं चउप्पयं अभिजुंजियाणं, ससिच्चियाणं,  
तिविहेणं जा वि से तत्थ मत्ता भवइ—अप्पा वा बहुगा वा ।

१—संघाएति ( ख, ग, च ) ।

२—परि० ( घ, वृ ) ।

३—हतोवहते विणिविट्ठचित्तं एत्थ सत्ते पुणो-पुणो ( वृ ) ।

४—विप्परियासमुवेइ ( ख, ग, घ, छ ) ।

५—पियायया ( वृषा ) ।

६६—से तत्थ गढिए चिट्ठइ भोयणाए ।

६७—तओ से एगया विपरिसिट्ठं<sup>१</sup> संभूयं महोवगरणं भवइ ।

६८—तं पि से एगया दायाया विभयंति,

अदत्तहारो<sup>२</sup> वा से अवहरति,<sup>३</sup>

रायाणो वा से विलुपंति,

णस्सति वा से, विणस्सति वा से,

अगार-दाहेण वा से डज्झइ ।

६९—इति से परस्स अट्ठाए कूराइं कम्माइं बाले पकुव्वमाणे,

तेण दुक्खेण मूढे<sup>४</sup> विप्परियासु<sup>५</sup>वेइ<sup>५</sup> ।

७०—मुणिणा हु एयं पवेइयं ।

७१—अणोहंतरा एते, नो य ओहं तरित्तए ।

अतीरंगमा एते, नो य तीरं गमित्तए ।

अपारंगमा एते, नो य पारं गमित्तए ॥

७२—आयाणिज्जं च आयाय, तम्मि ठाणे ण चिट्ठइ ।

वितहं पप्प<sup>५</sup>खेयन्ने, तम्मि ठाणम्मि चिट्ठइ ॥

७३—उद्देसो पासगस्स णत्थि ।

७४—बाले पुण णिहे काम-समणुत्ते असमिय-दुक्खे दुक्खी

दुक्खाणमेव आवट्ठं अणुपरियट्ठइ ।

—त्ति बेमि ।

१—विविह परिसिट्ठं ( क, ख, ग, घ, च ) ।

२—अदत्ताहारा ( ख, ग ) ।

३—अवहरति ( ख, ग ) ।

४—समूढे ( क, घ ) ।

५—विप्परियासमुवेत्ति ( ख, ग, घ, च, छ ) ।

### चउत्थो उद्देसो

- ७५—तओ से एगया रोग-समुप्पाया समुप्पज्जंति ।  
 ७६—जेहिं वा सद्धिं सवसति ते वा णं एगया णियया पुब्बिं  
 परिवयंति,  
 सो वा ते णियगे पच्छा परिवएज्जा ।  
 ७७—नालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा ।  
 तुमं पि तेसि नालं ताणाए वा, सरणाए वा ।  
 ७८—जाणिच्चु दुक्खं पत्तेयं सायं ।  
 ७९—भोगामेव अणुसोयंति ।  
 ८०—इहमेगेसिं माणवाणं ।  
 ८१—तिविहेण जावि से तत्थ मत्ता भवइ—अप्पा वा बहुगा वा ।  
 ८२—से तत्थ गढिए चिद्धति, भोयणाए ।  
 ८३—ततो से एगया विपरिसिद्ध संभूयं महोवगरणं भवति ।  
 ८४—तं पि से एगया दायाया विभयंति,  
 अदत्तहारो वा से अवहरति,<sup>१</sup>  
 रायाणो वा से विलुपंति,  
 णस्सइ वा से, विणस्सइ वा से,  
 अगार-डाहेण वा डज्झइ ।  
 ८५—इति से बाले परस्स अट्ठाए कूराइं कम्माइं पकुव्वमाणे,  
 तेण दुक्खेण मूढे<sup>२</sup> विप्परियासु<sup>३</sup> वेइ ।

१—हरति ( क, छ ) ।

२—समूढे ( क, घ, च ) ।

- ८६—आसं च छंदं च विगिंच<sup>१</sup> धीरे ।  
 ८७—तुमं चेव तं सल्लमाहट्टु ।  
 ८८—जेण सिया तेण णो सिया ।  
 ८९—इणमेव णावजुज्झंति, जे जणा मोह-पाउडा ।  
 ९०—थीभि लोए पच्चहिए ।  
 ९१—ते भो वयंति “एयाइं आयतणाइं” ।  
 ९२—से दुक्खाए, मोहाए, माराए, णरगाए, णरग-तिरिक्खाए<sup>२</sup> ।  
 ९३—सततं मूढे धम्मं णाभिजाणइ<sup>३</sup> ।  
 ९४—उदाहु वीरे—अप्पमादो महा-मोहे ।  
 ९५—अलं कुसलस्स पमाएणं ।  
 ९६—संति मरणं संपेहाए,<sup>४</sup> भेउर-धम्मं संपेहाए ।  
 ९७—“णालं पास” ।  
 ९८—अलं ते एएहिं ।  
 ९९—एयं पास मुणी ! महब्भयं ।  
 १००—णाइवाएज्ज कंचणं ।  
 १०१—एस वीरे पसंसिए<sup>५</sup>—  
     जे ण णिविज्जति आदाणाए ।  
 १०२—“ण मे देति” ण कुप्पिज्जा, थोवं लड्डुं न खिसए ।  
     पडिसेहिओ<sup>६</sup> परिणमिज्जा ।  
 १०३—एयं मोणं समणुवासेज्जासि ।

—त्ति वेमि ।

१—विविच्च ( क ) ।

२—<sup>□</sup> तिरियाए ( घ ) ।

३—ण जानाति ( वृ ) ।

४—सपेहाए ( क, च ) ।

५—नमसिते ( चूपा ) ।

६—पडिलमिओ ( वपा ) ; पडिलाभितो परिणमे, ण वो वास चेव कुज्जा ( चूपा ) ।

## पंचमो उद्देशो

१०४-जमिणं विरूवरूवेहि सत्थेहि<sup>१</sup> लोगस्स कम्म-समारंभा  
कज्जन्ति, तंजहा—अप्पणो से पुत्ताणं, धूयाणं, सुण्हाणं,  
णातीणं, घातीणं, राईणं, दासाणं, दासीणं, कम्म-कराणं,  
कम्म-करीणं,

आएसाए, पुढो पहेणाए, सामासाए, पायरासाए ।

१०५-सन्निहि-सन्निचओ कज्जइ, इहमेगेसि माणवाणं भोयणाए ।

१०६-समुट्ठिए अणगारे आरिए आरिय-पण्णे आरिय-दंसो  
'अयं संधी'ति अदक्खु<sup>२</sup> ।

१०७-से णाइए, णाइआवए, ण समणुजाणइ ।

१०८-सच्चाभगंधं<sup>३</sup> परिणाय, णिरामगन्धो परिच्चए ।

१०९-अदिस्समाणे कय-विक्कणंसु ।

से ण किणे ण किणावए,

किणंतं ण समणुजाणइ ।

११०-से भिक्खू कालण्णे, बलण्णे<sup>४</sup>, मायण्णे, खेयन्ते, खणयन्ते<sup>५</sup>,  
विणयन्ते, समयन्ते<sup>६</sup>, भावण्णे, परिग्गहं अममायमाणे,  
काले'णुट्ठाई, अपडिन्ते ।

१११-दुहओ छेत्ता नियाइ ।

११२-वत्थं पडिग्गहं, कंवलं पाय-पुंछणं, उग्गहं च कडासाणं,  
एतेसु चैव जाणेज्जा ।

१-सत्थेहि विरूवरूवाणं अट्ठाए ( चुपा ) ।

२-अयं सधिमदक्खु ( वृषा ) ; अदक्खु ( क, ख, ग ) ।

३-० गंधे ( घ, च ) ।

४-बालण्णे ( क, घ, च, वृ ) ।

५-खणण्णे ( चू ) ।

६-समयण्णे परसमयण्णे ( घ, च ) , स समयण्णे परसमयण्णे ( छ ) ।

११३—लद्धे आहारे अणगारे मायं जाणेज्जा,  
से जेह'यं भगवया पवेइयं ।

११४—'लामो'त्ति न मज्जेज्जा ।

११५—'आलामो'त्ति ण सोयए' ।

११६—वहुं पि लद्धं ण णिहे ।

११७—परिग्गहाओ अप्पाणं अवसक्केज्जा ।

११८—'अण्णहा णं पासए परिहरेज्जा'<sup>२</sup> ।

११९—एस मग्गे-आरिण्हि पवेइए ।

१२०—जहे'त्थ कुसले णोवलिपिज्जासि—त्ति बेमि ।

१२१—कामा दुरत्तिक्रमा ।

१२२—जीवियं दुप्पडिवूहणं<sup>३</sup> ।

१२३—काम-कामी खलु अयं पुरिसे ।

१२४—से सोयति, जूरति, तिप्पति<sup>४</sup>, पिडुति<sup>५</sup>, परित्तप्पति ।

१२५—आयतचक्खू लोग-विपस्सी—

लोगस्स अहो-भागं जाणइ, उड्ढं भागं जाणइ, तिरियं भागं  
जाणइ ।

१२६—गढिए<sup>६</sup> अणुपरियट्टमाणे ।

१२७—संधिं विदिता इह मच्चिएहिं ।

१२८—एस वीरे पसंसिए, जे बट्ठे पडिमोयए ।

१२९—जहा अन्तो तहा बाहिं, जहा बाहिं तहा अन्तो ।

१—सोएज्जा ( ख, ग, च, छ ) ।

२—अण्णतरेण पासएण परिहरिज्जा ( चुपा ) ।

३—<sup>०</sup> वूहणं ( घ, ङ ) ।

४—तप्पति ( चु ) ।

५—पिट्ठ ( क, ख, ग ) ; × ( च, छ ) ।

६—गढिए लोए ( ख, ग, घ ) ।

- १३०-अन्तो अन्तो पूति-देहं तराणि, पासति पुढोवि सवन्ताइं ।  
 १३१-पंडिए पडिलेहाए ।  
 १३२-से मइमं परिणाय, मा य हु लालं पच्चासी ।  
 १३३-मा तेसु तिरिच्छमप्पाणमावातए ।  
 १३४-'कासं कसे'<sup>१</sup> खलु अयं पुरिसे, बहु-माई,  
 कडेण मूढे पुणो तं करेइ-लोभं ।  
 १३५-वेरं वड्ढेति अप्पणो ।  
 १३६-जमिणं परिकहिज्जइ, इमस्स चेव पडिवूहणयाए<sup>२</sup> ।  
 १३७-अमरायइ<sup>३</sup> महा-सड्ढी ।  
 १३८-'अट्टमेतं पेहाए'<sup>४</sup> ।  
 १३९-अपरिन्नाए कंदति ।  
 १४०-'से तं जाणह जमहं वेमि'<sup>५</sup> ।  
 १४१-'तेइच्छं पंडिते'<sup>६</sup> पवयमाणे ।  
 १४२-से<sup>७</sup> हंता, छेत्ता, भेत्ता<sup>८</sup>, 'लुंपइत्ता, विलुंपइत्ता'<sup>९</sup>, उद्वइत्ता ।  
 १४३-'अकडं करिस्सामि'त्ति मण्णमाणे ।  
 १४४-जस्स वि य णं करेइ ।  
 १४५-अलं बालस्स संगेणं ।  
 १४६-जे वा से कारेइ वाले ।  
 १४७-'ण एव'<sup>१०</sup> अणगारस्स जायति । —त्ति वेमि ।

१-काम कामे ( चू ) ; कास कसे य ( घ ) ।

२-पडिवूहणइहाए ( वृ, छ ) ।

३-अमराइ ( घ, च ) ।

४- उपेहाए ( चू ), अट्टमेत ( क, घ, च, छ ) ।

५-से एव मायाणह ज वेमि ( चू ), से एव मायाणह जमह वेमि ( क, ख, ग ) ।

६-तेइच्छ पंडितो ( चू ) ।

७-× ( चू ) ।

८-भेत्ता, छेत्ता ( ख, ग, घ, च, छ ) ।

९-लुपित्ता, विलुपित्ता ( ख, ग, च, छ ) ।

१०-ण हु एव ( चू ) ।



## छट्टो उद्देशो

- १४८—से तं संबुज्झमाणे, आयाणीयं समुद्धाए ।  
 १४९—तम्हा पावं कम्मं, णे'व कुज्जा न कारवे ।  
 १५०—सिया तत्थ<sup>१</sup> एगयरं विप्परामुसइ<sup>२</sup>, छसु अण्णयरंसि कप्पति ।  
 १५१—सुहट्ठी लालप्पमाणे सएण दुक्खेण मूढेविप्परियासमुवेति ।  
 १५२—सएण विप्पमाएण, पुढो वयं पकुच्चति ।  
 १५३—जंसि'मे पाणा पव्वहिया । पडिलेहाए—णो णिकरणाए<sup>३</sup> ।  
 १५४—एस परिण्णा पवुच्चइ ।  
 १५५—कम्मोवसंती ।  
 १५६—जे ममाइय-मतिं जहाति, से जहाति<sup>४</sup> ममाइयं ।  
 १५७—से हु दिट्ठ-पहे<sup>५</sup> मुणी, जस्स णत्थि ममाइयं ।  
 १५८—तं परिण्णाय मेहावी ।  
 १५९—विदित्ता लोगं, वंता लोग-सण्णं, 'से मतिमं'<sup>६</sup> परक्कमेजासि<sup>७</sup>  
 —त्ति बेमि ।  
 १६०—णारतिं<sup>८</sup> सहते वीरे, वीरे णो सहते रतिं ।  
 जम्हा अविमणे वीरे, तम्हा वीरे ण रज्जति ॥  
 १६१—सहे यं फासे अहियासमाणे ।  
 १६२—णिब्बिद णंदिं इह जीवियस्स ।

१—से ( च ) ।

२—विपरामुसति ( क ) ।

३—णिकरणयाए ( ख, ग ) ।

४—चयइ ( क, ख, ग, च ) ।

५—दिट्ठ-भये ( घ, च, चपा, वृपा ) ।

६—स मइमं ( ख ), स इति मुनि ( वृ ) ।

७—परक्कमेज्जा ( क, ख, ग, घ, च, छ ) ।

८—णो रइ ( क, च ) ।

९—X ( ख, ग, च, छ ) ।

१६३-मुणी मोणं समादाय, धुणे<sup>१</sup> कम्म-सरीरगं ।

१६४-पंतं लूहं सेवन्ति, वीरा सम्मत्त-दंसिणो ।

१६५-एस ओघन्तरे मुणी, तिन्ने मुत्ते विरते,  
वियाहिते—त्ति बेमि ।

१६६-दुव्वसु मुणी अणाणाए ।

१६७-तुच्छए गिलाइ वत्तए ।

१६८-एस वीरे पसंसिए ।

१६९-अच्चेइ लोय-संजोयं ।

१७०-एस णाए पवुच्चइ<sup>२</sup> ।

१७१-जं दुक्खं पवेदितं इह माणवाण,  
तस्स दुक्खस्स कुसला परिण्णमुदाहरन्ति<sup>३</sup> ।

१७२-इति कम्म परिण्णाय सव्वसो ।

१७३-जे अणण्ण-दंसी, से अणण्णारामे,  
जे अणण्णारामे, से अणण्ण-दंसी ।

१७४-जहा पुण्णस्स कत्थइ, तहा तुच्छस्स कत्थइ ।  
जहा तुच्छस्स कत्थइ, तहा पुण्णस्स कत्थइ ॥

१७५-अवि य हणे अणादियमाणे<sup>४</sup> ।

१७६-एत्थंपि जाण, सेयन्ति णत्थि ।

१७७-कै यं पुरिसे कं च णए ?

१७८-एस वीरे पसंसिए, जे वद्धे पडिमोयए ।

१७९-उट्ठुं अहं तिरियं दिसासु, से सच्चतो सच्च-परिण-चारी ।

१-धुण ( वृ ) ।

२-स वुच्चइ ( घ ) ।

३-पत्तिण्ण ° ( छ ) ।

४-x ( च ) ।

१८०—ण लिप्पई छण-पण वीरे ।

१८१—से मेहावी, अणुघायणस्स खेयन्ते,  
जे य—बंधप्पमोक्खमन्नेसी ।

१८२—कुसले पुण णो बद्धे, णो मुक्के ।

१८३—से जं च आरभे जं च णारभे ।  
अणारद्धं च णारभे ।

१८४—छणं-छणं परिणाय, लोग-सन्नं च सव्वसो ।

१८५—उद्देसो पासगस्स णत्थि ।

१८६—बाले पुण णिहे काम-समणुन्ने असमिय-दुक्खे दुक्खी दुक्खाणमेव  
आवट्ठं अणुपरियट्ठइ ।

—त्ति बेमि ।

तद्वय अज्मयण

## सीओसणिज्जं

पढमो उद्देशो

- १-सुत्ता अमुणी सया<sup>१</sup>, मुणिणो सया<sup>२</sup> जागरंति ।
- २-लोयंसि जाण अहियाय दुक्खं ।
- ३-समयं लोगस्स जाणित्ता, एत्थ सत्थोवरए ।
- ४-जस्सि'मे सट्ठा य रुद्धा य गंधा य रसा य फासा  
य अभिसमन्नागया भवंति, से 'आयवं नाणवं देयवं  
धम्मवं बंभवं'<sup>३</sup> ।
- ५-पन्नाणेहि पगियाणइ लोयं, 'मुणी'ति वच्चे'<sup>४</sup>, धम्मविउ'त्ति  
अज्जू' ।
- ६-आवट्ट-सोए संगमभिजाणति ।
- ७-सीउसिणच्चाइ से निगंथे अरइ-रइ-सहे फरुसिय<sup>५</sup> णो वेदेति ।
- ८-जागर-वेरोवरए वीरे<sup>६</sup> ।
- ९-एवं दुक्खा पमोक्खसि<sup>७</sup> ।
- १०-जरा-मच्चु-वसोवणीए णरे, सययं मूढे धम्मं णाभिजाणति ।

---

१-X ( चू, च ) ।

२-सततमनवरतम् ( वृ ) ।

३-आतवि, वेदवि, धम्मवि, वमवि ( चू ), आतव ..( चण ) : आयवी, णाणवी, वेदवी,  
धम्मवी, वमवी ( वृपा ) ।

४-मुणी वच्चे ( वृ, छ ) ।

५-उज्जू ( क, च, छ ) ।

६-फरुसव ( चू ) ।

७-वीरे ( छ ) ।

८-पमूच्चमि ( क ख ग घ, छ ) ।

- ११—पासिय आउरे<sup>१</sup> पाणे, अप्पमत्तो परिच्चए ।  
 १२—मंता एयं मइमं ! पास ।  
 १३—आरंभजं दुक्खमिणं ति णच्चा ।  
 १४—माई पमाई<sup>२</sup> पुणरेइ गब्भं ।  
 १५—उवेहमाणो सद्-रूवेसु अंजू, माराभिसंकी<sup>३</sup> मरणा पमुच्चति ।  
 १६—अप्पमत्तो कामेहि, उवरतो पाव-कम्मेहि, वीरे आय-गुत्ते जे  
 खेयन्ते ।  
 १७—जे पज्जवजाय-सत्थस्स खेयन्ते, से असत्थस्स खेयन्ते,  
 जे असत्थस्स खेयन्ते, से पज्जवजाय-सत्थस्स खेयन्ते ।  
 १८—अकम्मस्स ववहारो न विज्जइ ।  
 १९—कम्मुणा<sup>४</sup> उवाही<sup>५</sup> जायइ ।  
 २०—कम्मं च पडिलेहाए ।  
 २१—‘कम्म-मूलं च’<sup>६</sup> जं छणं ।  
 २२—पडिलेहिय सत्त्वं समायाय ।  
 २३—दोहिं अंतेहिं अदिस्समाणे ।  
 २४—तं परिणाय मेहावी ।  
 २५—विदित्ता लोगं, वंता लोगसन्नं, से मइमं<sup>७</sup> परक्कमेज्जासि ।  
 —त्ति वेमि ।

---

१-आतुरे यो ( चू ) ।

२-पमाया ( व ) ।

३-म.रावसंकी ( चूपा ) ।

४-कम्मणा ( क, ख, ग ) ।

५-उवही ( चू ) ।

६-कम्ममाहूय ( चूपा, वृपा ) ।

७-मेहावी ( ख, ग, च ) ।

## बीओ उद्देसो

- २६—जातिं च वुड्ढिं च इहज्ज पासे ।  
 २७—भूतेहिं जाणे पडिलेह सातं ।  
 २८—तम्हाऽति विज्जो परमंति णच्चा,  
 सम्मत्त-दंसी ण करेति पावं ।  
 २९—उम्मं च पासं इह मच्चिंहिं ।  
 ३०—आरंभ-जीवी उभयाणुपस्सी ।  
 ३१—कामेसु गिद्धा णिचयं करेति,  
 संसिच्चमाणा पुणरेंति गव्वं ।  
 ३२—अवि से हासमासज्ज, हंता णंदीति मन्नति ।  
 अलं बालस्स संगेणं, वेरं वडुति<sup>१</sup> अप्पणो ॥  
 ३३—तम्हाऽति विज्जो परमंति णच्चा,  
 आयंक-दंसी ण करेति पावं ।  
 ३४—‘अग्गं च मूलं च विगिंच धीरे’<sup>२</sup> ।  
 ३५—पलिच्छिन्दियाणं णिकम्म-दंसी ।  
 ३६—एस मरणा पमुच्चइ ।  
 ३७—से हु दिट्ठ-भए<sup>३</sup> मुणी ।  
 ३८—लोयंसी परम-दंसी विचित्त-जीवी उवसंते,  
 समिते<sup>४</sup> सहिते सयाजए कालकंखी परिव्वए ।  
 ३९—बहुं च खलु पाव-कम्म पगडं ।  
 ४०—सच्चंसि धिर्ति कुव्वह ।

१-वड्ढेति ( घ ) ।

२- वीरे X ( क, ग, च, चू ), मूल च अग्ग च विइत्तु वीरो ( चूपा ) । नागार्जुनीया.—

मूल च अग्गा च विएत्तु वीरे, कम्मासव चेड विमोक्खण च ( चू ) ।

३-दिट्ठ-पहे, अहवा दिट्ठ-भए ( चू ) ।

४-समिते अप्पमाई(ती) ( घ, छ ) ।

६०—णातीतमट्ठं<sup>१</sup> ण य आगमिस्सं, अट्ठं नियच्छंति तद्वागया उ ।

विधूत-कप्पे एयाणुपस्सी, णिज्झोसइत्ता 'खवगे महेसी'<sup>२</sup> ॥

६१—का अरई ? के आणंदे ? एत्थंपि अग्गहे चरे ।

सच्चं हासं परिच्चज्ज, आलीण-गुत्तो परिव्वए ॥

६२—पुरिसा ! “तुममेव तुमं मित्तं, किं बहिया मित्तमिच्छसि ?”

६३—जं जाणेज्जा उच्चालइयं, तं जाणेज्जा दूरालइयं ।

जं जाणेज्जा दूरालइयं, तं जाणेज्जा उच्चालइयं ॥

६४—पुरिसा ! “अत्ताणमेव अभिणिगिज्झ, एवं दुक्खा पमोक्खसि” ।

६५—पुरिसा ! सच्चमेव समभिजाणाहि<sup>३</sup> ।

६६—सच्चस्स आणाए 'उवट्ठिए से'<sup>४</sup> मेहावी मारं तरति ।

६७—सहिए धम्ममादाय, सेयं समणुपस्सति ।

६८—दुहओ जीवियस्स परिवंदण-माणण-पूयणाए, जंसि एगे पमादेति ।

६९—‘सहिए दुक्खमत्ताए’<sup>५</sup> पुट्ठो णो भंभाए ।

७०—पासिमं दविए<sup>६</sup> लोयालोय-पवंचाओ मुच्चइ ।

—त्ति बेमि ।

१—<sup>०</sup> मट्ठ ( च ) ।

२—X ( क, घ, च ) ।

न व्याख्यातं ( च, वृ ) ।

३—<sup>०</sup> जाणहि ( क ) ; <sup>०</sup> जाणेहि ( च ) ।

४—से उवट्ठिए से ( क, ख, ग ) ; से समुट्ठिए ( च ) ; से उवट्ठिए ( च ) ।

५—सहिते धम्ममादाय ( च ) ; सहिते दुक्खमत्ताते ( चूपा ) ; <sup>०</sup> मेत्ताते ( क ) ;

<sup>०</sup> माताते ( च ) ।

६—दविए लोए ( छ ) ।

## चउत्थो उहेसो

७१—से वंता कोहं च, माणं च, मायं च, लोभं च ।

७२—एयं पासगस्स दंसणं, 'उवरय-सत्थस्स पलियंतकरस्स' ।

७३—आयाणं ( णिसिद्धा<sup>१</sup> ? ) सगडब्भि<sup>३</sup> ।

७४—जे एग जाणइ, से सव्वं जाणइ ।

जे सव्वं जाणइ, से एगं जाणइ ॥

७५—सव्वतो पमत्तस्स भयं, सव्वतो अप्पमत्तस्स नत्थि भयं ।

७६—जे एगं नामे, से बहं नामे,

जे बहं नामे, से एगं नामे ।

७७—दुक्खं लोयस्स जाणित्ता ।

७८—वंता लोगस्स संजोगं, जंति वीरा<sup>४</sup> महाजाणं ।

परेण परं जंति, नावकंखंति जीवियं ॥

७९—एगं विगिचमाणे पुढो विगिचइ ।

पुढोविगिचमाणे एगं विगिचइ ।

८०—सट्ठी आणाए मेहावी ।

८१—लोगं च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभयं ।

८२—अत्थि सत्थ परेण परं, णत्थि असत्थं परेण परं ।

१—<sup>०</sup> कडस्स ( क ) ।

२—द्वष्टव्यम् सू० ८६ ( पृ० ४६ ) ।

३—X ( च ) ।

४—वीरा ( क ) ।



८३—जे कोह-दंसी से माण-दंसी  
 जे माण-दंसी से माय-दंसी  
 जे माय-दंसी से लोभ-दंसी  
 जे लोभ-दंसी से पेज-दंसी  
 जे पेज-दंसी से दोस-दंसी  
 जे दोस-दंसी से मोह-दंसी  
 जे मोह-दंसी से गब्भ-दंसी  
 जे गब्भ-दंसी से जम्म-दंसी  
 जे जम्म-दंसी से मार-दंसी  
 जे मार-दंसी से निरय-दंसी  
 जे निरय-दंसी से तिरिय-दंसी  
 जे तिरिय-दंसी से दुक्ख-दंसी ।

८४—से मेहावी अभिनिवट्टेज्जा<sup>१</sup>—कोहं च, माणं च, मायं च,  
 लोहं च, पेज्जं च, दोसं च, मोहं च, गब्भं च, जम्मं च,  
 मार<sup>२</sup> च, नरगं च, तिरियं च, दुक्खं च ।

८५—एयं पासगस्स दंसणं उवरय-सत्थस्स पलियंतकरस्स ।

८६—आयाणं 'णिसिद्धा सगडिब्भि ।

८७—किमत्थि उवाही<sup>३</sup> पासगस्स ण विज्जइ ?<sup>४</sup>  
 णत्थि ।

—त्ति वेमि ।

१—<sup>०</sup> निव्वट्टेज्जा ( क, घ, छ ) ।

२—मरण ( ख, ग ) ।

३—उवाही (घी) ( क, घ, छ ) ।

४—x ( च ) ।

चउत्त्यं अज्जमयणं

सम्मत्तं

पढमो उद्देशो

१-से वेमि—जे<sup>१</sup> अईया, जे य पडुप्पन्ना, जे य आगमेस्सा  
अरहंता<sup>२</sup> भगवन्तो<sup>३</sup> ते सव्वे एवमाइक्खंति, एवं भासंति,  
एवं पण्णवेति, एवं परूवेति :

सव्वे पाणा, सव्वे भूता, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता, ण हंतव्वा,  
ण अज्जावेयव्वा, ण परिघेतव्वा, ण परितावेयव्वा, ण  
उद्देवयव्वा ।

२-एस धम्मो सुद्धे<sup>४</sup>, णिइए, सासए, समिच्च लोय—  
खेयन्नेहिं<sup>५</sup> पवेइए ।

३-तजहा—उट्ठिएसु वा, अणुट्ठिएसु वा  
उवट्ठिएसु वा, अणुवट्ठिएसु वा  
उवरय-दंडेसु वा, अणुवरय-दंडेसु वा  
सोवहिएसु वा, अणोवहिएसु वा  
संजोग-रएसु वा, असंजोग-रएसु वा ।

४-तच्चं चेयं तथा चेयं, अस्सिं चेयं पवुच्चइ ।

---

१-जे य ( ख, ग, घ, छ ) ।

२-अरिहता ( ख, घ ) ।

३-भगवता ( घ, च ) ।

४-सुद्धे ध्रुवे ( घ ) ।

५-खेत्तन्नेहिं ( च ) ।

- ५—तं आइइत्तु<sup>१</sup> ण णिहे ण णिक्खिखवे, जाणित्तु धम्मं जहा<sup>२</sup> तथा ।  
 ६—दिट्ठेहिं णिव्वेयं गच्छेज्जा ।  
 ७—णो लोगस्सेसणं चरे ।  
 ८—जस्स णत्थि इमा णाई, अन्ना तस्स कओ<sup>३</sup> सिया ?  
 ९—दिट्ठं सुयं मयं विन्नायं, जमेयं<sup>४</sup> परिकहिज्जइ ।  
 १०—समेमाणा पलेमाणा<sup>५</sup>, पुणो—पुणो जातिं पक्कप्पेत्ति ।  
 ११—अहो य राओ य<sup>६</sup> ‘जयमाणे, वीर’<sup>७</sup> सया आगय-पन्नाणे ।  
 पमत्ते बहिया पास, अप्पमत्ते सया परक्कमेज्जासि ।  
 —त्ति बेमि ।

बीओ उद्देसो

- १२—जे आसवा, ते परिस्सवा,  
 जे परिस्सवा, ते आसवा,  
 जे अणासवा, ते अपरिस्सवा,  
 जे अपरिस्सवा, ते अणासवा —  
 एए पए संबुज्झमाणे, लोयं च आणाए अभिसमेच्चा पुढो  
 पवेइयं ।  
 १३—आघाइं<sup>८</sup> णाणी इह माणवार्णं,  
 संसार-पडिवन्नाणं संबुज्झमाणानं विन्नाणं-पत्ताणं ।

१—आइत्तु ( ख,ग,च,छ,ट्ट ) ।

२—अहा ( व ) ।

३—कुतो ( च ) ।

४—ज लोए ( च ) ।

५—पालेमाणा ( क, च ), चलेमाणा ( शु० ) ।

६—x ( ख,ग,छ ) ।

७—धीरे ( ख,ग,घ,घृ ) ।

८—जताहि एव वीरे ( चू ) ।

९—अक्खाइ ( घ ); नागार्जुनोया — शत्राइ धम्म खलु से जीवाण, तजहा—संसारपडिण  
 वन्नाण मणुस्सवभत्थाण आरंभविणईण दुक्खुव्वेअसुहेसगाणं धम्म-सवणगवेसगा -  
 निक्खित्त-सत्थार्णं सूरसूसमाणाण पडिपुच्छमाणाण विन्नाणपत्ताणं ( च, व ) ।

- १४-अट्टा वि सन्ता अदुवा पमत्ता ।  
 १५-अहासच्चमिणं ति वेमि ।  
 १६-नाणागमो मच्चु-मुहस्स अत्थि,  
 इच्छापणीया वंका-णिकेया ।  
 काल-ग्गहीआ णिचए णिविट्ठा,  
 'पुटो-पुटो जाइ पक्कप्पयंति'<sup>१</sup> ।  
 १७-'इहमेगेसिं तत्थ-तत्थ संथवो भवति ।  
 अहोववाडए फासे पडिसवेदयंति ।  
 १८-चिट्ठं कूरेहिं कम्महिं, चिट्ठं परिचिट्ठति<sup>२</sup> ।  
 अचिट्ठं कूरेहिं कम्महिं, णो चिट्ठं परिचिट्ठति<sup>३</sup> ।'<sup>४</sup>  
 १९-एगे वयंति अदुवा वि णाणी,  
 णाणी वयंति अदुवा वि एगे ।  
 २०-आवंती केआवंती लोयंसि समणा य माहणा य पुटो  
 विवादं वदंति—  
 से दिट्ठं च णे, सुय च णे,  
 मयं च णे, विण्णायं च णे—

१-पुटो पुटो जाइ पकरेति ( चू ) ,

एत्थ मोहे पुणो पुणो, पुटो पुटो जाइ पगप्पेति ( चुपा ) ;

.. पकप्पेति ( क ) ; पक्कप्पन्ति ( ख, ग, च ) ; पक्कप्पंति ( ज, छ ) ।

'पुटो पुटो जाइ पक्कप्पयन्ति' पंक्तिस्थाने शुत्रिग सपादिते पुस्तके एतादृशं पाठान्तरम्—

एत्थ मोहे पुणो पुणो, इहमेगेसिं तत्थ तत्थ संथवो भवइ, अहोववाडए फासे पडिसवेययन्ति ;

चित्तं कूरेहिं कम्महिं, चित्तं परिचिट्ठइ ,

अचित्तं कूरेहिं कम्महिं, नो चित्तं परिचिट्ठइ ।

२-परिविचिट्ठइ ( क, चू ) ।

३-परिविचिट्ठइ ( क ) ।

४-X ( शु ) ।

उड्डं अहं<sup>१</sup> तिरियं दिसासु, सव्वतो सुपडिलेहियं च णे—  
 सव्वे पाणा, 'सव्वे भूया, सव्वे जीवा'<sup>२</sup> सव्वे सत्ता,  
 हंतव्वा अज्जावेयव्वा परिघेतव्वा परियावेयव्वा<sup>३</sup> उद्देयव्वा ।  
 एत्थं<sup>४</sup> वि जाणह णत्थित्थ दोसो ।

२१—अणारिय-वयणमेयं ।

२२—तत्थ जे ते आरिया, ते एवं वयासी—

से दुद्धिदं च भे, दुस्सुयं च भे,  
 दुम्मयं च भे, दुव्विन्नायं च भे,  
 उड्डं अहं तिरियं दिसासु, सव्वतो दुप्पडिलेहियं च भे,  
 जन्नं तुब्भे एवमाइक्खह, एवं भासह, एवं 'परूवेह, एवं  
 पन्नवेह'<sup>५</sup>—

सव्वे पाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता,  
 हंतव्वा अज्जावेयव्वा परिघेतव्वा परियावेयव्वा उद्देयव्वा ।  
 एत्थं वि जाणह 'णत्थित्थ दोसो'<sup>६</sup> ।

२३—वयं पुण एवमाइक्खामो, एवं भासामो, एवं परूवेमो, एवं  
 पन्नवेमो—

सव्वे पाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता,  
 ण हंतव्वा ण अज्जावेयव्वा, ण परिघेतव्वा, ण परियावेयव्वा,  
 ण उद्देयव्वा ।  
 एत्थं वि जाणह णत्थित्थ दोसो ।

२४—आरिय-वयणमेयं ।

१—अहे य ( क ) ।

२—सव्वे जीवा सव्वे भूया ( वृ, क, घ, छ ) ।

३—परियावेयव्वा किलामेयव्वा ( क, ख, ग ) ।

४—एत्थं पि ( ख, ग, घ ) ।

५—पन्नवेह, एवं परूवेह ( चू, क ) ।

६—नत्थित्थ दोसो । अणारिय वयणमेय ( क, ख, ग, घ, च, छ ) ।

२५—पुव्वं निकाय समयं पत्तेय<sup>१</sup> पुच्छिस्सामो—

हं भो पावाइया<sup>२</sup> ! किं भे सायं दुक्खं उदाहु असायं ?

२६—समिया पडिवन्ते यावि एवं वूया—

सव्वेसिं पाणाणं, सव्वेसिं भूयाणं, सव्वेसिं जीवाणं, सव्वेसिं  
सत्ताणं, असायं अपरिणिव्वाणं महव्वभयं दुक्खं ।

—त्ति वेमि ।

तइओ उहेसो

२७—उवेह<sup>३</sup> एणं ब्रह्मिया य लोयं, से सच्च-लोगंसि जे केइ चिन्नु ।

अणुवीइ<sup>४</sup> पास णिक्खित्त-दंडा, जे केइ सत्ता पलियं चयंति<sup>५</sup> ॥

२८—नरे<sup>६</sup> मुयच्चा धम्मविदु त्ति अंजु ।

२९—आरंभजं दुक्खमिणंत्ति णच्चा, एवमाहु सम्मत्त-दंसिणो ।

३०—ते सव्वे पावाइया दुक्खस्स कुसला परिन्नमुदाहरंति ।

३१—इति कम्म परिन्नाय सव्वसो ।

३२—इह आणाकंखी पंडिए अणिहे 'एगमप्पाणं संपेहाए' ।

धुणे सरीरं<sup>७</sup>, कसेहि<sup>८</sup> अप्पाणं, जरेहि अप्पाणं ।

३३—जहा जुन्नाइं कट्ठाइं, हव्ववाहो<sup>९</sup> पमत्थति,

एवं अत्त-समाहिए अणिहे ।

३४—विग्गिच कोहं अधिकंपमाणे, इमं णिरुद्धाउयं संपेहाए ।

१—पत्तेय-पत्तेय ( ख, ग, च, छ ) ।

२—पावाइया ( छ ), समणा माहणा ( वृ ) ।

३—उवेहण ( क, घ ), उवेहेण ( ख, ग ); उव्वेहेण ( च, छ ) ।

४—अणुचितिय ( क, च ); ( छ ) अणुचितिय ।

५—जहति ( च, छ ) ।

६—नरा ( छ ) ।

७—सरीरण ( वृ ) ।

८—किसेहि ( च ), कम्मेहि जरेहि ( ख ) ।

९—हव्ववाहू ( घ, च, छ ) ।

- ३५—दुक्खं च जाण अदु<sup>१</sup> वा'गमेस्सं ।  
 ३६—पुढो फासाहं च फासे<sup>२</sup> ।  
 ३७—लोयं च पास विप्फंदमाणं ।  
 ३८—जे णिच्चुडा पावेहिं कम्मेहिं, अणिदाणा ते वियाहिया ।  
 ३९—तम्हाऽतिविज्जो णो पडिसंजलिज्जासि ।

—त्ति बेमि ।

### चउत्थो उद्देसो

- ४०—आवीलए पवीलए निप्पीलए,<sup>३</sup>  
 जहिता पुव्व-संजोगं, हिच्चा उवसमं ।  
 ४१—तम्हा अविमणे वीरे, सारए समिए सहिते सया जए ।  
 ४२—दुरणुचरो मग्गो वीराणं, अणियट्ट-गामीणं ।  
 ४३—विगिच मंस-सोणियं ।  
 ४४—एस पुरिसे दवीए वीरे, आयाणिज्जे वियाहिए ।  
 जे धुणाइ समुस्सयं, वसित्ता बंभचेरंसि ॥  
 ४५—णेत्तेहिं पलिछिन्नेहिं, आयाण-सोय-गट्टिए बाले ।  
 अज्जोच्छिन्न-बंधणे, अणभिव्वकंत-संजोए,  
 तमंसि<sup>४</sup> अविजाणओ, आणाए लंभो णत्थि—त्ति बेमि ।  
 ४६—जस्स नत्थि पुरा पच्छा, मज्जे तस्स कओ<sup>५</sup> सिया ?  
 ४७—से हु पत्ताणमंते बुद्धे आरंभोवरए ।

१—बहु ( क ) ।

२—फासए ( क, छ ) ।

३—निप्पीलए ( क, घ ) ।

४—अधस्स तमस्स ( चु ); तमसि ( चूपा ) ।

५—कुओ ( क, च, छ ) ।

४८—सम्मयेयंति पासह ।

४९—जेण वन्धं वहं घोरं, परितावं च दारुणं ।

५०—पलिच्छिदिय बाहिरगं च सोयं,  
णिक्कम्म-दंसी इह मच्चिएहि ।

५१—‘कम्मुणा सफलं’<sup>१</sup> दट्ठुं, तओ णिज्जाइ वेयवी ।

५२—जे खलु भो वीरा समिता सहिता सदा जया संघड-  
दंसिणो<sup>२</sup> आतोवरया, जहा-तहा<sup>३</sup> लोग मुवेहमाणा,  
पाईणं पडीणं दाहीणं उदीणं इति सच्चंसि परिचिट्ठिसु<sup>४</sup>,  
साहिस्सामो<sup>५</sup> णाण वीराणं समिताण सहिताणं सदा जयाणं  
संघड-दंसिणं आतोवरयाणं अहा-तहा लोगमुवेहमाणाणं ।

५३—किमत्थि उवाधी<sup>६</sup> पासगस्स ? ‘ण विज्जति ?’<sup>७</sup>  
णत्थि ।

—त्ति बेमि ।

१—कम्माण सफलत्त ( वृ ) ।

२—सत्थड<sup>०</sup> ( च ), संथड<sup>०</sup> ( चू ) ।

३—अहातह ( क ) ।

४—परिविचिट्ठिसु ( क, ख, ग, च, छ ), विपरिचिट्ठिसु ( चू ) ।

५—अग्घात्तिस्सामो ( च ) ।

६—उवही ( क, घ, च, छ ) ।

७—अह णत्थि ? ण विज्जति त्ति बेमि ( चू ); णत्थि वा ण विज्जति त्ति बेमि ( छ ) ।



पञ्चम अङ्गमयणं

## लोग-सारो

पदमो उद्देशो

- १-‘आवंती केआवंती लोयंसि विप्परामुसंति, अट्टाए  
अणट्टाए वा<sup>१</sup>,’<sup>२</sup> एएसु चेव विप्परामुसंति ।
- २-गुरू से कामा ।
- ३-तओ से मारस्स अंतो,  
जओ से मारस्स अंतो, तओ से दूरे ।
- ४-णेव से अंतो, णेव से दूरे<sup>३</sup> ।
- ५-से पासति फूसियमिव, कुसग्गे पणुन्नं णिवतितं वातेरितं ।  
एवं बालस्स जीवियं, मंदस्स अविज्जाणओ ॥
- ६-कूराणि कम्माणि बाले पकुव्वमाणे,  
तेण दुक्खेण मूढे विप्परियासुवेइ<sup>४</sup> ।
- ७-मोहेण गब्भं ‘मरणाति एति’<sup>५</sup> ।
- ८-एत्थ मोहे पुणो-पुणो ।
- ९-संसयं परिज्जाणतो, संसारे परिण्णाते भवति,  
संसयं अपरिज्जाणतो, संसारे अपरिण्णाते भवति ।

---

१-नागार्जुनीया :—जावति केइ लोए छक्काय-वह समारभति अट्टाए अणट्टाए वा ।

२-× ( ख, ग, घ, च, छ ) ।

३-बाहि ( च ) ।

४-विप्परियासमुवेति ( क, ख, ग, छ ) ; ° समेति ( च, च ) ।

५-मरणा दुवेति ( चपा ) ।

- १०—जे छेए से सागारियं ण सेवए ।  
 ११—‘कट्टु एवं अविजाणओ, वितिया मंदस्स वालया’<sup>१</sup> ।  
 १२—लद्धा हुरत्था पडिलेहाए आगमिन्ता आणविज्जा  
 अणासेवणयाए—त्ति बेमि ।  
 १३—पासह एगे रुवेसु गिद्धे परिणिज्जमाणे ।  
 १४—‘एत्थ फासे’<sup>२</sup> पुणो-पुणो ।  
 १५—आवंती केआवंती लोयंसि आरभजीवी,  
 एएसु चेव आरंभजीवी ।  
 १६—एत्थ वि वाले परिपच्चमाणे<sup>३</sup> रमति पावेहि कम्मेहि,  
 असरणे सरणं<sup>४</sup>ति मण्णमाणे ।  
 १७—एह मेगेसि एगचरिया भवति—  
 से बहु-कोहे बहु-माणे बहु-माए बहु-लोहे बहु-रण बहु-नडे  
 बहु-सढे बहु-संकप्पे,  
 आसवसक्की पलिउच्छन्ने,  
 उट्ठियवायं पवयमाणे “मा मे केह् अदक्खु”  
 अण्णाण-पमाय-दोसेण, सयय मूढे धम्मं णाभिजाणइ ।  
 १८—अट्ठा पया माणव ! कम्म-कोविया, जे-अणुवरया,  
 अविज्जाए पलिमोक्खमाहु, आवट्ठं<sup>५</sup> अणुपरियट्ठंति ।  
 —त्ति बेमि ।

१—नागार्जुनीया —जे खलु विसए सेवई सेविता वा णालोएइ, परेण वा पुट्ठो निण्हवइ अह्वा तं पर सएण वा दोसेण उवलिपिज्जति । तमेवा वियाणतो “( च )” ।

२—एत्थ मोहे ( च, वृषा ), तत्थ फासे ( चूपा ) ।

३—परिवच्चमाणे ( च ), परितप्पमाणे ( छ, च, वृ )-परिच्चमाणे ( चूपा, वृषा ) ।

४—आवट्ठमेव ( च्छ, ग, च ) ।

## बीओ उद्देशो

१९—आवंती केआवंती लोयंसि अणारंभ-जीवी एतेसु<sup>१</sup> चेव  
मणारंभ-जीवी<sup>२</sup> ।

२०—एत्थोवरए तं भोसमाणे 'अयं संधी' ति अदक्खु ।

२१—जे 'इमस्स विग्गहस्स अयं खणे'त्ति मन्नेसी<sup>३</sup> ।

२२—एस मग्गे—आरिएहिं पवेदिते ।

२३—उट्ठिए णो पमायए ।

२४—जाणित्तु दुक्खं 'पत्तेयं सायं'<sup>४</sup> ।

२५—पुढो—छंदा इह माणवा, पुढो दुक्खं पवेदितं ।

२६—से अविहिसमाणे अणवयमाणे, पुढो<sup>५</sup> फासे विप्पणोल्लए ।

२७—एस समिया-परियाए वियाहिते ।

२८—जे असत्ता पावेहिं कम्मोहिं, उदाहु ते आयंका फुसंति ।

इति उदाहु वीरे<sup>६</sup> 'ते फासे पुट्ठो हियांसए' ।

२९—से पुव्वं पेयं पच्छा पेयं भेउर-धम्मं, विद्धंसण-धम्मं, अधुवं,  
अणितियं, असासयं, चयावचइयं<sup>७</sup>, विपरिणाम-धम्मं, पासह  
एयं 'रूवं' ।

३०—संधि<sup>८</sup> समुप्पेहमाणस्स एगायतण-रयस्स<sup>९</sup> इह विप्पमुक्कस्स,  
णत्थि मग्गे विरयस्स—त्ति बेमि ।

१—तेसु ( वृ ) ।

२—अणारंभ-<sup>०</sup> ( ग, च ) ।

३—अन्नेसि ( ख, ग, च ) ।

४—पत्तेय-साय ( क, च, छ ) ।

५—पुढो ( ख, ग, घ ) ( अशुद्धम् ) ।

६—वीरे ( क, ख, ग, छ ) ।

७—चयो<sup>०</sup> ( क, ग, घ, च, छ )

८—रूवं-संधि ( क, च, छ ) ।

९—एगायण<sup>०</sup> ( घ ) ।

३१—आवंती केआवंती लोगंसि परिग्गहावंती—

से अप्पं वा, बहुं<sup>१</sup> वा, अणुं वा, थूलं वा, चित्तमंतं वा,  
अचित्तमंतं वा,

एतेसु चेव परिग्गहावंती ।

३२—एतदेवेगेसि<sup>२</sup> महब्भयं भवति, लोगवित्तं<sup>३</sup> च णं उवेहाए ।

३३—एए संगे अविजाणतो ।

३४—से 'सुपडिबुद्धं सूवणीयं'ति णच्चा'<sup>४</sup>, पुरिसा ! परमचक्खू !  
विपरक्कमा<sup>५</sup> ।

३५—एतेसु चेव बंधचेरं—ति बेमि ।

३६—से सुयं च मे, अज्झत्थियं<sup>६</sup> च मे—“बंध-पमोक्खो तुज्झ”<sup>७</sup>  
अज्झत्थेव” ।

३७—एत्थ विरते अणगारे, दीहरायं तितिक्खए ।

पमत्ते बहिया पास, 'अप्पमत्तो परिव्वए'<sup>८</sup> ॥

३८—एयं मोणं सम्मं अणुवासिज्जासि ।

—ति बेमि ।

तइओ उद्देसो

३९—आवंती केआवंती लोयंसि अपरिग्गहावंती,

एएसु चेव अपरिग्गहावंती ।

१—बहुय ( क, घ, च, छ ) ।

२—एयमेगेसि ( ख, ग ) . एयमेवेगेसि ( घ ) ।

३—लोग वित्त ( ख, ग, छ ) ।

४—सुपडिबुद्ध ( क, घ, छ, वृ ) , सुत अणुविचित्तेति णच्चा, ( ज्ञपा ) ।

५—विपरक्कम ( ख, ग, च ) ।

६—अज्झत्थिय, ( क, ख, ग, घ, च ) : अज्झत्थिय ( क्वचित् )

७—X ( ख, ग, घ, छ ) ।

८—अप्पमाय सुसिक्खेज्जा ( जू ) ।

४०—सोच्चा वई<sup>१</sup> मेहावी, पंडियाणं गिसामिया ।

समियाए<sup>२</sup> धम्मे, आरिएहिं पवेदिते ॥

४१—जहेत्थ मए संधी झोसिए, एवमण्णत्थ संधी दुज्झोसिए  
भवति ।

तम्हा वेमि णो णिहेज्ज<sup>३</sup> वीरियं ।

४२—जे पुव्वुट्ठाई, णो पच्छा-णिवाई ।

जे पुव्वुट्ठाई, पच्छा-णिवाई

जे णो पुव्वुट्ठाई, णो पच्छा-णिवाई ।

४३—सेऽवि तारिसए सिया<sup>४</sup>, जे परिण्णाय लोग मणुस्सिओ<sup>५</sup> ।

४४—एयं णियाय मुणिणा पवेदितं—इह आणाकंखी पंडिए अणिहे,

पुच्चावररायं जयमाणे, सया-सीलं संपेहाए,

मुणिया भवे अकामे अमंभे ।

४५—इमेणं चेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण वज्झओ ?

४६—‘जुद्धारिहं खलु दुल्लहं’<sup>६</sup> ।

४७—जहेत्थ कुसलेहिं परिन्ना-विवेगे भासिए ।

४८—चुए हु बाले ‘गब्भाइसु रज्जइ’<sup>७</sup> ।

४९—अस्सिं चेयं पव्वुच्चति, रूवंसि वा छणंसि वा ।

५०—से हु एगे संविद्धपहे<sup>८</sup> मुणी, अण्णहा लोगमुवेहमाणे ।

१—वति ( क, ख, ग, ) ; वात ( छ ) ।

२—समया ( घ, च ) ।

३—णिहिणज्ज, ( ख, ग ) निह्वेज्ज ( झ ) ।

४—चेव ( चू ) ।

५—मण्णेसति ( चू, क ); मण्णुसिया ( ख, ग, छ ); मण्णेसति ( च ); मणुस्सिते ( चूपा ) ।

६—जुद्धारिय च दुल्लह ( वृपा ) ।

७—गब्भाइ रज्जइ ( चूपा ); गब्भाइसु रिज्जइ ( वृ ) ।

८—संविद्धमए ( चू, वृपा ); संविद्ध पहे ( चूपा ) ।



- ६३—वयसा वि एगे बुइया कुप्पंति माणवा ।  
 ६४—उन्नयमाणे य णरे, महता मोहेण मुज्फति ।  
 ६५—संबाहा बहवे भुज्जो-भुज्जो दुरतिक्कमा अजाणतो अपासतो ।  
 ६६—एयं ते मा होउ ।  
 ६७—एयं कुसलस्स दंसणं ।  
 ६८—तद्धिट्ठीए तम्मोत्तीए<sup>१</sup> तप्पुरक्कारे, तस्सन्नी तन्निवेसणे ।  
 ६९—जयं-विहारी चित्तणिवाती<sup>२</sup> पंथ-णिज्झाती पलीवाहरे,<sup>३</sup>  
 पासिय पाणे गच्छेज्जा ।  
 ७०—से अभिक्कममाणे पडिक्कममाणे संकुचेमाणे<sup>४</sup> पसारेमाणे  
 विणियट्टमाणे संपलिमज्जमाणे<sup>५</sup> ।  
 ७१—एगया गुण-समियस्स रीयतो काय-संफास मणुच्चिन्ना  
 एगतिया पाणा उद्दयंति ।  
 ७२—इहलोग-वेयण-वेज्जावडियं ।  
 ७३—जं 'आउट्टि-कयं कम्मं'<sup>६</sup>, तं परिन्नाय विवेगमेति ।  
 ७४—एवं से अप्पमाणं, विवेगं किट्ठति वेयवी ।  
 ७५—से पभूय-दंसी पभूय-परिन्नाणे उवसंते समिए सहिते सयाजए  
 दट्ठं विप्पडिवेदेति अप्पाणं—  
 ७६—किमेस जणो करिस्सति ?  
 ७७—'एस से परमारामो'<sup>७</sup>, जाओ लोगंमि इत्थीओ ।

---

१—तम्मुत्तिए ( क, च ) ।

२—चित्तणिघायी ( चुपा ) ।

३—पलिबहिरै ( क ग ) ; पलिवाहरे ( च ) ; बलि-बाहिरे ( शु ) ;  
 पलिवाहिरे ( ख, घ, छ, वृ ) ।

४—संकुच० ( च ) ।

५—संपलिज्ज० ( चु, ख ) ।

६—आउट्टीकम्म ( क, च ) : आवट्टीकम्म ( घ ) ।

७—एसे(सो) परमारामो ( क, घ, च ) ।

७८—मुणिणा हु एतं पवेदितं, उब्बाहिज्जमाणे गाम-धम्ममेहिं—

७९—अवि णिब्बलासए ।

८०—अवि ओमोयरियं कुज्जा ।

८१—अवि उड्ढं ठाणं ठाइज्जा ।

८२—अवि गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

८३—अवि आहारं वोच्चिदेज्जा ।

८४—अवि चए इत्थीसु मणं ।

८५—पुच्चं<sup>१</sup> दंडा पच्छा फासा, पुच्चं फासा पच्छा दंडा ।

८६—इच्चेते कलहा संगकरा भवंति ।

पडिलेहाए आगमेत्ता

आणवेज्जा अणासेवणाए—त्ति बेमि ।

८७—से णो काहिए णो पासणिए णो संपसारए णो ममाए<sup>२</sup> णो

कय-किरिए वइ-गुत्ते अज्झप्प-संवुडे परिवज्जए सदा पावं ।

८८—एतं मोणं समणुवासिज्जासि ।

—त्ति बेमि ।

### पंचमो उद्देशो

८९—से बेमि—तंजहा

अवि हरए पडिपुन्ने, 'चिट्ठइ समंसि भोमे'<sup>३</sup> ।

उवसंतरए सारक्खमाणे, से चिट्ठति सोयमज्झगए ॥

९०—से पास सच्चतो गुत्ते, पास लोए महेसिणो,

जे य पन्नाणमंता पबुद्धा आरंभोवरया ।

१—पुच्चि ( घ ) ।

२—ममायए ( छ ) ; मामए ( झु ) ।

३—समंसि भोमे चिट्ठइ ( च ) ।



- ९१—सम्ममेयंति पासह<sup>१</sup> ।
- ९२—‘कालस्स कंखाए परिव्वयंति’—त्ति बेमि ।
- ९३—वित्तिगिच्छ<sup>२</sup>—समावन्नेणं अप्पाणेणं णो लभति समाधिं ।
- ९४—सिया वेगे अणुगच्छंति, असिया वेगे अणुगच्छंति,  
अणुगच्छमाणेहिं अणुगच्छमाणे कहं ण णिव्विज्जे ? ।
- ९५—तमेव सच्चं णीसंकं, जं जिणेहिं पवेइयं ।
- ९६—सड्ढिस्स णं समणुत्तस्स संपव्वयमाणस्स—  
समियंति मण्णमाणस्स एगया समिया होइ  
समियंति मण्णमाणस्स एगया असमिया होइ  
असमयंति मण्णमाणस्स एगया समिया होइ  
असमयंति मण्णमाणस्स एगया असमिया होइ  
समियंति मण्णमाणस्स समिया वा, असमिया वा, समिया  
होइ उवेहाए ।  
असमयंति मण्णमाणस्स समिया वा, असमिया वा, असमिया  
होइ उवेहाए ।
- ९७—उवेहमाणो अणुवेहमाणं बूया—उवेहाहि समियाए,
- ९८—इच्चेवं तत्थ संधी फोसितो भवति ।
- ९९—उट्ठियस्स ठियस्स गतिं समणुपासह ।
- १००—एत्थवि बाल-भावे अप्पाणं णो उवदंसेज्जा ।
- १०१—तुमंसि नाम सच्चेव<sup>३</sup>, जं ‘हंतव्वं’ ति मन्नसि,  
तुमंसि नाम सच्चेव, जं ‘अज्जावेयव्वं’ ति मन्नसि,  
तुमंसि नाम सच्चेव, जं ‘परितावेयव्वं’ ति मन्नसि,

१—पासहा ( क, च, छ ) ।

२—वित्तिगिच्छ ( छ ) ; विगिच्छ<sup>०</sup> ( शु ) ।

३—तं चेव ( क, घ, च ) ।

- ० तुमंसि नाम सच्चैव, जं 'परिधेतव्वं' ० १ ति मन्तसि.  
 तुमंसि नाम सच्चैव, जं 'उद्देवयव्वं' ति मन्तसि ।  
 १०२-अंजू चैयं पडिबुद्ध-जीवी, तग्हा ण हंता ण विद्याया ।  
 १०३-अणमंवेयणमप्पाणेणं, जं 'हंतव्वं' ति १ णाभिपत्त्या ।  
 १०४-जे आया से विन्ताया, जे विन्ताया से आया ।  
 जेण विजाणति से आया, तं पडुच्च पडिमंवा ।  
 १०५-एस आया-वादो समियाण-परियाण विद्याहिने ।

— ६३ —

### छट्टो उद्देशो

- १०६-अगाणाण एगे सोवट्टाणा, आगाण २ ३ ४ ५  
 १०७-एतं ते मा होउ ।  
 १०८-एयं कुमलस्स दंसणं ।  
 १०९-तदिट्ठीए तम्मुचीए, तप्पुराणे ६ ७ ८ ९  
 ११०-अभिमूय अदक्खू, अणनिम्मे १० ११ १२ १३  
 १११-जे महं अवहिमणे ।  
 ११२-पवाएणं पवायं जाणेज्जा  
 ११३-सह-सम्मइयाए १४ १५ १६ १७ १८ १९  
 ११४-णिदेस पातिवट्टेज्जा २० २१ २२ २३ २४ २५

१-एव ज 'परिधेतव्वं' ति २६ २७

ज 'उद्देवयव्वं' ति मन्तसि ( २८ २९ ३० ३१ )

२-चैय ( क, ख, ग, च चू. छ )

३-पडिबुद्ध ( क, च चू )

४-X ( ख, ग, घ, च छ )

५-अह ( चू )

६-मम्मुइ(ति)याण ( क २ च छ )

११५—सुपडिलेहिय<sup>१</sup> सन्वतो सन्वयाए<sup>२</sup> सम्ममेव<sup>३</sup> समभिजाणिया<sup>४</sup> ।

११६—इहारामं परिणाय, अल्लीण-गुत्तो परिच्वए ।

णिट्ठयट्ठी वीरे, आगमेण सदा परक्कमेज्जासि—त्ति बेमि ।

११७—उड्ढं सोत्ता अहे सोत्ता, तिरियं सोत्ता वियाहिया,  
एते सोया वियक्खाया, जेहिं संगंति पासहा ॥

११८—‘आवट्ठं तु उवेहाए’<sup>५</sup>, ‘एत्थ विरमेज्ज वेयवी’<sup>६</sup> ।

११९—विणएत्तु<sup>७</sup> सोयं णिक्खम्म<sup>८</sup>, एसमहं अक्कम्मा जाणति  
पासति ।

१२०—पडिलेहाए णावकंखति, इह आगतिं परिणाय

१२१—अन्चेइ जाइ-मरणस्स वट्ठमगं<sup>९</sup> वक्खाय-रए<sup>१०</sup> ।

१२२—सन्वे सरा णियट्ठंति ।

१२३—तक्का जत्थ ण विज्जइ ।

१२४—मई तत्थ ण गाहिया ।

१२५—ओए अप्पत्तिट्ठाणस्स खेयन्ते ।

१२६—से ण दीहे, ण हस्से<sup>११</sup>,

ण वट्ठे, ण तंसे, ण चउरंसे, ण परिमण्डले ।

१—<sup>०</sup> लेहिय ( चू ) ।

२—सन्वत्ताए ( चू ) . सर्वात्मना ( वृ ) ।

३—<sup>०</sup> मेत ( चू ) ।

४—<sup>०</sup> ज्जा ( व ) ।

५—आवट्ठमेय तु पेहाए ( ख, ग, घ ), अट्ठमेय उवेहाए ( चू ) ।

६—वियेण किट्ठइ वेदवी ( चू, वृपा ); एत्थ विरमेज्ज वेयवी ( चूपा ) ।

७—विणएत्ता ( चूपा ) ।

८—णिक्खम्म(म्मा) ( घ, छ ) ।

९—वट्ठमगं ( क ); वट्ठमगं ( घ, छ ) ।

१०—वियक्खाय<sup>०</sup> ( क, ख, ग, घ, च, छ ) ।

११—हस्से ( क, घ, च ); रहस्से ( ख ); हरस्से ( छ ) ।

१२७-ण किण्हे. न णीले, ण लोहिए, ण हालिद्दे, ण सुक्किल्ले ।

१२८-ण मुत्तिभगंधे<sup>१</sup>, ण दुरभिगंधे ।

१२९-ण तित्ते, ण कड्डुए, ण कसाए, ण अंविले, ण महुरे ।

१३०-ण कक्खड्डे<sup>२</sup>, ण मउए. ण गरुए, ण लहुए,  
ण सीए, ण उण्हे. ण णिद्धे, ण लुक्खे ।

१३१-ण काऊ ।

१३२-ण रुहे ।

१३३-ण संगे ।

१३४-ण डट्ठी, ण पुरिसे, ण अन्तहा ।

१३५-परिण्णे सण्णे<sup>३</sup> ।

१३६-उवमा ण विज्जण ।

१३७-अरुवी सत्ता ।

१३८-अपयस्स पयं णत्थि ।

१३९-से ण सट्ठे, ण रुद्धे, ण गंधे, ण रसे, ण फासे, इच्चैताव ।

—त्ति बेमि ।

१-सुरहि (मि) ( क, ख, ग ) ।

२-कक्खड्डे ( घ, छ ) ।

३-सव्वओ ( च्छु ) ; × ( घ ) ।

छट्ठं अज्झयणं

धुयं

पढमो उद्देशो

१-ओवुज्झमाणे इह माणवेसु, आघाइ<sup>१</sup> से णरे ।

२-जस्सिमाओ जाईओ सब्बओ सुपडिलेहियाओ भवन्ति ।

अक्खाइ से णाणमणेलिसं ।

३-से किट्ठति तेसि समुट्ठियाणं णिक्खित्त-दंडाणं समाहियाणं  
पन्ताणमन्ताणं इह मुत्ति-मगं ।

४-एवं पेगे महावीरा विप्परक्कमन्ति ।

५-पासह एगे ऽवसीयमाणे<sup>२</sup> अणत्त-पन्ते ।

६-से बेमि—से जहा वि कुम्मे हरए विणिविट्ठ-चित्ते, पच्छल्ल-  
पलासे, उम्मगं<sup>३</sup> से णो लहइ ।

७-भंजगा इव सन्निवेसं णो चयन्ति,  
एवं पेगे<sup>४</sup>—

‘अणेग-रूवेहिं कुलेहिं’<sup>५</sup> जाया,

‘रूवेहिं सत्ता’<sup>६</sup> कलुणं थणन्ति,

णियाणओ ते ण लभन्ति मोक्खं ।

---

१-अक्खाति ( क, ख, ग, घ ) ; अग्वाति ( चु ) ।

२-विसीय<sup>०</sup> ( क, ख, ग, घ, चु ) ।

३-उम्मग ( क, घ, छ ) ।

४-वेगे ( च ) ।

५-अणेग गोतेसु कुलेसु ( चु ) ।

६-रूवेसु गिह्वा ( चु ) ।

८-अह पास तेहिं<sup>१</sup>, कुलेहिं<sup>२</sup> आयत्ताए जाया—

गंडी अदुवा कोढी<sup>३</sup>, रायंसी अवमारियं ।  
 काणियं मिमियं चेव, कुणियं खुज्जियं तथा ॥  
 उदरिं पास मूयं<sup>४</sup> च, सूलियं च गिलासिणिं ।  
 वेवइं<sup>५</sup> पीढ-सप्पिं च, सिलिवयं<sup>६</sup> महु-महणिं<sup>७</sup> ॥  
 सोलस एते रांगा, अक्खवाया अणुपुच्चसो ।  
 अह णं फूसंति आयंका, फासा य असमंजसो ॥  
 मरणं तेसिं संपेहाए<sup>८</sup>, उववायं चयणं च णच्चा ।  
 परिपागं<sup>९</sup> च संपेहाए, तं सुणेह जहा-तथा ॥

९-संति पाणा अधा तमंसि<sup>१०</sup> वियाहिया ।

१०-तामेव सइं असइ अतिअच्च<sup>११</sup> उच्चावय-फासे  
 पडिसंवेदेति<sup>१२</sup> ।

११-बुद्धेहिं एयं पवेदितं ।

१२-संति पाणा वासगा, रसगा, उदए उदय-चरा, आगास-  
 गामिणो ।

१३-पाणा पाणे किलेसंति ।

१४-पास लोए महब्भयं ।

१-तेहिं तेहिं ( चू ) ।

२-X ( चू ) ।

३-कोढी ( ग, छ ) ।

४-मूइ ( क, घ, चू ) ।

५-वेवय ( क, ख, ग, च ), वेवइयं ( घ ) ।

६-सिलेवइं ( घ, च ) ।

७-मवुमेहण ( छ ) ।

८-सपेहाए ( क, घ, च ) ; पेहाए ( ख, ग ) ।

९-परियाग ( ख, ग, घ ) ( अशुद्ध ) ; पलिपाग ( चू ) ।

१०-तमंसि ( क, घ ) ।

११-अतिगच्च ( क ) ।

१२-<sup>०</sup> वेदेति ( क, ख, घ, च, छ ) ।

- १५—बहु-दुक्खा हु जंतवो ।  
 १६—सत्ता कामेहि<sup>१</sup> माणवा ।  
 १७—अत्रलेण वहं गच्छंति, सरीरेण पभंगुरेण ।  
 १८—अट्टे से बहु-दुक्खे, इति वाले पकुच्चइ ।  
 १९—एते रोगे बहू णच्चा, आउरा परितावए ।  
 २०—“णालं पास” ।  
 २१—“अलं तवेएहि” ।  
 २२—एयं पास मुणी ! महब्भयं ।  
 २३—णातिवाएज्ज कंचणं ।  
 २४—आयाण भो ! सुस्सूस भो ! ‘धूय-वादं पवेदइस्सामि’<sup>२</sup> ।  
 २५—इह खलु अत्तत्ताए तेहिं-तेहिं कुलेहि अभिसेएण<sup>३</sup> अभिसंभूता,  
 अभिसंजाता, अभिणिव्वट्ठा, अभिसंवुड्ढा<sup>४</sup>, अभिसंबुद्धा  
 अभिणिक्खंता, अणुपुच्चेण महामुणी ।  
 २६—तं परक्कमंतं परिदेवमाणा, “मा णे चयाहि”<sup>५</sup> इति ते वदंति ।  
 छंदोवणीया अज्झोववन्ना, अक्कंद-कारी जणगा रुवंति ॥  
 २७—अतारिसे मुणी णो<sup>६</sup> ओहंतरए, जणगा जेण विप्पजढा ।  
 २८—सरण तत्थ णो समेति । किह णाम से तत्थ रमति ?  
 २९—एयं<sup>७</sup> णाणं सया समणुवासिज्जासि ।

—त्ति बेमि ।

१—कामेसु ( च ) ।

२—नागार्जुनीया :—धूयो वाय पवेयइस्सामि. ( चू ) ; धूतोवायं पवेयति ( वृ ) ।

३—X ( घ, च ) ।

४—X ( क, छ ) ; <sup>०</sup> सवड्ढा ( ख, ग ) ; अमिबुद्धा ( घ ) ।

५—जहाहि ( चू ) ।

६—X ( क, घ, च, छ ) ।

७—एवं ( च ) ( अशुद्धं ) ।

### बीओ उद्देशो

३०—आतुरं लोय मायाए, 'चइत्ता पुञ्ज-संजोगं'<sup>१</sup>

हिच्चा<sup>२</sup> उवसमं वसित्ता बंभचेरम्मि, वसु वा अणुवसु वा  
जाणित्तु धम्मं अहा<sup>३</sup>-त्तहा, 'अहेगे तमचाइ कुसीला ।

३१—वत्थं पडिग्गहं कंवलं पाय-पुच्छणं विउसिज्जा<sup>४</sup> ।

३२—अणुपुव्वेण अणहियासेमाणा परीसहे दुरहियासए ।

३३—कामे ममायमाणस्स, इयाणि वा मुहुत्ते<sup>५</sup> वा  
अपरि-माणाए भेदे ।

३४—एवं से अंतराइएहि कामेहि आकेवलिएहि अवितिण्णा<sup>६</sup> चेए'<sup>७</sup> ।

३५—'अहे'गे धम्म मादाय'<sup>८</sup> 'आयाण-प्पभिइं सुपणिहिए'<sup>९</sup> चरे'<sup>१०</sup> ।

३६—अपलीयमाणे'<sup>११</sup> दढे ।

३७—सच्चं गेहि'<sup>१२</sup> परिणाय, एस पणए महा-मुणी ।

३८—अइअच्च सच्चतो संगं, "ण महं अत्थित्ति इति एगोहमंसि ।"

१—जहिता पुञ्जमायतन ( चू ) ।

२—हिच्चा इह ( चू ) ।

३—जहा ( ख ) ।

४—विओ<sup>०</sup> ( छ ) ।

५—मुहुत्तेण ( ख, ग, च, छ, वृ ) ।

६—अवतिन्ना ( ग, छ ) ।

७—एताणि विवज्जतेण पडिज्जति अत्थआसावातो—अहेगे त चाई सुसीला,  
वत्थ पडिग्गहं कंवलं पाय-पुच्छणं विउसिज्जा, अणुपुव्वेण अहियासमाणा परीसहे  
दुरहियासओ, कामे ममायमाणस्स इदाणि वा मुहुत्ते वा अपरिमाणाए भेदे ।  
एव से अंतराइएहि कामेहि आकेवलिएहि वितिन्ना चेए ( चू ) ।

८—सहिए धम्ममायाय ( चुपा ) !

९—<sup>०</sup> पमितिमु पणि<sup>०</sup> ( क, ख, ग, च, छ, वृ ) ।

१०—उवदेसमेव चर ( चू ) ।

११—अप्प<sup>०</sup> ( क, ग, घ, छ ) ।

१२—गिहि ( ख, घ ) ; गघ ( थ ) ( च ) ।



- ३९—जयमाणे एत्थ विरते अणगारे सव्वओ मुंडे रीयंते<sup>१</sup> ।  
 ४०—जे अचेले परिवुसिए<sup>२</sup> संचिक्खति<sup>३</sup> ओमोयरियाए ।  
 ४१—से अक्कुट्ठे व<sup>४</sup> हए व लूसिए<sup>५</sup> वा ।  
 ४२—पलियं पगंथे अदुवा पगंथे<sup>६</sup> ।  
 ४३—अतहेहि सद्द-फासेहि, इति संखाए ।  
 ४४—एगतरे अन्नयरे अभिन्नाय, तित्तिक्खमाणे परिच्चए ।  
 ४५—जे य हिरी, जे य अहिरीमणा<sup>७</sup> ।  
 ४६—चिच्चा सच्चं विसोत्तियं, 'फासे-फासे'<sup>८</sup> समिय-दंसणे ।  
 ४७—एते भो ! णगिणा बुत्ता, जे लोगंसि अणागमण-धम्मिणो ।  
 ४८—“अणाए मामगं धम्मं” ।  
 ४९—एस उत्तर-वादे, इह माणवाणं वियाहिते ।  
 ५०—एत्थोवरए तं भोसमाणे  
 ५१—आयाणिज्जं परिणाय, परियाएण विगिंचइ ।  
 ५२—इहमेगेसिं एग-चरिया होति ।  
 ५३—तत्थि'यरा इयरेहि कुलेहिं सुद्धेसणाए सव्वेसणाए ।  
 ५४—से मेहावी परिच्चए ।  
 ५५—सुब्भि अदुवा दुब्भि ।  
 ५६—अदुवा तत्थ भेरवा ।

---

१—रीयते ( क, घ, च ) ।

२—<sup>०</sup> जुसिते ( छ ) ; × ( च ) ।

३—<sup>०</sup> चिट्ठे ( छ ) ।

४—वा ( ख, च, छ ) ।

५—लुचिए ( ख, ग, छ, वृ ) ।

६—पकत्थ ( क ) ; पकये ( ख, ग, च ) ; पगत्य ( छ ) ।

७—<sup>०</sup> माणे ( णा ) ( ख, घ, च, छ ) ।

८—फासे ( ख, घ ) ; सफासे फासे ( च ) ।

५७—पाणा पाणे किलेसंति ।

५८—ते फासे पुट्ठो धीरो<sup>१</sup> अहियासेज्जासि ।

—त्ति बेमि ।

### तइओ उहेसो

५९—‘एयं खु मुणी’<sup>२</sup> आयाणं सया सुअक्खाय-धम्मो विधूत-कप्पे णिज्झोसइता<sup>३</sup> ।

६०—जे अचेले परिवुसिए, तस्स णं भिक्खुस्स णो एवं भवइ—  
परिजुण्णे<sup>४</sup> मे वत्थे वत्थं जाइस्सामि, सुत्तं जाइस्सामि, सूइं  
जाइस्सामि, संधिस्सामि, सीवीस्सामि, उक्कसिस्सामि,  
वोक्कसिस्सामि, परिहिस्सामि<sup>५</sup>, पाउणिस्सामि ।

६१—अदुवा तत्थ परक्कमंतं भुज्जो अचेलं तण-फासा फुसंति,  
सीय-फासा फुसंति, तेउ-फासा फुसंति, दंस-मसग-फासा  
फुंसति ।

६२—एगयरे अन्नयरे विरूव-रूवे फासे अहियासेति अचेले ।

६३—‘लाघवं आगममाणे’<sup>६</sup> ।

६४—तवे से अभिसमण्णागए भवति ।

६५—जहे’यं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा ‘सव्वतो  
सव्वत्ताए’<sup>७</sup> सम्मत्तमेव समभिजाणिया<sup>८</sup> ।

१—वीरो (रे) ( क, च ) ।

२—एस्स मुणी ( चु ) ।

३—<sup>०</sup> सइत्ता ( क, ख, ग, छ ) ।

४—<sup>०</sup> जिण्णे ( घ, छ ) ।

५—<sup>×</sup> ( क, घ, चु ) ।

६—नागार्जुनीया :—एवं खलु से उवगरण-लावविय तव कम्मखयकारण करेइ ( वृ, वृ )

७—नागार्जुनीया :—सव्व सव्वत्ताए ।

८—<sup>०</sup> जाणित्ता ( ख, ग, च ) ।

६६—एवं तेसिं महावीराणं चिरराइं पुव्वाइं वासाणि रीयमाणानं  
दवियाणं पास अहियासियं ।

६७—आगय-पन्नाणाणं किंसा बाहा<sup>१</sup> भवन्ति, पयणुए य मंस-  
सोणिए ।

६८—विस्सेणिं कट्टु, परिण्णाए<sup>२</sup> ।

६९—एस तिन्ने मुत्ते विरए वियाहिए—त्ति वेमि ।

७०—विरयं भिक्खुं रीयंतं, चिर-रातोसियं, अरती तत्थ किं  
विधारए ?

७१—संघेमाणे<sup>३</sup> समुट्ठिए<sup>४</sup> ।

७२—जहा से दीवे असंदीणे, एवं से धम्मे आयरिय-पदेसिए<sup>५</sup> ।

७३—ते अणवकंखेमाणा<sup>६</sup> अणतिवाएमाणा<sup>७</sup> दइया<sup>८</sup>  
मेहाविणो पंडिया ।

७४—एवं तेसिं भगवओ अणुट्ठाणे जहा से दिया-पोय<sup>९</sup> ।

७५—एवं ते सिस्सा दिया य राओ य अणुपुव्वेण वाइय ।

—त्ति वेमि ।

१-बाधा ( क, च ) ; बाहुवो ( छ ) ।

२-<sup>०</sup> ण्णाय ( ख, ग, छ ) ।

३-संघणाए ( चू ) ; संघेमाणे ( चुपा ) ।

४-<sup>०</sup> हाय ( ख, ग, घ, च, छ ) ।

५-आरिय-वेसिए ( क, च, चू ) ।

६-ते अवयमाणा भावसोया ( चू ) ;

ते अणवकंखेमाणा ( चुपा ) ।

७-पाणे अणति<sup>०</sup> ( ख, ग, छ, वृ ) ;

अणतिवरतेमाणा जाव अपरिगिण्हेमाणा ( चू ) ।

८-चियत्ता ( चू ) ।

९-दिय<sup>०</sup> ( ग ) ।

### चउत्थो उद्देशो

७६-एवं ते 'सिस्सा दिया य राओ य अणुपुब्बेण वाइया' तेहि<sup>१</sup>  
महावीरेहि पण्णाणमंतेहि ।

७७-तेसिति<sup>२</sup> पण्णाण मुवलब्भ<sup>३</sup> हिच्चा उवसमं 'फाहसिय'<sup>४</sup>  
समादियंति<sup>५</sup> ।

७८-वसित्ता बंभचेरंसि आणं'तं णो' त्ति मण्णमाणा,

७९-अग्घायं<sup>६</sup> तु सोच्चा णिसम्म 'समणुन्ना जीविस्सामो' एगे  
णिक्खम्म ते—

असंभवन्ता विडज्झमाणा, कामेहिं गिद्धा अज्भोववण्णा ।  
समाहि माघाय मभोसयन्ता, सत्थारमेउ फरुसं वदन्ति ॥

८०-सीलमन्ता उवसन्ता, संखाए रीयमाणा ।

“असीला” अणुवयमाणा ।

८१-वित्तिया मंदस्स बालया ।

८२-णियट्टमाणा वेगे आयार-गोयरमाइक्खन्ति, णाण-भट्ठा ।  
दंसण-लूसिणो ।

८३-णममाणा एगे जीवितं विप्परिणामेति ।

८४-पुट्ठा वेगे णियट्ठन्ति, जीवियस्सेव कारणा<sup>७</sup> ।

८५-णिक्खन्तं पि तेसि दुन्निक्खन्तं भवति ।

८६-बाल-वयणिज्जा हु ते नरा, पुणो-पुणो जार्ति<sup>८</sup> पक्कप्पेति ।

१-तेसि महावीराण ( चू ) ।

२-तेसिति ( क, च ), तेमिति ( छ ) ।

३-° पइलब्भ ( चू ) ।

४-अहेगे फाहसिय समारभति ( चुपा ); अहेगे फाहसिय समारहति ( वृषा ) ।

५-आघायं ( क, ख, घ, च ) ।

६-कारणा ( क, घ, छ ) ।

७-गवमाइ ( च ) ।

८७—अहे संभवन्ता विहायमाणा ।

अहमंसी<sup>१</sup> विउक्कसे

८८—उदासीणे<sup>२</sup> फरुसं वदन्ति ।

८९—पलियं पगंथे अदुवा पगंथे, अतहेहि ।

९०—तं मेहावी जाणिज्जा धम्मं ।

९१—अहम्मट्ठी तुमंसि णाम बाले, आरंभट्ठी, अणुवयमाणे,  
हण<sup>३</sup> पाणे, घायमाणे, हणओयावि समणुजाणमाणे,  
घोरे धम्मे उदीरिए, उवेहइ णं अणाणाए ।

९२—एस विसण्णे वित्ते वियाहिते—त्ति बेमि ।

९३—‘किमणेण भो ! जणेण करिस्सामि’त्ति मण्णमाणा<sup>४</sup> ‘एवं  
पे’गे वइत्ता’<sup>५</sup>,

मातरं पितरं हिच्चा, णातओ य परिग्गहं ।

‘वीरायमाणा’ समुट्ठाए, अविहिंसा सुच्चया दन्ता’<sup>६</sup> ॥

९४—अहेगे<sup>७</sup> पस्स दीणे उप्पइए पडिंवयमाणे<sup>८</sup> ।

९५—वसट्ठा कायरा जणा लूसगा भवन्ति ।

१—<sup>०</sup> मंसीत्ति ( ख, ग, च ) ।

२—उदासीणा ( छ ) ।

३—हयमाणे ( छ ) ।

४—मण्णमाणे ( क, ख, ग, घ, च, छ ) ।

५—एवमेगे विदित्ता ( क ) ; एव एगे विमत्ता ( चूपा ) . <sup>०</sup> विदित्ता ( छ ) ।

६—<sup>०</sup> माणे ( क, घ, च, छ ) ;

७—नागार्जुनीया .—समणा भविस्सामो अणगारा अकिंचणा अपुत्ता अपसूया अविहिंसगा  
सुच्चया दत्ता परदत्तभोइणो पावं कम्म न करिस्सामो समुट्ठाए ( चू, वृ ) ।

८—x ( क, ख, ग, घ, च, छ, वृ ) ।

९—पडियमाणे ( च, छ ) ।

९६—अहमेगेसिं सिलोए<sup>१</sup> पावए भवइ, “से समण-विब्भते समण-विब्भते”<sup>२</sup> ।

९७—पासहे<sup>३</sup>गे<sup>३</sup> समन्नागएहिं असमण्णागए<sup>४</sup>, णममाणेहिं  
अणममाणे,  
विरतेहिं अविरते, दविएहिं अदविए ।

९८—अभिसमेच्चा पंडिए मेहावी णिद्धियट्ठे वीरे आगमेणं सया  
परक्कमेज्जासि<sup>५</sup> । —त्ति बेमि ।

### पंचमो उद्देशो

१९—से गिहेसु वा गिहंतरेसु वा, गामेसु वा गामंतरेसु वा,  
नगरेसु वा नगरंतरेसु वा, जणवएसु वा जणवयंतरेसु<sup>६</sup> वा,  
संते<sup>७</sup>गइया जणा लूसगा भवंति, अदुवा—  
फासा फुसंति ते फासे, पुट्ठो वीरो<sup>८</sup> ऽहियासए ।

१००—ओए समिय-दंसणे ।

१०१—दयं लोगस्स जाणित्ता, पाईणं पडीणं दाहिणं उदीणं,  
आइक्खे<sup>९</sup> विभए किट्ठे वेयवी ।

१—लोए ( च, छ ) ।

२—समण वितते ( क, ए, चू ), समण भवित्ता समण विब्भते ( ख, ग ) ।

समणे भविन्ना विब्भते विब्भते ( छ ) ।

३—पास एगे, ( क ), पासवेगे ( च ) ।

४—सह असमण्णागए ( ख, ग, छ ) ।

५—सव्वओ परिव्वएज्जासि ( चू ) ।

६—जणवयतरेसु वा जाव रायहाणी सु वा रायहाणी अतरेसु वा गामणयरंतरे वा गाम  
जणवयतरे वा णगरजणवयतरे वा जाव गामरायहाणी अंतरे वा उज्जाणे वा  
उज्जाणतरे वा विहारभुमी गयस्स वा गच्छतस्स वा अट्ठाणपडिवन्नस्स अछंतस्स  
वा जाव काउसंग ठाणं वा ठियस्स ( चू, वृ ) ।

७—धीरो ( च ) ।

८—नागार्जुनीया .—‘जे खलु समणे बहूस्सए वव्वागमे आहरणहेउकुसले धम्मकहालद्धि-  
संपन्ने खेतं काल पुरिस समासज्ज केऽयं पुरिसे कं वा दरिसणमभिसपन्तो ? एवं गुण  
आइए पसु धम्मस्स आववितए’ ।

- १०२—से उट्टिएसु वा अणुट्टिएसु<sup>१</sup> वा सुस्सूसमाणेसु पवेदए—  
 संति, विरतिं, उवसमं, णिव्वाणं<sup>२</sup>, सोयवियं<sup>३</sup>, अज्जवियं,  
 मदवियं, लाघवियं, अणइवत्तियं<sup>४</sup> ।
- १०३—सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं  
 सत्ताणं अणुवीइ भिक्खू धम्ममाइक्खेज्जा ।
- १०४—अणुवीइ भिक्खू धम्ममाइक्खमाणे—  
 णो अत्ताणं आसाएज्जा, णो परं आसाएज्जा,  
 णो अण्णाइं पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं आसाएज्जा ।
- १०५—से अणासादए अणासादमाणे वज्जमाणाणं पाणाणं भूयाणं  
 जीवाणं सत्ताणं, जहा से दीवे असंदीणे,  
 एवं से—भवइ सरणं महामुणी ।
- १०६—एवं से उट्टिए ठियप्पा<sup>५</sup>, अणिहे अचले चले  
 अवहि-लेस्से परिच्चए ।
- १०७—संखाय पेसलं धम्मं, दिट्ठिमं परिणिव्वुडे ।
- १०८—तम्हा संगं ति पासह ।
- १०९—गंथेहिं गढिया<sup>६</sup> णरा,  
 विसण्णा काम-विप्पिया<sup>७</sup> ।
- ११०—‘तम्हा लूहाओ णो परिवित्तसेज्जा’<sup>८</sup> ।

१—अणुट्ठिएसु वा जाव सोवट्ठिएसु वा ( चू ) ।

२—णिव्वाण ( क, च ) ।

३—सोय ( ख, ग ) ।

४—अणत्तिवात्तिय ( चू ) ।

५—उट्ठित्तप्पा ( चू, च ) ।

६—गहिता ( छ ) ।

७—कामक्कंता ( क, ख, ग, च, छ, वृ ) ।

८—जसि इमे लूसिणो णो परिवित्तसति ( चू ), तम्हा लूहाओ णो परिवित्त सिज्जा ( चूपा ) ।

१११-जस्सि<sup>१</sup>मे आरंभा सव्वतो सव्वत्ताए सुपरिण्णाया भवन्ति,  
‘जिसि<sup>२</sup>मे लूसिणो णो परिवित्तसन्ति’<sup>३</sup>, से वन्ता कोहं च माणं  
च मायं च लोभं च ।

११२-एस तुट्ठे<sup>४</sup> वियाहिते—त्ति बेमि ।

११३-कायस्स विओवाए<sup>५</sup>, एस संगाम-सीसे वियाहिए ।  
से हु पारंगमे मुणी, अविहम्ममाणे<sup>५</sup> फलगावयहि<sup>५</sup>,  
कालोवणीते कंखेज्जकालं, जाव सरीर-भेउ ।

—त्ति बेमि ।

१—× ( च ) ; जस्सि ( च, छ ) ।

२—तिउट्ठे ( च ) ।

३—विवाधाए ( ख, ग ), विधाए ( छ ), विवायाए ( च ), व्याधात ( विवाधाए ) ( वृ ) ।

४—<sup>०</sup> हन्त <sup>०</sup> ( क ) ।

५—<sup>०</sup> तट्ठि ( क, छ ) ।



अट्टमं अज्जमयणं

विमोक्खो

पढमो उद्देशो

१-से बेमिं—समणुन्तस्स वा असमणुन्तस्स<sup>१</sup> वा असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा, वत्थं वा, पडिग्गहं वा, कंबलं वा, पाय-पुंछणं वा, णो पाएज्जा, णो णिमंतेज्जा, णो कुज्जा वेयावडियं-परं आढायमाणे'—त्ति बेमि ।

२-धुवं चेयं जाणेज्जा—असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा, वत्थं वा, पडिग्गहं वा, कंबलं वा, पाय-पुंछणं वा, लभिय णो लभिय, भुंजिय णो भुंजिय, पंथं विउत्ता<sup>२</sup> विउक्कम्म विभत्तं धम्मं भोसेमाणे<sup>३</sup> ससेमाणे पलेमाणे<sup>४</sup>, पाएज्ज वा, णिमंतेज्ज वा, कुज्जा वेयावडियं-परं अणाढायमाणे,—त्ति बेमि ।

३-इहमेगेसिं आयार-नोयरे णो सुणिसंते भवति ।  
ते इह आरंभट्ठी अणुवयमाणा 'हण पाणे' धायमाणा, हणतो यावि समणुजाणमाणा ।

४-अट्टुवा अदिन्नमाइयंति ।

१-अमणु<sup>०</sup> ( क, ख, ग ) ।

२-वियत्ता ( क, छ ) ; विवत्ताण ( ख, ग ) . विइयत्ता, ( च ) ;  
विवत्तण ( झ ) ( चिन्तनीय ) ।

३-जोसे<sup>०</sup> ( च ) ।

४-मलेमाणा ( घ ) ; बलेमाणे ( च ) ; चलेमाणे ( छ ) ; मालेमाणा ( झ ) ।

५—अदुवा वायाओ विउंजंति<sup>१</sup>, तंजहा-  
 अत्थि लोए, णत्थि लोए,  
 ध्रुवे लोए, अध्रुवे लोए,  
 साइए<sup>२</sup> लोए, अणाइए<sup>३</sup> लोए,  
 स-पज्जवसिते लोए, अपज्जवसिते लोए,  
 सुकडे<sup>४</sup>ति वा दुक्कडे<sup>४</sup>ति वा,  
 कट्ठाणे<sup>५</sup>ति वा पावे<sup>५</sup>ति वा,  
 साहु<sup>५</sup>ति वा असाहु<sup>५</sup>ति वा,  
 सिद्धीति वा, असिद्धीति वा,  
 णिरए<sup>५</sup>ति वा, अणिरए<sup>५</sup>ति वा ।

६—जमिणं विप्पडिवण्णा मामगं धम्मं पन्नवेमाणा ।

७—एत्थवि जाणह<sup>६</sup> अकस्मात्<sup>६</sup> ।

८—‘एवं तेसिं णो सुअक्खाए, णो सुपन्नत्ते धम्मो भवति’<sup>७</sup> ।

९—से जहे<sup>८</sup>यं भगवया पवेदितं आसु-पण्णेण जाणया पासया ।

१०—अदुवा गुत्ती बओ-गोयरस्स—त्ति वेमि ।

११—सन्वत्थ सम्मयं पावं ।

१२—तमेव उवाइकम्म ।

१३—एस महं विवेगे वियाहिते ।

१४—गामे वा अदुवा रण्णे, णेव गामे णेव रण्णे, धरममायाणह—  
 पवेदितं माहणेण मईमया ।

१—विप्पउजति ( क, ख, ग, च, छ ) ।

२—साइ ( घ ) ।

३—अणाइ ( घ ) ।

४—पावड ( क ); पावए ( घ, च, छ ) ।

५—जाण ( क, च ), जाणे ( घ ) ।

६—अकस्मा ( चू ) ।

७—न एस धम्मो सुयक्खाए मुपन्नत्ते भवड ( चू ) ।

१५—जामा तिण्णि उदाहिया<sup>१</sup>, जेसु इमे आरिया<sup>२</sup> संबुज्झमाणा समुद्धिया ।

१६—जे णिव्वुया<sup>३</sup>, पावेहिं कम्मेहिं, अणियाणा ते वियाहिया ।

१७—उड्डं अहं तिरियं दिसासु, सव्वतो सव्वावन्ति च णं पडियक्क<sup>४</sup> जीवेहिं<sup>५</sup> कम्म-समारभे णं ।

१८—तं परिणाय मेहावी—णेव सयं एतेहिं काएहि दंडं समारंभेज्जा, णेव'ण्णेहिं एतेहि काएहि दंडं समारंभावेज्जा, ने'वन्ने एतेहिं काएहि दंडं समारंभंते वि समणुजाणेज्जा ।

१९—जेवन्ने एतेहि काएहिं दंडं समारंभन्ति, तेसिं पि वयं लज्जामो ।

२०—तं परिणाय मेहावी—तं वा दंडं, अण्णं वा दंडं, णो दंडं-भी दंडं समारंभेज्जासि ।

—त्ति वेमि ।

### बीओ उद्देसो

२१—से भिक्खू परक्कमेज्ज वा, चिट्ठेज्ज वा, णिसीएज्ज वा, तुयट्ठेज्ज वा, सुसाणंसि वा, सुन्नागारंसि वा, गिरि-गुहंसि वा, रुक्ख-मूलसि वा, कुंभारायाणंसि वा, हुस्त्था वा कहिं चि विहरमाणं तं भिक्खुं उवसंकमित्तु गाहावती बूया—  
आउसंतो समणा ! अहं खलु तव अट्ठाए असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा, वत्थं वा, पडिग्गहं वा, कंबलं वा, पाय-

१—उदाहडा ( घ, छ, चू ) . उदाहया ( ख, ग ) ।

२—आयरिया ( घ, छ ) ।

३—निव्वुडा ( चू ) ।

४—पाडेक्क ( क ) ; पाडियक्क ( घ, चू ) ।

५—दड समारभते ( चू ) ।

पुंछणं वा, पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं, समारब्भ  
समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं<sup>१</sup> अभिहट्ठं आहट्ठु<sup>२</sup>  
'चेतेमि'<sup>३</sup>, आवसहं<sup>४</sup> वा समुस्सिणोमि ।  
से भुंजह वसह ।

२२—आउसंतो समणा भिक्खू तं गाहावतिं समणसं सवयसं  
पडियाइक्खे—

आउसंतो गाहावती ! णो खलु ते वयणं आढामि, णो खलु  
ते वयणं परिजाणामि, जो तुमं मम अट्ठाए असणं वा पाणं  
वा खाइमं वा साइमं वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा  
पाय-पुंछणं वा, पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं, समारब्भ  
समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहट्ठं आहट्ठु  
चेएसि, आवसहं वा समुस्सिणासि ।

से विरतो आउसो गाहावती ! एयस्स अकरणाए ।

२३—से भिक्खू परक्कमेज्ज वा, ° चिट्ठेज्ज वा, णिसीएज्ज वा,  
तुयट्ठेज्ज वा,

सुसाणंसि वा, सुन्नागारंसि वा, गिरि-गुहंसि वा, रुक्ख-  
मूलंसि वा, कुंभारायतणंसि वा °, हुरत्था वा कहिंचि  
विहरमाणं तं भिक्खुं उवसंकमित्तु गाहावती आयगयाए  
पेहाए, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा, वत्थं वा  
पडिग्गहं वा कंबलं वा पाय-पुंछणं वा, पाणाइं भूयाइं जीवाइं  
सत्ताइं, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं,

१—° मिट्ठ ( ख, ग, घ ) ।

२—आफुड ( च ) ।

३—वेतेमि'त्ति केयि भणति करेमि, त तु ण युज्जति ( चू ) ।

४—आवसधं ( ख, ग ) . आवसय ( छ ) ।

अणिसट्ठं, अभिहडं आहट्टु चेएइ, आवसहं वा समुस्सिणाति<sup>१</sup>,  
तं भिक्खुं परिघासेउं ।

२४—तं च भिक्खू जाणेज्जा—सह-सम्मइयाए<sup>२</sup>, पर-वागरणेणं,  
अण्णेसि वा सोच्चा<sup>३</sup>—अयं खलु गाहावई मम अट्टाए असणं  
वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा  
कंबलं वा पाय-पुंछणं वा, पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं,  
° समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्ज अणिसट्ठं  
अभिहडं आहट्टु ° चेएइ, आवसहं वा समुस्सिणाति<sup>४</sup> ।

तं च भिक्खू संपडिलेहाए<sup>५</sup> आंगमेत्ता आणवेज्जा अणासेवणाए<sup>६</sup>  
—त्ति वेमि ।

२५—भिक्खुं च खलु पुट्ठा वा अपुट्ठा वा जे इमे आहच्च गंथा  
फुसंति—

“से हंता हणह, खणह, छिंदह, दहह पचह, आलुं पह,  
विलुं पह, सहसाकारेह<sup>७</sup>, विप्परामुसह<sup>८</sup>”—ते फासे ‘धीरो  
पुट्ठो’<sup>९</sup> अहियासए ।

२६—अदुवा आयार-गोयरमाइक्खे ।

तत्तिकयाणमणेलिसं ।

२७—अदुवा वइ-गुत्तीए<sup>१</sup> गोयरस्स अणुपुब्बेण सम्मं पडिलेहाए  
आयगुत्ते ।

१-° स्सिणोति ( क ) ।

२-सम्मू° ( क, घ, च, छ ) ।

३-अतिए सोच्चा ( ख ) ।

४-° स्सिणोति ( क ) ।

५-पडिलेहाए ( ख, ग, घ ) ।

६-° सेवययाए ( घ ) ।

७-सहसकारेह ( क ) ।

८-पुट्ठो धीरो ( ख, ग, घ ) ; पुट्ठो वीरो ( घ ) ; वीरो पुट्ठो ( च ) ।

९-° गुत्तीओ ( ख, ग, घ ) ।

२८—बुद्धेहिं एयं पवेदितं—

से समणुन्ते असमणुन्तस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पाय-पुंछणं वा, नो पाएज्जा, नो निमंतेज्जा, नो कुज्जा वेयावाडियं-परं आढायमाणे<sup>१</sup>—त्ति बेमि ।

२९—धम्ममायाणह, पवेइयं माहणेण मतिमया—

समणुन्ते संमणुन्तस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पाय-पुंछणं वा, पाएज्जा, निमंतेज्जा, कुज्जा वेयावडियं-परं आढायमाणे<sup>२</sup> —त्ति बेमि ।

तइओ उइसो

३०—मज्झिमेणं<sup>३</sup> वयसा वि<sup>४</sup> एगे, संबुज्झमाणा समुट्ठिता ।

३१—‘सोच्चा वेह्वी मेहावी’<sup>५</sup>, पंडियाणं निसामिया ।

३२—समियाए<sup>६</sup> धम्मे, आरिएहिं<sup>७</sup> पवेदिते ।

३३—ते अणवकंखमाणा अणतिवाएमाणा अपरिग्गहमाणा णो ‘परिग्गहावन्ती सव्वावन्ती’<sup>८</sup> च णं लोगंसि ।

३४—णिहाय दंडं पाणेहिं,

पावं कम्मं अकुव्वमाणे; एस महं अगंथे वियाहिए ।

१—<sup>०</sup> मीणे ( क, च ) ।

२—<sup>०</sup> मीणे ( क, च ) ।

३—मज्झ० ( ख ) ।

४—मिह एगे ( घ ) ।

५—सोच्चा मेहावी वयण ( क, ख ग, घ, छ ), सोच्चा मेहावी ण वयणं ( चू ) ।

६—समयाए ( क ) ।

७—आयरिएहिं ( घ, छ ) ।

८—<sup>०</sup> वति सव्वावति ( ख, ग, घ, च, छ ) ।

- ३५—ओए जुतिमस्स<sup>१</sup> खेयन्ने उववायं<sup>२</sup> चवणं<sup>३</sup> च णच्चा ।
- ३६—आहारोवचया देहा, परिसह-पभंगुरा ।
- ३७—पासहे<sup>४</sup>गे सन्विदिएहिं परिगिलायमाणेहिं ।
- ३८—ओए दयं दयइ ।
- ३९—जे सन्निहाणं<sup>५</sup>-सत्थस्स खेयन्ने, से भिक्खू कालण्णे बलण्णे  
मायण्णे खणण्णे विणयण्णे समयण्णे परिगहं अममायमाणे  
काले'णुट्ठाई अपडिन्ने ।
- ४०—दुहओ छेत्ता नियाइ ।
- ४१—तं भिक्खुं सीयफास-परिवेवमाण गायं उवसंकमित्तु गाहावई  
बूया—  
आउसंतो समणा ! णो<sup>६</sup> खलु ते गाम-धम्मा उव्वाहंति ?  
आउसंतो गाहावई ! णो<sup>६</sup> खलु मम गाम-धम्मा उव्वाहंति ।  
सीयफासं<sup>७</sup> णो खलु संचाएमि अहियासित्तए ।  
णो खलु मे कप्पति-अगणि-कायं उज्जालेत्तए वा पज्जालेत्तए  
वा, कायं आयावेत्तए वा पयावेत्तए वा अण्णेसिं वा  
वयणाओ ।
- ४२—सिया से एवं वदंतस्स परो अगणि-कायं उज्जालेत्ता पज्जालेत्ता  
कायं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,  
तं च भिक्खू पडिलेहाए आगमेत्ता आणवेज्जा अणासेवणाए  
—त्ति वेमि ।

१—जुइमंतस्स ( ख, ग, च ) ; अहवा जुतिम ( चू ) ।

२—ओवाय ( क, घ ) ।

३—चयणं ( घ, च ) ।

४—सन्निहाणस्स ( चू ) ।

५—X ( चू ) ।

६—अण्णं ( चू ) ।

७—° फासं च ( क, ख, च ) ।

### चउत्थो उद्देशो

४३-जे भिक्खू तिहिं वत्थेहिं परिवुसिते<sup>१</sup> पाय-चउत्थेहिं, तस्स णं  
णो एवं भवति—चउत्थं वत्थं जाइस्सामि ।

४४-से अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाएज्जा ।

४५-अहा-परिगहियाइं वत्थाइं धारेज्जा ।

४६-णो धोएज्जा<sup>२</sup>, णो रएज्जा, णो धोय-रत्ताइं वत्थाइं  
धारेज्जा ।

४७-अपलिउंचमाणे<sup>३</sup>, गामंतरेसु ।

४८-ओमचेलिए<sup>४</sup> ।

४९-एयं खु वत्थ-धारिस्स सामगियं ।

५०-अह पुण एवं जाणेज्जा—उवाइक्कंते खलु हेमंते, गिम्हे  
पडिवन्ते, अहा-परिजुन्ताइं वत्थाइं परिट्ठवेज्जा, अहा-  
परिजुन्ताइं वत्थाइं परिट्ठवेत्ता—

५१-अदुवा संतरुत्तरे ( अदुवा ओमचेले ? ) ।

५२-अदुवा एग-साडे ।

५३-‘अदुवा अचेले’<sup>५</sup> ।

५४-लाघवियं आगममाणे ।

५५-तवे से अभिसमन्नागए भवति ।

५६-जमे’यं<sup>६</sup> भगवया पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो  
सव्वत्ताए<sup>७</sup> सम्मत्तमेव समभिजाणिया ।

१—<sup>०</sup> उसिते ( घ, छ ) ।

२—धावेज्जा ( ग ) ; धाएज्जा ( घ ) ।

३—<sup>०</sup> ओवमाणे ( ख, च, छ ) ।

४—अवम<sup>०</sup> ( क, ख, ग ) ।

५—x ( च्च ) ।

६—जहेयं ( घ ) ।

७—सव्वयाए ( घ ) ; सव्वत्ताए ( च ) ; आवट्ठे ( ख, ग ) ।



५७—जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—‘पुट्ठो खलु अहमंसि’, नाल-  
महमंसि सीय-फासं अहियासित्तए,

से वसुमं सव्व-समन्नागय-पन्नाणेणं अप्पाणेणं केइ अकरणाए  
आउट्ठे ।

५८—तवस्सिणो हु तं सेयं, जमेगे<sup>१</sup> विहमाइए<sup>२</sup>,

५९—तत्थावि तस्स काल-परियाए,

६०—से वि तत्थ विअंति-कारिए ।

६१—इच्चेतं विमोहायतणं हियं, सुहं, खमं, णिस्सेयसं<sup>३</sup>, आणु-  
गामियं

—त्ति बेमि ।

### पंचमो उद्देशो

६२—जे भिक्खू दोहिं वत्थेहिं परिवुसिते पायतइएहिं, तस्सणं णो  
एवं भवति—

तइयं वत्थं जाइस्सामि ।

६३—से अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाएज्जा ।

६४—<sup>०</sup> अहा परिग्गहियाइं वत्थाइं धारेज्जा ।

६५—णो धोएज्जा, णो रएज्जा, णो धोय-रत्ताइं वत्थाइं धारेज्जा ।

६६—अपलिउंचमाणे गामंतरेसु ।

६७—ओमचेलिए<sup>०</sup> ।

६८—एयं खु तस्स भिक्खुस्स सामगियं ।

१—जसेगे ( क, घ, च ) ।

२—वेहसादिए ( छ ) ।

३—निस्सेसं ( ख, ग, घ, च ) ; निस्सेसिय ( च ) ।

६९—अहं पुण एवं जाणेज्जा—उवाइक्कंते खलु हेमंते, गिम्हे पडिदन्ते, अहा परिजुण्णाइं वत्थाइं परिट्ठवेज्जा, अहा परिजुण्णाइं वत्थाइं परिट्ठवेत्ता ।

७०—अदुवा एगसाडे ।

७१—अदुवा अचेले ।

७२—लाघवियं आगममाणे ।

७३—तवे से अभिसमण्णागए भवति ।

७४—जमे'यं' भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा, सव्वतो सव्वत्ताए सम्मत्तमेव समभिजाणिया ।

७५—जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—पुट्ठो अबलो अहमंसि, नालमहमंसि गिहंतर-संकमणं 'भिक्खायरिय-गमणाए' \*से एवं वदंतस्स परो अभिहडं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु दलएज्जा,  
से पुव्वामेव<sup>३</sup> आलोएज्जा आउसंतो ! गाहावती ! णो खलु मे कप्पइ 'अभिहडं असणेण'<sup>४</sup> वा पाणेणवा खाइमेण वा साइमेण वा भोत्तए<sup>५</sup> वा, पायए<sup>६</sup> वा, अन्ने वा एयप्पगारे<sup>७</sup> \*!'<sup>८</sup>

१—जहेय ( घ, छ ) ।

२—भिक्खायरिय-गमणाए ( क, घ, च, छ ) ।

३—पुव्व<sup>०</sup> ( ख, ग, घ ) ।

४—अभिहडं असण ( ख, ग, च ) ।

५—भोत्तए ( ख, ग ) ।

६—पायए ( ख ), पित्तए ( घ ), पातुए ( छ ) : पात्तए ( च ) ।

७—तहप्पगारे ( छ ) ।

८—१. त भिक्खु केइ गाहावई ! उवसंकमित्तु दूया—आउसतो समणा ! अहन्नं तव अट्टाए असण वा ( ४ ) अभिहड दलामि, से पुव्वामेव जाणेज्जा—आउसंतो-गाहावई ! जन्न तुम मम अट्टाए असणं ( ४ ) अभिहडं चेतेसि, णो य खलु मे कप्पइ एयप्पगारं असण वा ( ४ ) भोत्तए वा पायए वा अन्ने वा तहप्पगारे ! ( वृत्ता ) ।

७६—जस्स णं भिक्खुस्स अथं पगप्पे—

अहं च खलु पडिण्णत्तो अपडिण्णत्तेहिं, गिलाणो अगिलाणेहिं,  
अभिकंख साहम्मिएहिं कीरमाणं वेयावडियं सातिज्जिस्सामि ।  
अहं वा वि खलु अपडिण्णत्तो पडिण्णत्तस्स, अगिलाणो  
गिलाणस्स, अभिकंख साहम्मिअस्स कुज्जा वेयावडियं करणाए<sup>१</sup> ।

७७—आहट्टु पइण्णं<sup>२</sup> आणक्खेस्सामि,<sup>३</sup> आहडं च सातिज्जिस्सामि,  
आहट्टु पइण्णं आणक्खेस्सामि, आहडं च णो  
सातिज्जिस्सामि, आहट्टु पइण्णं णो आणक्खेस्सामि,  
आहडं च सातिज्जिस्सामि,  
आहट्टु पइण्णं णो आणक्खेस्सामि, आहडं च णो  
सातिज्जिस्सामि ।

७८—\*लाघवियं आगममाणे ।

७९—तवे से अभिसमण्णागए भवति ।

८०—जमे'यं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा, सव्वतो सव्वत्ताए  
सम्मत्त मेव समभिजाणिया\* ।<sup>४</sup>

८१—एवं से अहा—किट्ठियमेव धम्मं समहिजाणमाणे, संते विरते  
सुसमाहित-लेसे ।

८२—तत्थावि तस्स काल-परियाए ।

८३—से तत्थ विअंति-कारए ।

८४—इच्चेतं विमोहायतणं हियं, सुहं, खमं, णिस्सेयसं,  
आणुगामियं<sup>५</sup> । —त्ति बेमि ।

१—करणयाए ( क, च ) ।

२—चूर्णिवृत्त्यनुसारेण स्वीकृतोऽयं पाठः ( सर्वत्र ) ।

३—आणिक्ख<sup>०</sup> ( ख, ग ) ; अणिक्ख<sup>०</sup> ( च ) ।

४—चिन्हान्तर्वर्ती पाठः चूर्णौ वृत्तौ च समस्ति, प्रतीषु नोपलभ्यते । चूर्ण्यनुसारेण णाऽयं  
पाठः स्वीकृतः, वृत्तौ समभिजाणमाणे एतत्पश्चात् स्वीकृतोऽस्ति ।

५—अणु<sup>०</sup> ( क, ख, ग, च, छ ) ।

## छट्ठो उद्देशो

८५—जे भिक्खू एगेण वत्थेण परिवुसिते पायविइएणं, तस्स णो एवं भवइ—

विइयं वत्थं जाइस्सामि ।

८६—से अहेसणिज्जं वत्थं जाएज्जा ।

८७—अहापरिग्गहिं वत्थं धारेज्जा ।

८८—<sup>०</sup> णो धोएज्जा, णो रएज्जा, णो धोयरत्तं वत्थं धारेज्जा ।

८९—अपलिउंचमाणे गामंतरैसु ।

९०—ओमचेलिए ।

९१—एयं खु तस्स भिक्खुस्स सामगियं ।

९२—अह पुण एवं जाणेज्जा—उवाइक्कंते खलु हेमंते <sup>०</sup> ; गिम्हे पडिवण्णे, अहा-परिजुत्तं वत्थं परिट्ठवेज्जा, अहा-परिजुत्तं वत्थं परिट्ठवेत्ता—

९३—‘अदुवा अचेले’<sup>१</sup> ।

९४—लाघवियं आगममाणे ।

९५—<sup>०</sup> तवे से अभिसमण्णागए भवति ।

९६—जमे’यं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा, सव्वतो सव्वत्ताए <sup>०</sup> सम्मत्तमेव समभिजाणिया ।

९७—जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ—एगो अहमंसि, न मे अत्थि कोइ, न याऽहमवि कस्सइ<sup>२</sup>, एवं से एगागिणमेव<sup>३</sup> अप्पाणं समभिजाणिज्जा ।

९८—लाघवियं आगममाणे ।

१—अदुवा एगसडे अदुवा अचेले ( ख, ग, घ, च, छ, झ ) ।

२—कस्सवि ( घ ) ।

३—एगागियं<sup>०</sup> ( च, चू ) ।

९९—तवे से अभिसमन्नागए भवइ ।

१००—जमे'यं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा, सव्वतो  
सव्वत्ताए सम्मत्तमेव समभिजाणिया ।

१०१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा  
साइमं वा आहारेमाणे णो वामाओ हणुयाओ दाहिणं हणुयं  
संचारेज्जा' आसाएमाणे',  
दाहिणाओ वा हणुयाओ वामं हणुयं णो संचारेज्जा  
आसाएमाणे, से अणासायमाणे ।

१०२—लाघवियं आगममाणे,

१०३—तवे से अभिसमन्नागए भवइ ।

१०४—जमे'यं भगवता पवेइयं, तमेव अभिसमेच्चा, सव्वतो सव्वत्ताए  
सम्मत्तमेव समभिजाणिया ।

१०५—जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—

से 'गिलामि च'<sup>१</sup> खलु अहं इमंसि समए<sup>२</sup>, इमं सरीरगं  
अणुपुब्बेण परिवहित्तए, से आणुपुब्बेणं आहारं संवट्टेज्जा,  
आणुपुब्बेणं आहारं संवट्टेत्ता,  
कसाए पयणुए किच्चा, समाहियच्चे फलगावयट्ठी,  
उट्ठाय भिक्खू अभिनिव्वुडच्चे ।

१०६—अणुपविसित्ता गामं वा, णगरं वा, खेडं वा, कब्बडं वा,  
मडंबं<sup>३</sup> वा, पट्टणं वा, दोण-मुहं वा, आगरं वा, आसमं वा,  
सण्णिवेसं वा, णिगमं वा, रायहारिणं वा,

१—साहरेज्जा ( चू ) ।

२—आढायमाणे ( चूपा, वृषा ) ।

३—गिलाणा मिव ( ख, ग ) ; गिलाणमिव ( छ, चू ) ।

४—समये णो संचाएमि ( ख, ग ) ; न शक्नोमि ( वृ ) ।

५—मडंबं ( ग ) ।

‘तणाइं जाएज्जा’<sup>१</sup>, तणाइं जाएत्ता, से तमायाए  
एगंतमवक्कमेज्जा; एगंतमवक्कमेत्ता,  
अप्पंडे अप्प-पाणे अप्प-बीए अप्प-हरिए अप्पोसे अप्पोदए  
अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्ठिय-मक्कडा-संताणए, ‘पडिलेहिय-  
पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय तणाइं संथरेज्जा, तणाइं  
संथरेत्ता’<sup>२</sup> एत्थ वि समए इत्तरियं कुज्जा ।

१०७-तं सच्चं सच्चावादी<sup>३</sup> ओए तिण्णे छिण्ण-कहंकेहे आतीतट्ठे<sup>४</sup>  
अणातीते चेच्चाण भेउरं कायं, संविहूणिय विरुव-रूवे  
परिसहोवसमो अस्सिस विसंभणयाए भेरव मणुच्चिण्णे ।

१०८-तत्थावि तस्स काल-परियाए ।

१०९-से<sup>५</sup> तत्थ विअंति-कारए ।

११०-इच्चेतं विमोहायतणं हियं, सुहं, खमं, णिस्सेयसं,  
आणुगामियं ।

—त्ति वेमि ।

### सत्तमो उद्देशो

१११-जे भिक्खू अचेले परिवुसिते, ‘तस्स णं’<sup>६</sup> एवं भवति—  
चाएमि अहं तण-फासं अहियासित्तए, सीय-फासं  
अहियासित्तए, तेउ-फासं अहियासित्तए, दंस-मसग-फासं  
अहियासित्तए, एगतरे अन्नतरे विरुव-रूवे फासे

१-× ( क, ग, घ, च ) ।

२-पडिलेहिता सथारग सथरेड सथारगं सथरेत्ता ( वृ ) ।

३-सच्चवादी ( ख, ग, च, छ ) ।

४-अइअट्ठे ( क, घ, च ) ।

५-से वि ( ख, ग, च, छ ) ।

६-तस्स णं भिक्खुस्स ( वृ ) ।

अहियासित्तए, हिरिपडिच्छादणं 'चऽहं'<sup>१</sup> णो संचाएमि  
अहियासित्तए, एवं से कप्पति केडि-बंधणं धारित्तए ।

११२-अदुवा तत्थ परक्कमंतं भुज्जो अचेलं तण-फासा फुसंति,  
सीय-फासा फुसंति, तेउ-फासा फुसंति, दंस-मसग-फासा  
फुसंति, एगयरे अन्नयरे विरूव-रूवे फासे अहियासेति  
अचेले ।

११३-लाघवियं आगममाणे ।

११४-तवे से अभिसमण्णागए भवति ।

११५-जमे'यं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा, सव्वतो  
सव्वत्ताए सम्मत्तमेव समभिजाणिया ।

११६-जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—अहं च खलु अन्नेसिं  
भिक्खूणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्ठु  
दलइस्सामि<sup>२</sup>, आहडं च सातिजिस्सामि ।

११७-जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—अहं च खलु अन्नेसिं  
भिक्खूणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्ठु  
दलइस्सामि, आहडं च णो सातिजिस्सामि ।

११८-जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—अहं च खलु 'अन्नेसिं  
भिक्खूणं'<sup>३</sup> असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्ठु  
नो दलइस्सामि, आहडं च सातिजिस्सामि ।

११९-जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—अहं खलु अन्नेसिं भिक्खूणं  
असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्ठु नो  
दलइस्सामि, आहडं च णो सातिजिस्सामि ।

१—च ( ख, ग, घ, च ) ।

२—दाहामि ( चू ) ।

३—× ( क, ख, ग, घ, च, छ ) ।

१२०-अहं च खलु तेण अहाइरित्तेण<sup>१</sup> अहेसणिज्जेणं अहा-  
परिग्गहिणं असणेण वा पाणेण वा खाइमेण वा साइमेण  
वा अभिक्खं साहम्मियस्स कुज्जा वेयावडियं करणाए ।

१२१-अहं वावि तेण अहातिरित्तेणं अहेसणिज्जेणं अहा-  
परिग्गहिणं असणेण वा पाणेण वा खाइमेण वा साइमेण  
वा अभिक्खं साहम्मिएहिं कीरमाणं वेयावडियं  
सातिज्जिस्सामि ।

१२२-लाघवियं आगममाणे ।

१२३-तवे से अभिसमण्णागए<sup>२</sup> भवति ।

१२४-जमे'यं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा, सव्वतो  
सव्वत्ताए<sup>०</sup> सम्मत्तमेव समभिजाणिया ।

१२५-जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति-से गिलामि<sup>२</sup> च खलु अह  
इमम्मि समए, इमं सरीरगं अणुपुव्वेण परिवहित्तए,  
से आणुपुव्वेणं आहारं संवट्टेज्जा, आणुपुव्वेणं आहारं संवट्टेत्ता,  
कसाए पयणुए किच्चा समाहिअच्चे फलगावयट्ठी,  
उट्ठाय भिक्खू अभिणिच्चुडच्चे ।

१२६-अणुपविसित्ता गामं वा, नगरं वा, खेडं वा, कव्वडं वा,  
मडंबं वा, पट्टणं वा, दोण-मुहं वा, आगरं वा, आसमं वा,  
सण्णिवेसं वा, णिगमं वा, रायहारिणं वा,  
तणाइं जाएज्जा, तणाइं जाएत्ता से तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा,  
एगंतमवक्कमेत्ता,  
अप्पंडे अप्प-पाणे अप्प-बीए अप्प-हरिए अप्पोसे अप्पोदए  
अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्ठिय-मक्कडा-संताणए, पडिलेहिय-

१-आहा ° ( क, च, छ ) ।

२-गिलाएमि ( ख, छ ) ।



पडिलेहिय पमज्जिय-पमज्जिय तणाइं संथरेज्जा, तणाइं संथरेत्ता  
एत्थ वि समए कायं च जोगं च, इरियं च, पच्चक्खाएज्जा ।

१२७-‘तं सच्चं सच्चावादी ओए तिण्णे छिन्न-कहंकहे आतीतट्ठे  
अणातीते चेच्चाण मेउरं कायं, संविहूणिय विरूव-रूवे  
परिसहोवसंगे अस्सि विसंभणयाए भेरव मणुचिण्णे ।

१२८-तत्थावि तस्स काल-परियाए ।

१२९-से तत्थ विअंति-कारए ।

१३०-इच्चेतं विमोहायतणं हियं, सुहं, खमं, णिस्सेयसं,  
आणुगामियं<sup>१</sup> ।

—त्ति वेमि ।

### अट्ठमो उद्देशो

- १-अणुपुब्बेण विमोहाइं, जाइं धीरा<sup>२</sup> समासज्ज ।  
वसुमंतो<sup>३</sup> मइमंतो, सव्वं णच्चा अणेलिसं ॥  
२-दुविहं पि विदित्ताणं<sup>४</sup>, बुद्धा धम्मस्स पारगा ।  
अणुपुब्बीए<sup>५</sup> संखाए, आरंभाओ<sup>६</sup> तिउट्ठति ॥  
३-कसाए पयणुए किच्चा, अप्पाहारो तित्तिक्खए ।  
अह भिक्खू गिलाएज्जा, आहारस्सेव अंतियं<sup>७</sup> ॥

१-नागार्जुनीया —कट्ठमिव आतट्ठे तत्थ सचतित सज्जीकरेत्ता उ पतिण्णे छिन्नकह  
कहेज्जा जाव आणुगामिवं ( चू ) ।

२-वीरा ( क, च ) ।

३-वसुमंतो ( चू ) ।

४-विगित्तिता ( चूपा ) ।

५-<sup>०</sup> पुब्बीड ( ग ) ।

६-कम्मुणाओ ( चूपा, वृपा ) ।

७-कारणा ( चू ) ।

- ४-जीवियं णाभिकंखेज्जा, मरणं णोवि पत्थए ।  
 दुहतो वि ण सज्जेज्जा, जीविते मरणे तहा ॥
- ५-मज्झत्थो णिज्जरा-पेही, समाहि मणुपालए ।  
 अंतो बहिं विउसिज्ज, अज्झत्थं सुद्ध मेसए ॥
- ६-जं किंचुवक्कमं<sup>१</sup> जाणे, आउ-क्खेमस्स अप्पणो ।  
 तस्सेव अंतरद्धाए, खिप्पं सिक्खेज्ज पंडिए ॥
- ७-गामे वा अट्टुवा रण्णे, थंडिलं पडिलेहिया ।  
 अप्पपाणं तु विन्नाय<sup>२</sup>, तणाइं संथरे मुणी ॥
- ८-अणाहारो तुअट्टेज्जा<sup>३</sup>, पुट्टो तत्थ हियासए ।  
 णातिवेलं उवचरे, माणुस्सेहिं विपुट्टओ<sup>४</sup> ॥
- ९-संसप्पगा य जे पाणा, जे य उड्डमहेचरा ।  
 भुंजंति मंस-सोणियं, ण छणे न पमज्जए ॥
- १०-पाणा देहं विहिंसंति, ठाणाओ ण विउब्भमे<sup>५</sup> ।  
 'आसवेहिं विवित्तेहिं'<sup>६</sup>, तिप्पमाणेऽहियासए<sup>७</sup> ॥
- ११-गंथेहिं विवित्तेहिं<sup>८</sup>, आउ-कालस्स पारए ।  
 पग्गहियतरां<sup>९</sup> चेयं, दवियस्स वियाणतो<sup>१०</sup> ॥
- १२-अयं से अवरे धम्मे, णायपुत्तेण साहिए ।  
 आयवज्जं पडीयारं, विजहिज्जा तिहा तिहा ॥

१-किंचिदुवक्कम ( च ) ।

२-वियाणित्ता ( च्चु ) ।

३-णिवज्जेज्जा ( च्चु, वृ ) ।

४-<sup>०</sup> पुट्टुव ( क, च, छ ), <sup>०</sup> पुट्टुए ( ख, ग ) ।

५-वि उब्भमे ( क, ख, ग, घ, वृ ) ।

६-अवसव्वेहिं विवित्तेहिं ( च्चु ) ।

७-तप्प <sup>०</sup> ( घ ) ।

८-विवित्तेहिं ( क, ख, घ, च, छ, च्चु ) ।

९-<sup>०</sup> तराग ( क ), <sup>०</sup> तर ( च्चु ) ।

१०-सुयाहितो ( च्चु ) ।

- १३-हरिएसु ण णिवज्जेज्जा, थंडिलं 'मुणिआ सए'<sup>१</sup> ।  
 विउसिज्ज<sup>२</sup> अणाहारो, पुट्ठो तत्थ हियासए ॥
- १४-इंदिएहिं गिलायंते, समियं साहरे<sup>३</sup> मुणी ।  
 तहावि से अगरिहे<sup>४</sup>, अचले जे समाहिए ॥
- १५-अभिवक्कमे पडिक्कमे, संकुचए पसारए ।  
 काय-साहारणद्वाए<sup>५</sup>, एत्थं<sup>६</sup> वावि अचेयणे ॥
- १६-परिवक्कमे परिकिलंते, अदुवा चिट्ठे अहायते ।  
 ठाणेण परिकिलंते, णिसिएज्जा य अंतसो ॥
- १७-'आसीणे णेलिसं'<sup>७</sup> मरणं, इंदियाणि समीरए ।  
 कोलावासं समासज्ज, वितहं पाउरेसए ॥
- १८-जओ वज्जं समुप्पज्जे, ण तत्थ अवलंबए ।  
 ततो उक्कसे<sup>८</sup> अप्पाणं, सब्बे फासेऽहियासए ॥
- १९-अयं चायततरे<sup>९</sup> सिया, जो एवं अणुपालए ।  
 सब्ब-गायणिरोधेवि, ठाणातो ण विउब्भमे ॥
- २०-अयं से उत्तमे धम्मे, पुव्वद्वाणस्स पग्गहे ।  
 अचिरं पडिलेहिता, विहरे चिट्ठ माहणे ॥

१-मुणि आसए ( च, चू ) ।

२-वियो ° ( ख, ग, च, छ ) ।

३-आहरे ( ख, ग, घ, च, छ, वृ ) ।

४-अगरहे ( क, ख, ग, घ ) ।

५-साहारण ° ( क, ग घ ) ; सधारण ( चू ), सहारण ( च ) ।

६-इत्थ ( घ ) ।

७-आसीण मणेलिस ( क, घ, च ), उदासीणो अणे लिसो ( चू ) ।

८-उक्कसे ( ग, घ, छ ) ।

९-चायतरे ( ख ), चाततरे ( चू, क ) ; आयरे द्रढगाहतरे धम्मे ( चुपा ) ;  
 यदि वा ° ° ° ° आत्ततर. ( वृ ) ।

- २१—अचित्तं तु समासज्ज, ठावए तत्थ अप्पगं ।  
 वोसिरे सव्वसो कायं, 'ण मे देहे परीसहा'<sup>१</sup> ॥
- २२—जावज्जीवं परीसहा, उवसग्गा 'य संखाय'<sup>२</sup> ।  
 संवुडे देह-भेयाए, इति पण्णे हियासए ॥
- २३—भेउरेसु न रज्जेज्जा, कामेसु बहुतरेसु<sup>३</sup> वि ।  
 इच्छा-लोभं<sup>४</sup> ण सेवेज्जा, सुहुमं<sup>५</sup> वन्नं सपेहिया ॥
- २४—सासएहिं णिमंतेज्जा, 'दिव्वं मायं'<sup>६</sup> ण सद्देह ।  
 तं पडिबुज्झ माहणे, सव्वं नूमं विघ्णिया ॥
- २५—सव्वट्ठेहिं<sup>७</sup> अमुच्छिए, आउ-कालस्स पारए ।  
 तितिक्खं परमं णच्चा, विमोहन्नतरं हितं ॥

—त्ति वेमि ।

॥

१—न मे देह परीसहा, यदि वा—न मे देहे परीसहा ( च, वृ ) ।

२—तित्ति संखाते ( क ), इति सखाया (ता) ( ग, घ, छ ) - इति संखाय ( च, वृ ) ।

३—बहुलेसु ( त्रूपा, वृपा ) ।

४—इच्छ<sup>०</sup> ( क ) ।

५—धुव ( धुव<sup>०</sup> ) ( क, ख, ग, घ, च, छ, त्रूपा, वृपा ) ।

६—दिव्वमाय ( ख, घ, च ) ।

७—सव्वत्थेहिं ( चू ) ।

नवमं अञ्जयणं

## उवहाण-सुयं

पढमो उद्देसो

- १-अहासुयं वदिस्सामि, जहा से समणे भगवं उट्ठाय ।  
संखाए तंसि हेमंते, अहुणा पव्वइए रीयत्था<sup>१</sup> ॥
- २-णो चेवि<sup>२</sup>मेण वत्थेण, पिहिस्सामि तंसि हेमंते ।  
से पारए आवकहाए<sup>३</sup>, एयं खु अणुधम्मियं<sup>४</sup> तस्स ॥
- ३-चत्तारि साहिए मासे, बहवे पाण-जाइया<sup>५</sup> आगम्म ।  
अभिरुज्झकायं<sup>६</sup> विहरिंसु, आरुसियाणं तत्थ हिंसिंसु ॥
- ४-संवच्छरं साहियं मासं, जं ण रिक्का<sup>७</sup>सि वत्थगं भगवं ।  
अचेले ततो चाई, तं वोसज्ज वत्थमणगारे ॥
- ५-अदु पोरिसिं तिरियं-भित्ति, चक्खुमासज्ज अंतसो भाइ ।  
अह चक्खु-भीया<sup>८</sup> सहिया, त "हंता हंता" वहवे कंदिसु ॥
- ६-सयणेहि<sup>९</sup> 'वित्ति मिस्सेहि'<sup>१०</sup>, इत्थीओ तत्थ से परिण्णाय ।  
सागारियं<sup>११</sup> ण सेवे, इति से सयं पवेसिया भाति ॥

१-रीइत्था ( क, चू ), रीयित्था ( च ); रोएत्था ( ग ) ।

२-आवकह ( घ ) ।

३-आणु<sup>०</sup> ( छ ) ।

४-<sup>०</sup> जाती ( क ) ।

५-आरुज्झ<sup>०</sup> ( चू ) ।

६-<sup>०</sup> भीय ( ग, च, छ ) ।

७-विमिस्सेहि ( घ ) ।

८-साकारिय ( घ, छ ) ।

- ७-जे के इमे अगारत्था, मीसी-भावं पहाय से भाति ।  
 पुट्टो<sup>१</sup> वि गाभिभासिसु, गच्छति<sup>२</sup> णाइवत्तई अंजू ॥
- ८-णो सुगर मेत मेगेसि, गाभिभासे अभिवायमाणे ।  
 हयपुव्वो तत्थ दंडेहि, लूसियपुव्वो अप्प-पुत्तेहि ॥
- ९-फरुसाइं दुत्तितिक्खाइं, अतिअच्च मुणी परक्कममाणे ।  
 आघाय-णट्ट-गीताइं , दंड-जुद्धाइं मुट्ठि-जुद्धाइं ॥
- १०-गढिए मिहो<sup>३</sup>-कहासु<sup>३</sup>, समयंमि<sup>४</sup> णायसुए<sup>५</sup> विसोगे अदक्खू ।  
 एताइं सो उरालाइं, गच्छइ णायपुत्ते<sup>६</sup> असरणाए ॥
- ११-अविसाहिए दुवे वासे, सीतोदं अभोच्चा णिक्खंते ।  
 एगत्त-गए<sup>७</sup> पिहियच्चे, से अहिन्नाय-दंसणे संते ॥
- १२-पुढवि च आउकायं<sup>८</sup>, तेउ-कायं च वाउ-कायं च ।  
 पणगाइं<sup>९</sup> बीय-हरियाइं, तस-कायं च सव्वसो णच्चा ॥
- १३-एयाइं संति पडिलेहे, चित्तमंताइं से अभिन्नाय ।  
 परिवज्जिया<sup>१०</sup> ण विहरित्था, इति संखाए से महावीरे ॥
- १४-अदु<sup>११</sup> थावरा तसत्ताए, तस-जीवाय थावरत्ताए ।  
 अदु सव्व-जोणिया सत्ता, कम्मणा<sup>१२</sup> कप्पिया पुढो बाला ॥

१-तारार्जुनीया —पुट्टो व सो अपुट्टो व, णो अणुन्नाइ पावग भगव ।

पुट्टेव से अपुट्टे वा ° ( चू ) ।

२-मिधु ° ( च ), मिहू ° ( छ ) ।

३- ° कहासु ( क, घ ) ।

४-समतोमि ( चू ) ।

५- ° पुत्ते ( ख, ग, वृ ) ।

६-णाइ ° ( छ ) ।

७-एगत्ति ° ( चू ) ।

८- ° काय च ( क, ग, च, छ ) ।

९-पणगाय ( ख ) ।

१०- ° वज्जिया ( ख, ग ) ।

११-अदुवा ( ख, ग, च, छ ) ; अदुव ( क ) ।

१२-कम्मणा ( च ) ।

- १५-भगवं च एवमन्नेसि<sup>१</sup>, सोवहिए हु लुप्पती बाले ।  
 कम्मं च सव्वसो णच्चा, तं पडियाइक्खे पावगं भगवं ॥
- १६-दुविहं समिच्च मेहावी, किरिय मक्खाय'णेलिसि' णाणी ।  
 आयाण सोय मतिवाय-सोयं, जोगं च सव्वसो णच्चा ॥
- १७-अइवातियं<sup>२</sup> अणाउट्टि, सयमन्नेसि अकरणयाए ।  
 जस्सि'त्थिओ परिणयाया, सव्वकम्मावहाओ से<sup>३</sup> अदक्खू ॥
- १८-अहाकडं<sup>४</sup> न से सेवे, सव्वसो कम्मणा 'य अदक्खू'<sup>५</sup> ।  
 जं किंचि पावगं भगवं, तं अकुच्चं वियडं भुंजित्था ॥
- १९-णो सेवती य परवत्थं<sup>६</sup>, पर-पाए वि से ण भुंजित्था ।  
 परिवज्जियाण ओमाणं, गच्छति संखडिं असरणाए<sup>७</sup> ॥
- २०-मायन्ने असण-पाणस्स, णाणुगिद्धे रसेसु अपडिण्णे ।  
 अच्छिपि णो पमज्जिया<sup>८</sup> णोवि य कंडूयये मुणी गायं ॥
- २१-अप्पं तिरियं पेहाए, अप्पं पिट्ठओ उपेहाए<sup>९</sup> ।  
 अप्पं वुइएऽपडिभाणी, पंथ-पेही चरे जयमाणे ॥
- २२-सिसिरंसि अद्ध-पडिवन्ने, तं वोसज्ज<sup>१०</sup> वत्थ मणगारे ।  
 पसारित्तु वाहुं परक्कमे, णो अवलंबिया ण कंधंसि<sup>११</sup> ॥

१-एवमन्नेसि ( क, घ, च, छ, व ), एवमणिसित्ता ( चू ) ।

२-मणेलिस्स ( ख, ग ) ।

३-<sup>०</sup> वत्तिव ( छ ) ।

४-X ( क, घ, च, छ ) ।

५-अहा<sup>०</sup> ( च, छ ) ।

६-वध अदक्खू ( क ); अदक्खू ( ख, ग, च ), य दक्खू ( घ ) ।

७-परं वत्थं ( ख, ग ) ।

८-असरणयाए ( घ, च ) ।

९-पमज्जिज्जा ( ख ) ।

१०-व पेहाए ( घ ) ।

११-वोसरिज्ज ( घ, चू ) ।

१२-खधंसि ( क, च ) ।

२३-एस विही अणुक्कंतो, माहणेण मईमया ।  
बहुसो<sup>१</sup> अप्पडिन्नेण, भगवया एवं रीयंति ॥  
—त्ति वेमि ।

### बीओ उद्देशो

१-चरियासणाइं<sup>२</sup> सेज्जाओ, एगतियाओ जाओ वुइयाओ ।  
आइक्ख ताइं सयणासणाइं<sup>३</sup>, जाइं सेवित्था से महावीरो ॥  
२-आवेसण<sup>४</sup>-सभा-पवासु<sup>५</sup>, पणिय-सालासु एगदा वासो ।  
अट्टुवा पलिय-ट्टाणेसु, पलाल-पुंजेसु एगदा वासो ॥  
३-आगंतारे आरामगारे, गामे<sup>६</sup> णगरे वि<sup>७</sup> एगदा वासो ।  
सुसाणे सुण्ण-गारे<sup>८</sup> वा, रुक्ख-मूले वि एगदा वासो ॥  
४-एतेहि मुणी सयणेहि, समणे आसी<sup>९</sup> प-त्तेलस<sup>१०</sup> वासे ।  
राइ दिवं पि जयमाणे, अप्पमत्ते समाहि ए भात्ति ॥  
५-'णिइं पि णो पगामाए, सेवइ<sup>११</sup> भगवं उट्टाए<sup>१२</sup> ।  
जग्गावती<sup>१३</sup> य अप्पाणं, ईसि 'साई या'<sup>१४</sup> सी अपडिन्ने ॥

१-अप्पडिन्नेण बीरेण ( चू ), बहुसो अप्पडिन्नेण ( चूपा ) ।

२-अय च श्लोक चिरतन टीकाकारेण न व्याख्यात ( वृ ) ।

३-सयणाइं ( क, च ) ।

४-आएमण<sup>०</sup> ( चू ) ।

५-<sup>०</sup> सभप्पवासु ( क, घ, छ ) ।

६-<sup>x</sup> ( क, च ); तह य ( घ, छ, ञ ) ।

७-वा ( क ) ।

८-सुण्णागारे ( छ ) ।

९-वासी ( छ ) ।

१०-प-त्तेलस ( च ) ।

११-सेवइ य ( ख, ग ) ।

१२-नागाज्जीया —णिट्ठावि ण पगामा, जानी नहेव उट्टाए ( चू ) ।

१३-जगा<sup>०</sup> ( ख, छ ) ।

१४-साइ य ( क, च, छ ) ।



- ६—संबुज्झमाणे पुणरवि, आसिसु<sup>१</sup> भगवं उट्ठाए ।  
 णिक्खम्म एगया राओ, बहिं<sup>२</sup> चंकमिया<sup>३</sup> मुहुत्तागं ॥
- ७—सयणेहि तस्सुवसग्गा<sup>४</sup>, भीमा आसी अणेग-रूवा य ।  
 संसप्पगाय जे पाणा, अदुवा जे पक्खिणो उवचरंति ॥
- ८—अदु<sup>५</sup> कुचरा उवचरंति, गाम-रक्खा य सत्ति-हत्था य ।  
 अदु गामिया उवसग्गा, इत्थी एगतिया पुरिसा य ॥
- ९—इह-लोइयाइं पर-लोइयाइं, भीमाइ अणेग-रूवाइं ।  
 अवि सुब्भि-दुब्भि-गंधाइं, सद्दाइं अणेग-रूवाइं ॥
- १०—अहियासए सया समिए<sup>६</sup>, फासाइं विरूव-रूवाइं ।  
 अरइं रइं अभिभूय, रीयई माहणे अबहु-वाई ॥
- ११—स जणेहि तत्थ पुच्छिसु, एग-चरा वि एगदा राओ ।  
 अव्वाहिए कसाइत्था, पेहमाणे समाहिं अपडिन्ने ॥
- १२—अय मंतरंसि को एत्थ, अहमंसि त्ति भिक्खू आहट्ठु ।  
 अय<sup>७</sup> मुत्तमे से धम्मे, तुसिणीए सकसाइए भाति ॥
- १३—जंसिप्पेगे पवेयंति, सिसिरे मारुए पवायंते ।  
 तंसिप्पेगे अणगारा, हिमवाए णिवाय मेसंति ॥
- १४—संधाडिओ पविसिस्सामो<sup>८</sup>, एहा य समादहमाणा ।  
 पिहिया वा सक्खामो<sup>९</sup>, अतिदुक्खं हिमग-संफासा ॥

१-न विर जागित्ता ईसिं साइयासि ( चू ) ।

२-बहिं ( च ) ।

३-चंकमिता ( छ ) ।

४-तत्थु<sup>०</sup> ( क, ख, ग, घ, छ ) ।

५-अदुवा ( क, छ ) ।

६-सहिए, इति मता भगव अणगारे ( चूपा ) ।

७-को एत्थ सामो ठितो ( चू ) ।

८-पहिरिस्सामो ( चू ) ।

९-पस्सामो ( चू ) ।

- १५—तंसि भगवं अपडिण्णे, अहे वियडे अहियासए दविए ।  
 णिकखम्म एगदा राओ, चाएइ<sup>१</sup> भगवं समियाए ॥
- १६—एस विही अणुक्कंतो, माहणेण मईमया ।  
 वहुसो अपडिण्णेण, भगवया एवं रीयंति ॥  
 —त्ति बेमि ।

### तडओ उद्देसो

- १—तण-फासे<sup>२</sup> सीय-फासे य, तेउ-फासे य दंस-मसगे य ।  
 अहियासए सया समिए, फासाइं विरुव-रूवाइं ॥
- २—‘अह दुच्चर’<sup>३</sup>-लाढ मचारी, वज्ज-भूमिं च सुवभ(म्ह?)<sup>४</sup>-भूमिं च ।  
 पंतं सेज्जं सेविसु, आसणगाणि चेव पंताइं ॥
- ३—लाढेहिं तस्सुवसग्गा, बहवे जाणवया लूसिसु ।  
 अह लूह-देसिए भत्ते, कुक्कुरा तत्थ हिंसिसु णिवत्तिसु ॥
- ४—अप्पे जणे णिवारेइ, लूसणए सुणए दसमाणे<sup>५</sup> ।  
 छुछुकारंति आहंसु, समणं कुक्कुरा डसंतु<sup>६</sup>त्ति ॥
- ५—एलिकखए जणा भुज्जो, बहवे वज्ज-भूमिं फरुसासी ।  
 लट्ठि गहाय णालीयं<sup>७</sup>, समणा तत्थ एव विहरिसु ॥
- ६—एवं पि तत्थ विहरंता, पुट्ठ-पुव्वा अहेसि सुणएहिं ।  
 संलुंचमाणा सुणएहिं, दुच्चरगाणि<sup>८</sup> तत्थ लाढेहिं ॥

१-च ठाएइ ( ग )—अशुद्ध प्रतिभाति ।

२-फास ( क, ख, ग, च ) ।

३-अवि दुच्चर ( चु ) ।

४-मसमाणे ( च ), डसमाणे ( च ) ।

५-नालीयं ( ख, ग, च ) ।

६-दुच्चराणि ( क, च, छ, वृ ) ।

- ७—निधाय दंडं पाणेहि, तं कायं वोसज्ज मणगारे ।  
 अहं<sup>१</sup> गाम-कंटए भगवं, ते अहियासए अभिसमेच्चा ॥  
 ८—णाओ संगाम-सीसे वा, पागए तत्थ से महावीरे ।  
 एवं पि तत्थ लाढेहि, अलद्ध-पुव्वो वि एगया गामो ॥  
 ९—उवसंकमंत मपडिन्ति, गामंतियं पि अप्पत्तं ।  
 पडिणिकखमित्तु लूसिंसु<sup>२</sup>, एत्तो<sup>३</sup> परं पलेहित्ति ॥  
 १०—हय-पुव्वो तत्थ दंडेण, अदुवा मुट्ठिणा अदु'कुंताइ-फलेण'<sup>४</sup> ।  
 अदु लेलुणा कवालें, "हंता हंता" वहवे कंदिसु ॥  
 ११—मंसाणि<sup>५</sup> छिन्न-पुव्वाइं, उट्ठुभंति<sup>६</sup> एगया कायं ।  
 परीसहाइं लुंचिंसु, अहवा पंसुणा अवकिरिंसु<sup>७</sup> ॥  
 १२—उच्चालइय णिहणिसु, अदुवा आसणाओ खलइंसु ।  
 वोसट्ठ-काए पणयासी, दुक्ख-सहे भगवं अपडिन्ने ॥  
 १३—सूरो संगामसीसे वा, संवुडे तत्थ से महावीरे ।  
 पडिसेवमाणे फरसाइं, अचले भगवं रीइत्था ॥  
 १४—एस विही अणुक्कंतो, माहणेण मईमया ।  
 बहुसो अपडिन्नेण, भगवया एवं रीयंति ॥  
 —त्ति वेमि ।

### चउत्थो उद्देसो

- १—ओमोदरियं चाएत्ति, अपुट्ठे वि भगवं रोगेहि ।  
 पुट्ठे वा से अपुट्ठे वा, णो से सात्तिज्जति तेइच्छं ॥

१-अदु ( घ. छ ) ।

२-लूसिन्ति ( चू ) ।

३-एताओ (तो) ( क. ख. ग घ. च छ ) ।

४-कूट्ठेण फलेण ( घ ) ।

५-मसूणि ( क. ख. ग. घ. च. छ ) ।

६-उट्ठु भिया ( क. ख. ग. च छ, वृ ) ; उट्ठमियाए ( घ ) ।

७-उवकारिसु ( क. ख. ग. घ. च. छ ) —वृत्तिचर्ण्यनुसारेण अशुद्ध प्रतिभाति ।

- २-संसोहणं च वमणं च, गायत्र्यङ्गणं<sup>१</sup> सिणाणं च ।  
 संवाहणं 'ण से कप्पे'<sup>२</sup>, दंत-पक्खालणं परिण्णाए ॥
- ३-विरए<sup>३</sup> गाम-धम्मसेहि, रीयति माहणे अबहु-वाई ।  
 सिसिरंमि एगदा भगवं, छायाए भाइ आसी य ॥
- ४-आयावई य गिम्हाणं, अच्छइ उक्कुडुए अभितावे ।  
 अदु जावइत्थं<sup>४</sup> लूहेणं, ओयण-मंथु-कुम्मासेणं ॥
- ५-एयाणि तिन्नि पडिसेवे, अट्ट-मासे य जावए भगवं ।  
 अपिइत्थं<sup>५</sup> एगया भगवं, अट्ट-मासं अदुवा मासं पि ॥
- ६-अविसाहिए दुवे मासे, छप्पि मासे अदुवा अपिवित्ता<sup>६</sup> ।  
 रायोवरायं अपडिन्ने, अन्न-गिलाय मेगया भुंजे ॥
- ७-छट्टेणं एगया भुंजे, अदुवा<sup>७</sup> अट्टमेण दसमेणं ।  
 दुवालसमेण एगया भुंजे, पेहमाणे समाहि अपडिन्ने ॥
- ८-णच्चाणं<sup>८</sup> से महावीरे, णो वि य पावगसयमकासी ।  
 अन्नेहिं वा ण कारित्था, कीरंतं पि णाणुजाणित्था ॥
- ९-गामं पविसे<sup>९</sup> णयरं वा, घासमेसे<sup>१०</sup> कडं परट्टाए ।  
 सुविसुद्ध मेसिया भगवं, आयत-जोगयाए सेवित्था<sup>११</sup> ॥

१-° मन्त्रमयण ( घ ) ।

२-ग सेवित्था ( च ) ।

३-विरए य ( क, घ, च, छ ) ।

४-जावइ ( घ ) ।

५-अपियत्थ ( चू ) ।

६-रीयित्था ( चू ), विहरित्था ( च ) ।

७-अदु अदु<sup>०</sup> ( ख ), अदुट्ट<sup>०</sup> ( ग ) ।

८-णच्चाण ( क, ख, ग, घ, चू ) ।

९-पविस्स ( झ ) ।

१०-वासमात ( चू ) ।

११-गदेसित्था ( चू ) ।

- १०—अदु वायसा दिगिच्छता', जे अन्ने रसेसिणो सत्ता ।  
 घासेसणाए चिट्ठंति, समयं णिवतिते य पेहाए ॥
- ११—अदु माहणं व समणं वा, गाम-पिंडोलं च अतिहि वा ।  
 सोवागं मूसियारं वा, कुक्कुरं वा 'विविहं ठियं' पुरतो ॥
- १२—वित्ति-च्छेदं वज्जंतो, तेस'प्पत्तियं' परिहरंतो ।  
 मंदं परक्कमे भगवं, अहिंसमाणो घास मेसित्था ॥
- १३—अवि सूइयं व' सुक्कं वा, सीय-पिडं पुराण-कुम्मासं ।  
 अदु वक्कसं' पुलागं वा, लद्धे पिडे अलद्धए दविए ॥
- १४—अवि भाति से महावीरे, आसणत्थे अकुक्कुए भाणं ।  
 उड्डमहे' तिरियं च, 'लोए झायइ' समाहिमपडिन्ने ॥
- १५—अकसाई विगय-गेही', सद्-रूवेसुऽमुच्छिए' भाति ।  
 छउमत्थे वि परक्कममाणे, णो' पमायं सइं पि कुव्वित्था ॥
- १६—सयमेव अभिसमागम्म, आयत-जोग माय-सोहीए ।  
 अभिणिव्वुडे अमाइल्ले, आवक्कहं भगवं समिआसी ॥
- १७—एस विही अणुक्कंतो, माहणेण मईमया ।  
 बहुसो अपडिन्नेण, भगवया एवं रीयंति ॥
- त्ति वेमि ।

१—दिगिच्छता ( ख, ग ) ।

२—विट्ठिय ( क, ख ) ; विविट्ठिय ( घ ) ; उवट्ठियं ( चू ), चिट्ठिय ( च ) ।

३—तेसिमप्पत्तिय ( ख, ग ) ; तेसि पत्तिय ( क, च ), 'गाममकुर्वन्' ( वृ ) ।

४—वा ( क, ख, ग, घ, च, छ ) ।

५—वुक्कसं ( ख ) ।

६—उड्डं अहे य ( य ) ( ख, ग, घ, छ ) ।

७—पेहमाणो ( क, घ, च, छ ) ; भायड ( चू ) ।

८—गेही य ( क, ख, ग, घ, च ) ।

९—अमुच्छिए ( ख, ग, च ) ।

१०—ण ( च ) ।





आयार-चूला





पढमं अज्मयणं

## पिंडेसणा

पढमो उद्देसो

सचित्तं-संसत्त-असणादि-पदं

१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं<sup>१</sup> पुण जाणेज्जा—

असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा—पाणेहिं वा,  
पणएहिं वा, बीएहि वा, हरिएहि वा—संसत्तं, उम्मिस्सं,  
सीओदएण वा ओसित्तं<sup>२</sup>, रसया वा परिवासियं<sup>३</sup>,

तहप्पगारं असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा—  
परहत्थंसि वा परपायंसि वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति  
मन्नमाणे लाभे वि संते णो पडिग्गाहेज्जा<sup>४</sup> ।

२-से य आहच्च पडिग्गाहिए<sup>५</sup> सिया, से त आयाय  
एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता—

अहे आरामंसि वा अहे उवस्सयंसि वा अप्पंडे, अप्प-पाणे,  
अप्प-बीए, अप्प-हरिए, अप्पोसे, अप्पुदए, अप्पुत्तिग-पणग-  
दग-मट्ठिय-मक्कडा-संतानए, विगिंचिय-विगिंचिय,  
उम्मिस्सं<sup>६</sup> विसोहिय-विसोहिय, तओ संजयामेव भुंजेज्ज वा  
पीएज्ज वा ।

---

१-से ज ( क, व ) ।

२-उत्सित्त ( क ) ; अभिमित्त ( चू ) ।

३-<sup>०</sup> घासिय ( अ, क, घ, च, व ) ।

४-पडिग्गा <sup>०</sup> ( घ, छ, व ) ।

५-<sup>०</sup> गाहे ( अ, घ, च, छ, व ) ।

६-उम्मीस ( क, च ) ।

३-जं च णो संचाएज्जा भोत्तए वा पायए वा, से<sup>१</sup> तमायाय  
 एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता—  
 अहे झाम-थंडिलंसि वा, अट्टि-रासिसि वा, किट्टि<sup>२</sup>-रासिसि  
 वा, तुस-रासिसि वा, गोमय-रासिसि वा, अण्णयरंसि वा  
 तहप्पगारंसि थंडिलंसि<sup>३</sup> पडिलेहिय-पडिलेहिय पमज्जिय-  
 पमज्जिय, तओ संजयामेव परिट्टवेज्जा ।

ओसहि-आदि-पदं

४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए  
 अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जाओ<sup>४</sup> पुण ओसहीओ जाणेज्जा—  
 कसिणाओ, सासिआओ, अविदल-कडाओ, अतिरिच्छ-  
 च्छिन्नाओ, अव्वोच्छिन्नाओ, तरुणियं वा छिवाडि,  
 अणभिककंताऽभज्जियं<sup>५</sup> पेहाए—अफासुयं अणेसणिज्जं ति  
 मन्नमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा \*गाहावइ-कुलं पिंडवाय-  
 पडियाए अणुपविट्ठे<sup>६</sup> समाणे, सेज्जाओ<sup>४</sup> पुण ओसहीओ  
 जाणेज्जा—  
 अकसिणाओ, असासियाओ, विदल-कडाओ, तिरिच्छ-  
 च्छिन्नाओ, वोच्छिन्नाओ, तरुणियं वा छिवाडि, अभिककंतं  
 भज्जियं पेहाए—फासुयं एसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे संते  
 पडिगाहेज्जा ।

१-सेत्त ° (अ, च, छ) ।

२-किट्टि ° (छ) ।

३-थंडिल्ल (अ, छ) ।

४-से जाओ (क, व, छ) ।

५-° ककत भज्जियं (क, च) ; ° ककंतं भज्जियं (च) ।

६-से जाओ (क, ग, छ, व) । (अ, वुवुत्ती विमयति) ।

६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा \*गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—

पिहुयं वा, बहुरजं वा, भुज्जियं<sup>१</sup> वा, मंथुं वा, चाउलं वा, चाउल-पलवं वा सइं भज्जियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ।

७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा \*गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

पिहुयं वा, \*बहुरजं वा, भुज्जियं वा, मंथुं वा, चाउलं वा°, चाउल-पलवं वा असइं भज्जियं, दुक्खुत्तो वा भज्जियं, तिक्खुत्तो वा भज्जियं—फासुयं एसणिज्जं \*ति मन्नमाणे° लाभे संते पडिगाहेज्जा ।

अण्णउत्थिय-गारत्थिय-सद्धि-पदं

८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं \*पिंडवाय-पडियाए° पविसितुकामे, णो अन्नउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, परिहारिओ<sup>२</sup> अपरिहारिएण वा<sup>३</sup>, सद्धि गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा ।

९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहिया वियार-भूमि वा, विहार-भूमि वा, णिक्खममाणे वा, पविसमाणे वा—णो अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, परिहारिओ अपरिहारिएण वा, सद्धि—बहिया वियार-भूमि वा विहार-भूमि वा—णिक्खमेज्ज<sup>४</sup> वा पविसेज्ज वा ।

१-भुज्जियं ( क, घ, च, छ, ब ), भज्जिय ( अ ) ।

२-परिहारिओ वा ( अ, क, च, ब ) ।

३-× ( अ, क, च, छ, ब ) ।

४-न प्रविशेत् नापि ततो निष्कामेत् ( वृ ) ।

१०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—णो अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, परिहारिओ अपरिहारिएण वा सद्धि—गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

११—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा \*गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे<sup>०</sup> समाणे—णो अण्णउत्थियस्स वा, गारत्थियस्स वा, परिहारिओ अपरिहारिअस्स वा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा देज्जा वा अणुपदेज्जा वा ।

अस्सिपडियाए-पदं

१२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा \*गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे<sup>०</sup> समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ अस्सिपडियाए<sup>१</sup> एगं साहम्मियं समुद्दिस्स, पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं, 'समारब्भ समुद्दिस्स'<sup>२</sup> कोयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेएइ ।

तं तहप्पगारं असणं वा ४ पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं<sup>३</sup> वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, 'परिभुत्तं वा'<sup>४</sup> 'अपरिभुत्तं वा'<sup>५</sup> आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं \*अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे संते<sup>०</sup> णो पडिगाहेज्जा ।

१३—\*से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ अस्सिपडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स,

१—अस्सं<sup>०</sup> ( क, च, छ, ब, वृ ) ।

२—समारंभमुद्दिस्स ( च, ब ) ; समारभं<sup>०</sup> ( अ, घ ) ।

३—अबहिया अणीहडं ( क, च ) ।

४—× ( चृ ) ।

५—× ( क ) ।

पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं  
पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेएइ ।

तं तहप्पगारं असणं वा ४ पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतर-  
कडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा  
अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा  
अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे  
संते णो पडिगाहेज्जा ।

१४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ अस्सिपडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स,  
पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं  
पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेएइ ।

तं तहप्पगारं असणं वा ४ पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतर-  
कडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा  
अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा  
अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे  
संते णो पडिगाहेज्जा ।

१५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ अस्सिपडियाए वहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स,  
पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं  
पामिच्चं, अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेएइ ।

तं तहप्पगारं असणं वा ४ पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं  
वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं

वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-पद

१६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं \*पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स, पाणाइं वा, भूयाइं वा, जीवाइं वा, सत्ताइं वा, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेएइ ।

तं तहप्पगारं असण वा ४ पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

१७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं \*पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स, पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेएइ ।

तं तहप्पगारं असणं वा ४ अपुरिसंतरकडं, अबहिया<sup>१</sup> णीहडं, अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं, अणासेवितं—अफासुयं अणेसणिज्जं \*ति मन्नमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।

१—बहिया अणीहडं (अ) ।

१८-अह पुण एवं जाणेज्जा-

पुरिसंतरकडं, बहिया णीहडं, अत्तद्वियं, परिभुत्तं, आसेवियं-  
फासुयं एसणिज्जं \*ति मन्नमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा ।

कुल-पदं

१९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए  
पविसितुकामे, सेज्जाइं पुण कुलाइं जाणेज्जा-

इमेसु खलु कुलेसु णितिए<sup>१</sup> पिंडे दिज्जइ, णितिए अग्ग-पिंडे  
दिज्जइ, णितिए भाए दिज्जइ, णितिए अवड्ढभाए दिज्जइ-  
तहप्पगाराइं कुलाइं णितियाइं णितिउमाणाइं, णो भत्ताए  
वा पाणाए वा पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा ।

२०-एयं<sup>२</sup> खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, ज  
सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सयाजए ।

--ति वेमि ।

बीओ उद्देसो

अट्टमी-आदि-पव्व-पदं

२१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा-

असणं वा ४ अट्टमि-पोसहिएसु वा, अद्धमासिएसु वा,  
मासिएसु वा, दोमासिएसु वा, तिमासिएसु वा,  
चाउमासिएसु वा, पंचमासिएसु वा, छमासिएसु वा, उउसु<sup>३</sup>  
वा, उउसंधीसु वा, उउपरियट्ठेसु वा, बहवे समण-माहण-  
अतिहि-किवण-वणीमगे, एगाओ उक्खाओ परिएसिज्जमाणे

१-× ( क, च ) ।

२-एव ( व, च, छ ) । अशुद्ध प्रतिभाति ।

३-उडुसु ( च ) ।



पेहाए, दोहिं उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए 'तिहि उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए'<sup>१</sup> 'चउहि उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए'<sup>२</sup> कुंभीमुहाओ वा कलोवाइओ<sup>३</sup> वा सण्णिहि-सण्णिचयाओ वा<sup>४</sup> परिएसिज्जमाणे पेहाए—

तहप्पगारं असणं वा ४ अपुरिसंतरकडं, \*अबहिया णीहडं, अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं<sup>५</sup>, अणासेवितं—अफासुयं अणेसणिज्जं \*ति मन्नमाणे लाभे सते<sup>५</sup> णो पडिगाहेज्जा ।

२२—अह पुण एवं जाणेज्जा—

पुरिसंतरकडं, \*बहिया णीहडं, अत्तट्ठियं, परिभुत्तं<sup>५</sup>, आसेवियं—फासुयं \*एसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे सते<sup>५</sup> पडिगाहेज्जा ।

कुल-पदं

२३—से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे<sup>५</sup> समाणे, सेज्जाइं पुण कुलाइं जाणेज्जा, तंजहा—

उग्ग-कुलाणि वा, भोग-कुलाणि वा, राइण्ण-कुलाणि वा, खत्तिय-कुलाणि वा, इक्खाग-कुलाणि वा, हरिवंस-कुलाणि वा, एसिय-कुलाणि वा, वेसिय-कुलाणि वा, गंडाग-कुलाणि वा, कोट्टाग-कुलाणि वा, गामरक्खकुलाणि वा, पोक्कसालिय<sup>५</sup>-कुलाणि वा—अण्णयरेसु वा तहप्पगारेसु

१—X (च) ।

२—X (अ, क, घ, च, ब) ।

३—कालओ वा ततो (छ) : कालओ वा तिण्णो (ब) ।

४—सण्णिचयाओ वा तओ एवं विहं जावत्तिय पिंड समणादीण परिएसिज्जमाण पेहाए (वृ) ।

५—वोक्क<sup>५</sup> (अ, छ, ब, च) ।

कुलेसु अदुगुंछिएसु अगरहिएसु, असणं वा ४ फासुयं  
एसणिज्जं \*ति मन्नमाणे लाभे सते° पडिगाहेज्जा ।

महामह-पदं

२४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ समवाएसु वा, पिंड-णियरेसु वा, इंद-महेसु  
वा, खंद-महेसु वा, रुद्ध-महेसु वा, मुगुंद-महेसु वा, भूय-महेसु  
वा, जक्ख-महेसु वा, णाग-महेसु वा, धूम-महेसु वा, चेतिय-  
महेसु वा, रुक्ख-महेसु वा, गिरि-महेसु वा, दरि-महेसु वा,  
अगड-महेसु वा, तडाग'-महेसु वा, दह-महेसु वा, 'णई-महेसु  
वा'<sup>१</sup>, सर-महेसु वा, सागर-महेसु वा, आगर-महेसु वा—  
अण्णयरेसु वा तहप्पगारेसु विरूव-रूवेसु महामहेसु वट्टमाणेसु,  
वहवे समण-माहण-अतिहि-किविण-वणीमए<sup>२</sup>, एगाओ  
उक्खाओ परिएसिज्जमाणे पेहाए, दोहि \*उक्खाहि परि-  
एसिज्जमाणे पेहाए, तिहि उक्खाहि परिएसिज्जमाणे पेहाए,  
चउहि उक्खाहि परिएसिज्जमाणे पेहाए, कुंभीमुहाओ वा  
कलोवाइओ वा° सण्णिहि-सण्णिचयाओ वा परिएसिज्जमाणे  
पेहाए—

तहप्पगारं असण वा ४ अपुरिसंतरकडं<sup>४</sup>, \*अवहिया णीहडं,  
अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्त, अणासेवितं-अफासुयं अणेसणिज्जं  
ति मन्नमाणे लाभे सते° णो पडिगाहेज्जा ।

१—तलाग ( घ, च, छ ) ।

२—णईमहेसु वा असणमहेसु वा ( क ) ।

३—वणीमएसु ( अ, क, च, छ, व ) अयुद्ध ।

४—° गय ( अ, क, च ), ° कय ( छ ) ।

२५-अह पुण एवं जाणेज्जा—

दिण्णं जं तेसिं दायव्वं ।

अह तत्थ भुंजमाणे पेहाए—गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणिं वा, गाहावइ-पुत्तं वा, गाहावइ-धूयं वा, सुण्हं वा, धाइं वा, दासं वा, दासिं वा, कम्मकरं वा, कम्मकरि वा, से पुव्वामेव<sup>१</sup> आलोएज्जा<sup>२</sup>—आउसि! त्ति वा, भगिणि! त्ति वा, दाहिसि मे एत्तो अन्नयरं भोयणजायं ?

से सेवं वदंतस्स परो असणं वा ४ आहट्टु दलएज्जा—  
तहप्पगारं असणं वा ४ सयं वा णं<sup>३</sup> जाएज्जा, परो वा से देज्जा-फासुयं<sup>४</sup> एसणिज्जं त्ति मन्नमाणे लाभे सते<sup>०</sup> पडिगाहेज्जा ।

संखडि-पदं

२६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा परं अद्धजोयणभेराए संखडिं  
णच्चा संखडि-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

२७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा—

पाईणं संखडिं णच्चा पडीणं गच्छे, अणाढायमाणे,  
पडीणं संखडिं णच्चा पाईणं गच्छे, अणाढायमाणे,  
दाहिणं संखडिं णच्चा उदीणं गच्छे, अणाढायमाणे,  
उदीणं संखडिं णच्चा दाहिणं गच्छे, अणाढायमाणे ।

२८-जत्थेव सा संखडी सिया, तं जहा—गामंसि वा, णगरंसि  
वा, खेडंसि वा, कव्वडंसि वा, मडंबंसि<sup>५</sup> वा, पट्टणंसि वा,

१-पुव्व ° ( क, च ) ।

२-आलोएज्जा पभू वा पभूसदिट्ठो ( चू ), प्रभू प्रभूसदिष्ट वा ब्रूयात् ( वृ ) ।

३-X ( घ, छ ) ।

४-मंडवसि ( ब ) ।

‘आगरंसि वा, दोणमुहंसि वा’<sup>१</sup>, णिगमंसि वा, आसमंसि वा ‘सण्णिवेसंसि वा रायहाणिसि वा’<sup>२</sup>—

संखडिं संखडि-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

२१—केवली वूया—आयाणमेयं<sup>३</sup>—

संखडिं संखडि-पडियाए अभिसंधारेमाणे आहाकम्मियं वा, उहेसियं वा, मीसजायं<sup>४</sup> वा, कीयगडं वा, पामिच्चं वा, अच्चेज्जं वा, अणिसिट्ठं वा, अभिहडं वा आहट्ठु दिज्जमाण भुंजेज्जा ।

असंजए<sup>५</sup> भिक्खु-पडियाए, खुड्डिय-दुवारियाओ महल्लियाओ<sup>६</sup> कुज्जा, महल्लिय-दुवारियाओ खुड्डियाओ कुज्जा, समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा, विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा, पवायाओ सिज्जाओ णिवायाओ कुज्जा, णिवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा, अंतो वा, वहि वा उवस्सयस्स<sup>७</sup> हरियाणि छिदिय-छिदिय, दालिय-दालिय, संथारगं संथरेज्जा—‘एस खलु भगवया सेज्जाए अक्खाए ।’<sup>८</sup>

१—दोणमुहंसि वा आगरमि वा ( अ, क, घ, च, छ, व ) । १ ८६।१०६ सूत्र क्रम अनुसृत ( वृ ) ।

२—रायहाणिसि वा सण्णिवेससि वा ( वृ ) ।

३—आययण ° ( वृपा ) ।

४—° ज्जाय ( च, छ, व ) ।

५—अस्स ° ( घ, छ, व ) ।

६—महाद्वारा ( वृ ) ।

७—कुज्जा उवासयस्स ( क, छ ), उवस्सयस्स कुज्जा ( घ ), उपाग्रव सत्क्रियात् ( वृ ) ।

८—एस विलगयामो सिज्जाए अक्खाए ( अ, छ ); एस खलु गयामो सेज्जाए अक्खाए ( क ), एस वि खलु गयामो सिज्जाए अक्खाए ( च ); एस खलु गयामो सिज्जाए ( व ) ।

तम्हा से संजए णियंट्ठे<sup>१</sup> तहप्पगारं पुरे संखडिं<sup>२</sup> वा,  
पच्छा-संखडिं वा, संखडिं संखडि-पडियाए णो  
अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

३०-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामंगियं, जं  
सव्वट्ठेहि समिए सहिए सया जए ।

—त्ति बेमि ।

### तइओ उद्देसो

३१-से एगइओ अण्णतरं संखडि आसित्ता पिबित्ता छड्डेज्ज वा,  
वमेज्ज वा, भुत्ते वा से णो सम्मं परिणमेज्जा, अण्णतरे वा  
से दुक्खे रोयातंके समुपज्जेज्जा ।

३२-केवली बूया आयाणमेयं—

इह खलु भिक्खू गाहावइहि वा, गाहावइणीहि वा,  
परिवायएहि वा, परिवाइयाहिं वा, एगज्झ सद्धं<sup>३</sup> सोढं पाउं  
भो ! वत्तिमिस्सं<sup>४</sup> हुरत्था वा, उवस्सयं पडिलेहमाणे णो  
लभेज्जा, तमेव उवस्सयं सम्मिस्सिंभाव<sup>५</sup> मावज्जेज्जा ।

अण्णमण्णे वा से मत्ते विप्परियासियभूए इत्थिचिग्गहे वा,  
किलीवे वा, तं भिक्खुं उवसंकमित्तु बूया—

आउसंतो समणा ! अहे आरामंसि वा, अहे उवस्सयंसि वा,

१—निगये अण्णयरं वा ( व ) ।

२—× ( क, घ, च ) ।

३—सद्धि ( व ) ।

४—वित्ति ° ( च, छ ) ।

५—मित्रीभावम् ( वृ ) ।

राओ वा, वियाले वा, गामधम्म<sup>१</sup>-णियंतियं कट्टु, रहस्सियं मेहुणधम्म-परियारणाए आउट्टामो ।

तं चेगइओ सातिज्जेज्जा । अकरणिज्जं चयं संखाए । एते आयाणा<sup>२</sup> संति संचिज्जमाणा, पच्चावाया भवन्ति<sup>३</sup> ।

तम्हा से संजए णियंठे तहप्पगारं पुरे-संखडिं वा, पच्छा-संखडिं वा, संखडिं संखडि-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा<sup>४</sup> गमणाए ।

३३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अन्नयर<sup>५</sup> संखडिं वा सोच्चा णिसम्म संपरिहावइ<sup>६</sup> उस्सुयं-भूयेणं अप्पाणेणं ।

धुवा संखडी । णो संचाएइ तत्थ इतरेतरेहि कुलेहि सामुदाणियं<sup>७</sup> एसियं, वेसियं, पिंडवायं पडिगाहेत्ता आहारं आहारेत्तए ।

माइट्ठाणं संपासे, णो एवं करेज्जा ।

से तत्थ कालेण अणुपविसित्ता तत्थितरेतरेहि कुलेहि सामुदाणियं एसियं, वेसियं, पिंडवायं पडिगाहेत्ता आहारं आहारेज्जा ।

३४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—

गामं वा, \*णगरं वा, खेडं वा, कव्वडं वा, मडंबं वा, पट्टणं वा, आगरं वा, दोणमुहं वा, णिगमं वा, आसमं वा, सण्णिवेसं वा,<sup>८</sup> रायहाणि वा ।

१-गाम ° ( वृ ), ग्रामासन्ने वा ( वृ ) ।

२-आयतणाणि ( घ, वृ ) ।

३-X ( अ, क, घ, च, छ ) ।

४-° धारेज्ज ( अ ) ।

५-अण्यरि ( अ, च ) ।

६-सप्रधावति ( वृ ) ।

७-समु ° ( अ, क, च, छ ) ।

इमंसि खलु गामंसि वा, \*णगरंसि वा, खेडंसि वा,  
 कव्वडंसि वा, मडंबंसि वा, पट्टणंसि वा, आगरंसि वा,  
 दोणमुहंसि वा, णिगमंसि वा, आसमंसि वा, सण्णिवेसंसि  
 वा<sup>०</sup>, रायहाणिसि वा, संखडी सिया । तं पि य गामं वा  
 (जाव) रायहाणि वा, संखडि-पडियाए<sup>१</sup> णो अभिसंधारेज्जा  
 गमणाए ।

३५-केवली बूया आयाणमेयं—

आइण्णावमाणं<sup>२</sup> संखडि अणुपविस्समाणस्स—

पाएण वा पाए अवकंतपुव्वे भवइ,  
 हत्थेण वा हत्थे संचालियपुव्वे भवइ,  
 पाएण वा पाए आवडियपुव्वे भवइ,  
 सीसेण वा सीसे संघट्टियपुव्वे भवइ,  
 काएण वा काए सखोभियपुव्वे भवइ,  
 दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा वा कवालेण वा  
 अभिहयपुव्वे भवइ,  
 सीओदएण वा ओसित्तपुव्वे भवइ,  
 रयसा वा परिघासियपुव्वे<sup>३</sup> भवइ,  
 अणेसणिज्जे<sup>४</sup> वा परिभुत्तपुव्वे भवइ,  
 अण्णेसि वा दिज्जमाणे पडिगाहियपुव्वे भवइ ।  
 तम्हा से संजए णिगंथे तहप्पगारं आइण्णोमाणं संखडि  
 संखडि-पडियाए नो अभिसंधारेज्ज गमणाए ।

१—संखडि संखडि-पडियाए ( ब ) ।

२—आइण्णे<sup>०</sup> ( अ, घ, ङ ) अद्युद्ध ।

३—परिज्जासित<sup>०</sup> ( क ) ; परियासित<sup>०</sup> ( च, छ ) ।

४—<sup>०</sup> णिज्जेण ( अ, छ ) ।

विचिगिच्छा-समावण-पदं

३६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—  
असणं वा ४ एसणिज्जे सिया, अणेसणिज्जे सिया—  
विचिगिच्छ<sup>१</sup>-समावण्णेणं अप्पाणेणं असमाहडाए लेस्साए,  
तहप्पगारं असणं वा ४ अफासुयं अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे<sup>०</sup>  
लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

सव्वभंडगमायाए-पदं

३७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं \*पिडवाय-  
पडियाए<sup>०</sup> पविसितुकामे सव्वं भंडगमायाए गाहावइ-कुलं  
पिडवाय-पडियाए पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा ।

३८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहिया विहार-भूमि वा वियार-  
भूमि वा णिक्खममाणे वा, पविसमाणे वा सव्वं भंडग  
मायाए बहिया विहार-भूमि वा वियार-भूमि वा णिक्खमेज्ज  
वा, पविसेज्ज वा ।

३९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे सव्वं  
भंडग मायाए गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

४०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अह<sup>२</sup> पुण एवं जाणेज्जा—  
तिव्वदेसियं वा वासं वासमाणं पेहाए, तिव्वदेसियं वा  
महियं सणिक्खयमाणि<sup>३</sup> पेहाए, महावाएण वा रयं समुद्धुयं  
पेहाए—

१—वितिगिच्छ ( व ) ; वितिगिछ ( अ ) ; विचिगिछ ( छ ) ।

२—अह य ( घ, छ ) ।

३—<sup>०</sup> माणं ( अ, घ ) ।



तिरिच्छं<sup>१</sup> संपाइमा वा तसा-पाणा संथडा सन्निवयमाणा पेहाए,

से एवं णच्चा णो सव्वं भंडग मायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा ।

बहिया विहार-भूमि वा वियार-भूमि वा पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा, गामाणुगामं वा<sup>२</sup> दूइज्जेज्जा ।

कुल-पदं

४१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जाइं पुण कुलाइं जाणेज्जा, तं जहा—खत्तियाण वा, राईण वा, कुराईण वा, रायपेसियाण वा, रायवंसट्ठियाण<sup>३</sup> वा, अंतो वा बहिं<sup>४</sup> वा गच्छंताण वा, सण्णिविट्ठाण वा, णिमंतेमाणाण वा, अणिमंतेमाणाण वा, असणं वा ४ \*अफासुयं अणेसणिज्जं ति मन्तमाणे<sup>०</sup> लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

(एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, ज सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—त्ति बेमि ।)

चउत्थो उद्देसो

संखडि-पदं

४२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा \*गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे<sup>०</sup> समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

१—तिरिच्छ ( अ, क, घ, च ) ।

२—× ( अ, च, क, छ, ब ) ।

३—<sup>०</sup> वंसुट्ठियाण ( घ ) ।

४—बहिय ( अ, छ ) ; बाहियं ( च ) ; बहिया ( घ ) ।

मंसादियं<sup>१</sup> वा, मच्छादियं<sup>२</sup> वा, मंस-खलं वा, मच्छ-खलं<sup>३</sup>  
वा, आहेणं<sup>४</sup> वा, पहेणं वा, हिंगोलं वा, संमेलं<sup>५</sup> वा,  
हीरमाणं पेहाए,

अंतरा से मग्गा बहुपाणा बहुबीया बहुहरिया बहुओसा  
बहुउदया बहुउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणगा,  
बह्वे तत्थ समण-माहण-अतिथि-किवण-वणीमगा उवागता  
उवागमिस्संति, तत्थाइण्णाविस्ती<sup>६</sup>,

णो पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए, णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-  
परियट्ठणाणुपेह<sup>७</sup>-धम्माणुओगर्चिताए,  
सेवं<sup>८</sup> णच्चा तहप्पगारं पुरे-संखडिं वा; पच्छा-संखडिं वा,  
संखडिं संखडि-पडियाए णो अभिसंधारेज्ज गमणाए ।

४३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

मंसादियं वा, मच्छादियं वा, मंस-खलं वा, मच्छ-खलं वा,  
आहेणं वा, पहेणं वा, हिंगोलं वा, संमेलं वा, हीरमाणं  
पेहाए,

अंतरा से मग्गा अप्पंडा \*अप्पमाणा अप्पबीया अप्पहरिया  
अप्पोसा अप्पुदया अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-  
संताणगा,

१-मस ° ( घ ) ।

२-मज्जा ° ( घ, ञ ) ।

३-मज्ज ° ( घ ) ।

४-अहेण ( घ, ञ ) ।

५-समीलं ( च, ञ ) ।

६-अन्नाइण्णा ° ( क, च ) अच्चाइण्णा ° ( ञ ) ।

७-° पेहाए ( क, च, ञ ) . पेहा ° ( व ) ।

८-स एव ( क, च ) ; से एव ( अ, घ ) ।

णो तत्थ<sup>१</sup> बहुवे समण-माहण<sup>२</sup>-अतिथि-किवण-वणोमगा  
 उवागता<sup>३</sup> उवागमिस्संति, अप्पाइण्णावित्ती,  
 पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए, पण्णस्स वायण-पुच्छण-  
 परियट्ठणाणुपेह<sup>४</sup>-धम्माणुओगचिताए ।  
 सेवं णच्चा तहप्पगारं पुरे-संखडिं वा, पच्छा-संखडिं वा,  
 संखडि संखडि-पडियाए अभिसंधारेज्ज गमणाए ।

खीरिणी-गावी-पदं

४४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं<sup>१</sup> पिंडवाय-  
 पडियाए<sup>२</sup> पविसिउकामे सेज्जं पुण जाणेज्जा—  
 खीरिणीओ<sup>३</sup> गावीओ खीरिज्जमाणीओ पेहाए;  
 असणं वा ४ उवसंखडिज्जमाणं<sup>४</sup> पेहाए,  
 पुरा अप्पजूहिए,  
 सेवं णच्चा णो गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज  
 वा, पविसेज्ज वा ।  
 से त मायाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता  
 अणावायमसंलोए चिट्ठेज्जा ।

४५-अहं पुण एवं जाणेज्जा—

खीरिणीओ गावीओ खीरियाओ पेहाए,  
 असणं वा ४ उवक्खडियं पेहाए,  
 पुरा पजूहिए,  
 से एवं णच्चा तओ संजयामेव गाहावइ-कुलं पिंडवाय-  
 पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।

१-जत्थ (अ, क, च, छ, ब) ।

२-<sup>०</sup> पेहाए (क, ब) ; पेहा (च) ।

३-खीरिण्याओ (क, घ, च, छ, ब) ।

४-उक्खडि<sup>०</sup> (अ, घ, क, छ, ब, चू) ।

माइट्ठाण-पदं

४६—भिक्षागा णामेगे<sup>१</sup> एवमाहंसु—‘समाणे वा, वसमाणे’<sup>२</sup> वा,  
गामाणुगामं दूइज्जमाणे—‘‘खुहुआ खलु अयं गामे, संणिरुद्धाए,  
णो महालए, से हंता! भयंतारो! बाहिरगाणि गामाणि  
भिक्षायरियाए’<sup>३</sup> वयह ।’’

संति तत्थेगइयस्स भिक्खुस्स पुरे-संथुया वा, पच्छा-संथुया  
वा परिवसति, तं जहा—गाहावई वा, गाहावइणीओ वा,  
गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ  
वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा,  
कम्मकरीओ वा,

तहप्पगाराइं कुलाइं पुरे-संथुयाणि वा, पच्छा-संथुयाणि वा,  
पुव्वामेव भिक्खायरियाए अणुपविसिस्सामि अविय इत्थ  
लभिस्सामि—पिडं वा, लोयं वा, खीरं वा, दधि वा,  
णवणीयं वा, वय वा, गुलं वा, तेल्लं वा, महुं वा, मज्जं  
वा, मंसं वा, संकुलिं<sup>४</sup> वा, फाणियं वा, ‘पूयं वा’<sup>५</sup>,  
सिहरिणिं वा,

तं पुव्वामेव भोच्चा पेच्चा, पडिग्गहं सलिहिय संमज्जिय,  
तओ पच्छा भिक्खूहि सद्धि गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए  
पविसिस्सामि, णिक्खमिस्सामि वा ।

माइट्ठाणं संफासे, तं णो एवं करेज्जा ।

१—<sup>०</sup> नाम मेगे ( व ) ।

२—समाणा वा वसमाणा ( च ) ।

३—<sup>०</sup> पडियाए ( घ, व ) ।

४—सकुलिं ( घ, छ ), सक्कुलिं ( क्वचित् ) ।

५—x ( घ, छ, वृ ) ।

४७-से तत्थ भिक्खूहिं सद्धि कालेण अणुपविसित्ता, तत्थितरे-  
तरेहिं<sup>१</sup> कुलेहिं सामुदाणियं, एसियं, पिंडवायं पडिगाहेत्ता  
आहारं आहारेज्जा ।

४८-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामगियं, \*जं  
सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—त्ति बेमि ।<sup>०</sup>

### पंचमो उद्देशो

४९-से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा गाहावड-कुलं पिडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे<sup>०</sup> समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

अग्ग-पिंडं उक्खिप्पमाणं पेहाए, अग्ग-पिंडं णिक्खिप्पमाणं  
पेहाए,

अग्ग-पिंडं हीरमाणं पेहाए, अग्ग-पिंडं परिभाइज्जमाणं  
पेहाए,

अग्ग-पिंडं परिभुज्जमाणं पेहाए, अग्ग-पिंडं परिट्ठवेज्जमाणं  
पेहाए,

पुरा असिणाइ<sup>२</sup> वा, अवहाराइ वा, पुरा जत्थन्ते समण-  
माहण-अत्तिहि-किविण-वणीमगा खद्धं-खद्धं उवसंकमंति, से  
हंता अहमवि खद्धं<sup>३</sup> उवसंकमामि, माइट्ठाणं संफासे, णो  
एवं करेज्जा ।

१-तत्थियराइयेहिं ( घ, ब ) ।

२-असिणाइ ( क, ब ) ; असिणेइ ( छ ) ।

३-खद्धं खद्धं ( छ, ब ) ।

विसमट्टाण-परक्कम-पद

५०-से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे<sup>०</sup> समाणे—

अंतरासे वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, पागाराणि<sup>१</sup> वा,  
तोरणाणि वा, अग्गलाणि वा, अग्गल-पासगाणि वा—  
सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा ।

५१-केवली बूया आयाणमेयं—

से तत्थ परक्कममाणे पयलेज वा, 'पक्खलेज वा'<sup>२</sup>, पवडेज  
वा, से तत्थ पयलमाणे वा, 'पक्खलमाणे वा'<sup>३</sup>, पवडमाणे  
वा, तत्थ से काये उच्चारेण वा, पासवणेण वा, खेलेण वा,  
सिंघाणेण वा, वतेण वा, पित्तेण वा, पूएण वा, सुक्केण  
वा, सोणिएण वा, उवलित्ते सिया ।

तहप्पगारं कायं णो अणंतरहियाए पुढवीए, णो ससिणिट्ठाए  
पुढवीए, णो ससरक्खाए पुढवीए, णो चित्तमंताए सिलाए,  
णो चित्तमंताए लेलुए, कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए,  
सअडे सपाणे<sup>०</sup>सबीए सह्रिए सउसे सउदए सउत्तिग-पणग-  
दग्ग-मट्ठिय-मक्कडा<sup>०</sup>-संताणए,

णो आमज्जेज्ज वा, णो पमज्जेज्ज वा, णो संलिहेज्ज वा,  
'णो णिल्लिहेज्ज वा'<sup>४</sup>, णो<sup>५</sup> उव्वलेज्ज वा, णो उवट्ठेज्ज वा,  
णो आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा ।

१-पोगाराणि ( अ ), पोगलाणि ( ब ) ।

२-X ( अ, क, घ, च, व ) ।

३-X ( अ, क, घ, च, व ) ।

४-X ( छ ) ।

५-X ( अ, क, घ, च, व ) सर्वत्र ।

से पुव्वामेव अप्पससरक्खं तणं वा, पत्तं वा, कट्ठं वा, सक्करं वा, जाइज्जा, जाइत्ता से त्त मायाए एगंत मवक्कमेज्जा, एगंत मवक्कमेत्ता अहे फ़ामथंडिलंसि वा, \*अट्ठि-रांसिसि वा, किट्ठ-रांसिसि वा, तुस-रांसिसि वा, गोमय-रांसिसि वा°, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि, पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय, तओ संजयामेव आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा; सल्लिहेज्ज वा, णिल्लिहेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा, उवट्ठेज्ज वा, आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ।

वियाल-परक्कम-पद

५२-से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—  
 गोणं वियालं पडिपहे<sup>१</sup> पेहाए,  
 महिसं वियालं पडिपहे पेहाए,  
 एवं—मणुस्सं, आसं, हत्थि<sup>२</sup>, सीहं, वग्घं, विगं, दीवियं,  
 अच्छं, तरच्छं, परिसरं, सियालं, विरालं, सुणयं, कोल-  
 सुणयं, कोकंतियं, चित्ताचित्तलडयं—  
 वियालं पडिपहे पेहाए,  
 सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा ।

विसमट्ठाण-परक्कम-पदं

५३-से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे—  
 अंतरा से ओवाओ वा, खाणू वा, कट्टे वा, घसी<sup>३</sup> वा,  
 भिलुगा वा, विसमे वा, विज्जले वा, परियावज्जेज्जा—

१-पडिपहे (अ, क, च) ।

२-हत्थी (अ, क, च, छ) ।

३-वसा (व) ।

सति परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा णो उज्जुयं गच्छेज्जा ।

कंटक-बोदिया-पदं

५४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलस्स दुवार-बाहं  
कंटक-बोदियाए परिपिहियं पेहाए, तेसिं पुव्वामेव उग्गहं  
अणुन्नविय अपडिलेहिय अपमज्जिय णो अवंगुणिज्ज वा,  
पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा ।

तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणुन्नविय, पडिलेहिय-पडिलेहिय,  
पमज्जिय-पमज्जिय, तओ संजयामेव अवंगुणिज्ज वा, पविसेज्ज  
वा, णिक्खमेज्ज वा ।

अणावायमसलाय-चिट्ठण-पद

५५-से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—  
समणं वा, माहणं वा, गामपिंडोलगं वा, अतिहिं वा  
पुव्वपविट्ठं पेहाए, णो तेसिं संलोए, सपडिदुवारे चिट्ठेज्जा ।

५६-‘केवली बूया आयाण मेयं—

पुरा पेहाए तस्सट्ठाए परो असणं वा ४ आहट्ठु दलएज्जा ।  
अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइन्ता, एस हेऊ, एस  
कारणं, एस उवएसो, जं णो तेसिं संलोए, सपडिदुवारे  
चिट्ठेज्जा’<sup>१</sup> ।

से त्त मायाए एगंत भवक्कमेज्जा, एगंत भवक्कमेत्ता  
अणावायमसंलोए चिट्ठेज्जा ।



परिमायण-संभुंजण-पदं

५७-से से<sup>१</sup> परो अणावायमसंलोए चिट्ठमाणस्स असणं वा ४

आहट्टु दलएज्जा, से यं<sup>२</sup> वदेज्जा—

आउसंतो समणा ! इमे भे असणे वा ४ सव्वजणाए निसिद्धे,  
तं भुंजह वा<sup>३</sup> णं परिभाएह वा णं ।

तं चेगइओ पडिगाहेत्ता तुसिणीओ उवेहेज्जा, अविद्याइं एवं  
मम मेव सिया, एवं<sup>४</sup> माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा ।  
से त्त मायाए तत्थ गच्छेज्जा, तत्थ गच्छेत्ता, से पुव्वामेव  
ओलोएज्जा—आउसंतो समणा ! इमे भे असणं वा ४  
सव्वजणाए णिसिद्धे, तं भुंजह वा णं, परिभाएह वा णं ।  
से णेवं<sup>५</sup> वदंतं परो वएज्जा—आउसंतो समणा ! तुमं चैव  
णं परिभाएहि ।

से तत्थ परिभाएमाणे णो अप्पणो खट्ठं-खट्ठं डायं-डायं ऊसटं-  
ऊसटं रसियं-रसियं मणुन्नं-मणुन्नं णिट्ठं-णिट्ठं लुक्खं-लुक्खं ।  
से तत्थ अमुच्छिए अगिद्धे अगिद्धिए अणज्झोववण्णे बहुसम  
मेव परिभाएज्जा ।

से णं परिभाएमाणं परो वएज्जा—आउसंतो समणा ! मा णं  
तुमं परिभाएहि, सव्वे वेगितिया भोक्खामो वा, पाहामो  
वा ।

से तत्थ भुंजमाणे णो अप्पणो खट्ठं-खट्ठं डायं-डायं ऊसटं-ऊसटं  
रसियं-रसियं मणुन्नं-मणुन्नं णिट्ठं-णिट्ठं लुक्खं-लुक्खं ।

१-X (घ) ।

२-एवं (घ) ।

३-व (अ, व) ।

४-X (अ, घ, च) ।

५-X एवं (घ) ।

से तत्थ अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्कोववण्णे बहुसम  
मेव भुंजेज्ज वा पीएज्ज वा ।

पुव्वपविट्ठसमणादि-उवाइक्कमण-पदं

५८—से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे<sup>०</sup> समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—  
समणं वा, माहणं वा, गाम-पिंडोलगं वा, अतिहिं वा  
पुव्वपविट्ठं पेहाए, णो ते उवाइक्कम्म पविसेज्ज वा,  
ओभासेज्ज वा ।

से त मायाए एगंत मवक्कमेज्जा, एगंत मवक्कमेत्ता  
अणावाय मसंलोए चिट्ठेज्जा ।

५९—अह पुणेवं जाणेज्जा—

पडिसेहिए व<sup>१</sup> दिन्ने वा, तओ तम्मि णियत्तिए ।

संजयामेव पविसेज्ज वा, ओभासेज्ज वा ॥

६०—एयं<sup>२</sup> खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं,  
\*जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—ति बेमि<sup>०</sup> ।

## छट्टो उद्देसो

भत्तठ-समुदितपाणाण उज्जुगमग-पद

६१—से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे<sup>०</sup> समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

रसेसिणो बहवे पाणा घासेसणाए संथडे सण्णिवइए पेहाए,

१-वा ( छ ) ।

२-एवं ( अ, क, छ, वृ ) ।

तं जहा—कुक्कुड-जाइयं वा, सूयर-जाइयं वा, अग्गपिंडंसि  
वा वायसा संथडा सण्णिवइया पेहाए—

सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, नो उज्जुयं गच्छेज्जा ।

गाहावइकुल-पविट्टस्स अकरणिज्ज-पद

६२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा \*गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे° समाणे—

नो गाहावइ-कुलस्स दुवार-साहं<sup>१</sup> अवलंबिय-अवलंबिय  
चिट्ठेज्जा,

नो गाहावइ-कुलस्स दगच्छड्डुणमत्ताए चिट्ठेज्जा,

नो गाहावइ-कुलस्स चंदणिउयए चिट्ठेज्जा,

नो गाहावइ-कुलस्स सिणाणस्स वा, वच्चस्स वा, संलोए  
सपडिदुवारे चिट्ठेज्जा,

नो गाहावइ-कुलस्स आलोयं वा, थिग्गलं वा, संघि वा,  
दग-भवणं वा बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय, अंगुलियाए वा

उद्दिसिय-उद्दिसिय, ओणमिय-ओणमिय, उण्णमिय-उण्णमिय  
णिज्झाएज्जा,

नो गाहावइं अंगुलियाए उद्दिसिय-उद्दिसिय जाएज्जा,

नो गाहावइं अंगुलियाए चालिय-चालिय जाएज्जा,

नो गाहावइं अंगुलियाए तज्जिय-तज्जिय जाएज्जा,

नो गाहावइं अंगुलियाए उक्खलुंपिय<sup>२</sup>-उक्खलुंपिय जाएज्जा,

नो गाहावइं वंदिय-वंदिय जाएज्जा,

‘नो व णं’<sup>३</sup> फरुसं वएज्जा ।

१-दुवार सामगिय (अ); दुवारवाह (क, च, चू); वास्साह (व) ।

२-चाउगुलंपिय २ (अ); उक्खलपिय २ (क, च); उक्खुलविय २ (घ, ङ) ।

३-नो चेवण (अ); नो वयणं (च, छ, ब) ।

पुरेकम्म-आदि-पद

६३-अह तत्थ कंचि<sup>१</sup> भुंजमाणं पेहाए, तं जहा—गाहावइ<sup>२</sup> वा,  
 \*गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणिं वा, गाहावइ-पुत्तं  
 वा, गाहावइ-धूयं वा, सुण्हं वा, धाइं वा, दासं वा, दासि  
 वा, कम्मकरं वा,<sup>०</sup> कम्मकरि वा,

से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति  
 वा दाहिसि मे एत्तो अन्नयरं भोयणजायं?

से सेवं वयतस्स परो हत्थं वा, मत्तं वा, दब्बि वा, भायणं  
 वा, सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा,  
 उच्छोलेज्ज वा, पहोएज्ज वा ।

से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति  
 वा, मा एयं तुमं हत्थं वा, मत्तं वा, दब्बि वा, भायणं वा,  
 सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा, उच्छोलेहि  
 वा, पहोएहि वा,

अभिकंखसि मे दाउं? एमेव दलयाहि ।

से सेवं वयंतस्स परो हत्थं वा, मत्तं वा, दब्बि वा, भायणं  
 वा, सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा,  
 उच्छोलेत्ता पहोइत्ता आहट्टु दलएज्जा—

तहप्पगारेण पुरेकम्मकएण हत्थेण वा, मत्तेण वा, दब्बीए  
 वा, भायणेण वा, असणं वा ४ अफासुयं अणेसणिज्जं \*त्ति  
 मण्णमाणे लाभे संते<sup>०</sup> णो पडिगाहेज्जा ।

१-किंचि ( क, घ, छ ) ।

२-गाहावइय ( च, छ ) ।

६४—अहं पुण एवञ्जं जाणेज्जा—

णो पुरेकम्मकएण, उदउल्लेण । तहप्पगारेण उदउल्लेण हत्थेण वा, मत्तेण वा, दब्बीए वा, भायणेण वा, असणं वा ४ अफासुयं \*अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा ।

६५—अहं पुण एवञ्जं जाणेज्जा—

णो उदउल्लेण, ससिणिद्धेण । \*तहप्पगारेण ससिणिद्धेण हत्थेण वा (१।६४) ।

६६—अहं पुण एवञ्जं जाणेज्जा—

णो ससिणिद्धेण, ससरक्खेण । तहप्पगारेण ससरक्खेण हत्थेण वा (१।६४) ।

६७—अहं पुण एवञ्जं जाणेज्जा—

णो ससरक्खेण, मट्ठिया-संसट्ठेण । तहप्पगारेण मट्ठिया-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

६८—अहं पुण एवञ्जं जाणेज्जा—

णो मट्ठिया-संसट्ठेण, ऊस-संसट्ठेण । तहप्पगारेण ऊस-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

६९—अहं पुण एवञ्जं जाणेज्जा—

णो ऊस-संसट्ठेण, हरियाल-संसट्ठेण । तहप्पगारेण हरियाल-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

७०—अहं पुण एवञ्जं जाणेज्जा—

णो हरियाल-संसट्ठेण, हिंगुलय-संसट्ठेण । तहप्पगारेण हिंगुलय-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

७१-अह पुण एवं जाणेज्जा-

णो हिंगुलय-संसट्ठेण, मणोसिला-संसट्ठेण । तहप्पगारेण  
मणोसिला-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

७२-अह पुण एवं जाणेज्जा-

णो मणोसिला-संसट्ठेण, अंजण-संसट्ठेण । तहप्पगारेण  
अंजण-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

७३-अह पुण एवं जाणेज्जा-

णो अंजण-संसट्ठेण, लोण-संसट्ठेण । तहप्पगारेण लोण-  
संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

७४-अह पुण एवं जाणेज्जा-

णो लोण-संसट्ठेण, गेरुय-संसट्ठेण । तहप्पगारेण गेरुय-  
संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

७५-अह पुण एवं जाणेज्जा-

णो गेरुय-संसट्ठेण, वणिग्या-संसट्ठेण । तहप्पगारेण  
वणिग्या-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

७६-अह पुण एवं जाणेज्जा-

णो वणिग्या-संसट्ठेण, सेडिया-संसट्ठेण । तहप्पगारेण  
सेडिया<sup>१</sup>-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

७७-अह पुण एवं जाणेज्जा-

णो सेडिया-संसट्ठेण, सोरट्टिया-संसट्ठेण । तहप्पगारेण  
सोरट्टिया-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

७८-अह पुण एवं जाणेज्जा-

णो सोरट्टिया-संसट्ठेण, पिट्ठ-संसट्ठेण । तहप्पगारेण पिट्ठ-  
संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

७९-अह पुण एवं जाणेज्जा-

णो पिट्ठ-संसट्ठेण, कुक्कस-संसट्ठेण । तहप्पगारेण कुक्कस-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

८०-अह पुण एवं जाणेज्जा-

णो कुक्कस-संसट्ठेण, उक्कुट्ट<sup>१</sup>-संसट्ठेण । तहप्पगारेण उक्कुट्ट-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।<sup>०</sup>

८१-अह पुण एवं जाणेज्जा-

णो असंसट्ठे, संसट्ठे । तहप्पगारेण संसट्ठेण हत्थेण वा, मत्तेण वा, दब्बीए वा, भायणेण वा, असणं वा ४ फासुयं  
• ग्सणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते<sup>०</sup> पडिगाहेज्जा<sup>२</sup> ।

पिहुय-आदि-कोट्टण-पदं

८२-से भिक्खू वा • भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे,<sup>०</sup> सेज्जं पुण जाणेज्जा-

पिहुयं वा, वहुरयं वा, • भज्जियं वा, मंथुं वा, चाउलं वा,<sup>०</sup> चाउलपलंबं वा,

अस्संजए भिक्खु-पडियाए चित्तमंताए सिलाए, • चित्तमंताए लेलुए, कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए, सअंडे सपाणे सवीए सहुरिए सउसे सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मट्ठिय-<sup>०</sup> मक्कडा-संताणाए कोट्ठेंसु वा, कोट्ठित्ति वा, कोट्ठिस्संति वा, उप्पणिंसु<sup>३</sup> वा, उप्पणिंति वा, उप्पणिस्संति वा-

१-उक्कुट्टा ( क ) ।

२-अह पुणवं जाणेज्जा असंसट्ठे तहप्पगारेण संसट्ठेण हत्थेण वा ४ असणं वा ४ फासुयं जाव पडिगाहेज्जा ( छ ) प्रतौ एतत् सूत्रमधिकमस्ति ।

३-उप्फ<sup>०</sup> ( अ क, च ) ।

तहप्पगारं पिहुयं वा [जाव] चाउलपलंबं वा-अफासुयं  
 \*अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा ।

लोण-पदं

८३-से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए  
 अणुपविट्ठे० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा-  
 विलं वा लोणं, उब्भियं वा लोणं,  
 अस्संजए भिक्खु-पडियाए चित्तमंताए सिलाए, \*चित्तमंताए  
 लेलुए, कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए, सअंडे सपाणे  
 सबीए सह्रिए सउसे सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मट्ठिय-  
 मक्कडा-० संताणाए भिंदिसु वा, भिदंति वा, भिदिस्संति  
 वा, रुचिसु वा, रुचिति वा, रुचिस्संति वा-  
 विलं वा लोण, उब्भियं वा लोणं-अफासुयं \*अणेसणिज्जं  
 ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा ।

अगणि-णिक्खित्त-पदं

८४-से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए  
 अणुपविट्ठे० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा-  
 असणं वा ४ अगणि-णिक्खित्त,  
 तहप्पगारं असण वा ४ अफासुयं \*अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे०  
 लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

८५-केवली बूया आयाण मेयं-

अस्संजए<sup>१</sup> भिक्खु-पडियाए उस्सिचमाणे वा, निस्सिचमाणे  
 वा, आमज्जमाणे वा, पमज्जमाणे वा, ओयारेमाणे वा,  
 उव्वत्तमाणे<sup>२</sup> वा, अगणिजीवे हिंसेज्जा ।

१-असजए ( छ ) ।

२-ओयत्तेमाणे ( अ, क ) ; पवत्तेमाणे ( छ ) ।



अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं,  
एसुवएसे—

तं तहप्पगारं असणं वा ४ अगणि-णिक्खित्तं—अफासुयं  
अणेसणिज्जं \*ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

८६—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं  
सव्वट्ठेहि समिए सहिए सया जए ।

—ति वेमि ।

### सत्तमो उद्देशो

मालोहड-पदं

८७—से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ खघंसि वा, थंभंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा,  
पासायंसि वा, हम्मियतलंसि वा, अन्नयरंसि वा तहप्पगारसि  
अंतलिक्खजायंसि उवणिक्खित्ते सिया—

तहप्पगारं मालोहडं असणं वा ४ अफासुय \*अणेसणिज्जं ति  
मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।

८८—केवली बूया आयाण मेयं—

अस्संजए भिक्खु-पडियाए पीढं वा, फलगं वा, णिस्सेणि वा,  
उदूहलं वा, अवहट्ठु उस्सविय आरुहेज्जा<sup>१</sup> ।

से तत्थ दुरुहमाणे<sup>२</sup> पयलेज्ज वा, पवडेज्ज वा,

१-दुहेज्जा (अ, ब); दूहिज्जा (घ), दुरुहेज्जा (च) ।

२-दूहमाणे (ब) ।

से तत्थ पयलमाणे वा, पवडमाणे वा, हत्थं वा, पायं वा, बाहुं<sup>१</sup> वा, ऊरुं वा, उदरं वा, सीसं वा, अण्णयरं वा कायंसि इंदिय-जायं लूसेज्ज वा, पाणाणि वा, भूयाणि वा, जीवाणि वा, सत्ताणि वा, अभिहणेज्ज वा, वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज वा, संघसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा, किलामेज्ज वा, ठाणाओ ठाणं संकामेज्ज वा—

तं तहप्पगारं मालोहडं असणं वा४ \*अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे<sup>०</sup> लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

८९—से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा गाहावड्-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे<sup>०</sup> समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा४ कोट्टियाओ वा, कोलज्जाओ<sup>२</sup> वा, अस्संजए भिक्खु-पडियाए उक्कुज्जिय, अवउज्जिय, ओहरिय, आहट्टु दलएज्जा—

तहप्पगारं असणं वा४ मालोहडं<sup>३</sup> ति णच्चा लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

मट्ठिओलित्त-पद

९०—से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा गाहावड्-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे<sup>०</sup> समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा४ मट्ठिओलित्तं<sup>४</sup>,

तहप्पगारं असणं वा४ \*अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे<sup>०</sup> लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

१—बाहुं ( अ, क, घ, ब ) ।

२—कोलेज्जाओ ( क, च ) ; कोलिज्जाओ ( घ ) ।

३—माला<sup>०</sup> ( छ ) ।

४—<sup>०</sup> ओवलित्तं ( घ, छ ) ।

९१—केवली ब्रूया आयाण मेयं—

अस्संजए भिक्खु-पडियाए मट्ठिओलित्तं असणं वा४  
उब्भिदमाणे पुढवीकायं समारंभेज्जा,  
तह तेऊ-वाऊ-वणस्सइ-तस कायं समारंभेज्जा,  
पुणरवि ओलिंपमाणे पच्छाकम्मं करेज्जा ।  
अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा \*एस पइण्णा, एस हेऊ, एस  
कारणं, एसुवएसे०,  
जं तहप्पगारं मट्ठिओलित्तं असणं वा४ \*अफासुयं  
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे० लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

पुढविकाय-पइट्ठिय-पदं

९२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा \*गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए  
अणु-०पविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा४  
पुढविकाय-पइट्ठियं तहप्पगारं असणं वा४ \*पुढविकाय-  
पइट्ठियं०—अफासुयं \*अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते०  
णो पडिगाहेज्जा ।

आउकाय-पइट्ठिय-पदं

९३—\*से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—  
असणं वा४ आउकाय-पइट्ठियं—  
तहप्पगारं असणं वा४ आउकाय-पइट्ठियं—अफासुयं  
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

अगणिकाय-पइट्ठिय-पदं

९४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-  
पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—  
असणं वा४ अगणिकाय-पइट्ठियं—

तहप्पगारं असणं वा ४ अगणिकाय-पइट्ठियं—अफासुयं  
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।<sup>०</sup>

९५—केवली बूया आयाण मेयं—

अस्संजए भिक्खु-पडियाए अगणि ओसक्किय<sup>१</sup>, णिस्सक्किय<sup>२</sup>,  
ओहरिय, आहट्टु दलएज्जा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा \*एस पइण्णा, एस हेऊ, एस  
कारणं, एसुवएसे.

जं तहप्पगारं असणं वा ४ अगणिकाय-पइट्ठियं—अफासुयं  
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते<sup>०</sup> णो पडिगाहेज्जा ।

अच्चुसिण-वीयण-पदं

९६—से भिक्खू वा भिक्खुणो वा \*गाहावइ-कुलं पिडवाय-  
पडियाए अणुपविट्ठे<sup>०</sup> समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ अच्चुसिणं,

अस्संजए भिक्खु-पडियाए सूवेण<sup>३</sup> वा, विहुवणेण<sup>४</sup> वा,  
तालियटेण वा, 'पत्तेण वा'<sup>५</sup>, साहाए वा, साहा-भंगेण वा,  
पिहुणेण वा, पिहुण-हत्थेण वा, चेलेण वा, चेलकन्तेण वा,  
हत्थेण वा, मुहेण वा फुमेज्ज वा, वीएज्ज वा ।

से पुव्वामेव आलोएज्जा आउसो! ति वा, भगिणि! ति  
वा मा एयं तुमं असणं वा ४ अच्चुसिणं सूवेण वा, विहुवणेण  
वा, तालियटेण वा, पत्तेण वा, साहाए वा, साहाभंगेण वा,  
पिहुणेण वा, पिहुण-हत्थेण वा, चेलेण वा, चेलकन्तेण वा,

१—उस्सक्किय ( क, घ, च ) ; उस्सिक्किय ( छ ) ; ओसिक्किय ( अ ) ।

२—णिस्सिक्किय ( अ, छ, व ) ।

३—सुप्पेण ( अ, च ) ।

४—विहुयणेण ( अ, क, घ, च ) ।

५—X ( घ, वृ ) ।

१०२-से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-  
पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण पाणग-जायं<sup>१</sup>  
जाणेज्जा—

अणंतरहियाए पुढवीए \*ससिणिद्धाए पुढवीए, ससरक्खाए  
पुढवीए, चित्तमंताए सिलाए, चित्तमंताए लेल्लुए,  
कोलावासंसि वा दाए जीवपइड्डिए, सअंडे सपाणे सबीए  
सहरिए सउसे सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-°  
संताणए ओद्धट्टु<sup>२</sup> निक्खित्ते सिया ।

असंजए भिक्खु-पडियाए उदउल्लेण वा, ससिणिद्धेण वा,  
सकसाएण वा, मत्तेण वा, सीओदएण वा संभोएत्ता आहट्टु  
दलएज्जा—

तहप्पगारं पाणग-जायं-अफासुयं \*अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे°  
लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

१०३-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामगियं, \*जं  
सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—ति वेमि ।°

### अट्ठमो उद्देशो

१०४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा \*गाहावइ-कुलं पिडवाय-  
पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण पाणग-जायं  
जाणेज्जा—

१-पाणगं ( वु, वु, च ) ।

२-ओहट्ट ( क ) ।

तं जहा-अंब-पाणगं वा, अंबाडग-पाणगं वा, कविट्ट-पाणगं वा, मातुलिंग<sup>१</sup>-पाणगं वा, मुद्धिया-पाणगं वा, दाडिम-पाणगं वा, खज्जूर-पाणगं वा, णालिएर-पाणगं वा, करीर-पाणगं वा, कोल-पाणगं वा, आमलग-पाणगं वा, चिंचा-पाणगं वा—अण्णयरं वा तहप्पगारं पाणग-जायं सअट्ठियं सकणुयं सबीयगं अस्संजए<sup>२</sup> भिक्खु-पडियाए छब्बेण<sup>३</sup> वा, दूसेण<sup>४</sup> वा, वालगेण वा, आवीलियाण वा, परिपीलियाण वा, परिस्सावियाण<sup>५</sup> आहट्टु दलएज्जा—  
तहप्पगारं<sup>६</sup> पाणग-जायं—अफासुयं \*अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे<sup>७</sup> लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

गध-आघायण-पदं

१०५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा \*गाहावड्-कुलं पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे<sup>८</sup> समाणे,  
से आगतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावड्-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा—अन्न-गंधाणि वा, पाण-गंधाणि वा, सुरभि-गंधाणि वा, अग्घाय<sup>९</sup>-अग्घाय—से तत्थ आसाय-पडियाए मुच्छिए गिद्धे गट्ठिए अज्झोववन्ने अहोगंधो-अहोगंधो णो गंध माघाएज्जा ।

१—मातुलुग ( अ, घ ), मातुलेग ( क ), मातुलग ( च ) ।

२—असजए ( क, च ) ।

३—छप्पेण ( अ, च ) ; छट्ठेण ( घ ) ।

४—दूयेण ( छ ) ।

५—परिसाडियाण ( क, छ, ब ), परिसावियाण ( घ ) ।

६—आहट्टगारं ( घ ) ।

७—आघाय ( अ, क, च ) ।

सालुय-आदि-पदं

१०६-से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-  
पडियाए अणुपविट्ठे<sup>०</sup> समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—  
सालुयं वा, विरालियं वा, सासवणालियं वा—  
अण्णतरं वा तहप्पगारं आमगं असत्थ-परिणयं—अफासुयं  
\*अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे<sup>०</sup> लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

पिप्पलि-आदि-पदं

१०७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा \*गाहावइ-कुलं पिंडवाय-  
पडियाए अणुपविट्ठे<sup>०</sup> समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—  
पिप्पलि<sup>१</sup> वा, पिप्पलि-चुण्णं वा, मिरियं वा, मिरिय-चुण्णं  
वा, सिगबेरं वा, सिगबेर-चुण्णं वा—  
अण्णतरं वा तहप्पगारं आमगं असत्थ-परिणयं—अफासुयं  
\*अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे संते<sup>०</sup> णो पडिगाहेज्जा ।

पलब-जाय-पदं

१०८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा \*गाहावइ-कुलं पिंडवाय-  
पडियाए अणुपविट्ठे<sup>०</sup> समाणे, सेज्जं पुण पलंब<sup>२</sup>-जायं  
जाणेज्जा—  
तं जहा—अंब-पलंबं वा, अंबाडग-पलंबं वा, ताल-पलंबं वा,  
फिज्जिफरि<sup>३</sup>-पलंबं वा, सुरभि<sup>४</sup>-पलंबं वा, सल्लइ-पलंबं वा—  
अन्नयरं वा तहप्पगारं पलंब-जायं आमगं असत्थ-परिणयं—  
अफासुयं अणेसणिज्जं \*ति मन्नमाणे<sup>०</sup> लाभे संते णो  
पडिगाहेज्जा ।

१—पिप्पलि ( छ ) ।

२—पलबग ( ब ) ।

३—फिल्लिर ( अ ), फिज्जिफर ( घ, छ ) ।

४—सुरधु ( छ ) ।

पवाल-जाय-पदं

१०९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा \*गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे<sup>१</sup> समाणे, सेज्जं पुण पवाल-जायं जाणेज्जा—  
तं जहा—आसोत्थ<sup>२</sup>-पवालं वा, णग्गोह<sup>३</sup>-पवालं वा, पिलुंखु-  
पवालं वा, णीपूर<sup>३</sup>-पवालं वा, सल्लइ-पवालं वा—  
अन्नयरं वा तहप्पगारं पवाल-जायं आमगं असत्थ-परिणयं-  
अफासुयं अणेसणिज्जं \*ति मन्नमाणे लाभे संते<sup>४</sup> णो  
पडिगाहेज्जा ।

सरडुय-जाय-पदं

११०-से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे<sup>१</sup> समाणे, सेज्जं पुण सरडुय-जायं जाणेज्जा—  
तं जहा—अंब-सरडुयं वा, अंबाडग-सरडुयं वा, कविट्ठ-  
सरडुयं वा, दाडिम-सरडुयं वा, विल्ल<sup>४</sup>-सरडुयं वा—  
अण्णयरं वा तहप्पगारं सरडुय-जायं आमगं असत्थ-परिणयं-  
अफासुयं \*अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो<sup>५</sup>  
पडिगाहेज्जा ।

मंथु-जाय-पदं

१११-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा \*गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे<sup>१</sup> समाणे, सेज्जं पुण मंथु-जायं जाणेज्जा—  
तं जहा—उंबर-मंथुं वा, णग्गोह-मंथुं वा, पिलुंखु<sup>६</sup>-मंथुं वा,  
आसोत्थ-मंथुं वा—

१-आसोदु ( क, घ ) ; आसत्थ ( छ ) ।

२-णिग्गोह ( छ ) ।

३-णीपूर ( अ, घ, छ, ब ) ।

४-फिल्ल ( क ) ; पिल्ल ( घ ) ।

५-वा पिप्पल्लि ( च ) ।

६-पिलक्खु ( क, च ) ।



अण्णयरं वा तहप्पगारं मंथु-जायं आमयं दुक्कं साणुबोयं—  
अफासुयं \*अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो  
पडिगाहेज्जा ।

आमडाग-आदि-पदं

११२-से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—  
आमडागं वा, पूइपिण्णागं वा, महं वा, 'मज्जं वा', सप्पि  
वा, खोलं वा पुराणगं ।

एत्थ पाणा अणुप्पसूया, एत्थ पाणा जाया, एत्थ पाणा  
संवुड्ढा, एत्थ पाणा अवुक्कंता°, एत्थ पाणा अपरिणया,  
एत्थ पाणा अविद्धत्था°—अफासुयं अणेसणिज्जं ति  
मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

उच्छु-मेरग-आदि-पदं

११३-से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—  
उच्छु-मेरगं वा, अंक-करेलुयं वा, कसेरुगं वा, सिंघाडगं वा,  
पूति आलगं वा—

अन्तयरं वा तहप्पगारं आमगं असत्थ-परिणयं—\*अफासुयं  
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।

उप्पल-आदि-पदं

११४-से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

१—× ( च ) ।

२—वक्कंता ( क, छ ) ; ऽवक्कंता ( च ) ; वुक्कंता ( व ) ।

३—णो विद्धत्था ( घ, छ ) ।

उप्पलं वा, उप्पल-नालं वा, भिसं वा, भिस-मुणालं वा,  
पोक्खलं वा, पोक्खल-विभंगं<sup>१</sup> वा—

अण्णतरं वा तहप्पगारं \*आमगं असत्थ-परिणयं—अफासुयं  
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते<sup>०</sup> णो पडिगाहेज्जा ।

अगवीय-आदि-पदं

११५-से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे<sup>०</sup> समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

अग-बीयाणि वा, मूल-बीयाणि वा, खंध-बीयाणि वा, पोर-  
बीयाणि वा,

अग-जायाणि वा, मूल-जायाणि वा, खंध-जायाणि वा,  
पोर-जायाणि वा,

णणत्थ तक्कलि-मत्थएण वा, तक्कलि-सीसेण वा,  
णालिएरि<sup>२</sup>-मत्थएण वा, खज्जूरि<sup>३</sup>-मत्थएण वा, ताल-  
मत्थएण वा—

अन्नयरं वा तहप्पगारं आमं असत्थ-परिणयं—\*अफासुयं  
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते<sup>०</sup> णो पडिगाहेज्जा ।

उच्छु-पदं

११६-से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे<sup>०</sup> समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

उच्छुं वा काणगं<sup>४</sup> अंगारिय संमिस्सं विगदूमियं<sup>५</sup>, वेत्तगं<sup>६</sup>  
वा, कंदलीऊसुयं<sup>७</sup> वा—

१—<sup>०</sup>-विभाग ( क, च ) ।

२—णालिएर ( अ, च, ब ) ।

३—खज्जूर ( ब ) ।

४—काणं ( घ, ब ) ।

५—वड्ढमियं ( अ ) ; विगदूमियं ( घ, ब ) . विविदूमियं ( छ ) ।

६—वेत्तगं ( अ ) , वित्तज्जगं ( घ ) , वेत्तागं ( छ ) ।

७—<sup>०</sup> उस्सुगं ( चु ) ; <sup>०</sup> ऊसिगं ( छ ) ; चूणौ अन्येपि शब्दा इत्यन्ते—कलतो सिम्बा-  
कलो चणगो, ओलो सिंगा तस्स चैव, एव मुग्ग मासाणावि ।

अण्णयरं वा तहप्पगारं आमं असत्थ-परिणयं •—अफासुं  
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।

लसुण-पद

११७—से भिक्खू वा •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

लसुणं वा, लसुण-पत्तं वा, लसुण-नालं वा, लसुण-कंदं वा,  
लसुण-चोयगं<sup>१</sup> वा—

अण्णयरं वा तहप्पगारं आमं असत्थ-परिणयं—अफासुयं  
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

अत्थिय-आदि-पदं

११८—से भिक्खू वा •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

अत्थियं<sup>२</sup> वा, कुंभिपक्कं तिदुगं वा, वेलुयं<sup>३</sup> वा, कासव-  
णालियं वा—

अण्णतरं वा तहप्पगारं आमं असत्थ-परिणयं—अफासुयं  
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

कण-आदि-पद

११९—से भिक्खू वा •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

कणं वा, कण-कुंडगं वा, कणं-पूयलियं वा, चाउलं वा,  
चाउल-पिट्ठं वा, तिलं वा, तिल-पिट्ठं वा, तिल-पप्पडगं वा—

१-° -चोय ( क, घ, च, छ, ब ) ।

२-अच्छिय ( च ) ।

३-पेल्लुयं ( क ) ; पल्लुगं ( च ) ।

४-° -पूयलिं ( क, च, छ, ब ) ।

अन्नतरं वा तहप्पगारं आमं असत्थ-परिणयं—<sup>१</sup>अफासुयं  
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते<sup>०</sup> णो पडिगाहेज्जा ।

१२०—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं,  
<sup>२</sup>जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सयाजए ।

—ति वेमि ।<sup>०</sup>

### नवमो उद्देशो

पच्छाकम्म-पद

१२१—इह खलु पाईणं वा, पडोणं वा, दाहिणं वा, उदीणं वा  
संतेगइया सड्ढा भवन्ति—

गाहावई वा, <sup>३</sup>गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा,  
गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा,  
दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा,<sup>०</sup> कम्मकरीओ  
वा ।

तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ—जे इमे भवंति समणा  
भगवन्तो सीलमंता वयमंता गुणमंता संजया संवुडा वंभचारी  
उवरया मेहुणाओ धम्माओ,

णो खलु एएहिं कप्पइ आहाकम्मिए असणे<sup>१</sup> वा ४ भोत्तए  
वा, पायत्तए<sup>२</sup> वा ।

सेज्जं पुण इमं अम्हं अप्पणो अट्ठाए<sup>३</sup> णिट्ठियं, तं जहा-  
असणं वा ४ सव्वमेयं समणाणं णिसिरामो, अवियाइं वटं  
पच्छा वि अप्पणो अट्ठाए असणं ४ चेइस्सामो ।

१-असण ( क ) ।

२-पात्तए ( क ), पायए ( च ); पाएत्तए ( घ ) ।

३-सयट्ठाए ( अ, क, च ) ।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म, तहप्पगारं असणं वा ४  
अफासुयं अणेसणिज्जं \*ति मण्णमाणे<sup>०</sup> लाभे संते णो  
पडिगाहेज्जा ।

पुरापच्छासंथुय-कुल-पदं

१२२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा 'समाणे वा, वसमाणे वा'<sup>१</sup>,  
गामाणुगामं वा दूइज्जमाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—  
गामं वा, \*णगरं वा, खेडं वा, कव्वडं वा, मडंबं वा, पट्टणं  
वा, आगरं वा, दोणमुहं वा, णिगमं वा, आसमं वा,  
सण्णिवेसं वा,<sup>०</sup> रायहाणि वा ।

इमंसि खलु गामंसि वा, \*णगरंसि वा, खेडंसि वा कव्वडंसि  
वा, मडंबंसि वा, पट्टणंसि वा, आगरंसि वा, दोणमुहंसि  
वा, णिगमंसि वा, आसमंसि वा, सण्णिवेसंसि वा,<sup>०</sup>  
रायहाणिसि वा—सतेगइयस्स भिक्खुस्स पुरेसंथुया<sup>२</sup> वा,  
पच्छासंथुया वा परिवसंति, तं जहा—

गाहावई वा, \*गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा,  
गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा,  
दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा,<sup>०</sup> कम्मकरोओ वा ।

तहप्पगाराइं कुलाइं णो पुव्वामेव भत्ताए वा, पाणाए वा  
णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।

१२३-केवली बूया—आयाण मेयं । पुरा पेहाए तस्स परो अट्टाए  
असणं वा ४ उवकरेज्ज वा, उवक्खडेज्ज वा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा \*एस पइण्णा, एस हेऊ, एस  
कारणं, एस उवएसो—<sup>०</sup>

१-समाणे वसमाणे वा ( क, च, ब ) ; समाणे ( घ, छ ) ।

२-पुव्व<sup>०</sup> ( ब ) ।

जं णो तहप्पगाराइं कुलाइं पुव्वामेव भत्ताए वा, पाणाए वा पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा ।

से त्तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता अणावायम-संलोए चिट्ठेज्जा ।

से तत्थ कालेणं अणुपविसेज्जा, रत्ता तत्थियरेयरेहि कुलेहिं सामुदाणिं<sup>१</sup>, एसियं, वेसियं, पिंडवायं, एसित्ता आहारं आहारेज्जा ।

सिया से परो कालेण अणुपविट्ठस्स आहाकम्मियं असणं वा ४ उवकरेज्ज वा, उवक्खडेज्ज वा ।

तं चेगइओ तुसिणीओ उवेहेज्जा, आहडमेव पच्चा-इक्खिस्सामि । माइट्ठाणं संफासे । णो एवं करेज्जा ।

से पुव्वामेव आलोएज्जा-आउसो ! त्ति वा, भगिणि ! त्ति वा, णो खलु मे कप्पइ आहाकम्मियं असणं वा ४ भोत्तए वा, पायए वा । मा उवकरेहि, मा उवक्खडेहि ।

से सेवं वयंतस्स परो आहाकम्मियं असणं वा ४ उवक्खडेत्ता आहट्ठ दलएज्जा ।

तहप्पगारं असणं वा ४ अफासुयं \*अणेसणिज्ज त्ति मण्णमाणे<sup>२</sup> लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

नन्तत्थ-गिलाणाए-पदं

१ २४-से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे<sup>३</sup> समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा-

मंसं वा, मच्छं वा भज्जिज्जमाणं<sup>१</sup> पेहाए, तेव्वपूयं वा  
 आएसाए उवक्खडिज्जमाणं पेहाए, णो खद्धं-खद्धं उवसंक-  
 मित्तु ओभासेज्जा,  
 णन्नत्थ गिलाणाए<sup>२</sup> ।

माइट्ठाण-पदं .

१२५-से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए  
 अणुपविट्ठे<sup>३</sup> समाणे, अण्णतरं भोयण-जायं पडिगाहेत्ता सुब्भि-  
 सुब्भि भोच्चा दुब्भि-दुब्भि परिट्ठवेइ ।

माइट्ठाणं<sup>३</sup> संफासे । णो एवं करेज्जा ।

सुब्भि वा दुब्भि वा, सच्चं भुंजे न छड्डए ॥

१२६-से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए  
 अणुपविट्ठे<sup>३</sup> समाणे, अण्णतरं वा पाणग-जायं पडिगाहेत्ता  
 पुप्फं-पुप्फं आविइत्ता<sup>४</sup> कसायं-कसायं परिट्ठवेइ ।

माइट्ठाणं संफासे । णो एवं करेज्जा ।

पुप्फं-पुप्फेति वा, कसायं कसाए त्ति वा-सव्वसेयं भुंजेज्जा,  
 णो किञ्चि वि परिट्ठवेज्जा ।

१२७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुपरियावणं भोयण-जायं  
 पडिगाहेत्ता<sup>५</sup> साहम्मिया तत्थ वसंति संभोइया समणुण्णा  
 अपरिहारिया अदूरगया । तेसिं अणालोइया<sup>६</sup> अणामंतिया<sup>७</sup>  
 परिट्ठवेइ ।

१-भज्जमाण (अ) ; भज्जमानमिति (वृ) ।

२-गिलाणीए (अ, क, च) ; गिलाणणीसाए (छ) ।

३-सात्ति<sup>०</sup> (ब) ।

४-आवेइत्ता (च) ; आवीइत्ता (छ) ।

५-पडिगाहेत्ता बहवे (अ, छ, ब) ।

६-<sup>०</sup> इय (च, छ) ।

७-<sup>०</sup> मंते (घ) ।

माइट्टाणं संपासे । णो एवं करेज्जा ।

से त मायाए तत्थ गच्छेज्जा, गच्छेत्ता, से पुब्बामेव  
आलोएज्जा—आउसंतो ! समणा ! इमे मे असणे<sup>१</sup> वा ४  
बहुपरियावण्णे, तं भुंजह णं ।

से सेवं वयंतं परो वएज्जा—आउसंतो ! समणा ! आहारमेयं  
असणं वा ४ जावइयं-जावइयं परिसडइ<sup>३</sup>, तावइयं-तावइयं  
भोक्खामो वा, पाहामो वा ।

सव्वमेयं परिसडइ<sup>४</sup>, सव्वमेयं भोक्खामो वा, पाहामो वा ।

बहियानीहड-पदं

१२८—से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे समाणे<sup>०</sup>, सेज्जं पुण जाणेज्जा—  
असणं वा ४ परं समुद्दिस्स बहिया णीहडं, जं<sup>२</sup> परेहिं  
असमणुन्नायं अणिसिद्धं-अफासुयं \*अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे  
लाभे संते<sup>०</sup> णो पडिगाहेज्जा,  
जं<sup>३</sup> परेहिं समणुन्नायं सम्मं<sup>०</sup> णिसिद्धं-फासुयं \*एसणिज्जं ति  
मण्णमाणे<sup>०</sup> लाभे संते पडिगाहेज्जा ।

१२९—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं,  
\*जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सयाजए ।

—ति वेमि ।<sup>०</sup>

१—असणं ( क ) ।

२—व ण ( अ, ब ) ।

३—<sup>०</sup> सरइ ( घ, च, छ ) ।

४—<sup>०</sup> सरइ ( घ, च ) ।

५, ६—तं ( अ, क, घ, च ) ।

७—सम ( अ, क, घ, ब ) ।



## दसमो उद्देशो

माइट्ठाण-पदं

१३०—से एगइओ साहारणं वा पिंडवायं पडिगाहेत्ता, ते साहम्मिए अणापुच्छित्ता जस्स-जस्स इच्छइ तस्स-तस्स खद्धं-खद्धं दलाति<sup>१</sup> ।

माइट्ठाणं संफासे । णो एवं करेज्जा ।

से त्त मायाए तत्थ गच्छेज्जा, गच्छेत्ता<sup>२</sup> वएज्जा<sup>३</sup>—आउसंतो ! समणा ! संति मम पुरे-संथुया वा, पच्छा-संथुया वा, तं जहा—

आयरिए वा, उवज्झाए वा, पवत्ती वा, थेरे वा, गणी वा, गणहरे वा, गणावच्छेइए वा । अवियाइं एएसिं खद्धं-खद्धं दाहामि ।

‘से णेवं वयंतं’<sup>४</sup> परो वएज्जा—कामं खलु आउसो ! अहापज्जतं णिसिराहि<sup>५</sup> ।

जावइयं-जावइयं परो वयइ, तावइयं-तावइयं णिसिरेज्जा । सव्वमेयं परो वयइ, सव्वमेयं णिसिरेज्जा ॥

१३१—से एगइओ मणुन्नं भोयण-जायं पडिगाहेत्ता पंतेण भोयणेण<sup>६</sup> पलिच्छाएति—मामेयं दाइयं संतं, दट्ठूणं सयमायए ।

आयरिए वा, उवज्झाए वा, पवत्ती वा, थेरे वा, गणी

१—दलयति ( अ ) ।

२—गच्छेत्ता पुव्वामेव ( अ, छ, व ) ।

३—आलोएज्जा ( व ) ।

४—सेवं ( घ ) ।

५—णिसिराहि ( अ, छ ) ।

६—भोयणे जाईण ( घ ) ।

वा, गणहरे वा,<sup>०</sup> गणावच्छेइए वा । णो खलु मे कस्सइ  
किंचि वि दायव्वं सिया ।

माइद्वाणं संफासे । णो एवं करेज्जा ।

से त्त मायाए तत्थ गच्छेज्जा, गच्छेत्ता पुव्वामेव उत्ताणए  
हत्थे पडिगहं कट्टु-‘इमं खलु’<sup>१</sup> इमं खलु त्ति आलोएज्जा,  
णो किंचि वि णिगूहेज्जा ।

१३२-से एगइओ अण्णतरं भोयण-जायं पडिगाहेत्ता—

भइयं-भइयं भोच्चा, विवन्नं विरस माहरइ ।

माइद्वाणं संफासे । णो एवं करेज्जा ।

बहु-उज्झिय-धम्मिय-पदं

१३३-से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे समाणे,<sup>०</sup> सेज्जं पुण जाणेज्जा—

अंतरुच्छुयं वा, उच्छु-गंडियं वा, उच्छु-चोयगं वा, उच्छु-  
मेरुगं<sup>२</sup> वा, उच्छु-सालगं वा, उच्छु-डगलं<sup>३</sup> वा, सिबलिं<sup>४</sup>  
वा, सिबलि-थालगं<sup>५</sup> वा ।

अस्सि खलु पडिगाहियंसि,

अप्पे सिया<sup>६</sup> भोयणजाए, बहुउज्झियधम्मिए ।

तहप्पगारं अंतरुच्छुयं वा [जाव] सिबलि-थालगं वा—

१—× ( क, घ, छ, ब ) ।

२—<sup>०</sup> मेरुगं ( अ, व ) ।

३—आचारङ्गस्य १।१० वृत्तौ—‘डालग’ ति शाखैकदेशः । ७।२ वृत्तौ—‘डालग’ ति  
आम्रमलक्षणा खण्डानि, इति लभ्यते, किन्तु निशीथस्य षोडशोद्देशे ‘डगल’ पाठो  
लभ्यते । तद् भाष्ये चूर्णौडगलस्यार्थोविहितः । भाष्ये यथा—‘डगल’ चक्कलिछेदो  
(५४११); चूर्णौ यथा—चक्कलिछेदे छिण्ण डगलं भण्णति (भा० ४ पृष्ठ ६६) ।  
आचारारगे लिपि-दोषतः परिवर्तनमिदं जातमिति संभाव्यते ।

४—सबलि ( अ, क, च, छ ) ; संपलि ( व ) ।

५—<sup>०</sup> थालिय ( अ ) ।

६—× ( क, घ, च, छ ) ।

अफासुयं \*अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा ।

१३४—से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे समाणे,० सेज्जं पुण जाणेज्जा—  
बहु-अट्ठियं वा मंसं, मच्छं वा बहु कंटगं ।  
अस्सि खलु पडिगाहियंसि,  
अप्पेसिया भोयण-जाएसु, बहुउज्झियधम्मिए ।  
तहप्पगारं बहु-अट्ठियं वा मंसं, मच्छं वा बहु कंटगं—अफासुयं  
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

१३५—से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे० समाणे, सिया णं परो बहु-अट्ठिएण मंसेण<sup>१</sup>  
उवणिमंतेज्जा—

आउसंतो! समणा! अभिकंखसि बहु-अट्ठियं मंसं पडिगाहित्तए?  
एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म, से पुब्बामेव  
आलोएज्जा—

आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा, णो खलु मे कप्पइ से  
बहु-अट्ठियं मंसं पडिगाहित्तए,  
अभिकंखसि मे दाउं जावइयं, तावइयं पोगलं दलयाहि, मा  
अट्ठियाइं ।

से सेवं वयंतस्स परो अभिहट्ठु अंतो-पडिग्गहंगंसि<sup>२</sup> बहु-  
अट्ठियं मंसं परिभाएत्ता<sup>३</sup> णिहट्ठु दलएज्जा ।

१—मसेण मच्छेण ( अ, ब, छ ) ।

२—० पडिग्गहंसि ( अ ) ।

३—परिभोउत्ता ( अ ) ; परियाभोएत्ता ( क, च ) ।

तहप्पगारं पडिग्गहं<sup>१</sup> परहत्थंसि वा, परपायंसि वा—  
अफासुयं अणेसणिज्जं<sup>२</sup> \*ति मण्णमाणे<sup>३</sup> लाभे संते<sup>३</sup> णो<sup>३</sup>  
पडिगाहेज्जा ।

से आहच्च पडिगाहिए सिया, तं णोहि त्ति वएज्जा, णो  
अणहिति<sup>३</sup> वएज्जा ।

से त्त मायाए एगंतमवक्कमेज्जा एगंतमवक्कमेत्ता, अहे  
आरामंसि वा, अहे उवस्सयंसि वा, अप्पंडए<sup>३</sup> अप्प-माणे  
अप्प-बीए अप्पहरिए अप्पोसे अप्पुदए अप्पु-त्तिग-पणग-दग-  
मट्ठिय-मक्कडा-<sup>३</sup> संताणए मंसगं मच्छगं<sup>३</sup> भोच्चा अट्ठियाइं  
कंटए गहाय,

से त्त मायाए एगंत मवक्कमेज्जा, २ त्ता अहे कामथंडिलंसि  
वा, \*अट्ठि-रासिसि वा, किट्ठ-रासिसि वा, तुस-रासिसि वा,  
गोमय-रासिसि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि  
पडिलेहिय-पडिलेहिय,<sup>३</sup> पमज्जिय-पमज्जिय तओ संजया मेव  
परिट्ठवेज्जा ।

अजाणया लोण-दाण-पदं

१३६-से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे<sup>३</sup> समाणे,

सिया से परोअभिहट्ठु अंतो-पडिग्गहए विलं वा लोणं,  
उन्निभयं वा लोणं परिभाएत्ता णीहट्ठु दलएज्जा,

तहप्पगारं पडिग्गहं परहत्थंसि वा, परपायंसि वा—अफासुयं  
अणेसणिज्जं \*ति मण्णमाणे लाभे संते<sup>३</sup> णो पडिगाहेज्जा ।

से आहच्च पडिग्गाहिए सिया, तं च णाइद्वरगए जाणेज्जा,

१—<sup>३</sup> गहण ( अ ) ।

२—अणिहिति ( ' छ ) ।

३—X ( घ ) ।

से त्त मायाए तत्थ गच्छेज्जा, २. त्ता पुव्वामेव आलोएज्जा—  
आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा 'इमं ते किं जाणया  
दिन्नं? उदाहु अजाणया' ?<sup>१</sup>

सो य भणेज्जा—णो खलु मे जाणया दिन्नं, अजाणया ।  
कामं<sup>२</sup> खलु आउसो! इदार्णि णिसिरामि । तं भुंजह च णं,  
परिभाएह च णं ।

तं परेहिं समणुन्नायं समणुसिद्धं, तओ संजयामेव भुंजेज वा,  
पीएज्ज वा ।

जं च णो संचाएति भोत्तए वा, पायए वा । साहम्मिया  
तत्थ वसंति संभोइया समणुन्ना अपरिहारिया अदूरगया  
तेसि अणुपदातव्वं ।

सिया णो जत्थ साहम्मिया सिया, जहेव बहुपरियावन्ते  
कीरति, तहेव कायव्वं सिया ।

१३७.—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं,  
\*जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—ति वेमि ।<sup>१०</sup>

### एगारसमो उद्देशो

माइट्ठाण-पदं

१३८—भिक्खागा णामेगे एवमाहंसु—समाणे वा, वसमाणे वा,  
गामाणुगामं<sup>३</sup> वा दूइज्जमाणे<sup>४</sup> मणुणं भोयण-जायं लभित्ता,  
से<sup>५</sup> भिक्खूं गिलाइ, से हंदह णं तस्साहरह ।

१—अजाणया दिन्नं ( घ ) ।

२—इमं ( अ ) ।

३—दूइज्जमाणे वा ( अ ) ; दूइज्जमाणे ( च, छ, ब ) ।

४—से य ( अ ) ।

से य भिक्खू णो भुंजेज्जा । तुमं चेव णं भुंजेज्जासि ।  
 से एगइओ भोक्खामिति कट्टु पलिउंचिय-पलिउंचिय  
 आलोएज्जा, तं जहा-इमे पिंडे, इमे<sup>१</sup> लोए<sup>२</sup>, इमे तित्तए,  
 इमे कडुयए, इमे कसाए, इमे अंबिले, इमे महुरे, णो खलु  
 एत्तो किंचि गिलाणस्स सयति त्ति ।  
 माइद्दणं संपासे । णो एवं करेज्जा ।  
 तहाठियं<sup>३</sup> आलोएज्जा, जहाठियं<sup>४</sup> गिलाणस्स सदति—तं  
 तित्तयं तित्तएत्ति वा, कडुयं कडुएत्ति वा, कसायं कसाएत्ति  
 वा, अंबिलं अंबिलेत्ति वा, महुरं महुरेत्ति वा ।

मणुण्ण-भोयण-जाय-पदं

१३९—भिक्खागा णामेगे एवमाहंसु-समाणे वा, वसमाणे वा,  
 गामाणुगामं (वा ?) दूइज्जमाणे मणुन्तं भोयण-जायं लभित्ता  
 से भिक्खू गिलाइ, से हंदह णं तस्साहरह ।  
 सेय भिक्खू णो भुंजेज्जा । आहरेज्जासि<sup>५</sup> णं ।  
 णो खलु मे<sup>६</sup> अतराए आहरिस्सामि । इच्चेयाइं<sup>७</sup> आयतणाइं  
 उवाइकम्म ।

पिंडेसणा-पाणेसणा-पद

१४०—अहं भिक्खू जाणेज्जा सत्त पिंडेसणाओ, सत्त पाणेसणाओ ।

१—× ( क, च, छ ) ।

२—लुक्खए ( छ ) ।

३—तहेव तं ( अ, च, छ ) ।

४—जहेव तं ( अ, च, छ ) ।

५—आहारेज्जासि ( अ, घ, छ, ब ) ; आहारेज्जा से ( क च ) ।

६—इमे ( अ, क, च, छ, ब ) ।

७—इच्चेइयाइ ( क, छ, ब ) ।

१४१-तत्थ खलु इमा पढमा पिंडेसणा-असंसट्ठे हत्थे असंसट्ठे मत्ते ।  
तहप्पगारेण असंसट्ठेण हत्थेण वा, मत्तेण<sup>१</sup> वा, असणं वा,  
पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा सयं वा णं जाएज्जा, परो  
वा से देज्जा-फासुयं \*एसणिज्जं ति मणमाणे लाभे संते<sup>०</sup>  
पडिगाहेज्जा-पढमा पिंडेसणा ।

१४२-अहावरा दोच्चा पिंडेसणा-संसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्ते ।  
\*तहप्पगारेण संसट्ठेण हत्थेण वा, मत्तेण वा, असणं वा ४  
सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा-फासुयं एसणिज्जं ति  
मणमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा-दोच्चा पिंडेसणा ।<sup>०</sup>

१४३-अहावरा तच्चा पिंडेसणा-इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा,  
दाहिणं वा, उदीणं वा संतेगइया सड्ढा भवन्ति-गाहावई वा,  
\*गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ  
वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ  
वा, कम्मकरो वा,<sup>०</sup> कम्मकरीओ वा ।

तेसिं च णं अण्णतरेसु विरूव-रूवेसु भायण-जाएसु  
उवणिक्खित्तपुव्वे सिया, तं जहा—

थालंसि वा, पिठरंसि<sup>२</sup> वा, सरगंसि वा, परगंसि वा,  
वरगंसि वा ।

अह पुणेवं जाणेज्जा-असंसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्ते, संसट्ठे वा हत्थे  
असंसट्ठे<sup>३</sup> मत्ते ।

से य पडिग्गहधारी सिया पाणिपडिग्गहए<sup>४</sup> वा, से पुव्वामेव  
आलोएज्जा-आउसो! ति वा भगिणि! ति वा एएगं तुमं

१-मत्तएण ( अ, छ, ब ) ।

२-पिठरगसि ( अ, च ), पिठरगसि ( घ ), पिठरंसि ( ब ) ।

३-सट्ठे वा ( क, च ) ।

४-<sup>०</sup> पडिग्गहिए ( छ, ब ) ।

असंसद्वेण हत्थेण संसद्वेण मत्तेण, संसद्वेण वा हत्थेण असंसद्वेण मत्तेण, अस्सि पडिग्गहंसि वा पाणिसि वा णिहट्ठु उवित्तु दलयाहि ।

तहप्पगारं भोयण-जायं सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा फासुयं एसणिज्जं \*ति मण्णमाणे<sup>०</sup> लाभे संते पडिगाहेज्जा—तच्चा पिंडेसणा ।

१४४—अहावरा चउत्था पिंडेसणा—से भिक्खू वा, \*भिक्खुणी वा, गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे,<sup>०</sup> सेज्जं पुण जाणेज्जा—

पिहुयं वा \*बहुरजं वा, भुंजियं वा, मंथुं वा, चाउलं वा<sup>०</sup>; चाउल-पलंबं वा ।

अस्सि खलु पडिग्गहियंसि अप्पे पच्छाकम्मे अप्पे पज्जवजाए, तहप्पगारं पिहुयं वा [जाव] चाउल-पलंबं वा सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा \*—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते<sup>०</sup> पडिगाहेज्जा—चउत्था पिंडेसणा ।

१४५—अहावरा पंचमा पिंडेसणा—से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे<sup>०</sup> समाणे, उवहितमेव<sup>१</sup> भोयण-जायं जाणेज्जा, तं जहा—सरावंसि वा, डिंडिमंसि वा, कोसगंसि वा ।

अहपुण एवं जाणेज्जा—बहुपरियावन्ने पाणीसु दगलेवे ।

तहप्पगारं असणं वा ४ सयं वा णं जाएज्जा \*परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते<sup>०</sup> पडिगाहेज्जा—पंचमा पिंडेसणा ।

अहावरा छट्ठा पिंडेसणा—से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा



गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे,<sup>०</sup>  
पग्गहियमेव<sup>१</sup> भोयण-जायं जाणेज्जा—

जं च सयद्वाए पग्गहियं, जं च परद्वाए पग्गहियं, तं पाय-  
परियावन्तं, तं पाणि-परियावण्णं—फासुयं \*एसणिज्जं ति  
मण्णमाणे लाभे संते<sup>०</sup> पडिगाहेज्जा—छद्वा पिंडेसणा ।

१४६—अहावरा सत्तमा पिंडेसणा—से भिक्खू वा \*भिक्खुणी वा  
गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे<sup>०</sup> समाणे, बहु-  
उज्झिय-धम्मियं भोयण-जायं जाणेज्जा—

जं चऽन्ते वहवे दुपय-चउप्पय-समण-माहण-अतिहि-किवण  
वणीमगा णावकंखंति, तहप्पगारं उज्झिय-धम्मियं-भोयण-  
जायं सयं वा णं जाएज्जा परो वा से देज्जा \*—फासुयं  
एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते<sup>०</sup> पडिगाहेज्जा—सत्तमा  
पिंडेसणा । इच्चेयाओ सत्त पिंडेसणाओ ।

१४७—अहावराओ सत्त पाणेसणाओ । तत्थ खलु इमा पढमा  
पाणेसणा—असंसट्ठे हत्थे असंसट्ठे मत्ते—(११४१) ।

१४८—\*अहावरा दोच्चा पाणेसणा—संसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्ते—  
(११४२) ।

१४९—अहावरा तच्चा पाणेसणा—इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा,  
दाहिणं वा, उदीणं वा संतेगइया सड्ढा भवन्ति—(११४३) ।

१५०—अहावरा चउत्था पाणेसणा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा  
गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, सेज्ज  
पुण पाणग-जायं जाणेज्जा, तं जहा—तिलोदगं वा, तुसोदगं  
वा, जवोदगं वा, आयामं वा, सोवीरं वा, सुद्धवियडं वा ।

१—उग्गहिय<sup>०</sup> (अ, क, च) ; उग्गहित पग्गहित ( च ) ।

अस्सि खलु पडिगहियंसि अप्पे पच्छाकम्मे, अप्पे पज्जवजाए । तहप्पगारं तिलोदगं वा, तुसोदगं वा, जवोदगं वा, आयामं वा, सोवीरं वा, सुट्ठवियडं वा सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फामुय एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ।

१५१-अहावरा पंचमा पाणेसणा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावड-कुलं पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, उवहित-मेव पाणग-जायं जाणेज्जा—(१।१४५) ।

१५२-अहावरा छट्ठा पाणेसणा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावड-कुलं पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, पग्गहिय-मेव पाणग-जायं जाणेज्जा—(१।१४६) ।

१५३-अहावरा सत्तमा पाणेसणा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावड-कुलं पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, बहु उज्झय-धम्मियं पाणग-जाय जाणेज्जा—° (१।१४७) ।

१५४-इच्चेयासिं सत्तण्हं पिंडसेणाणं, सत्तण्हं पाणेसणाणं अण्णतरं पडिमं पडिवज्जमाणे णो एवं वएज्जा—मिच्छापडिवण्णा खलु एते भयंतारो, अहमेगे सम्म पडिवन्ते ।

जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति, जो य अहमंसि एयं पडिम पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सब्बे वे ते उ जिणाणाए उवट्ठया अन्नोन्नसमाहीए एवं च णं विहरंति ।

१५५-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गिय, जं सब्बट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—ति वेमि ।

बीयं अज्जयणं

सेज्जा

पढमो उद्देशो

उवस्सयएसणा-पदं

१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा उवस्सयं एसित्तए<sup>१</sup>,  
अणुपविसित्ता गामं वा, \*णगरं वा, खेडं वा, कव्वडं वा,  
मडंबं वा, पट्टणं वा, आगरं वा, दोणमुहं वा, णिगमं वा,  
आसमं वा, सण्णिवेसं वा<sup>०</sup>, रायहारिणि वा,  
सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

सअंडं \*सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिग-पणग-  
दग-मट्टिय-मक्कडा-<sup>०</sup> संताणयं ।

तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहियं वा  
चेतेज्जा ।

२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

अप्पंडं अप्पपाणं \*अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं  
अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-<sup>०</sup> संताणयं ।

तहप्पगारे उवस्सए पडिलेहिता, पमज्जित्ता, तओ संजयामेव  
ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहियं वा चेतेज्जा ।

अस्सिपडियाए-उवस्सय-पदं

३—सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,  
जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं  
अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टुं चेतेति ।

तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा,  
 \* ( बहिया णीहडे वा अणीहडे वा ) अत्तट्टिए वा अणत्तट्टिए  
 वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा० अणासेविते  
 वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

४-•सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,  
 जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं  
 अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेतेति ।

तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा,  
 ( बहिया णीहडे वा अणीहडे वा ) अत्तट्टिए वा अणत्तट्टिए  
 वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते  
 वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

५-सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए एगं साहम्मिणि समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,  
 जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं  
 अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेतेति ।

तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा,  
 ( बहिया णीहडे वा अणीहडे वा ) अत्तट्टिए वा अणत्तट्टिए  
 वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते  
 वा णो ठाणं वा सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

६-सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं,  
 भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं  
 अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेतेति ।

तहप्पगारे उवस्सए पुरिसतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा,

( वहिया णोहडे वा अणीहडे वा ) अत्तट्टिए वा अणत्तट्टिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।<sup>०</sup>

समण-माहणाड-समुद्दिस्स-उवस्सय-पटं

७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

बह्वे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स<sup>१</sup> पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं \*समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चएइ ।

तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा, अपुरिसंतरकडे वा ( वहिया णोहडे वा अणीहडे वा ) अत्तट्टिए वा अणत्तट्टिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविए वा अणासेविए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

बह्वे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु<sup>०</sup> चएइ ।

तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे \* ( अवहिया णोहडे ) अणत्तट्टिए अपरिभुत्ते<sup>०</sup> अणासेविए णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

९-अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, \* ( वहिया णोहडे ) अत्तट्टिए, परिभुत्ते<sup>०</sup>, आसेविए पडिलेहिता, पमज्जिता, तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

<sup>१</sup>-समुद्दिस्स तं चेव भाणियव्वं ( घ, च ) ।

परिकम्मिय-उवस्सय-पदं

१०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—  
अस्संजए भिक्खु-पडियाए कडिए वा, उक्कंभिए<sup>१</sup> वा, छन्ने  
वा, लित्ते वा, घट्ठे वा, मट्ठे वा, संमट्ठे वा, संपधूमिए वा ।  
तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे, •( अबहिया णीहडे )  
अणत्तट्ठिए, अपरिभुत्ते<sup>२</sup>, अणासेविए णो ठाणं वा, सेज्जं वा,  
णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

११—अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, •( बहिया णीहडे )  
अत्तट्ठिए, परिभुत्ते<sup>२</sup>, आसेविए पडिलेहिता, पमज्जिता, तओ  
संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

१२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—  
अस्संजए भिक्खु-पडियाए खुड्डियाओ दुवारियाओ  
महल्लियाओ कुज्जा,  
•महल्लियाओ दुवारियाओ खुड्डियाओ कुज्जा,  
समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा,  
विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा,  
पवायाओ सिज्जाओ णिवायाओ कुज्जा,  
णिवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा,  
अंतो वा बहिं वा उवस्सयस्स हरियाणि छिदिय-छिदिय,  
दालिय-दालिय ।<sup>३</sup> संथारगं संथारेज्जा<sup>३</sup>, बहिया वा  
णिण्णक्खु ।<sup>३</sup>

तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे, •( अबहिया णीहडे )  
अणत्तट्ठिए, अपरिभुत्ते<sup>२</sup>, अणासेविते णो ठाणं वा, सेज्जं  
वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

१-उक्कंपिए ( क, घ, च, व ) ।

२-सथारेज्जा ( अ, क, घ, च, व ) ।

३-णिण्णक्खु ( क, छ ) ।

१३-अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, \* (बहिया णीहडे)  
अत्तट्ठिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहिता, पमज्जिता, तओ  
संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

बहिया निस्सारिय-उवस्सय-पदं

१४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—  
अस्संजए भिक्खु-पडियाए उदगप्पसूयाणि कंदाणि वा,  
मूलाणि वा (तयाणि वा?), पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा,  
फलाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा ठाणाओ ठाणं  
साहरति, बहिया वा णिण्णक्खु ।  
तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे, \* (अबहिया णीहडे)  
अणत्तट्ठिए, अपरिभुत्ते, अणासेविते<sup>०</sup> णो ठाणं वा, सेज्जं  
वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

१५-अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, \* (बहिया णीहडे)  
अत्तट्ठिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहिता, पमज्जिता, तओ  
संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा<sup>०</sup> चेतैज्जा ।

१६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—  
अस्संजए भिक्खू-पडियाए पीढं वा, फलगं वा, णिस्सेणि वा,  
उदूहलं वा ठाणाओ ठाणं साहरइ, बहिया वा णिण्णक्खु ।  
तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे, \* (अबहिया णीहडे)  
अणत्तट्ठिए, अपुरिभुत्ते, अणासेविए<sup>०</sup> णो ठाणं वा सेज्जं वा,  
णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

१७-अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे \* (बहिया णीहडे)  
अत्तट्ठिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहिता, पमज्जिता, तओ  
संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा<sup>०</sup> चेतैज्जा ।

१-यद्यप्ययमत्र प्रतिषु नोपलभ्यते, तथापि ३।३।५५ सूत्रमनुसृत्यासावज्जं युज्यते ।

अंतलिक्ख-जाय-उवस्सय-पदं

१८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

तंजहा—खंधंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा, हम्मियतलंसि वा, अन्नतरंसि वा तहप्पगारंसि वा अंतलिक्खजायंसि, णण्णत्थ आगाढाणागाढेहि<sup>१</sup> कारणेहि ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतोज्जा ।

से य आहच्च चेतिते सिया, णो तत्थ सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा हत्थाणि वा, पादाणि वा, अच्छीणि वा, दंताणि वा, मुहं वा उच्छोलेज्ज वा, प्होएज्ज वा ।

णो तत्थ ऊसढं पगरेज्जा, तंजहा—उच्चारं वा, पासवणं वा, खेलं वा, सिंघाणं वा, वंतं वा, पित्तं वा, पूत्तिं वा, सोणियं वा, अन्नयरं वा सरीरावयवं ।

१९-केवली बूया—आयाण मेयं । से तत्थ ऊसढं पगरेमाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा,

से तत्थ पयलमाणे<sup>२</sup> वा पवडमाणे<sup>३</sup> वा हत्थं वा, \*पायं वा, बाहुं वा, ऊरुं वा, उदरं वा,<sup>०</sup> सीसं वा, अन्नतरं वा कायंसि इंदिय-जातं लूसेज्ज वा ।

पाणाणि वा, भूयाणि वा, जीवाणि वा, सत्ताणि अभिहणेज्ज वा, \*वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज वा, संघसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा, किलामेज्ज वा ठाणाओ ठाणं संकामेज्ज वा, जीविआओ<sup>०</sup> ववरोवेज्ज वा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइन्ना, \*एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो,<sup>०</sup>

१-गाढा<sup>०</sup> ( क, च, व ) ; आगाढावगाढेहि ( घ ) : आगाढादीहि ( छ ) ।

२-पयले<sup>०</sup> ( क, च, छ ) ।

३-पवडे<sup>०</sup> ( क, च, छ ) ।



जं तहप्पगारे उवस्सए अंतलिव्वजाए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

सागारिय-उवस्सय-पदं

२०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—  
सइत्थियं, सखुड्डं, सपसुभत्तपाणं,  
तहप्पगारे सागारिए<sup>१</sup> उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा,  
णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

२१-आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावइ-कुलेण सद्धिं संवसमाणस्स  
अलसगे वा, विसूइया वा, छड्डी वा उव्वाहेज्जा,<sup>२</sup>  
अन्ततरे वा से दुक्खे रोगातंके<sup>३</sup> समुप्पज्जेज्जा,  
अस्संजए कलुण-पडियाए तं भिक्खुस्स गातं तेल्लेण वा,  
घएण वा, णवणीएण वा, वसाए वा, अब्भंगेज्ज वा,  
मक्खेज्ज वा,  
सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण<sup>४</sup> वा, वण्णेण वा, चुन्नेण  
वा, पउमेण वा, आघंसेज्ज वा, पघंसेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा,  
उवट्ठेज्ज वा,  
सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा 'उच्छोलेज्ज  
वा'<sup>५</sup>, पहोएज्ज वा, सिणावेज्ज वा, सिंचेज्ज वा,  
दारुणा वा दारुपरिणामं<sup>६</sup> कट्ठु अगणिकायं उज्जालेज्ज वा,

१-साकारिए ( छ, व ) ।

२-उप्पा ° ( क, च, व ) ।

३-रोगे आयके ( घ ) ।

४-लोद्धेण ( अ, व ) ।

५-उच्छोलेज्ज पच्छोलेज्ज वा ( व ) ।

६-दारुणं परि ° ( अ, च ) ; दारुण ° ( क ) ।

पज्जालेज्ज वा, उज्जालेत्ता-पज्जालेत्ता कायं आयावेज्ज वा,  
पयावेज्ज वा ।

अह भिक्खूणं पुब्बोवदिट्ठा एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं,  
एस उवएसो,

ज तहप्पगारे सागारिए उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा,  
णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

२२-आयाण मेयं भिक्खुस्स सागारिए उवस्सए संवसमाणस्स<sup>१</sup>,  
इह खलु गाहावई वा, \*गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता  
वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ  
वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा<sup>२</sup>, कम्मकरीओ  
वा अन्नमन्नं अक्कोसंति वा, बंधंति<sup>३</sup> वा, रंभंति वा,  
उद्देवेति<sup>४</sup> वा ।

अह भिक्खूणं उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा—एते खलु अन्नमन्नं  
अक्कोसंतु वा मा वा अक्कोसंतु, बंधंतु, वा मा वा बंधंतु,  
रंभंतु वा मा वा रंभंतु, उद्देवतु वा मा वा उद्देवतु ।

अह भिक्खूणं पुब्बोवदिट्ठा एस पइन्ना, \*एस हेऊ, एस  
कारणं, एस उवएसो<sup>०</sup>,

जं तहप्पगारे सागारिए उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा,  
णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

२३-आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावईहि सद्धिं संवसमाणस्स<sup>५</sup>,  
इह खलु गाहावई अप्पणो सअट्ठाए अगणिकायं उज्जालेज्ज वा,  
पज्जालेज्ज वा, विज्झावेज्ज वा ।

१—वसमाणस्स ( व ) ।

२—पहति ( क ) ; × ( च, ब ) ; वहति ( अ ) ।

३—उद्धति वा उद्देवेति ( घ ) ; उद्धवंति वा उद्देवेति ( छ ) ।

४—वस<sup>०</sup> ( अ, घ, च, छ, ब ) ।

अह भिक्खू उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा—एते खलु अगणिकायं उज्जालेंतु वा मा वा उज्जालेंतु, पज्जालेंतु वा मा वा पज्जालेंतु, विज्ज्मावेंतु वा मा वा विज्ज्मावेंतु ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा \*एस पइत्ता, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो<sup>०</sup>,

जं तहप्पगारे (सागारिए?) उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

२४—आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धिं संवसमाणस्स,

इह खलु गाहावइस्स कुंडले वा, गुणे वा, मणी वा, मोत्तिए वा, 'हिरण्णे वा'<sup>१</sup>, 'सुवण्णे वा'<sup>२</sup>, कडगाणि वा, तुडियाणि वा, तिसरगाणि<sup>३</sup> वा, पालंबाणि वा, हारे वा, अद्धहारे वा, एगावली वा, मुत्तावली वा, कणगावली वा, रयणावली वा, तरुणियं वा कुमारिं अलंकिय-विभूसियं पेहाए,

अह भिक्खू उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा—एरिसिया वा सा णो वा एरिसिया—इति वा णं ब्रूया, इति वा णं मणं साएज्जा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा \*एस पइत्ता, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो<sup>०</sup>,

जं तहप्पगारे (सागारिए?) उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

२५—आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धिं संवसमाणस्स,

इह खलु गाहावइणीओ वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-

१—X (अ) ।

२—X (छ) ।

३—तिसराणि (च) ।

सुण्हाओ वा, गाहावइ-धाईओ वा, गाहावइ-दासीओ वा,  
गाहावइ-कम्मकरीओ वा ।

तासिं च णं एवं वुत्तपुब्बं भवइ, जे इमे भवंति समणा  
भगवंतो \*सीलमंता वयमंता गुणमंता संजया सवुडा  
बंभचारी० उवरया मेहुणाओ धम्माओ, णो खलु एतेसिं  
कप्पइ मेहुणं धम्मं परियारणाए आउट्टित्तए ।

जा य खलु एएहिं सद्धि मेहुणं धम्मं परियारणाए आउट्टेज्जा,  
पुत्तं खलु सा लभेज्जा—ओयस्सि तेयस्सि वच्चस्सि जसस्सि  
संपराइयं१ आलोयण-दणिसणिज्ज ।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म तासिं च णं अण्णयरी  
सड्ढी२ त तवस्सि भिक्खुं मेहुणं धम्मं परियारणाए आउट्टा-  
वेज्जा । अह भिक्खूणं पुव्वोवदिश \*एस पइन्ना, एस हेऊ,  
एस कारणं, एस उवएसो०,

जं तहपगारे सागारिए उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा,  
णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

२६—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गिय, \*जं  
सव्वट्टेहिं समिए सहिए सया जए ।

—ति वेमि ।० ,

१-सपहारियं ( अ ) ।

२-सहियं ( अ ) ; सहित ( छ ) ।

## बीओ उद्देशो

२७-गाहावई णामेगे सुइ-समायारा भवन्ति, भिक्खू य असिणाणए<sup>१</sup> मोयसमायारे, 'से तग्गंधे'<sup>२</sup> दुग्गंधे पडिकूले पडिलोभे यावि भवइ ।

जं पुव्वकम्मं तं पच्छाकम्मं, जं पच्छाकम्मं तं पुव्वकम्मं ।

तं भिक्खु-पडियाए वट्टमाणे करेज्जा वा, नो 'वा करेज्जा ।'<sup>३</sup>

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा \*एस पइन्ता, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°,

जं तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, \*सेज्जं वा, णिसोहियं वा° चेतेज्जा ।

२८-आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धिं संवसमाणस्स,  
इह खलु गाहावइस्स अप्पणो सअट्ठाए विरूव-रूवे भोयण-  
जाए उवक्खडिं सिया,

अह पच्छा भिक्खु-पडियाए असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा,  
साइमं वा उवक्खडेज्ज वा, उवकरेज्ज वा,

तं च भिक्खू अभिकंखेज्जा भोत्तए वा, पायए वा,  
वियट्ठितए वा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा \*एस पइन्ता, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°,

जं तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, \*सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा ।

१-असिणाणाए (अ) ।

२-से से गंधे (अ, ब, क, घ, च, छ, जू) ।

३-करेज्जा (अ) ; करेज्जा वा (छ, ब) ।

२९-आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावइणा सद्धि संवसमाणस्स,  
 इह खलु गाहावइस्स अप्पणो सयट्ठाए विरूव-रूवाइं दारुयाइं  
 भिन्न-पुव्वाइं भवंति,  
 अह पच्छा भिक्खु-पडियाए विरूव-रूवाइं दारुयाइं भिदेज्ज  
 वा, किणेज्ज वा, पामिच्चेज्ज वा,  
 दारुणा वा दारुपरिणामं<sup>१</sup> कट्ठु अगणिकायं उज्जालेज्ज वा,  
 पज्जालेज्ज वा ।  
 तत्थ भिक्खू अभिक्खेज्जा आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा,  
 वियट्ठित्तए वा ।  
 अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा \*एस पइन्ता, एस हेऊ, एस  
 कारणं, एस उवएसो°,  
 जं तहप्पगारे उवस्सए णो ठाण वा, \*सेज्जं वा, णिसीहियं  
 वा° चेतैज्जा ।

३०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उच्चार-पासवणेणं उव्वाहिज्जमाणे  
 राओ वा विआले वा गाहावइ-कुलस्स दुवारवाहं अवंगुणेज्जा,  
 तेणे य तस्संधिचारी अणुपविसेज्जा ।  
 तस्स भिक्खुस्स णो कप्पइ एवं वदित्तए—  
 अयं तेणे पविसइ वा णो वा पविसइ,  
 उवल्लियइ<sup>२</sup> वा णो वा उवल्लियइ,  
 अइपतति<sup>३</sup> वा णो वा अइपतति,  
 वदति वा णो वा वदति,  
 तेण हडं अण्णेण हडं,  
 तस्स हडं अण्णस्स हडं,

१-दारुण ° ( घ, च ) ।

२-उवल्लियति ( च ) ; उवलियति ( छ ) ।

३-आवयति ( घ, च ) ।

अयं तेणे अयं उवचरए,  
 अयं हंता अयं एत्थमकासी,  
 तं तवस्सि भिक्खुं<sup>१</sup> अतेणं तेणं ति संकति,  
 अहं भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा<sup>२</sup> एस पइन्ना, एस हेऊ, एस  
 कारणं, एस उवएसो,  
 जं तहप्पगारे उवस्सए । णो ठाणं वा, सेज्जं, णिसीहिंयं वा<sup>३</sup>  
 चेतेज्जा ।

तण-पलाला-च्छादय-उवस्सय-पदं

३१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—  
 तण-पुंजेसु वा, पलाल-पुंजेसु वा, सअंडे,<sup>४</sup> \*सपाणे सबीए  
 सहुरिए सउसे सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय मक्कडा-<sup>०</sup>  
 संताणए,  
 तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहिंयं वा  
 चेतेज्जा ।

३२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—  
 तण-पुंजेसु वा, पलाल-पुंजेसु वा, अप्पंडे<sup>३</sup> \*अप्पपाणे  
 अप्पबीए अप्पहरिए अप्पोसे अप्पुदए अप्पुत्तिग-पणग-दग-  
 मट्टिय-मक्कडा-संताणए,  
 तहप्पगारे उवस्सए पडिलेहिता, पमज्जित्ता, तओ संजयामेव  
 ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहिंयं वा<sup>०</sup> चेतेज्जा ।

ज्जयव्व-उवस्सय-पदं

३३-से आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा,  
 परियावसहेसु वा अभिक्खणं-अभिक्खणं साहम्मिएहि ओवय-  
 माणेहि णोवएज्जा<sup>४</sup> ।

१-भिक्खुय ( अ, छ ) ।

२-वृणवित्र बहुवचनं लभ्यते—'सडेहि' ।

३-वृणवित्र बहुवचनं लभ्यते—'अप्पडेहि' ।

४-गोयवएज्जा ( अ ) ; णो उवएज्जा ( क, घ, च ) ।

३४-से आगंतारेसु वा, \*आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा°,  
परियावसहेसु वा, जे भयंतारो उडुबद्धियं वा वासावासियं  
वा कप्पं उवातिणावित्ता<sup>१</sup> तत्थेव भुज्जो<sup>२</sup> संवसंति,  
अयमाउसो! कालाइक्कंत-किरिया वि भवइ ।

उवट्ठाण-किरिया-पदं

३५-से आगंतारेसु वा, \*आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा°,  
परियावसहेसु वा, जे भयंतारो उडुबद्धियं वा वासावासियं  
वा कप्पं उवातिणावित्ता तं दुगुणा तिगुणेण<sup>३</sup> अपरिहरित्ता  
तत्थेव भुज्जो संवसंति,  
अयमाउसो!<sup>४</sup> उवट्ठाण-किरिया वि<sup>५</sup> भवइ ।

अभिवक्त-किरिया-पदं

३६-इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा,  
संतेगइया,  
सड्ढा भवन्ति, तंजहा—गाहावई वा, \*गाहावइणीओ वा,  
गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-मुण्हाओ  
वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा°,  
कम्मकरीओ वा ।

तेसिं च णं आयार-गोयरे णो सुणिसंते भवइ,  
तं सट्ठमाणेहिं, तं पत्तियमाणेहिं, तं रोयमाणेहिं बहवे  
समण-माहण-अतिहि-क्विण-वणीमए समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ  
अगारीहिं अगाराइं चेतित्ताइं भवन्ति,  
तंजहा—आएसणाणि वा, आयतणाणि वा, देवकुलाणि वा,

१—° तिणिता ( अ, क, च, घ, ङ ) ।

२—भुज्जो भुज्जो ( घ ) ।

३—दुगुणेण ( अ, क, घ, च, ङ ) । स्वीकृत पाठं वृत्त्यनुसारी वर्तते ।

४—अयमाउसो ! इतरा ( अ, च, ङ ) ।

५—या वि ( अ, ङ ) ।



सहाओ<sup>१</sup> वा, पवाओ<sup>२</sup> वा, पणिय-गिहाणि वा, पणिय-  
 सालाओ वा, जाण-गिहाणि वा, जाण-सालाओ वा, सुहा-  
 कम्मंताणि वा, दब्भ-कम्मंताणि वा, बद्ध<sup>३</sup>-कम्मंताणि वा,  
 वक्क<sup>४</sup>-कम्मंताणि वा, वण-कम्मंताणि वा, इंगाल-कम्मंताणि  
 वा, कट्ट-कम्मंताणि वा, सुसाण-कम्मंताणि वा, 'संति-कम्मं-  
 ताणि वा'<sup>५</sup>, गिरि-कम्मंताणि वा, कंदर<sup>६</sup>-कम्मंताणि वा,  
 'सेलोवट्ठाण-कम्मंताणि वा'<sup>७</sup>, भवणगिहाणि वा,  
 जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा (जाव) भवण-  
 गिहाणि वा तेहि ओवयमाणेहि ओवयंति,  
 अयमाउसो! अभिक्कंत-किरिया वि<sup>८</sup> भवइ ।

अणभिक्कंत-किरिया-पदं

३७—इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा,  
 संतेगइया सड्ढा भवंति,  
 तंजहा—गाहावई वा (जाव २।३६) कम्मकरीओ वा ।  
 तेसि च णं आयार-गोयरे णो सुणिसंते भवइ,  
 तं सइहमाणेहि, तं पत्तियमाणेहि, तं रोयमाणेहि बहवे  
 समण-माहण-अतिहि-किविण-वणीमए समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ  
 अगारीहि अगाराइं चेतिआइं भवंति,

१—सहाणि ( क, घ, छ, ब ) ।

२—पवाणि ( अ, क, घ, छ, ब ) ।

३—वत्थ<sup>०</sup> ( छ ) ।

४—वत्कज<sup>०</sup> ( वृ ) ।

५—संतिकम्मंताणि वा सुणणागारकम्मंताणि वा ( अ ) ।

६—कंदरा<sup>०</sup> ( अ ) ।

७—सेलोवट्ठाण-कम्मंताणि वा सयण-गिहाणि वा ( छ ) ।

८—या वि ( अ, क, घ, च, ब ) ।

तंजहा—आएसणाणि वा (जाव २।३६) भवणगिहाणि वा  
जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा (जाव २।३६)  
भवणगिहाणि वा तेहिं अणोवयमाणेहिं ओवयंति,  
अयमाउसो! अणभिवकंत-किरिया वि भवति ।

वज्ज-किरिया-पदं

३८—इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा,  
संतेगइया सड्ढा भवंति,  
तंजहा गाहावई वा (जाव २।३६) कम्मकरीओ वा ।  
तेसिं च णं एवं पुत्तपुव्वं भवइ—

जे इमे भवंति समणा भगवंतो सीलमंता \*वयमंता गुणमंता  
संजया संवुडा बंभचारी० उवरया मेहुणाओधम्माओ ।

णो खलु एसि भयंताराणं कप्पइ आहाकम्मिए उवस्सए  
वत्थए । सेज्जाणिमाणि<sup>१</sup> अम्हं अप्पणो सअट्ठाए<sup>२</sup> चेत्तिताइं  
भवंति,

तंजहा—आएसणाणि वा (जाव २।३६) भवणगिहाणि वा ।  
सव्वाणि ताणि समणाणं णिसिरामो, अवियाइं वयं पच्छा  
अप्पणो सअट्ठाए चेत्तिस्सामो, तंजहा—आएसणाणि वा  
(जाव २।३६) भवणगिहाणि वा ।

एयप्पगारं णिग्घोस सोच्चा णिसम्म जे भयंतारो  
तहप्पगाराइं आएसणाणि वा (जाव २।३५) भवणगिहाणि  
वा । उवागच्छन्ति, उवागच्छिता इतरेतरेहिं<sup>३</sup> पाहुडेहिं  
वट्ठंति ।

१—० इमाणि ( च ) ।

२—अट्ठाए ( अ, छ, व ) ।

३—इतरातिरेहिं ( क, घ ) ; इतरातिरेहिं ( अ, च ) ।

अयमाउसो ! वज्ज-किरिया वि भवइ ।

महावज्ज-किरिया-पद

३९—इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा  
 संतेगइया सड्ढा भवंति,  
 तंजहा—गाहावई वा (जाव २।३६) कम्मकरीओ वा,  
 तेसिं च णं आयारगोयरे णो सुणिसंते भवइ,  
 तं सदहमाणेहिं, तं पत्तियमाणेहिं, तं रोयमाणेहिं बहवे  
 समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय  
 समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ अगारीहिं अगाराइं चेतिताइं भवंति,  
 तंजहा—आएसणाणि वा (जाव २।३६) भवणगिहाणि वा ।  
 जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा (जाव २।३६)  
 भवणगिहाणि वा उवगच्छंति, उवागच्छिता इतरेतरेहिं<sup>१</sup>  
 पाहुडेहिं वट्टंति,  
 अयमाउसो ! महावज्ज-किरिया वि भवइ ।

सावज्ज-किरिया-पदं

४०—इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा,  
 संतेगइया सड्ढा भवंति,  
 तंजहा—गाहावई वा (जाव २।३६) कम्मकरीओ वा ।  
 तेसिं च ण आयार-गोयरे णो सुणिसंते भवइ,  
 तं सदहमाणेहिं, तं पत्तियमाणेहिं, तं रोयमाणेहिं बहवे  
 समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ  
 अगारीहिं अगाराइं चेतिताइं भवंति,  
 तंजहा—आएसणाणि वा (जाव २।३६) भवणगिहाणि वा ।

१—इतरातरेहिं (अ) ; इयराइयरेहिं (घ) ।

जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा (जाव २।३६)  
 भवणगिहाणि वा उवागच्छंति, उवागच्छिता इतरेतरेहि  
 पाहुडेहिं वट्टंति,  
 अयमाउसो! सावज्ज-किरिया वि भवइ ।

महासावज्ज-किरिया-पदं

४१—इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा,  
 सत्तेगइया सड्ढा भवंति,  
 तंजहा—गाहावई वा (जाव २।३६) कम्मकरीओ वा ।  
 तेसि च णं आयारगोयरे णो सुणिसंते भवइ,  
 तं सइहमाणेहिं, तं पत्तियमाणेहिं, तं रोयमोहिं एगं समण-  
 जायं समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ अगारीहिं अगाराइं चेतिताइं  
 भवंति,  
 तंजहा—आएसणाणि वा (जाव २।३६) भवणगिहाणि वा ।  
 महया पुढविकाय-समारंभेणं, \*महया आउकाय-समारंभेणं,  
 महया तेउकाय-समारंभेणं, महया वाउकाय-समारंभेणं,  
 महया वणस्सइकाय-समारंभेणं, महया तसकाय-समारंभेणं,  
 महया संरंभेणं, महया आरंभेणं, महया विरूव-रूवेहिं  
 पावकम्म-किच्चेहिं, तंजहा—छायणओ लेवणओ संथार-  
 दुवार-पिहणओ ।  
 सीतोदए वा परिट्ठवियपुव्वे भवइ,  
 अगणिकाए वा उज्जालियपुव्वे भवइ,  
 जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा (जाव २।३६)  
 भवणगिहाणि वा उवागच्छंति, २ ता इयराइयरेहिं पाहुडेहिं  
 दुपक्खं ते कम्मं सेवंति,  
 अयमाउसो! महासावज्ज-किरिया वि भवइ ।

अप्पसावज्ज-किरिया-पदं

४२—इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा  
संतेगइया सड्ढा भवन्ति,

तंजहा—गाहावई वा (जाव २।३६) कम्मकरीओ वा ।

तेसि च णं आयार-गोयरे णो सुणिसंते भवइ,

तं सद्धमाणेहि तं पत्तियमाणेहि, तं रोयमाणेहि अप्पणो  
सअट्ठाए तत्थ-तत्थ अगारीहि अगाराइं चेतिताइं भवन्ति,

तंजहा—आएसणाणि वा (जाव २।३६) भवणगिहाणि वा ।

महया पुढविकाय-समारंभेणं (जाव २।४१) अगणिकाए वा  
उज्जालियपुव्वे भवइ ।

जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा (जाव २।३६)

भवणगिहाणि वा उवागच्छंति, २ ता इयराइयरेहिं पाहुडेहिं  
एगपक्खं ते कम्मं सेवन्ति,

अयमाउसो ! अप्पासावज्ज-किरिया वि भवइ ।

४३—एयं खलु तस्स भिक्खूस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, \*जं  
सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—ति वेमि ।<sup>०</sup>

तइओ उदेसो

उवस्सय-छलण-पदं

४४—सिय<sup>१</sup> णो सुलभे फासुए उंछे अहेसणिज्जे, णो य खलु सुद्धे  
इमेहिं पाहुडेहिं, तंजहा—छायणओ, लेवणओ, संथार-  
दुवार-पिहाणओ<sup>२</sup>, पिडवाएसणाओ ।

१—से य ( क, घ, च, छ, ब ) ।

२—<sup>०</sup> पिहुणाओ ( अ ) ; <sup>०</sup> पिहणओ ( घ ) ।

से<sup>१</sup> भिक्खू चरिया-रए, ठाण-रए, निसीहिया-रए, सेज्जा-संथार-पिंडवाएसणारए ।

संति भिक्खुणो एव मक्खाइणो उज्जुया<sup>२</sup> णियाग-पडिवन्ना अमायं कुव्वमाणा वियाहिया ।

संतेगइया पाहुडिया उक्खित्तपुव्वा भवइ, एवं णिक्खित्तपुव्वा भवइ, परिभाइयपुव्वा भवइ, परिभुत्तपुव्वा भवइ, परिद्व-वियपुव्वा भवइ, एवं वियागरेमाणे समियाए<sup>३</sup> वियागरेति ? हंता भवइ ।

उवस्सय-जयण-पदं

४५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—  
खुड्डियाओ, खुड्डुदुवारियाओ<sup>४</sup>, निइयाओ<sup>५</sup> (नीयाओ?)  
संनिरुद्धाओ<sup>६</sup> भवंति ।

तहप्पगारे उवस्सए राओ वा, विआले वा णिक्खममाणे वा,  
पविसमाणे वा पुरा हत्थेण पच्छा पाएण, तओ संजयामेव  
णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।

४६—केवली बूया—आयाण मेयं—जे तत्थ समणाण वा, माहणाण  
वा, छत्तए वा, मत्तए वा, दंडए वा, लट्ठिया वा, भिसिया  
वा, 'नालिया वा, चेलं वा'<sup>७</sup>, चिलिमिली वा, चम्मए वा,  
चम्मकोसए वा, चम्म-छेदणए वा—दुव्वद्धे दुण्णिक्खित्ते

१—से य ( अ ) ।

२—उज्जुमडा ( अ, छ ) ।

३—समिय ( घ ) ; समिया ( छ ) ।

४—<sup>०</sup> दुवारामो ( घ ) ।

५—नेरइयाओ ( अ ) ; निययाओ ( घ ) ।

६—संनिरुद्धिओ ( अ ) ।

७—नालिया वा चेले वा ( अ ) ; चेल वा नालिया वा ( घ, ञ ) ; नालिया वा ( छ ) ।

अणिकपे-चलाचले-भिकखू य राओ वा, वियाले वा,  
णिकखममाणे वा, पविसमाणे वा, पयलेज्ज वा, पवडेज्ज  
वा,

से तत्थ पयलमाणे वा, पवडमाणे वा हत्थं वा, पायं वा,  
•बाहुं वा, ऊरुं वा, उदरं वा, सीसं वा अन्नयरं वा  
कायंसिं० इंदिय-जायं लूसेज्ज वा, पाणाणि वा, भूयाणि वा,  
जीवाणि वा, सत्ताणि वा अभिहणेज्ज वा, •वत्तेज्ज वा,  
लेसेज्ज वा, संघंसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा,  
किलामेज्ज वा, ठाणाओ ठाणं संकामेज्ज वा, जीविआओ०  
ववरोवेज्ज वा ।

अहं भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइन्ता, एस हेऊ, एस कारणं,  
एस उवएसो,  
जं तहप्पगारे उवस्सए पुरा हत्थेणं पच्छा पाएणं, तओ  
संजयामेव णिक्खेमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।

उवस्सय-जायणा-पदं

४७-से आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा,  
परियावसहेसु वा अणुवीइ उवस्सयं जाएज्जा ।

जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए<sup>१</sup>, ते उवस्सयं  
अणुण्वेज्जा—कामं खलु आउसो! अहालंदं अहापरिण्णातं  
वसिस्सामो जाव आउसंतो, जाव आउसंतस्स उवस्सए,  
जाव साहम्मिया 'एत्ता, ताव'<sup>२</sup> उवस्सयं गिण्हिस्सामो, तेण  
परं विहरिस्सामो ।

१-समाहिट्ठाए (अ, क, घ, छ) ; समाहिट्ठए (ब) ।

२-एवावता (अ) ; इत्ता ता (क) ; इत्ता वा (घ) ; इं ताव (छ) ।

सेज्जायर-णाम-गोय-पदं

४८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जस्सुवस्सए संवसेज्जा, तस्स पुव्वमेव णाम-गोयं जाणेज्जा । तओ पच्छा तस्स गिहे णिमंते-माणस्स अणिमंतेमाणस्स वा असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा—अफासुयं \*अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लामे संते० णो पडिगाहेज्जा ।

उवस्सय-विसुद्धि-पदं

४९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—ससागारियं सागणियं स-उदयं, णो पण्णस्स निक्खमणपवेसाए, णो पण्णस्स वायण-<sup>\*</sup>पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग०-चिंताए,  
तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहियं वा चेतेज्जा ।

५०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—गाहावइ-कुलस्स मज्झमज्जेणं गंतुं पथं पडिबद्ध वा<sup>१</sup>, णो पण्णस्स <sup>\*</sup>णिक्खमणपवेसाए, णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग०-चिंताए,  
तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

५१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा, <sup>\*</sup>गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा<sup>०</sup>, कम्मकरीओ



वा अण्णमण्ण मक्कोसंति वा, \*बंघंति वा, संभंति वा°,  
 उह्वेति वा, णो पण्णस्स (जाव २।४९) चिताए,  
 सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा \*सेज्जं वा,  
 णिसीहियं वा° चेतेज्जा ।

५२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—  
 इह खलु गाहावई वा, (जाव २।५१), कम्मकरीओ वा  
 अण्णमण्णस्स गायं तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा,  
 वसाए वा, अब्भंगे(गें?) ति वा, मक्खे(खें?) ति वा, णो  
 पण्णस्स (जाव २।४९) चिताए,  
 तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, \*सेज्जं वा, णिसीहियं वा°  
 चेतेज्जा ।

५३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—  
 इह खलु गाहावई वा, (जाव २।५१), कम्मकरीओ वा,  
 अण्णमण्णस्स गायं सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण<sup>१</sup> वा,  
 वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा, आघंसंति वा, पघंसंति  
 वा, उव्वलेति वा, उव्वट्ठेति वा, णो पण्णस्स णिक्खमण  
 (जाव २।४९) चिताए,  
 तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, \*सेज्जं वा, णिसीहियं  
 वा°, चेतेज्जा ।

५४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—  
 इह खलु गाहावई वा, (जाव २।५१), कम्मकरीओ वा  
 अण्णमण्णस्स गायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण  
 वा उच्छोलेति वा, पघोवेति वा, सिचंति वा, सिणावेति  
 वा, णो पण्णस्स (जाव २।४९) चिताए,

तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, \*सेज्जं वा, णिसीहियं वा० चेतेज्जा ।

५५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सय जाणेज्जा—  
इह खलु गाहावई वा, (जाव २।५१), कम्मकरीओ वा  
णिगिणा ठिआ, णिगिणा उवट्ठीणा मेहुणधम्मं विण्णवेति,  
रहस्सियं वा मंतं मेतेति, णो पण्णस्स (जाव २।४९)  
चित्ताए,  
तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, \*सेज्जं वा, णिसीहियं वा० चेतेज्जा ।

५६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—  
आइण्णसलेक्खं<sup>१</sup>, णो पण्णस्स (जाव २।४९) चित्ताए,  
तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा  
चेतेज्जा ।

संथारग-पदं

५७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा संथारगं एसित्तए ।  
सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—  
सअंडं \*सपाणं सबीअं सहरियं सउस सउदयं सउत्तिग-पणग-  
दग-मट्ठिय-मक्कडा०-सत्ताणगं—  
तहप्पगारं संथारगं—\*अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे०  
लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

५८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—  
अप्पंडं \*अप्पपाणं अप्पवीअं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं  
अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्ठिय-मक्कडा०-सत्ताणगं, गरुयं,

१- ° सलिखे ( घ ) . ° सलेखे ( छ ) ।

तहप्पगारं संधारणं—\*अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे<sup>०</sup>  
लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

५९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण संधारणं जाणेज्जा—  
अप्पंडं (जाव २।५८) संताणगं, लहुयं अप्पडिहारियं,  
तहप्पगारं संधारणं<sup>१</sup>—\*अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे<sup>०</sup>  
लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

६०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण संधारणं जाणेज्जा—  
अप्पंडं (जाव २।५८) संताणगं, लहुयं पाडिहारियं णो  
अहावद्धं,  
तहप्पगारं संधारणं—\*अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे<sup>०</sup>  
लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

६१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण संधारणं जाणेज्जा—  
अप्पंडं (जाव २।५८) संताणगं, लहुयं पाडिहारियं अहावद्धं,  
तहप्पगारं संधारणं—\*फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे<sup>०</sup> लाभे  
संते पडिगाहेज्जा ।

संधारण-पडिमा-पदं

६२—इच्चेयाइं आयतणाइं उवाइक्कम्म अह भिक्खू जाणेज्जा,  
इमाहिं चउहिं पडिमाहिं संधारणं एसित्तए ।

६३—तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उद्दिसिय-उद्दिसिय संधारणं  
जाएज्जा, तंजहा—इक्कडं वा, कडिणं<sup>२</sup> वा, जंतुयं वा, परगं

१—क्वचित् 'सेज्जा संधारणं' इति पाठोऽस्ति । तत्र 'सेज्जा' लिपिदोषेण प्रसिद्धः इति  
संभाव्यते ।

२—कडिणं ( घ ) ।

वा, मोरगं<sup>१</sup> वा, तणं<sup>२</sup> वा, कुसं वा, 'कुच्चगं वा'<sup>३</sup>, पिप्पलगं वा, पलालगं वा ।

से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भगिणि ! त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अण्णयरं संथारगं ?

तहप्पगारं सयं वा णं जाएज्जा परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं \*त्ति मण्णमाणे<sup>०</sup> लाभे संते पडिगाहेज्जा—पढिमा पडिमा ।

६४—अहावरा दोच्चा पडिमा—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पेहाए संथारगं जाएज्जा, तंजहा—गाहावइं वा, गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणिं वा, गाहावइ-पुत्तं वा, गाहावइ-धूयं वा, सुण्हं वा, धाइं वा, दासं वा, दासि वा, कम्मकरं वा, कम्मकरिं<sup>४</sup> वा, से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भगिणि ! त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अण्णयरं संथारगं ?

तहप्पगारं संथारगं सयं वा णं जाएज्जा परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं \*त्ति मण्णमाणे लाभे संते<sup>०</sup> पडिगाहेज्जा—दोच्चा पडिमा ।

६५—अहावरा तच्चा पडिमा—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जस्सुवस्सए संवसेज्जा, ते तत्थ अहासमण्णागए, तंजहा—इक्कडे वा, \*कढिणे वा, जंतुए वा, परो वा, मोरगे वा, तणे वा, कुसे वा, कुच्चगे वा,

१—पोरग ( घ ) ।

२—तणगं ( क, च, छ, ङ ) ।

३—कुच्चग वा वच्चग वा ( चू ) ।

४—कम्मकरी ( अ, घ, ङ ) , कम्मकरीय ( च, छ ) ।

‘पिप्पले वा<sup>०</sup>, पलाले वा । तस्स लाभे संवसेज्जा, तस्स अलाभे उक्कुडुए वा, णेसज्जिए वा विहरेज्जा—तच्चा पडिमा ।

६६—अहावरा चउत्था पडिमा—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहासंथड मेव संधारणं जाएज्जा, तंजहा—पुढविसिलं वा, कट्टसिलं वा अहासंथड मेव । तस्स लाभे संवसेज्जा, तस्स अलाभे उक्कुडुए वा, णेसज्जिए वा विहरेज्जा—चउत्था पडिमा ।

६७—इच्चेयाणं चउण्हं पडिमाणं अण्णयरं पडिमं पडिवज्जमाणे  
 \*णो एवं वएज्जा मिच्छा पडिवण्णा खलु एते भयंतारो,  
 अहमेगे सम्मं पडिवन्ने,  
 जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति,  
 जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सव्वे  
 वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया<sup>०</sup> अन्नोन्नसमाहीए एवं च ण  
 विहरंति ।

संधारण-पच्चप्पण-पदं

६८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा संधारणं पच्चप्पिणित्ताए ।

सेज्जं पुण संधारणं जाणेज्जा—सअंडं (जाव २।५७) संताणगं, तहप्पगारं संधारणं णो पच्चप्पिणेज्जा ।

६९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा संधारणं पच्चप्पिणित्ताए ।

सेज्जं पुण संधारणं जाणेज्जा—अप्पंडं (जाव २।५८) संताणगं, तहप्पगारं संधारणं पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय, आयाविय-आयाविय, विणिद्धुणिय<sup>१</sup>-विणिद्धुणिय, तओ संजयामेव पच्चप्पिणेज्जा ।

१—विहुणिय २ ( क, च ) ; विट्ठणिय २ ( घ, ब ) ।

उच्चारपासवण-भूमि-पदं

७०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा समाणे वा, वसमाणे वा  
गामाणुगामं दूइज्जमाणे वा पुव्वामेव णं<sup>१</sup> पण्णस्स उच्चार-  
पासवणभूमिं पडिलेहेज्जा ।

७१—केवली बूया—आयाण मेयं अपडिलेहियाए उच्चार-पासवण  
भूमिए, भिक्खू<sup>२</sup> वा भिक्खुणी वा राओ वा विआले वा  
उच्चार-पासवणं परिट्टवेमाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा,  
से तत्थ पयलमाणे वा पवडमाणे वा हत्थं वा पायं वा  
•बाहुं वा, ऊरु वा, उदरं वा, सीसं वा, अन्नयरं वा  
कायंसि इंदिय-जायं<sup>३</sup> लूसेज्ज वा पाणाणि वा, •भूयाणि वा,  
जीवाणि वा, सत्ताणि वा अभिहणेज्ज वा वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज  
वा, संघसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा, किलामेज्ज  
वा, ठाणाओ ठाणं सकामेज्ज वा, जीविआओ<sup>३</sup> ववरोवेज्ज  
वा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइन्ता, एस हेऊ, एस कारणं,  
एस उवएसो, जं पुव्वामेव पण्णस्स उच्चार-पासवणभूमिं  
पडिलेहेज्जा ।

सयण-विहि-पदं

७२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा सेज्जा-संथारग-भूमि  
पडिलेहित्ते, णण्णत्थ आयरिएण वा उवज्झाएण वा,  
•पवत्तीए वा, थेरेण वा, गणिणा वा, गणहरेण वा<sup>३</sup>,  
गणावच्छेइएण<sup>३</sup> वा, बालेण वा, बुद्धेण वा, सेहेण वा,  
गिलाणेण वा, आएसेण वा,

१—X ( क, घ, च ) ।

२—से भिक्खु ( छ, व ) ।

३—गणावच्छेइएण ( च ) ।

अंतेण वा, मज्जेण वा, ससेण वा, विसमेण वा, पवाएण वा, णिवाएण वा, 'तओ संजयामेव' पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय<sup>१</sup> बहु-फासुयं सेज्जा-संधारणं संधरेज्जा ।

७३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुयं सेज्जा-संधारणं संधरेत्ता अभिकंखेज्जा बहु-फासुए सेज्जा-संधारए दुरुहित्तेण, से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुए सेज्जा संधारए दुरुहमाणे, से पुव्वामेव ससीसोवरियं कायं पाए य पमज्जिय-पमज्जिय, तओ संजयामेव, बहु-फासुए सेज्जा-संधारणे दुरुहेज्जा, २ ता तओ संजयामेव बहु-फासुए सेज्जा-संधारए सएज्जा ।

७४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुए सेज्जा-संधारए सयमाणे, णो अण्णमण्णस्स हत्थेण हत्थं, पाएण पायं, काएण कायं आसाएज्जा ।

से अणासायमाणे, तओ संजयामेव बहु-फासुए सेज्जा-संधारए सएज्जा ।

७५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उस्सासमाणे वा, णीसासमाणे वा, कासमाणे वा, छीयमाणे वा, जंभायमाणे वा, उड्डुए<sup>३</sup> वा, वायणिसग्गे वा करेमाणे, पुव्वामेव आसयं वा, पोसयं वा, पाणिणा परिपिहत्ता, तओ संजयामेव ऊससेज्ज<sup>४</sup> वा, णीससेज्ज वा, कासेज्ज वा, छीएज्ज वा, जंभाएज्ज वा, उड्डुयं वा, वायणिसग्गं वा करेज्जा ।

१—× ( क, घ, च, व ) ।

२—पमज्जिय तओ संजयामेव ( क, घ, च, छ, व ) ।

३—उड्डोए ( घ, च, छ ) ।

४—ऊसासेज्ज ( क, घ, च, छ ) ।

७६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा—

समा वेगया सेज्जा भवेज्जा, विसमा वेगया सेज्जा भवेज्जा,  
 पवांता वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिवाता वेगया सेज्जा भवेज्जा,  
 ससरक्खा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्प-ससरक्खा वेगया सेज्जा  
 भवेज्जा, सदंस-मसगा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्प-दंस-  
 मसगा वेगया सेज्जा भवेज्जा,  
 सपरिसाडा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अपरिसाडा वेगया  
 सेज्जा भवेज्जा,  
 सउवसग्गा वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिरुवसग्गा वेगया सेज्जा  
 भवेज्जा,  
 तहप्पगाराहिं सेज्जाहि संविज्जमाणार्हि पग्गहिततराणं  
 विहारं विहरेज्जा, णो किंचिवि गिलाएज्जा ।

७७-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं  
 सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—ति वेमि ।



तदयं अज्झयणं

## इरिया

पढमो उद्देशो

वासावास-पदं

१-अब्भुवगए खलु वासावासे अभिपवुट्ठे बह्वे पाणा अभिसंभूया,  
बह्वे बीया अहुणुब्भिन्ना<sup>१</sup>, अंतरा से मग्गा बहुपाणा  
बहुबीया \*बहुहरिया बहु-ओसा बहु-उदया बहु-उत्तिग-पणग-  
दग-मट्टिय-मक्कडा-<sup>०</sup>संताणगा, अणभिककंता पंथा, णो  
विण्णाया मग्गा, सेवं णच्चा णो गामाणुगामं दूइज्जेज्जा,  
तओ संजयामेव वासावासं उवल्लिएज्जा ।

२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—

गामं वा, \*णगरं वा, खेडं वा, कव्वडं वा, मडंबं वा, पट्टणं  
वा, आगरं वा, दोणमुहं वा, णिगमं वा, आसमं वा,  
सण्णिवेसं वा<sup>०</sup>, रायहारिणि वा,  
इमंसि खलु गामंसि वा, \*णगरंसि वा, खेडंसि वा, कव्वडंसि  
वा, मडंबंसि वा, पट्टणंसि वा, आगरंसि वा, दोणमुहंसि  
वा, णिगमंसि वा, आसमंसि वा, सण्णिवेसंसि वा<sup>०</sup>,  
रायहारिणिसि वा—

णो महती विहारभूमी, णो महती वियारभूमी, णो सुलभे  
पीढ-फलग-सेज्जा-संधारए, णो सुलभे फासुए उंछे अहेसणिज्जे,  
बह्वे जत्थ समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा उवागया  
उवागमिस्संति य, अच्चाइण्णा वित्ती—

---

१-अहुणुब्भिया (अ); अहुणोब्भिन्ना (ब); अहुणामिन्ना (च, द),

णो पण्णस्स निक्खमण-पवेसाए, \*णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-  
परियट्ठणाणुपेह<sup>०</sup>-धम्माणुओग-चित्ताए,  
सेवं णच्चा तहप्पगारं गामं वा, णगरं वा, (जाव) रायहाणि  
वा णो वासावासं उवल्लिएज्जा ।

३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—

गामं वा (जाव ३।२) रायहाणि वा,  
इमंसि खलु गामंसि वा (जाव ३।२) रायहारिंसि वा—  
महती विहारभूमी, महती वियारभूमी, सुलभे जत्थ पीढ-  
फल-सेज्जा-संथारए, सुलभे फासुए उंछे अहेसणिज्जे, णो  
जत्थ बहवे समण-<sup>०</sup>माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा<sup>०</sup> उवागया  
उवागमिस्संति य, अप्पाइण्णा वित्ती—

\*पण्णस्स निक्खमण-पवेसाए, पण्णस्स वायण-पुच्छण-  
परियट्ठणाणुपेह-धम्माणुओग-चित्ताए,  
सेवं णच्चा तहप्पगारं गामं वा (जाव ३।२)<sup>०</sup> रायहाणि  
वा, तओ सजयामेव वासावासं उवल्लिएज्जा ।

गामाणुगाम-विहार-पद

४-अह पुणेवं जाणेज्जा---

चत्तारि मासा वासाण वीइक्कंता, हेमंतोण य<sup>०</sup> पंच-दस-  
रायकप्पे परिवुसिए, अंतरा से मग्गा बहुपाणा \*बहुबीया  
बहुहरिया बहु-ओसा बहु-उदया बहु-उत्तिग-पणग-दग-  
मट्ठिय<sup>०</sup>-मक्कडा-संताणगा, णो जत्थ बहवे समण-<sup>०</sup>माहण-  
अतिहि-किवण-वणीमगा<sup>०</sup> उवागया उवागमिस्संति य,  
सेवं णच्चा णो गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

५-अहं पुणेवं जाणेज्जा—

चत्तारि मासा वासाणं वीइक्कंता, हेमंताणं यं पंच-दस-  
रायकप्पे परिवुसिए,

अंतरा से मग्गा अप्पंडा \*अप्पपाणा अप्पबीआ अप्पहरिया  
अप्पोसा अप्पुदया अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्ठिय-मक्कडा°-  
संताणगा, बहुवे जत्थं समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा  
उवागया उवागमिस्संति य,

सेवं णच्चा तओ संजया मेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे पुरओ  
जुगमायं पेहमाणे, दट्ठूणं तसे पाणे उद्धट्ठु पायं रीएज्जा,  
साहट्ठु पायं रीएज्जा, उक्खिप्प पायं रीएज्जा, तिरिच्छं<sup>१</sup> वा  
कट्ठु पायं रीएज्जा । सति परक्कमे संजता मेव परक्कमेज्जा,  
णो उज्जुयं गच्छेज्जा । तओ संजया मेव गामाणुगामं  
दूइज्जेज्जा ।

७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा  
से पाणाणि वा, वीयाणि वा, हरियाणि वा, उदए वा,  
मट्ठिया वा अविद्धत्था । सति परक्कमे \*संजता मेव  
परक्कमेज्जा°, णो उज्जुयं गच्छेज्जा । तओ संजया मेव  
गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा  
से विरूव-रूवाणि पच्चंतिकाणि दस्सुगायतणाणि मिलक्खूणि  
अणारियाणि दुस्सन्नप्पाणि दुप्पणवणिज्जाणि अकालपडि-  
बोहीणि अकालपरिभोईणि, सति लाढे विहारए,

१-वितिरिच्छ (अ, घ, च, व) ।

सथरमाणेहि जणवएहिं, णो विहार-वत्तियाए पवज्जेज्जा गमणाए ।

९-केवली बूया—आयाण मेयं ते णं बाला 'अयं तेणे' 'अयं उवचरए' 'अयं तओ आगए' त्ति कट्ठं तं भिक्खुं अक्कोसेज्ज वा, \*बंधेज्ज वा, रुंभेज्ज वा°, उद्देज्ज वा, वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुच्छणं 'अच्छिदेज्ज वा', अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज वा । अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइन्ता, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°, जं णो तहप्पगाराणि विरुव-रूवाणि पच्चंतियाणि दस्सुगायतणाणि \*मिलक्खूणि अणारियाणि दुस्सन्नप्पाणि दुप्पणवणिज्जाणि अकालपडिबोहीणि अकालपरिभोईणि, सति लाढे विहाराए, सथरमाणेहिं जणवएहिं°. विहार-वत्तियाए पवज्जेज्जा गमणाए, तओ संजया सेव गामाणुगामं दइज्जेज्जा ।

१०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दइज्जमाणे—अंतरा से अरायाणि वा, गणरायाणि वा, जुवरायाणि वा दोरज्जाणि वा, वेरज्जाणि वा, विरुद्धरज्जाणि वा, सति लाढे विहाराए, सथरमाणेहिं जणवएहिं, णो विहार-वत्तियाए पवज्जेज्ज गमणाए ।

११-केवली बूया—आयाण मेय ते णं बाला 'अयं तेणे' \*अय उवचरए' 'अयं तओ आगए' त्ति कट्ठं तं भिक्खं अक्कोसेज्ज वा, बंधेज्ज वा, रुंभेज्ज वा, उद्देज्ज वा,

१-उवद्देज्ज ( अ, क, च, ब ) ।

२-अच्छिदेज्ज वा मिदेज्ज वा ( च, छ, ब ), अच्छिदेज्ज वा अमिदेज्ज वा ( अ ) ।

३-परिद्वेज्ज ( घ, च, ब ) ।

वत्थं पडिग्गहं कंवलं पायपुंछणं अञ्छिदेज्ज वा, अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज वा। अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा—एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो, जं णो तहप्पगाराणि अरायाणि वा, गणरायाणि वा, जुवरायाणि वा, दोरज्जाणि वा, वेरज्जाणि वा, विरुद्धरज्जाणि वा, सति लाढे विहाराए, संथरमाणेहि जणवएहिं, णो विहार-वत्तियाए पवज्जेज्ज<sup>०</sup> गमणाए। तओ संजया मेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा।

१२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा से विहं सिया। सेज्जं पुण विहं जाणेज्जा—एगाहेण वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पंचाहेण वा पाउणेज्ज वा, नो पाउणेज्ज वा,

तहप्पगारं विहं अणेगाह-गमणिज्जं। सति लाढे \*विहाराए, संथरमाणेहिं जणवएहिं<sup>०</sup>, णो विहार-वत्तियाए पवज्जेज्जा गमणाए।

१३—केवली बूया—आयाण मेयं। अंतरा से वासे सिया, पाणेसु वा, पणएसु वा, बीएसु वा, हरिएसु वा, उदएसु वा, मट्टियासु<sup>१</sup> वा अविद्धत्थाए।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा \*एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो<sup>०</sup>, जं तहप्पगारं विहं अणेगाह-गमणिज्जं \*सति लाढे विहाराए, संथरमाणेहिं जणवएहिं, णो विहार-वत्तियाए पवज्जेज्जा<sup>०</sup> णो गमणाए, तओ संजया मेव गामाणु-गामं दूइज्जेज्जा।

१—मट्टिएसु (क, च) ; मट्टियाएसु (व, छ)।

नावा-विहार-पदं

१४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे<sup>१</sup>—अंतरा  
से णावासंतारिमे उदए सिया । सेज्जं पुण णावं जाणेज्जा—  
अस्संजए भिक्खु-पडियाए किणेज्ज वा, पामिच्चेज्ज वा,  
णावाए वा णाव<sup>२</sup>-परिणामं कट्टु थलाओ वा णावं जलंसि  
ओगाहेज्जा, जलाओ वा णावं थलंसि उक्कसेज्जा, पुण्णं वा  
णावं उस्सिचेज्जा, सण्णं वा णावं उप्पीलवेज्जा,  
तहप्पगारं णावं उड्ढगापिणिं वा, अहेगामिणिं वा, तिरिय-  
गामिणिं वा, परं जोयणमेराए अद्धजोयणमेराए वा अप्पतरो  
वा भुज्जतरो वा णो दुरुहेज्ज गमणाए ।

१५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पुच्चामेव तिरिच्छ-संपातिमं णावं  
जाणेज्जा, २ ता, से त मायाए एंगंतमवक्कमेज्जा, २ ता,  
भंडगं पडिलेहेज्जा<sup>३</sup> २ ता, एगाभोयं<sup>४</sup> भंडगं करेज्जा, २ ता,  
ससीसोवरियं कायं पाए य पमज्जेज्जा, २ ता, सागारं भत्तं  
पच्चक्खाएज्जा, २ ता, एगं पायं जले किच्चा, एगं पायं थले  
किच्चा, तओ संजया मेव णावं दुरुहेज्जा ।

१६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णावं दुरुहमाणे णो णावाए  
पुरओ दुरुहेज्जा, णो णावाए मग्गओ दुरुहेज्जा, णो णावाए  
मज्झतो दुरुहेज्जा, णो वाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय,  
अंगुलि<sup>५</sup> उवदंसिय-उवदंसिय, ओणमिय-ओणमिय,  
उण्णमिय-उण्णमिय णिज्झाएज्जा ।

१—दूइज्जेज्जा ( क, घ, च, छ, व ) ।

२—णाव ( क, घ, च, छ, व ) ।

३—पडिगाहेज्जा ( छ, छ, व ) ।

४—<sup>०</sup> माय ( अ ) ; <sup>०</sup> भोयण ( छ ) ।

५—अंगुलियाए ( च, छ, व ) ।

१७—से णं परो णावा-गतो णावा-गयं वएज्जा—

आउसंतो! समणा! एयं ता<sup>१</sup> तुमं णावं उक्कसाहि वा,  
वोक्कसाहि वा, खिवाहि वा, रज्जुयाए<sup>२</sup> वा गहाय  
आकसाहि ।

णो से तं परिन्नं परिजाणेज्जा<sup>३</sup>, तुसिणीओ उवेहेज्जा ।

१८—से णं परो णावा-गओ णावा-गयं वएज्जा—

आउसंतो! समणा! णो संचाएसि तुमं णावं उक्कसित्तए वा,  
वोक्कसित्तए वा, खिवित्तए वा, रज्जुयाए वा गहाय  
आकसित्तए ।

आहर एतं णावाए रज्जूयं, सयं चैव णं वयं णावं  
उक्कसिस्सामो वा, वोक्कसिस्सामो वा, खिविस्सामो वा,  
रज्जुयाए<sup>४</sup> वा गहाय आकसिस्सामो ।

णो से तं परिणं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा ।

१९—से णं परो णावा-गओ णावा-गयं वएज्जा—

आउसंतो! समणा! एयं ता<sup>५</sup> तुमं णावं अलित्तेण<sup>६</sup> वा,  
पिहएण<sup>७</sup> वा, वंसेण वा, वलएण वा, अवल्लएण<sup>८</sup> वा  
वाहेहि ।

णो से तं परिणं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा ।

१—X (अ, छ) ।

२—रज्जुए (अ, क, घ, ब) ।

३—जाणेज्जा (घ, ब) ।

४—रज्जुए (च) ।

५—X (छ) ।

६—अलित्तेण (अ, क, घ, च, छ, ब) ।

७—पीठेण (अ, क, घ, च, उ, ब) । अथ पाठो निशीथस्य तथा अग्रयुक्ताचाराङ्गादर्शयानुसारेण  
स्वीकृत ।

८—अवल्लेण (च) ।

२०—से णं परो णावा-गओ णावा-गयं वदेज्जा—आउसंतो!  
समणा! एयं ता तुमं णावाए उदयं हत्थेण वा, पाएण वा,  
मत्तेण वा, पडिग्गहेण वा, णावा-उस्सिचणेण वा  
उस्सिचाहि ।

णो से तं परिणं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा ।

२१—से णं परो णावा-गओ णावा-गयं वएज्जा—

आउसंतो! समणा! एतं ता तुमं णावाए उत्तिगं हत्थेण वा,  
पाएण वा, बाहुणा वा, ऊरुणा<sup>१</sup> वा, उदरेण वा, सीसेण  
वा, काएण वा, णावा-उस्सिचणेण वा, चेलेण वा, 'मट्टियाए  
वा, कुसपत्तएण वा'<sup>२</sup>, कुर्विदेण<sup>३</sup> वा पिहेहि ।

णो से तं परिणं परिजाणेज्जा, तुसीणिओ उवेहेज्जा ।

२२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णावाए उत्तिगेणं उदयं  
आसवमाणं पेहाए, उवरुवरि<sup>४</sup> णावं कज्जलावेमाणं पेहाए णो  
परं उवसंकमित्तु एवं ब्रूया—आउसंतो! गाहावइ! एयं ते  
णावाए उदयं उत्तिगेणं आसवति, उवरुवरि वा णावा  
कज्जलावेति ।

एतप्पगारं मणं वा वायं वा णो पुरओ कट्ठु बिहरेज्जा,  
अप्पुस्सुए अबहिलेस्से, एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज<sup>५</sup>  
समाहोए, तओ संजयामेव णावा-संतारिमे उदए अहारियं  
रीएज्जा ।

१—ऊरुणा ( घ, च, छ, ब ) ।

२—निशीथ-चूणि, भाग ४, पृष्ठ २०६ : 'मट्टियाए वा कुसपत्तेण वा' इत्यस्य स्थाने  
'कुसुमट्टियाए वा' इति पाठोऽस्ति ।

३—कुर्विदेण ( अ, क, घ, च, छ, ब )—अय पाठो निशीथस्य तथा अप्रयुक्ताचाराङ्गादर्शस्या-  
नुसारेण स्वीकृत ।

४—उवरुवरि ( घ ) ।

५—विउसज्ज ( क ) ।



२३-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं  
सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सदा जएज्जासि ।

—ति बेमि ।

### बीओ उद्देसो

२४-से णं परो णावा-गओ णावा-गयं वदेज्जा—आउसंतो !  
समणा ! एयं ता तुमं छत्तगं वा, \*मत्तगं वा, दंडगं वा,  
लट्ठियं वा, भिसियं वा, नालियं वा, चेलं वा, चिलिमिलिं  
वा, चम्मगं वा, चम्म-कोसगं वा<sup>१</sup>, चम्म-छेयणगं वा  
गेण्हाहि, एयाणि तुमं विरूव-रूवाणि सत्थ-जायाणि धारेहि,  
एयं ता तुमं दारगं वा 'दारिगं वा' पज्जेहि,  
णो से तं परिणं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा ।

२५-से णं परो णावा-गए णावा-गयं वदेज्जा—आउसंतो ! एस णं  
समणे णावाए भंडभारिए भवइ । से णं बाहाए गहाय  
णावाओ उदगंसि पक्खिवह<sup>२</sup> ।  
एतप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से य चीवरधारी सिया,  
क्खिप्पामेव चीवराणि उव्वेड्ढिज्ज वा, णिव्वेड्ढिज्ज वा,  
उप्फेसं वा करेज्जा ।

२६-अह पुणेवं जाणेज्जा—अभिवकंत-कूरकम्मा खलु बाला  
बाहाहिं गहाय नावाओ उदगंसि पक्खिवेज्जा ।  
से पुव्वामेव जएज्जा—आउसंतो ! गाहावइ ! मा भेतो बाहाए  
गहाय णावाओ उदगंसि पक्खिवह, सयं चेव णं अहं णावातो  
उदगंसि ओगाहिस्सामि ।

१—× ( क, घ, च ) ।

२—पक्खिवेज्जा ( क, घ, च, छ, व ) ।

से णेवं वयंतं परो सहसा बलसा बाहाहिं गहाय णावाओ  
उदगंसि पक्खिवेज्जा, तं णो सुमणे सिया, णो दुम्मणे<sup>१</sup>  
सिया, णो उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा, णो तेसि बालाणं  
घाताए वहाए समुट्ठेज्जा ।

अप्पुस्सुए <sup>२</sup>अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज<sup>०</sup>  
समाहीए, तओ संजयामेव उदगंसि पवेज्जा ।

२७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदगंसि पवमाणे णो हत्थेण  
हत्थं, पाएण पायं, काएण कायं, आसाएज्जा ।

‘से अणासायमाणे’<sup>३</sup>, तओ संजयामेव उदगंसि पवेज्जा ।

२८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदगंसि पवमाणे णो उम्मग<sup>४</sup>-  
णिमगियं<sup>५</sup> करेज्जा,

मामेयं उदगं कण्णेसु वा, अच्छीसु वा, णक्कंसि वा, मुहंसि  
वा परियावज्जेज्जा, तओ संजयामेव उदगंसि पवेज्जा ।

२९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदगंसि पवमाणे दोब्बलियं  
पाउणेज्जा,

खिप्पामेव उवहिं विगिंचेज्ज वा विसोहेज्ज वा, णो चेव णं  
सातिज्जेज्जा ।<sup>५</sup>

३०—अहं पुणेवं जाणेज्जा—पारए सिया उदगाओ तीरं पाउणित्तए,  
तओ संजयामेव उदउल्लेण वा, ससिणिद्धेण वा काएण  
उदगतीरे चिट्ठेज्जा ।

१—दुमणे ( घ, छ, ब ) ।

२—से अणासादए अणा<sup>०</sup> ( अ ) ।

३—उम्मग ( घ, च, ब ) ।

४—<sup>०</sup> णिम्मगिय ( घ, च ) ।

५—सातिज्जेज्ज वा ( छ ) ।

३१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदउल्लं वा ससिणिद्धं वा कायं  
णो आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा, संलिहेज्ज वा, णिल्लिहेज्ज  
वा, उव्वलेज्ज वा, उव्वट्टेज्ज वा, आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ।

३२—अह पुण एवं जाणेज्जा विगओदए मे काए, वोच्छिन्न-  
सिणेहे<sup>१</sup> मे काए,  
तहप्पगारं कायं आमज्जेज्ज वा (जाव ३।३१) पयावेज्ज वा,  
तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

३३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे णो  
परेहिं सद्धिं  
परिजविय-परिजविय गामाणुगामं दूइज्जेज्जा, तओ संजयामेव  
गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

जघासंतारिम-उदग-पवं

३४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा  
से जंघा-संतारिमे उदए सिया,  
से पुव्वामेव ससीसोवरियं कायं पादे य पमज्जेज्जा, २ ता  
•सागारं भत्तं पच्चक्खाएज्जा, २ ता<sup>२</sup> एगं पायं जले किच्चा,  
एगं पायं थले किच्चा, तओ संजयामेव जंघा-संतारिमे  
उदए<sup>३</sup> अहारियं रीएज्जा ।

३५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जंघा-संतारिमे उदगे अहारियं  
रीयमाणे, णो 'हत्थेण हत्थं'<sup>४</sup> पाएण पायं, काएण कायं,  
आसाएज्जा । 'से अणासायमाणे'<sup>५</sup>, तओ संजयामेव जंघा-  
संतारिमे उदए अहारियं रीएज्जा ।

१—छिन्न ° ( क, घ, च, ब ) ।

२—उदगंसि ( क, घ, च ) ।

३—हत्थेण वा हत्थ ( अ ) ( सर्वत्र ) ।

४—से अणासादए अणा ° ( अ ) ।

३६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जंघा-संतारिमे उदए अहारियं रीयमाणे णो साय-वडियाए<sup>१</sup>, णो परदाह-वडियाए, महइ महालयंसि उदगंसि काय विउसेज्जा, तओ संजयामेव जंघा-संतारिमे उदए अहारिय रीएज्जा ।

३७—अह पुणेवं जाणेज्जा—पारए सिया उदगाओ तीरं पाउणित्तए, तओ सजयामेव उदउल्लेण वा ससणिद्धेण<sup>२</sup> वा काएण दगतीरए<sup>३</sup> चिट्ठेज्जा ।

३८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदउल्लं वा कायं, ससणिद्धं वा कायं णो आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा ।

३९—अह पुणेवं जाणेज्जा—विगतोदए मे काए, छिण्णसिणेहे मे काए,

तहप्पगारं कायं आमज्जेज्ज वा \*पमज्जेज्ज वा संलिहेज्ज वा णिल्लिहेज्ज वा उव्वलेज्ज वा जव्वट्टेज्ज वा आयावेज्ज वा<sup>०</sup> पयावेज्ज वा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

४०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे णो मट्ठियामएहिं पाएहिं हरियाणि छिंदिय-छिंदिय, विकुज्जिय-विकुज्जिय, विफालिय-विफालिय, उम्मग्गेणं हरिय-वहाए गच्छेज्जा । “जहेयं” पाएहिं मट्ठियं खिप्पामेव हरियाणि अवहरंतु” ।

माइड्ढाणं संफासे, णो एवं करेज्जा ।

से पुव्वामेव अप्पहरियं मग्गं पडिलेहेज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

१—साया ° ( अ ) ।

२—ससणिद्धेण ( च ) ।

३—उदगतीरए ( घ ) ।

४—जमेतं ( छ ) ।

विसमट्ठाण-परक्कम-पदं

४१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा  
से वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, पागाराणि वा, तोरणाणि  
वा, अग्गलाणि वा, अग्गल-पासगाणि वा, गड्डाओ वा,  
दरीओ वा । सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो  
उज्जुयं गच्छेज्जा ।

४२—केवली बूया—आयाण मेयं । से तत्थ परक्कममाणे पयलेज्ज  
वा, पवडेज्ज वा ।

से तत्थ पयलमाणे वा, पवडमाणे वा रुक्खाणि वा,  
गुच्छाणि वा, गुम्माणि वा, लयाओ वा, वल्लीओ वा,  
तणाणि वा, गहणाणि वा, हरियाणि वा, अवलंबिय-  
अवलंबिय उत्तरेज्जा<sup>१</sup>, जे तत्थ पाडिपहिया<sup>२</sup> उवागच्छंति,  
ते पाणी जाएज्जा, तओ संजयामेव अवलंबिय-अवलंबिय  
उत्तरेज्जा<sup>३</sup>, तओ गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

४३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा  
से जवसाणि वा, सगडाणि वा, रहाणि वा, सचक्काणि वा,  
परचक्काणि वा, सेणं वा विरूव-रूवं सण्णिविट्ठं<sup>४</sup> पेहाए,  
सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा णो उज्जुयं गच्छेज्जा ।

अभिणिचारिय-पदं

४४—से णं परो सेणागओ वएज्जा—आउसंतो ! एस णं समणे  
सेणाए अभिणिचारियं<sup>५</sup> करेइ । से णं बाहाए गहाय

१-उत्तारेज्जा ( अ ) ।

२-पाडिपघेया ( क ) ; पडिवाहेया ( घ ) ; पाडिपडिया ( छ ) ।

३-उत्तारेज्जा ( अ ) ।

४-सणिरुद्ध ( ब ) ।

५-अभिणिचारियं ( अ, क, घ, च, ब ) ।

आगसह । से णं परो बाहाहिं गहाय आगसेज्जा । तं णो  
सुमणे सिया, \*णो दुम्मणे सिया, णो उच्चावयं  
णियच्छेज्जा, णो तेसिं बालाणं घाताए वहाए समुद्देज्जा ।  
अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगाएणं अप्पाणं वियोसेज्ज<sup>०</sup>  
समाहीए । तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

पाडिपहिय-पदं

४५-से भिक्खू वा भिक्खुणो वा—अंतरा से पाडिपहिया  
उवागच्छेज्जा । तेणं पाडिपहिया एवं वदेज्जा—आउसंतो !  
समणा ! केवइए एस गामे वा, \*णगरे वा, खेडे वा, कव्वडे  
वा, मडंबे वा, पट्टणे वा, आगरे वा, दोणमुहे वा, णिगमे  
वा, आसमे वा, सण्णिवेसे वा<sup>०</sup>, रायहाणी वा ?  
केवइया एत्थ आसा हत्थी गामपिंडोलगा मणुस्सा  
परिवसंति ?

से बहुभत्ते बहुउदए बहुजणे बहुजवसे ?

से अप्पभत्ते अप्पुदए अप्पजणे अप्पजवसे ?

‘एयप्पगाराणि पसिणाणि पुट्ठो नो आइक्खेज्जा,  
एयप्पगाराणि पसिणाणि नो पुच्छेज्जा’<sup>१</sup> ।

४६-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, \*जं  
सव्वद्वेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—ति वेमि<sup>०</sup> ।

१-× ( व ) ; एयप्पगाराणि पसिणाणि नो पुच्छेज्जा एयप्पगाराणि पसिणाणि पुट्ठो वा  
अपुट्ठो वा णो वागरेज्जा ( क, च, छ ) ; एयप्पगाराणि पसिणाणि नो पुच्छेज्जा एय  
पुट्ठो वा अपुट्ठो वा णो वागरेज्जा ( घ ) ।

## तइओ उद्देसो

अंगचेट्टायुव्वं निज्झाण-पदं

४७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा  
 से वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, पागाराणि वा, \*तोरणाणि  
 वा, अग्गलाणि वा, अग्गल पासगाणि वा, गड्डाओ वा,<sup>०</sup>  
 दरीओ वा, कूडागाराणि वा, पासादाणि वा, णूम-गिहाणि  
 वा, रुक्ख-गिहाणि वा, पव्वय-गिहाणि वा, रुक्खं वा चेइय-  
 कडं, थूमं वा चेइय—कडं, आएसणाणि वा, \*आयतणाणि वा,  
 देवकुलाणि वा, सहाओ वा, पवाओ वा, पणिय-गिहाणि वा,  
 पणिय-सालाओ वा, जाण-गिहाणि वा, जाण-सालाओ वा,  
 सुहा-कम्मंताणि वा, दब्भ-कम्मंताणि वा, वद्ध-कम्मंताणि वा,  
 वक्क-कम्मंताणि वा, वण-कम्मंताणि वा, इंगाल-कम्मंताणि वा,  
 कट्ट-कम्मंताणि वा, सुसाण-कम्मंताणि वा, संति-कम्मंताणि  
 वा, गिरि-कम्मंताणि वा, कंदर-कम्मंताणि वा, सेलोवट्ठाण-  
 कम्मंताणि वा<sup>०</sup>, भवणगिहाणि वा णो बाहाओ पगिज्झिय-  
 पगिज्झिय, अंगुलियाए उद्दिसिय-उद्दिसिय, ओणमिय-  
 ओणमिय, उण्णमिय-उण्णमिय, निज्झाएज्जा, तओ संजयामेव  
 गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

४८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा  
 कच्छाणि वा, दवियाणि वा, णूमाणि वा, वलयाणि वा,  
 गहणाणि वा, गहण-विदुग्गाणि वा, वणाणि वा, वण-  
 विदुग्गाणि वा, पव्वयाणि वा, पव्वय-विदुग्गाणि वा, अगडाणि  
 वा, तलागाणि वा, दहाणि वा, णदीओ वा, वावीओ वा,  
 पोक्खरिणीओ वा; दीहियाओ वा, गुंजांलियाओ वा,

सराणि वा; सर-पतियाणि वा, सर-सर-पंतियाणि वा णो  
बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय (जाव ३।४७) णिज्झाएज्जा ।

४९—केवली बूया 'आयाण मेयं' जे तत्थ मिगा वा, पसुया' वा,  
पक्खी वा, सरीसिवा' वा, सीहा वा, जलचरा वा, थलचरा  
वा, खहचरा वा सत्ता । ते उत्तसेज्ज वा, वित्तसेज्ज वा,  
वाडं वा सरणं वा कंखेज्जा,  
चारे त्ति मे अयं समणे ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा \*एस पइन्ना, एस हेऊ, एस  
कारणं, एस उवएसो°,  
जं णो बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय (जाव ३।४७)  
णिज्झाएज्जा, तओ संजयामेव आयरिय-उवज्झाएहिं सद्धिं  
गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

आयरिय-उवज्झाय-सद्धिं-विहार-पद

५०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आयरिय-उवज्झाएहिं सद्धिं  
गामाणुगामं दूइज्जमाणे, णो आयरिय-उवज्झायस्स हत्थेण  
हत्थं, \*पाएण पायं, काएण कायं आसाएज्जा ।  
से° अणासायमाणे, तओ संजयामेव आयरिय-उवज्झाएहिं  
सद्धिं गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

५१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आयरिय-उवज्झाएहिं सद्धिं  
दूइज्जमाणे, अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा, ते णं  
पाडिपहिया एवं वएज्जा—  
आउसंतो! समणा! के तुब्भे? कओ वा एह? कहिं वा  
गच्छिहिह ?

१-पसू ( अ ) ।

२-सिरीसिवा ( अ, व, च ) ।



जे तत्थ आयरिए वा उवज्झाए वा से भासेज्ज वा,  
वियागरेज्ज वा । आयरिय-उवज्झायस्स भासमाणस्स वा,  
वियागरेमाणस्स वा णो अंतराभासं करेज्जा । तओ संजयामेव  
आहारातिणिए<sup>१</sup> दूइज्जेज्जा ।

आहारातिणिय-सद्धि-विहार-पदं

५२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आहारातिणियं गामाणुगामं  
दूइज्जमाणे, णो रातिणियस्स हत्थेण हत्थं, \*पाएण पायं,  
काएण कायं आसाएज्जा ।

से० अणासायमाणे, तओ संजयामेव आहारातिणियं गामाणु-  
गामं दूइज्जेज्जा ।

५३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आहारातिणियं दूइज्जमाणे,  
अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा । ते णं पाडिपहिया एवं  
वदेज्जा—

आउसंतो ! समणा ! के तुब्भे ? कओ वा एह ? कहिं वा  
गच्छिहिह ?

जे तत्थ सव्वरातिणिए<sup>२</sup> से भासेज्ज वा, वियागरेज्ज वा ।  
रातिणियस्स भासमाणस्स वा, वियागरेमाणस्स वा णो  
अंतराभासं भासेज्जा । तओ संजयामेव गामाणुगामं  
दूइज्जेज्जा ।

पाडिपहिय-पदं

५४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा  
से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा<sup>३</sup> । ते णं पाडिपहिया एवं  
वदेज्जा—

१—<sup>०</sup> राइणियाए (अ, व) ; अहा<sup>०</sup> (घ, च) ।

२—रातिणिए (घ) ।

३—आगच्छेज्जा (अ, च, छ) ।

आउसंतो ! समणा ! अवियाइं एत्तो पडिपहे पासह, तंजहा—  
मणुसं वा, गोणं वा, महिसं वा, पसुं वा, पक्खि वा,  
सरीसिवं<sup>१</sup> वा, जलयरं वा ? से आइक्खह, दंसेह । तं णो  
आइक्खेज्जा, णो दंसेज्जा, णो तेसिं<sup>२</sup> तं परिणं परिजाणेज्जा,  
तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाणं वा णो जाणंति वएज्जा, तओ  
संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

५५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा  
से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा<sup>३</sup> । ते णं पाडिपहिया एवं  
वएज्जा—

आउसंतो ! समणा ! अवियाइं एत्तो पडिपहे पासह—  
उदगपसूयाणि कंदाणि वा, मूलाणि वा, 'तयाणि वा,  
पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा,  
हरियाणि वा'<sup>४</sup>, उदगं वा संणिहियं, अगणिं वा  
संणिक्खित्तं ? से आइक्खह, \*दंसेह । त णो आइक्खेज्जा, णो  
दंसेज्जा, णो तेसिं तं परिणं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ  
उवेहेज्जा, जाणं वा णो जाणंति वएज्जा, तओ संजयामेव  
गामाणुगामं<sup>०</sup> दूइज्जेज्जा ।

५६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा  
से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा । ते णं पाडिपहिया एवं  
वएज्जा—

आउसंतो ! समणा ! अवियाइं एत्तो पडिपहे पासह—  
जवसाणि वा, \*सगडाणि वा, रहाणि वा, सचक्काणि वा,

१—सिरीसिव ( अ, छ, ब ) ; सिरीसव ( च ) ।

२—तस्स ( क, च, छ ) ।

३—आगच्छेज्जा ( अ, छ ) ।

४—तया पत्ता पुप्फा फला बीया हरिया ( अ, क, घ, च, छ, ब ) ।

परचक्काणि वा०, सेणं वा विरूव-रूवं संणिविट्ठं? से आइक्खह, दसेह । तं णो आइक्खेज्जा, णो दंसेज्जा णो तेसिं तं परिणं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाणं वा णो जाणंति वएज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

५७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा से पाडिपहिया \*उवागच्छेज्जा । तेणं पाडिपहिया एवं वदेज्जा—

आउसंतो ! समणा ! केवइए एत्तो गामे वा, \*णगरे वा, खेडे वा, कव्वडे वा, मडंबे वा, पट्टणे वा, आगरे वा, दोणमुहे वा, णिगमे वा, आसमे वा, सण्णिवेसे वा०, रायहाणी वा ? से आइक्खह, दसेह । तं णो आइक्खेज्जा, णो दंसेज्जा, णो तेसिं तं परिणं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाणं वा णो जाणंति वएज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

५८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा । ते णं पाडिपहिया एवं वदेज्जा—

आउसंतो ! समणा ! केवइए एत्तो गामस्स वा, णगरस्स वा, \*खेडस्स वा, कव्वडस्स वा, मडंबस्स वा, पट्टणस्स वा, आगरस्स वा, दोणमुहस्स वा, णिगमस्स वा, आसमस्स वा, सण्णिवेसस्स वा०, रायहाणीए वा मग्गे ? से आइक्खह, दसेह । तं णो आइक्खेज्जा, णो दंसेज्जा, णो तेसिं तं परिणं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाणं वा णो जाणंति वएज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

वियाल-पदं

५९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा से गोणं वियालं पडिपहे पेहाए, \*महिसं वियालं पडिपहे पेहाए, एवं—मणुस्सं, आसं, हत्थिं, सीहं, वग्घं, विगं, दीवियं, अच्छं, तरच्छं, परिसरं, सियालं, विरालं, सुणयं, कोल-सुणयं, कोकंतिं,० चित्ताचिल्लडं—

वियालं पडिपहे पेहाए, णो तेसि भीओ उम्मगेणं गच्छेज्जा, णो मग्गाओ मग्गं संकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो ख्खंसिं दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा, सरणं वा, सेणं वा, सत्थं वा कखेज्जा, अप्पुस्सुए \*अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज० समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

आमोसग-पद

६०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा से विहं सिया । सेज्जं पुण विहं जाणेज्जा—इमंसि खलु विहंसि बहवे आमोसगा उवगरण-पडियाए संपिडिया गच्छेज्जा, णो तेसिं भीओ उम्मगेणं गच्छेज्जा, णो मग्गाओ मग्गं संकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो ख्खंसिं दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा, सरणं वा, सेणं वा, सत्थं वा कखेज्जा, अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

६१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा से आमोसगा संपिडिया गच्छेज्जा। ते णं आमोसगा एवं वदेज्जा—आउसंतो! समणा! ‘आहर एयं’<sup>१</sup> वत्थं वा, पायं वा, कंवलं वा, पायपुंछणं वा—देहि, णिक्खिवाहि। तं णो देज्जा, णो णिक्खिवेज्जा, णो वंदिय-वंदिय जाएज्जा, णो अंजलि कट्टु जाएज्जा, णो कलुण-पडियाए जाएज्जा, धम्मियाए जायणाए जाएज्जा, तुसिणीय-भावेण वा उवहेज्जा।

ते णं आमोसगा ‘सयं करणिज्जं’<sup>२</sup> त्ति कट्टु अक्कोसंति वा, ‘बंधंति वा, रुभंति वा’, उह्वंति वा। वत्थं वा, पायं वा, कंवलं वा, पायपुंछणं वा अच्छिदेज्ज वा, अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज<sup>३</sup> वा।

तं णो गामसंसारियं कुज्जा, णो रायसंसारियं कुज्जा, णो परं उवसंकमित्तु बूया—आउसंतो! गाहावइ। एए खलु आमोसगा उवगरण-पडियाए सयं करणिज्जं त्ति कट्टु अक्कोसंति वा (जाव) परिभवेति<sup>४</sup> वा। एयप्पगारं मणं वा वइ<sup>५</sup> वा णो पुरओकट्टु विहरेज्जा, अप्पुस्सुए ‘अवहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज’ समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा।

६२—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामगियं, जं सव्वठ्ठेहिं समिते सहिए सया जएज्जासि।

—त्ति वेमि।

१—आहारं एवं ( छ ) ; आहर एत्थ ( अ, क, व )।

२—सयं करणिज्जा करणिज्जं ( च )।

३—परिट्ठं ( अ, क, घ, च, छ, व )।

४—परिट्ठं ( अ, क, घ, च, छ, व )।

५—वाय ( च ) ; वयं ( छ, व )।

चउत्तरं अज्झयणं

भासा

पढमो उद्देशो

वइ-अणायार-पदं

१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा इमाइं वइ-आयाराइं सोच्चा  
णिसम्म इमाइं-अणायाराइं अणायरियपुव्वाइं जाणेज्जा—

जे कोहा वा वायं विउंजंति, जे माणा वा वायं विउंजंति,  
जे मायाए वा वायं विउंजंति, जे लोभा वा वायं विउंजंति,  
जाणओ वा फरुसं वयंति, अजाणओ वा फरुसं वयंति,  
सव्वमेयं<sup>१</sup> सावज्जं वज्जेज्जा विवेग मायाए ।

२—धुवं चयेयं जाणेज्जा, अधुवं चयेयं जाणेज्जा—असणं वा (४)  
लभिय णो लभिय, भुंजिय णो भुंजिय, अदुवा आगए अदुवा  
णो आगए; अदुवा एइ अदुवा णो एइ, अदुवा एहिति अदुवा  
णो एहिति, एत्थवि आगए एत्थवि णो आगए, एत्थवि एइ  
एत्थवि णो एइ, एत्थवि एहिति एत्थवि णो एहिति ।

सोडस-वयण-पदं

३—अणुवीइ<sup>२</sup> णिठ्ठाभासी, समियाए संजए भासं भासेज्जा,  
तंजहा—एगवयणं, दुवयणं, बहुवयण, इत्थीवयणं<sup>३</sup>,  
पुरिसवयणं, णपुंसगवयणं, अज्झत्थवयणं, उवणीयवयणं,  
अवणीयवयणं, उवणीय-अवणीयवयणं, अवणीय-उवणीयवयणं,

१—सव्व वेय ( क, च, व ) ; सव्व चयेयं ( घ ) ।

२—अणुवीय ( छ ) ।

३—इत्थि ° ( झ ) ।

तीयवयणं, पडुप्पन्नवयणं, अणागयवयणं, पच्चक्खवयणं,  
परोक्खवयणं ।

४—से एगवयणं वदिस्सामीति एगवयणं वएज्जा,  
•दुवयणं वदिस्सामीति दुवयणं वएज्जा,  
बहुवयणं वदिस्सामीति बहुवयणं वएज्जा,  
इत्थीवयणं वदिस्सामीति इत्थीवयणं वएज्जा,  
पुरिसवयणं वदिस्सामीति पुरिसवयणं वएज्जा,  
णपुंसगवयणं वदिस्सामीति णपुंसगवयणं वएज्जा,  
अज्झत्थवयणं वदिस्सामीति अज्झत्थवयणं वएज्जा,  
उवणीयवयणं वदिस्सामीति उवणीयवयणं वएज्जा,  
अवणीयवयणं वदिस्सामीति अवणीयवयणं वएज्जा,  
उवणीय-अवणीयवयणं वदिस्सामीति उवणीय-अवणीयवयणं  
वएज्जा,  
अवणीय-उवणीयवयणं वदिस्सामीति अवणीय-उवणीयवयणं  
वएज्जा,  
तीयवयणं वदिस्सामीति तीयवयणं वएज्जा,  
पडुप्पन्नवयणं वदिस्सामीति पडुप्पन्नवयणं वएज्जा,  
अणागयवयणं वदिस्सामीति अणागयवयणं वएज्जा,  
पच्चक्खवयणं वदिस्सामीति पच्चक्खवयणं वएज्जा<sup>१</sup>,  
परोक्खवयणं वदिस्सामीति परोक्खवयणं वएज्जा ।

अणुवीइ-णिट्ठामासि-पदं

५—‘इत्थी वे’स पुरिस वे’स, णपुंसग वे’स’<sup>१</sup>, एवं वा चयेयं,

१—इत्थीवेद पुवेय णपुंसगवेय ( घ, छ, ब ) ।

२—एयं ( घ, छ ) ।

अण्णं<sup>१</sup> वा चेयं, अणुवीइ णिट्ठाभासी, समियाए संजए भासं  
भासेज्जा, इच्चेयाइं आयतणाइं उवातिकम्म ।

भासाजात-पदं

६—अह भिक्खू जाणेज्जा चत्तारि भासज्जायाइं, तंजहा—सच्च-  
मेगं<sup>२</sup> पढमं भासजायं, बीयं मोसं, तइयं सच्चामोसं, जं णेव  
सच्चं णेवमोसं नेव सच्चामोसं—असच्चामोसं णाम तं चउत्थं  
भासाजातं ।

७—से बेमि—जे अतीता जे य पडुप्पन्ना जे य अणागया अरहंता  
भगवंतो सव्वे ते एयाणि चेव चत्तारि भासज्जायाइं भासिंसु  
वा, भासंति वा, भासिस्संति वा, पण्णविंसु वा, पण्णवेति  
वा, पण्णविस्संति वा ।

८—सव्वाइं च णं एयाणि अचित्ताणि वण्णमंताणि गंधमंताणि  
रसमंताणि फासमंताणि चयोवचइयाइं<sup>३</sup> विपरिणामधम्माइं<sup>४</sup>  
भवन्तीति अक्खायाइं<sup>५</sup> ।

९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—  
पुव्वं भासा अभासा, भासिज्जमाणी भासा भासा,  
भासासमयविइक्कंता<sup>६</sup> भासिया भासा अभामा ।

सावज्ज-असावज्ज-पदं

१०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—  
जा य भासा सच्चा, जा य भासा मोसा, जा य भासा  
सच्चामोसा, जा य भासा असच्चामोसा,

१—अण्णहा ( अ, च, छ, व ) ।

२—० मेय ( अ, घ, छ ), ० मेत ( क ) ।

३—चओवचए ( अ ), चयोवचया ( छ ); चयोवचयमनाणि ( व ) ।

४—विविहपरिणाम ० ( च, छ ) ।

५—समक्खायाइ ( अ ) ।

६—० विइक्कतं च ण ( क, घ, च, छ ) ।



तहप्पगारं भासं सावज्जं सकिरियं कक्कसं कडुयं निठ्ठुरं  
फरुसं अण्हयकरि छेयणकरि भेयणकरि परितावणकरि  
उद्वणकरि भूतोवघाइयं अभिकंख 'णो भासेज्जा'¹ ।

११—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—

जा य भासा सच्चा सुहुमा, जा य भासा असच्चा मोसा,  
तहप्पगारं भासं असावज्जं अकिरियं \*अक्कसं अकडुयं  
अनिठ्ठुरं अफरुसं अण्हयकरि अछेयणकरि अभेयणकरि  
अपरितावणकरि अणुद्वणकरि° अभूतोवघाइयं अभिकंख²  
भासेज्जा ।

आमंतणीभासा-पदं

१२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पुमं आमंतेमाणे आमंतिते वा  
अपडिसुणेमाणे णो एवं वएज्जा—

'होले ति वा, गोले ति वा'³, वसुले ति वा, कुपक्खे ति  
वा घडदासे ति वा, साणे ति वा, तेणे ति वा, चारिए ति  
वा, माई ति वा, मुसावाई ति वा 'इच्चेयाइं तुमं एयाइं'⁴  
ते जणगा वा—

एतप्पगारं⁵ भासं सावज्जं सकिरियं (जाव ४।१०) अभिकंख  
नो भासेज्जा ।

१३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पुमं आमंतेमाणे आमंतिए वा  
अपडिसुणेमाणे एवं वएज्जा—

१—णो भास भासेज्जा ( अ, ब ) ; भास णो भासेज्जा ( घ ) ।

२—अभिकंख भासं ( अ, घ, छ ) ।

३—होले इ वा गोले इ वा ( घ ) ; होले ति वा गोले ति वा ( छ ) ।

४—इतियाइं तुम इतियाइ ( अ ) ; एयाइं तुम° ( क, च ) ; एतिया तुम° ( ब ) ।

५—तहप्पगार ( छ ) ।

अमुगे ति वा, आउसो ति वा, आउसंतो<sup>१</sup> ति वा, सावगे ति वा, उपासगे ति वा, धम्मिए ति वा, धम्मपिये ति वा—  
एयप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।११) अभूतोवघाइयं  
अभिकंख भासेज्जा ।

१४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा इत्थिय आमंतेमाणे आमंति ए य  
अपडिसुणेमाणी नो एवं वएज्जा—

होले ति वा, गोले ति वा, <sup>२</sup>वसुले ति वा, कुपक्खे ति वा,  
घडदासी ति वा, साणे ति वा, तेणे ति वा, चारिए ति  
वा, माई ति वा, मुसावाई ति वा, इच्चेयाइं तुम एयाइं ते  
जणगा वा—

एतप्पगारं भास सावज्जं (जाव ४।१०) अभिकंख णो  
भासेज्जा<sup>३</sup> ।

१५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा इत्थियं आमंतेमाणे आमंति ए य  
अपडिसुणेमाणी एवं वएज्जा—

आउसो ति वा, 'भगिणी ति वा'<sup>४</sup>, भगवई ति वा, साविगे  
ति वा, उवासिए ति वा, धम्मिए ति वा, धम्मपिये<sup>५</sup> ति वा—  
एतप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।११) अभिकंख  
भासेज्जा ।

विधि-निसिद्ध भासा-पद

१६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो एवं वएज्जा—

णभोदेवे<sup>६</sup> ति वा, गज्जदेवे<sup>७</sup> ति वा, विज्जुदेवे ति वा,

१—आउसतारो ( क, घ, छ ) ।

२—भगिणि ति वा भोई ति वा ( क, घ, च ) ।

३—धम्मिणिए ( क ) ।

४—णभ देवे ( घ ) ।

५—गज्ज देवे ( व ) ।

पवुद्धेवे<sup>१</sup> ति वा, निवुद्धेवे ति वा, पडउ वा वासं मा वा  
पडउ, णिप्फज्जउ वा सस्सं<sup>२</sup> मा वा णिप्फज्जउ, विभाउ  
वा रयणी मा वा विभाउ, उदेउ वा सूरिए मा वा उदेउ,  
सो वा राया जयउ मा वा जयउ—णो एतप्पगारं भासं  
भासेज्जा पण्णवं ।

१७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अंतलिक्खे ति वा, गुञ्झाणुचरिए  
ति वा, संमुच्छिए ति वा, णिवइए<sup>३</sup> ति वा 'पओए,  
वएज्ज'<sup>४</sup> वा बुद्धवलाहगे ति वा ।

१८—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं  
सव्वठ्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—ति वेमि ।

### वोओ उद्देमो

कक्कस-भासा-पद

१९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रूवाइं पासेज्जा  
तहावि ताइं णो एवं वएज्जा, तंजहा—

गंडी गंडी ति वा, कुट्ठी कुट्ठी ति वा, \*रायंसी रायंसी  
ति वा, अवमारियं अवमारिए ति वा, काणियं काणिए ति  
वा, क्मियं क्मिए ति वा, कुणियं कुणिए ति वा,  
खुज्जियं खुज्जिए ति वा, उदरी उदरी ति वा, मूयं मूए ति

१—पवुद्धो ° (अ) ।

२—सासं (अ, व) ।

३—णिवडिए (च) ।

४—तओ एवं वदेज्जा (छ) ।

वा, सूणियं सूणिए ति वा, गिलासिणी गिलासिणी ति वा,  
 वेवई वेवई ति वा, पीढसप्पी पीढसप्पी ति वा, सिलिवयं  
 सिलिवए ति वा<sup>०</sup>, महुमेहणी महुमेहणी<sup>१</sup> ति वा, हत्थछिन्नं  
 हत्थछिन्ने ति वा, \*पादछिन्नं पादछिन्ने ति वा, नक्कछिन्नं  
 नक्कछिन्ने ति वा, कण्णछिन्नं कण्णछिन्ने ति वा,  
 ओट्टछिन्नं<sup>२</sup> ओट्टछिन्ने ति वा<sup>३</sup> जे यावण्णे तहप्पगारे  
 तहप्पगाराहि<sup>३</sup> भासाहि बुइया-बुइया<sup>४</sup> कुप्पंति माणवा,  
 तेयांवि तहप्पगाराहिं भासाहि अभिकंख णो भासेज्जा ।

अकक्कस-भासा-पदं

२०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रूवाइं पासेज्जा  
 तहावि ताइं एवं वएज्जा<sup>५</sup> तंजहा—

ओयंसी ओयंसी ति वा, तेयंसी तेयसी ति वा, वच्चसी  
 वच्चंसी ति वा, जससी जसंसी ति वा, अभिरूवं अभिरूवे  
 ति वा, पडिरूवं पडिरूवे ति वा, पासाइयं पासाइए ति वा,  
 दरिसणिज्जं दरिसणीए ति वा, जे यावण्णे तहप्पगारा  
 तहप्पगाराहिं<sup>६</sup> भासाहिं बुइया-बुइया णो कुप्पंति माणवा,  
 ते यावि तहप्पगारा एयप्पगाराहिं<sup>७</sup> भासाहिं अभिकंख  
 भासेज्जा<sup>८</sup> ।

१—महुमेही ( छ ) ।

२—एव पाद नक्क कण्ण ओट्ट<sup>०</sup> ( अ ) ; एव पाद कण्ण नक्क<sup>०</sup> ( छ, ब ) ।

३—एयप्प<sup>०</sup> ( क, छ ) ।

४—x ( अ ) ।

५—भासेज्जा ( छ ) ।

६—एयप्प<sup>०</sup> ( अ, घ, च ) ।

७—पूर्वं सूत्रे 'तहप्पगाराहिं' विद्यते किन्तु अत्र प्रतिपु नया नाम्नि ।

८—भासेज्जा । तहप्पगार भास अगावज्ज जाव भासेज्जा ( अ, ब ) ।

सावज्ज-असावज्ज-भासा-पद

२१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रूवाइं पासेज्जा, तंजहा—

वप्पाणि वा, \*फलिहाणि वा, पागाराणि वा, तोरणाणि वा, अग्गलाणि वा, अग्गलपासगाणि वा, गड्डाओ वा, दरीओ वा, कूडागाराणि वा, पासादाणि वा, णूम-गिहाणि वा, रुक्ख-गिहाणि वा, पव्वय-गिहाणि वा, रुक्खं वा चेइय-कडं, थूमं वा चेइय-कडं, आएसणाणि वा, आयतणाणि वा, देवकुलाणि वा, सहाओ वा, पवाओ वा, पणिय-गिहाणि वा, पणिय-सालाओ वा, जाण-गिहाणि वा, जाण-सालाओ वा, सुहा-कम्मंताणि वा, दब्भ-कम्मंताणि वा, बद्ध-कम्मंताणि वा, वक्क-कम्मंताणि वा, वण-कम्मंताणि वा, इंगाल-कम्मंताणि वा, कट्ठ-कम्मंताणि वा, सुसाण-कम्मंताणि वा, संति-कम्मंताणि वा, गिरि-कम्मंताणि वा, कंदर-कम्मंताणि वा, सेलोवट्ठाण-कम्मंताणि वा,<sup>०</sup> भञ्जण-गिहाणि वा—तहावि ताइं णो एवं वएज्जा, तंजहा—

सुकडे ति वा, सुट्ठुकडे ति वा, 'साहुकडे ति वा, कल्लाण ति वा'<sup>१</sup>, करणिज्जे ति वा—

एयप्पगारं भासं सावज्जं \*सकिरियं कक्कसं कडुयं निट्ठुरं फरुसं अण्हयकरिं छेयणकरिं भेयणकरिं परितावणकरिं उद्दवणकरिं भूतोवघाइयं अभिकंखं<sup>०</sup> णो भासेज्जा ।

२२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रूवाइं पासेज्जा, तंजहा—

१—साहुकल्लाण ति वा ( अ, छ ) ।

वप्पाणि वा (जाव ४।२१) भवणगिहाणि वा—तहावि ताइ  
एव वएज्जा, तंजहा—

आरंभकडे ति वा, सावज्जकडे ति वा, पयत्तकडे ति वा,  
पासादियं पासादिए ति वा, दरिसणीयं दरिसणीए ति वा,  
अभिरूवं अभिरूवे ति वा, पडिरूवं पडिरूवे ति वा—

एयप्पगारं भासं असावज्जं<sup>१</sup> अकिरियं अक्कसं अकडुयं  
अनिट्ठुरं अफरुसं अण्हयकरिं अछेयणकरिं अभेयणकरिं  
अपरितावणकरिं अणुद्वणकरिं अभूतोवघाइयं अभिक्खं<sup>२</sup>  
भासेज्जा ।

२३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा असणं वा ४ उवक्खडियं पेहाए  
तहावि<sup>३</sup> तं णो एवं वएज्जा, तंजहा—

सुकडे ति वा, सुठ्ठुकडे ति वा, साहुकडे ति वा, कल्लाणे  
ति वा, करणिज्जे ति वा—

एयप्पगारं भासं सावज्जं (जाव ४।२१) णो भासेज्जा ।

२४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा असणं वा ४ उवक्खडियं पेहाए  
एवं वएज्जा, तंजहा—

आरंभकडे ति वा, सावज्जकडे ति वा, पयत्तकडे ति वा,  
भइयं भइए ति वा, ऊसढं ऊसढे ति वा, रसियं रसिए ति  
वा, मणुण्ण मणुण्णे ति वा—

एयप्पगारं<sup>३</sup> भासं असावज्जं (जाव ४।२२) भासेज्जा ।

२५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा मणुस्सं<sup>३</sup> वा, गोणं वा, महिसं  
वा, मिगं वा, पसुं वा, पक्खि वा, सरीसिवं वा, जलयरं वा,

१—तहाविह ( घ, ब ) ।

२—तहप्प<sup>०</sup> ( अ, च ) ।

३—माणुस्स ( घ, छ ) ।

से तं<sup>१</sup> परिवूढकायं पेहाए णो एवं वएज्जा—थूले ति<sup>२</sup> वा,  
पमेइले ति वा, वट्टे ति वा, वज्जे ति वा, पाइमे ति वा—  
एयप्पगारं भासं सावज्जं (जाव ४।२१) णो भासेज्जा ।

२६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा मणुस्सं (जाव ४।२५) जलयरं  
वा, से तं परिवूढकायं पेहाए एवं वएज्जा, तंजहा—  
परिवूढकाए ति वा, उवचियकाए ति वा, थिरसंघयणे ति  
वा, चियमंससोणिए ति वा, बहुपडिपुण्णइंदिए ति वा—  
एयप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।२२) भासेज्जा ।

२७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा विरूवरूवाओ गाओ पेहाए णो  
एवं वएज्जा, तंजहा—  
गाओ दोज्झाओ<sup>३</sup> ति वा, दम्मे<sup>४</sup> ति वा, गोरहे<sup>५</sup> ति वा,  
'वाहिमा ति वा, रहजोग्गाति वा'<sup>६</sup>—  
एयप्पगारं भासं सावज्जं (जाव ४।२१) णो भासेज्जा ।

२८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा विरूवरूवाओ गाओ पेहाए एवं  
वएज्जा, तंजहा—  
जुवंगवे ति वा, वेणू ति वा, रसवती ति वा, हस्से<sup>७</sup> ति वा,  
महल्लए<sup>८</sup> ति वा, महव्वए ति वा, संवहणे ति वा—  
एयप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।२२) अभिकंख भासेज्जा ।

१—त ( छ ) ।

२—थुल्ले ( अ, क, च, छ ) ।

३—दोज्झा ( अ, क, च, छ, ब ) ।

४—दम्मा ( अ, च, ब ) ।

५—गोरहा ( अ, च, ब ) ।

६—वाहनयोग्यो रथयोग्य. ( वृ ) ।

७—हस्से ( घ, छ ) ; रहस्से ( ब ) ।

८—महल्ले ( छ, ब ) ।

२९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा तहेव गंतुमुज्जाणाइं पच्चयाइं वणाणि य<sup>१</sup> रुक्खा महल्ला पेहाए णो एवं वएज्जा, तंजहा-  
पासायजोग्गा ति वा, 'गिहजोग्गा ति वा, तोरणजोग्गा'<sup>२</sup> ति वा, 'फलिहजोग्गा ति वा, अगगल'<sup>३</sup>-नावा-उदगदोणि-पीढ-चंगवेर<sup>४</sup>- णंगल-कुलिय-जंतलट्ठी - णाभि - गंडी-आसण - सयण-जाण-उवस्सय-जोग्गा ति वा-  
एयप्पगारं भासं सावज्जं (जाव ४।२१) णो भासेज्जा ।

३०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा तहेव गंतुमुज्जाणाइं पच्चयाणि वणाणि य रुक्खा महल्ला पेहाए एवं वएज्जा, तंजहा-  
जातिमंता ति वा, दीहवट्ठा ति वा, महालया ति वा, पयायसाला ति वा, विडिमसाला ति वा, पासाइया ति वा, दरिसणीयाति वा, अभिरूवा ति वा, पडिरूवा ति वा-  
एयप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।२२) अभिकंख भासेज्जा ।

३१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसंभूया वणफला पेहाए तहावि ते णो एवं वएज्जा, तंजहा-  
पक्का ति वा, पायखज्जा ति वा, वेलोचिया<sup>५</sup> ति वा, टाला ति वा, वेहिया ति वा-  
एयप्पगारं भासं सावज्ज (जाव ४।२१) णो भासेज्जा ।

३२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसंभूया 'वणफला अंबा'<sup>६</sup> पेहाए एवं वएज्जा, तंजहा-

१-वा ( च, ब ) ।

२-तोरणजोग्गा ति वा गिहजोग्गा ( अ. ब ) ।

३-अगगलजोग्गा ति वा फलिह ( च ) ।

४-सिगवेर ( अ, ब ) ।

५-वेलोविगा ( अ ) ; वेलोतिया ( क, घ, च ) , वेलोविया ( ब ) ।

६-वणफणा ( क, च, ब ) , फलजंबा ( वृ ) ।



असंथडा इ वा, बहुणिवट्टिमफला ति वा, बहुसंभूया इ वा,  
भूयरूवा ति वा—

एयप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।२२) भासेज्जा ।

३३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसंभूयाओ ओसहीओ पेहाए  
तहावि ताओ णो एवं वएज्जा, तंजहा—

पक्का ति वा, नीलिया ति वा, छवीया<sup>१</sup> ति वा, लाइमा  
ति वा, भज्जिमा ति वा, बहुखज्जा ति वा—

एयप्पगारं भासं सावज्जं (जाव ४।२१) णो भासेज्जा ।

३४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसंभूयाओ ओसहीओ पेहाए  
एवं वएज्जा, तंजहा—

रूढा ति वा, बहुसंभूया ति वा, थिरा ति वा, ऊसढा ति  
वा, गब्भिया ति वा, पसूया ति वा, ससारा<sup>२</sup> ति वा—

एयप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।२२) भासेज्जा ।

३५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं सद्दाइं सुणेज्जा,  
तहावि ताइं णो एवं वएज्जा, तंजहा—

सुसद्दे ति वा, 'दुसद्दे ति वा'<sup>३</sup>—

एयप्पगारं भासं सावज्जं (जाव ४।२१) णो भासेज्जा ।

३६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं सद्दाइं सुणेज्जा<sup>४</sup>,  
ताइं एवं वएज्जा, तंजहा—

१-छवी (अ) ।

२-ससारा (अ, छ) ।

३-× (च, छ) ।

४-× (अ, क, च, छ, ब) ।

सुसद्दं सुसद्दे ति वा, 'दुसद्दं दुसद्दे ति वा'—

एयप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।२२) भासेज्जा ।

३७-एवं...रूवाइं...कण्हे ति वा, णीले ति वा, लोहिए ति वा, हालिद्दे ति वा, मुक्किल्ले ति वा, गंधाइं...सुन्धिगंधे ति वा, दुन्धिगंधे ति वा, रसाइं...तित्ताणि वा, कडुयाणि वा, कसायाणि वा, अंबिलाणि वा, महुराणि वा, फासाइं...कक्खडाणि वा, मज्जयाणि वा, गुरुयाणि वा, लहुयाणि वा, सीयाणि वा, उसिणाणि वा, णिद्धाणि वा, रुक्खाणि वा ।

अणुवीइ-णिट्ठा-भासि-पदं

३८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा वंता 'कोहं च माणं च मायं च लोभं च', अणुवीइ णिट्ठाभासी णिसम्म-भासी अतुरिय-भासी विवेग-भासी समियाए संजए भासं भासेज्जा ।

३९-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति वेमि ।

पंचमं अज्जयणं

वत्थेसणा

पढमो उद्देसो

वत्थजाग्र-पदं

१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं एसित्ते,  
सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा, तंजहा—

जंगियं वा, भंगियं वा, साणयं वा, पोत्तगं वा, खोमियं वा,  
तूलकडं वा—तहप्पगारं वत्थं—

२-जे णिग्गथे तरुणे जुगवं<sup>१</sup> बलवं अप्पायंके थिरसंघयणे, से एगं  
वत्थं धारेज्जा, णो वित्थियं ।

३-जा णिग्गंथी, सा चत्तारि संघाडीओ धारेज्जा—एगं दुहत्थ-  
वित्थारं, दो तिहत्थवित्थाराओ, एगं चउहत्थवित्थारं ।  
तहप्पगारेहि<sup>२</sup> वत्थेहि असंविज्जमाणेहि<sup>३</sup> अह पच्छा एगमेगं  
संसीवेज्जा ।

अद्धजोयण-मेरा-पदं

४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा परं अद्धजोयणमेराए वत्थ-  
पडियाए नो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

अस्सिपडियाए-पद

५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—  
अस्सिपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं, <sup>४</sup>भूयाइं,

---

१-जुवन् ( घ ) ।

२-एएहिं ( अ, च, ब ) ।

३-अविज्ज ° ( अ, ब ) ।

जीवाइं, सत्ताइ, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं  
अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेएति ।

तं तहप्पगार वत्थं पुरिसंनरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा,  
वहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा,  
परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—  
अफामुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो  
पडिगाहेज्जा° ।

६-°से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—  
अस्सिपडियाए वहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइ, भूयाइं,  
जीवाइ, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं  
अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेएति ।

त तहप्पगार वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसतरकड वा,  
वहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा,  
परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—  
अफामुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—  
अस्सिपडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स पाणाइ, भूयाइं,  
जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं  
अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेएति ।

त तहप्पगारं वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा,  
वहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा,  
परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—  
अफामुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो  
पडिगाहेज्जा ।

८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा-

अस्सिपडियाए बह्वे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्चेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेएति ।

तं तहप्पगारं वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा-अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-वत्थ-पद

९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा-

बह्वे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्चेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेएइ ।

तं तहप्पगारं वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा-अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

१०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा-

बह्वे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्चेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेएइ ।

तं तहप्पगारं वत्थं अपुरिसंतरकडं, अबहिया णीहडं,  
अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं, अणासेवितं—अफासुयं अणेसणिज्जं  
ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

११—अहं पुण एवं जाणेज्जा—

पुरिसंतरकडं, बहिया णीहडं, अत्तट्ठियं, परिभुत्तं, आसेवियं—  
फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ।°

भिक्षु-पडियाए-कीयमाइ-पदं

१२—से भिक्षू वा भिक्षुणी वा सेज्जं पुण वत्थ जाणेज्जा—

असंजए भिक्षु-पडियाए कीयं वा, धोयं वा, रत्तं वा, घट्टं  
वा, मट्टं वा, संमट्टं<sup>१</sup> वा, संपधूमियं<sup>२</sup> वा—तहप्पगारं वत्थं  
अपुरिसंतरकडं, \*अबहिया णीहडं, अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं,  
अणासेवितं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते°  
णो पडिगाहेज्जा ।

१३—अहं पुणेवं जाणेज्जा—

पुरिसंतरकडं, \*बहिया णीहडं, अत्तट्ठियं, परिभुत्तं, आसेवियं—  
फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा ।

वत्थ-पद

१४—से भिक्षू वा भिक्षुणी वा सेज्जाइं पुण वत्थाइं जाणेज्जा

विरूवरूवाइं महद्धणमोत्ताइं तज्जहा—

आजिणगाणि<sup>३</sup> वा, सहिणाणि<sup>४</sup> वा, सहिण-कल्लाणाणि वा,  
आयकाणि<sup>५</sup> वा, कायकाणि<sup>६</sup> वा, खोमयाणि वा, दुगुल्लाणि

१—ससट्ठ ( क ) ।

२—° धुवितं ( अ, छ ) ।

३—आतिणाणि ( अ ) ; अजिणमाणि ( क, च ) ।

४—सहणाणि ( छ ) ।

५—आयाणाणि ( अ, क, घ, च ) ; आयाण ( व ) ।

६—कायाणाणि ( घ, व ) ।

वा, मलयाणि वा, पत्तुणाणि वा अंसुयाणि वा, चीणं-  
सुयाणि वा, देसरागाणि<sup>१</sup> वा, अमिलाणि वा, गज्जलाणि  
वा, फालियाणि<sup>२</sup> वा, कोयहा(वा?)णि<sup>३</sup> वा, कंबलगाणि  
वा, पावाराणि वा—अण्णयराणि वा तहप्पगाराइं वत्थाइं  
महद्धणमोल्लाइं—<sup>४</sup>अफासुयाइं अणेसणिज्जाइं ति मण्णमाणे<sup>५</sup>  
लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

१५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण आईणपाउरणाणि  
वत्थाणि<sup>६</sup> जाणेज्जा, तंजहा—

उट्टाणि<sup>७</sup> वा, पेसाणि<sup>८</sup> वा, पेसलेसाणि वा, किण्हमिगा-  
ईणगाणि वा, णीलमिगाईणगाणि वा, गोरमिगाईणगाणि  
वा, कणगाणि वा, कणगकत्ताणि<sup>९</sup> वा, कणगपट्टाणि वा,  
कणगखइयाणि वा, कणगफुसियाणि वा, वग्घाणि वा,  
विवग्घाणि वा, आभरणाणि वा, आभरणविचित्ताणि वा—  
अण्णयराणि वा तहप्पगाराइं आईणपाउरणाणि वत्थाणि—  
<sup>१०</sup>अफासुयाइं अणेसणिज्जाइ ति मण्णमाणे<sup>११</sup> लाभे संते णो  
पडिगाहेज्जा ।

वत्थपडिमा-पद

१६—इच्चेयाइं आयतणाइ उवाइकम्म, अह भिक्खू जाणेज्जा  
चउहि पडिमाहि वत्थं एसित्तम् ।

१—वेसरागाणि ( अ ), देसर गि ( छ ); वेसराणि ( व ) ।

२—फालियाणि ( क, च, छ, व ) ।

३—कायहाणि ( अ ); कोहयाणि ( घ ); निशीथरय १७ उट्टेणकस्य चूर्णे 'कोनवाणि'  
इति पाठो लभ्यते ।

४—वा वत्थाणि वा ( क, छ ) ।

५—उट्टाणि ( अ, क, च, व, वृ ), उट्टवाणि ( घ ) - आट्टाणि ( छ ) ।

६—वेत्तणाणि ( छ ) ।

७—कणगकत्ताणि ( अ, क, व, च, छ, व ), कनककान्तीनि ( वृ ) ।

१७-तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा-

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उद्दिसिय-उद्दिसिय वत्थं  
जाएज्जा, तंजहा-  
जंगियं वा, मंगियं वा, साणयं वा, पोत्तयं वा, खोमियं वा,  
तूलकडं वा-तहप्पगारं वत्थं सयं वा णं जाएज्जा, परो वा  
से देज्जा-फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते  
पडिगाहेज्जा । पढमा पडिमा ।

१८-अहावरा दोच्चा पडिमा-

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पेहाए-पेहाए वत्थं जाएज्जा,  
तंजहा-  
गाहावइं वा, \*गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणि वा,  
गाहावइ-पुत्तं वा, गाहावइ-धूयं वा, सुण्हं वा, धाइं वा,  
दासं वा, दासिं वा, कम्मकरं वा°, कम्मकरिं वा,  
से पुव्वामेव आलोएज्जा, आउसो! ति वा, भगिणि! ति  
वा दाहिसि मे एत्तो अण्णतरं वत्थं? तहप्पगारं वत्थं सयं  
वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा-फासुयं \*एसणिज्जं ति  
मण्णमाणे° लाभे संते पडिगाहेज्जा । दोच्चा पडिमा ।

१९-अहावरा तच्चा पडिमा-

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा,  
तंजहा-  
अंतरिज्जगं वा उत्तरिज्जगं वा-तहप्पगारं वत्थं सयं वा णं  
जाएज्जा, \*परो वा से देज्जा-फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे  
लाभे संते° पडिगाहेज्जा । तच्चा पडिमा ।

२०-अहावरा चउत्था पडिमा-

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उज्झिय-धम्मियं वत्थं जाएज्जा,



जं चऽण्णे बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा  
णावकंखंति, तहप्पगारं उज्झिय-धम्मियं वत्थं सयं वा णं  
जाएज्जा, परो वा से<sup>१</sup> देज्जा—फासुयं \*एसणिज्जं<sup>२</sup> ति  
मण्णमाणे लाभे संते<sup>३</sup> पडिगाहेज्जा । चउत्था पडिमा ।

२१—इच्चेयाणं चउण्हं पडिमाणं \*अण्णयरं पडिमं पडिवज्जमाणे  
णो एवं वएज्जा—मिच्छा पडिवण्णा खलु एते भयंतारो,  
अहमेगे सम्मं पडिवण्णे ।

जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति,  
जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सव्वे  
वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया, अन्नोन्नसमाहीए, एवं च णं  
विहरंति ।<sup>४</sup>

संगार-वयण-पदं

२२—सियाणं एयाए एसणाए एसमाणं परो वएज्जा—आउसंतो!  
समणा! एज्जाहि तुमं मासेण वा, दसराएण वा, पंचराएण  
वा, सुए वा, सुयतरे<sup>५</sup> वा, तो ते वयं आउसो! अण्णयरं  
वत्थं दाहामो<sup>६</sup> ।

एयप्पगारं<sup>७</sup> णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलो-  
एज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा णो खलु मे कप्पइ  
एयप्पगारे<sup>८</sup> संगार-वयणे पडिसुणित्तए, अभिकंखसि मे दाउं?  
इयाणिमेव दलयाहि ।

१—ण (अ, ब) ।

२—<sup>०</sup> य (अ) ।

३—<sup>०</sup> तराए (घ, च, छ, ब) ।

४—दासामो (अ, च, ब) ।

५—तहप्प<sup>०</sup> (अ) ।

६—<sup>०</sup> गार (छ) ।

से सेवं<sup>१</sup> वयंतं परोवएज्जा आउसंतो ! समणा ! अणुगच्छाहि,  
तो ते वयं अण्णतरं वत्थं दाहामो ।

से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा  
णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे सगार-वयणे पडिसुणेत्तए,  
अभिकंखसि मे दाउं ? इयाणिमेव दलयाहि ।

से सेवं वयंतं परो नेत्ता वदेज्जा—आउसो ! त्ति वा, भइणि !  
त्ति वा आहरेयं वत्थं समणस्स दाहामो । अवियाइं वयं  
पच्छावि अप्पणो सयट्ठाए पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं  
समारव्वं समुद्दिस्स (वत्थं<sup>२</sup>) चेइस्सामो ।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म तहप्पगारं वत्थं—  
अफामुयं \*अणेसणिज्जं त्ति मण्णमाणे लाभे संते<sup>०</sup> णो  
पडिगाहेज्जा ।

वत्थ-आघसण-पद

२३—सिया णं परो नेत्ता वएज्जा—“आउसो ! त्ति वा, भइणि !  
त्ति वा आहरेयं वत्थं—सिणाणेण वा, \*कक्केण वा, लोद्धेण  
वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा<sup>०</sup> आघंसित्ता वा,  
पघंसित्ता वा समणस्स णं दासामो ।”

एयप्पगार णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलो-  
एज्जा—“आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा मा एयं तुमं  
वत्थं सिणाणेण वा (जाव) पघंसाहि वा । अभिकंखसि मे  
दाउं ? एमेव दलयाहि ।”

से सेवं वयंतस्स परो सिणाणेण वा (जाव) पघंसित्ता वा

१—णेव ( क, घ, च, छ ), एव ( व ) ।

२—जाव ( अ, क, घ, च, छ, व ) ।

दलएज्जा । तहप्पगारं वत्थं-अफासुयं \*अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे सत्ते° णो पडिगाहेज्जा ।

वत्थ-उच्छोलण-पद

२४-से णं परो गेत्ता वएज्जा-“आउसो! ति वा, भइणि! ति वा आहरेयं वत्थं-सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता वा<sup>१</sup>, पधोवेत्ता<sup>२</sup> वा समणस्स णं दासामो ।”

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलो-एज्जा-“आउसो! ति वा, भइणि! ति वा मा एयं तुमं वत्थं सिओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेहि वा, पधोवेहि वा । अभिकंखसि \*मे दाउं? एमेव दलयाहि ।

से सेवं वयंतस्स परो सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता वा, पधोवेत्ता वा दलएज्जा । तहप्पगारं वत्थं-अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे सत्ते° णो पडिगाहेज्जा ।

वत्थ-विसोहण-पदं

२५-से णं परो गेत्ता वएज्जा-“आउसो! ति वा, भइणि! ति वा आहरेयं वत्थं-कंदाणि वा, \*मूलाणि वा, (तयाणि वा?), पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा°, हरियाणि वा विसोहिता समणस्स णं दासामो ।”

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा-“आउसो! ति वा, भइणि! ति वा मा एयाणि

१-× (छ) ।

२-पच्छोलेत्ता (छ) ।

तुमं कंदाणि वा (जाव) हरियाणि वा विसोहेहि । णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे वत्थे पडिगाहित्तए ।”

से सेवं वयंतस्स परो कंदाणि वा (जाव) हरियाणि वा विसोहिता दलएज्जा । तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।

वत्थ-पडिलेहण-पद

२६—सिया से परो जेत्ता वत्थं णिसिरेज्जा । से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा तुमं चेव णं संतियं वत्थं अंतोअंतेणं पडिलेहिस्सामि ।

२७—केवली बूया—आयाण मेयं ‘वत्थंतेण उ’ बद्धे सिया कुंडले वा, गुणे वा, मणी वा, •मोत्तिए वा, हिरण्णे वा, सुवण्णे वा, कडगाणि वा, तुडयाणि वा, तिसरगाणि वा, पालंबाणि वा, हारे वा, अद्धहारे वा, एगावली वा, मुत्तावली वा, कणगावली वा°, रयणावली वा, पाणे वा, बीए वा, हरिए वा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा •एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°, जं पुव्वामेव वत्थं अंतोअंतेण पडिलेहिज्जा ।

सअडाइ-वत्थ-पदं

२८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—  
सअंडं •सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिग-पणग-  
दग-मट्ठिय-मक्कडा°—संताणगं—  
तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।

अप्पंडाइ-वत्थ-पदं

२९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण वत्थ जाणेज्जा—  
अप्पंडं \*अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं  
अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°-संताणगं अणलं अथिरं  
अधुवं अधारणिज्जं रोइज्जंतं ण रुच्चइ—.

तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं \*अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे  
संते° णो पडिगाहेज्जा ।

३०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—  
अप्पंडं (जाव ५।२९) संताणगं अलं थिरं धुवं धारणिज्जं  
रोइज्जंतं रुच्चइ—

तहप्पगारं वत्थं—फासुयं \*एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे  
संते° पडिगाहेज्जा ।

वत्थ-परिकम्म-पद

३१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा “णो णवए मे वत्थे” ति कट्टु  
णो बहुदेसिएण<sup>१</sup> सिणाणेण वा, \*क्ककेण वा, लोद्धेण वा,  
वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसेज्ज वा°,  
पघंसेज्ज वा ।

३२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा “णो णवए मे वत्थे” ति कट्टु  
णो बहुदेसिएण सीओदग-वियडेण वा, \*उसिणोदग-वियडेण  
वा उच्छोलेज्ज वा°, पधोएज्ज वा ।

३३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा “दुब्बिगंधे मे वत्थे” ति कट्टु  
णो बहुदेसिएण सिणाणेण वा, \*क्ककेण वा, लोद्धेण वा,  
वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसेज्ज वा, पघंसेज्ज वा ।

१-निशीथे ( १४।१५ ) ‘बहुदेवसिएण’ पाठो लभ्यते । आचारागस्य चूर्णविधि (पृ० ३६४)  
‘बहुदेवसिएण’ पाठोस्ति, किन्तु तस्य वृत्तौ (पृ० ३६४) ‘बहुदेसिएण’ पाठो व्याख्या-  
तोस्ति । प्रतिष्ठु चापि एष एव लभ्यते तेनात्र अयमेव पाठः स्वीकृतः ।

३४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा “दुब्बिगंधे मे वत्ये” त्ति कट्ठु  
णो बहुदेसिएण सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण  
वा उच्छोलेज्ज वा, पघोएज्ज वा ।<sup>०</sup>

वत्य-आयावण-पद

३५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए  
वा, पयावेत्तए वा । तहप्पगारं वत्थं णो अणंतरहियाए  
पुढवीए, णो ससणिद्धाए<sup>१</sup> पुढवीए, \*णो ससरक्खाए पुढवीए,  
णो चित्तमंत्ताए सिलाए, णो चित्तमंत्ताए लेलुए, कोलावासंसि  
वा दारुए जीवपइट्ठिए सअडे सपाणे सवीए सह्रिए सउसे  
सउदए सउत्तिग पणग-दग-मट्ठिय-मक्कडा<sup>०</sup>-संताणाए  
आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ।

३६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए  
वा, पयावेत्तए वा । तहप्पगारं वत्थं थूणंसि वा, गिहेलुगंसि  
वा, उसुयालंसि<sup>२</sup> वा, कामजलंसि वा अण्णयरे वा तहप्पगारे  
अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो  
आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा ।

३७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए  
वा, पयावेत्तए वा । तहप्पगार वत्थं कुलियंसि वा, भित्तिसि  
वा, सिलंसि वा, ‘लेलुसि वा’<sup>३</sup> अण्णतरे वा तहप्पगारे  
अंतलिक्खजाए \*दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो  
आयावेज्ज वा<sup>०</sup>, णो पयावेज्ज वा ।

१—ससिणि <sup>०</sup> ( क, च ) ।

२—उमु <sup>०</sup> ( अ ) ।

३—(जाव) ( अ ) ; × ( छ ) ।

३८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा । तहप्पगारे वत्थे—खंधसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा, हम्मियतलंसि वा अण्णयरे वा तहप्पगारे अंतलिकखजाए •दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकपे चलाचले णो आयावेज्ज वा°, णो पयावेज्ज वा ।

३९—से त्तमादाए एगंतमवकमेज्जा, २ त्ता अहे भामथंडिलंसि वा, •अट्टिरासिसि वा, किट्टिरासिसि वा, तुसरारसिसि वा, गोमयरारसिसि वा° अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय, तओ संजयामेव वत्थं आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ।

४०—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामगियं, •जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति वेमि° ।

## वीओ उद्देशो

णो धोएज्जा-रएज्जा-पदं

४१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाएज्जा । अहापरिग्गहियाइं वत्थाइं धारेज्जा, णो धोएज्जा णो रएज्जा, णो धोयरत्ताइं वत्थाइं धारेज्जा, अपलित्तं चमाणे गामंतरेसु, ओमचेलिए । एयं खलु वत्थधारिस्स सामगियं ।

सव्वचीवरमायाए-पदं

४२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसिउकामे सव्वं चीवरमायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।

४३-<sup>०</sup>से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहिया वियार-भूमि वा, विहार-भूमि वा णिक्खममाणे वा, पविसमाणे वा सव्वं चीवरमायाए बहिया वियार-भूमि वा विहार-भूमि वा णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।

४४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे सव्वं चीवरमायाए गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

४५-अह पुणेवं जाणेज्जा-तिव्वदेसियं वा वासं वासमाणं पेहाए, तिव्वदेसियं वा महियं सण्णिवयमाणिं पेहाए, महावाएण वा रयं समुद्धुयं पेहाए, तिरिच्छं संपाइमा वा तसा-पाणा संथडा सन्निवयमाणा पेहाए ।

से एवं णच्चा णो सव्वं चीवरमायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा, बहिया वियार-भूमि वा, विहार-भूमि वा णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा, गामाणुगामं वा दूइज्जेज्जा ।<sup>०</sup>

पाडिहारिय-वत्थ-पद

४६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा एगइओ 'मुहुत्तगं-मुहुत्तगं'<sup>१</sup> पाडिहारियं वत्थं जाएज्जा—एगाहेण<sup>२</sup> वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छेज्जा, तहप्पगारं वत्थं णो अप्पणा गिण्हेज्जा, णो अण्णमणस्स देज्जा, णो पामिच्चं कुज्जा, णो वत्थेण वत्थ-परिणामं करेज्जा, णो परं उवसंकमित्तु<sup>३</sup> एव वदेज्जा—“आउसंतो! समणा ।

१—मुहुत्तगं ( घ, च, छ, ब ) ।

२—जाव एगाहेण ( अ, क, घ, च, छ, ब ) , एकाह यावत् पचाहम् ( वृ ) ।

३—<sup>०</sup> मित्ता ( घ, च, छ, ब ) ।



अभिकंखसि वत्थं धारेत्तए वा, परिहरित्तए वा ?” थिरं वा  
णं संतं णो पलिच्छिदिय-पलिच्छिदिय परिद्वेज्जा ।  
तहप्पगारं ‘वत्थं ससंधियं’ तस्स चैव णिसिरेज्जा, ‘णो  
णं’ साइज्जेज्जा ।

४७—से एगइओ एयप्पगारं<sup>१</sup> णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म—

जे भयंतारो तहप्पगाराणि वत्थाणि ससंधियाणि ‘मुहुत्तगं-  
मुहुत्तगं’<sup>२</sup> जाइत्ता<sup>३</sup> एगाहेण<sup>४</sup> वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा,  
चउयाहेण वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय  
उवागच्छंति,

तहप्पगाराणि वत्थाणि णो अप्पणा गिण्हंति, णो अण्णमण्णस्स  
अणुवयंति, ‘णो’ पामिच्चं करेति, णो वत्थेण वत्थ-परिणामं  
करेति, णो परं उवसंकमित्तु एवं वदेति—“आउसंतो!  
समणा । अभिकंखसि वत्थं धारेत्तए वा, परिहरेत्तए वा ?”  
थिरं वा णं संतं णो पलिच्छिदिय-पलिच्छिदिय परिद्वेति,  
तहप्पगाराणि वत्थाणि ससंधियाणि तस्स चैव णिसिरेति<sup>५</sup>,  
णो णं सातिज्जंति,

‘से हंता’ अहमवि मुहुत्तगं<sup>६</sup> पाडिहारिय वत्थं जाइत्ता

१—मसंधिय वत्थ ( अ ) ; वत्थ ससंधिय वत्थ ( च, छ ) ।

२—णो अत्ताण ( अ, क, छ ), न अत्ताण ( व ) ।

३—तह<sup>०</sup> ( व ) ।

४—मुहुत्तग ( छ ) ।

५—जाएज्जा ( छ ) ।

६—जाव एगाहेण ( अ, क, घ, च, छ, व ) ।

७—त चैव जाव णो साइज्जति बहुवयणेण भासियव्वं ( क, च, छ ) ।

त चैव जाव णो साइज्जति बहुमाणोए भासियव्वं ( अ ) ।

त चैव जाव णो साइज्जति बहुवयणेण भाणियव्वं ( घ ) ।

त चैव जाव णो साइज्जति बहुमाणेण भासियव्वं ( व ) ।

८—मुहुत्त ( अ, छ, व ) ।

एगाहेण<sup>१</sup> वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा,  
पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छिस्सामि ।  
अवियाडं एयं ममेव सिया । माड्डाणं संफासे । णो एवं  
करेज्जा ।

वत्य-विक्रिया-पद

४८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो वण्णमंताडं वत्थाडं विवण्णाडं  
करेज्जा, विवण्णाडं णो वण्णमंताडं करेज्जा, “अन्नं वा वत्थं  
लभिस्सामि” त्ति कट्टु णो अण्णमण्णस्स देज्जा, णो  
पामिच्चं कुज्जा, णो वत्थेण वत्थ-परिणामं करेज्जा”, णो  
परं उवसकमित्तु एवं वदेज्जा-“आउसंतो ! समणा !  
अभिकंखसि मे वत्थं धारेत्तए वा, परिहरेत्तए वा ?” थिरं वा  
णं संत णो पलिच्छिदिय-पलिच्छिदिय परिद्वेज्जा ।

जहा चेय<sup>२</sup> वत्थं पावणं परो मन्नइ । परं च णं अदत्तहारिं  
पडिपहे पेहाए तस्स वत्थस्स णिदाणाए णो तेसिं भीओ  
उम्मग्गेणं गच्छेज्जा, <sup>३</sup>णो मग्गाओ मग्ग संकमेज्जा, णो गह्णं  
वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुख्हेज्जा,  
णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाड वा,  
सरण वा, सेण वा, सत्थं वा कंखेज्जा<sup>४</sup>, अप्पुस्सुए  
<sup>५</sup>अवहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए<sup>६</sup>, तओ  
संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

आमोसग-पद

४९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे-अतरा

१-जाव एगाहेण ( अ, क, घ, च, छ, ब ) ।

२-कुज्जा ( च ) ।

३-वेय ( अ, च ), मेयं ( क, घ, ब ) ।

से विहं सिया । सेज्जं पुण विहं जाणेज्जा—इमंसि खलु विहंसि बहवे आमोसगा वत्थ-पडियाए संपिडिया<sup>१</sup> गच्छेज्जा, \*णो तेसि भीओ उम्मगेणं गच्छेज्जा, णो मग्गाओ मग्गं सकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुह्हेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा, सरणं वा, सेणं वा, सत्थं वा कंखेज्जा, अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्जा समाहीए, तओ संजयामेव<sup>०</sup> गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

५०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा से आमोसगा संपिडिया<sup>२</sup> गच्छेज्जा । तेणं आमोसगा एवं वदेज्जा—

आउसंतो ! समणा ! आहरेयं वत्थं, देहि, निक्खिवाहि । \*तं णो देज्जा, णो णिक्खिदेज्जा, णो वंदिय-वंदिय जाएज्जा, णो अंजलि कट्ठु जाएज्जा, णो कलुण-पडियाए जाएज्जा, धम्मियाए जायणाए जाएज्जा, तुसिणीय-भावेण वा उवहेज्जा ।

ते णं आमोसगा सयं करणिज्जं त्ति कट्ठु, अक्कोसंति वा, बंधंति वा, रंभंति वा, उह्वंति वा, वत्थं अच्छिदेज्ज वा, अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज वा ।

तं णो गामसंसारियं कुज्जा, णो रायसंसारियं कुज्जा, णो परं उवसंकमित्तु ब्रूया—आउसंतो ! गाहावइ ! एए खलु आमोसगा वत्थ-पडियाए सयं करणिज्जं त्ति कट्ठु अक्कोसंति वा, बंधंति वा, रंभंति वा, उह्वंति वा, वत्थं

१—संपिडिया ( क, च, ब ) ।

२—पडिया ( अ ) ; सपडिया ( क, घ, च ) ; सपडिया ( छ ) ।

अच्छिदेति वा, अवहरेति वा, परिभवेति वा । एयप्पगारं  
मणं वा, वइं वा णो पुरओ कट्टु विहरेज्जा । अप्पुस्सुए  
अवहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए, तओ  
संजयामेव गामाणुगाम दूइज्जेज्जा ।°

५१—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, °जं  
सव्वट्ठेहि समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ।°

छट्ठं अज्झयणं

पाएस्सणा

पढसो उद्देसो

पायजाय-पद

१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिक्खेज्जा पायं एसित्ते,  
सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा, तंजहा—  
अलाउपायं<sup>१</sup> वा, दारुपायं वा, मट्ठिया पायं वा—तहप्पगारं  
पायं—

एगपाय-पदं

२—जे निगंथे तरुणे जुगवं बलवं अप्पायंके थिरसघयणे, से एगं  
पायं धारेज्जा, णो बीयं<sup>२</sup> ।

अद्धजोयण मेरा-पद

३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा परं अद्धजोयण-मेराए पाय-  
पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

अस्सपडियाए-पद

४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—  
अस्सिपडियाए एगं साहम्मिय समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,  
जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्च अच्छेज्जं  
अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेएति ।  
तं तहप्पगारं पायं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा,  
बहिया णीहडं वा, अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं

१—लाउयपाय ( क, च, छ ) ; अलाउयपाय ( घ ) ।

२—बित्तिवं ( च, छ, ब ) ।

वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं  
वा-अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो  
पडिगाहेज्जा ।

५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—

अस्सिपडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,  
जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्चं अच्छेज्जं  
अणिसट्ठं अभिहड आहट्ठु चेएति ।

तं तहप्पगारं पायं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा,  
बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा,  
परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—  
अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो  
पडिगाहेज्जा ।

६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—

अस्सिपडियाए एगं साहम्मिणि समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,  
जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं  
अणिसट्ठं अभिहड आहट्ठु चेएति ।

तं तहप्पगारं पाय पुरिसंतरकड वा अपुरिसतरकडं वा,  
बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा,  
परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—  
अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो  
पडिगाहेज्जा ।

७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—

अस्सिपडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं,  
भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं  
अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेएति ।

तं तहप्पगारं पायं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा,  
बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तद्वियं वा अणत्तद्वियं वा,  
परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—  
अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो  
पडिगाहेज्जा ।

समण-माहणाड-समुद्दिस्स-पाय-पदं

८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—

बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय  
समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ  
समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु  
चेएइ ।

तं तहप्पगारं पायं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा,  
बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तद्वियं वा अणत्तद्वियं वा,  
परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—  
अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो  
पडिगाहेज्जा ।

९—से<sup>१</sup> भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—

बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए वणीमए समुद्दिस्स  
पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं  
पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेएति ।

१—यद्यपि प्राप्तप्रतिष्ठ “बहवे समण-माहण” इति सूत्रात् पूर्वं “अस्सजए भिक्खु-पडियाए”  
एतत् सूत्रं लभ्यते, किन्तु वस्तुषणायाः (१०-१३) क्रमेण पूर्वं “बहवे समण-माहण”  
सूत्रं तत्तद्वत्त्वात् “अस्सजए भिक्खु-पडियाए” एतत् सूत्रं युज्यते, अत एव  
क्रमोऽत्र स्वीकृतः ।

सूत्रस्य विपर्ययो लिपिदोषेण जात इति प्रतीयते । चूणो वृत्तौ च न व्याख्यते इमे  
सूत्रे । प्राप्तविपर्ययं परिलक्ष्यैव जयान्कार्येण सूत्रस्य विचित्रा गतिरिति सकेतितम् ।

तं तहप्पगारं पायं अपुरिसंतरकडं, अवहिया णीहडं,  
अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं, अणासेवियं—अफासुयं अणसणिज्जं  
ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

१०—अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडं, वहिया णीहडं, अत्तट्ठियं,  
परिभुत्तं, आसेवियं—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे  
संते पडिगाहेज्जा ।

भिक्षु-पडियाए कीयमाइ-पदं

११—से भिक्षू वा भिक्षुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—  
अस्संजए भिक्षु-पडियाए कीयं वा, धीयं वा, रत्तं वा, घट्टं  
वा, मट्टं वा, संमट्टं वा, संपधूमियं वा—तहप्पगारं पायं  
अपुरिसंतरकडं, अवहिया णीहडं, अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं,  
अणासेवियं—अफासुयं अणसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते  
णो पडिगाहेज्जा ।

१२—अह पुण एव जाणेज्जा—पुरिसतरकडं, वहिया णीहडं,  
अत्तट्ठियं, परिभुत्तं, आसेवियं—फासुय एसणिज्जं ति मण्णमाणे  
लाभे संते पडिगाहेज्जा ।<sup>०</sup>

पाय-पद

१३—से भिक्षू वा भिक्षुणी वा सेज्जाइं पुण पादाइं जाणेज्जा  
विख्व-ख्वाइं महद्धणमुल्लाइं, तंजहा—  
अय-पायाणि वा, तउ<sup>१</sup>-पायाणि वा, तब-पायाणि वा,  
सीसग-पायाणि वा, हिरण्ण-पायाणि वा, सुवण्ण-पायाणि  
वा, रीरिय-पायाणि वा, हारपुड-पायाणि वा, मणि-काय-  
कंस-पायाणि वा, संख-सिग-पायाणि वा, दंत-चेल-सेल-  
पायाणि वा, चम्म-पायाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं

१—तउय ( घ ) ।



विरूव-रूवाइं महद्धणमुल्लाइं पायाइं—अफासुयाइं  
 \*अणेसणिज्जाइं ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा ।

पाय-बंधन-पदं

१४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जाइं पुण पायाइं जाणिज्जा  
 विरूव-रूवाइं महद्धणबंधणाइं तंजहा—  
 अयबंधणाणि वा, \*तउबंधणाणि वा, तंबबंधणाणि वा,  
 सीसगबंधणाणि वा, हिरण्णबंधणाणि वा, सुवण्णबंधणाणि  
 वा, रीरियबंधणाणि वा, हारपुडबंधणाणि वा, मणि-काय-  
 कंस-बंधणाणि वा, संख-सिंग-बंधणाणि वा, दंत-चेल-सेल-  
 बंधणाणि वा०, चम्मबंधणाणि वा—अण्णयराइं वा  
 तहप्पगाराइं महद्धणबंधणाइं—अफासुयाइं \*अणेसणिज्जाइं  
 ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा ।

पाय-पडिमा-पदं

१५—इच्चेयाइं आयतणाइं<sup>१</sup> उवातिकम्म अह भिक्खू जाणेज्जा  
 चउहि पडिमाहि पायं एसित्तए ।

१६—तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उद्दिसिय-उद्दिसिय पायं जाएज्जा,  
 तंजहा—

लाउय-पायं वा, दारु-पायं वा, मट्टिया-पायं वा—तहप्पगारं  
 पायं सयं वा णं जाएज्जा, \*परो वा से देज्जा—फासुयं  
 एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० पडिगाहेज्जा—पढमा  
 पडिमा ।

१७—अहावरा दोच्चा पडिमा—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पेहाए पायं जाएज्जा, तंजहा—

गाहावइं वा, \*गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणि वा,  
गाहावइ-पुत्तं वा, गाहावइ-धूयं वा, सुण्हं वा, धाडं वा,  
दास वा, दासि वा, कम्मकरं वा°, कम्मकरिं वा,  
से पुत्त्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति  
वा दाहिसि मे एत्तो अण्णयरं पायं ? तंजहा—ऊउय-पायं  
वा, दाह-पायं वा मट्टिया-पायं वा—तहप्पगार पायं सयं वा  
णं जाएज्जा, \*परो वा से देज्जा—फासुय एसणिज्जं त्ति  
मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—दोच्चा पडिमा ।

१८—अहावरा तच्चा पडिमा—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—संगतियं  
वा, वेजयंतियं<sup>१</sup> वा—तहप्पगारं पायं सयं वा \*णं जाएज्जा,  
परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं त्ति मण्णमाणे लाभे संते°  
पडिगाहेज्जा—तच्चा पडिमा ।

१९—अहावरा चउत्था पडिमा—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उज्झिय-धम्मियं पायं जाएज्जा,  
जं चउण्णे बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा  
णावकंखंति, तहप्पगारं पायं सयं वा णं \*जाएज्जा, परो वा  
से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं त्ति मण्णमाणे लाभे संते°  
पडिगाहेज्जा—चउत्था पडिमा ।

२०—इच्चेयाणं चउण्हं पडिमाणं अण्णयरं पडिमं \*पडिवज्जमाणे  
णो एवं वएज्जा—मिच्छापडिवन्ता खलु एते भयंतारो,  
अहमेगे सम्मं पडिवन्ते,  
जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जिताणं विहरंति,  
जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जिताणं विहरामि, सच्चे वे

. ते'उ जिणाणाए उवट्ठिया अन्नोन्नसमाहीए, एवं च णं विहरंति ।°

संगार-वयण-पदं

२१-से णं एताए एसणाए एसमाणं परो पासित्ता वएज्जा—  
आउसंतो! समणा! एज्जासि तुमं मासेण वा, °दसराएण वा,  
पंचराएण वा, सुए वा, सुयतरे वा तो ते वयं आउसो!  
अण्णयरं पायं दाहामो ।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव  
आलोएज्जा—आउसो! ति वा, भइणि! ति वा णो खलु मे  
कप्पइ एयप्पगारे संगार-वयणे पडिसुणित्तए, अभिकंखसि मे  
दाउं? इयाणिमेव दलयाहि ।

से सेवं वयंतं परो वएज्जा आउसंतो! समणा! अणुगच्छाहि  
तो ते वयं अण्णतरं पायं दाहामो ।

से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! ति वा, भइणि! ति वा  
णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे संगार-वयणे पडिसुणेत्तए  
अभिकंखसि मे दाउं? इयाणिमेव दलयाहि ।

से सेवं वयंतं परो जेत्ता वदेज्जा—आउसो! ति वा, भइणि!  
ति वा आहरेयं पायं समणस्स दाहामो । अवियाइं वय  
पच्छावि अप्पणो सयट्ठाए पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं  
समारब्भ समुद्दिस्स पायं<sup>१</sup> चेइस्सामो ।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म तहप्पगारं पायं—अफासुयं  
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।°

पाय-अवर्गण-पदं

२२-से णं परो जेत्ता वएज्जा—आउसो! ति वा, भइणि! ति वा

आहरेयं पायं तेवलेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, 'वसाए वा'<sup>१</sup> अब्भंगेत्ता वा, \*मक्खेत्ता वा समणस्स णं दासामो ।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा मा एयं तुमं पायं तेवलेण वा (जाव) अब्भगाहि वा मक्खाहि वा अभिकंखसि मे दाउं ? एमेव दलयाहि ।

से सेवं वयंतस्स परो तेवलेण वा (जाव) मक्खेत्ता वा दलएज्जा—तहप्पगारं पाय—अफासुयं अणेसणिज्जं त्ति मण्णमाणे लाभे सत्ते णो पडिगाहेज्जा ।

पाय-आघसण-पट

२३—से णं परो णेत्ता वएज्जा—आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा आहरेय पाय सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसित्ता वा, पघंसित्ता वा समणस्स णं दासामो ।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा मा एयं तुमं पायं सिणाणेण वा (जाव) आघंसाहि वा पघंसाहि वा, अभिकंखसि मे दाउं ? एमेव दलयाहि ।

से सेवं वयंतस्स परो सिणाणेण वा (जाव) पघंसित्ता वा दलएज्जा—तहप्पगारं पायं—अफासुयं अणेसणिज्जं त्ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

पाय-उच्छोलण-पदं

२४—से णं परो णेत्ता वएज्जा—आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा

आहरेयं पायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता वा, पधोवेत्ता वा समणस्स णं दासामो ।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुब्बामेव आलोएज्जा-आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा मा एयं तुमं पायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेहि वा, पधोवेहि वा, अभिक्खसि मे दाउं ? एमेव दलयाहि । से सेवं वयंतस्स परो सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता वा, पधोवेत्ता वा दलएज्जा-तहप्पगारं पायं-अफासुयं अणेसणिज्जं त्ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

पाय-विसोहण-पदं

२५-से णं परो नेत्ता वएज्जा—आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा आहरेयं पाय कदाणि वा, मूलाणि वा (तयाणि वा?), पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा विसोहिता समणस्स णं दासामो ।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुब्बामेव आलोएज्जा-आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा मा एयाणि तुमं कंदाणि वा (जाव) हरियाणि वा विसोहेहि, णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे पाये पडिगाहित्ते ।

से सेवं वयंतस्स परो कंदाणि वा (जाव) हरियाणि वा विसोहिता दलएज्जा—तहप्पगारं पायं-अफासुयं अणेसणिज्जं त्ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।°

सपाण भोयण-पडिगह-पदं

२६-से णं परो नेत्ता वएज्जा—आउसंतो ! समणा ! मुहुत्तगं-मुहुत्तगं अच्छाहि जाव ताव अम्हे असणं वा ४ उवकरेंसु वा,

उवक्खडेसु वा, तो ते वयं आउसो! सपाणं सभोयणं पडिग्गहं दासामो, तुच्छए पडिग्गहए दिण्णे समणस्स गो सुट्ठु साहु भवइ ।

से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा गो खलु मे कप्पइ आहाकम्मिए असणे वा, पाणे वा, खाइमे वा, साइमे वा भोत्तए वा, पायए वा, मा उवकरेहि, मा उवक्खडेहि, अभिकंखसि मे दाउ? एमेव दलयाहि ।

से सेवं वयंतस्स परो असणं वा ४ उवकरेत्ता उवक्खडेत्ता सपाणं सभोयणं पडिग्गहं दलएज्जा—तहप्पगारं पडिग्गहं—अफासुयं \*अणेसणिज्जं त्ति मण्णमाणे लाभे संते० गो पडिगाहेज्जा ।

पडिग्गह-पडिलेहण-पद

२७—सिया से परो नेत्ता<sup>१</sup> पडिग्गहं णिसिरेज्जा, से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा तुमं चेव णं संतिय पडिग्गहं अंतोअतेणं पडिलेहिस्सामि ।

२८—केवली बूया—आयाणमेयं अंतो पडिग्गहंसि पाणाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा, \*एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो०, जं पुव्वामेव पडिग्गहं अंतोअतेणं पडिलेहिज्जा ।

सअडाइ-पाय-पदं

२९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—सअडं \*सपाणं सबोयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिग-पणग-दग-मट्ठिय-मक्कडा-संताणं—तहप्पगारं पायं—अफासुयं अणेसणिज्जं त्ति मण्णमाणे लाभे संते गो पडिगाहेज्जा ।

अप्पंडाइ-पाय-पदं

३०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—  
 अप्पंडं अप्पपाणं अप्पवीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं  
 अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्ठिय-मक्कडा-संताणगं अणल अथिरं  
 अधुवं अधारणिज्जं रोइज्जंतं ण रुच्चइ-तहप्पगारं पायं—  
 अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो  
 पडिगाहेज्जा ।

३१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—  
 अप्पंडं (जाव ६।३०) संताणगं अलं थिरं धुवं धारणिज्जं  
 रोइज्जंतं रुच्चइ-तहप्पगार पायं-फासुयं एसणिज्जं ति  
 मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ।

पाय-परिकम्म-पद

३२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा “णो णवए मे पाये” ति कट्ठु  
 णो बहुदेसिएण तेत्थेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाए  
 वा अब्भंगेज्ज वा, मक्खेज्ज वा ।

३३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा “णो णवए मे पाये” ति कट्ठु  
 णो बहुदेसिएण सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण वा,  
 वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसेज्ज वा, पघसेज्ज  
 वा ।

३४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा “णो णवए मे पाये” ति कट्ठु  
 णो बहुदेसिएण सीतोदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण  
 वा उच्छोलेज्ज वा, पघोएज्ज वा ।

३५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा “दुब्भिगंधे मे पाये” ति कट्ठु  
 णो बहुदेसिएण तेत्थेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाए  
 वा अब्भंगेज्ज वा, मक्खेज्ज वा ।

३६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा “दुब्भिमंग्घे मे पाये” त्ति कट्टु  
णो बहुदेसिएण सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण वा,  
वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसेज्ज वा,  
पघंसेज्ज वा ।

३७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा “दुब्भिमंग्घे मे पाये” त्ति कट्टु  
णो बहुदेसिएण सीओदगवियडेण वा, उसिणोदगवियडेण वा  
उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा ।

पाय-आयावण-पदं

३८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्ज पायं आयावेत्तए वा,  
पयावेत्तए वा—तहप्पगारं पायं णो अणंतरहियाए पुढवीए,  
णो ससिणिद्धाए पुढवीए, णो ससरक्खाए पुढवीए, णो  
चित्तमंताए सिलाए, णो चित्तमंताए लेलुए, कोलावासंसि  
वा दारुए जीवपइट्टिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सउसे  
सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणाए आयावेज्ज  
वा, पयावेज्ज वा ।

३९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा पायं आयावेत्तए  
वा, पयावेत्तए वा—तहप्पगारं पायं थूणंसि वा, गिहेलुगंसि  
वा, उसुयालंसि वा, कामजलसि वा—अण्णयरे वा तहप्पगारे  
अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो  
आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा ।

४०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा पायं आयावेत्तए  
वा, पयावेत्तए वा—तहप्पगारं पायं कुलियंसि वा, भित्तिसि  
वा, सिलंसि वा, लेलुंसि वा—अण्णतरे वा तहप्पगारे  
अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो  
आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा ।



४१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा पायं आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा—तहप्पगारे पाये खंधसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा, हम्मियतलंसि वा—अण्णयरे वा तहप्पगारे अंतलिकखजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकपे चलाचले णो आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा ।

४२—से तत्तादाए एगंतमवक्कमेज्जा, २ त्ता अहे भामथंडिलंसि वा, अट्टिरासिसि वा, किट्टिरासिसि वा, तुसरारसिसि वा, गोमयरारसिसि वा<sup>०</sup>—अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय तओ संजयामेव पायं आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ।

४३—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामगियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति वेमि ।

### वीओ उद्देशो

पडिग्गह-पेहा-पदं

४४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावड्-कुलं पिडवाय-पडियाए, पविसमाणे<sup>१</sup> पुब्बामेव पेहाए पडिग्गहगं, अवहट्ठु पाणे, पमज्जिय रयं, ततो संजयामेव गाहावड्-कुलं पिडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।

४५—केवली बूया—आयाण मेयं अंतो पडिग्गहगंसि पाणे वा, बीए वा, रए वा परियावज्जेज्जा ।

अह भिक्खूणं पुब्बोदिट्ठा एस पइन्ता, <sup>१</sup>एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो<sup>०</sup>, जं पुब्बामेव पेहाए पडिग्गहं, अवहट्ठु पाणे,

१—पविट्ठे<sup>०</sup> ( क, च, चू ) ।

पमज्जिय रयं, तओ संजयामेव गाहावइ-कुलं पिडवाय-  
पडियाए पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा ।

सीओदग-पदं

४६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए  
अणुपविट्ठे समाणे सिया से परो आहट्टु<sup>१</sup> अंतो पडिग्गहंति  
सीओदगं परिभाएत्ता णीहट्टु दलएज्जा—तहप्पगारं  
पडिग्गहं परहत्थंसि वा, परपायंसि वा—अफासुयं  
•अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे सते<sup>२</sup> णो पडिगाहेज्जा ।

उदउल्ल-पदं

४७-से य आहच्च पडिग्गहिए सिया<sup>३</sup> खिप्पामेव उदगंसि  
साहरेज्जा<sup>४</sup>, सपडिग्गहमायाए पाणं<sup>५</sup> परिट्ठवेज्जा, ससणिद्धाए  
वण-“भूमीए णियमेज्जा ।

४८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदउल्लं वा, ससणिद्धं वा पडिग्गहं  
णो आमज्जेज्ज वा, •पमज्जेज्ज वा, संलिहेज्ज वा,  
णिल्लिहेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा, उवट्ठेज्ज वा, आयावेज्ज  
वा<sup>०</sup> पयावेज्ज वा ।

४९-अह पुण एवं जाणेज्जा—विगतोदए मे पडिग्गहए, छिण्ण-  
सिणेहे मे पडिग्गहए—तहप्पगारं पडिग्गहं तओ संजयामेव  
आमज्जेज्ज वा (जाव ६।४८) पयावेज्ज वा ।

सपडिग्गह मायाए-पदं

५०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए

१—अभिहट्टु ( अ, क, च, छ, व ) ।

२—सिया से ( अ ) ।

३—आहरेज्जा ( च ) ।

४—वण ( अ ), एवं ( छ ) ।

५—वण ( घ, च ) ; च ण ( छ ) ।

पविसिउकामे सपडिग्गहमायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-  
पडियाए पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा ।

५१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहिया वियार-भूमि वा विहार-  
भूमि वा णिक्खममाणे वा पविसमाणे वा सपडिग्गहमायाए  
बहिया वियार-भूमि वा विहार-भूमि वा णिक्खमेज्ज वा  
पविसेज्ज वा ।

५२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे  
सपडिग्गहमायाए गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

५३—अह पुणेवं जाणेज्जा—तिव्वदेसियं वासं वासमाणं पेहाए,  
तिव्वदेसियं वा महियं सण्णिवयमाणिं पेहाए, महावाएण वा  
रयं समुद्धयं पेहाए, तिरिच्छं संपाइमा वा तसा-पाणा संथडा  
सन्निवयमाणा पेहाए,

से एवं णच्चा णो सपडिग्गहमायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-  
पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा । बहिया वियार-  
भूमि वा, विहार-भूमि वा णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा,  
गामाणुगामं वा दूइज्जेज्जा ।

पडिहारिय-पडिग्गह-पदं

५४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा एगइओ मुहुत्तगं-मुहुत्तगं  
पाडिहारियं पडिग्गहं जाएज्जा, एगाहेण वा, दुयाहेण वा,  
तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-  
विप्पवसिय उवागच्छेज्जा,

तहप्पगारं पडिग्गहं णो अप्पणा गिण्हेज्जा, णो अण्णमणस्स  
देज्जा, णो पामिच्चं कुज्जा, णो पडिग्गहेण पडिग्गह-  
परिणामं करेज्जा, णो परं उवसंकमित्तु एवं वदेज्जा—  
“आउसंतो! समणा! अभिक्खंसि पडिग्गहं धारेत्तए वा,

परिहरेत्तए वा?" थिरं वा णं संतं णो पलिच्छिदिय-  
पलिच्छिदिय परिद्वेज्जा ।

तहप्पगारं पडिग्गहं ससंधियं तस्स चैव णिसिरेज्जा, णो णं  
साइज्जेज्जा ।

५५-से एगइओ एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म-जे भयंतारो  
तहप्पगाराणि पडिग्गहाणि ससंधियाणि मुहुत्तगं-मुहुत्तग  
जाइत्ता एगाहेण वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण  
वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छंति,  
तहप्पगाराणि पडिग्गहाणि णो अप्पणा गिण्हंति, णो अण्ण-  
मण्णस्स अणुवयंति, णो पामिच्चं करेति, णो पडिग्गहेण  
पडिग्गह-परिणामं करेति, णो परं उवसंकमित्तु एवं वदेति-  
“आउसंतो! समणा! अभिकंखसि पडिग्गहं धारेत्तए वा,  
परिहरेत्तए वा?" थिरं वा णं संतं णो पलिच्छिदिय-  
पलिच्छिदिय परिद्वेति ।

तहप्पगाराणि पडिग्गहाणि ससंधियाणि तस्स चैव णिसिरेति,  
णो णं सातिज्जंति,

‘से हंता’ अहमवि मुहुत्तगं पाडिहारियं पडिग्गहं जाइत्ता  
एगाहेण वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा,  
पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छिस्सामि ।

आवियाइं एयं ममेव सिया । माइद्वाणं संफासे । णो एवं  
करेज्जा ।

पायविक्रिया-पदं

५६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो वण्णमंताइं पडिग्गहाइं  
विवण्णाइं करेज्जा, विवण्णाइं णो वण्णमंताइं करेज्जा, “अन्नं  
वा पडिग्गहं लभिस्सामि” ति कट्ठु णो अण्णमण्णस्स

देज्जा, णो पामिच्चं कुज्जा, णो पडिग्गहेण पडिग्गह-परिणामं करेज्जा, णो परं उवसंकमित्तु एवं वदेज्जा—“आउसंतो! समणा! अभिकंखसि मे पडिग्गहं धारेत्तए वा, परिहरेत्तए वा?” थिरं वा णं संतं णो पल्लिच्छिदिय-पल्लिच्छिदिय परिट्ठवेज्जा ।

जहा चेयं पडिग्गहं पावगं परो मन्तइ। परं च णं अदत्तहारिं पडिपहे पेहाए तस्स पडिग्गहस्स णिदाणाए णो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छेज्जा, णो मगाओ मगं संकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुगं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा, सरणं वा, सेणं वा, सत्थं वा कंखेज्जा, अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

आमोसग-पदं

५७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा से विहं सिया । सेज्जं पुण विहं जाणेज्जा—इमंसि खलु विहंसि बहवे आमोसगा पडिग्गह-पडियाए संपिंडिया गच्छेज्जा, णो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छेज्जा, णो मगाओ मगं संकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुगं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा, सरणं वा, सेणं वा, सत्थं वा कंखेज्जा, अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्जा समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

५८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा

से आमोसगा संपिंडिया गच्छेज्जा । ते णं आमोसगा एवं वदेज्जा—“आउसंतो! समणा! आहरेयं पडिग्गहं देहि, निक्खिवाहि । तं णो देज्जा, णो णिक्खिवेज्जा, णो वंदिय-वंदिय जाएज्जा, णो अंजलि कट्ठु जाएज्जा, णो कलुण-पडियाए जाएज्जा, धम्मियाए जायणाए जाएज्जा, तुसिणीय-भावेण वा उवेहेज्जा ।

ते णं आमोसगा सयं करणिज्जं त्ति कट्ठु अक्कोसंति वा, बंधंति वा, रुंभंति वा, उद्दवंति वा, पडिग्गहं अच्छिदेज्ज वा, अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज वा ।

तं णो गामसंसारियं कुज्जा, णो रायसंसारियं कुज्जा, णो परं उवसंकमित्तु ब्रूया—आउसंतो! गाहावड्! एए खलु आमोसगा पडिग्गह-पडियाए सयं करणिज्जं त्ति कट्ठु अक्कोसंति वा, बंधति वा, रुंभंति वा, उद्दवंति वा, पडिग्गहं अच्छिदेति वा, अवहरेंति वा, परिभवेंति वा । एयप्पगारं मणं वा, वड् वा णो पुरओ कट्ठु विहरेज्जा । अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।°

५९—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहि समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ।

सत्तमं अज्झयणं  
ओग्गह-पडिमा  
पढमो उद्देशो

अदिन्नादाण-पदं

१-समणे भविस्सामि अणगारे अकिंचणे अपुत्ते अपसू परत्तभोई  
पावं कम्मं णो करिस्सामि त्ति समुट्ठाए सव्वं भंते!  
अदिण्णादाणं पच्चक्खामि ।

२-से अणुपविसित्तां गामं वा, \*णगरं वा, खेडं वा, कव्वडं वा,  
मडंबं वा, पट्टणं वा, आगरं वा, दोणमुहं वा, णिगमं वा,  
आसमं वा, सण्णिवेसं वा, रायहाणि वा°-जेव सयं अदिन्नं  
गिण्हेज्जा, जेवण्णेणं<sup>१</sup> अदिण्णं गिण्हावेज्जा, जेवण्णं अदिण्णं  
गिण्हंतं पि समणुजाणेज्जा ।

ओग्गह-पद

३-जेहिं वि सद्धिं संपव्वइए, तेसि पि याइं भिक्खू छत्तयं<sup>२</sup> वा,  
मत्तयं वा, दंडगं वा, \*लट्ठियं वा, भिसियं वा, नालियं वा,  
चेलं वा, चिलमिलि वा, चम्मयं वा, चम्मकोसयं वा°,  
चम्मछेदणगं वा-तेसि पुव्वामेव ओग्गहं अणुण्णाविय  
अपडिलेहिय अपमज्जिय णो गिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज<sup>३</sup>  
वा ।

तेसि पुव्वामेव ओग्गहं अणुण्णविय पडिलेहिय पमज्जिय,  
तओ संजयामेव ओगिण्हेज्ज<sup>४</sup> वा, पगिण्हेज्ज वा ।

१-जेवण्णेहि ( घ, छ ) ।

२-छत्त ( घ, च ) ।

३-परिगिण्हेज्ज ( अ ) ।

४-उ ° ( घ ) ; उव ° ( छ ) ।

४-से आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ ओगहं जाएज्जा, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओगहं अणुणवेज्जा । कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिणातं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओगहे, जाव साहम्मिया 'एत्ता, ताव' ओगहं ओगिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो ।

५-से किं पुण तत्थोगहंसि एवोगहियंसि ? जे तत्थ साहम्मिया संभोइया समणुण्णा उवागच्छेज्जा, जे तेण सयमेसियाए<sup>१</sup> असणं वा ४ तेण ते साहम्मिया संभोइया समणुण्णा उवणिमंतेज्जा, णो चेव णं पर-पडियाए उगिज्झिय-उगिज्झिय उवणिमंतेज्जा ।

६-से आगंतारेसु वा, \*आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ ओगहं जाएज्जा, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओगहं अणुणवेज्जा । कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिणातं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओगहे, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओगहं ओगिण्हिसामो, तेण परं विहरिस्सामो ।<sup>२</sup>

७-से किं पुण तत्थोगहंसि एवोगहियंसि ? जे तत्थ साहम्मिया अणुसंभोइया समणुण्णा उवागच्छेज्जा, जे तेणं सयमेसियाए<sup>३</sup> पीढे वा, फलए वा, सेज्जा संथारए वा, तेण ते साहम्मिए अणुसंभोइए समणुण्णे उवणिमंतेज्जा, णो चेव णं पर-वडियाए उगिज्झिय-उगिज्झिय उवणिमंतेज्जा ।

८-से आगंतारेसु वा, \*आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा,

१-एतावता ( अ, क, घ, च, छ, व ) ।

२,३-<sup>०</sup> सित्तए ( अ, क, घ, च, छ ) ।



पण्णस्स (जाव ७।१४) चिंताए । सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ।

१६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—

इह खलु गाहावई वा, \*गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा°, कम्मकरीओ वा अण्णमण्णं अक्कोसंति वा, \*बंधंति वा, रंभंति वा, उद्द्वेति वा, णो पण्णस्स (जाव ७।१४) चिंताए । सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ।

१७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—

इह खलु गाहावई वा (जाव ७।१६) कम्मकरीओ वा अण्णमण्णस्स गायं तेत्तलेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाए वा, अब्भंगेति वा, मक्खेति वा, णो पण्णस्स (जाव ७।१४) चिंताए । सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ।

१८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—

इह खलु गाहावई वा (जाव ७।१६) कम्मकरीओ वा अण्णमण्णस्स गायं सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसंति वा पघंसंति वा, उव्वल्लेति वा, उव्वट्ठेति वा, णो पण्णस्स (जाव ७।१४) चिंताए । सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ।

१९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—

इह खलु गाहावई वा (जाव ७।१६) कम्मकरीओ वा

अण्णमण्णस्स गायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेंति वा, पधोवेंति वा, सिचंति वा, सिणावेंति वा, णो पण्णस्स (जाव ७।१४) चिताए । सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओगहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ।

२०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओगहं जाणेज्जा—  
इह खलु गाहावई वा (जाव ७।१६) कम्मकरीओ वा णिगिणा ठिआ णिगिणा उवल्लीणा मेहुणधम्मं विण्णवेंति, रहस्सियं वा मंतं मंतेंति, णो पण्णस्स (जाव ७।१४) चिताए । सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओगहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ।<sup>१०</sup>

२१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओगहं जाणेज्जा—  
आइण्णसंलेक्खं, णो पण्णस्स (जाव ७।१४) चिताए (सेवं णच्चा ?) तहप्पगारे उवस्सए णो ओगहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ।

२२-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामगियं<sup>१</sup> जं सव्वट्ठेहि समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति वेमि<sup>०</sup> ।

### बीओ उद्देसो

२३-से आगंतारेसु वा, आरामगारेसु वा, गाहावई-कुल्लेसु वा, परियावसहेसु वा, अणुवीइ ओगहं जाएज्जा—जे<sup>२</sup> तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओगहं अणुणविज्जा<sup>३</sup> । कानं

१—× (अ) ।

२—<sup>०</sup> वित्ता (अ, क, च, व) ।

खलु आउसो। अहालंदं अहापरिणायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओगहो, जाव साहम्मिया 'एत्ता, ताव'<sup>१</sup> ओगहं ओग्गिण्हिसामो, तेण परं विहरिस्सामो ।

२४-से किं पुण तत्थ ओगहंसि एवोग्हियंसि ? जे तत्थ सेमणाण वा माहणाण वा छत्तए वा, \*मत्तए वा, दंडए वा, लट्ठिया वा, भिसिया वा, नालिया वा, चेलं वा, चिलिमिलीं वा, चम्मए वा, चम्मकोसए वा<sup>२</sup>, चम्मछेदणए वा, तं णो अंतोहितो बार्हि णीणेज्जा, बहियाओ वा णो अंतो पवेसेज्जा, सुत्तं<sup>३</sup> वा णं पडिबोहेज्जा, णो तेसि किंचि<sup>४</sup> अप्पत्तिं पडिणीयं करेज्जा ।

अंब-पदं

२५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिक्खेज्जा अंबवणं उवागच्छित्तए, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओगहं अणुजाणावेज्जा । कामं खलु \*आउसो ! अहालंदं अहापरिणायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओगहो, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओगहं ओग्गिण्हिस्सामो, तेण परं<sup>५</sup> विहरिस्सामो ।

२६-से किं पुण तत्थ ओगहसि एवोग्हियंसि ?

अह भिक्खु<sup>६</sup> इच्छेज्जा अंबं भोत्तए वा, (पायए वा ?) । सेज्जं पुण अंबं जाणेज्जा—

सअंडं \*सपाणं सबीयं सहुरियं सउसं सउदयं सउत्तिगे-पणग-

१-एताव ( अ, घ, च, ब ), एतावता ( क, छ ) ।

२-णो सुत्तं वा णं ( अ, ब ) ।

३-किंचिवि ( क, घ, च, ब ) ।

४-भिक्खुण ( छ ) ।

दग-मट्टिय-मक्कडा-<sup>०</sup>संताणगं । तहप्पगारं अवं<sup>१</sup>—अफामुयं  
 \*अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते<sup>०</sup> णो पडिगाहेज्जा ।

२७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण अवं जाणेज्जा—  
 अप्पंडं \*अप्पपाणं अप्पवीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं  
 अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-<sup>०</sup>संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं  
 अवोच्छिन्नं—अफामुयं \*अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे  
 संते<sup>०</sup> णो पडिगाहेज्जा ।

२८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण अवं जाणेज्जा—  
 अप्पंडं (जाव ७।२७) संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—  
 फामुयं \*एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते<sup>०</sup> पडिगाहेज्जा ।

२९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिक्खेज्जा अंवभित्तं वा,  
 अंवपेसियं वा, अंवचोयगं वा, अंवसालगं वा, अंवडगलं<sup>१</sup> वा  
 भोत्तए वा, पायए वा । सेज्जं पुण जाणेज्जा—  
 अंवभित्तं वा (जाव) अंवडगलं वा सअंडं (जाव ७।२६)  
 संताणगं—अफामुयं \*अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते<sup>०</sup>  
 णो पडिगाहेज्जा ।

३०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—  
 अवभित्तं वा (जाव ७।२९) अंवडगलं वा अप्पंडं (जाव  
 ७।२७) संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं अवोच्छिन्नं—अफामुयं  
 \*अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते<sup>०</sup> णो पडिगाहेज्जा ।

३१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—  
 अंवभित्तं<sup>२</sup> वा (जाव ७।२९) अंवडगलं वा अप्पंडं (जाव  
 ७।२७) संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—फामुयं  
 \*एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते<sup>०</sup> पडिगाहेज्जा ।

१—<sup>०</sup> डालग ( अ, क, घ, च, छ, व ) ।

२—अंव वा अवभित्तं ( घ, च, छ ) ।

उच्छु-पदं

३२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा उच्छुवणं उवागच्छित्तए, जे तत्थ ईसरे, \*जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुजाणावेज्जा । कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिणायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओग्गिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो ।

३३-से कि पुण तत्थ ओग्गहंसि<sup>०</sup> एवोग्गहियंसि ?

अह भिक्खू इच्छेज्जा उच्छुंभोत्तए वा, पायए वा । सेज्जं (पुण ?) उच्छुं जाणेज्जा—

सअंडं (जाव ७।२६) \*संताणगं । तहप्पंगारं उच्छुं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते<sup>०</sup> णो पडिगाहेज्जा ।

३४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उच्छुं जाणेज्जा—

अप्पंडं (जाव ७।२७) संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं \*अवो-  
च्छिन्नं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

३५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उच्छुं जाणेज्जा—

अप्पंडं (जाव ७।२७) संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—  
फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ।<sup>०</sup>

३६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा<sup>१</sup> अंतरुच्छुयं वा,  
उच्छुगंडियं वा, उच्छुचोयगं वा, उच्छुसालगं वा, उच्छुडगलं  
वा भोत्तए वा, पायए वा । सेज्जं पुण जाणेज्जा—  
अंतरुच्छुयं वा (जाव) डगलं वा सअंडं (जाव ७।२६)

१—सेज्जं पुण अभिकंखेज्जा ( अ ) ।

•संताणगं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते°  
णो पडिगाहेज्जा ।

३७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—

अंतरुच्छुयं वा (जाव ७।३६) डगलं वा अप्पंडं (जाव ७।२७)

•संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं अवोच्छिन्नं—अफामुय  
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

३८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—

अंतरुच्छुयं वा (जाव ७।३६) डगलं वा अप्पंडं (जाव ७।२७)

संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—फासुयं एसणिज्जं ति  
मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ।°

लसुण-पद

३९—•से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा ल्हसुणवणं  
उवागच्छित्तए, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओगहं  
अणुजाणावेज्जा । कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिणायं  
वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओगहो, जाव  
साहम्मिया एत्ता, ताव ओगहं ओग्गिण्हस्सामो, तेण परं  
विहरिस्सामो ।

४०—से किं पुण तत्थ ओगहंसि एवोग्हियंसि ?

अह भिक्खू इच्छेज्जा ल्हसुणं भोत्तए वा. (पायए वा ?) सेज्जं  
पुण ल्हसुणं जाणेज्जा—

सअंडं (जाव ७।२६) संताणगं तहप्पगारं ल्हसुणं—अफामुयं  
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

४१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ल्हसुणं जाणेज्जा—

अप्पंडं (जाव ७।२७) संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं अवोच्छिन्नं—

अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

४२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ल्हसुणं जाणेज्जा—  
अप्पंडं (जाव ७।२७) संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—  
फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ।<sup>०</sup>

४३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा ल्हसुणं<sup>१</sup> वा,  
ल्हसुण-कंदं वा, ल्हसुण-चोयगं वा, ल्हसुण-णालगं<sup>२</sup> वा भोत्तए  
वा, पायए वा । सेज्जं पुण जाणेज्जा—  
ल्हसुणं वा (जाव) ल्हसुण-णालगं<sup>३</sup> वा सअंडं (जाव ७।२६)  
•संताणगं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते<sup>०</sup>  
णो पडिगाहेज्जा ।

४४—•से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—  
ल्हसुणं वा (जाव ७।४३) ल्हसुण-णालगं वा अप्पंडं (जाव  
७।२७) संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं अवोच्छिन्नं—अफासुयं  
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

४५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—  
ल्हसुणं वा (जाव ७।४३) ल्हसुण-णालगं वा अप्पंडं (जाव  
७।२७) संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—फासुयं एसणिज्जं  
ति मण्णमाणे लाभे संते<sup>०</sup> पडिगाहेज्जा ।

ओग्गह-पदं

४६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आगंतारेसु वा, •आरामागारेसु  
वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ ओग्गहं  
जाणेज्जा—जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्टए, ते ओग्गहं

१—ल्हसुण ( च ) ; लसण ( व ) ।

२—<sup>०</sup> डालग ( अ, व ) ।

३—-वीयं (क्वचित्) ।

अणुणविज्जा । कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिणायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओगहो, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओगहं ओगिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो ।

४७—से कि पुण तत्थ ओगहंसि<sup>१</sup> एवोग्हियंसि ? जे तत्थ गाहावईण वा, गाहावइ पुत्ताण वा इच्चेयाइ आयतणाइ<sup>२</sup> उवाइकम्म ।

ओगह-पडिमा-पद

४८—अह भिक्खू जाणेज्जा इमाहिं सत्तहि पडिमाहि ओगहं ओगिण्हित्तए ।

४९—तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—से आगंतारेसु वा, आरामा-गारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ ओगहं जाएज्जा—“जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओगहं अणुणविज्जा । कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिणायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओगहो, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओगहं ओगिण्हि-स्सामो, तेण परं विहरिस्सामो—पढमा पडिमा ।

५०—अहावरा दोच्चा पडिमा—जस्सणं भिक्खुस्स एवं भवइ “अहं च खलु अण्णेसि भिक्खूणं अट्ठाए ओगहं ओगिण्हिस्सामि, अण्णेसि भिक्खूणं ‘ओगहे ओगहिए’<sup>३</sup> उवल्लिस्सामि”—दोच्चा पडिमा ।

५१—अहावरा तच्चा पडिमा—जस्सणं भिक्खुस्स एवं भवइ “अहं च खलु अण्णेसि भिक्खूणं अट्ठाए ओगहं ओगिण्हिस्सामि,

१—आयाणार ( क, च ) ; आययाणाडं ( घ ) , आयणाड ( छ ) , आययणा ( ज ) ।

२—ओगहिए ओगहे ( अ ) ।



अण्णेसि भिक्खूणं च ओग्गहे ओग्गहिण्णो उवल्लिस्सामि”-  
तच्चा पडिमा ।

५२-अहावरा चउत्था पडिमा-जस्सणं भिक्खुस्स एवं भवइ “अहं  
च खलु अण्णेसिं भिक्खूणं अट्ठाए ओग्गहं णो ओगिण्हिस्सामि,  
अण्णेसि च ओग्गहे ओग्गहिण्णो उवल्लिस्सामि”-चउत्था  
पडिमा ।

५३-अहावरा पंचमा पडिमा-जस्सणं भिक्खुस्स एवं भवइ, “अहं  
च खलु अप्पणो अट्ठाए ओग्गहं ओगिण्हिस्सामि, णो दोण्हं,  
णो तिण्हं, णो चउण्हं, णो पंचण्हं-पंचमा पडिमा ।

५४-अहावरा छट्ठा पडिमा-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जस्सेव  
ओग्गहे उवल्लिएज्जा, जे तत्थ अहा समण्णागए, तंजहा-  
इक्कडे वा, \*कढिणे वा, जंतुए वा, परगे वा, मोरगे वा,  
तणे वा, कुसे वा, कुच्चगे वा, पिप्पले वा<sup>०</sup>, पलाले वा ।  
तस्स लाभे संवसेज्जा, तस्स अलाभे उक्कुडुए<sup>१</sup> वा, णेसज्जिए  
वा विहरेज्जा-छट्ठा पडिमा ।

५५-अहावरा सत्तमा पडिमा-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा  
अहासंथडमेव ओग्गहं जाएज्जा, तंजहा-पुढविसिलं वा,  
कट्टसिलं वा । अहासंथडमेव तस्स लाभे संवसेज्जा, तस्स  
अलाभे उक्कुडुओ वा, णेसज्जिओ वा विहरेज्जा-सत्तमा  
पडिमा ।

५६-इच्चेतासिं सत्तण्हं पडिमाणं अण्णयरं \*पडिसं पडिवज्जिमाणे  
णो एवं वएज्जा-मिच्छा पडिवण्णा खलु एते भयंतारो,  
अहमेगे सम्मं पडिवन्ते ।

जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्तान्

१-उक्कडए (अ, ब) ।

विहरन्ति, जो य अहमसि एं पडिमं पडिवज्जित्ताणं  
विहरामि, सब्बे वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया अन्नोन्न-  
समाहीए, एव च ण विहरति ।°

पंचविह-ओगह-पद

५७-सुयं मे आउस । ते णं भगवया एवमक्खायं—

इह खलु थेरेहि भगवतेहि पंचविहे ओगहे पणत्ते, तजहा—  
देविंदोगहे, रायोगहे, गाहावइ-ओगहे, सागारिय-ओगहे,  
साहम्मिय-ओगहे ।

५८-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामगिय, °जं  
सब्बट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति वेमि° ।

अट्टमं अज्झयणं  
ठाण-सत्तिक्कयं

ठाण-एसणा-पदं

१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा<sup>१</sup> ठाणं ठाइत्ताए, से  
अणुपविसेज्जा 'गामं वा, गणरं वा, \*खेडं वा, कव्वडं वा,  
मडंबं वा, पट्टणं वा, आगरं वा, दोणमुहं वा, णिगमं वा,  
आसमं वा, सण्णिवेसं वा<sup>२</sup>, रायहाणि वा'<sup>३</sup>,  
से अणुपविसित्ता गामं वा (जाव) रायहाणि वा, सेज्जं पुण  
ठाणं जाणेज्जा-

सअंडं<sup>३</sup> \*सपाणं सवीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिग-  
पणग-दग-मट्टियं-मक्कडा-संताणयं,  
तं तहप्पगारं ठाणं-अफासुयं अणेसणिज्जं \*ति मण्णमाणे<sup>०</sup>  
लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा-  
अप्पंडं अप्पपाणं अप्पवीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं  
अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टियं-मक्कडा-संताणयं ।  
तहप्पगारे ठाणे पडिलेहिता, पमज्जित्ता, तओ संजयामेव  
ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहियं वा चेतैज्जा ।

अस्सि पडियाए-ठाण-पदं

३-सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा-

अस्सि पडियाए एगं सामम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,

१-<sup>०</sup> कंखेइ (अ, घ) ; <sup>०</sup> कखे (च, ब) ।

२-गाम वा जाव सण्णिवेसं वा (अ, क, घ, च, छ, ब) ।

३-अयड (अ, च) ।

जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं  
अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतeti ।

तहप्पगारे ठाणे पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा, (बहिया  
णीहडे वा अणीहडे वा), अत्तट्टिए वा अणत्तट्टिए वा, परिभुत्ते  
वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाणं  
वा, सेज्ज वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

४-सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,  
जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं  
अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतeti ।

तहप्पगारे ठाणे पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा, (बहिया  
णीहडे वा अणीहडे वा), अत्तट्टिए वा अणत्तट्टिए वा,  
परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा  
णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

५-सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए एगं साहम्मिणि समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,  
जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं  
अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतeti ।

तहप्पगारे ठाणे पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा (बहिया  
णीहडे वा अणीहडे वा), अत्तट्टिए वा अणत्तट्टिए वा,  
परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा  
णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

६-सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं,

भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं  
अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठुं चेतेति ।

तहप्पगारे ठाणे पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा  
(बहिया णीहडे वा अणीहडे वा), अत्तट्टिए वा अणत्तट्टिए  
वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते  
वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

समण-माहणाइ समुद्दिस्स-ठाण-पद

७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वां सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—

बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय  
समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स  
कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठुं चेएइ ।

तहप्पगारे ठाणे पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा,  
(बहिया णीहडे वा अणीहडे वा), अत्तट्टिए वा अणत्तट्टिए  
वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविए वा अणासेविए  
वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—

बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइं,  
भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं  
अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठुं चेएइ ।

तहप्पगारे ठाणे अपुरिसंतरकडे, (अबहिया णीहडे),  
अणत्तट्टिए, अपरिभुत्ते, अणासेविए णो ठाणं वा, सेज्जं वा,  
णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

९-अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, (बहिया णीहडे),  
अत्तट्टिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहिता, पमज्जिता, तओ  
संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

परिकम्मिय-ठाण-पदं

१०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—

अस्संजए भिक्खु-पडियाए कडिए वा, उक्कंबिए वा, छन्ने वा, लित्ते वा, घट्टे वा, मट्टे वा, संमट्टे वा, संपधूमिए वा ।  
तहप्पगारे ठाणे अपुरिसंतरकडे, (अबहिया णीहडे),  
अणत्तट्टिए, अपरिभुत्ते, अणासेविए णो ठाणं वा, सेज्जं वा,  
णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

११-अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, (बहिया णीहडे),  
अत्तट्टिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहिता, पमज्जिता, तओ  
संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

१२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—

अस्संजए भिक्खु-पडियाए खुड्डियाओ दुवारियाओ  
महल्लियाओ कुज्जा,  
महल्लियाओ दुवारियाओ खुड्डियाओ कुज्जा,  
समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा,  
विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा,  
पवायाओ सिज्जाओ णिवायाओ कुज्जा,  
णिवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा,  
अंतो वा, बहिं वा, ठाणस्स हरियाणि छिदिय-छिदिय  
दालिय-दालिय संथारग संथरेज्जा, बहिया णिण्णक्खु ।  
तहप्पगारे ठाणे अपुरिसंतरकडे, (अबहिया णीहडे),  
अणत्तट्टिए, अपरिभुत्ते, अणासेवित्ते णो ठाणं वा, सेज्जं वा  
णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

१३-अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, (बहिया णीहडे),  
अत्तट्टिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहिता, पमज्जिता, तओ  
संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

बहियानिस्सारिय-ठाण-पदं

१४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—

अस्संजए भिक्खु-पडियाए, उदगप्पसूयाणि कंदाणि वा,  
मूलाणि वा, (तयाणि वा?), पत्ताणि वा, पुष्पाणि वा,  
फलाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा ठाणाओ ठाणं  
साहरति, बहियां वा णिण्णक्खु ।

तहप्पगारे ठाणे अपुरिसंतरकडे, (अबहिया णीहडे),  
अणत्तट्टिए, अपुरिभुत्ते, अणासेविते णो ठाणं वा, सेज्जं वा,  
णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

१५-अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे; (बहिया णीहडे), अत्तट्टिए,  
परिभुत्ते, आसेविए, पडिलेहिता, पमज्जिता, तओ संजयामेव  
ठाणं वा, सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतैज्जा ।<sup>१</sup>

ठाण-पडिमा-पदं

१६-इच्चेयाइं आयतणाइं उवातिकम्म, अह भिक्खू इच्छेज्जा  
चउहिं पडिमाहिं ठाणं ठाइत्तए ।

१७-तत्थिमा पढमा पडिमा—अचित्तं खलु उवसज्जेज्जा,  
अवलंबेज्जा, काएण विपरिकम्मादी, सन्नियारं ठाणं  
ठाइस्सामि त्ति पढमा पडिमा ।

१८-अहावरा दोच्चा पडिमा—अचित्तं खलु उवसज्जेज्जा,  
अवलंबेज्जा, काएण विपरिकम्मादी, णो सन्नियारं ठाणं  
ठाइस्सामि त्ति दोच्चा पडिमा ।

१९-अहावरा तच्चा पडिमा—अचित्तं खलु उवसज्जेज्जा, णो  
अवलंबेज्जा, णो काएण विपरिकम्मादी, णो सन्नियारं ठाणं  
ठाइस्सामि त्ति तच्चा पडिमा ।

१—आयाणाड ( क, घ, च ) ।

२—अवसज्जिस्सामि ( चू ) ।

२०-अहावरा चउत्था पडिमा—अचित्तं खलु<sup>१</sup> उवसज्जेज्जो,  
णो अवलंबेज्जा, णो काएण विपरिकम्मादी, णो सवियारं  
ठाण ठाइस्सामि, वोसट्ठकाए वोसट्ठकेसं-मंसु-लोम-णहे  
सण्णिरुद्धं वा ठाणं ठाइस्सामि त्ति चउत्था पडिमा ।

२१-इच्चेयासिं चउण्हं पडिमाणं \*अण्णयरं पडिमं पडिवज्जमाणे  
णो एवं वएज्जा मिच्छा पडिवण्णा खलु एते भयंतारो, अहमेगे  
सम्मं पडिवत्ते ।

जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति,  
जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सब्बे  
वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया अन्तोन्नसमाहीए एवं च णं  
विहरंति ।

संथारग-पच्चप्पिण-पद

२२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिक्खेज्जा संथारगं  
पच्चप्पिणित्तए । सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—सअंडं सपाणं  
सबीयं सहुरियं सउसं सउदयं सउत्तिग-पणग-दग-मट्ठिय-  
मक्कडा-संताणगं, तहप्पगारं संथारगं णो पच्चप्पिणेज्जा ।

२३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिक्खेज्जा संथारगं  
पच्चप्पिणित्तए । सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जो—अप्पंडं  
अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहुरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिग-  
पणग-दग-मट्ठिय-मक्कडा-संताणगं, तहप्पगारं संथारगं  
पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय, आयाविय-  
आयाविय, विणिद्धुणिय-विणिद्धुणिय, तओ संजयामेव  
पच्चप्पिणेज्जा ।



उच्चार-पासवणभूमि-पदं

२४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा, समाणे वा वसमाणे वा,  
गामाणुगामं दूइज्जमाणे वा पुव्वामेव णं पणस्स उच्चार-  
पासवणभूमि पडिलेहिज्जा ।

२५-केवली ब्रूया—आयाण मेयं अपडिलेहियाए उच्चार-पासवणं-  
भूमि, भिक्खू वा भिक्खुणी वा, राओ वा विआले वा,  
उच्चार-पासवणं परिट्टवेमाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा,  
से तत्थ पयलमाणे वा पवडमाणे वा, हत्थं वा, पायं वा, बाहुं  
वा, ऊरुं वा, उदरं वा, सीसं वा, अन्नयरं वा, कायंसि  
इंदिय-जायं लूसेज्ज वा, पाणाणि वा, भूयाणि वा, जीवाणि  
वा, सत्ताणि वा अभिहणेज्ज वा, वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज वा,  
संघसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा, किलामेज्ज वा,  
ठाणाओ ठाणं संकामेज्ज वा, जीविआओ ववरोवेज्ज वा ।  
अहं भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइन्ता, एस हेऊ, एस कारणं,  
एस उवएसो, जं पुव्वामेव पणस्स उच्चार-पासवणभूमि  
पडिलेहेज्जा ।

ठाण-विहि-पदं

२६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिक्खेज्जा सेज्जा-संधारण-भूमि  
पडिलेहित्ताए, गण्णत्थ आयरिएण वा उवज्झाएण वा,  
पवत्तीए वा, थेरेण वा, गणिणा वा, गणहरेण वा,  
गणावच्छेइएण वा, बालेण वा, बुड्ढेण वा, सेहेण वा,  
गिलाणेण वा, आएसेण वा,  
अत्तेण वा, मज्जेण वा, समेण वा, विसमेण वा, पवाएण वा,  
णिवाएण वा तओ संजयामेव पडिलेहिय-पडिलेहिए,  
पमज्जिय-पमज्जिय बहु-फासुयं सेज्जा-संधारणं संधरेज्जा ।

१७-से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा बहु-फासुए सेज्जा-संथारणं  
 संथरेत्ता अभिक्खेज्जा, बहु-फासुए सेज्जा-संथारणं दुहत्ताए,  
 १८-से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा बहु-फासुए सेज्जा-संथारणं  
 दुहत्ताए, से पुब्बमेव ससीसोवरियं कायं, पाए, य, पमज्जिय-  
 पमज्जिय, तओ संजयामेव बहु-फासुए सेज्जा-संथारणं  
 दुहत्ताए, १९-त्ता, तओ संजयामेव बहु-फासुए सेज्जा-संथारणं  
 चिट्ठेज्जा ।

२०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुए सेज्जा-संथारणं  
 चिट्ठमाणे, णो अण्णमण्णस्स हत्थेण हत्थं, पाएण पायं, काएण  
 कायं, आसाएज्जा ।  
 से अणासायमाणे, तओ संजयामेव बहु-फासुए सेज्जा-संथारणं  
 चिट्ठेज्जा ।

२१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उस्सासमाणे वा, णीसासमाणे  
 वा, कासमाणे वा, छीयमाणे वा, जंभायमाणे वा, उड्डुए  
 वा, वायणिसग्गे वा करेमाणे, पुब्बमेव आसय वा, पोसयं  
 वा, पाणिणा परिपिहत्ता, तओ संजयामेव ऊससेज्जा वा,  
 णीससेज्जा वा, कासेज्जा वा, छीएज्जा वा, जंभाएज्जा वा,  
 उड्डुयं वा, वायणिसगं वा, करेज्जा ।

२२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा—

समा वेगया सेज्जा भवेज्जा, विसमा वेगया सेज्जा भवेज्जा,  
 पवाता वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिवाता वेगया सेज्जा भवेज्जा,  
 ससरक्खा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्प-ससरक्खा वेगया सेज्जा  
 भवेज्जा,

सदंस-मसगा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्प-दंस-मसगा वेगया

११. सेज्जा भवेज्जा, सपरिसाढा वेगया सेज्जा भवेज्जा,  
 अपरिसाढा वेगया सेज्जा भवेज्जा,  
 १२. सउवसग्गा वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिरुवसग्गा वेगया सेज्जा  
 भवेज्जा, तहप्पगाराहि सेज्जाहि संविज्जमाणाहिं पग्गाहिय-  
 तरागं विहरेज्जा, णेव किंचिवि वएज्जा<sup>१</sup> ।  
 ३१-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामगियं, \*जं  
 सव्वद्वेहिं समिए सहिए सया<sup>०</sup> जएज्जासि ।

—त्ति वेमि ।

नवमं अज्मयणं

## णिसीहिया-सत्तिक्कयं

णिसीहिया-एसणा-पदं

१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिक्खेज्जा णिसीहियं गमणाए,  
सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—  
संअंडं \*सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिग-पणग-  
दग-मट्टिय-० मक्कडा-संताणयं,  
तहप्पगारं णिसीहियं-अफासुयं अणेसणिज्जं \*ति मण्णमाणे०  
लाभे संते णो चेतिस्सामि<sup>१</sup> (चेएज्जा ?) ।

२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिक्खेज्जा णिसीहियं गमणाए,  
सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—  
अप्पंडं \*अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं  
अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-० मक्कडा-संताणयं,  
तहप्पगारं णिसीहियं—फासुयं एसणिज्जं \*ति मण्णमाणे०  
लाभे संते चेतिस्सामि<sup>२</sup> (चेएज्जा ?) ।

अस्सि पडियाए-णिसीहिया-पदं

३-सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,  
जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं  
अणिसट्ठं अभिहट्ठं आहट्ठु चेतेति ।

१-से ( अ, क, घ, च, व ) ।

२-वृत्तौ 'परिगृह्णीयात्' इति संस्कृत-रूपं विद्यते 'चेतिस्सामि' इति पाठः सम्भवतो  
लिपिदोषेण जातः । प्रकरणानुसारेणात्र कोष्ठकान्तर्गतं पाठो युज्यते ।

३-वृत्तौ 'गृण्णीयात्' इति संस्कृत-रूपं विद्यते 'चेतिस्सामि' इति पाठः सम्भवतो  
लिपिदोषेण जातः प्रकरणानुसारेणात्र कोष्ठकान्तर्गतं पाठो युज्यते ।

तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतर-  
कडाए वा, (बहिया णीहडाए वा, अणीहडाए वा), अत्तद्वियाए  
वा अणत्तद्वियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा,  
आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा,  
णिसीहियं वा चेतोज्जा ।

४-सेज्जं पुणं णिसीहियं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइ, भूयाइ,  
जीवाइ, सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्च अच्चेज्जं  
अणिसद्वं अभिहडं आहट्ठं चेतोति ।

तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतर-  
कडाए वा, (बहिया णीहडाए वा अणीहडाए वा),  
अत्तद्वियाए वा अणत्तद्वियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए  
वा, आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं  
वा, णिसीहियं वा चेतोज्जा ।

५-सेज्जं पुणं णिसीहियं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए एणं साहम्मिणि समुद्दिस्स पाणाइ, भूयाइ,  
जीवाइ, सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्च अच्चेज्जं  
अणिसद्वं अभिहडं आहट्ठं चेतोति ।

तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतर-  
कडाए वा, (बहिया णीहडाए वा अणीहडाए वा), अत्तद्वियाए  
वा अणत्तद्वियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा,  
आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा,  
णिसीहियं वा चेतोज्जा ।

६-सेज्जं पुणं णिसीहियं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइ,

भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं  
अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठुं चेतेति ।

तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतर-  
कडाए वा, (बहिया णीहडाए वा अणीहडाए वा), अत्तट्ठियाए  
वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा,  
आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा,  
णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-णिसीहिया-पदं

७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—  
बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय  
समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ  
समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठुं  
चेएइ ।

तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतर-  
कडाए वा, (बहिया णीहडाए वा अणीहडाए वा), अत्तट्ठियाए  
वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा,  
आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा,  
णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—  
बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइं,  
भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं  
अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठुं चेएइ ।

तहप्पगाराए णिसीहियाए अपुरिसंतरकडाए, (अवहिया  
णीहडाए), अणत्तट्ठियाए, अपरिभुत्ताए, अणासेवियाए णो  
ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

९-अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडा (बहिया णीहडा),  
अत्तट्टिया, परिभुत्ता, आसेविया, पडिलेहिता, पमज्जिता,  
तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

परिकम्मिय-णिसीहिया-पदं

१०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—  
अस्संजए भिक्खु-पडियाए कडिए वा, उक्कबिए वा, छन्ने  
वा, लित्ते वा, घट्टे वा, मट्टे वा, संमट्टे वा, संपधूमिए वा ।  
तहप्पगाराए णिसीहियाए अपुरिसंतरकडाए, (अबहिया  
णीहडाए), अणत्तट्टियाए, अपरिभुत्ताए, अणासेवियाए णो  
ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

११-अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडा (बहिया णीहडा),  
अत्तट्टिया, परिभुत्ता, आसेविया पडिलेहिता, पमज्जिता,  
तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा  
चेतेज्जा ।

१२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—  
अस्संजए भिक्खु-पडियाए खुड्डियाओ दुवारियाओ  
महल्लियाओ कुज्जा,  
महल्लियाओ दुवारियाओ खुड्डियाओ कुज्जा,  
समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा,  
विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा,  
पवायाओ सिज्जाओ णिवायाओ कुज्जा,  
णिवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा,  
अंतो वा बहिं वा णिसीहियाए हरियाणि छिंदिय-छिंदिय,  
दालिय-दालिय संथारगं संथरेज्जा, बहिया वा णिणक्खु ।  
तहप्पगाराए णिसीहियाए अपुरिसंतरकडाए, (अबहिया

णीहडाए), अणत्तट्टियाए, अपरिभुत्ताए, अणासेवियाए णो  
ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

१३-अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडा, (वहिया णीहडा),  
अत्तट्टिया, परिभुत्ता, आसेविया पडिलेहिता, पमज्जिता,  
तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

बहियानिस्तारिय-णिसीहिया-पदं

१४-से भिक्खु वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण जाणेज्जा—

अस्संजए भिक्खु-पडियाए उदगप्पसूयाणि कंदाणि वा,  
मूलाणि वा, (तयाणि वा?), पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा,  
फलाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा ठाणाओ ठाणं  
साहरत्ति, बहिया वा णिण्णक्खु ।

तहप्पगाराए णिसीहियाए अपुरिसतरकडाए, (अवहिया  
णीहडाए), अणत्तट्टियाए, अपरिभुत्ताए, अणासेवियाए णो  
ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

१५-अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडा, (वहिया णीहडा),  
अत्तट्टिया, परिभुत्ता, आसेविया पडिलेहिता, पमज्जिता,  
तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।<sup>१०</sup>

१६-जे तत्थ दुवग्गा वा तिक्कग्गा वा चउवग्गा वा पंचवग्गा वा  
अभिसंधारेत्ति णिसीहियं गमणाए, ते णो अण्णमण्णस्स कायं  
आलिंगेज्ज वा, विलिंगेज्ज वा, चुंवेज्ज वा, दंतेहिं णहेहिं  
वा अच्छिंदेज्ज वा, विच्छिंदेज्ज<sup>१</sup> वा ।

१७-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं  
सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जा सेयमिण मणेज्जासि ।

—त्ति वेमि ।



दसमं अज्जयणं

## उच्चारपासवण-सत्तिककयं

पाय-पुंछण-पदं

१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उच्चारपासवण-किरियाए उव्वाहिज्जमाणे<sup>१</sup> सयस्स पाय-पुंछणस्स असईए तओ पच्छा साहम्मियं जाएज्जा ।

थंडिल-पदं

२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—  
सअडं सपाणं \*सबीअं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिग-पणग-  
दग-मट्टिय-<sup>०</sup> मक्कडा-संताणयं,  
तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—  
अप्पमाणं अप्पबीअं \*अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिग-  
पणग-दग-मट्टिय-<sup>०</sup> मक्कडा-संताणयं,  
तहप्पगारंसि थंडिलंसि उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—  
अस्सि पडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स \*पाणाइं, भूयाइं,  
जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं  
अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु उद्देसियं चेएइ,  
तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा,  
(बहिया णीहडं वा अणीहडं वा), अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं  
वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं

वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चार-  
पासवणं वोसिरेज्जा ।

५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—  
अस्सि पडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं (जाव  
१०।४) उद्देसियं चेएइ ।

तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा (जाव १०।४) अणासेवियं  
वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चार-  
पासवणं वोसिरेज्जा ।

६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—  
अस्सि पडियाए एगं साहम्मिणि समुद्दिस्स पाणाइं (जाव  
१०।४) उद्देसियं चेएइ ।

तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा (जाव १०।४) अणासेवियं  
वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चार-  
पासवणं वोसिरेज्जा ।

७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—  
अस्सि पडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं  
(जाव १०।४) उद्देसियं चेएइ ।

तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा (जाव १०।४) अणासेवियं  
वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चार-  
पासवणं वोसिरेज्जा ।

८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—  
अस्सि पडियाए बहवे समण-माहण-अतिहि-किव्वण-वणीमए  
पगणिय-पगणिय, समुद्दिस्स पाणाइं (जाव १०।४) उद्देसियं  
चेएइ ।

तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा (जाव १०।४) अणासेवियं वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उक्चार-पासवणं वोसिरेज्जा ।<sup>०</sup>

६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—  
बहवे समण-माहण-किवण-वणीमग-अतिही<sup>१</sup> समुद्दिस्स पाणाइं  
(जाव १०।४) उद्देसियं चेएइ ।

तहप्पगारं थंडिलं अपुरिसंतरकडं, (बहिया अणीहडं),  
\*अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं, अणासेवियं ।<sup>०</sup> अण्णयरंसि वा  
तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चार-पासवणं वोसिरेज्जा ।

१०-अहः पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडं, (बहिया णीहडं),  
\*अत्तट्ठियं, परिभुत्तं, आसेवियं<sup>०</sup> अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि  
थंडिलंसि उच्चार-पासवणं वोसिरेज्जा ।

११-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—  
अस्सि पडियाए कयं वा, कारियं वा, पामिच्चयं<sup>२</sup> वा, छणं  
वा, घट्टं वा, मट्ठ वा, लित्तं वा, संमट्टं वा, संपधूमियं वा ।  
अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं  
वोसिरेज्जा ।

१२-से भिक्खू भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—  
इह खलु गाहावई वा, गाहावइपुत्ता वा कंदाणि वा, मूलाणि  
वा, \* (तयाणि वा ?), पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा,  
बीयाणि वा<sup>०</sup>, हरियाणि वा अंतातो वा बाहिं णीहरंति,  
बहियोओ<sup>३</sup> वा अंतो साहरंति । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि  
थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

१-पूर्वपाठेभ्य (१।१७, २।८, ५।१०) अस्य शब्द-विन्यासो भिन्नोस्ति ।

२-पामाच्चियं (अ, क, घ, च) ।

३-बाहोतो (अ, क) ।

१३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—  
खंधंसि वा, पीढंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, अट्टंसि<sup>१</sup>  
वा, पासायंसि वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि  
णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

१४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—  
अणंतरहियाए पुढवीए, ससिणिद्धाए पुढवीए, ससरक्खाए  
पुढवीए, मट्टियाकडाए<sup>२</sup>, चित्तमंताए सिलाए, चित्तमंताए  
लेलुयाए, कोलावासंसि वा<sup>३</sup> दारुयंसि जीवपइद्वियंसि  
\*सअंडसि सपाणंसि सवीअंसि सहुरियंसि सउसंसि सउदयंसि  
सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-<sup>०</sup> मक्कडा संताणयंसि । अण्णयरंसि  
वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

१५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—  
इह खलु गाहावई वा, गाहावइ-पुत्ता वा कंदाणि वा,  
\*मूलाणि वा, (तयाणि वा?), पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा,  
फलाणि वा<sup>०</sup>, बीयाणि वा परिसाडेंसु वा, परिसाडित्ति वा,  
परिसाडिस्संति वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि  
णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

१६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—  
इह खलु गाहावई वा, गाहावइ-पुत्ता वा सालीणि वा,  
वीहीणि वा, मुग्गाणि वा, मासाणि वा, तिलाणि वा,  
कुलत्थाणि वा, जवाणि वा, जवजवाणि वा, पतिरिसु वा,

१-हम्मियतलंसि (घ) ।

२-एष पाठो निशीथस्य (१४।२३) सूत्रानुसारेण स्वीकृतः । सर्वासु आचाराङ्गप्रतिपु  
'मट्टिया मक्कडाए' इति पाठोस्ति । असौ न शुद्ध प्रतिभानि ।

३-अस्मिन् सूत्रे प्रतिपु 'वा' शब्दस्य प्रयोगा अधिका दृश्यन्ते, यथा 'वा दारुवमि वा  
जीवपइद्वियसि वा' किन्तु १।५१ सूत्रानुसारेण 'वा' शब्द सकृदेव युज्यते ।

पतिरिति वा' पतिरिस्सन्ति वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

१७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—

आमोयाणि वा घसाणि वा, भिलुयाणि वा, विज्जलाणि वा, खाणुयाणि वा, कडवाणि<sup>१</sup> वा, पगत्ताणि वा, दरीणि वा, पट्टुगाणि वा, समाणि वा, विसमाणि वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

१८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—

माणुस-रंधणाणि वा, महिस-करणाणि वा, वसभ-करणाणि वा, अस्स-करणाणि वा, कुक्कुड-करणाणि वा, लावय-करणाणि वा, वट्टय-करणाणि वा, तित्तिर-करणाणि वा, कवोय-करणाणि वा, कपिजल-करणाणि वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

१९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—

वेहाणस-ट्ठाणेषु वा, गिद्धपिट्ठ-ट्ठाणेषु वा, तरुपडण-ट्ठाणेषु<sup>३</sup> वा, 'मेरुपडण-ट्ठाणेषु'<sup>४</sup> वा, विसमकखण-ट्ठाणेषु वा, अगणिकंडण-ट्ठाणेषु<sup>५</sup> वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि (थंडिलंसि?) णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

२०-से भिक्खू वा भिक्खुणो वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—

आरामाणि वा, उज्जाणाणि वा, वणाणि वा, वणसंडाणि वा, देवकुलाणि वा, सभाणि वा, पवाणि वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

१-पडरसु वा पडरति वा ( घ, च, छ ) ।

२-कडवाणि ( अ, ब ) ।

३-<sup>०</sup>पवडण-<sup>०</sup> ( अ, च, छ ) ।

४-X ( छ ) ।

५-<sup>०</sup>फडय-<sup>०</sup> ( क, ख, घ, च ) ; <sup>०</sup>पडण<sup>०</sup> ( छ ) ।

२१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—  
अट्टालयाणि वा, चरियाणि वा, दाराणि वा, गोपुराणि  
वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चार-  
पासवणं वोसिरेज्जा ।

२२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—  
तियाणि वा, चउक्काणि वा, चच्चराणि वा, चउमुहाणि  
वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चार-  
पासवणं वोसिरेज्जा ।

२३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—  
इंगालडाहेसु वा, खारडाहेसु वा, मडयडाहेसु वा, मडय-  
थूभियासु वा, मडयचेइएसु वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि  
थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

२४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—  
णदीआययणेसु वा, पकाययणेसु वा, ओघाययणेसु वा,  
सेयणपहंसि<sup>१</sup> वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो  
उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

२५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—  
णवियासु वा मट्टियखाणियासु, णवियासु वा गोप्पलेहियासु,  
गवायणीसु<sup>२</sup> वा, खाणीसु वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि  
थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

२६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—  
डागवच्चंसि वा, सागवच्चंसि वा, मूलगवच्चंसि वा,

१- ° वहसि ( ) ; ° पथ ( छ ) ।

२- गवा म ( अ, घ ) ।

हत्थंकरवच्चंसि वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि  
णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

- २७—से भिक्खू वा भिक्खुणो वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—  
असणवणंसि वा, सणवणंसि वा, धायइवणंसि वा, केयइ-  
वणंसि वा, अंबवणंसि वा, असोगवणंसि वा, णागवणंसि  
वा, 'पुण्णागवणंसि वा' । अण्णयरेसु वा तहप्पगारेसु  
पत्तोवएसु वा, पुप्फोवएसु वा, फलोवएसु वा, बीओवएसु  
वा, हरिओवएसु वा णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।<sup>१</sup>

- २८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सपाययं वा परपाययं वा गहाय  
से तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा अणावायंसि असंलोयंसि<sup>२</sup>  
अप्पपाणंसि<sup>३</sup> अप्पबीअंसि अप्पहरियंसि अप्पोसंसि अप्पुदयंसि  
अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-<sup>४</sup>मक्कडा-संताणयंसि अहारामंसि  
वा उवस्सयंसि, तओ संजयामेव उच्चारपासवणं  
वोसिरेज्जा<sup>५</sup> ।

से तमायाए एगंतमवक्कमे अणावायंसि (जाव) मक्कडा-  
संताणयंसि अहारामंसि वा, भामथंडिलंसि<sup>६</sup> वा । अण्णयरंसि  
वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि अचित्तंसि, तओ संजयामेव  
उच्चारपासवणं परिट्ठवेज्जा ।

- २९—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामगियं,<sup>७</sup> जं  
सव्वट्ठेहि समिए सहिए सया<sup>८</sup> जएज्जासि ।

—त्ति वेमि ।

१—पुण्णागवणंसि वा पुण्णगवणंसि वा ( अ ) ।

२—अस्मिन् सूत्रे चूर्णौ 'शुतागारादय' अनेके शब्दा व्याख्याता सन्ति । ते वृत्तौ प्रतिष्ठ  
च नोपलभ्यन्ते ।

३—<sup>०</sup> लोइयंसि ( अ ) ।

४—वोसिरेज्जा उच्चारपासवण वोसिरित्ता ( क्वचित् ) ।

५—इष्टव्यम् १।१।३ ।

एगारसमं अज्झयणं  
सद्-सत्तिक्कयं

वित्त-सद्-कण्णसोय-पडिया-पद

१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा (अहावेगइयाइं सद्दाइ सुणेइ, तंजहा?) मुइंगसद्दाणि वा, 'नंदीमुइंगसद्दाणि वा', भल्लरीसद्दाणि वा—अण्णयराणि वा तहप्पगाराणि विरूव-रूवाणि वितताइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

तत्त-सद्-कण्णसोय-पडिया-पद

२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइ सद्दाइं सुणेइ, तंजहा—वीणासद्दाणि वा, विपंची-सद्दाणि वा, बद्धीसग<sup>१</sup>-सद्दाणि वा, तुणय-सद्दाणि वा, पणव<sup>२</sup>-सद्दाणि वा, तुंबवीणिय-सद्दाणि वा, ढंक्कुण<sup>३</sup>-सद्दाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइ सद्दाइं तताइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

ताल-सद्-कण्णसोय-पडिया-पदं

३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा—ताल-सद्दाणि वा, कंसताल-सद्दाणि वा, लत्तिय-सद्दाणि वा, गोहिय-सद्दाणि वा, किरिकिरिय-सद्दाणि वा—

१—× ( क, च ) ।

२—जप्पी ° ( घ, च ), पप्पी ° ( छ ), वप्पी ° ( वचित् ) ।

३—पणय ( अ, छ, व ) ।

४—ढंक्कुण ( अ ) ।



अण्णयराणि वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं तालसद्दाइं  
कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

भुसिर-सद्-कण्णसोय-पडिया-पदं

४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति,  
तंजहा—संख-सद्दाणि वा, वेणु-सद्दाणि वा, वंस-सद्दाणि वा,  
खरमुहि-सद्दाणि वा, पिरिपिरिय<sup>१</sup>-सद्दाणि वा—अण्णयराइं  
वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं सद्दाइं भुसिराइं<sup>२</sup> कण्णसोय-  
पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

विविह-सद्-कण्णसोय-पडिया-पदं

५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति,  
तंजहा—वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, \*उप्पलाणि वा,  
पवल्लाणि वा, उज्झराणि वा, णिज्झराणि वा, वावीणि  
वा, पोक्खराणि वा, दीहियाणि वा, गुंजालियाणि वा<sup>३</sup>,  
सराणि वा, सागराणि वा, सरपंतियाणि वा, सरसर-  
पंतियाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं  
सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति,  
तंजहा—कच्छाणि वा, णूमाणि वा, गहणाणि वा, वणाणि  
वा, वण्डुगाणि वा, पव्वयाणि वा, पव्वयडुगाणि वा—  
अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-  
पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१-परि ° ( अ, वृ ), परिपरिय ( क, च, छ, ब ) ।

२-प्रथम-तृतीय-सूत्रयो 'वितताइ सद्दाइं, तालसद्दाइं' इति पाठोस्ति तथा द्वितीय-चतुर्थ-  
सूत्रयो. 'सद्दाइ तताइ, सद्दाइ भुसिराइ' इति पाठोस्ति । एवं विशेष्य-विशेषणयो-  
र्व्यत्ययोस्ति ।

७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति,  
तंजहा—गामाणि वा, णगराणि वा, णिगमाणि वा,  
रायहाणीणि वा, आसम-पट्टण-सन्निवेसाणि वा—अण्णयराइं  
वा तहप्पगाराइं \*विरूव-रूवाइं\* सद्दाइं \*कण्णसोय-  
पडियाए\* णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति,  
तंजहा—आरामाणि वा, उज्जाणाणि वा, वणाणि वा,  
वणसंडाणि वा, देवकुलाणि वा, समाणि वा, पवाणि वा—  
अण्णयाराइं वा तहप्पगाराइं \*विरूव-रूवाइं\* सद्दाइं  
\*कण्णसोय-पडियाए\* णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति,  
तंजहा—अट्टाणि वा, अट्टालयाणि वा, चरियाणि वा,  
दाराणि वा, गोपुराणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं  
\*विरूव-रूवाइं\* सद्दाइं \*कण्णसोय-पडियाए\* णो  
अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति,  
तंजहा—तियाणि वा, चउक्काणि वा, चच्चराणि वा;  
चउम्मुहाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं \*विरूव-  
रूवाइं\* सद्दाइं \*कण्णसोय-पडियाए\* णो अभिसंधारेज्जा  
गमणाए ।

११-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति,  
तंजहा—महिसट्ठाण-करणाणि वा, वसभट्ठाण-करणाणि वा,  
अस्सट्ठाण-करणाणि वा, हत्थिट्ठाण-करणाणि वा, \*कुक्कुडट्ठाण-  
करणाणि वा, मक्कडट्ठाण-करणाणि वा, लावयट्ठाण-  
करणाणि वा, वट्ठयट्ठाण-करणाणि वा, तित्तिरट्ठाण-

- करणणि वा, कवोयद्वाण-करणणि वा°, कविजलद्वाण-  
करणणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं °विरूव-रूवाइं°  
सद्दाइं °कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।
- १२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति,  
तंजहा—महिस-जुद्धाणि वा, वसभ-जुद्धाणि वा, अस्स-जुद्धाणि  
वा, हत्थि-जुद्धाणि वा, °कुक्कुड-जुद्धाणि वा, मक्कड-  
जुद्धाणि वा, लावय-जुद्धाणि वा, वट्ठय-जुद्धाणि वा, तित्तिर-  
जुद्धाणि वा, कवोय-जुद्धाणि वा°, कविजल-जुद्धाणि वा—  
अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं °विरूव-रूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-  
पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।
- १३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति,  
तंजहा—‘जूहिय-द्वाणाणि’ वा, हयजूहिय-द्वाणाणि वा,  
गयजूहिय-द्वाणाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं °विरूव-  
रूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा  
गमणाए ।
- १४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा °अहावेगइयाइं सद्दाइं° सुणेति,  
तंजहा—अक्खाइय-द्वाणाणि वा, माणुममाणिय-द्वाणि वा,  
महया ऽहय-णट्ठ-गीय-वाइय-तंति-तल-ताल-तुडिय-पडुप्प-  
वाइय-द्वाणाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं °विरूव-  
रूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा  
गमणाए ।
- १५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा °अहावेगइयाइं सद्दाइं° सुणेति,  
तंजहा—कलहाणि वा, डिंवाणि वा, डमराणि वा, दोरज्जाणि  
वा, वेरज्जाणि वा, विरुद्धरज्जाणि वा—अण्णयराइं वा

१-निशीथे १२ उद्देशके २६ सूत्रे ‘ज्जुहिया ढाणाणि’ इति पाठो विद्यते ।

तहप्पगाराइं °विरूव-रूवाइं° सद्दाइं °कण्णसोय-पडियाए°  
णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा °अहावेगइयाइं° सद्दाइं सुणेति,  
तंजहा—खुड्डियं दारियं परिवृत्तं<sup>१</sup> मंडियालंकियं<sup>२</sup>  
निवुज्झमाणि पेहाए, एगं पुरिसं वा बहाए णोणिज्जमाणं  
पेहाए—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं °विरूव-रूवाइं° सद्दाइं  
कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयराइं विरूव-रूवाइं  
महासवाइं एवं जाणेज्जा, तंजहा—बहुसगडाणि वा, बहुरहाणि  
वा, बहुमिलक्खूणि वा, बहुपच्चंताणि वा—अण्णयराइं वा  
तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं महासवाइं कण्णसोय-पडियाए  
णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयराइं विरूव-रूवाइं  
महुस्सवाइं एवं जाणेज्जा, तंजहा—इत्थीणि वा, पुरिसाणि वा,  
थेराणि वा, डहराणि वा, मज्झिमाणि<sup>३</sup> वा, आभरण-  
विभूसियाणि वा, गायंताणि वा, वायंताणि वा, णच्चंताणि  
वा, हसंताणि वा, रमंताणि वा, मोहंताणि वा, विउलं  
असणं पाणं खाइमं साइमं परिभुजंताणि वा, परिभाइंताणि  
वा, विच्छेदियमाणाणि वा, विगोवयमाणाणि वा—अण्णयराइं  
वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं महुस्सवाइं कण्णसोय-  
पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

सद्दासत्ति-पदं

१९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो इहलोइएहि सदेहिं, णो

१—परिभुय (क्वचित्) ; मण्डितालकृता बहुपरिवृता ( वृ ) ।

२—मडिय ° ( घ, छ ) ।

३—मज्झ ° ( छ, ब ) ।

परलोइएहिं सदेहिं, णो सुएहिं सदेहिं, णो असुएहिं सदेहिं,  
 णो दिट्ठेहिं सदेहिं, णो अदिट्ठेहिं सदेहिं, णो इट्ठेहिं सदेहिं,  
 णो कंतेहिं सदेहिं सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो गिज्जेज्जा,  
 णो मुज्जेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा ।

२०—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामगियं, \*जं  
 सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया० जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ।

वारसमं अज्झयणं  
रूव-सत्तिककयं

विविह-रूव-चक्खुदंसण-पडिया-पद

१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ,  
तंजहा—गंथिमाणि वा, वेढिमाणि वा, पूरिमाणि वा,  
संघाइमाणि वा, कट्टकम्माणि<sup>१</sup> वा, पोत्थकम्माणि वा,  
चित्तकम्माणि वा, मणिकम्माणि वा, 'दत्तकम्माणि वा'<sup>२</sup>,  
पत्तच्छेज्जकम्माणि वा, 'विहाणि वा, वेहिमाणि वा'<sup>३</sup>—  
अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं (रूवाइं ?)  
चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

२-<sup>०</sup>से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ,  
तंजहा—वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, उप्पलाणि वा,  
पल्ललाणि वा, उज्झराणि वा, णिज्झराणि वा, वावीणि  
वा, पोक्खराणि वा, दीहियाणि वा, गुजालियाणि वा,  
सराणि वा, सागराणि वा, सरपतियाणि वा, सरसर-  
पंतियाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं  
रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ,

१-कट्टाणि ( क, घ, च ) ।

२-संतकम्माणि वा मालकम्माणि वा ( अ, क, घ, च, छ, व ) ; वृत्तौ चूर्ण्यं च न  
व्याख्यातम् अतो न गृहीतम् ।

३-विविहाणि वा वेढिमाड ( अ, क, घ, छ, व ) । निशेयस्य १२ उद्देशकस्य १७  
सूत्रानुसारेण अयं पाठः स्वीकृतः । आचाराङ्ग-प्रतिपु लिपिदोषाद् वर्ण-विपर्ययो  
जात इति प्रतीयते ।

तंजहा—कच्छाणि वा, णूमाणि वा, गहणाणि वा, वणाणि वा, वणदुग्गाणि वा, पव्वयाणि वा, पव्वयदुग्गाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा—गामाणि वा, णगराणि वा, णिगमाणि वा, रायहाणाणि वा, आसम-पट्टण-सन्निवेसाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा—आरामाणि वा, उज्जाणाणि वा, वणाणि वा, वणसंडाणि वा, देवकुलाणि वा, समाणि वा, पवाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा—अट्टाणि वा, अट्टालयाणि वा; चरियाणि वा, दाराणि वा, गोपुराणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइ रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा—तियाणि वा, चउक्काणि वा, चच्चराणि वा, चउम्मुहाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा—महिसट्ठाण-करणाणि वा, वसभट्ठाण-करणाणि वा,

अस्सट्ठाण-करणाणि वा, हत्थिट्ठाण-करणाणि वा, कुक्कुडट्ठाण-करणाणि वा, मक्कडट्ठाण-करणाणि वा, लावयट्ठाण-करणाणि वा, वट्ठयट्ठाण-करणाणि वा, तित्तिरट्ठाण-करणाणि वा, कवोयट्ठाण-करणाणि वा, कविजलट्ठाण-करणाणि वा—अण्णयराइ वा तहप्पगाराइ विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइ रूवाइं पासइ, तंजहा—महिस-जुट्ठाणि वा, वसभ-जुट्ठाणि वा, अस्स-जुट्ठाणि वा, हत्थि-जुट्ठाणि वा, कुक्कुड-जुट्ठाणि वा, मक्कड-जुट्ठाणि वा, लावय-जुट्ठाणि वा, वट्ठय-जुट्ठाणि वा, तित्तिर-जुट्ठाणि वा, कवोय-जुट्ठाणि वा, कविजल-जुट्ठाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा—जूहिय-ट्ठाणाणि वा, हयजूहिय-ट्ठाणाणि वा, गयजूहिय-ट्ठाणाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइ विरूव-रूवाइ रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

११—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा—अक्खाइयट्ठाणाणि वा, माणुम्माणिय-ट्ठाणाणि वा, महयाऽहय-णट्ठगीय-वाइय-तंति-तल-ताल-तुडिय-पडुप्पवाइय-ट्ठाणाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइ रूवाइं पासइ, तंजहा—कलहाणि वा, डिंवाणि वा, डमराणि वा, दोरज्जाणि



वा, वेरज्जाणि वा, विरुद्धरज्जाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरुव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा—खुड्डियं दारियं परिवुतं मंडियालंकियं निबुज्झमाणि पेहाए, एगं पुरिसं वा बहाए णीणिज्जमाणं पेहाए—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरुव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयराइं विरुव-रूवाइं महासवाइं एवं जाणेज्जा, तंजहा—बहुसगडाणि वा, बहुरहाणि वा, बहुमिलक्खूणि वा, बहुपच्चंताणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरुव-रूवाइं महासवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयराइं विरुव-रूवाइं महुस्सवाइं एवं जाणेज्जा, तंजहा—इत्थीणि वा, पुरिसाणि वा, थेराणि वा, डहराणि वा, मज्झिमाणि वा, आभरण-विभूसियाणि वा, गायंताणि वा, वायंताणि वा, णच्चंताणि वा, हसंताणि वा, रमंताणि वा, मोहंताणि, वा विउल असणं पाणं खाइमं साइमं परिभुजंताणि वा, परिभाइंताणि वा, विच्छेद्विडयमाणाणि वा, विगोवयमाणाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरुव-रूवाइं महुस्सवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

रूवासत्ति-पदं

१६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो इहलोइएहि रूवेहि, णो परलोइएहि रूवेहि, णो सुएहि रूवेहि, णो असुएहि रूवेहि, :

णो दिट्ठेहिं रुवेहिं, णो अदिट्ठेहिं रुवेहि, णो इट्ठेहिं रुवेहिं,  
 णो कंतेहिं रुवेहिं सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो गिज्जेज्जा,  
 णो मुज्जेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा ।

१७-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं जं  
 सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।°

—त्ति वेमि ।

तेरसमं तह चउद्दसमं अज्झयणं  
परकिरिया-सत्तिक्कयं<sup>१</sup>  
अन्नुन्नकिरिया-सत्तिक्कयं

किरिया-पदं

१—(परकिरियं) (अण्णमण्णकिरियं)<sup>२</sup> अज्झत्थियं संसेसियं—णो  
तं साइए<sup>३</sup>, णो तं णियमे ।

पाद-परिकम्म-पदं

२—(‘से से’<sup>४</sup> परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं आमज्जेज्ज वा,  
‘पमज्जेज्ज वा’<sup>५</sup>—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

३—(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं संवाहेज्ज वा, पल्लिमहेज्ज  
वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

४—(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं फूमेज्ज वा, रएज्ज वा—  
णो तं साइए, णो तं णियमे ।

५—(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं तेल्लेण वा, घएण वा,  
वसाए<sup>६</sup> वा मक्खेज्ज वा, भिल्लिगेज्ज<sup>७</sup> वा—णो तं साइए,  
णो तं णियमे ।

१—द्वितीय कोष्ठकं मुक्त्वा पठ्यते, तदा त्रयोदशमध्ययनं भवति ।

प्रथम कोष्ठकं मुक्त्वा पठ्यते, तदा चतुर्दशमध्ययनं भवति ।

२—अण्णोण्ण<sup>०</sup> (वृ) । त्रयोदशमध्ययने ‘से भिक्खु वा २’ इति पाठो नास्ति । चतुर्दशा-  
ध्ययने प्रतिपु विद्यते । किन्तु वृत्तो उभयत्रापि नास्ति व्याख्यातः ।

३—सायए ( घ ) ।

४—सिया से ( क, घ, च ) सर्वत्र ।

५—× ( अ, क, च, छ, ब ) ।

६—निशीये सर्वत्रापि ‘तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा, णवणीएण वा’ इति पाठो  
विद्यते ।

७—मिल<sup>०</sup> ( छ ) ।

- ६—(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुन्नेण वा, वन्नेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।
- ७—(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं मीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।
- ८—(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं अण्णयरेण विलेवण-जाएण आलिपेज्ज वा, विलिपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।
- ९—(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं अण्णयरेण धूवण-जाएण धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।
- १०—(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाओ खाणु<sup>१</sup> वा, कंटय वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।
- ११—(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाओ पूयं वा, सोणियं वा, णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

काय-परिकम्म-पद

- १२—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।
- १३—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायं संवाहेज्ज वा, पल्लमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।
- १४—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, अब्भंगेज्ज<sup>२</sup> वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

१—खाणुयं ( क, घ, च, व ) ।

२—मिल्लगेज्ज ( च ) ।

१५—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायं लोद्धेण<sup>१</sup> वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

१६—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, प्होएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

१७—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायं अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिपेज्ज वा, विलिपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

१८—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायं अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

वण-परिकम्म-पदं

१९—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

२०—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं संवाहेज्ज वा, पलिमहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

२१—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिल्लिगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

२२—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

२३—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं सीओदग-वियडेण

वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—  
णो तं साइए, णो तं णियमे ।

२४—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं अन्नयरेणं  
विलेवण-जाएणं आलिपेज्ज वा, विलिपेज्ज वा—णो तं साइए,  
णो तं णियमे ।

२५—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं अन्नयरेणं धूवण-  
जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं  
णियमे ।<sup>१</sup>

२६—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं अन्नयरेणं सत्थ-  
जाएण अच्छिदेज्ज वा—विच्छिदेज्ज वा—णो तं साइए, णो  
तं णियमे ।

२७—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं अन्नयरेणं सत्थ-  
जाएणं अच्छिदित्ता वा, विच्छिदित्ता वा, पूयं वा, सोणियं  
वा, नीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं  
णियमे ।

गड-परिकम्म-पदं

२८—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, अरइयं वा,  
पिडयं<sup>२</sup> वा, भगंदलं वा आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—  
णो तं साइए, णो तं णियमे ।

२९—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, अरइयं वा,

१—२४-२५ सूत्रे कोष्ठकोल्लिखित-प्रतिपु न विद्यते (अ, क, घ, च, छ) ।

२—पुलय ( अ, च ) ; पुलडय ( क, छ, व ), पुलडं ( घ ) । एवं न्वसि प्रतिपु 'पिडय'  
पाठ नोपलभ्यते, किन्तु उपलब्ध-पाठानां नार्थोऽवगम्यते । निशीथे तृतीयोद्देशके  
चतुर्विंशत्तम-सूत्रे 'पिडय' पाठ । अस्मिन् प्रकरणे स सम्यग्, इति स पाठ स्वीकृतः ।  
उक्तप्रतिपाठा लिपिदोषेण विकृता इति प्रतीयते

पिडयं वा, भगंदलं वा संवाहेज्ज वा, पल्लिमहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

३०—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, \*अरइयं वा, पिडयं वा°, भगंदलं वा तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिल्लिगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

३१—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, \*अरइयं वा, पिडयं वा°, भगंदलं वा लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुन्नेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

३२—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, \*अरइयं वा, पिडयं वा°, भगंदलं वा सीओदग्ग-वियडेण वा, उसिणोदग्ग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

[ (से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अन्नयरेणं विलेवण-जाएणं आलिपेज्ज वा, विलिपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अन्नयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे । ]<sup>१</sup>

३३—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, \*अरइयं वा, पिडयं वा°, भगंदलं वा अन्नयरेणं सत्थ-जाएणं अच्चिद्धेज्ज वा, विच्चिद्धेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

३४—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्चिद्धित्ता

१—२४-२५ सूत्राङ्कानुसारेण अत्रापि कोष्ठकान्तगति सूत्रे युज्येते, परन्तु प्रतिष्ठु नोपलभ्येते ।

वा, विच्छिदिता वा पूय वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा,  
विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो तं णियमे ।

मल-णीहरण-पद

३५—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायाओ सेयं वा, जल्लं वा  
णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो तं  
णियमे ।

३६—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अच्छिमलं वा, कण्णमलं वा,  
दंतमल वा, णहमलं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं  
साइए, णो तं णियमे ।

वाल-रोम-पद

३७—(से से परो) (से अण्णमण्णं) दीहाइ वालाइं, दीहाइं रोमाइं,  
दीहाइ ममुहाइं, दीहाइ कक्खरोमाइं, दीहाइं वत्थिरोमाइं  
कप्पेज्ज वा, संठवेज्ज<sup>१</sup> वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

लिक्ख-जूया-पदं

३८—(से से परो) (से अण्णमण्णं) सीसाओ लिक्ख वा, जूयं वा  
णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं  
णियमे ।

पाद-परिकम्म-पदं

३९—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा  
तुयट्ठावेत्ता पादाइं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं  
साइए, णो तं णियमे ।

४०—<sup>२</sup>(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा  
तुयट्ठावेत्ता पादाइं संवाहेज्ज वा, पल्लिमहेज्ज वा—णो तं  
साइए, णो तं णियमे ।

१—संवद्धेज्ज ( व ), सवज्जेज्ज ( छ ) ।



५५—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा  
तुयट्ठावेत्ता कायंसि अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज  
वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

वण-परिकम्म-पदं

५६—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा  
तुयट्ठावेत्ता कायंसि वणं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो  
तं साइए, णो तं णियमे ।

५७—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा  
तुयट्ठावेत्ता कायंसि वणं संवाहेज्ज वा, पलिमहेज्ज वा—णो  
तं साइए, णो तं णियमे ।

५८—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा  
तुयट्ठावेत्ता कायंसि वणं तेल्लेग वा, घएण वा, वसाए वा  
मक्खेज्ज वा, भिल्लिगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

५९—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा  
तुयट्ठावेत्ता कायंसि वणं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा,  
वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो  
तं णियमे ।

६०—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा  
तुयट्ठावेत्ता कायंसि वणं सीओद्दग-वियडेण वा, उसिणोद्दग-  
वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो तं साइए,  
णो तं णियमे ।

६१—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा  
तुयट्ठावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिपेज्ज  
वा, विल्लिपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

६२—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा  
तुयट्ठावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा,  
पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

६३—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा  
तुयट्ठावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अर्च्छिदेज्ज  
वा, विर्च्छिदेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

६४—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा  
तुयट्ठावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अर्च्छिदित्ता  
वा, विर्च्छिदित्ता वा, पूयं वा, सोणियं वा नीहरेज्ज वा,  
विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

गंड-परिकम्म-पदं

६५—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा  
तुयट्ठावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं  
वा आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं  
णियमे ।

६६—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा  
तुयट्ठावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं  
वा संवाहेज्ज वा, पल्लिमहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं  
णियमे ।

६७—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा  
तुयट्ठावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं  
वा तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिल्लिगेज्ज  
वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

६८—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा  
तुयट्ठावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं

वा, लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुन्नेण वा, वण्णेण वा  
उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

६९—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा  
तुयट्ठावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं  
वा सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज  
वा, पधोवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

[ (से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा  
तुयट्ठावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं  
वा अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिपेज्ज वा, विलिपेज्ज  
वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा  
तुयट्ठावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं  
वा अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं  
साइए, णो तं णियमे ।]

७०—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा  
तुयट्ठावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं  
वा अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदेज्ज वा, विच्छिदेज्ज  
वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

७१—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा  
तुयट्ठावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं  
वा अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदिता वा, विच्छिदिता  
वा, पूयं वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं  
साइए, णो तं णियमे ।

मल-णीहरण-पदं

७२—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, यंकंसि वा

तुयट्टावेत्ता कायाओ सेयं वा, जल्लं वा णीहरेज्ज वा,  
विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

७३—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा  
तुयट्टावेत्ता अच्छिमलं वा, कण्णमलं वा, दंतमलं वा, ण्हमलं  
वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं  
णियमे ।

वाल-रोम-पदं

७४—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा  
तुयट्टावेत्ता दीहाइं वालाइं, दीहाइं रोमाइं, दीहाइं भमुहाइं,  
दीहाइं कक्खरोमाइं, दीहाइं वत्थिरोमाइं कप्पेज्ज वा, संठेज्ज  
वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

लिक्ख-जूया-पदं

७५—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा  
तुयट्टावेत्ता सीसाओ लिक्खं वा, जूयं वा णीहरेज्ज वा  
विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।<sup>१०</sup>

आभरण-आर्विघण-पद

७६—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा  
तुयट्टावेत्ता हारं वा, अद्धहारं वा, उरत्थं वा, गेवेयं<sup>१</sup> वा,  
मउडं वा, पालंबं वा, सुवण्णसुत्तं वा आर्विघेज्ज<sup>२</sup> वा,  
पिणिघेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

१—सुवण्णगेवेय ( घ ) ।

२—आवघेज्ज ( घ, च ) ।

पाद-परिकम्म-पदं

७७—(से से परो) (से अण्णमण्णं) आरामंसि वा, उज्जाणंसि वा  
णीहरेत्ता वा, पविसेत्ता वा पायाइं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज  
वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।<sup>१</sup>

(एवं गेयव्वा अण्णमण्णकिरियावि ।)<sup>२</sup>

७८—(से से परो) (से अण्णमण्णं) सुद्धेणं वा वइ-बलेणं तेइच्छं  
आउट्टे,

(से से परो) (से अण्णमण्णं) असुद्धेणं वा वइ-बलेणं तेइच्छं  
आउट्टे,

(से से परो) (से अण्णमण्णं) गिलाणस्स सचित्ताणि कंदाणि  
वा, मूलाणि वा, तयाणि वा, हरियाणि वा खणित्तु वा,  
कड्ढेत्तु वा, कड्ढावेत्तु वा तेइच्छं आउट्टेज्जा—णो तं साइए,  
णो तं णियमे ।

तिगिच्छा-पदं

‘७९—कड्डुवेयणा’ कट्टुवेयणा पाण-भूय-जीव-सत्ता वेदणं वेदेति ।

८०—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामगियं, जं  
सव्वट्ठेहिं समिते सहिते सदा जए, सेयमिणं मण्णेज्जासि ।

—त्ति बेमि ।

१, २—अस्मात् सूत्रात् पुरतोऽपि ‘पादाइ सवाहेज्ज वा’ (सू० ३) अतः प्रभृति ‘सीसाओ  
लिक्ख वा’ (सू० ३८) पर्यन्तं सूत्राणि युज्यन्ते परन्तु नात्र कश्चित् पूरणीय-संकेत  
प्रतिषु प्राप्यते । “एवं गेयव्वा अण्णमण्ण किरियावि” इति सूत्रमज्ञानावश्यकं प्रति-  
भाति, किन्तु वृत्तावस्ति व्याख्यातम् । सम्भाव्यते प्रस्तुत-सूत्रस्य पूरणीय-संकेतो  
लिपिदोषेण अन्यथा जातः । इत्यपि सम्भाव्यते ‘एव गेयव्वा अण्णमण्ण किरियावि’  
इति सूत्रं वाचनान्तरगतमस्ति । एकस्यां वाचनाया उक्तसूत्रेणैव त्रयोदशाध्ययनस्य  
पाठ प्रवेदितः, अपरस्या च त्रयोदशाध्ययनस्य संक्षिप्तपाठः पृथगरूपेण प्रतिपादितः ।  
वर्तमाने समुपलब्ध पाठो द्वयोरपि वाचनयोर्मिश्रणं प्रतीयते । तेनाऽस्मिन् भिस्तसूत्रे  
कोष्ठक एव स्वीकृतम् ।

३—कम्मकय<sup>०</sup> (च) ।

पनरसमं अज्मयणं

## भावणा

भगवओ चवणादि-णक्खत्त-पदं

१—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगव महावीरे पंचहत्थुत्तरे  
यावि होत्था—

- (१) हत्थुत्तराहिं चुए चइत्ता गब्भं वक्कंते,
- (२) हत्थुत्तराहिं गब्भाओ गब्भं साहरिए,
- (३) हत्थुत्तराहिं जाए,
- (४) हत्थुत्तराहिं सव्वओ सव्वत्ताए मुंडे भवित्ता अगाराओ  
अणगारियं पव्वइए,
- (५) हत्थुत्तराहिं कसिणे पडिपुण्णे अन्वाघाए निरावरणे  
अणंते अणुत्तरे केवलवरनाणदंसणे समुप्पण्णे ।

२—साइणा भगवं परिनिव्वुए ।

गब्भ-पदं

३—समणे भगवं महावीरे इमाए ओसप्पिणीए—सुसमसुसमाए  
समाए वीइक्कंताए, सुसमाए समाए वीत्तिकंताए, सुसम-  
दुसमाए समाए वीत्तिकंताए, दुसमसुसमाए समाए बहु  
वीत्तिकंताए—पण्हत्तरीए<sup>१</sup> वासेहिं, मासेहिं य अद्धणवमेहिं<sup>२</sup>  
सेसेहिं, जे से गिम्हाणं चउत्थे मासे, अट्टमे पक्खे—आसाढ-  
सुद्धे, तस्सणं आसाढसुद्धस्स छट्ठीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं  
नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं<sup>३</sup>, महाविजय-सिद्धत्थ-पुप्फुत्तर-पवर-

१—पण्हत्तरीए ( अ, क, घ, च ) ।

२—<sup>०</sup> णवमसेसेहिं ( क, घ, च ) ।

३—जोगोवगएण ( अ, च ) ।

पुंडरीय-दिसासोवत्थिय-वद्धमाणाओ महाविमाणाओ वीसं  
सागरोवमाइं आउयं<sup>१</sup> पालइत्ता आउक्खएणं भवक्खएणं  
ठिइक्खएणं चुए चइत्ता इह खलु जंबुदीवे<sup>२</sup> दीवे, भारहे  
वासे, दाहिणइढभरहे दाहिणमाहणकुंडपुर-सन्निवेसंसि<sup>३</sup>  
उसभदत्तस्स माहणस्स कोडाल-सगोत्तस्स देवाणंदाए  
माहणीए जालंधरायण-सगोत्ताए सीहोब्भवभूएणं अप्पाणेणं  
कुच्छिसि गब्भं वक्कंते ।

चवण-पदं

४-समणे भगवं महावीरे तिन्नाणोवगए यावि होत्था—  
चइस्सामित्ति जाणइ, चुएमित्ति जाणइ, चयमाणे न जाणेइ—  
सुहुमे णं से काले पन्नत्ते ।

गब्भसाहरण-पदं

५-तओ णं समणे भगवं महावीरे अणुकंपए<sup>४</sup> णं देवे णं  
“जीयमेयं” ति कट्टु जे से वासाणं तच्चे मासे, पंचमे  
पक्खे—आसोयबहुले, तस्स णं आसोयबहुलस्स तेरसीपक्खेणं  
हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेहिं जोगमुवागएणं बासीतिहिं राइंदिएहिं  
वीइक्कंतेहिं तेसीइमस्स राइंदियस्स परियाए वट्टमाणे  
दाहिणमाहण-कुंडपुर-सन्निवेसाओ उत्तरखत्तिय-कुंडपुर-  
सन्निवेसंसि णायाणं खत्तियाणं सिद्धत्थस्स खत्तियस्स  
कासवगोत्तस्स तिसलाए खत्तियाणीए वासिद्ध-सगोत्ताए  
असुभाणं पुग्गलाणं अवहारं करेत्ता, सुभाणं पुग्गलाणं पक्खेवं  
करेत्ता, कुच्छिसि गब्भं साहरइ ।

१—अहाउयं ( क, घ, च ) ।

२—<sup>०</sup> दीवेण ( क, घ, च, छ, ब ) ।

३—<sup>०</sup> वेसमि ( छ ) ।

४—हियअणु<sup>०</sup> ( छ ) ।

६-जेवि य से तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिसि गम्भे, तंपि य दाहिणमाहण-कुंडपुर-सन्निवेसंसि उसभदत्तस्स माहणस्स कोडाल-सगोत्तस्स देवाणंदाए माहणीए जालंधरायण-सगोत्ताए कुच्छिसि साहरइ ।

७-समणे भगवं महावीरे तिण्णाणोवगए यावि होत्था—  
साहरिज्जिस्सामि त्ति जाणइ, साहरिएमि त्ति जाणइ,  
साहरिज्जमाणे वि<sup>१</sup> जाणइ, समणाउसो !

जम्म-पदं

८-तेणं कालेणं तेणं समएणं तिसला खत्तियाणी अह अण्णया कयाइ णवण्हं मासाणं बहु पडिपुण्णाणं, अद्धइमाणं राइंदियाणं वीतिककंताणं, जे से गिम्हाणं पढमे मासे, दोच्चे पक्खे—  
चेत्तसुद्धे, तस्सणं चेत्तसुद्धस्स तेरसीपक्खेणं, हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगोवगएणं समणं भगवं महावीरं अरोया अरोयं पसूया ।

९-जणं राइं तिसला खत्तियाणी समणं भगवं महावीरं अरोया<sup>२</sup> अरोयं पसूया, तण्णं राइं भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-विमाणवासिदेवेहिं य देवीहि य ओवयंतेहिं य, उप्पयंतेहिं य<sup>३</sup> एगे महं दिव्वे देवुज्जोए देव-सण्णिवाते<sup>४</sup> देव-कहक्कहे उप्पिजलगभूए यावि होत्था ।

१०-जणं<sup>५</sup> रयणिं तिसला खत्तियाणी समणं भगवं महावीरं अरोया अरोयं पसूया, तण्णं<sup>६</sup> रयणिं बहवे देवाय देवीओ य

१-वि न ( च ) ; न ( छ ) । अशुद्धं प्रतिभाति ।

२-आरोया ° ( क, घ, च ) ।

३-य सपयंतेहिं य ( क, घ, च ) ।

४-° वाते णं ( अ, क, च, छ ) ।

५-ज ( च, छ ) ।

६-त ( च, छ ) ।



एगं महं अभयवासं च, गंधवासं च, 'चुण्णवासं च'<sup>१</sup>,  
हिरण्णवासं च, रयणवासं च वासिसु ।

११-जणं रयणि तिसला खत्तियाणी समणं भगवं महावीरं  
अरोया अरोयं पसूया, तण्णं रयणि भवणवड्-वाणमंतर-  
जोइसिय-विमाणवासिणो देवा य देवीओ य समणस्स  
भगवओ महावीरस्स कोउगभूइकम्माइं<sup>२</sup> तित्थयराभिसेयं च  
करिसु ।

नामकरण-वदं

१२-जओ णं पभिइ भगवं महावीरे तिसलाए खत्तियाणीए  
कुच्छिसि गब्भं आहुए<sup>३</sup>, तओ णं पभिइ तं कुलं विपुलेणं  
हिरण्णेणं सुवण्णेणं ध्वणेणं ध्वणेणं माणिक्केणं मोत्तिएणं  
संख-सिल-प्पवालेणं अईव-अईव परिवड्ढइ<sup>४</sup> ।

१३-तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अम्मापियरो एयमदं  
जाणेत्ता णिव्वत्त-दसाहंसि वोक्कंतंसि सुचिभूयंसि विपुलं  
असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेत्ति, विपुलं असण-पाण-  
खाइम-साइमं उवक्खडावेत्ता मित्त-णाति-सयण-संबंधिवग्गं  
उवणिमंतेंति, मित्त-णाति-सयण-संबंधिवग्गं उवणिमंतेंत्ता  
बहवे समण-माहण-किवण-वणिमग-भिच्छुंडग-पंडरगातीण  
विच्छड्ढेत्ति, विगोवेत्ति<sup>५</sup>, विस्साणेंति, दातारेसु णं दायं<sup>६</sup>  
पज्जभाएत्ति, विच्छड्ढित्ता, विगोवित्ता, विस्साणित्ता,

१-चुण्णवासं च पुष्पवासं च (क, घ, ब) ।

२-सुइ ° (छ) ।

३-आहुए (क्वचित्) ।

४-पवि ° (अ) ।

५-विगो ° (अ, क, घ, च) ।

६-दाणं (घ, छ) ।

दायारेसु णं दायं पज्जभाएत्ता मित्त-णाइ-सयण-संबंधिवग्गं  
भुंजावेति, मित्त-णाइ-सयण-संबंधिवग्गं भुंजावेत्ता मित्त-  
णाइ-सयण-संबंधिवग्गेण इमेयारूवं णामधेज्जं करेति<sup>१</sup>—

जओ णं पभिइ इमे कुमारे तिसलाए खत्तियाणीए कुन्धिंसि  
गब्भे आहुए<sup>२</sup>, तओ णं पभिइ इमं कुलं विउलेणं हिरण्णेणं  
सुवण्णेणं धणेणं धण्णेणं माणिक्केणं मोत्तिएणं संख-सिल-  
प्पवालेणं अईव-अईव परिवड्ढइ, तो होउ णं कुमारे  
“वद्धमाणे” ।

बाल-पदं

१४—तओ णं समणे भगवं महावीरे पंचधातिपरिवुडे, तंजहा—  
खीरधाईए, मज्जणधाईए, मंडावणधाईए, खेत्तावणधाईए,  
अंकधाईए—अंकाओ अंकं साहरिज्जमाणे रम्मे मणिकोट्टिमतले  
गिरिकदरमल्लीणे<sup>३</sup> व चंपयपायवे अहाणुपुव्वीए संवड्ढइ ।

विवाह-पदं

१५—तओ णं समणे भगवं महावीरे विण्णायपरिणये<sup>४</sup>  
विणियत्तबाल-भावे<sup>५</sup> अप्पुस्सुयाइं<sup>६</sup> उरालाइं माणुस्सगाइं  
पंचलक्खणाइं कामभोगाइं सद्-फरिस-रस-रूव-गंधाइं  
परियारेमाणे, एवं च णं विहरइ ।

नाम-पदं

१६—समणे भगवं महावीरे कासवगोत्ते । तस्स णं इमे तिण्णि

१—कारवेति ( क, च ) ; करावेति ( ष ) ।

२—आहते ( च ) ।

३—समल्लीणे ( अ, घ ) ।

४—<sup>०</sup> परिणय ( घ, च, छ, ञ ) ।

५—विणिवित्त<sup>०</sup> ( च ) ।

६—अणुस्सुयाइं ( अ, ञ ) ।

णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तंजहा—

अम्मापिउसंतिए “वद्धमाणे”,

सह-सम्मुइए “समणे”,

“भीमं भयभेरवं उरालं अर्चेलयं परिसहं सहइ” त्ति कट्ठु  
देवेहिं से णामं कयं “समणे भगवं महावीरे” ।

परिवार-पदं

१७—समणस्स णं भगवओ महावीरस्स पिआ कासवगोत्तेणं ।

तस्स णं तिणिण णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तंजहा—

सिद्धत्थे ति वा,

सेज्जंसे ति वा,

जसंसे ति वा ।

१८—समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अम्मा वासिद्ध-सगोत्ता ।

तीसेणं तिणिण णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तंजहा—

तिसला ति वा,

विदेहदिण्णा ति वा,

पियकारिणी ति वा ।

१९—समणस्स णं भगवओ महावीरस्स पित्तियए ‘सुपासे’  
कासवगोत्तेणं ।

२०—समणस्स णं भगवओ महावीरस्स जेट्ठे भाया ‘णंदिवद्धणे’  
कासवगोत्तेणं ।

२१—समणस्स णं भगवओ महावीरस्स जेट्ठा<sup>१</sup> भइणी ‘सुदंसणा’  
कासवगोत्तेणं<sup>२</sup> ।

१—कणिट्ठा ( घ, च ) ।

२—कासवी ° ( च ) ।

२२-समणस्स णं भगवओ महावीरस्स भज्जा 'जसोया'  
कोडिण्णागोत्तेणं ।

२३-समणस्स णं भगवओ महावीरस्स धूया कासवगोत्तेणं । तीसेणं  
दो णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तंजहा—  
अणोज्जा ति वा,  
पियदसणा ति वा ।

२४-समणस्स णं भगवओ महावीरस्स णत्तुई कोसियगोत्तेणं' ।  
तीसेणं दो णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तंजहा—  
सेसवती ति वा,  
जसवती ति वा ।

माउ-पिउ-काल-पदं

२५-समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अम्मापियरो  
पासावच्चिज्जा समणोवासगा यावि होत्था । तेणं बहूइं  
वासाइं समणोवासग-परियागं पालइत्ता, छण्हं जीवनिकायाणं  
संरक्खणनिमित्तं<sup>१</sup> आलोइत्ता निंदित्ता गरहित्ता पडिक्कमित्ता,  
अहारिहं उत्तरगुणं पायच्छित्तं पडिवज्जित्ता, कुससंथारं  
दुरुहित्ता भत्तं पच्चक्खाइंति, भत्तं पच्चक्खाइत्ता अपच्छिमाए  
मारणंतियाए सरीर-संलेहणाए सोसियसरीरा<sup>२</sup> कालमासे  
कालं किच्चा तं सरीरं विप्पजहित्ता अच्चुए कप्पे देवत्ताए  
उववण्णा ।

तओ णं आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं चुए चइत्ता  
महाविदेहवासे चरिमेणं उस्सासेणं सिज्झिस्संति,

१-कोसिया ° ( घ ) ।

२-सारक्खण ° ( घ, च ) ।

३-सुसिय ° ( अ, घ ), कुसिय ° ( च ), कोसिय ° ( व ) ।

बुज्झिस्संति, मुच्चिस्संति, परिणिब्बाइस्संति, सव्वदुक्खाणमंतं  
करिस्संति ।

अभिणिकखमणाभिप्पाय-पदं

२६—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे णाते णायपुत्ते  
णायकुलविणिब्बत्ते विदेहे विदेहदिण्णे विदेहजच्चे विदेहसुमाले  
तीसं वासाइं विदेहत्ति कट्टु अगारमज्जे वसित्ता  
अम्मापिऊहिं कालगएहिं देवलोगमणुपत्तेहिं समत्तपइण्णे  
चिच्चा हिरगं, चिच्चा सुवण्णं, चिच्चा बलं, चिच्चा  
वाहणं, चिच्चा धण-धण्ण-कणय-रयण-संत-सार-सावदेज्जं,  
विच्छइडेत्ता, विगोवित्ता, विस्साणित्ता, दायारेसु णं 'दायं  
पज्जभाएत्ता', संवच्छरं दलइत्ता, जे से हेमंताणं पढमे मासे  
पढमे पक्खे—मगगसिरबहुले, तस्सणं मगगसिरबहुलस्स  
दसमीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं णक्खत्तेणं जोगोवगएणं  
अभिणिकखमणाभिप्पाए यावि होत्था—

[ संवच्छरेण होहिति, अभिणिकखमणं तु जिणवरिदस्स<sup>१</sup>।  
तो अत्थ - संपदाणं, पव्वत्तई पुव्वसूराओ ॥१॥  
एगा हिरण्णकोडी, अट्ठेव अणूणया सयसहस्सा ।  
सूरोदयमाईयं, दिज्जइ जा पायरासो त्ति<sup>२</sup> ॥२॥  
तिण्णेव य कोडिसया, अट्ठासीति च होति कोडीओ ।  
असिति<sup>३</sup> च सयसहस्सा, एयं संवच्छरे दिण्णं ॥३॥  
वेसमणकुंडलधरा, देवा लोगंतिया महिइढीया ।  
बोहिति य तित्थयरं, पण्णरससु कम्म-भूमिसु ॥४॥

१—दाइत्ता परिभाइत्ता ( छ ) ।

२—<sup>०</sup> दाण ( अ ) ।

३—उ ( घ ) ।

४—असिय ( अ, घ, छ, ब ) ।

बंभंमि य कप्पंमि य, बोद्धव्वा कण्हराइणो मज्झे ।  
 लोगंतिया विमाणा, अट्टसुवत्था असंखेज्जा ॥५॥  
 एए देवणिकाया, भगवं वोहिंति जिणवरं वीरं ।  
 सव्वजगजीवहियं, अग्हं तित्थं पव्वत्तोहि ॥६॥]

देवागमण-पद

२७—तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अभिणिकम्भमणा-  
 भिप्पायं जाणेत्ता भवणवइ-वाणमंतर-जोडसिय-विमाण-  
 वासिणो देवा य देवीओ य सएहिं-सएहिं रुवेहि, सएहिं-  
 सएहिं णेवत्थेहिं, सएहिं-सएहिं च्चिधेहिं, सच्चिड्डीए,  
 सव्वजुतीए, सव्वबलसमुदएणं, सयाइं-सयाइं जाण विमाणाइं  
 दुरुहंति, सयाइं-सयाइं जाणविमाणाइं दुरुहिता, अहावादराइं  
 पोगलाइं परिसाडेति, अहावादराइं पोगलाइं परिसाडेत्ता,  
 अहासुहुमाइं पोगलाइं परियाइंति, अहामुहुमाइं पोगलाइं  
 परियाइत्ता, उड्ढं उप्पयंति, उड्ढं उप्पडत्ता, ताए उक्किट्ठाए  
 सिग्घाए चवलाए तुरियाए दिव्वाए देवगईए अहेणं  
 ओवयमाणा-ओवयमाणा तिरिएणं असंखेज्जाइं दीवसमुदाइं  
 वीतिक्कममाणा-वीतिक्कममाणा जेणेव जंवुदीवे दीवे तेणेव  
 उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता, जेणेव उत्तरखत्तिय-कुंडपुर  
 सण्णिवेसे तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता, जेणेव  
 उत्तरखत्तिय-कुंडपुर सन्निवेसस्स उत्तग्पुरत्थिमे दिसीभाए  
 तेणेव ऋत्तिवेगेण उवट्ठिया ।

अलकरण-सिवियाकरण-पद

२८—तओ णं सक्के देविंदे देवराया सणियं-सणियं जाणविमाणं  
 ठवेति, सणियं-सणियं जाणविमाणं ठवेत्ता, सणियं-सणियं  
 जाणविमाणाओ पच्चोत्तरति, सणियं-सणियं जाणविमाणाओ

पच्चोत्तरित्ता, एगंतमवक्कमेति, एगंमवक्कमेत्ता, महया वेउव्विएणं समुग्घाएणं समोहणति, महया वेउव्विएणं समुग्घाएणं समोहणित्ता, एगं महं णाणामणिकणयरयण-भत्तिचित्तं सुभं चारुक्तंरूवं देवच्छंदयं विउव्वति । तस्सणं देवच्छंदयस्स बहुमज्झ देसभाए एगं महं सपायपीढं णाणामणिकणयरयणभत्तिचित्तं सुभं चारुक्तंरूवं सिंहासणं विउव्वइ, विउव्वित्ता, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिव्वुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, समणं भगवं महावीरं तिव्वुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेत्ता, समणं भगवं महावीरं वंदति, णमंसति, वंदित्ता, णमंसित्ता, समणं भगवं महावीरं गहाय जेणेव देवच्छंदए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता, सणियं-सणियं पुरत्थाभिमुहे सीहासणे णिसीयावेइ, सणियं-सणियं पुरत्थाभिमुहे सीहासणे णिसीयावेत्ता सयपाग-सहस्स-पागेहिं तेल्लेहिं अब्भंगेति, अब्भंगेत्ता, गंधकसाएहिं<sup>१</sup> उल्लोलेति, उल्लोलित्ता, सुद्धोदएणं मज्जावेइ, मज्जावित्ता, जस्स जंतपलं<sup>२</sup> सयसहस्सेणंति पडोलतित्तएणं साहिएणं सीतएणं<sup>३</sup> गोसीसरत्तचंदणेणं अणुलिपति, अणुलिपित्ता ईसिणस्सासवातवोज्झं वरणगरपट्टणुग्गयं कुसलणरपसंसितं अस्सलालपेलवं<sup>४</sup> छेयायरियकणगखचियंतकम्मं<sup>५</sup> हंसलक्खण पट्टजुयलं णियंसावेइ, णियंसावेत्ता, हारं अद्धहारं उरत्थं

१—<sup>०</sup> कासायिएहिं ( च, छ ) ।

२—ण मुल्ल ( अ, घ, च, व ) ।

३—सरसीएण ( क, घ, च ) ।

४—<sup>०</sup> लालपेसिंघ ( घ ) ; <sup>०</sup> लालपेलव ( छ ) ; <sup>०</sup> लालप्पेसलवं ( व ) ।

५—मसूरियकणयकणयत <sup>०</sup> ( घ ) ।

एगावलिं पालंबसुत्त-पट्ट-भउड-रयणमालाइ आविधावेति,  
आविधावेत्ता गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघातिमेणं मल्लेणं  
कप्परुक्खमिव समालकेति, समालकेत्ता दोच्चं पि महया  
वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ, समोहणित्ता एणं महं चंदप्पभं  
सिवियं सहस्सवाहिणिं विउव्वइ, तंजहा—

ईहामिय-उसभ-तुरग-णर-मकर-विहग-वाणर-कुजर-रुक्ख-सरभ-  
चमर-सट्ठूलसीह-वणलय- विचित्तविज्जाहरमिहुण- जुयल-जंत-  
जोगजुत्तं, अच्चीसहस्समालिणीयं, सुणिरुवित्त-मिसिमिसित्त-  
रुवगसहस्सकलियं, ईसिभिसमाणं, भिन्निभिसमाणं,  
चक्खुल्लोयणलेस्सं, मुत्ताहलमुत्तजालंतरोवियं, तवणीय-पवर-  
लंबूस-पलबंतमुत्तदामं, हारद्धहारभूसणसमोणय, अहियपेच्छ-  
णिज्जं, पउमलयभत्तिचित्तं, 'असोगलयभत्तिचित्तं, कंदलय-  
भत्तिचित्तं',<sup>१</sup> २ णाणालयभत्ति-विरइयं सुभ चारुक्कंतरुवं  
णाणामणि-पंचवण्णघंटापडाय-परिमंडियग्गसिहरं पासादीयं<sup>३</sup>  
दरिसणीयं सुरुवं ।

[सीया उवणीया, जिणवरस्स जरमरणविप्पमुक्कस्स ।

ओसत्तमल्लदामा, जलथलयदिच्चकुसुमेहिं ॥७॥

सिवियाए मज्झयारे, दिव्वं वररयणरुक्खचेवइयं<sup>४</sup> ।

सीहासण महरिहं, सपादपीढं जिणवरस्स ॥८॥

आलइयमालमउडो, भासुरबोदी वराभरणधारी ।

खोमयवत्थणियत्थो<sup>५</sup>, जस्स य मोल्लं सयसहस्सं ॥९॥

१—कद ° ( च ) ।

२—× ( अ ), असोगलयभत्तिचित्तं ( क ) ।

३—सुभं चारुक्कंत रुवं पासादीय ( अ, क, घ, च, ब ) ।

४—° चिचइय ( घ ) ।

५—खोमिय ° ( क, छ, ब ) ।



छट्ठेण उ भत्तेणं, अज्झवसाणेण सोहणेण<sup>१</sup> जिणो ।  
 लेसाहिं विसुज्झंतो, आरुहइ उत्तमं सीयं ॥१०॥  
 सीहासणे णिविट्ठो, सक्कीसाणा य दोहिं पासेहिं ।  
 वीयंति चामराहिं, मणिरयणविचित्तदंडाहिं ॥११॥  
 पुण्वि उक्खित्ता, माणुसेहिं साहट्ठरोमपुलएहिं<sup>२</sup> ।  
 पच्छा वहंति देवा, सुरअसुरगरुलणागिंदा ॥१२॥  
 पुरओ सुरा वहंतो, असुरा पुण दाहिणंमि पासंमि ।  
 अवरे वहंति गरुला, णागा पुण उत्तरे पासे ॥१३॥  
 वणसंडं व कुसुमियं, पउमसरो वा जहा सरयकाले ।  
 सोहइ कुसुमभरेणं, इय गयणयलं सुरगणेहिं ॥१४॥  
 सिद्धत्थवणं व जहा, कणियारवणं व चंपगवणं वा ।  
 सोहइ कुसुमभरेणं, इय गयणयलं सुरगणेहिं ॥१५॥  
 वरपडहभेरिज्झल्लरि-संखसयसहस्सिएहिं तूरेहिं ।  
 गयणतले धरणितले, तूर-णिणाओ परमरम्मो ॥१६॥  
 ततविततं घणञ्जुसिरं, आउज्जं चउविहं बहुविहीयं ।  
 वायंति तत्थ देवा, बहूंहिं आणट्ठगसएहिं ॥१७॥ ]

अभिणिक्खमण-पदं

२९-तेणं कालेणं तेणं समएणं जे से हेमंताणं पढमे मासे पढमे  
 पक्खे-मग्गसिरबहुले, तस्सणं मग्गसिरबहुलस्स दसमीपक्खेणं,  
 सुव्वएणं दिवसेणं, विजएणं मुहुत्तेणं, 'हत्थुत्तराहिं णक्खत्तेणं'<sup>३</sup>  
 जोगोवगएणं, पाईणगामिणीए छायाए, वियत्ताए<sup>४</sup>  
 पोरिसीए, छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं, एगसाडगमायाए,

१-सुदरेण (क. घ. च. व) ।

२-साहट्ठ<sup>०</sup> (अ. क. च. ब) ।

३-हत्थुत्तर<sup>०</sup> (अ. घ. छ) ।

४-बीयाए (छ) ।

चंदप्पहाए सिवियाए सहस्सवाहिणीए<sup>१</sup>, सदेवमणुयासुराए  
परिसाए समणिज्जमाणे-समणिज्जमाणे उत्तरखत्ति-  
कुंडपुर संणिवेसस्स मज्झमज्झेणं णिगच्छइ, णिगच्छित्ता  
जेणेव णायसंडे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता  
ईसिरयणिप्पमागं अच्छुप्पेणं भूमिभागेणं सणियं सणियं  
चंदप्पभं सिवियं सहस्सवाहिणिं ठवेइ, ठवेत्ता सणियं-सणियं  
चंदप्पभाओ सिवियाओ सहस्सवाहिणीओ पच्चोयरइ,  
पच्चोयरित्ता सणिय-सणियं पुरत्थाभिमुहे सीहासणे  
णिसीयइ, आभरणालंकारं ओमुयइ । तओ णं वेसमणे देवे  
जन्नु-व्वाय-पडिए समणस्स भगवओ महावीरस्स हंसलवखणेणं  
पडेणं<sup>२</sup> आभरणालंकारं पडिच्छइ ।

लोय-पदं

३०-तओ णं समणे भगवं महावीरे दाहिणेणं दाहिणं वामेणं  
वामं पंचमुट्ठियं लोयं करेइ ।

३१-तओ णं सक्के देविंदे देवराया समणस्स भगवओ महावीरस्स  
जन्नु-व्वाय-पडिए वयरामएणं थालेणं केसाइं पडिच्छइ,  
पडिच्छित्ता “अणुजाणेसि भंते” त्ति कट्टु खीरोयसायरं  
साहरइ ।

समाइय-गहण-पद

३२-तओ णं समणे भगवं महावीरे दाहिणेणं दाहिणं वामेणं  
वामं पंचमुट्ठियं लोयं करेत्ता सिद्धाणं णमोक्कारं करेइ,  
करेत्ता, “सव्वं मे अकरणिज्ज पावकम्मं” त्ति कट्टु समाइयं  
चरित्तं पडिवज्जइ, सामाइयं चरित्तं पडिवज्जेत्ता देवपरिसं  
मणुयपरिसं च आलिकख-चित्तभूयमिव द्वेइ ।

१-° वाहिणीयाए ( क घ. न ) ।

२-पडिमाटएण ( छ ) ।

[दिव्वो मणुस्सघोसो, तुरियाणिणाओ य सक्कवयणेण ।

विप्पामेव णिलुक्को, जाहे पविज्जइ चरित्तं ॥१८॥

पडिवज्जित्तु चरित्तं, अहोणिसि सव्वपाणभूतहितं ।

साहट्ट<sup>१</sup> लोमपुलया, पयया देवा निसामिति ॥१९॥]

मणपज्जवणाण-लद्धि-पदं

३३-तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स सामाइयं

खाओवसमियं चरित्तं पडिवन्नस्स मणपज्जवणाणे णामं णाणे

समुप्पन्ते—अड्डाइज्जेहि दीवेहि दोहि य समुद्देहि सणीणं

पंचेंद्रियाणं पज्जत्ताणं वियत्तमणसाणं<sup>२</sup> मणोगयाइं भावाइं

जाणेइ ।

अभिगह-पदं

३४-तओ णं समणे भगवं महावीरे पव्वइते समाणे मित्त-णाति-

सयण-संबंधिवग्गं, पडिविसज्जेति, पडिविसज्जेत्ता इमं<sup>३</sup>

एयारूवं अभिगहं अभिगिण्हइ—“बारसवासाइं वोसट्ठकाए

चत्तदेहे<sup>४</sup> जे केइ उवसग्गा उप्पज्जंति<sup>५</sup>, तंजहा—दिव्वा वा,

माणुसा वा, तेरिच्छिया<sup>६</sup> वा, ते सव्वे उवसग्गे समुप्पण्णे

समाणे स अणाइले अव्वहिते अदीणमाणसे तिविह मणवयण-

कायगुत्ते<sup>७</sup> सम्मं सहिस्सामि, खमिस्सामि अंहियासइस्सामि ।”

१-साहट्टु (अ, क, व) ।

२-मणुस्साण (छ) ।

३-तओण इमं (छ) ।

४-चियत्त (च, छ, व) ।

५-समुप्पज्जति (व, छ, व) ।

६-तेरिच्छा (च, व) ।

७-X (अ, क, व, च, व) ।

विहार-पदं

३५—तओ णं समणे भगवं महावीरे इमेयारूवं अभिगहं  
अभिगिण्हेत्ता 'वोसट्ठकाए चत्तदेहे'<sup>१</sup> दिवसे मुहुत्तसेसे  
कम्मारं<sup>२</sup> गामं समणुपत्ते ।

३६—तओ णं समणे भगवं महावीरे वोसट्ठचत्तदेहे अणुत्तरेणं  
आलएणं, अणुत्तरेणं विहारेणं, अणुत्तरेणं संजमेणं, अणुत्तरेणं  
पग्गहेणं, अणुत्तरेणं संवरेणं, अणुत्तरेणं तवेणं, अणुत्तरेणं  
बंभचेरवासेणं, अणुत्तराए खंतीए, अणुत्तराए मोत्तिए,  
अणुत्तराए तुट्ठीए, अणुत्तराए समितीए, अणुत्तराए गुत्तीए,  
अणुत्तरेण ठाणेणं, अणुत्तरेणं कम्मेणं<sup>३</sup>, अणुत्तरेणं सुचरिय-  
फलणिब्बाणमुत्तिमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

३७—एवं विहरमाणस्स जे केइ उवसग्गा समुपज्जिसुं—दिव्वा वा  
माणुसा<sup>४</sup> वा तेरिच्छिया वा, ते सव्वे उवसग्गे समुप्पन्ते  
समाणे अणाइले अव्वहिए अदीण-माणसे<sup>५</sup> तिविहमणवयण-  
कायगुत्ते सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ।

केवलनाण-लद्धि-पद

३८—तओ ण समणस्स भगवओ महावीरस्स एएणं विहारेणं  
विहरमाणस्स बारसवासा विइक्कंता, तेरसमस्स य वासस्स  
परियाए वट्ठमाणस्स जे से गिम्हाणं दोच्चे मासे चउत्थे  
पक्खे—वइसाहसुद्धे, तस्सणं वइसाहसुद्धस्स दसमीपक्खेणं,

१—वोसट्ठचत्तदेहे ( क, घ ), वोसट्ठचियत्तदेहे ( छ ) ।

२—कुमार ( क, घ, च, छ, ब ) ।

३—कम्मेण ( क, घ, च, छ ) ।

४—<sup>०</sup> पज्जति ( क, घ, च, ब्र ) ।

५—माणुस्ता ( च ) ।

६—अदीण-<sup>०</sup> ( अ, घ, च ) ।

सुव्वएणं दिवसेणं, विजएणं मुहुत्तेणं, हत्थुत्तराहिं णक्खत्तेणं  
जोगोवगतेणं, पाईणगामिणीए छायाए, वियत्ताए पोरिसीए,  
जंभियगामस्स णगरस्स बहिया णईए उजुवालियाए' उत्तरे  
कूले, सामागस्स गाहावइस्स कट्ठकरणंसि, वेयावत्तस्स  
चेइयस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, सालक्खस्स अदूरसामंते,  
उक्कुड्डयस्स, गोदोहियाए आयावणाए आयावेमाणस्स,  
छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं, उड्ढंजाणुअहोसिरस्स, धम्म-  
ज्झाणोवगयस्स, झाणकोट्ठोवगयस्स, सुक्कज्झाणंतरियाए  
वट्ठमाणस्स, निव्वाणे, कसिणे, पडिपुण्णे, अवाहए,  
णिरावरणे, अणंते, अणुत्तरे, केवलवरणाणदंसणे समुप्पण्णे ।

३९-से भगवं अरिहं<sup>१</sup> जिणे जाए<sup>३</sup>, केवली सव्वणू  
सव्वभावदरिसी, सदेवमणुयासुरस्स लोयस्स पज्जाए जाणइ,  
तंजहा-आगतिं गतिं ठित्तिं चयणं उववायं भुत्तं पीयं कडं  
पडिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं लवियं कहियं मणोमाणसियं  
सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावाइं<sup>४</sup> जाणमाणे पासमाणे,  
एवं च णं विहरइ ।

देवागमण-पदं

४०-जणं दिवसं समणस्स भगवओ महावीरस्स निव्वाणे कसिणे  
\*पडिपुण्णे अवाहए णिरावरणे अणंते अणुत्तरे केवलवरणाण-  
दंसणे<sup>०</sup> समुप्पण्णे, तणं दिवसं भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-  
विमाणवासिदेवेहि य देवीहि य ओवयंतेहि<sup>५</sup> य, \*उप्पयंतेहि

१-उज्जु<sup>०</sup> ( घ, ब ) ।

२-अरहा ( अ, छ, ब ) , अरहं ( क, घ ) ।

३-जाणए ( घ, च ) ।

४-<sup>०</sup> भावेण ( अ ) ।

५-ओवयंतेहि २ ( अ, ब ) ।

य एगे महं दिव्वे देवुज्जोए देव-सण्णिवाते देव-कहक्कहे°  
उप्पिजलगभूए यावि होत्था ।

धम्मोवदेस-पदं

४१-तओ णं समणे भगवं महावीरे उप्पण्णणाणदंसणधरे अप्पाणं  
च लोगं च अभिसमेक्ख पुव्वं देवाणं धम्ममाइक्खति, तओ  
पच्छा मणुस्साणं ।

४२-तओ णं समणे भगवं महावीरे उप्पण्णणाणदंसणधरे  
गोयमाईणं समणाणं णिगंथाणं पंच महव्वयाइं सभावणाइं  
छज्जीवनिकायाइं आइक्खइ भासइ<sup>१</sup> पख्वेइ, तंजहा—  
पुढविकाए<sup>२</sup> आउकाए, तेउकाए, वाउकाए, वणस्सइकाए°,  
तसकाए ।

सभावण-महव्वय-पदं

४३-पढमं भंते! महव्वयं—

पच्चक्खामि सव्वं पाणाइवायं—से सुहुमं वा वायरं वा, तसं  
वा थावरं वा—णेवसयं पाणाइवायं करेज्जा, नेवण्णेहिं  
पाणाइवायं कारवेज्जा, नेवण्णं पाणाइवायं करंतं  
समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं—मणसा वयसा  
कायसा, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं  
वोसिरामि ।

४४-तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति ।

तत्थिमा पढमा भावणा—

इरियासमिए से णिगंथे, णो 'इरिया-असमिए'<sup>२</sup> त्ति । केवली  
बूया—इरिया-असमिए से णिगंथे, पाणाइं भूयाइं जीवाइं

१—भासइ पणवइ ( व ) ।

२—अइरियासमिए ( अ ), अणइरियासमिते ( छ ) ।

सत्ताइं अभिहणेज्ज वा, वत्तेज्ज वा, परियावेज्ज वा, लेसेज्ज वा, उद्देवेज्ज वा । इरियासमिए से णिग्गंथे, णो इरिया-असमिए त्ति पढमा भावणा ।

४५-अहावरा दोच्चा भावणा—

मणं परिजाणाइ से णिग्गंथे, जे य मणे पावए सावज्जे सकिरिए अण्हयकरे छेयकरे भेदकरे अधिकरणिए<sup>१</sup> पाओसिए, पारिताविए पाणाइवाइए भूओववाइए—तहप्पगारं मणं णो पधारेज्जा । मणं परिजाणाति से णिग्गंथे, 'जे य मणे अपावए'<sup>२</sup> त्ति दोच्चा भावणा ।

४६-अहावरा तच्चा भावणा—

वइं परिजाणइ से णिग्गंथे, जा य वई पाविया सावज्जा सकिरिया \*अण्हयकरा छेयकरा भेदकरा अधिकरणिया पाओसिया पारिताविया पाणाइवाइया<sup>०</sup> भूओववाइया—तहप्पगारं 'वइं णो उच्चारिज्जा । जे वइं परिजाणइ से णिग्गंथे, जा य वई अपावियत्ति तच्चा भावणा ।

४७-अहावरा चउत्था भावणा—

आयाणभंडमत्तणिक्खेवणासमिए से णिग्गंथे, णो आयाणभंडमत्तणिक्खेवणाअसमिए । केवली ब्रूया—आयाणभंडमत्तणिक्खेवणाअसमिए से णिग्गंथे पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं अभिहणेज्ज वा, \*वत्तेज्ज वा; परियावेज्ज वा, लेसेज्ज वा<sup>०</sup>, उद्देवेज्ज वा, तम्हा आयाणभंडमत्तणिक्खेवणासमिए से णिग्गंथे, णो आयाणभंडमत्तणिक्खेवणाअसमिए त्ति चउत्था भावणा ।

१—अहियारणकरे कलहकरे ( व, वृ ) ।

२—णो जे अमणे पावए ( च ) ।

४८—अहावरा पंचमा भावणा—

आलोइयपाणभोयणभोई से णिग्गंथे, णो अणालोइयपाण-  
भोयणभोई । केवली बूया—अणालोइयपाणभोयणभोई से  
णिग्गंथे पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं अभिहणेज्ज वा,  
°वत्तेज्ज परियावेज्ज वा, लेसेज्ज वा°, उद्देवज्ज वा, तम्हा  
आलोइयपाणभोयणभोई से णिग्गंथे, णो अणालोइयपाण-  
भोयणभोई त्ति पंचमा भावणा ।

४९—एतावताव महव्वए सम्मं काएण फासिए पालिए तीरिए  
किट्टिए अबट्टिए आणाए आराहिए यावि भवइ ।

पढमे भन्ते ! महव्वए पाणाइवायाओ वेरमणं ।

५०—अहावरं दोच्चं भन्ते ! महव्वयं—

पच्चक्खामि सव्वं मुसावायं वड्ढोसं—से कोहा वा, लोहा  
वा, भया वा, हासा वा, णेव सयं मुसं भासेज्जा, णेवन्नेणं  
मुसं भासावेज्जा, अण्णं पि मुसं भासंतं ण समणुजाणेज्जा,  
तिविह तिविहेणं—मणसा वयसा कायसा, तस्स भन्ते !  
पडिक्कमामि °निदामि गरिहामि अप्पाणं° वोसिरामि ।

५१—तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति । तत्थिमा पढमा  
भावणा—

अणुवीइभासी से णिग्गंथे, णो अणुवीइभासी । केवली  
बूया—अणुवीइभासी से णिग्गंथे समावेज्जा<sup>१</sup> मोसं  
वयणाए । अणुवीइभासी से णिग्गंथे, णो अणुवीइभासि  
त्ति पढमा भावणा ।

५२—अहावरा दोच्चा भावणा—

कोहं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो कोहणे सिया । केवली

१—° वज्जेज्जा ( क, घ, च, छ, व ) ।



बूया—कोहपत्ते कोही समावदेज्जा मोसं वयणाए । कोहं<sup>१</sup>  
परिजाणइ, से णिग्गंथे, णो य कोहणे सिय त्ति दोच्चा  
भावणा ।

५३—अहावरा तच्चा भावणा—

लोभं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो य लोभणाए सिया । केवली  
बूया—लोभपत्ते लोभी समावदेज्जा मोसं वयणाए । लोभं  
परिजाणइ से णिग्गंथे, णो य लोभणाए सिय त्ति तच्चा  
भावणा ।

५४—अहावरा चउत्था भावणा—

भयं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो भयभीरुए सिया । केवली  
बूया—भयपत्ते भीरु समावदेज्जा मोसं वयणाए । भयं  
परिजाणइ से णिग्गंथे, णो य भयभीरुए सिय त्ति चउत्था  
भावणा ।

५५—अहावरा पंचमा भावणा—

हासं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो य हासणाए सिया । केवली  
बूया—हासपत्ते हासी समावदेज्जा मोसं वयणाए । हासं  
परिजाणइ से णिग्गंथे, णो य हासणाए सिय त्ति पंचमा  
भावणा ।

५६—एतावताव महव्वए सम्मं काएण फासिए •पालिए तीरिए  
किट्टिए अवट्टिए<sup>०</sup> आणाए आराहिए या वि भवति ।

दोच्चे भंते ! महव्वए •मुसावायाओ वेरमणं<sup>०</sup> ।

५७—अहावरं तच्चं भंते ! महव्वयं—

पच्चक्खामि सव्वं अदिण्णादाणं—से गामे वा, णगरे वा,  
अरण्णे वा, अप्पं वा, बहुं वा, अणं वा छलं वा चित्तमंतं

१५. अविद्यमानं वा नैव स्यादविद्यं गेहहृत्त्वा, ऐवणोहि  
अविद्यं गेह्यायेत्त्वा, अविद्यं अविद्यं गेहहृत्त्वं न  
स्य—अविद्यं, अविद्योवाय \*निविद्यं निविद्येण—मणसा  
अविद्यं अविद्यं, अविद्यं भवे । अविद्यमामि निविद्यमि गहिहामि  
अविद्यं गेह्यायेत्त्वा ।

१६.—अविद्यमानं नैव भावनायां भवेति । अविद्यमा पदमा  
भावना—

अविद्यमानं भोग्यायेत्त्वा मे निगमं, नो अविद्यमानं भोग्यायेत्त्वा  
मे निगमं । अविद्यमानं भोग्यायेत्त्वा मे निगमं, नो  
अविद्यमानं भोग्यायेत्त्वा मे निगमं, नो  
अविद्यमानं भोग्यायेत्त्वा मे निगमं, नो  
अविद्यमानं भोग्यायेत्त्वा मे निगमं ।

१७. अविद्यमानं भोग्यायेत्त्वा—

अविद्यमानं भोग्यायेत्त्वा मे निगमं, नो अविद्यमानं भोग्यायेत्त्वा  
मे निगमं । अविद्यमानं भोग्यायेत्त्वा मे निगमं, नो  
अविद्यमानं भोग्यायेत्त्वा मे निगमं, नो  
अविद्यमानं भोग्यायेत्त्वा मे निगमं, नो  
अविद्यमानं भोग्यायेत्त्वा मे निगमं ।

१८.—अविद्यमानं नैव भावना --

निगमं नं ओगहंति ओगह्यंति एतावताव ओगहण-  
नीत्या निगमा । केली वृत्त्या—निगमं नं ओगहंति  
अओगह्यंति एतावताव अओगहणसीलो अविद्यं  
ओगह्यंति । निगमं नं ओगहंति ओगह्यंति एतावताव  
ओगहणनीत्या सिय ति तच्चा भावना ।

६१-अहावरा चउत्था भावणा—

णिग्गंथेणं ओग्गहंसि ओग्गहियंसि अभिक्खणं-अभिक्खणं  
ओग्गहणसीलए सिया । केवली बूया—णिग्गंथेणं ओग्गहंसि  
ओग्गहियंसि अभिक्खणं-अभिक्खणं अणोग्गहणसीले अदिण्णं  
गिण्हेज्जा । णिग्गंथे ओग्गहंसि ओग्गहियंसि अभिक्खणं-  
अभिक्खणं ओग्गहणसीलए सिय ति चउत्था भावणा ।

६२-अहावरा पंचमा भावणा—

अणुवीइमितोग्गहजाई से णिग्गंथे साहम्मिएसु, णो  
अणुवीइमिओग्गहजाई । केवली बूया—अणुवीइमिओग्गह-  
जाई से णिग्गंथे साहम्मिएसु अदिण्णं ओगिण्हेज्जा ।  
अणुवीइमिओग्गहजाई से णिग्गंथे साहम्मिएसु, णो  
अणुवीइमिओग्गहजाई—इइ पंचमा भावणा ।

६३-एतावताव महव्वए सम्मं \*काएण फासिए पालिए तीरिए  
किट्टिए अवट्टिए० आणाए आराहिए यावि भवइ ।

तच्चे भन्ते महव्वए \*अदिण्णादाणाओ वेरमणं० ।

६४-अहावरं चउत्थं भन्ते ! महव्वयं—

पच्चक्खामि सव्वं मेहुणं—से दिव्वं वा, माणुसं वा,  
तिरिक्खजोणियं वा, गेव सयं मेहुणं गच्छेज्जा, \*णेवण्णेहिं  
मेहुणं गच्छावेज्जा, अण्णंपि मेहुणं गच्छंतं न समणुज्जाणेज्जा,  
जावज्जीवाए तिर्विहं तिविहेणं—मणसा वयसा कायसा, तस्स  
भन्ते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं०  
वोसिरामि ।

६५-तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति तत्थिमा पढमा भावणा—

णो णिग्गंथे अभिक्खणं-अभिक्खणं इत्थीणं कहं कहइत्तए  
सिया । केवली बूया—णिग्गंथेणं अभिक्खणं-अभिक्खणं इत्थीणं

कहं कहमाणे, संतिभेदा संतिविभंगा संतिकेवलीपणत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा । णो णिग्गंथे अभिक्खणं-अभिक्खणं इत्थीणं कहं कहित्तए सिय त्ति पढमा भावणा ।

६६-अहावरा दोच्चा भावणा—

णो णिग्गंथे इत्थीणं मणोहराइं<sup>१</sup> इंदियाइं आलोएत्तए णिज्झाइत्तए सिया । केवली वूया—णिग्गंथे णं इत्थीणं मणोहराइं इंदियाइं आलोएमाणे णिज्झाएमाणे, संतिभेया संतिविभंगा \*संतिकेवलीपणत्ताओ<sup>०</sup> धम्माओ भंसेज्जा । णो णिग्गंथे इत्थीणं मणोहराइं इंदियाइं आलोएत्तए णिज्झाइत्तए सिय त्ति दोच्चा भावणा ।

६७-अहावरा तच्चा भावणा—

णो णिग्गंथे इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सरित्तए<sup>२</sup> सिया । केवली वूया—णिग्गंथे णं इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सरमाणे, संतिभेया \*संतिविभंगा संतिकेवलीपणत्ताओ धम्माओ<sup>०</sup> भंसेज्जा । णो णिग्गंथे इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सरित्तए सिय त्ति तच्चा भावणा ।

६८-अहावरा चउत्था भावणा—

णाइमत्तपाणभोयणभोई से णिग्गंथे, णो पणीयरसभोयणभोई । केवली वूया—अइमत्तपाणभोयणभोई से णिग्गंथे पणीयरसभोयणभोई त्ति, संतिभेदा \*संतिविभंगा संतिकेवली-पणत्ताओ धम्माओ<sup>०</sup> भंसेज्जा । णो अतिमत्तपाणभोयणभोई से णिग्गंथे णो पणीयरसभोयणभोई त्ति चउत्था भावणा ।

१-मणोहराड २ ( क, घ ), मणोहराड रुवाइ मणोहराईं ( छ ) ।

२-सुमरित्तए ( अ, क, घ, छ, व ) ।

६९-अहावरा पंचमा भावणा—

णो णिग्गंथे इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्तए सिया । केवली बूया—णिग्गंथे णं इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवेमाणे, संतिभेया \*संतिविभंगा संतिकेवली-पण्णत्ताओ धम्माओ० भंसेज्जा । णो णिग्गंथे इत्थीपसुपंडग-संसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्तए सिय त्ति पंचमा भावणा ।

७०-एतावताव महव्वए सम्मं काएण फासिए \*पालिए तीरिए किट्टिए अवट्टिए आणाए० आराहिए या वि भवइ ।

चउत्थे भंते ! महव्वए \*मेहुणाओ वेरमणं० ।

७१-अहावरं पंचमं भंते ! महव्वयं—

सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि\*—से अप्पं वा, बहुं वा, अणुं वा, थूलं वा, अचित्तमंतं वा, अचित्तमंतं वा णेव सयं परिग्गहं गिण्हेज्जा, णं हि परिग्गहं गिण्हावेज्जा, अण्णपि परिग्गहं गिण्हंतं ण सम्मज्जा, \*जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं—मणसा वयसा १, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्प २ वोसिरामि ।

७२-तस्सिमाओ पच्च भावणाओ भवंति । तत्थिमा पढमा

भावणा—

सोयओ० १ वे मणुण्णामणुण्णाइं सद्दाइं सुणेइ ।

मणुण्णामणुण्णे २ सद्देहि णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो

गिज्जेज्जा, मुज्जेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा, णो

ज्जेज्जा ।

विणिग्घायमाव ३ णेग्गंथे णं मणुण्णामणुण्णेहि सद्देहि सज्जमाणे

केवली बूया—

घ, च) ।

०) ।

—पच्चाइक्खामि (अ, क,

—सोतत्तेणं (अ, क, छ,

रज्जमाणे गिज्झमाणे मुज्झमाणे अज्झोववज्जमाणे  
विणिग्घायमावज्जमाणे, संतिभेया संतिविभंगा संतिकेवलि-  
पण्णत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा ।

ण सक्का ण सोउं सद्दा, सोयविसयमागता ।

रोगदोसा उ जे तत्थ, ते<sup>१</sup> भिक्खू परिवज्जए ॥

सोयओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं सद्दाइं सुणेइ त्ति पढमा  
भावणा ।

७३-अहावरा दोच्चा भावणा-

चक्खूओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रुवाइं पासइ ।  
मणुण्णामणुण्णेहिं रुवेहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, \*णो  
गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा<sup>०</sup>, णो  
विणिग्घायमावज्जेज्जा ।

केवली वूया-मणुण्णामणुण्णेहिं रुवेहिं सज्जमाणे रज्जमाणे  
\*गिज्झमाणे मुज्झमाणे अज्झोववज्जमाणे<sup>०</sup> विणिग्घाय-  
मावज्जमाणे, संतिभेया संतिविभंगा \*संतिकेवलि-पण्णत्ताओ  
धम्माओ<sup>०</sup> भंसेज्जा ।

णो सक्का रुवमदट्ठुं, चक्खुविसयमागयं ।

‘रागदोसा उ जे तत्थ, ते’<sup>२</sup> भिक्खू परिवज्जए ॥

चक्खूओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रुवाइं पासइ त्ति दोच्चा  
भावणा ।

७४-अहावरा तच्चा भावणा-

घाणओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं गंधाइं अग्घायइ ।  
मणुण्णामणुण्णेहिं गंधेहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, \*णो

१-तं (अ, क, घ, व) ।

२-रागदोसो उ जो तत्थ, तं (अ, क) ।

गिज्जेज्जा, णो मुज्जेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा<sup>०</sup>, णो विणिग्घायमावज्जेज्जा ।

केवली बूया—मणुण्णामणुण्णेहि गंधेहि सज्जमाणे रज्जमाणे  
\*गिज्झमाणे मुज्झमाणे अज्झोववज्जमाणे<sup>०</sup> विणिग्घाय-  
मावज्जमाणे, संतिभेदा संतिविभंगा \*संतिकेवलि-पणत्ताओ  
धम्मओ<sup>०</sup> भंसेज्जा ।

णो सक्का<sup>१</sup> ण<sup>२</sup> गंधमग्घाउं, णासाविसयमागयं ।

रागदोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए ॥

घाणओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं गंधाइं अग्घायति त्ति  
तच्चा भावणा ।

७५—अहावरा चउत्था भावणा—

जिब्भाओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रसाइं अस्सादेइ ।  
मणुण्णामणुण्णेहि रसेहि णो सज्जेज्जा, \*णो रज्जेज्जा, णो  
गिज्जेज्जा, णो मुज्जेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा<sup>०</sup>, णो  
विणिग्घायमावज्जेज्जा ।

केवली बूया—णिग्गंये णं मणुण्णामणुण्णेहि रसेहि सज्जमाणे  
\*रज्जमाणे गिज्झमाणे मुज्झमाणे अज्झोववज्जमाणे<sup>०</sup>  
विणिग्घायमावज्जमाणे, संतिभेदा \*संतिविभंगा संतिकेवलि-  
पणत्ताओ धम्मओ<sup>०</sup> भंसेज्जा ।

णो सक्का रसमणासाउं, जीहाविसयमागयं ।

रागदोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए ॥

जीहाओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रसाइं अस्सादेइ त्ति  
चउत्था भावणा ।

१—सक्को ( छ ) ।

२—X ( अ, क, च, ब ) ।

७६-अहावरा पंचमा भावणा—

फासओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं फासाइं पडिसंवेदेइ ।  
मणुण्णामणुण्णेहि फासेहि णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो  
गिज्जेज्जा, णो मुज्जेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा, णो  
विणिग्घायमावज्जेज्जा ।

केवली बूया—णिग्गथे णं मणुण्णामणुण्णेहि फासेहि मज्जमाणे  
•रज्जमाणे गिज्जमाणे मुज्जमाणे अज्झोववज्जमाणे°  
विणिग्घायमावज्जमाणे, संतिभेदा संतिविभगा संतिकेवल्लि-  
पणत्ताओ धम्माओ भसेज्जा ।

णो सक्का ण संवेदेउं, फासविसयमागयं ।

रागदोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए ॥

फासओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं फासाइं पडिसवेदेति त्ति  
पंचमा भावणा ।

७७-एतावताव महव्वए सम्म काएण फासिए पालिए तीरिए  
किट्टिए अवट्टिए<sup>१</sup> आणाए आराहिए यावि भवइ ।

पंचमे भंते ! महव्वए °परिग्गहाओ वेरमणं° ।

७८-इच्चेतेहिं महव्वएहिं, पणुवीसाहिं<sup>२</sup> य भावणाहि संपण्णे  
अणगारे अहासुयं अहाकप्पं अहामग्ग सम्मं काएण फासित्ता,  
पालित्ता, तीरित्ता, किट्टित्ता, आणाए आराहिए यावि  
भवइ ।

—त्ति वेमि ।

१-अहिट्टिए ( अ, व, क, घ, च, छ ), प्रथममहाव्रतसूत्रे ( ४९ ) 'किट्टिए अवट्टिए' इति पाठोऽस्ति, अत्र 'किट्टिए अहिट्टिए' इति पाठो लभ्यते, किन्तु उक्त सूत्रस्य वृत्तिरचानुसारेणात्रापि 'अवट्टिए' इति पाठो युज्यते, तेन स स्वीकृत ।

२-पण ° ( छ, व ) ।



सोलसमं अज्मयणं

## विमुत्ती

अणिच्च-पद

१-अणिच्चमावासमुर्वेति' जंतुणो,  
पलोयए सोच्चमिदं अणुत्तरं ।  
विऊसिरे<sup>१</sup> विन्नु अगारबंघणं,  
अभीरु आरंभपरिग्गहं चए ॥

पब्बय-दिट्ठत-पद

२-तहागअं भिक्खुमणंतसंजयं,  
अणेलिसं विन्नु चरंतमेसणं ।  
तुदंति वायाहिं अभिद्दवं णरा,  
सरेहिं संगामगयं व कुंजरं ॥  
३-तहप्पगारेहिं जणेहिं हीलिए,  
ससद्दफासा फरसा उदीरिया ।  
तित्तिक्खए णाणि अद्दुच्चेयसा,  
गिरिव्व वाएण ण संपवेवए ॥

रुप्प-दिट्ठत-पद

४-उवेहमाणे कुसलेहिं संवसे,  
अकंतदुक्खी तसथावरा दुही ।  
अलूसए सब्वसहे महामुणी;  
तहा हि से सुस्समणे समाहिए ॥

---

१-विउ ° ( क, च, व ) ; वियो ° ( घ ) ; ° वियो ( छ ) ।

५-विदू णते धम्मपयं अणुत्तरं,  
विणीयतण्हस्स मुणिस्स भायओ ।  
समाहियस्सऽग्गिसिहा व तेयसा,  
तवो य पण्णा य जसो य वड्ढइ ॥

६-दिसोदिसंऽणंतजिणेण ताइणा,  
महव्वया खेमपदा पवेदिता ।  
महागुरू णिस्सयरा उदीरिया,  
तमं व नेजोतिदिसं पगासया ॥

७-सितेहि भिक्खू असिते परिव्वए,  
असज्जमित्थीसु चएज्ज पूअणं ।  
अणिस्सिओ लोगमिणं तहा परं,  
णमिज्जति कामगुणेहि पंडिए ॥

८-तहा विमुक्कस्स परिण्णचारिणो,  
धिईमओ दुक्खखमस्स भिक्खुणो ।  
विसुज्झई जंसि मलं पुरेकडं,  
समीरियं रुप्पमलं व जोइणा<sup>१</sup> ॥

भुजंगतय-दिट्ठंत-पद

९-से ह्ण प्परिण्णा समयमि वट्ठइ,  
णिराससे उवरय-मेहुणे<sup>२</sup> चरे ।  
भुजंगमे जुण्णतयं जहा जहे<sup>३</sup>,  
विमुच्चइ से दुहसेज्ज माहणे ॥

१-जोइणो (अ, घ, ब) ।

२-<sup>०</sup> मेहुणा (क, घ) ।

३-चए (घ) ।

समुद्-दिट्ठंत-पदं

१०-जमाहु ओह सलिलं अपारगं,  
महासमुद्दं व भुयाहि दुत्तरं ।  
अहे य' णं परिजाणाहि पंडिए,

से हू मुणी अंतकडे त्ति वुच्चइ ॥  
११-जहा हि बद्धं इह 'माणवेहि य'<sup>१</sup>,  
जहा य तेसिं तु विमोक्ख आहिओ ।  
अहा तहा बंधविमोक्ख जे विऊ,

से हू मुणी अंतकडे त्ति वुच्चइ ॥  
१२-इमंमि लोए 'परए य दोसुवि'<sup>३</sup>,  
ण विज्जइ वंधण जस्स किचिवि ।  
से हू णिरालंबणे अप्पइट्टिए,  
कलंकली भावपहं विमुच्चइ ॥

—त्ति वेमि ।

१-व (अ, क, ब) ।

२-माणवेहि (अ, क)

३-परलोय ते सु वि ( : , ,

## परिशिष्ट-१

### आयारो

#### संक्षिप्त-पाठ, पूर्त-स्थल और आधार-स्थल निर्देश

संक्षिप्त-पाठ	पूर्त-स्थल	पूर्ति आधार-स्थल
आगममाणे (जाव) सम्मत्तमेव	८।६५-६६, १२३-१२४	८।७८-८०
एव दक्खिणाओ वा पच्चत्थिमाओ वा उत्तराओ वा उड्ढाओ वा ( जाव ) अन्नयरीओ	१।३	१।१
एवं परिघेतव्वं ति, उट्ठवेयव्वंति	५।१०१	१०१
एवं हिययाए पित्ताए वसाए पिच्छाए पुच्छाए वालाए सिंगाए विसाणाए दंताए दाढाए नहाए ण्हाण्णीए भट्ठीए भट्ठिमिजाए भट्ठाए अणट्ठाए	१।१४०	१।१४०
गाम वा (जाव) रायहाणि	८।१२६	८।१०६
घारेज्जा (जाव) गिम्हे	८।८८-९२	८।४६-५०
परक्कमेज्ज वा (जाव) हुत्त्या	८।२३	८।२१
पुरत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसी (जाव) अन्नयरीओ	१।३	१।१
वत्थाइं जाएज्जा (जाव) एयं	८।६४-६७	८।४४-४८
समारढम (जाव) चेएइ	८।२४	८।२३

## परिशिष्ट-२

### आयार-चूला

संक्षिप्त-पाठ, पूर्त-स्थल और आधार-स्थल निर्देश

संक्षिप्त-पाठ	पूर्त-स्थल	पूर्ति आधार-स्थल
अंतलिख जाए (जाव) णो	५।३७, ३८	५।३६
अकिरियं (जाव) अभूतोवघाइयं	४।११	४।१०
अक्कोसंति वा (जाव) उद्दवंति	३।६१	२।२२
अक्कोसंति वा तहेव तेत्लादि सिणाणादि सीओदग विघडादि णिणिणाइ य जहा सिज्जाए		
आलावगा णवरं ओगहवत्तव्वया	७।१६-२०	२।५१-५५
अक्कोसेज्ज वा (जाव) उद्दवेज्ज	३।६	२।२२
अणंतरहियाए पुढवीए (जाव) संताणए	१।१०२	१।५१
अणेगाह गमणिज्जं (जाव) णो गमणाए	३।१३	३।१२
अणेसणिज्जं (जाव) णो	१।१७, ६३, १०६, १३६	१।४
अणेसणिज्जं (जाव) लामे	१।१०८, १२१	१।४
अणेसणिज्जं. णो	१।२१	१।४
अणेसणिज्जं ..लामे	१।८५, ६७; ८।१, ६।१	१।४
अणेसणिज्जं...लामे सते 'जाव-' णो	१।१३५	१।४
अणमणमक्कोसंति वा (जाव) उद्दवंति	२।५१	२।२२
अणयरं जहा पिडेसणाए	७।५६	१।१५५
अतिरिच्छच्छिन्नं तहेव तिरिच्छच्छिन्नं तहेव	७।३४, ३५	७।२७, २८

\* अत्र 'जाव' शब्दस्य व्यत्ययोपि वर्तते ।

परिशिष्ट-२

३

अपुस्मिन्तरकडं (जाव) अणासेवितं	११२१, ५११२	१११७
अपुस्मिन्तरकड (जाव) णो	११२४	१११७, १११४
अपुस्मिन्तरकड (जाव) वहिया		
दणोहड वा अन्नयरंमि	१०१६	१११७
अपुस्मिन्तरकड (जाव) अणामेविए (ते)	२११०, १०	१११७
अपुस्मिन्तरकड (जाव) णो	२११४, १६	२१८
अपुस्मिन्तरकड वा (जाव) अणासेविते	२१३	१११२
अप्पंडा (जाव) सताणए	१११३५	११२
अप्पंडं (जाव) पाडिगाह्जेज्जा		
अतिरिच्छच्छिन्नं तिरिच्छच्छिन्नं		
तहेव	७१३७, ३८	७१३०, ३१
अप्पंडं (जाव) मक्कडा	६१२	११२
अप्पंड (जाव) सताणगं (यं)	२१५८, ५१२६, ७१२७	११२
अप्पंडा (जाव) सताणगा	११४३, ३१५	११२
अप्पंडे (जाव) चेतैज्जा	२१३२	२१२
अप्पापाणं (जाव) सताणगं	२१२	११२
अप्पपाणिमि (जाव) मक्कडा	१०१२८	११२
अप्पवीर्यं (जाव) मक्कडा	१०१३	११२
अप्पाह्णणावित्ति (जाव) रायहाणि	३१३	११४३, ३१२
अप्पुम्मुए (जाव) समाहीए	३१२६, ५६, ६१	३१२२
अफामुयं (जाव) णो	१११२, ६४, ८२, ८३, ८७, ६२, ६६, १०७, ११०, १११, १२८, १३३, २१४८, ५१२२, २३, २५, २८, २६, ६१२६, ४६, ७१२६, २७, २६, ३०	११४
अफामुयं (जाव) लामे	१११०६	११४
अफामुयं लामे	११८४, १०२, १०४, १२३	११४
अफामुयाइं (जाव) णा	६११३, १४	११४
अवमंजेत्ता वा तहेव सिणाणाह् तहेव		
सीओदगादि कंदादि तहेव	६१२२-२५	५१२३-२५
अभिकंखसि सेस तहेव (जाव) णो	५१२४	५१२३

अभिहणेज्ज वा (जाव) उद्देज्ज	१५१४७,४८	१५१४४
अभिहणेज्ज वा (जाव) ववरोवेज्ज	२११६,४६	११८८
अयं तेणे तं चेव (जाव) गमणाए	३१११	३१६,१०
अयवंधणाणि वा (जाव) चम्मवधणाणि	६११४	६११३
असणं वा लाभे	११३६,४१,८८,६१	११४
असणं वा ४ अफामुयं	११६२	११६०
असणं वा (जाव) लाभे	११६०	११४
असत्थ परिणयं (जाव) णो	११११३,११५-११६	११६२;११४
असावज्जं (जाव) भासेज्जा	४१२२	४१११
अस्सिं पडियाए एगं साहम्मियं		
समुद्दिस्स अस्सि पडियाए बह्वे		
साहम्मिया समुद्दिस्स अस्सिपडियाए		
एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स		
अस्सिपडियाए बह्वे		
साहम्मिणीओ समुद्दिस्स		
अस्सिपडियाए बह्वे समण माहण		
पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स पाणाइं ४		
(जाव) उद्देसियं चेतैति, तहप्पगारं		
थडिलं पुरिसंतरकड वा		
अपुरिसतरकडं वा (जाव) बहिया		
णीहडं वा अणीहडं वा	१०१४-८	१११२-१६
आइवखह (जाव) दूइज्जेज्जा	३१५५	३१५४
आएसणाणि वा (जाव) भवगणिहाणि	३१४७	२१३६
आगंतारेसु वा (जाव) परियावसहेसु	२१३४,३५	२१३३
आगंतारेसु वा जावोमाहियंसि	७१४६,४७	७१२३,२४
आमज्जेज्ज वा (जाव) पयावेज्ज	३१३६,६१४८	११५१
आयरिए वा (जाव) गणावच्छेइए	१११३१	१११३०
इक्कडे वा (जाव) पलाले	२१६५,७१५४	२१६३
ईसरे (जाव) एवोमाहियंसि	७१३२,३३	७१२५,२६
उवज्जाएण वा (जाव) गणावच्छेइएण	२१७२	१११३०

परिशिष्ट-२

५

एग वयणं वएज्जा (जाव) परोत्तवयणं	४१४	४१३
एव अनिरिच्छिच्छिल्ले वि		
तिरिच्छिच्छिल्ले (जाव) पटिगाहेज्जा	८१४४, ४५	७१३०, ३१
एवं पायव्वं जहा सद-पटियाए मव्वा		
वाइत्तवज्जा मव पटियाए वि	१२१२-१७	१११५-२०
एवं तमकाए वि	११६८	११६२
एवं पाद णइकण्य उट्टुच्छिल्लेति वा	४११६	४११६
एवं बहवे माहम्मिया एगं		
माहम्मिणि बहवे माहम्मिणीओ	२१४, ५, ६	२१३
एवं बहवे माहम्मिया एग		
साहम्मिणि बहवे माहम्मिणीओ		
बहवे समगमाहम्मि नहेव,		
पुरिसंतर जहा पिडमणाए	५१६-११	१११३, १८
एवं बहवे माहम्मिया एग		
माहम्मिणि बहवे माहम्मिणीओ...		
समुहम्मि चत्ताणि आलाववा		
भाणियव्वा	१११३-१५	१११२
एवं बहिया विचारभूमि वा		
विहारभूमि वा गामाणुगाम		
दूइज्जेज्जा अहपुगेण जाणेज्जा		
तिव्वदेमियं वा वास वाममार्व		
पेहाए जहापिडेमणाए णवरं		
सव्व चीवर माथाए	५१४३-४५	११३८-४०
एवं बहिया विचारभूमि वा		
विहारभूमि वा गामाणुगामं		
दूइज्जेज्जा । तिव्वदेसियादि जहा		
विइयाए वत्थेसणाए णवरं		
एत्थ पडिग्गहे	६१५१-५८	५१४३, ५०
एवं सेज्जा गमेणं गेयव्वं (जाव) उदग		
पसूयाई ति	८१२-१५	२१२-१५



एवं सेज्जा गमेणं गेयव्वं (जाव) उदग

प्पसूयाडंति	६१३-१५	२१३-१५
एवं हिट्ठिमो गमो पायादि भाणियव्वो	१३१४०-७५	१३१३३-३८
एसणिज्ज (जाव) पडिगाहेज्जा	१११८, २३, २१६४	११५
एसणिज्जं (जाव) लाभे	११७, १४३	११५
एसणिज्जं लाभे	२१६३, ६१२	११५
एस पइल्ला...जं	६१२८, ४५	११५६
ओवयत्तेहि य (जाव) उप्पिजलगभूए	१५१४०	१५१६
कदाणि वा (जाव) बीयाणि	१०११५	२११४
कंदाणि वा (जाव) हरियाणि	५१२५	२११४
कसिणे (जाव) समुप्पण्णे	१५१४०	१५१३८
कुट्ठीति वा (जाव) महुमेहणी	४११६	आयारो ६१८
कुलियंसि वा (जाव) णो	७११२	५१३७
खंघंसि वा...अणयरे वा तहप्पगारे		
(जाव) णो	७११३	५१३८
खलु (जाव) विहरिस्सामो	७१२५	७१२३
गंडं वा (जाव) भगदलं वा	१३१३०-३३	१३१२८
गच्छेज्जा (जाव) अप्पुत्सुए...तओ		
संजयामेव	५१४८	३१५६
गच्छेज्जा (जाव) गामाणुगामं	५१४६	३१६०
गच्छेज्जा तं चेव अदिण्णादाण		
वत्तव्वया भाणियव्वा (जाव)		
वोसिरामि	१५१६४	१५१५७
गामं वा (जाव) .	७१२	११२८
गामं वा (जाव) रायहाणि	११३४, १२२, २११; ३१२, ८११	११२८
गामंसि वा (जाव) रायहाणिसि	११३४, १२२, ३१२	११२८
गामे वा (जाव) रायहाणी	३१४५, ५७	११२८
गाहावइं वा (जाव) कम्मकरिं	११६३; ५११८; ६११७	११२५
गाहावइ-कुलं (जाव) पविट्ठे	१११६, १७	१११
गाहावइ-कुलं (जाव) पविसिक्तुकामे	११८, ४४	१११

गाहावड-कुलं...पविसितुकामे	११३७	१११
गाहावड वा (जाव) कम्मकरीओ	११२१, १२२, १४३	
	२१२, ३६, ५१, ७१६	११४६
गोलेत्ति वा इत्थी गमेण गेत्तव्वं	४११४	४११२
छत्ताए वा (जाव) चम्मछेदणए	७१०४	२१४६
छत्तागं वा (जाव) चम्मछेदणगं	३१०४	२१४६
जवनाणि वा (जाव) मेणं	३१५६	३१४३
जाएज्जा (जाव) पडिगाहेज्जा	१११४५, ५१९६, ६११६, १७	१११४१
जाएज्जा (जाव) विहरिस्सामो	७१४६	५१२३
जावज्जीवाए (जाव) वोमिरामि	१५१५७	१५१४३
जीव पडट्ठियमि (जाव) मक्कडा	१०११४	११५१
क्कामथंडिलमि वा (जाव) अन्नयरसि	११५१, ५१३६	११३
क्कामथंडिलसि वा (जाव) पमज्जिय	१११३५	११३
ठाणं ..चेतेज्जा	२१२८, २६	२११
ठाणं वा (जाव) चेतेज्जा	२१२७, ५१-५५	२११
णगरं वा (जाव) रायहाणि	८११	११२८
णगरस्स वा (जाव) रायहाणीए	३१५८	११२८
णिकल्लमण (जाव) चिंताए	२१५०	११४२
णिकल्लमणपवेसाए (जाव) धम्माणुओग	७११४	११४२
णो अण्णमण्णस्स अणुवयंति त चेव (जाव)		
णो सात्तिज्जंति बहुवयणेणं भाणियव्वं	५१४७	५१४६
णो रज्जेज्जा (जाव) णो विणिग्घाय	१५१७३, ७४	१५१७२
णो सज्जेज्जा (जाव) णो विणिग्घाय	१५१७५	१५१७२
तं चेव भाणियव्वं णवर चउत्थाए		
णाणत्तं से भिक्खू वा (जाव) समाने,		
सेज्ज पुण पाणम-जायं जाणेज्जा		
तंजहा...तिलोदगं वा तुसोदगं वा,		
जवोदगं वा, आयाम वा, सोवीर		
वा, मुद्ध वियडं वा अस्सि खलु		
पडिग्गहिंयंसि अप्पे पच्छाकम्मे तहेव		
पडिगाहेज्जा	१११४६-१५४	१११४२-१४७

तहप्पगारं (जाव) णो	११११४	१४,६२
तहप्पगाराइं णो	११११२-१४,१६	११४
तहप्पगाराइं...सदाइं...णो	१११७-११,१५	११४
थूर्णसि वा ४	७१११	५१३६
दंडगं वा (जाव) चम्मछेदणं	७१३	२४६
दस्सुगायतणाणि जाव विहारवत्तिथाए	३१६	३१८
दुब्बद्वे (जाव) णो	७१११	५१३६
देज्जा (जाव) पडिगाहेज्जा	१११४४	११४१
देज्जा (जाव●) फासुयं...पडिगाहेज्जा	१११२७	११४१
देज्जा (जाव●) फासुयं...लामे	५११८	११४१
दोहिं (जाव) सण्णिहिसण्णिचयाओ	११२४	११२१
निक्खमणपवेसाए (जाव) चम्माणुओगच्छिताए	३१२	१४२
निक्खिवाहि जहा डरियाए पाणत्तं		
वत्थपडियाए	५१५०	३१६१
पडन्ना (जाव) जं	२११६,२२:६१२८,४५	१४६
पडिक्कमामि (जाव) वोसिरामि	१५१५०	१५४३
पडिमं जहा पिडेसणाए	६१२०	१११५५
पडिमाणं जहा पिडेसणाए	५१२१	१११५५
पडिवज्जमाणे तं चेव (जाव)		
अन्नोल्लसमाहीए	२१६७	१११५५
पमज्जेत्ता (जाव) एग	३१३४	३११५
परक्कमे (जाव) णो	३१७	३१६
पागाराणि वा (जाव) दरीओ	३१४७	३१४१
पाडिपट्ठिया (जाव) आउसंतो	३१५७	३१५४
पाणाइं जहा पिडेसणाए	५१५	१११२
पाणाइं जहा पिडेसणाए चत्तारि		
आलावगा । पंचमे बह्वे समणमाहणा		
पगणिय-पगणिय तद्देव से भिक्खू		
वा २ अस्संजए भिक्खू पडियाए		
बह्वे समण माहणा वत्थेसणालावओ	६१४-१२	१११२-१८;५१५-१३

पाणाणि वा (जाव) ववरोवेज्ज	२।७१	१।८८
पायं वा (जाव) इंदिय नायं	२।४८	१।८८
पायं वा (जाव) लूसेज्ज	२।७१	१।८८
पिहुयं वा (जाव) चाउलपलवं	१।७, १।४४	१।८
पुढविकाए (जाव) तसकाए	१।५।४२	२।४१
पुढविकाय समारभेणं एवं आउतेउवाउ-		
वणस्सइ महया तसकाय	२।४१	२।४१
पुरिसंतरकडं (जाव) आसेवियं	१।२२	१।१८
पुरिसंतरकडं (जाव) पडिगाहेज्जा	५।१३	५।११
पुरिसतरकडं (जाव) वहिया णीहडं***		
अणयदंसि	१०।१०	१।१८
पुरिसंतरकडे (जाव) आसेविए	२।६, १।१, १।३	१।१८
पुरिसंतरकडे (जाव) चेतैज्जा	२।१५, १।७	२।६
पुब्बोवदिट्ठा ४ जं	१।१२३	१।५६
पुब्बोवदिट्ठा (जाव) चेतैज्जा	२।३०	२।२७
पुब्बोवदिट्ठा (जाव) जं	१।६१	१।७१
पुब्बोवदिट्ठा (जाव) जं	२।२३, २।४, २।५, २।७, २।८, २।९;	
	३।६, १।३, ४।६, ५।२७	१।५६
पुब्बोवदिट्ठा (जाव) णो	१।६५	१।७१
पेहाए (जाव) चित्ताचिह्णं	३।५६	१।५२
फलिहाणि वा (जाव) सराणि	१।१५	१।७।१४१ निक्षीय
फासिए (जाव) आणाए	१।५।५६	१।५।४६
फासिए (जाव) आराहिए	१।५।७०	१।५।४६
फासुयं (जाव) पडिगाहेज्जा	१।२२, २।५, ८।१, १।००, १।४६,	
	५।२०, ३।०, ७।२८, ३।१	१।५
फासुयं **पडिगाहेज्जा	१।१४१	१।५
फासुयं***लामे सते (जाव●) पडिगाहेज्जा	१।१०१, १।२८	१।५
वहुकंटां***लामे सते (जाव●) णो	१।१३४	१।४
वहु पाणा (जाव) संताणमा	३।४	१।२
वहुबीया (जाव) संताणमा	३।१	१।२

● अत्र जाव शब्दस्य व्यत्ययोऽपि वर्तते ।

વહુરયં વા (જાવ) વાસલપલંબં	૧૮૨	૧૬
ભગવંતો (જાવ) સ્વરયા	૨૧૨૫	૧૧૨૧
મિકલુણી વા (જાવ) પવિટ્ઠે	૧૧૫, ૬, ૭, ૧૧, ૧૨, ૪૨, ૬૨, ૬૨, ૬૬, ૬૬, ૧૦૧, ૧૦૪, ૧૦૫, ૧૦૭, ૧૦૮, ૧૦૯, ૧૧૧	૧૧૧
મિકલૂ વા (જાવ) પવિટ્ઠે	૧૧૨૩, ૪૬, ૫૦, ૫૨	૧૧૧
મિકલૂ વા (જાવ) સદાઈ	૧૧૧૧૬	૧૧૧૨
મિકલૂ વા (જાવ) સમાણે	૧૧૫૩, ૫૫, ૫૮, ૬૧, ૮૩, ૮૪, ૮૭, ૮૯, ૯૦, ૯૭, ૧૦૨, ૧૦૬, ૧૧૦, ૧૧૨, ૧૧૬, ૧૨૪, ૧૨૫, ૧૨૬, ૧૩૫, ૧૩૬, ૧૪૫, ૧૪૭, ૧૫૧	૧૧૧
મિકલૂ વા (જાવ) સુણેતિ	૧૧૧૧૪, ૧૫	૧૧૧૨
મિકલૂ વા સેજ્જં	૧૧૮૨, ૧૨૮, ૧૩૩, ૧૩૪, ૧૪૪	૧૧૧
મળી વા (જાવ) રચનાવલી	૫૧૨૭	૨૧૪
મત્તે તહેવ દોઝા પિડેસણા	૧૧૧૪૨	૧૧૧૪૧
મહલ્લમોલ્લાઈ...લામે	૫૧૧૪	૧૧૪
મહલ્લિયાઓ કુજ્જા જહા પિડેસણા		
(જાવ) સંથારગં	૨૧૧૨	૧૧૨૬
મહલ્લવ	૧૫૧૫૬, ૬૩, ૮૪, ૬૧	૧૫૧૪૬
માસેણ વા જહાવત્તેસણા	૬૧૨૧	૫૧૨૨
મૂલેણિ વા (જાવ) હરિયાણિ	૧૦૧૨	૨૧૧૪
રજ્જમાણે (જાવ) વિણિઘ્વાય	૧૫૧૭૩, ૭૪	૧૫૧૭૨
લાઠે (જાવ) ણો વિહારવત્તિયા	૩૧૧૨	૩૧૮
વત્થાણિ ..લામે	૫૧૧૫	૧૧૪
વપ્પાણિ વા (જાવ) મવળિહાણિ	૪૧૨૧	૩૧૪૭
વાયણ (જાવ) ચિતા	૨૧૪૬	૧૧૪૨
સ અંઢં (જાવ) ણો	૭૧૩૩	૭૧૨૬
સ અંઢં (જાવ) ણો	૭૧૩૬, ૪૩	૭૧૨૬
સ.અંઢં (જાવ) મક્કઢા	૮૧૧, ૬૧૧	૧૧૨
સ અંઢં (જાવ) સંતાણયં (ગં)	૨૧૧, ૫૭, ૫૧૨૮, ૭૧૨૬	૧૧૨

स अंडादि सन्धे आलावगा जहा		
वत्येसणाए णाणत्तं तेल्लेण वा		
घएण वा णवणीएण वा वसाए		
वा सिणाणादि (जाव) अण्णय-		
रसि वा	६।२६-४२	५।२८-३६
स अंडे (जाव) संताणए	२।३१	१।२
संति भैया (जाव) भंसेज्जा	१५।६७, ६८, ६९, ७५	१५।६५
संति विभंगा (जाव) धम्माओ	१५।६६	१५।६५
सति विभंगा (जाव) भमेज्जा	१५।७३, ७४	१५।६५
संथारगं **लाभे	२।५७, ५८, ५९, ६०	१।४
संथारवं (जाव) लाभे	२।६१	१।५
सकिरिया (जाव) भूओवघाइया	१५।४६	१५।४५
सज्जमाणे (जाव) विणिग्घाय	१५।७५, ७६	१५।७२
मत्ताड (जाव) चेएइ तहंगारे,		
उवस्सए अपुरिसंतरकडे (जाव)		
अणासेविए	२।७, ८	१।१६, १७
सपाण (जाव) मक्कडा	१०।२	१।२
सपाणे (जाव) संताणए	१।५१	१।२
समण (जाव) उवागया	३।३, ४	३।२
समण माहणा (जाव) उवागमिस्संति	१।४३	१।४२
समणुजाणिज्जा (जाव) वोसिरामि	१५।७१	१५।४३
सम्म (जाव) आणाए	१५।६३	१५।४६
सयं वा (जाव) पडिगाहेज्जा	६।१८	१।१४१
सयं वा णं (जाव) पडिगाहेज्जा	६।१६	१।१४१
ससिणिट्ठाए (जाव) सताणए	५।३५	१।५१
ससिणिट्ठाए पुढवीए (जाव) संताणए	७।१०	१।५१
ससिणिट्ठेणसेसं तं चेव एव .		
ससरक्खे मट्टिया ऊसे, हरियाले		
हिंगुलए, मणोसिला अंजणे लोणे		
मेरुय वणिग्घ सेडिय, सोरट्टिय		
पिट्ठ कुक्कस उवकुट्ट ससट्ठेण	१।६५-८०	१।६४

सामगियं...	११४८,६०,८६,१०३,१२०,१२६,१३७;	
	२१२६,४३	११२०
सामगियं	३१४६;५१४०,५१,७१२२,५८	२१७७
सामगियं (जाव) जएज्जासि	८१३१;१०१२६;१११२०	२१७७
सावज्जं (जाव) णो भासेज्जा	४१२१	४११०
सिणाणेण वा (जाव) आधंसित्ता	५१२३	११२०
सिणाणेण वा (जाव) पघसेज्ज	५१३१	२१२१
सिणाणेण वा तहेव सीओदग-		
वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा		
आलावओ	५१३३,३४	५१३१,३२
सिलाए (जाव) मक्कडा संताणए	११८२	११५१
सिलाए (जाव) संताणए	११८३	११५१
सीओदग-वियडेण वा (जाव) पघोएज्ज	५१३२	२१२१
सीलमंता (जाव) उवरया	२१३८	११२२१
सुमणे सिया (जाव) समाहीए	३१४४	३१२६
से आगंतारेसु वा (जाव)	७१६,८	७१४
से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभि-		
कंखेज्जा ल्हसुण वण उवागच्छित्तए		
तहेव तिसिवि आलावगा णदर		
ल्हसुणं	७१३६-४२	७१२५-२८
से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं		
पुण जाणेज्जा...असरणं वा ४		
आलकाय पइट्ठियं तह चेव ।		
एवं अगणिकाय पइट्ठियं लाभे संते		
णो पडिगाहेज्जा	११६३,६४	११६२
सेमं तं चेव	१४१३-७६	१३१३-७६
हत्थं (जाव) अणासायमाणे	३१५०-५२	२१७४
हत्थं वा (जाव) सीसं	२११६	११८८
हत्थि जुद्धाणि वा (जाव) कविजल	११११२	१०११८
हत्थिट्ठाण करणाणि वा (जाव) कविजल	१११११	१०११८

## परिशिष्ट-३

### वाचनान्तर तथा आलोच्य-पाठ

#### वाचनान्तर

स्थानाङ्गसूत्रे महापद्मप्रकरणे (६।६१) वृत्तिकारप्रदर्शिते वाचनान्तरे “कंसपाईव मुक्तोए जहा भावणाए जाव सुहुयहुयासणेतिव तेयसा जलंते” इतिपाठे आचारचूलाया भावनाव्ययनस्य समर्पणं सूचितमस्ति । वृत्तिकृता श्रीमदभयदेवसूरिणाऽपि एतत् संवादि समुल्लिखितम्—“यथा भावनायामाचाराङ्गद्वितीयश्रुतस्कन्ध-पञ्चदशाध्ययने तथा अयं वर्णको वाच्य इति भाव, कियद्दूरं यावदित्याह—‘जाव सुहुये’त्यादि” (वृत्ति, पत्र ४४०) ।

औपपातिकसूत्रे ( सूत्राङ्क २७, वृत्ति पृष्ठ ६६ ) “वक्ष्यमाणपदानां च भावनाव्ययना-द्युक्ते इमे संग्रहाद्ये—

कंते संले जीवे, गयणे वाए य सारए सल्ले ।  
पुवखरयसे कुम्मे, विहगे खगे य भारंडे ॥  
कुंजर वसहे सीहे, नगराया चेव सागरमखोहे ।  
चदे सूरे कणगे, वसुंधरा चेव सुहुयहुए ॥”

इति वृत्तिकृता भावनाव्ययनगतसंग्रहाद्ययो सूचनं कृतमस्ति ।

एतयोर्द्वयोः समर्पण-सूचनयोः सन्दर्भे भावनाव्ययनं दृष्टं तदा कदापि समर्पित पाठो नोपलब्धः । भावनाव्ययनस्य वृत्तिरत्यन्तं संक्षिप्ताऽस्ति, तत्र तस्य पाठस्य नास्ति कोपि सकेन आदर्शेषु चापि तस्यानुसृतिरित्येव । चूर्णो उक्तपाठस्य व्याख्या समुपलब्धा तेनेति निर्णयः कर्तुं शक्यते—चूर्णिव्याख्यातात् पाठात् आदर्शगतः पाठो भिन्नोऽस्ति । अयं वाचनाभेद चूर्णिकारस्य समक्षमासीन्वेति नानुमानं कर्तुं किञ्चित् साधनं लभ्यते ।

स्थानाङ्गस्य वाचनान्तर-पाठे भावनाव्ययनस्य समर्पणमस्ति तस्य सम्बन्धः चूर्णनुसारि-पाठेनैव विद्यते, तथैव औपपातिकवृत्ते सूचनस्यापि सम्बन्धस्तेनैव ।

स्थानाङ्गे महापद्मप्रकरणे एव स्वीकृतपाठेपि ‘जहा भावणाते’ इति समर्पणमस्ति । तस्यापि सम्बन्धचूर्णनुसारिपाठेन विद्यते ।

आलोच्यमानपाठ किञ्चिद् भेदेनानेकेषु आगमेषु लभ्यते । तस्य तुलनात्मकमध्ययनमत्र प्रस्तूयते । आचाराङ्गचूर्णो पूर्णः पाठोः विवृतो नास्ति । स स्थानाङ्गस्य, कल्पसूत्रस्य, जम्बूद्वीपप्रज्ञेतेः, आचाराङ्गचूर्णस्य सम्बन्ध-समीक्षा-पूर्वकं संयोजितः । स च इत्थं सम्भाव्यते—



संयोजित पाठ :

तए णं से भगवं अणगारे जाए इरियासमिए भासासमिए जाव गुत्तवंभयारी  
धममे अकिचणे छिन्नसोते निरुपलेवे कंसपाईव मुक्कनोए संखो इव निरंगणे जीवो विव  
अप्पडिह्यगई जच्चकणं पिव जायखूवे आदरिसफळो इव पागडभावे कुम्भो इव गुत्तिदिए  
पुक्खरपत्त व निरुपलेवे गगगमिव निरालंबणे अणिलो इव निरालए चंदो इव सोमलेसे सूरु  
इव दित्ततेए सागरो इव गभीरे विहग इव सव्वओ विप्पमुक्के मंदरो इव अणकपे सारय-  
सलिल व सुद्धहियए खगविसाणं व एगजाए भासंडपक्खी व अप्पमत्ते कुजरो इव सोढीरे  
वससे इव जायत्थामे सोहो इव दुद्धरिसे वसुधरा इव सव्वफासविसहे सुद्धयहुयासणे इव  
तेयसा जलंते ।

[ कंसे संखे जीवे, गगणे चाते य सारए सलिले ।

पुक्खरपत्ते कुम्भे, विहगे खगो य भारडे ॥१॥

कुंजर वसहे सीहे, नगराया चेव सागरमखोहे ।

चंदे सूरु कणणे, वसुधरा चेव सुद्धयहुए ॥२॥ ]

नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कस्यइ पडिन्नंवे भवइ । से य पडिन्नंवे चउविवहे पण्णते.  
तंजहा—अइए वा पोयएइ वा उगहेइ वा पगहिइए वा, जं ण जं णं दिसं इच्छइ त  
णं तं ण दिसं अपडिवद्धे सुचिमूए लहुभूए अगगगथे संजमेणं अण्णणं भावेमाणे  
विहरइ ।

तस्स णं भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेण दंसणेणं अणुत्तरेणं चरित्तेणं एव  
आलएणं विहारेणं अज्जवेणं भद्देणं लाघवेणं खीए मुत्तीए सच्च-संजम-तव-  
गुण-सुचरिय-सोवविय-कठ-परिनिव्वाणमग्गेण अप्पणं भावेमाणस्स भाणतरियाए वट्ट-  
माणस्स अणंने अगुनरे निव्वात्राए निरावरणे कविणे पडिपुण्णे केवलवरणाणदंसणे  
समुप्पन्ते ।

तए णं से भगव अरहे जिणे जाए केवली सव्वन्नू सव्वदरिसो सनेरइयतिरियनरामरस्स  
लोगस्स पज्जेव जाणइ पासड, तजहा—आगतिं गतिं ठितिं चयणं उववाय तक्कं  
मणोमाणसियं भुत्तं कडं परिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्स भागी, तं त कालं  
मणसव्वयसकाइएहिं जोगेहिं वट्टमाणणं सव्वलोए सव्वजीवाण सव्वभावे अजीवाण य  
जाणमाणे पासमाणे विहरइ ।

तए णं से भगवं तेणं अणुत्तरेणं केवलवरणाणदंसणेणं सदेवमणुयासुर लोगं अनिसमिच्च  
समणाणं निर्माणाणं पंचमहव्वयाइं सभावणाइं छजीवनिकाए धम्मं अक्खाइ (दिसमाप्ते  
विहरइ), तंजहा—पुडविकाए आउकाए तेउकाए वाउकाए वणस्सइकाए तसकाए ।

स्थानाङ्ग (१।६१) :

- तस्स णं भगवंतस्स<sup>१</sup> साइरेगाईं दुवालसवासाईं निच्चं वोसट्टुकाए चियत्तदेहे जे केड उवसग्गा उप्पज्जिहिंति तं दिव्वा वा माणुसा वा तिरिक्खजोणिया वा, ते सव्वे सम्मं सहिस्सइ, खमिस्सइ तितिक्खिस्सइ अहियासिस्सइ ।

तए णं से भगव अणगारे भविस्सइ इरियासमिए, भासासमिए, एसणासमिए, आयाण-भडमत्तनिकखेवणासमिए, उच्चवारपासवणखेलजल्लमिषाणपारिट्ठावणियासमिए, मणगुत्ते, वयगुत्ते, कायगुत्ते, गुत्ते, गुत्तिदिए गुत्तवंभयारी अममे अकिञ्चणे छिन्नगथे [ वृ० पा० किन्नगथे ] निरुपलेवे कंसपाईव मुक्कतोए जहा भावणाए जाव सुहुयहुयासणे तिव तेयसा जलते ।

कसे संखे जीवे, गगणे बाते य सारए सल्ले ।

पुव्ववरज्जते कुम्मे, विहगे खगे य भारडे ॥१॥

कुंजर वसहे सीहे, नगराया चैव सागरमज्जोहे ।

चदे सूरे कणगे, वसुंधरा चैव सुहुयहुए ॥२॥

नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिवे भविस्सइ, सेय पडिवे चउब्बिहे पन्तते, तंजहा—

अंडएइ वा पोयएइ वा उम्माहेइ वा पग्गहिएइ वा, जं णं जं णं दिसं इच्छइ त णं तं णं दिसं अपडिवद्धे सुचिभूए लहुभूए अणु-गगंथे संजमेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरिस्सइ, तस्स णं भगवतस्स अणुत्तरेण नाणेणं अणुत्तरेणं दसणेणं अणुत्तरेणं चरित्तेणं एव आलएणं विहारेणं अज्जवेण महवेण लाघवेणं खंतिए मुत्तीए गुत्तीए सच्च-सज्ज-तव-गुण-मुच्चरिय-तोय-विय- (चिय ?)-फट्ठ-गरिनिव्वाणमग्गेण अप्पाणं भावेमाणस्स भाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणते अणुत्तरे निव्वाघाए निरादरगे कसिगे पडिगुणे केवलवरणाणदसणे सन्नुज्जिहिंति ।

तए णं से भगव अरहे जिणे भविस्सति, केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी सदेवमणुआमुरस्स लोगस्स परियाग जाणइ पासइ सव्वलोए सव्व जीवाण आगडं गतिं ठियं चयण उववायं तवकं मणोमाणसिय भुत्त कडं परिसेत्रियं आवीकम्म रट्ठोक्कम्म अरहा अरहस्स भागी तं तं काल मणसवयसकाइए जोगे वट्टमाणार्ण सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरिस्सइ ।

तए ण से भगव तेणं अणुत्तरेणं केवलवरणाणदंमणेणं सदेवमणुआमुरं लोग अभिसमिच्चवा समगार्ण निग्गघार्णं सणेइए जाव पंचमहव्वयाइ सभायणाईं छजीवनिकाया धम्म देसेमाणे विहरिस्सति ।

कल्पसूत्र :

तए णं समणे भगवं महावीरे अणगारे जाए हरियासमिए, भासासमिए, एसणासमिए, आयाणभंडमत्तनिकखेवणासमिए, उच्चारपासवणखेलसिघाणजल्लपारिट्ठावणियासमिए, मण-समिए, वइसमिए, कायसमिए, मणगुत्ते, वयगुत्ते, कायगुत्ते, गुत्ते, गुत्तिदिए, गुत्तवंभयारी, अकोहे, अमाणे, अमाए, अलोभे, संते, पसंते, उवसंते परिनिव्वुडे, अणासवे, अमसे, अकिंचणे, छिन्नगथे, निरुवलेवे, कंसपाई इव मुक्कतोये १, संखो इव निरंजणे २, जीवो इव अप्पडिहयगई ३, गगणं पिव निरालंबणे ४, वायुरिव अप्पडिवद्धे ५, सारयसलिलं व सुद्धहियए ६, पुक्खरपत्तं व निरुवलेवे ७, कुम्भो इव गुत्तिदिए ८, खग्विसाणं व एगजाए ९, विहग इव विप्पमुक्के १०, भारुंडपक्खी इव अप्पमत्ते ११, कुजरो इव सोडीरे १२, वसभो इव जायथामे १३, सीहो इव दुद्धरिसे १४, मंदरो इव अप्पकने १५, सागरो इव गंभीरे १६, चंदो इव सोमलेसे १७, सूर्रो इव दित्ततेए १८, जच्चकण्णं व जायह्वे १९, वसुधरा इव सव्वपासविसहे २०, सुहुयहुयासणो इव तेयसा जलंते २१ । एतेसि पदार्णं इमातो दुल्लि संघयणगाहाओ—

कंते संखे जीवे, गगणे वायू य सरयसलिले य ।

पुक्खरपत्ते कुम्भे, विहगे खगो य भारुंडे ॥१॥

कुंजर वसमे सीहे, णगराया चेव सागरमलोभे ।

संदे सूर्रे कण्णे, वसुंधरा चेव हूयवहे ॥२॥

नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबधो भवति । से य पडिबधे चउत्तव्वहे पण्णत्ते, तं जहा—

दब्बओ खेत्तओ कालओ भावओ । दब्बओ णं सचित्ताचित्तमीसिएसु दब्बेसु । खेत्तओ णं गामे वा नगरे वा अरण्णे वा खित्ते वा खले वा घरे वा अंगणे वा णहे वा । कालओ णं समए वा आवलियाए वा आणापाणुए वा थोवे वा खणे वा लवे वा मुहुत्ते वा अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा उऊ वा अयणे वा संवच्छरे वा अन्नयरे वा दीहकालसंजोमे वा । भावओ णं कोहे वा माणे वा मायाए वा लोभे वा भये वा हासे वा पेजे वा दोसे वा कलहे वा अबभक्खाणे वा पेसुन्ने वा परपरिवाए वा अरतिरत्ती वा मायामोसे वा मिच्छादंसणसल्ले वा । तस्स णं भगवंतस्स नो एवं भवइ ।

से णं भगवं वासावासवज्जं अट्ठ गिम्हहेमंतिए मासे गामे एगराईए नगरे पंचराईए वासीचंदणसमाणकप्पे समतिणमणिलेट्ठकंचणे समदुक्खसुहे इहलोगपरलोगअपडिवद्ध जीवियमरणे निरवकंखे संसारपारागामी कम्मसंगनिग्घायणट्ठाए अन्धुद्धिए एवं च णं विहरइ ।

तस्स णं भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेण चरित्तेणं अणुत्तरेणं आलएणं अणुत्तरेणं विहारेणं अणुत्तरेणं वीरिएणं अणुत्तरेणं अज्जवेणं अणुत्तरेणं मद्देणं अणुत्तरेणं लाघवेणं अणुत्तराए खंतीए अणुत्तराए मुत्तीए अणुत्तराए गुत्तीए अणुत्तराए तुट्ठीए अणुत्तरेणं सच्चसंजमतवसुचरियसोवचइयफलपरिनिव्वाणमन्नेणं अप्पाणं भावे-माणस्स दुवालस-संवच्छराइं विइक्कंताइं । तेरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स जे से गिम्हाणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे वइसाहमुद्धे तस्स णं वइसाहमुद्धस्स दसमीए पक्खेणं पाईणगामिणीए छायाए पोरीसीए अमिमिवट्टाए पमाणपत्ताए सुव्वएणं दिवसेणं विजएणं मुहुत्तेणं जंभियगामस्स नगरस्स बहिया उज्जुवालियाए नईए तीरे विवावत्तस्स वेईयस्स अट्टरसामते सामागस्स गाहावइस्स कट्टकरणंसि सालपायवस्स अहे गोदोहियाए उक्कुहुयनि-सिज्जाए आयावणाए आयावेमाणस्स छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं ज्ञाणंतरीयाए वट्टमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कमिणे पडिपुत्ते केवलवरनाणदंसणे समुप्पत्ते ।

तए णं से भगवं अरहा जाए जिणे केवली सव्वन्नु सव्वदरिसी सदेवमण्यासुरस्स लोगस्स परियायं जाणइ पासइ, मव्वलोए सव्वजीवाण बागइं गइं ठिं चवणं उववायं तक्कं मणो माणसियं भुत्ता कइं पडिसेविय आविकम्म रहोकम्म अरहा अरहन्तभागी तं तं कालं मणवयणकायजोणे वट्टमाणानं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पाममाणे विहरइ ।

४-जम्बूद्वीप अत्तसि, वक्ष २ (पत्र १४६)

तए णं से भगवं समणे जाए ईरिआसमिए जाव परिट्ठावणिआसमिए मपसमिए वयसमिए कायसमिए मणुत्ते जाव गुत्तवंभयारी अकोहे जाव अलोहे संते पत्ते उवसते परिणिव्वुडे छिण्णसोए निरुव्वेलेवे संखमिव निरंजणे जच्चकणग व जावस्से आदरितपडिभागे इव पागडभावे कुम्भो इव गुत्तिदिए पुक्खरपत्तमिव निरुव्वेलेवे गगणमिव निरालवगे अणिले इव गिरालए चंदो इव सोमदंसणे सूरु इव तेअसी विहग इव अपडिबद्धगामी सागरो इव गंभीरे मंदरो इव अकपे पुढवी विव सव्वफासविसहे जीवो विव अपडिहयगइति । णसिय णं तस्स भगवत्तस्स कत्थइ पडिववे, से पडिबंवे चउच्चिहे भवंति, तंचहा—

दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, दव्वओ इह खलु माया मे पिया मे नाया मे भगिणी मे जाव संगंयसंयुआ मे हिरण्णं मे सुवण्ण मे जाव उवगरणं मे, अहवा समासजो सचित्ते वा अचित्ते वा मीसए वा दव्वजाए सेव तस्स ण भवइ, खित्तओ गामे वा णगरे वा अरण्ये वा खेतो वा खेतो वा नेहे वा अणणे वा एव तस्स ण भवइ, कालओ पोवे वा लवे वा मूहुत्ते वा अहोरतो वा पक्खे वा मासे वा उरुए वा वयणे वा संवच्छरे वा अन्नयरे वा दीहकालपरि-वंचे एवं तस्स ण भवइ, भावओ कोहे वा जाव लोहे वा नए वा हामे वा एवं तस्स ण भवइ, से णं भगव वासावासवज्जं हेमंतगिम्हानु गामे एगराइए णगरे पचराइए वयणयहा

ससोगभरइभयपरिस्तासे णिम्ममे णिरहंकारे लहुभूए अगंथे वासीतच्छणे अटुट्ठे चंदणाणु-  
लेवणे अरत्ते लेट्ठुमि कंचणंमि असमे इह लोए अपडिबद्धे जीवियमरणे निरवकंखे  
संसारपारगामी कम्ममंगणिग्घायणद्राए अबुद्धिए विहरइ । तस्स णं भगवंतस्स एतेणं  
विहारेणं विहरमाणस्स एगे वाससहस्से विट्ठकत्ते समाने पुरिमतालस्स नगरस्स बहिआ  
सगडमहंसि उज्जाणंसि णिग्गोहवरपायवस्म अहे भाणंतरिआए वट्टमाणस्स फग्गुणबहलस्स  
इक्कारमिए पुव्वण्ह कालसमयंसि अट्टमेणं भत्तेणं अपाणएणं उत्तरासाढाणकखत्तेणं  
जोगमूवागएणं अणुनरेणं नाणेणं जाव चरित्तेणं अणुनरेणं तवेणं बलेणं वीरिएणं आलएणं  
विहारेणं भावणाए खंतीए गत्तीए मूत्तीए तट्टीए अज्जवेणं मट्टवेणं लाघवेणं सुचरिअसोवचि-  
अफळनिव्वाणमगेणं अप्पाणं भावेमाणस्स अणंते अणुत्तरे णिव्वाघाए णिरावरणे कसिणे  
पडिपुण्णे केवल-वरनाणदंसणे समुप्यण्णे जिणे जाए केवली सवन्नु सव्वदरिसी सणेरइअ-  
तिरियनरामरस्स लोगस्म पज्जवे जाणइ पासइ, तंजहा—आगइ गइ ठिइ उववायं भुत्तं  
कडं पडिसेविअं आवीकम्मं रहोकम्मं तं तं कालं मणवयकायजोगे एवमादी जीवाणवि  
सव्वभावे अजीवाणवि सव्वभावे मोक्खमग्गस्स विसुद्धतराए भावे जाणमाणे पासमाणे एस  
खलु मोक्खमग्गे मम अणोत्तिं च जीवाणं हियसुहणित्सेसकरे सव्वदुक्खविमोक्खणे परम  
सुहसमाणे भविस्सइ । तते णं से भगवं समणाणं निमांथाणं य णीमांथीण य पंच महव्वयाइं  
सभावणगाइं छच्च जीवणिकाए धम्मं देसमाणे विहरति, तंजहा—

पुढविकाइए भावणागमेणं पंच महव्वयाइं सभावणगाइं भाणिअव्वाइंति ।

५—सूत्रकृतांगे (२।२) प्रश्नव्याकरणे (संचरद्वार ५) रायपत्तेणइयसूत्रे (सूत्रांक ८१०-  
८१२) औपपातिक सूत्रे (सूत्र : २७-२९, ५५२, १५३, १६४) चालोच्यमानपाठेनांशिकी  
क्वचिच्च तदधिकापि तुलना जायते । किन्तु एतेषां सूत्राणां पाठाः अनगार-वर्णन-संबद्धाः  
सन्ति, ततः पूर्णातुलना प्रस्तुतपाठेन न नाम जायते ।

## आलोच्य-पाठ

(१) हण पाजे—(आयारो ६।५।११, पृ० ७४) ।

‘छ’ प्रतो ‘हयमाणे’ इति पाठान्तरं लभ्यते । अस्याधारेण ‘हणमाणे’ इति पाठस्य  
कल्पना जायते । अर्थसमीक्षयाऽपि ‘हणमाणे’ इति पाठः समीचीनः प्रतिभाति । ‘घायमाणे’  
अत्र कारितस्य ‘हणओयावि समणुजाणमाणे’ अत्रानुमोदनस्याऽर्थोस्ति अस्मिन् संदर्भे यदि  
‘हणमाणे’ पाठः स्यात् तदा कृतकारितानुमोदनस्य संगतिर्जायते । चूर्णावपि (पृ० २३०)  
अस्य पाठस्य संवादिविवरणं लभ्यते—‘पुढविकाइयादि जीवे हणसि हणावेसि हणंतीवि’  
योगत्रिककरणत्रिगेण ।

(२) एस खलु भगवया सेज्जाए अक्खाए—(आयार-चूला १।२।२६, पृ० १२१) ।

आचार-चूलायाः पाठ-संशोधने षड् आदर्शाः प्रयुक्ताः, चूर्णिर्द्वैतिव्य । तत्र पञ्चादशेषु

उक्तपाठस्य ये पाठ-भेदास्ते तत्रैव पादटिप्पणे प्रदर्शिताः सन्ति । वृत्तो ( पत्र ३०० )  
 'एस विलुगयामो सेज्जाए' इति पाठो व्याख्यातोस्ति—“गृहस्थश्चानेनाभिसन्धानेन  
 संस्क्रुयाद्—यथैष साधु शय्याया. संस्कारे विघातव्ये 'विलुगयामो' त्ति निर्गन्धः अकिञ्चन  
 इत्यतः स गृहस्थः कारणे सयतो वा स्वयमेव संस्कारयेदिति ।” अस्माभिः 'घ' प्रत्यनुसारी  
 पाठः स्वीकृतः । चूर्णावपि (पृ० ३३२) 'एस खलु भगवया' इति पाठो लभ्यते । 'सेज्जाए  
 अक्खाए' अत्र दोषशब्दः अध्याहर्तव्यः । वस्तुतः उक्तपाठः व्याख्यातः प्रतीयते ।  
 'संयरेज्जा' इति पाठस्यानन्तरं 'तम्हा से संजए' इत्यादि पाठः स्यात्तदानीमपि स खण्डितो  
 न प्रतिभाति । वृत्तिकृता उक्तपाठस्य या व्याख्या कृता, तथापि पूर्वानुमानस्य पुष्टि-  
 र्जायते । वृत्तिकारस्य सम्मुखे 'विलुगयामो' पाठः आसीत् स केपुचिदेव आदर्शेषु उपलभ्यते,  
 नतु सर्वेषु ।



# शुद्धि-पत्रम्

## १-आयारो मूल-पाठ

पृष्ठ	सूत्र	अशुद्ध	शुद्ध
२	३	*दक्खिणाओ...अहमंसि-	*दक्खिणाओ...अहमंसि °
८	४१	सत्यं-	सत्यं
८	४६	समुट्ठाए	समुट्ठाए
९	५५	पास	पासा
११	७३	° ता	° ता
१६	११६	णेवणे	णेवण्णे
२४	५	अभिकंत	अभिकंतं
३४	११३	जेह' यं	जेहे' यं
३४	११५	आलामो	अलामो
३५	१३०	देहं तराणि	देहंतराणि
३६	१५९	° जासि	° ज्जासि
३९	७	° च्चाइ	° च्चाई
४१	२५	णिकम्म-	णिकक्कम्म-
४२	४५	उवायं	उववायं
४२	४५	पच्चा	णच्चा
४२	४९	लहू °	लहु °
४३	५४	अन्न मन्न-	अन्नमन्न-
४३	५८	उज्झइ	डज्झइ
४३	५९	तीतं कि ?	तीतं ? कि
४६	८६	सगडिन्नि	सगडिन्नि
४८	११	वीर	वीरे
४८	१३	विन्नाणं-	विन्नाण-
५१	२९	दुक्खमिणं ति	दुक्खमिणं ति
५२	४४	दवीए	दविए
५३	५२	जहा-	अहा-



पृष्ठ	सूत्र	अशुद्ध	शुद्ध
५५	१७	एह	इह
६०	६४	मुञ्कति	मुञ्कति
६३	१०१	परिघेतव्वं ° ...सच्चेव	परिघेतव्वं...सच्चेव °
६३	१०६	° वेसणे	° वेसणे
६४	१२०	आगतिं	आगतिं गतिं
६७	८	-महर्णि	-मेहर्णि
६९	३३	अपरि-...माणाए	अपरिमाणाए
६९	३८	अत्थित्ति	अत्थित्ति
७०	४७	वुत्ता	वुत्ता
७०	४८	अणाए	आणाए
७१	६१	फुंसति	फुंसति
७२	७४	-पोय	-पोए
७३	७९	बिड्ज्जम् °	बिड्ज्जम् °
७३	७९	अज्जो	अज्जो
७३	७९	माद्याय	माद्याय
७३	७९	सत्थारमेउ	सत्थारमेव
७३	८२	° माइक्खंति	माइक्खंति
७४	९४	पडि °	पडि °
७५	९६	-विळ्मंते	-विळ्मंते
७६	१०२	संति	संति
७६	१०५	दीवे	दीवे
७६	१०८	त्ति	ति
७७	११३	° वयट्ठि	° वयट्ठि
७९	१०	अओ-	वओ-
८०	१७	समारमे	समारमे
८०	२१	° रायाणंसि	° रायातणंसि
८२	२४	अच्छेज्ज	अच्छेज्जं
८२	२४	° समारब्भ	समारब्भ°
८३	२९	समणु °	समणु °
८४	४१	संचाएमि	अहं संचाएमि
८४	४१	कप्पति-	कप्पति

पृष्ठ	सूत्र	अशुद्ध	शुद्ध
८८	७६	अथं	अयं
८८	७७	आहडं च	आहडं च णो
९३	१२३	तवे से अभिसमण्णागए °	•तवे से अभिसमण्णागए
९३	१२६	णगरं वा... णिगमं वा	•णगरं वा •णिगणं वा ?
१००	१५१	एवमन्तेसि	एवं मन्तेसि
१०२	९१३	-दुब्बि-	-दुब्बि-

## २-आचार-चूला (मूल-पाठ)

पृष्ठ	सूत्र	अशुद्ध	शुद्ध
१२०	२६	° मेराए	° मेराए
१२२	३२	सम्मिस्सि °	सम्मिस्सि °
१२७	४३	अप्पमाणा	अप्पपाणा
१३४		परिमायण-पदं	परिभायण-पद
१४७	१०१	पडिग्गाहेण	पडिग्गाहेण
१५१	११०	णो °	° णो
१६२	१३८	-जाएमु	-जाए
१६७	१४४	मुञ्जियं	मुञ्जियं
१६७		अहावरा	१४६-अहावरा
१६८		१४६-१४७-१४८-	१४७-१४८-१४९-
		१४९-१५०-	१५०-१५१-
१६९		१५१-१५२-१५३-	१५२-१५३-१५४-
		१५४-१५५-	१५५-१५६
१६९	१५५	पिड्डेसणाणं	पिड्डेसणाण
१६९	१५५	एते	एते
१७७	२२	वंधंतु,	बंधंतु
१८०	२७	पडिलोमे	पडिलोमे
१८७	४१	महया संरंभेणं,	महया संरंभेण, महया समारंभेणं
२०१	२	चित्ताए	चित्ताए
२०३	११	भिक्षुं	भिक्षु
२०५	१४	° गापिणि,	° गार्मिणि,

पृष्ठ	सूत्र	अशुद्ध	आयारो तह आयार-चूला
२०५	१६	वाहाओ	शुद्ध
२०७	२१	तुसोणिओ	वाहाओ
२११	३६	जवट्टेज्ज	तुसिणीओ
२१४	४७	थूमं	उवट्टेज्ज
२१४	४८	अंतरा	थूमं
२२०	६१	करणज्जं त्ति	अंतरा से
२२१		भासा	करणज्जं त्ति
२३८	१५	उट्ठाणि	भासज्जातं
२३६	१७	मंगियं	उट्ठाणि
२५०	५०	० ज्जं त्ति	मंगियं
२५६	२२	अब्भगाहि	० ज्जं त्ति
२६४	४५	पुव्वोदिट्ठा	अब्भंगाहि
२६५	४७	वण-	पुव्वोदिट्ठा
२६८	५६	मगाओ	वा णं
२६६	५८	० ज्जं त्ति	मगाओ
२७१	६	अणुवोइ	० ज्जं त्ति
२७२	६	० ज्जति	अणुवोइ
२७६	२४	सुत्तं	० ज्जं त्ति
२८३	५६	ए	णो सुत्तं
२८८	३	अप्पमाणं	एयं
३००	८	उच्चार-	अप्पमाणं
३०८	१४	माणुममाणिय-ट्ठाणि	उच्चार-
३१७	१०	खाणु	माणुममाणिय-ट्ठाणि
३२१	३७	ममुहाइं	खाणु
३३६	२६	हिरणं	ममुहाइं
३३६	पं० १	-भउड-	हिरणं
३४०	इलो० ११११	णिविट्ठो	-भउड-
३४२	१८१२	तुरिया ०	णिविट्ठो
३४२	३४	स अणाइले	तुरिय ०
३४४	३६	ठित्ति	अणाइले
३४७	४८	वत्तेज्ज	ठित्ति
३५८	इलो० १०११	ओह	वत्तेज्ज वा
			ओहं

### ३-आचारो पाठान्तर

पृष्ठ	पाठान्तर	अशुद्ध	शुद्ध
१	६	चते	चुते
२	५	अण०	अणु०
२	६	—x	६—x
२	७	० वेस्सं (च),	० वेस्सुं (च);
३	४	० सवेयइ	० सवेदयइ
७	५	० हूडसि	० हुडसि
८	२	(च)	(चू)
९	सू० ५०-५२	से वेमि—...उइवए	से वेमि—...उइवए <sup>१</sup>
९	पा० ४	४—...	४—...
			५—x(क,ख,ग,घ,च,छ,वृ)।
९	पा० ८	(वपा)	(वृपा)
१०	सू० ६५	से <sup>२</sup>	से वेमि <sup>२</sup>
१६	पा० १	० त्ति	० त्ति
२७	सू० ४०	य <sup>३</sup> राओ य	य राओ य <sup>३</sup>
२७	सू० ४२	-समायाणं <sup>४</sup> ।	-समायाणं ।
२७	सू० ४३	सपेहाए	सपेहाए <sup>५</sup>
२७	सू० ४३	कज्जति <sup>१०</sup>	कज्जति <sup>१०</sup>
२७	पा० ९	९-दंडं...	९-सपेहाए ( क,ख,ग, घ,च,छ) ।
२७	१०	दंड-समायाण...	१०-दंडं समारभति (चू); दंड-समायाणं...कज्जइ (चूपा) ।
२८	सू० ५२	भूएहि <sup>११</sup>	भूएहिं...सातं <sup>१२</sup>
२८	पा० ६	एयं	एवं
२८	७	दुक्खुब्बये	दुक्खुब्बेय
२९	सू० ५६	हतोवहते...अणुपरि- यट्टमाणे <sup>३</sup>	हतोवहते <sup>३</sup> ...अणुपरियट्ट- माणे
३२	पा० ६	(वपा)	(वृपा)

पृष्ठ	पाठान्तर	अशुद्ध	शुद्धि
३३	सू० १०४	सत्थेहि <sup>१</sup> लोगस्स	'सत्थेहिं' लोगस्स कम्म-
		कम्म-समारंभा	समारंभा <sup>१</sup>
३५	पा० ४	अट्टमेत्तं...	अट्टमेत्तं तु ..
३५	६	विलुपित्ता	विलुपित्ता
३६	३	(चपा)	(चूपा)
४६	४	(च)	(चू)
४८	६	मणुस्सवभत्थाणं	मणुस्सवभत्थाणं
४८	६	(च, व)	(च, वृ)
५२	४	अघंस्स	अघंस्स
५४	४	(च, च)	(च, चू)
५४	५	(चपा)	(चूपा)
५५	३	परिच्चमाणे	परिपच्चमाणे
५८	८	०भए	०भए
६७	सू० ८	कुलोहि <sup>१</sup> आयत्ताए	कुलोहि आयत्ताए <sup>२</sup>
६९	पा० १२	(च)	(चू)
७३	सू० ७६	तेहि <sup>१</sup> महावीरेहि	'तेहि महावीरेहिं' <sup>१</sup>
७३	सू० ७७	फारुसियं 'समादियंति	'फारुसियं समादियंति' <sup>४</sup>
७३	७	(च)	(चू)
७४	सू० ६१	हण <sup>३</sup> पाणे	'हण पाणे' <sup>३</sup>
७५	सू० ६६	जणवयंतरेसु <sup>१</sup> वा,	'जणवयंतरेसु वा' <sup>६</sup> ,
७५	पा० ८	आघवितए'	आघवितए'
७६	८	सिज्जा	सिज्जा
७८	२	विवत्तण (शू)	विवत्तूण (शू) ।
		(चिन्तनीय ) ।	
८०	सू० १७	जीवेहिं <sup>५</sup> कम्म-	'जीवेहिं' कम्म-समारंभे
		समारंभेणं	णं <sup>५</sup>
८६	पा० ३	(च)	(चू)
८८	२	२-चूर्णि...	२-परिणं (क, ख, ग, घ, च,
			छ); चूर्णि...
८८	४	प्रतीषु	प्रतिपु

पृष्ठ	पाठान्तर	अशुद्ध	शुद्ध
८६	३	एगाणियं °	एगाणिय °
९९	१२	(च)	(चू)
१०२	श्लो० ६	आसि सु <sup>१</sup> भगवं उट्टाए	'आसिसु भगवं उट्टाए' <sup>१</sup>
१०४	पा० ७	-वृत्तिचूर्ण्य ..	वृत्तिचूर्ण्य ..
१०५	८	(...चू)	(.. च)
१०६	१	दिगिच्छता	दिगिच्छिता

## ४-आचार-चूला पाठान्तर

पृष्ठ	पाठान्तर	अशुद्ध	शुद्ध
११२	पा० ३	थंडिल्लं	थंडिल्लंसि
११२	पा० ६	(अ० दुव्वयंति वृत्तौग्भि)	×
११६	सू० १७	अबहिया <sup>१</sup> णीहड	'अबहिया णीहड' <sup>१</sup>
११७	सू० १९	णितिए <sup>१</sup> पिडे दिज्जइ, णितिए	णितिए पिडे दिज्जइ, णितिए <sup>१</sup>
१२१	१	१८।	१।८।
१२१	८	विलंगयामो	विलुगयामो
१२६	२	(अ,च,क,छ,ब)	(क,छ,ब) ; च (अ) ।
१२८	४	उक्खडि०	उक्खडि०
१४०	१	उक्किट्टा	उक्किट्टु
१४२	१	दुहेज्जा	दु हेज्जा
१५३	६	वेत्तग	वेत्तग
१६०	सू० १३०	'से णेवं वयतं' <sup>४</sup>	'से णेव' <sup>४</sup> वयतं
१६७		४	१
१७०	पा० १		१-एसितए से (अ,व) ।
१८३	१	° तिणिता	° तिणिता
१९६	१	विद्दुणिय २	विद्दुणिय २
२१२	२	पाडिववेया (क) ; पडि °	पाडिववेया (क) ; पाडि °
२३०	सू० २५	थूले ति <sup>२</sup>	थुल्ले <sup>२</sup> ति
२३१	पा० ३	फलिह	फलिह °

८

आयारो तह आयार-चूल

पृष्ठ	पाठान्तर	अशुद्ध	शुद्ध
२३२	सू० ३६	से भिक्खु...सुणेज्जा <sup>४</sup>	से भिक्खु...सुणेज्जा <sup>४</sup>
२३४	पा० १	जुवव	जुववं
२३८	पा० ५	ज्झाणि (अ,क,च,व,वृ)	×
२६५	सू० ४७	वण- <sup>५</sup>	'वा ण' <sup>५</sup>
२७६	सू० २४	सुत्तं	सुत्तं
२७६	पा० २	णा सुत्तं.....	×
२८०	पा० १	-लंहसुण	लंहसुण
२८१	१	० णारं	० णाई
३०१	१	( )	(अ)
३०२	२	गवा स	गवाणीसु
३११	३	वण-	वण-
३१७	२	मिल्लं ०	मिल्लं ०
३२१	सू० ३७	संठवेज्ज <sup>१</sup>	संठवेज्ज <sup>१</sup>

## ५-परिशिष्ट-२

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	६	१।६०	१।६७
५	२१	वासमावं	वासमाणं
६	३	१३।३३-३८	१३।३-३८
१०	१४	२।४	२।२४

## आयारो शब्द-सूची

[ प्रथम संख्या अभ्ययन और पहली खड़ी पाई के बाद की संख्या सूत्र-क्रमाङ्क का संसूचन करती है । जैसे—अइअच्च ६।३८ अर्थात् अभ्ययन ६ सूत्र-क्रमाङ्क ३८ ।

जहाँ पहली खड़ी पाई के अनन्तर संख्या हो और दूसरी खड़ी पाई के बाद भी संख्या हो, वहाँ सर्वप्रथम संख्या को अभ्ययन, दूसरी संख्या को उद्देशक तथा तीसरी संख्या को श्लोक-क्रमाङ्क समझना चाहिए । जैसे—अइवत्तई ६।१।८ अर्थात् अभ्ययन ६ उद्देशक १ श्लोक ८ । ]

ॐ

अइअच्च	६।३८	अंतर	२।११, ६।२।१२	अकरणया	६।१।१७
अइरित्त	२।४६	अंतरद्धा	ना।८।६	अकरणिज्ज	१।१७५;
अइवत्त		अंतराइय	६।३४		५।५५
-अइवत्तई	६।१।८	अंतसो	ना।८।१६ ;	अकसाइ	६।४।१५
अइवातिय	६।१।१७		६।१।५	अकस्मात्	ना।७
अइवाय		अतिय	१।३, २४,	अकाम	५।४४
-अइवाएज्ज	२।१००		४७, ७८, १०७,	अकाल	२।३, ४०
अइय	४।१		१३४, १५८ ;	अकुक्कुय	६।४।१४
अंगुलि	१।२८		५।१।१३ ६।७७ ,	अकुत्तोमय	१।३७ ,
अजु	३।५, १५ ;	अघ	ना।३		३।८१
	४।२८ ,		१।२७, ५०, ८१,	अकुच्च	६।१।१८
	५।१०२, ६।१।७		११०, १३७,	अकुच्चमाण	ना।३४
अंड	ना।१०६, १२६	अघत्त	१६१ , ६।६	अक्कंदकारि	६।२६
अंड्य	१।११८	अविल	२।५४	अक्कुड्ड	६।४१
अंत	३।२३, ५८	अकड	५।१२६	अक्खा	
अतो	२।१२६, १३० ;	अकड	२।१५, १४३	-अक्खाड	६।२
	५।३, ४ ; ना।५	अकम्म	२।३७	अक्खाय	१।१ ,
			३।१८, ५।११६		६।८ : ६।१।१६
		अकरण	ना।२२, ५७		



अखेयन्न	२।७२	अच्च	अट्ट (आर्त)	१।१३ ;	
अगंथ	ना३४	-अच्छेद्	२।१२,	२।१३८,	
अगणि	१।७२, ७५,	१६६ ; ५।१२१	४।१३, ५।१८ ;		
	८०, ८४, ८८, ८९	अच्चा	१।१४० ;	६।१८, ६५	
अगणिकाय	ना४१, ४२	४।२८; ना१०५,	अट्ट (अर्थ)	१।१४० ;	
अगरिह	ना८।१४	१२५ ; ६।१।११	२।२६, ६६, ८५,		
अगार	१।६८,	अच्छ	३।४४, ६० ;		
	२।६८, ८४ ; ५।५८	-अच्छेद्	६।४।४	५।१ ; ना२१, २२,	
अगारत्थ	६।१।६	अच्छायण	२।२	२४ ; ना८।१५, २५	
अगिलाण	ना७६	अच्छि	१।२८ ;	अट्ट (अष्टन्)	६।४।५
अगुत्त	१।६७	६।१।२०	अट्टम	६।४।७	
अग्ग	३।३४	अच्छेज्ज	ना२१-२४	अट्टालोभी	२।३, ४०
अग्गह	३।६१	अजाण	५।६५	अट्ठि	१।१४०
अग्घाय	६।७६	अजिण	१।१४०	अट्ठिभिजा	१।१४०
अचल	६।१०६ ;	अज्ज	३।२६, ५०	अणद्ववत्तिय	६।१०२
	ना८।१४ ; ६।३।१२	अज्जविय	६।१०२	अणगार	१।१७, २४,
अचिट्ठ	४।१८	अज्जावेयव्व	४।१, २०,	३४, ४०, ४७, ५४,	
		२२, २३, ५।१०१	७१, ७८, ६२, १००,		
अचित्त	ना८।२१	अज्मत्थ	१।१४७,	१०७, १२७, १३४,	
अचित्तमंत	५।३१	५।३६, ना८।५	१५१, १५८, २।३६,		
अचिर	ना८।२०	अज्मत्थिय	५।३६	१०६, ११३, १४७,	
अचेयण	ना८।१५	अज्मप्प	५।८७	५।३७, ६।३६,	
अचेल	६।४०, ६०,	अज्मोववण्ण	१।१७३ ;	६।१।४, २२,	
	६१, ६२ ; ना५३, ७१,		६।७६	६।२।१३, ६।३।७	
	६३, १११, ११२	अज्मोववन्न	६।२६	अणट्ट	१।१४०, ५।१
अचेलय	६।१।४	अमंम	५।४४	अगणुगच्छमाण	५।६४
		अमोसयंत	६।७६	अणण	३।४५

अण्णदसि	२।१७३	अणारिय	४।२१	अणुगिद्ध	६।१।२०
अण्णपरम	३।५६	अणासव	४।१२	अणुगघायण	२।१८१
अण्णाराम	२।१७३	अणासाएमाण	८।१०१	अणुचिण्ण	८।१०७, १२७
अणतिवाएमाण	६।७३, ८।३३	अणासादमाण	६।१०५	अणुचिन्न	५।७१
अणत्तपन्न	६।५	अणासाय		अणुजाण	
अणमिक्कत	२।२३, ४।४५	-अणासादए	६।१०५	-अणुजाणड	३।४६
अणमिभूत	५।११०	अणासेवणया	५।१२	-अणुजाणित्था	६।४।८
अणममाण	६।६७	अणासेवणा	५।८६; ८।२४, ४२	अणुट्टाड	२।११०; ८।३६
अणवक्खमाण	६।७३, ८।३३	अणाहार	८।८।८, १३	अणुट्टाण	६।७४
अणवयमाण	५।२६	अणिच्चय	१।११३	अणुट्ठिय	४।३, ६।१०२
अणहियासेमाण	६।३२	अणितिय	५।२६	अणुदिसा	१।१, ३, ४, ८
अणाइय	८।५	अणिदाण	४।३८	अणुवम्मिय	६।१।१२
अणाउट्ठि	६।१।१६	अणियट्टगामि	४।४२	अणुपरियट्ट	
अणागम	४।१६	अणियाण	८।१६	-अणुपरियट्टइ	२।७४, १८६
अणागमण	६।४७	अणिरय	८।५	-अणुपरियट्टंति	५।१८
अणाढायमाण	८।२	अणिसट्ठ	८।२१-२४	अणुपरियट्टमाण	
अणादियमाण	२।१७५	अणिह	४।३२, ३३, ५।४४, ६।१०६		२।५६, १२६
अणाणा	१।६७, २।२६, ३२, १६६; ५।१०६; ६।६१	अणु	५।३१	अणुप्रविसित्ता	
अणातीत	८।१०७, १२७	अणुक्कंत	६।१।२३, ६।२।१६; ६।३।१४; ६।४।१७		८।१०६, १२६
अणारंभजीवि	५।१६	अणुगच्छ		अणुपस्सि	२।५३, ३।३०, ६०
अणारद्ध	२।१८३	-अणुगच्छति	५।६४	अणुपाल	
		अणगच्छमाण	५।६४	-अणुपालए	८।८।५, १६
				-अणुपालिया	१।३५

अणुपुन्व ६।२५, ३२, ७५, ७६ ; ८।२७, १०५, १२५, ८।८।१	अणेगरूव १०१, १०६, १२८, १३६, १५२, १६०, २।५५, ६।७,	अतिअच्च ६।१०; ६।१६ अतारिस ६।२७ अतिदुक्ख ६।२।१४ अतिवट्ट ५।११४ -अतिवट्टेज्जा ५।११४
अणुपुन्वसो ६।८	६।२।७, ६	अतिवय ६।२३ -अतिवाएज्ज ६।२३
अणुपुन्वी ८।८।२	अणेलिस ६२, ८।२६;	अतिवाय ६।१।१६
अणुवट्ठिय ४।३	८।८।१, १७ ;	अतिविज्ज ३।२८, ३३, ४।३६
अणुव्यमाण ६।८०, ६१ ; ८।३	अणोमदंमि ३।४८	अतिवेल ८।८।८
अणुवरय ४।३, ५।१८	अणोवन्निय ४।३	अतिहि २।४१, ६।४।११
अणुवसु ६।३०	अणोहंत २।७१	अतीत ३।५६, ६० अतीरंगम २।७१
अणुवास -अणुवासिज्जासि ५।३८	अण १।३, १८, २१, २६, ३२, ४१, ४४, ४६, ६३, ७२, ७५, ८०, ८८, १०१, १०४, १०६, ११६, १२८, १३१, १३६, १४३, १५२, १६०, १६८; २।४६, ३।४३ ; ६।१०४, ८।१८, २०, २४	अत्त १।३८, ६५, ३।६४, ६।१०४ अत्तत्त ६।२५ अत्तसमाहिय ४।३३ अत्थ (अर्थ) १।२५, ४८, ७६, १०८, १३५, १५८, २।२
अणुवीह १।५५, ४।२७, ६।१०३, १०४		
अणुवेहमाण ५।६७		
अणुसचर -अणुसचरइ १।४, ८		
अणुसवेयग ५।१०३		
अणुसोय -अणुसोयति २।७६		
अणुस्सिय ५।४३	अण्णत्थ ५।४१	
अणेग १।५३	अण्णयर २।१५०	
अणेगचित्त ३।४२	अण्णयरी १।१, ३	
अणेगरूव १।८, १८, २६, ४१, ४६, ७२, ८०, ८२,	अण्णहा २।११८, ५।५० अण्णाण ५।१७ अत्तह ६।४३, ८६	अत्थ (अन्न) ४।२०, २२, २३ अदत्तहार २।६८, ८४

अदविय	६।६७	अन्नयर	६।४४, ६२,	अपरिणाय	१।६१, ८६,
अदिन्न	८।४		८।११२		१४१, १६६
अदिन्नादाण	१।५७	अन्नहा	५।१३४	अपरिणायकम्म	१।८
अदिस्समाण	२।१०६,	अन्नेस		अपरिन्नाय	२।१३६
	३।२३, ५८	-अन्नेसि	१।१४८,	अपरिमाण	६।३३
अदु	६।३।१०		१७६, ५।५६	अपरिस्सव	४।१२
अदुवा	१।५७, ५८,	अन्नेसि	२।१८१, ५।२१	अपरिहीण	२।२५, २६
	२।४५, ४।१३ ;	अपज्जवसित	८।५	अपलिउचमाण	८।४७,
	६।८, ४२ ;	अपडिण्ण	६।१।२०,		६६, ८६
	८।५१-५३,		६।२।१५, १६	अपलोयमाण	६।३६
	७०, ७१, ६३ ;	अपडिण्णत्त	८।७६	आरगम	२।७१
	६।२।८, ६।३।१०	अपडिन्न	२।११० ;	अपास	५।६५
अदिज्जमाण	५।५८		८।३६,	अपि	१।२७
अद्ध (अध्वन्)	६।१।२२		६।२।६, ११ ;	अपिवित्ता	६।४।६
अद्ध (अर्ध)	६।४।५		६।३।६, १२,	अपुट्ट	६।४।१
अवुव	५।२६, ८।५		१४, ६।४।६,	अपुट्ठा (अपृण्ड्वा)	८।२५
अन्न (अन्य)	१।४४, ६३,		७, १४, १७	अप्य (आत्मन्)	२।१०४,
	१५५, १६८,	अपडिभाणि	६।१।२१		१३५, ३।३२ ;
	१७७, ४।८,	अपय	५।१३८		८।८।६, १८, ६।२।५
	५।११३, ८।७५,	अपरिग्गह	२।३१	अप्य (अल्प)	२।४,
	११६, ११७,	अपरिग्गहमाण	८।३३		६५, ८१ ;
	११६, ६।१।१५,	अपरिग्गहावन्ती	५।३६		५।३१ ;
	१६, ६।४।८, १०	अपरिजाणय	५।३		८।१०६, १२६ ;
अन्न (अन्न)	८।११६,	अपरिणिब्बाण	१।१२२,		८।८।७, ६।१।२० ;
	११७, ११६		४।२६		६।३।४
अन्नगिलाय	६।४।६	अपरिण्णात	१।३०, ३१,	अप्पग	८।८।२१
अन्नतर	८।१११, ८।८।२५		११४ ; ५।६	अप्पडिन्न	६।१।२३
अन्नमन्न	३।५४				

अप्पत्तिट्टाण	५।१२५	अन्माइक्ख	अमिनिवट्ट
अप्पत्त	६।३।६	-अन्माइक्खइ १।३८,	-अमिनिवट्टेज्जा
अप्पत्तिय	६।४।१२	६५	३।८४
अप्पपुण्ण	६।१।८	-अन्माइक्खेज्जा १।३८,	अमिनिव्वुड ८।१०५,
अप्पमत्त	१।६७,	६५	१२५
३।११, १६, ७५ ;	अन्मंगण	६।४।२	अमिन्नाय ६।४४,
५।११ ; ५।३७,	अमय	१।६१	६।१।१३
६।२।४	अमिकंख	८।७६,	अमिपत्थ
अप्पमाद	२।६४	१२०, १२१	-अमिपत्थए ५।१०३
अप्पमाय	५।७४	अमिबंख	अमिभास
अप्पाण	१।१७५,	-अमिकंखेज्जा ८।८।४	-अमिभासिषु ६।१।७
२।११७।१३३,	अमिक्कंत	२।५	-अमिभासे ६।१।८
३।५५,	अमिक्कम		अमिभूय १।६७,
४।३२, ३३ ;	-अमिक्कमे ८।८।१४		५।११०,
५।५५, ७५,	अमिक्कममाण	५।७७	६।२।१०
६३, १०३,	अमिगाह		अमिहज्ज ६।१।३
८।५७, ६७	-अमिगाहइ २।३६		अमिवायमाण ६।१।८
अप्पाहार	८।८।३	अमिजाण	अमिसजात ६।२५
अप्पिय	२।६३	-अमिजाणइ २।६३,	अमिसंबुद्ध ६।२५
अक्ख	६।१७, ८।७।	३।६, १०; ५।१७	अमिसंभूत ६।२५
अबहिमाण	५।१११	अमिजुजियाणं २।६५	अमिसंवुद्ध ६।२५
अबहिलेस्स	६।१०६	अमिणिकखत ६।२५	अमिसमण्णागय ६।६४,
अबहुवाइ	६।२।१०,	अमिणिगिज्ज ३।६४	८।७३,
६।४।३	अमिणिव्वट्ट ६।२५		७६, ६५,
अबुज्जमाण	२।५६	अमिणिव्वुड ६।४।१६	११४, १२३
अबोहि १।२२, ४५, ७६,	अमिताव ६।४।४		अमिसमन्नागय ३।४,
१०५, १३२, १५६	अमिनिक्खत ६।२५		८।५५, ६६, १०३

अभिसमागम् १।४।१६	अरय	५।५४	अवकर	
अभिसमेच्चा १।३७,	अरहंत	४।१	-अवकिरिसु १।३।११	
३।८१,	अरिह		अवचडय १।११३,	
४।१२;	-अरिहण	३।४२	५।२६	
६।६५, ६८;	अरिह	५।४६	अवबुग्ग	
८।५६, ७४, ८०,	अरुवि	५।१३७	-अवबुग्गति २।८६	
६६, १००, १०४,	अलं	२।८, १७, २१,	अवमारिय ६।८	
११५, १२४		७७, ६५, ६७,	अवयट्ठि ६।११३,	
१।३।७		६८; ३।३२	८।१०५, १२५	
अभिसेय ६।२५		६।२०, २१,	अवर ३।५६;	
अभिहह ८।२१-		८।५७, ७५	५।४४, ८।८।१२	
२४, ७५	अलद्ध	१।३।८	अवलं	
अभोच्चा १।१।११	अलद्धय	१।४।१३	-अवलवण ८।८।१८	
अममायमाण २।१।१०,	अलाम	२।१।१५	अवलदिया १।१।२२	
८।३६	अलोम	२।३६	अवसक्क	
अमराय	अलोय	३।७०	-अवसक्केज्जा २।१।१७	
-अमरायड् २।१।३७	अल्लीणगुत्त	५।१।१६	अवसीयमाण ६।५	
अमाडल्ल १।४।१६	अवकख		अवहर	
अमाया १।३४	-अवकखति २।३८,		-अवहरति २।६८, ८४	
अमुच्छिय ८।८।२५,	५।१।२०		अवि १।६	
१।४।१५	-अवकखन्ति १।१।४६;		अविकंपमाण ४।३४	
अमुणि ३।१	२।६१, ३।७८		अविजाण (अविजानत्)	
अम्ह १।१	अवक्कम		४।४५;	
अरड २।२७, ३।७, ६१;	-अवक्कमेज्जा		५।५, ११, ३३	
१।२।१०	८।१०६, १२६		अविजाणय (अविजायक)	
अरत्त ३।४७	अवक्कमेत्ता		१।१३	
अरति २।१६०; ६।७०	८।१०६, १२६		अविज्जा ५।१८	

अवितिण्ण	६।३४	-असी	६।८७	असण	२८, २९, ७५,
अविमण	२।१६० ,	-अहेसि	६।३।६		१०१, ११६-
	४।४१	-आसी	१।२ ;		१२१ ; ६।१।२०
अवियत्त	५।६२		६।२।४, ५, ७ ;	असत्त	५।२८
अवियाण (अविजानत्)			६।४।३, १६ ;	असत्थ	१।६६ ;
	१।१२०		६।३।१२, १६		३।१७, ८२
अविरत	६।६७	-मो	१।१७, ४०, ६८,	असमंजस	६।८
अवितीयमाण	६।५		६४, ११८, १३६	असमणुन्न	८।१, २८, २९
अविहम्ममाण	६।११३	-संति	१।१५, ५३,	असमणाय	६।६७
अविहिस	६।६३		८४, ११८,	असमारंभमाण	१।३१,
अविहिसमाण	५।२६		१२५, १६४ ;		६२, ८७, ११५,
अव्वाहिय	६।२।११		६।६, १२ ;		१४२, १६७
अव्वोच्छिन्न	४।४५		६।१।१३	असमिय (असमित)	
अस		-सिया	१।१५, १२५ ;		२।७४, १८६
-अत्थि	१।२, ३ ,		२।८८, १५० ;	असमिय (असम्यक्)	
	२।६२, ७३,		३।५४ ,		५।६६
	१५७, १७६,		४।८, ४६ ;	असय	५।७६
	१८५ ; ३।७५,		५।४३ ,	असरण (असरण)	५।१६
	८२, ८७ ;		८।४२ ;	असरण (अस्मरण)	
	४।८, १६, २०,		८।८।१६		६।१।१०, १६
	२२, २३, ४५,	असइं .	२।४६ , ६।१०	असाय	४।२५, २६
	४६, ५३ ;	असजय	२।१८	असासय	१।११३ ,
	५।३०, १३८ ;	असंजोग	४।३		५।२६
	६।३८; ८।५, ६७	असंदीण	६।७२, १०५	असाहु	८।५
-असि	१।१, ३ ;	असंभवंत	६।७६	असिद्धि	८।५
	६।३८; ८।५७,	असण	८।१, २, २१,	असिय	५।६४
	७५, ६७ ; ६।२।१२		२२, २३, २४,	असील	६।८०

अस्साय	१।१२२	अहिय	१४६, १५६ ;	अहो (अघस्)	२।१२५
अह (अघस्)	१।६४, ६५,		३।२	अहोववाइय	४।१७
	२।१७६ ;	अहियास		अहोविहार	२।१०
	४।२०, २२ ,	-अहियासए	५।२८ ,		
	८।१७		६।६६ , ८।२५,	आ	
अह (अथ)	६।८, ३०, ३५,		८।८।१०, १३,	आइ	
	६४ ; ८।८।३ ,		१८, २२ ,	-आइआवए	२।१०७
	६।३।२		६।२।१०, १५ ,	-आइए	२।१०७ ,
अहम्मट्ठि	६।६१		६।३।१, ७		८।५८
अहाइरित्त	८।१२०, १२१	-अहियासेज्जासि		-आइयन्ति	८।४
अहाकड	६।१।१८		६।५८	आइ (आदि)	३।४६ ;
अहाकिट्टिय	८।८१	-अहियासेति	६।६२ ,		५।४८
अहातहा	४।५२ ;		८।११२	आइइत्तु	४।५
	६।३०	अहियासमाण	२।१६१	आइक्ख	
अहापरिगहिय	८।४५,	अहियासित्तए		-आइक्ख	६।२।१
	६४, ८७, १२०, १२१		८।४१, ५७, १११	-आइक्खइ	४।२२
अहापरिज्जन	८।५०,	अहियासिय	६।६६	-आइक्खति	४।१ ;
	६६, ६२	अहिरिमण	६।४५		६।८२
अहायत	८।८।१६	अहुणा	६।१।१		
अहासच्च	४।१५	अहे	१।१, ३, ५।११७ ,	-आइक्खामो	२।२३
अहासुय	६।१।१		६।८७, ६।२।१५ ,	-आइक्खे	६।१०१,
अहिंसमाण	६।४।१२		६।४।१४		८।२६
अहिगाह		अहेचर	८।८।६	-आइक्खेज्जा	६।१०३
-अहिगाहंति	२।३१	अहेसणिज्ज	८।४४, ६३,	आइक्खमाण	६।१०४
अहिन्नाय	६।१।११		८६, १२०, १२१	आइय	८।५८
अहिय	१।२२, ४५, ७६,	अहो (अहन्)	२।३, ४०,	आउ	२।४ ,
	१०५, १३२,		४।११		८।८।६, ११, २५



आजकाय	६।१।१२	आगमेस्स	४।१,३५	-आणवेज्जा	५।८६ ;
आजट्ट		आगम्म	६।१।३		८।२४,४२
-आउट्टे	२।२७	आगयपन्नाण	४।११ ;	आणा	१।३७ ;
आउट्ट	८।५७		६।६७		३।६६,८०,८१ ;
आउट्टि	५।७३	आगर	८।१०६,१२६		४।१२,४५ ;
आउर	१।१४,१२४ ;	आगासगामि	६।१२		५।१०६ ;
	३।११ ; ६।१६	आघा			६।४८,७८
आउस	१।१ ; ८।२२	-आघाइ	४।१३ ;	आणाकखि	४।३२ ;
आउसंत	८।२१,२२,		६।१		५।४४
	४१,७५	आघाय	६।७९ ;	आणुगामिय	८।६१,८४,
आएस	२।१०४		६।१।६		११०,१३०
आकेवलिय	६।३४	आच्छिद		आणुपुव्व	८।१०५,
आगअ	१।१,३	-अच्छे	१।२७,२८,		१२५
आगति	३।५८ ;		५०,५१,८१,	आत	४।५२
	५।१२०		८२,११०,१११,	आति	५।७
आगन्तार	६।२।३		१३७,१३८,१६१,	आतीतट्ट	८।१०७,१२७
आगम	२।६२ ; ४।१६ ;		१६२	आतुर	१।१४ ; ६।३०
	५।११६, ६।६८	आढा		आढाण	२।१०१
आगममाण	६।६३ ,	-आढामि	८।२२	आदाय	३।६७ ;
	८।५४,७२,	आढायमाण	८।१,		६।३५
	७८,६४,६८,		२८,२९	आभिद	
	१०२,११३,१२२	आणंद	३।६१	-अब्भे	१।२७,२८,५०,
आगमित्ता	५।१२	आणक्ख			५१,८१,८२,११०,
आगमिस्स	३।५६,६०	-आणक्खेस्सामि	८।७७		१११,१३७,१३८,
आगमेत्ता	५।८६ ;	आणव			१६१,१६२
	८।२४,४२	-आणविज्जा	५।१२	आमगंभ	२।१०८

आय	१२,४,४१ ; २१२६, ३५२, ५१०४; ६४६६	-आयाणह	८१४,२६	आरंभट्टि	६६१; ८३
		आयाणिज्ज	२१७२,	आरभमाण	११७२
			४४४, ६५१	आरत्त	२१५८
आयक	५१२८, ६८	आयाणीय	१२३,४६,	आरभ	
आयंकदंसि	११४६, ३३३		७७,१०६, १३३,१५७,	-आरभे	२१८३, ५१५३
आयगय	८२३		२१४८	आरभ	२१८३
आयगुत्त	३१६,५६ ; ८२७	आयाय	२१७२	आराम	५१७७, ११६
		आयार	११७१ , ६८२	आरामागार	६२१३
आयतचक्खु	२१२५			आग्निय	२४७, १०६, ११६, ४२२, २४, ५१२२, ४०;
आयतजोग	६४११६	आयारगोयर	८३, २६		८१५, ३२
आयतजोगया	६४१६	आयाव			
आयतण	२६१	-आयावई	६४४४	आरियदसि	२१०६
आयततर	८८१६	-आयावेज्ज	८४२	आरियपण्ण	२१०६
आयत्त	६८	-आयावेत्तए	८४१	आरुसिय	६११३
आयरिय	६१७२	आयावाड	११५	आलीणगुत्त	३६१
आयव	३४	आयावादि	५१०५	आलुप	२३, ४०
आयवज्ज	८८१२	आरंभ	१३०३१, ६१, ६२, ८६, ८७, ११४, ११५, १४१, १४२, १६६, १६७, १७४ ; ४४७, ५६० , ६११२ ; ८८२	आलुप	
आयाए	६३० , ८१०६, १२६			-आलुपह	८२५
आयाण (आदान)				आलोय	
	३१७३, ८६ , ४४५ ; ६३५, ५६ , ६१११६			-आलोयज्जा	८३५
		आरभज	३१३, ४२६	आवती	४२० , ५११, १५, १६, ३१, ३६
आयाण		आरंभजीवी	३३०,	आवक्हा	६११२ , ६११६
-आयाण	६२४		५११५		

आवज्ज	आसम	दा१०६, १२६	इ	
-आवज्जंति १।८४, ८५,	आसव	४।१२, दा८।१०	इ	
१६४, १६५	आसवसविक	५।१७	-एइ	३।१४
आवट्ट १।६३, २।७४,	आसा	२।८६	-एति	३।३१
१८६, ३।६;	आसाएमाण	दा१०१	-एति	१।८; ५।७, ७३
५।१८, १।१८	आसाय		इओ	१।२
आवडिय ५।७२	-आसाएज्जा	६।१०४	इंदिय	दा८।१४, १७
आवस	आसीण	दा८।१७	इच्छ	
-आवसे १।६८	आसुपण्ण	दा९	-इच्छसि	३।६२
आवसत ५।५८	आसेवित्ता	३।४४	इच्छा	४।१६, दा८।२३
आवसह ८।२१, २२,	आहच्च	१।८४, १६४,	इत्तरिय	दा१०६
२३, २४		दा२५	इति	१।१२
आवय	आहट्टु	२।८७,	इत्य	४।२०, २२, २३
-आवातए २।१३३		दा२१, २२, २३	इत्थिया	२।५८
आवील		२४, ७५, ७७,	इत्थी	५।७७, ८४, १३४,
-आवीलए ४।४०		११६, ११७, ११८,		६।१६, १७;
		११९, ६।२।१२		६।२।८
आवेसण ६।२।२	आहड	दा७७, ११६,	इम	१।४, ८
आस		११७, ११८, ११९	इयर	६।५३
-आसिसु ६।२।६	आहर		इयार्णि	१।६९; ६।३३
आसंसा २।४५	-आहरे	५।६९;	इरित	५।५
आसज्ज ३।३२,		दा८।१४	इरिया	दा१२६
६।१।५	आहार	२।११३; ५।८३;	इह	१।१
आसण ६।१।२४;		दा३६, १०५, १२५;	इहं	१।५४
६।२।१, ६।३।२		दा८।३	इहजोइय	६।२।९
आसणग ६।३।२	आहारग	१।११३	इहलोग	५।७१
आसणत्थ ६।४।१४	आहारेमाण	दा१०१		

ई	उड्ड	१११,३,६४,६५ ;	उदीण	४१५२, ६१०१
ईसि	६१२५	२१२५, १७६ ,	उदीरिय	६१६१
		४१२०, २२ ,	उद्व	
		५१८१, ११७,	-उद्वए	११२६, ५२,
		८११७, ६१४१४		८३, ११२,
उक्क	उड्ड (चर)	८१८६		१३६, १६३
-उक्कसिस्सामि	उण्ह	५११३०	उद्वडत्त	२१४२
-उक्कसे	उत्तम	८१२०, ६१२१२	उद्वित्त	२११४
उक्कुड्डय	उत्तर	१११, ३	उद्वेयव्व	४११, २०,
उग्गह	उत्तरवाद	६१४६		२२, २३ ,
उच्चागोय	उत्तालइत्त	२११४		५११०१
उच्चालड्डय	उत्तिग	८१०६, १२६	उद्दा	
	उदय	११४१, ४४, ४६,	-उद्दायंति	११८५, १६५,
उच्चावय		५०, ५१, ६३, ६४ ,		५१७१
उच्छन्न		६११२ ,	उद्देस	२१७३, १८५
उज्जालेत्ताए		८१०६, १२६	उन्नयमाण	५१६४
उज्जालेत्ता	उदयचर	६११२	उपेह	
उज्जुकड	उदरि	६१८	-उपेहाए	६११२१
उट्टाए	उदासीण	६१८८	उप्पड्डय	६१६४
उट्टाय	उदाह		उव्वाहिज्जमाण	५१७८
	-उदाहु	२१६४ ,	उभम	
उट्टिय		५१२८	-उभमे	८१८६
	उदाहर		उभिमय	११११८
	-उदाहरंति	२१७१,	उमय	३१३०
उट्टियवाय		४१३०	उम्मग	३१५० ; ६१६
उट्टुभ	उदाहिय	८११५		
-उट्टुभति	उदाहु	४१२५ , ५१२८		

उम्मुंच	उर्वालय	उवे
-उम्मुंच ३१२६	-उर्वलिपिज्जासि २१४८, १२०	-उवेइ २१६०, ६६ ८५ ; ५१६
उयर ११२८	उववाइय ११२, ४, ११८	-उवेति २११५१
उर ११२८	उववाय ३१४५ ; ६१८ ; ८१३५	-उवेह ४१२७
उराल ६१११०		-उवेहइ ६१६१
उवक्कम ८१८६	उवसंकमत ६१३१६	उवेह
उवगरण २१२	उवसंकमित्तु ८१२१,	-उवेहाहि ५१६७
उवचइय १११०४	२३, ४१	उवेहमाण ३११५ ;
उवचय ८१३६	उवसत ३१३८ ;	४१५२ ,
उवचर ५१७५, ८६,		५१५०, ५२, ६७
-उवचरंति ६१२१७, ८	६१८०	उवेहा ५१६६
-उवचरे ८१८८	उवसंति २११५५	उवेहाए ३१५५ ,
उवट्टिय ३१३६ ; ४१३	उवसग्ग ८११०७, १२७,	५१३२, ११८
उवणीत ६१११४	८१८१२२ ; ६१२१७, ८ ;	उव्वाह
उवणीय १११७३ , ३११० ; ६१२६, ११३	६१३३	-उव्वाहंति ८१४१
	उवसम ४१४० ; ६१३०, ७७, १०२	उसिण ३१७
		उसिय ६१७०
उवदंस २१५६	उवहत २१५६	उ
-उवदंसेज्जा ५११००	उवहाणसुय ६	ऊ ११२८
उवमा ५११३६	उवाइक्कम ८११२	ए
उवरत्त ३११६	उवाइक्कत ८१५०,	एग १११
उवरय ११६२ ; ३१३, ८, ४१, ७२, ८५ ; ४१३, ४७, ५२ ; ५१२०, ६० ; ६१५०	उवाइय २११८ ६६, ६२ २११८ १११७० ४१५३	एगइय ६१६६ एगंत ८११०६ एगचर ६१२१११ एगचरिया ५११७ ; ६१५२
उवलळम ६१७७	उवाहि ३११६, ८७	

एगतर	६।४४ ;	एत्य	-१६६, १६७ ;	ओय	५।१२५ ,
	८।१११		४।२०, २२, २३,		६।१०० ; ८।३५,
एगतिय	५।७१ ;		६।३६, ६।२।१२		३८, १०७, १२७
	६।२।१, ८	एय	१।२४	ओयण	६।४।४
एगत्तगय	६।१।११	एयावन्त	१।६, ११	ओस	८।१०६, १२६
एगदा	६।२।२, ३,	एलिकख	६।३।५	ओह	२।७१ ,
	११, १५ ;	एव	१।१०		५।६१, ६।२७
	६।४।३	एवं	१।१	ओहंतर	२।१६५
एगप्पमुह	५।५४	एस			
एगयर	२।१५० ;	-एसए	८।८।५, १७	क	१।२
	६।६२, ८।११२	-एसति	६।२।१३	कओ	४।८, ४६
एगया	२।६, ७, १६,	-एसित्था	६।४।१२	कख	
	१६, २०, ६७, ६८,	-एसे	६।४।६	कखेज्ज	६।११३
	७५, ७६, ८३, ८४ ,	एसणा	४।७ ६।५३,	कखा	५।६२
	५।७१, ६६ ; ६।२।६ ;		६।४।१०	कंचण	२।१०० ;
	६।३।८, ११ ;	एसिया	६।४।६		५।५३ , ६।२३
	६।४।५, ६, ७	एहा	६।२।१४	कंद	
एगसाड	८।५२, ७०			-कदति	२।१३६
एगागि	८।६७	ओ		-कदिमु	६।१।५ ;
एगायतण	५।३०	ओबुज्जमाण	६।१		६।३।१०
एज	१।१४५	ओमचेलिय	८।४८, ६७, ६०	कंडूय	
एताव	५।१३६			कंडूयये	६।१।२०
एत्य	१।३०, ३१,	ओमाण	६।१।१६	कंव	६।१।२२
	६०, ६१, ६२, ८६,	ओमोदरिय	६।४।१	कवल	२।११२ ; ६।३१,
	८७, ६२, ११४,	ओमोयरिय	५।८०		८।१, २, २१, २२,
	११५, १४१, १४२,	ओमोयरिया	६।४०		२३, २४, २८, २६

कक्खड	५११३०	कम्म	२१६६, ८५, १०४,	-करिस्सामि	११६० ;
कज्ज	२१४२, ४६		१४६, १५५, १६३,		२११५, १४३ ;
कट्ठ	५१११; ६१६८		१७२; ३१६, १६,		६१६३
कट्ठ	११८४; ४१३३		२०, २१, ३६, ४१,	करेइ	२११३५, १४४ ;
कड	२११३४ ;		४८, ५४; ४१८,		३१५४
	६१४१६		३१, ३८, ५१; ५१६,	-करेति	३१३१
कडासण	२१११२		१६, १८, २८, ५१,	-करेति	३१२८, ३३
कडि	११२८		५५, ५६, ७१ ;	-कारवे	२११४६
कडिबंधण	८११११		८११६, १७, ३४ ;	-कारवेसु	११६
कडुय	५११२६		६१११४, १५, १८	-कारित्था	६१४१८
कण	११२८	कम्मकर	२११०४	-कारेइ	२११४६
कत्थ		कम्मकरी	२११०४	कुज्जा	२११४६ ;
-कत्थइ	२११७४	कम्मावह	६१११७		५१८०, ८१, २,
कप्प		कम्मावाइ	११५		२८, २६, ७६,
-कप्पइ	११५८ ;	कय (क्रय)	२११०६	करण	१०६, १२०
	८१७५	कय (कृत)	५१७३	करय	८१७६, १२०
-कप्पति	२११५० ,	कयकिरिय	५१८७	कलह	११६
	८१४१, १११	कयवर	११८४	कलुण	५१८६
-कप्पे	६१४१२	कयाइ	३१५६	कलुण	६१७
		कर		कल्लाण	८१५
उप्पिय	६१११४	-अकरिस्सं	११६	कवाल	६१३१०
उब्बड	८११०६, १२६	-अकासी	११६६ ;	कव्वड	८११०६, १२६
म्म	११७, ११, १२, १८,		६१४१८	कस	
	२६, ३३, ४१, ४६,	-कज्जइ	२११८, १०५	-कसेहि	४१३२
	७२, ८०, ८६, १०१,	-कज्जति	२१४३, १०४	कसाइय	६१२१२
	१०६, १२८, १३६,	-करए	११६२	कसाय	५११२६ ;
	१५२, १६०, १७५ ;	-करिस्सति	५१७६		८११०५, १२५ ,
					८१८१३

कसाय		कालपरियाय	दा५६,	कुंभारायतण	दा२१, २३
-कसाइत्था	६।२।११		दा२, १०८	कुक्कुर	६।३।३, ४ ;
कहं	५।६४	कासंकस	२।१३४		६।४।११
कहा	६।१।१०	काहिय	५।८७	कुचर	६।२।७
कहिंवि	दा२१, २३	किच्चा	दा१०५, १२५ ;	कुज्झ	
काउ	५।१३१		दा८।३	कुज्झो	२।५१
काणत्त	२।५४	किट्ट		कुणिय	६।८
काणिय	६।८	-किट्टति	५।७४ ; ६।३	कुप्प	
काम	२।३१, ३६, ७४, १२१, १८६ ; ३।१६, ३१ ; ५।३ ; ६।१६, ३३, ३४, ७६, १०६ ; दा८।२३	-किट्टे	६।१०१	-कुप्पंति	५।६३
		किड्डा	२।६	-कुप्पिज्जा	२।१०२
		किण		कुम्म	६।६
		-किणावण	२।१०६	कुम्मास	६।४।४, १३
		-किणे	२।१०६	कुल	६।७, ८, २५, ५३
कामकामि	२।१२३	किणंत	२।१०६	कुव्व	
काय	५।७१ ; ६।११३ ; दा१८, १६, ४१, १०७, १२६, १२७ ; दा८।१५, २१ ; ६।१।३, ६।३।७, ११	किण्ह	५।१२७	-कुव्वह	३।४०
		किरिया	६।१।१६	-कुव्वित्था	६।४।१५
		किरियावाइ	१।५	कुव्वमाण	१।३४
		किलेस		कुसग्ग	५।५
		-किलेसंति	६।१३, ५७	कुसल	२।४८, ६५, १२०, १२१, १८२ ; ४।३०, ५।४७, ६७, १०८
कायर	६।६५	किवण	२।४१		
कारण	३।५४ ; ६।८४	किस्स	६।६७	कुसील	६।३०
काल	२।३, ४०, ६२, ११०, ४।१६, ५।६२, ११३ ; दा३६, १३८ ; दा८।११, २५	कीय	दा२१, २२, २३, २४	कूर	२।६६, ८५ ; ४।१८ ; ५।६
		कीरत	६।४।८	केआवंती	४।२० ; ५।१, १५, १६, ३१, ३६
		कीरमाण	दा७६, १२१	केयण	३।४२
कालकलि	३।३८	कुट्त	२।५४		
कालण	२।११० ; दा३६	कुंडल	२।५८		
		कुंत	६।३।१०		



कोढि	दान	खिप्य	दानाद्	गद्विय	११२५, ४८, ७६
कोलावास	दाना१७	खुज्जत्त	२१५४		१०८, १३५, १५६
कोविय	५१८	खुज्जिय	दान		२१२, ६६, ८२, १२६;
कोह	३१४६, ७१, ८४ ;	खुड्डय	३१५७		४१४५ ; ६१०६ ;
	४३४, ५१७ ;	खेड	८१०६, १२६		६१११०
	६१११	खेत्त	२१५७	गति	३१५८ ; ५१६६, १२०
कोहदसि	३१८३	खेयन्न	११६६; २१११०,	गब्भ	३११४, ३१, ८४ ;
			१८१; ३१६, १७,		५१७, ४८
ख			४१२ ; ५१२५ ;	गब्भदसि	३१८३
खेच	११२८		८३५, ३६	गमण	८१७५
खण	२१२४१२८, ५१२१	खेम	दानाद्	गमित्तए	२१७१
खण				गय	१११४६
खणह	८१२५	वा		गरु	५११३०
खणण	८३६	गइय	६१६६	गल	११२८
खणयन्न	२१११०	गंड	११२८	गहाय	६१३५
खम	८१६१, ८४,	गंडि	दान	गहीअ	४११६
	११०, १२८	गंय	११२४, ४७, ७८,	गाम	६१६६; ८११४, १०६,
खल			१०७, १३४, १५८,		१२६, ८१८७;
खलईसु	६१३१२		३१५०, ६१०६ ;		६१२३, ६१३१ ;
खलु	११८	गंघ	८१२५ ; ८१८११		६१४६
खवग	३१६०		३१४, ५१३६ ;		६१४६ ;
खाइम	८११, २, २१, २२,	गच्छ	६१२१६	गामंतर	६१६६ ;
	२३, २४, २८, २६,	गच्छइ	६१११०	गामतिय	६१३६
	७५, १०१, ११६, ११७,	गच्छंति	६११७	गामकंटय	६१३७
	११८, ११९, १२०, १२१	गच्छति	६११७, १६	गामधम्म	५१७८, ८१४१ ;
खिस		गच्छेज्जा	३१५७ ;		६१४३
खिसए	२११०२		४१६ ; ५१६६	गामपिडोलम	६१४११

गामरक्ख	६१२८	गुण	११६३, २११, ५१७१	चय	११११३ ; ५१२६
गामाणुगाम	५१६२, ८२	गुणट्टि	११६८, २१२	चय	- - - -
गामिय	६१२८	गुणासाय	११६८, ५१५८	-अवाइ	६१३०
गाय	८१४१, ८१८१, ६१	गुत्त	५१६०	-चए	५१८४
	६११२०, ६१४१२	गुत्ति	८११०	-चयति	४१२७; ६१७
गाहावइ	८१२४, ४१	गुप्फ	११२८	-चयाहि	६१२६
गाहावति	८१२१, २२, २३, ७५	गुरु	५१३	चयण	६१८
		गेहि	६१३७, ६१४१५	चर	
गाहिय	५११२४	गोमय	११८४	-अचारी	६१३२
गिज्झ		गोयर	६१८२; ८१२७	-चर	३१४५
-गिज्झे	२१५०	गोयावादि	२१५०	-चरे	२१६१, ३१६१, ४१७, ६१३५;
गिद्ध	३१३१, ५११३, ६१७६				६११२१
		घ			
गिम्ह	८१५०, ६६, ६२, ६१४४	घाण	२१४, २५	-चरेज्ज	३१५०
		घायमाण	६१६१, ८१३	चरिया	६१२११
गिरिगुहा	८१२१, २३	घास	६१४६, १०, १२	चल	६११०६
गिला		घोर	४१४६, ६१	चवण	३१४५, ८१३५
-गिलाइ	२११६७			चाइ	३१७, ६११४
-गिलाएज्जा	८१८३	च		चाय	
-गिलामि	८११०५, १२५	च	११६	-चाइए	६१२०१५
गिलाण	८१७६	चइत्ता	६१३०	-चाएति	६१४११
गिलायत	८१८१४	चउ	६११३	-चाएमि	८११११
गिलासिणी	६१८	चउत्थ	८१४३	चिच्चा	६१४६
गिह	६१६६	चउप्पय	२१६५	चिट्ठ	
गिहतर	६१६६, ८१७५	चउरंस	५११२६	-चिट्ठइ	२१६६, ७२
गीत	६११६	चंकमिया	६१२६	-चिट्ठति	६१४१०
गीवा	११२८	चक्खु	२१४, ६११५	-चिट्ठति	२१८२, ५१८६

-चिट्ठे	नाना१६,२०	छण		जंघा	१११२
-चिट्ठेज्ज	ना२१,२३	-छणावण	३।४६	जंतु	६।१५
चिट्ठं(दे)	४।१८; नाना२०	-छणे	३।४६; नाना६	जग्ग	
चित्त	२।३,४० ; ६।६	छणंत	३।४६	-जग्गावती	६।२।५
चित्तणिवाति	५।६६	छाया	६।४।३	जण	
चित्तमंत	५।३१ ;	छिद		-जणयंति	२।६
	६।१।१३	-अच्छे	१।२७,२८,५०,	जण	२।३५,६१,८६ ;
चित्तमंतय	१।११३		५१,८१,८२,११०,		५।७६,
चिरराडं	६।६६		१११,१३७,१३८,		६।६३,६५,६६,
चिररात	६।७०		१६१,१६२	जणग	६।२।६,२७
चुथ	१।२ ; ५।४८	-छिदह	ना२५	जणवय	३।४३ ; ६।६६
चेच्चाण	ना१०७,१२७	-छिदेज्ज	३।४६	जणवयान्तर	६।६६
चेत		छिज्ज		जत्त	१।६७
-चेएइ	ना२३,२४	-छिज्जड	३।५८	जम्म	३।८४
-चेएसि	ना२२	छिन्न	१।११३	जम्मदंसि	३।८३
-चेतेमि	ना२१	छिन्नकहकह	ना१०७,	जय	३।३८; ४।४१,५२;
चोर	२।४१		१२७		५।६६,७५
छ		छिन्नपुव्व	६।३।११	जयमाण	४।११; ५।४४;
छ	२।१५०	छुछुकार			६।३६; ६।१।२१;
छजमत्थ	६।४।१५	-छुछुकारंति	६।३।४		६।२।४
छंद	१।१७३; २।८६ ;	छेत्त	२।१४,१४२; ना४०	जर	
	५।२५ ; ६।२६	छेत्ता	२।१११	-जरेहि	४।३२
छज्जीवणिकाय	१।१७७,	छेय	५।१०	जरा	३।१०
	१७८			जराज्य	१।११८
छट्ठ	६।४।७	ज		जहा	१।३४; ४।३३
छण	२।१८०,१८४ ;	ज	१।३	जहा	
	३।२१ ; ५।४६	जओ	नाना१८	-जहाति	२।१५६



जुद्ध	५४६	ठ	णच्चाणं	६४५	
जुन्न	४३३	ठा	णट्ट	६११६	
जूर		-ठाइज्जा	५५१	णममाण	६५३, ६७
-जूरति	२१२४	-ठावण	५५२१	णय	२१७७
जोग	५१२६, ६११६	ठाण	२१७२, ५५१ ;	णयर	६४६
जोणि	११७ ; २१५५ ;		५५१०, १६, १६, २०	णर	३१० , ५६४ ;
	६११४	ठिय	५६६, ६४११		६११, १०६
जोवण	२१२	ठियण	६१०६	णरग	२६२
				णरय	१२४, ४७, ७५, १३४
ड					
डज्झ		डज्झ	णस्स		
डंका	३६६	-डज्झ	२१६५, ५४ ;	-णस्सति	२१६५, ५४
डा			३१५५	णह	१२५
-डाड	६११५	डस		णाइ	२४१; ४७, ६६३
-डाति	६११६, ७ ;	-डसतु	१३७, ६३४	णाण	४५२;
	६१२४, १२ ;	डाह	२५५		६२, २६, ५२
	६४१४, १५			णाणि	३४५, ४१३, १६;
-डायड	६४१४	ण			६१११६
डाइ	६४३	ण	११३७	णात	१२, ४, २४
डाण	६४१४	णदि	२१६२, ३३२, ४७	णाति	२१०४
किमिय	६५	णगर	५१०६, १२६ ;	णाभि	१२५
			६१२३	णाम	६२५, ६१
डोस		णगिण	६४७	णाय (जात)	१४७, ७५, १०७, १३४, १५५
-डोसेति	३४१	णच्चा	३१३, २५, ३३, ४५, ४२६ ;	णाय (न्याय)	२१७०
डोसमाण	५१२०, ६५०		५३४, ६५, १६,	णाय (नाग)	६३५
डोसित	५६५		५३५ ; ५५१, २५ ;	णायपुत्त	५५१२ ;
डोसिय	५४१		६११२, १५, १६		६१११०
डोसेमाण	५५२				

णायसुय	६१११०	णिद्ध	५११३०	णिवार	
णालिया	६१३५	णिब्बलासय	५१७६	-णिवारेड	६१३४
णास	११२८	णिमंत		णिविज्ज	
णिइय	४१२	-णिमतेज्ज	८१२	-णिविज्जति	२११०१
णिकरण	११६०; २११५३	-णिमतेज्जा	८११, २६;	-णिविज्जे	५१६४
णिकमदंसि	३१३४ ,		८१८२४	णिविट्ठ	४११६
	४१५०	णियग	२१७, १६, २०, ७६	णिव्वाण	६१०२
णिकखंत	११३५; ६१८५;	णियट्ठ		णिच्चिद्व	२११६२; ३१४७
	६११११	-णियट्ठति	२१२६ ;	णिव्वुड	४१३८
णिकखम्म	५१११६,		५११२२; ६१८४	णिव्वुय	८११६
	६१७६, ६१२१६, १५	णियट्ठमाण	६१८२	णिव्वेय	४१६
णिक्वित्त	४१२७, ६१३	णियम	२१५६	णिसन्न	३१४८
णिक्विव		णियय	२१७६	णिसम्म	६१७६
-णिक्विवे	४१५	णिय्याग	११३४	णिसामिया	५१४०
णिगम	८१०६, १२६	णियाणओ	६१७	णिसिद्ध	३१८६
णिचय	३१३१, ४११६	णियाय	५१४४	णिसीय	
णिज्जरापेहि	८१८५	णिरय	११२४, ४७, ७५,	-णिसीएज्ज	८१२१, २३
णिज्जा			१०७, १५८; ३१४६,	-णिसिएज्जा	८१८१६
			८१५	णित्सार	३१४५
-णिज्जाइ	४१५१	णिरामगघ	२११०८	णित्सिय	११८४
णिज्झाइत्ता	१११२१	णिरुद्धाउय	४१३४	णित्सेयस	८१६१, ८४,
णिज्झोसडत्ता	३१६० ,	णिरोघ	८१८१६		११०, १३०
	६१५६	णिवज्ज		णिह	२१७४, १८६
णिट्ठियट्ठ	६१६८	-णिवज्जेज्जा	८१८१३	णिहण	
णिट्ठियट्ठि	५१११६	णिवतित	५१५; ६१४१०	-णिहेज्ज	५१४१
णिडाल	११२८	णिवय		-णिहणमु	६१२१२
णिद्दा	६१२५	-णिवतिसु	६१३३		
णिहेस	५१११४	णिव्राय	६१२१३		

णिहा	तत्थ १।९, १४, १६, ४२,	तसत्त	६।१।१४
-णिहे २।११६; ४।५	७३, १०२, १२६,	तस्सन्नी	५।६८, १०६
णिहाय	५३४	१५३; २।५८ ;	तहा ४।४
णीयागोय	२।४६	६।२८	तहागय ३।६०
णील	५।१२७	तद्दिट्ठिय ५।६८, १०६	ताण २।८, १७, २१, ७७
णीसंक	५।६५	तन्निवेसण ५।६८, १०६	तारिसय ५।४३
णेत २।२५; ४।४५	तप्पुरक्कार ५।६८, १०६	तालु १।२८	ति ८।१५, ४३; ६।४।५
णो १।२, ५७; २।११;	तम ४।४५, ६।६	तिउट्ठ	८।८।२
८।८।४	तम्मुत्तिय ५।१०६	-तिउट्ठति	८।८।२
ण्हारुणी १।१४०	तम्मोत्तिय ५।६८	तिण्ण	५।६१ ;
	तर		८।१०७, १२७
त्त	-तरए ६।२७	तितिकख	
त	-तरति ३।६६	-तितिकखए ५।३७ ;	
तद्वय ८।६२	-तरे ५।६१	८।८।३	
तओ २।६, १६, ६७, ७५ ;	तरित्तए २।७१	तितिकखमाण ६।४४	
५।३	तव २।५६; ६।२१, ६४;	तितिकखा ८।८।२५	
तंजहा १।१, ३, ११८ ;	८।२१, ५५, ७३, ७६,	तित्त ५।१२६	
२।४, ५४, १०४	६५, ६६, १०३, ११४,	तिन्न २।१६५; ६।६६	
	१२३	तिप्प	
तंस ५।१२६	तवस्सि ८।५८	-तिप्पति २।१२४	
तक्क ५।१२३	तस १।११८	तिप्पमाण ८।८।१०	
तक्किय ८।२६	तस	तिरिक्ख २।६२	
तच्च ४।४	-तसंति १।१२३	तिरिच्छ २।१३३	
तण १।८४, ६।६१ ;	तसकाय १।१२८, १३१,	तिरिय १।६४, ६५ ;	
८।१०६, १११, ११२,	१३६, १४३, १४४;	२।१२५, १७६ ;	
१२६; ८।८।७, ६।३।१	६।१।१२	३।८४; ४।२०, २२;	
ततो २।८३	तसजीव ६।१।१४		

तिरियं ५।११७; ना१७,	थावर	६।१।१४	-अदकलू	६।१।१०, १७,
६।१।५, २१,	थावरत्त	६।१।१४		१८
६।४।१४	थी	२।६०	दक्खिण	१।३
तिरिय-दंसि ३।८३	थूल	५।३१	दग	ना१०६, १२६
तिविह २।६५, ८१	थोव	२।१०२	दट्ठं	४।५१, ५।७५
तिहा ८।८।१२			दढ	२।६१, ६।३६
तीत ३।५६	द्व		दम	२।५६
तीर २।७१	दइय	६।७३	दय	
तुच्छ २।१७४	दंड १।६८; २।४२, ४६;		-दयड	८।३८
तुच्छय २।१६७	४।३, २७, ५।८५,		दया	६।१०१, ८।३८
तुट्ट ६।११२	६।३, ८।१८, १६,		दलय	
तुयट्ट	२०, ३४, ६।१।८,		-दलडस्सामि	८।११६,
-तुयट्टेज्ज ८।२१, २३	६।३।७, १०			११७, ११८, ११९
-तुयट्टेज्जा ८।८।८	दंडजुद्ध ६।१।६		-दलएज्जा	८।७५
तुला १।१४८	दंडभी ८।२०		दविय १।१४६, ३।७०,	
तुसिणिय ६।२।१२	दंत (दन्त) १।२८, १४०;		४।४४; ६।६६, ६७,	
तेइच्छ २।१४१	६।४।२		८।८।११, ६।२।१५,	
तेइच्छा ६।४।१	दंत (दान्त) ३।५०,		६।४।१३	
तेउ ६।६१; ८।१११,	६।६३		दसम	६।४।७
११२, ६।३।१	दंस ६।६७, ८।१११,		दसमाण	६।३०४
तेलकाय ६।१।१२	११२, ६।३।१		दह	
	दसण ३।७२, ८५,		-दहह	८।२५
थ	५।६७, १०८, ६।१।११		दा	
थडिल ८।८।७, १३	दसणलूसि ६।८२		-देति	२।१०२
थण १।२८	दक्ख		दाढा	१।१४०
थण	-अदकलू २।१०६,		दायाय	२ ६८, ८४
-थणति ६।७	५।१७, २०, ११०		दान्ण	४।४६



दास	२।१०४	दुख	१।१०, २०, ४३,	दुग्धि	६।५५, ६।२।६
दासी	२।१०४		७४, १०३, १२२,	दुग्धमय	४।२२
दाह	२।६८		१३०, १५४; २।२२,	दुरणुचर	४।४२
दाहिण	१।१; ४।५२;		६३, ६६, ७४, ७८,	दुरतिक्रम	२।१२१;
	६।१०१; ८।१०१		८५, ९२, १५१, १७१		५।६५
दिगिच्छता	६।४।१०		१८६; ३।२, ६, १३,	दुरभिगंध	५।१२८
दिट्ट	१।६७; ४।६, ६, २०		६४, ६६, ७७, ८४;	दुरहियास	
दिट्ठपह	२।१५७		४।२५, २६, २६, ३०,	-दुरहियासए	६।३२
दिट्ठभय	३।३७		३५, ५।६, २४, २५;	दुल्लह	४।४६
दिट्ठिम	६।१०७		६।१५, १८	दुवालसम	६।४।७
दिया	६।७५, ७६	दुखदंसि	३।८३	दुविह	८।८।२; ६।१।१६
दियापोय	६।७४	दुखसह	६।३।१२	दुव्वसु	२।१६६
दिवा	६।२।४	दुखसह	६।३।१२	दुव्विन्नाय	४।२२
दिव्व	८।८।२४	दुक्खि	२।७४, १८६	दुस्संबोह	१।१३
दिसा	१।१, ३, ४, ८,	दुगंछणा	१।१४५	दुस्सुय	४।२२
	१२३; २।१७६,	दुगंछमाण	२।३६	दुहओ	२।१११; ३।६८;
	४।२०, २२; ८।१७	दुच्चर	६।३।२		८।४०, ८।८।४
दिस्स		दुच्चरग	६।३।५	दुइज्ज	
-दिस्सति	२।५६	दुज्जात	५।६२	-दुइज्जेज्जा	५।८२
दीण	६।६४	दुज्झोसिय	५।४१	दुइज्जमाण	५।६२
दीव	६।७२, १०५	दुत्तितिकखा	६।१।६	दूर	५।३, ४
दीह	५।१२६	दुदिट्ठ	४।२२	दूरालइय	३।६३
दीहराय	५।३७	दुन्निक्खत	६।८५	देव	२।४१
दीहलोगसत्थ	१।६६	दुपय	२।६५	देह	८।३६;
दु	६।१।११, ६।४।६	दुप्पडिलेहिय	४।२२		८।८।१०, २।१, २२
दुक्कड	८।५	दुप्पडिवूहण	२।१२२	देहंतर	२।१३०
		दुप्परक्कंत	५।६२	दो	३।२३, ५८, ८।६२

दोणमुह	८१०६,१२६	धुण		नाम	५१०१
दोस	३१८४, ४१२०, २२,	-धुणाइ	४१४४	निकाय	४१२५
	२३, ५११७	-धुणे	२१६३, ४३२,	निक्खम्म	२१३७
दोमदसि	३१=३		५१५६	निग्गय	३१७
		ध्व	६	निघाय	६१३१७
ध्व		ध्व	८२,५	निप्पील	
धम्म	२१६३,६६;३११०,	धुवचारि	२१६१	-निप्पीलिए	४१४०
	६७, ४१२,५, ५११७,	धूयवाद	६१२४	निमत	
	२६,४०, ६१३०,३५,	धूया	२१२,१०४	-निमतेज्जा	८१२८
	४८,५६,७२,६०,६१,	धोय		नियग	२११६
	१०३,१०४,१०७,	-धोएज्जा	८१४६,६५,	नियच्छ	
	८१२,६,८,१४,२६,		८८	-नियच्छति	३१६०
	३२,८१, ८१८२,१२,	धोय	८१४६,६५,८८	निया	
	२०, ६१११२			-नियाड	२११११,
धम्मय	११११३	न्त			८१४०
धम्मव	३१४	नगर	६१६६	निरय	३१८३
धम्मविउ	३१५	नगरतर	६१६६	निरयदंसि	३१८३
धम्मविदु	४१२८	नक्का	१११४६	निरालंबणया	५१११०
धम्मि	६१४७	नड	५११७	निरुवट्टाण	५११०६
धाति	२११०४	नर	४१२८, ६१८६	निवाय	६१२१३
धार		नरा	३१८४	निव्विन्नचारि	५१५४
-धारेज्जा	८१४५,४६,	नह	१११४०	निसामिया	८१३१
	६४,६५,८७,८८	नाणव	३१४	निस्सिय	११५३
धारित्तए	८११११	नाणा	४११६	नूम	८१८२४
धिति	३१४०	नाणि	३१५६	नो	१११
धोर	२१११,८६; ३१३४,	नाम		प्प	
	६१५८, ८१२५, ८१८१	-नामे	३१७६	पअ	२११८०, ४१२२

पइण्णा	दा७७	पगाम	६।२।५	पडिघाय	१।१०, २०,
पंडित	२।१४१	पगार	दा७५		७४, १०३, १५४
पंडिय	२।२४, ५१, १३१, ४।३२, ५।४०, ४४, ६।७३, ६८, दा३१, दादा६	पग्गह	दादा२०	पडिच्छादण	दा११२
		पग्गहियतरग	दादा११	पडिणगत	दा७६
		पच		पडिणिक्खमित्तु	६।३।६
पंत	२।१६४; ५।६०, ६।३।२	-पचह	दा२५	पडिपुन्न	५।८६
		पच्चक्खा		पडिबुज्झ	
पंय	दा२, ६।१।२१	-पच्चक्खाएज्जा	दा१२६	-पडिबुज्झ	दादा२४
पथणिज्जाति	५।६६	पच्चत्थियम	१।१, ३	पडिबुद्धजीवि	५।१०२
पंसु	६।३।११	पच्चास		पडिमोय	
पकप्प		-पच्चासि	२।१३२	-पडिमोयए	२।१२८, १७८
-पकप्पयति	४।१६	पच्छन्न	६।६		
-पकप्पेति	४।१०, ६।८६	पच्छा	२।७, १६, २०, ७६, ४।४६; ५।२६, ८५	पडियक्क	दा१७
पकर		पच्छाणिवाड	५।४२	पडियाइक्ख	
-पकरेति	१।१७४	पज्जवजाय	३।१७	-पडियाइक्खे	दा२२; ६।१।१५
पकुब्ब		पज्जालेतए	दा४१		
-पकुब्बइ	६।१८	पज्जालेता	दा४२	पडिलेह	
-पकुब्बति	२।१५२	पट्टण	दा१०६, १२६	-पडिलेह	२।५२, ३।२७
पकुब्बमाण	२।६६, ८५, ५।६	पडिक्कूल	२।६३	-पडिलेहंति	२।३२
पक्खालण	६।४।२	पडिक्कम		-पडिलेहाए	२।१३१; दा२७
पक्खि	६।२।७	-पडिक्कमे	दादा१५		
पगथ	६।४२, ८६	पडिक्कममाण	५।७०	पडिलेहाए	२।३८, १५३, ३।२०, ५४; ५।१२, ८६, १२०; दा४२
पगड	३।३६	पडिग्गह	२।११२, ६।३१, दा१, २, २१, २२, २३, २४, २८, २६	पडिलेहिता	१।१२१; दादा२०
पगप्प	दा७६				
पगवम					
-पगवमति	५।५१	पडिघाय	१।४३, १३०		

पडिलेहिय	३।२२,	पडुप्पन्न	४।१	पन्नाणमत	४।४७ ;
	६।१०६, १२६	पणग	८।१०६, १२६,		५।६०; ६।३, ०६
पडिलेहिया	८।८।७		६।१।१२	पप्प	२।७२
पडिलेहे	६।१।१३	पणय	१।३६, ६।३७,	पवुद्ध	५।६०
पडिवण	१।३४		६।३।१२	पमंगुर	६।१७; ८।३६
पडिवन्न	४।१३, २६,	पणियसाला	६।२।२	पमिइ	६।३५
	८।५०, ६६, ६२;	पणीय	४।१६	पभु	५।११०
	६।१।२२	पणुन्न	५।५	पभूयदसि	५।७५
पडिवयमाण	६।६४	पण	८।८।२२	पभूयपरिन्नाण	५।७५
पडिवूहणया	२।१३६	पणव			
पडिसख		-पणवेति	४।१	पमज्ज	
-पडिसंखाए	५।१०४	पणगाण	२।२५, ६।७७	-पमज्जए	८।८।६
पडिसंजल		पत्त	१।८४, ४।१३	-पमज्जिया	६।१।२०
-पडिसजलिज्जामि		पत्तेय	१।१२१, २।२२,	पमज्जिय	८।१०६, १२६
	४।३६		७८, ४।२५,	पमत्त	१।६८, ६८,
			५।२४, ५२		२।२, १३; ३।७५,
पडिसवेद		पत्तेरस	६।२।४		४।११, १४, ५।३७, ५८
-पडिसवेदयति	४।१७	पत्य		पमत्य	
-पडिसवेदेह	१।८,	-पत्यए	८।८।४	-पमत्यति	४।३३
	२।५५	पदिस	१।१२३	पमाइ	३।१४
-पडिसवेदेति	६।१०	पदेसिय	६।७२	पमाद	
पडिसेव		पन्नव			
-पडिसेवे	६।४।५	-पन्नवेमो	४।२३	-पमादेति	३।६८
पडिसेवमाण	६।३।१३	-पन्नवेह	४।२२	पमाय	१।६६; २।५५, ६५,
पडिसेहिअ	२।१०२	पन्नवेमाण	८।६		५।१७, ६।४।१५
पडोण	४।५२; ६।१०१	पन्नाण	१।१७५, २।२६,	पमाय	
पडोयार	८।८।१२		३।५, ५।५५, ६।७७;	-पमाए	३।५६
पडुच्च	५।१०४		८।५७	-पमायए	२।११, ५।२३

पमुचं		परक्कममाण	६११६ ;	-परिचिट्ठिमु	४५२
-पमुचचइ	३३६		६१४१५	परिचच्चज्ज	३६१
-पमुचवेति	३१५	परट्ठ	६१४६	परिच्छादण	८१११
पमुक्ख		परम	३१२८, ३३, ५१७७,	परिज्ञाण	
-पमोक्खसि	३१६, ६४		८८८२५	-परिज्ञाणामि	८१२२
पमोक्ख	२११८१; ५३६	परमन्नक्खु	५३४	परिज्ञाण	५१६
पय	५११३८	परमदंसि	३३८	परिज्ञाणियन्व	११७, ११
पयणुय	६१६७; ८१०५,	परलोइय	६१२६	परिजुण्ण	११३, ६१६०
	१२५; ८८८३	परवागरण	५११३३ ,	परिजुन्न	८१६२
पया	३१४७, ५११८, ५४		८१२४	परिट्ठव	
पयाव		परिकम्म		-परिट्ठवेज्जा	८१५०,
-पयावेज्ज	८१४२	-परिक्कमे	८८८१६		६६, ६२
-पयावेत्तए	८१४१	परिकह		परिट्ठवेत्ता	८१५०, ६६,
पर	११३, २१६६, ८५;	-परिकहिज्जइ	२११३६;		६२
	३१७८, ८२, ६१०४,		४१६	परिणम	
	८११, २, २८, २६,	परिकिल्ल	८८८१६	-परिणमिज्जा	२११०२
	४२, ७५, ६१११६;	परिणिज्झ	२१५८, ६५	परिणिज्जमाण	५११३
	६१३१६	परिणिंलायमाण	८१३७	परिणिब्बाए	१११२१
परक्कम		परिग्गह	२१११०, ११७;	परिणिब्बुड	६११०७
-परक्कमे	६११२२,		३१४३; ६१६३; ८१३६	परिण	५११३५
	६१४१२	परिग्गहावती	५१३१,	परिण्णन्नारि	२११७६
-परक्कमेज्ज	८१२१, २३		८१३३	परिण्णा	११६, १६, ४२,
-परक्कमेज्जासि		परिघासेउं	८१३३		७३, १०२, १२६, १५३;
	२११५६; ३१२५;	परिघेतन्व	४११, २०,		२११५४, १७१
	४१११, ५१११६;		२२, २३; ५११०१	परिण्णाए	६१६८; ६१४१२
	६१६८	परिचिट्ठ		परिण्णाण	२१४
परक्कमंत	६१२६, ६१ ;	-परिचिट्ठति	४११८		
	८१११२				

परिण्णात १।३१, ३३ ;	परिताव	परिवय (परि+वद्)
५।६	-परितावए ६।१६	-परिवएज्जा २।७, ७६
परिण्णाय (परिजात)	-परितावेति १।१४,	-परिवयंति २।७६
१।१२, ३१, ३३, ६२,	१२४	परियाय ५।२७, १०५,
६४, ६६, ८७, ८९,	परिताव ४।४६	६।५१
१।१५, १।१७, १।४२,	परितावेयव्व ४।१,	परिवज्ज ५।८७
१।४४, १।५३, १।५४,	५।१०१	-परिवज्जए ५।८७
१।६२, १।६७, १।६९,	परिवेवमाण ६।२६	परिवज्जिया ६।१।१३
१।७८, ३।२४, ५०,	परिन्ना ४।३०	परिवज्जियाण ६।१।१६
५८, ८।१८, २० ;	परिन्नाय २।६१, ३।५०,	परिवय (परि+वज्)
६।१।१७	४।३१, ५।७३	-परिव्वए २।१०८,
परिण्णाय (परिजाय)	परिन्नाविवेग ५।४७	३।११, ३८, ६१,
१।३२, ६३, ८८, १।१६,	परिपच्चमाण ५।१६	५।३७, १।१६ ;
१।४३, १।६८, १।७७,	परिपाग ६।८	६।४४, ५।४, १०६
२।४६, १०८, १।३२,	परिमडल ५।१२६	-परिव्वयंति ५।६२
१।५८, १।७२, १।८४,	परियट्ठण २।२	परिवहित्तए ८।१०५,
३।२४, ५०, ५८ ;	परियाव २।२, ३।४३	१२५
५।४३, ५१, १।१६,	परियावेयव्व ४।२०,	परिवित्त
१२०, ६।३७, ५१ ;	२२, २३	-परिवित्तसेज्जा ६।११०
६।१।६	परियाण ३।५	-परिवित्तसति ६।१११
परिण्णातकम्म १।३३, ६४	-परियाणड ३।५	परिवुसित ८।४३, ६२,
परिण्णायकम्म १।१२,	परियावज्ज ८५, १।११	८५, १।११
८६, १।१७, १।४४,	-परियावज्जति १।८५,	परिवुसिय ६।४०, ६०
१।६६, १।७८	१।६५	परिवेवमाण ८।४१
परितप्प	परिवदण १।१०, २०,	परिस्सह ८।३६, १०७,
-परितप्पति २।१२४	४३, ७४, १०३,	१२७
परितप्पमाण २।३, ४०	१३०, १।५४, ३।६८	परिस्सव ४।१२

परिहर	पवंच	३/७०	पवेदित	१।४२, १०२ ;
-परिहरंति	२।०२	पवयमाण	१।१७, ४०,	२।१७१; ५।२२, २५,
-परिहरेज्जा	२।२०,	७१, १००, १२७, १५१;	४०, ४४; ५।७८ ;	
११८	२।१४१; ५।१७		६।११, ६५; ८।६,	
परिहरंत	६।४।१२	पवा	६।२।२१	१४, २८, ३२, ५६,
परिहा	पवाय	५।११२	७४, ८०, ९६, १००,	
-परिहिस्सामि	६।६०	पवाय	११५, १२४	
परिहायमाण	२।४	-पवायति	६।२।१३	पवेथ
परीसह	६।३२; ८।८।२१,	पविस	-पवेयंति	६।२।१३
२२; ६।३।११		-पविसिस्सामो	६।२।१४	पवेसिया
परुव		पविसे	६।४।६	६।१।१
-परुवेति	४।१	पवील		पव्वइय
-परुवेमो	४।२३	पवीलए	४।४०	१।१४; २।६०,
-परुवेह	४।२२	पवुच्च		१५३
पलालपंज	६।२।२	-पवुच्चइ	१।६२ ;	पसंसिअ
पलास	६।६	२।१५४, १७०; ४।४		१६८, १७८
पलिय	४।२७; ५।१७;	-पवुच्चति	१।६८,	पसार
६।४२, ८६		११६; २।३६		-पसारए
पलिद्धिदय	४।५०	-पवुच्चति	५।४६	८।८।१५
पलिद्धिदियाणं	३।३४	पवेइय	१।६, १९, ५६, ७३,	पसारित्तु
पलिद्धिन्न	४।४५	१२६, १५३, २।४७,		६।१।२२
पलिमोक्ख	५।१८	७०, ११३, ११६,		५।७०
पलियंतकर	३।७२, ८५	१७१, ४।२, १२ ;		पस्स
पलियट्ठाण	६।२।२	५।६५; ८।२६, १०४		६।६४
पलीव	५।६६	पवेद		-पस्स
पलेमाण	४।१०; ८।२	-पवेदइस्सामि	६।२४	पहाय
पलेह		-पवेदए	६।१०२	६।१।७
-पलेहि	६।३।६			पहु
				१।१४५
				पहेण
				२।१०४
				पा
				-पाएज्ज
				८।२
				-पाएज्जा
				८।१, २८, २६

पाईण	१।६४, ६५; ४।५२, ६।१०१	पाणि	३।५०	पावाद्युय	४।२५
पाउ	ना०।१७	पामिच्च	ना०११, २२,	पास	
पाउं	१।५८	पाय (पाद)	१।२८, ५१,	-पास	१।१४, १६, ३६, ५५, ७०, ६६, १२४,
पाउड	२।३०, ८६		८२, १११, १३८, १६२		१२६, १५०, २।६७,
पाउण		पाय (पात्र)	ना०४३, ६२,		६६ ; ३।१२, ५२;
-पाउणिस्सामि	६।६०		८५, ६।१।१६		४।११, २७, ३७,
पाण (प्राण)	१।१५, १८, २६, ४१, ४६, ५३, ७२, ८०, ८४, १०१, १०६, ११८, १२२, १२३, १२५, १२८, १३६, १५२, १६०, १६४, २।६३, १५३,	पायए	ना०७५		५।३७, ६०, ६।८,
	३।११, ५०, ४।१, २०, २२, २३, २६, ५।६८, ७१;	पायपुच्छण	२।११२, ६।३१, ना०१, २, २१		१४, २०, २२, ६६
६।६, १२, १३, ५७, ६१, १०३, १०४, १०५, ना०३, २१ से २४, ३४, १०६, १२६, ना०७, ६, १०, ६।१।३, ६।२।७ ६।३।७		पायरास	२।१०४	-पासति	१।६४, २।३७, १३० ; ५।५, ११६
		पार	२।३४, ७१	-पासह	४।४८, ५।१३, २६, ६१, ६।५,
		पारंगम	६।११३		६७, १०८; ना०३७
		पारग	ना०।२	-पासहा	५।५७, ११७
		पारगामि	२।३५	-पासिम	३।७०
		पारय	ना०।११, २५, ६।१।२, ६।३।८	-पासे	३।२६, ४६
		पाव	१।१७५, २।४४, १४६ ३।१३, २८, ३३, ३६, ४१, ४८, ५४, ४।३८, ५।१६, २८, ५५, ८७, ना०५, ९१, १६, ३४	पास (पार्श्व)	१।२८
				पास (पाण)	३।२६
				पास (पण्यत्)	ना०
				पासग	२।७३, १८५, ३।७२, ८५, ८७, ४।५३
				पासणिय	५।८७
पाण (पान)	ना०१, २, २१ से २४, २८, २९, ७५, १०१, ११६ से १२१, १२६, ६।१।२०	पावग	६।१।१५, १८; ६।४।८	पासमाण	१।६४
		पावय	६।६६	पासय	२।११८
		पावाड्य	४।३०	पामिय	३।११, ४५; ५।६६



पिड	६।६३	पुट्ट (स्पृष्ट)	६।५८, ८४, ६६;	पुरत्थिम	१।१, ३
पिड	६।४।१३		८।२५, ५७, ७५;	पुरा	४।४६
पिच्छ	१।१४०		८।८।८, १३,	पुराण	६।४।१३
पिट्ठ	१।२८		६।३।६; ६।४।१	पुरिस	१।८; २।१२३,
पिट्ठओ	६।१।२१	पुट्ट (पृष्ट)	६।१।७		१३४, १७७, ३।४२
पिट्ठ		पुट्टा (पृष्ट्वा)	८।२५		६२, ६४, ६५; ४।४४;
-पिट्ठति	२।१२४	पुढवि	१।१८, २१, २६,		५।३४, १३४; ६।२।८
पितां	६।६३		३२, ३३, ८४,		
पित्त	१।१४०		६।१।१२	पुलाग	६।४।१३
पिय (पितु)	२।२	पुढो	१।१४, १५, १६, ३६,	पुन्व	४।४०; ५।४४,
पिय (प्रिय)	२।५७, ६४		५६, ५६, ७०, ६६,		६।३०, ६६, ८।७५;
पियजीवि	२।६३		१२४ से १२६,		८।८।२०; ६।३।६, ८
पियाजय	२।६३		१५०; २।५७,	पुन्वं	१।६६; ३।५६;
पिह			१०४, १३०, १५२;		४।२५, ५।२६, ८५
-पिहिस्सामि	६।१।२		३।७६, ४।१२, १६,	पुन्वि	२।७, १६, २०, ७६
पिहिय	६।१।११,		२०, ३६; ५।२५;	पुन्वुट्ठाइ	५।४२
	६।२।१४		६।१।१४	पूति	२।१३०
पीढसणि	६।८	पुण	१।३; २।७४, १८२,	पूयण	१।१०, २०, ४३, ७४,
पीह			१८६; ३।१४, ३१;		१०३, १३०, १५४
-पीहए	२।४६		४।२३, ६।८५,		३।६०
पुच्छ	१।१४०		८।५०, ६६, ६२, ६।२।६	पूरइत्तए	३।४२
पुच्छ		पुणो	१।६८; २।२, ३,	पेच्च	२।४१
-पुच्छिमु	६।२।११		३३, ४०, १३४,	पेच्चा	१।२
-पुच्छिस्सामो	४।२५		४।१०; ५।८, १४;	पेज्ज	३।८४
पुट्ट (स्पृष्ट)	१।८४, १६४,	पुण्ण	६।८६	पेज्जदंसि	३।८३
	२।२६; ३।६६;	पुत्त	२।२, १०४	पेय	५।२६
	५।२६, २८;	पुरतो	६।४।११	पेसल	६।१०६

पेह		फास	५।१४, २६, २८,	वहिया	२।१४७, ३।५२,
-पेहाए	२।१३८;		८५, १३६,		६२; ४।११, २७,
	६।१।२१		६।८, १०, ४३, ४८,		५।३७
पेहमाण	६।२।११,		५८, ६१, ६२, ६६;	वहु	२।११६, ३।३६, ७६;
	६।४।७		८।२५, ४१, ५७, १११,		५।१७, ३१, ६५, ६।१५,
			११२, ८।८।१८,		१८, १६, ६।१।३, ५;
पेहा	२।२३, ८।२३		६।२।१०, ६।३।१		
पेहाए	२।५, ११, ४३,	फास			६।३।३, १०
	१३८, ६।४।१०	-फासे	४।३६	वहुग	२।६५, =१
पेहि	६।१।२१	फुस		वहुमाड	२।१३४
पोयय	१।११८	-फुसति	५।२८	वहुसो	६।१।२३, ६।२।१६,
पोरिसी	६।१।५		६।८, ६१, ६६;		६।३।४, ६।४।१७
पोस			८।२५, ११२	बाल	१।१४०, २।६०,
-पोसेति	२।१६	फसिय	५।५		६६, ७४, ८५, १४५,
-पोसेज्जा	२।१६	व			१४६, १८६, ३।३२;
फ		वघ	२।१८१; ४।४६,		४।४५; ५।५, ६, १६,
फरिस	१।१६४		५।३६		४८, ६।१८, ८६, ६१,
फरस	६।७६, ८८,	वघण	४।४५		६।१।१४, १५
	६।१।६, ६।३।१३	बंभचेर	४।४४, ५।३५,	बालभाव	५।१००
फरसासि	६।३।५		६।३०, ७८	बालया	५।११, ६।८१
फरसिया	३।७	वभव	३।४	बाहा	६।६७
फल	६।३।१०	वक्-कस	६।४।१३	बाहि	२।१२६
फलग	६।११३.	वज्जओ	५।४५	बाहिरग	४।५०
	८।१०५, १२५	वद्ध	२।१२८, १।७८, १।८२	बाहु	१।२८, ६।१।२८
फारसिय	६।७७	बल	२।४१	बिज्य	३।४४
फास	१।८. २।४, २५,	बलण्ण	२।११०, ८।३६	बिनिय	५।११; ६।८१
	५५, १६१, ३।४,	बहि	८।८।५. ६।२।६	वीय	८।१०६, १२८.
	४।१७, ३६,	बहिरस्त	२।५४		६।१।६२

બુદ્ધ્ય ૫૧૬૩; ૬૧૨૧

વૃદ્ધિ ૧૧૧૧૩

વૃદ્ધ ૪૧૪૭; ૬૧૧૧;

નારન, નાનાર

વૂ

-આહંસુ ૬૧૩૧૪

-આહુ ૪૧૨૬, ૫૧૧૮

-બૂયા ૪૧૨૬; ૫૧૬૭,

નાર૧, ૪૧;

૬૧૧૨૩, ૬૧૩૧૪

-વેમિ ૧૧૧૨, ૨૭, ૩૩,

૩૪, ૩૮, ૫૦, ૫૩,

૬૪, ૬૫, ૮૧, ૮૪,

૮૬, ૧૧૦, ૧૧૩,

૧૧૭, ૧૧૮, ૧૨૨,

૧૩૭, ૧૪૦, ૧૪૪,

૧૬૪, ૧૬૬, ૧૭૮,

૨૧૨૬, ૪૮, ૭૪,

૧૦૩, ૧૨૦, ૧૪૦,

૧૪૭, ૧૫૮, ૧૬૫,

૧૮૬,

૩૧૨૫, ૫૦, ૭૦, ૮૭,

૪૧૧૧, ૧૫, ૨૬,

૩૬, ૪૫, ૫૩,

૫૧૧૨, ૧૮,

૩૦, ૩૫, ૩૮, ૪૧,

૬૧, ૮૬, ૮૮, ૮૯,

૯૨, ૧૦૫, ૧૧૬,

-વેમિ

૧૩૬, ૬૬, ૨૬,

૫૮, ૬૬, ૭૫, ૯૨,

૯૮, ૧૧૨, ૧૧૩,

૮૧, ૨, ૧૦, ૨૦, ૨૪,

૨૮, ૨૬, ૪૨, ૬૧,

૮૪, ૧૧૦, ૧૩૦,

નાનાર૫, ૬૧૧૨૩;

૬૧૨૧૬; ૬૧૪૧૭

૨૧૨

૬૧૭

મહાળી

મજગ

મગવ

૧૧૧, ૬, ૧૬, ૨૪,

૪૨, ૪૭, ૭૪, ૭૮,

૧૦૨, ૧૦૭, ૧૩૦,

૧૩૪, ૧૫૩, ૧૫૮,

૨૧૧૧૩, ૬૧૬૫, ૭૩,

નાના, ૫૬, ૭૪, ૮૦,

૬૬, ૧૦૦, ૧૦૪,

૧૧૫, ૧૨૪;

૬૧૧૧, ૪, ૧૫, ૧૮, ૨૩,

૬૧૨૧૫, ૬, ૧૫, ૧૬,

૬૧૩૧૭, ૧૨, ૧૩, ૧૪,

૬૧૪૧૩, ૫, ૬, ૧૨,

૧૬, ૧૭

૪૧

૨૧૨

૬૧૮૨

૬૧૩૧૩

મમુહ

મય

મવ

-મવહ

૧૧૧, ૪, ૧૩૪,

૧૫૮, ૨૧૬૫ ૬૭, ૮૧,

૪૧૧૭, ૬૧૬૦,

૬૬, ૧૦૫, નાના, ૫,

૬૭, ૬૬, ૧૦૩

-મવંતિ

૧૧૭, ૧૧૧, ૧૨,

૩૦, ૩૧, ૩૩, ૬૧,

૬૨, ૬૪, ૮૬, ૮૭,

૮૬, ૧૧૪, ૧૧૫,

૧૧૭, ૧૪૧, ૧૪૨,

૧૪૪, ૧૬૬, ૧૬૭,

૧૬૬, ૧૭૮, ૩૧૪,

૫૧૮૬, ૬૧૨, ૬૭,

૬૫, ૬૬, ૧૧૧; નાર

-મવંતિ

૧૧૨, ૨૪, ૪૭,

૭૮, ૧૦૭; ૨૧૮૩;

૫૧૬, ૧૭, ૩૨, ૪૧,

૬૨, ૬૮; ૬૧૬૪,

૮૫, નાર, ૮, ૪૩,

૫૫, ૫૭, ૬૨, ૭૫,

૭૬, ૬૫, ૧૦૫,

૧૧૧, ૧૧૪, ૧૧૬

સે ૧૧૬, ૧૨૩, ૧૨૫

-મવિસ્તામિ

૧૧૨, ૬

મગવંત

મજ્જા

મહુ

મત્ત

		भुज		न	
-भविस्सामो	२।३१	-भुजति	ना८६	मड	५।१२४
-भवे	५।४४	-भुजह	ना२१	मइम	१।६१, २।१३२;
भाग	२।१२५	-भुजित्या	६।१।८, १६		३।१२, २५, ६।१।२३
भाय	२।२	-भुजे	६।४।६, ७	मइमंत	ना८।१
भावण	२।११०	भुजिय	ना२	मईम	ना१४, ६।२।१६,
भास		भुज्जो	५।६५, ६।६१,		६।३।१४, ६।४।१७
-भासति	३।५६, ४।१		ना११२, ६।३।५	मउ	५।१३०
-भासह	४।२२	भूत	३।२७; ४।१	मता	१।६१; ३।१२
-भासामो	४।२३	भूय	१।१२२, २।५२,	मंथु	६।४।४
भासिय	५।४७		४।२०, २२, २३, २६;	मद	१।१२०, २।३०,
भिक्षायरिया	ना७५		६।१०३ से १०५,		५।५, ११, ६।८।१;
भिक्षु	२।११०,		ना२१ से २४		६।४।१२
	५।६२, ६।६०, ७०,	भेउर	२।६६, ५।२६,	मस	१।१४०, ४।८३,
	१०३, १०४, ना२१		ना१०७, १२७-		६।६७, ना८।६,
	से २५, ३६, ४१ से		ना८।२३		६।३।११
	४३, ५७, ६२, ६८,	भेत्त	२।१४, १।४२		
	७६, ८५, ९१, १०१,	भेद	६।३३	मक्कड	ना१०६, १२६
	१०५, १११, ११६	भेय	६।११३, ना८।२२	मग	२।४७, ११६; ४।४२
	से ११६, १२५,	भेख	६।५६; ना१०७,		५।२२, ३०; ६।३
	ना८।३, ६।२।१२		१२७	मन्चिय	२।१२७, ३।२६
भिक्षुणी	ना१०१	भो	१।५४, २।६१,		४।५०
भिज्ज			४।२५	मन्नु	३।१०-४।१६
-भिज्जड	३।५८	भोग	२।७६	मज्ज	
भित्ति	६।१।५	भोत्तए	ना७५	-मज्जेज्जा	२।११४
भीम	६।२।७, ६	भोम	५।८६	मज्झ	४।४८
भीय	६।१।५	भोयण	२।२, १८, ६६,	मज्झाय	५।८६
			८२, १०५	मज्झत्य	ना८।५

मञ्जिम	८३०	मह	२१२; ३५७; ५६४,	माणदंसि	३८३
मट्टिय	८१०६, १२६		१११, ११६;	माणव	२४, ५७, ८०,
मडव	८१०६, १२६		८१३, ३४		१०५, १७१, ३५०,
मण	५८४	महत	३४६		५६ ४१३; ५१८,
मणि	२५८	महब्बमय	११२२, २१६६,		२५, ६३, ६१, १६,
मण्णमाण	२१५, ४४,		४२६, ५३२,		४६
	१४३; ५१६, ६६;		६१४, २२	माणावादि	२५०
	६७८, ६३	महाजाण	३७८	माणुस्स	८८८
मति	२१५६	महामुणि	६२५, ३७;	मात्ता	६६३
			१०५	मामग	६४८; ८६
मत्तिम	२१५६; ८२६	महामोह	२६४	मायण्ण	२११०, ८३६
मत्ता	२६५, ८१; ३६६	महावीहि	१३६	मायदंसि	३८३
मद्विय	६१०२	महावीर	६४, ६६, ७६;	मायन्त	६११२०
मन्त			६१११३, ६२११,	माया (मातृ)	२१२
-मन्तति	३३२		६३३८, १३,	माया (मात्रा)	२१११३,
-मन्तसि	५१०१		६४८, १४		३५६
ममाइय	२१५६, १५७	महासङ्घि	२१३७	माया (माया)	३७१,
ममाय	५८७	महुमेहणि	६८		८४; ५१७;
ममायमाण	२५७; ६३३	महुर	५१२६		६१११; ८८२४
मय	४६, २०	महेसि	३६०; ५६०	मार	१२४, ४७, ७८,
मरण	११०, २०, ४३,	महोवगरण	२६७, ८३		१०७, १३४, १५८;
	७४, १०३, १३०, १५४;	मा	२१३२		२६२; ३६६, ८४,
	२५६, ६१, ६६; ३१५,	माइ	३१४		५३
	३६; ५७, १२१; ६८;	माण	३४६, ७१, ८४,	मारदंसि	३८३
	८८४, १७		५१७, ६१११	माराभिसकि	३१५
मसग	६६१; ८१११,	माणण	११०, २०, ४३,	माख्य	६१२१३
	११२; ६३११		७४, १०३, १३०,	मास	६११३, ४; ६४४, ६
			१५४; ३६८		

माहण ३।४५; ४।२०; ८।१४, २६; ८।८।२०, २४; ६।१।२३; ६।२।१०, १६; ६।३।१४; ६।४।३, ११, १७	मुणि ५।४४, ५०, ५६, ६१, ७८; ६।२२, २७, ५६, ११३; ८।८।७, १४; ६।१।६, २०, ६।२।४	मेहावि ६।५४, ७३, ६०, ६८, ८।१८, २०, ३१; ६।१।१५
मिहो २।४१; ३।६२	मुत्त २।१६५; ५।६१; ६।६६	मोक्ख २।४४, १८१, ६।७
मिला -मिलाति १।११३	मुत्ति ६।३ मुय ४।२८	मोण २।१०३, १६३, ५।३८, ५७, ५६, ८८
मिहो ६।१।१०	मुह ४।१६	मोयण १।१०, २०, ४३, ७४, १०३, १३०, १५४
मीसीभाव ६।१।७	मुहुत्त २।११; ६।३३	मोह १।२४, ४७, ७८, १०७, १३४, १५८;
मुच -मुच्चइ ३।७०	मुहुत्ताग ६।२।६	२।३०, ३३, ८६, ६२, ३।८४, ५।७, ८, ६४
मुड ६।३६	मूढ २।६०, ६६, ८५, ६३, १३४, १५१, ३।१०;	मोहवसि ३।८३
मुक्क २।२८, १८२	५।६, १७	अ
मुच्छ -मुच्छति १।६५	मूढभाव २।६ मूय ६।८	य १।६
मुच्छमाण १।६५	मूयत्त २।५४	र
मुज्झ -मुज्झति ५।६४	मूल ३।२१, ३४ मूलट्ठाण २।१	रइ ३।७; ६।२।१०
मुट्ठि ६।३।१०	मूसियार ६।४।११	रज्ज ५।४८
मुट्ठिजुद्ध ६।१।६	मेहावि १।३२, ६३, ६६, ८८, ११६, १४३,	-रज्जइ २।१६० -रज्जति ८।८।२३
मुणि १।१२, ३३, ६४, ८६, ११७, १४४, १६६, १७८, २।३२, ७०, ६७, १५७, १६३, १६५, १६६, ३।१, ५, ३७, ५४;	१६८, १७७, २।२७, ४६, १५८, १८१, ३।२४, ४१, ६६, ८०, ८४ ; ५।४०, ११४,	रण्ण ८।१४; ८।८।७ रत्ति २।६, १६० रत्त २।५८, ८।४६, ६५, ८८

रम	रीय	रुटि	रा३।५
-रमति १।१७१	-रीडत्या ६।३।१३	लद्ध २।३१, ३६, ११३;	
-रमति ५।१६; ६।२८	-रीयई ६।२।१०	५।१२, ६।४।१३	
रय (रत) ४।३; ५।१७, ३०, १२१	-रीयति ६।१।२३; ६।२।१६, ६।३।१४;	लद्ध २।१०२, ११६; ३।५०	
रय (रजस्) ५।८६	६।४।१७	लभ	
रय (रज्)	-रीयति ६।४।३	-लभति ६।७	
-रएज्जा ८।४६, ६५, ८८	-रीयत्या ६।१।१	-लभति ५।६३	
रस २।४; ३।४, ५।१३६; ६।१।२०; ६।४।१०	रीयंत ६।३६, ७० रीयमाण ६।६६, ८० रुक्कमूल ८।२१, २३,	लभिय ८।२ लह ६।६ -लहई ६।६	
रसग ६।१२	६।२।३	लहु ५।१३०	
रसय १।११८	रुव	लहुभूयगामि ३।४६	
रसेसि ६।४।१०	-रुवति ६।२६	लाघव ६।६३	
राई ६।२।४	रुह ५।१३२	लाघविय ६।१०२, ८।५४,	
राओ (अ) २।३, ४०, ४।११, ६।७५, ७६, ६।२।६, ११, १५	रुव १।६४, ६५; ३।४, १५.५७, ५।१३, २६, ४६, १३६, ६।७; ६।४।१५	७२, ७८, ६४, ६८, १०२, ११३, १२२ लाढ ६।३।२, ३, ६, ८	
राय (गजन्) २।४१, ६८, ८४, १०४	रोग २।१६, ७५, ६।८, १६, ६।४।१	लाभ २।११४ लाल २।१३२	
राय (रात्र) ५।४४		लालप्पमाण २।६०, १५१	
रायंसि ६।८	ल	लिप्प	
रायहाणि ८।१०६, १२६	लंभ ४।४५	-लिप्पई २।१८०	
रायोवराय ६।४।६	लज्ज	लुच	
रिच ६।१।४	-लज्जामो ८।१६	-लुचिमु ६।३।११	
-रिक्कासि ६।१।४	लज्जमाण १।१६, ३६, ७०, ६६, १२६, १५०	लुपडत्त २।१४२ लुपित्त २।१४	
रीय]	५।७१		

लुक्ख	५११३०	लोग	५११, १५, १६, ३६,	वक्ख	३१५
लुप्प			५३, ६०, ६१, ४, ३०;	वज्ज	८८, १८
-लुप्पती	६१११५		८५, ६१, ४१, ४	वज्जत	६१, ४१, २
लूस		लोगविजय	२	वज्जभूमि	६१, ३१, ५
-लूसिसु	६१, ३१, ६	लोगविपस्सि	२१, २५	वज्जमाण	६१, १०, ४
लूसग	६१, ६५, ६६	लोगसन्ना	२१, ५६,	वट्ट	५१, २६
लूसणय	६१, ३१, ४		१८४: ३१, २५	वट्टमग	५१, २१
लूसि	६१, १११	लोगसार	५	वड्ढमत्त	२१, ५४
लूसिय	६१, ४१	लोगावाइ	११, ५	वड्ड	
लूसियपुब्ब	६१, १८	लोभ	२१, ३६, ३७, १३, ४,	-वड्डुति	३१, ३२
लूह	२१, ६४, ५१, ६०,		३१, ४६, ७१, ६१, १११,	-वड्डेति	२१, ३५
	६१, १०६, ६१, ४१, ४		८८, ८२, ३	वणस्सइ	११, १०१, १०४,
लूहदेसिया	६१, ३१, ३	लोभदत्ति	३१, ८३		१०६, ११६, ११७
लेलु	६१, ३१, १०	लोह	३१, ८४: ५१, १७	वत्तए	२१, ६७
लोग	२१, १०४, १२, ५,	लोहिय	५१, २७	वत्थ	२१, १२, ६१, ३१,
	१५, ६, ३१, २, ५,				६० ८१, २, २१ से
	५१, ७८, ८१, ४१, ७	व			२४, २८, २६, ४३ से
	२७, ५२, ५१, ३१,	वइ	५१, ४०, ८१, ३१		४६, ५०, ६२ से ६५,
	३२, ४३, ५०, ७७,	वड्ढुत्त	५१, ८७		६६, ८५ से ८८, ६२;
	६१, ४७, १०१-८१, ३३	वड्ढुत्ति	८१, २७		६१, १२, ४, १६, २२
लोग	११, ११, १२ से	वड्डत्ता	६१, ६३	वत्थग	६१, १४
	१४, २५, ३७, ३८, ४८,	वओगोय	८१, १०	वत्थवारि	८१, ४६
	६५, ७६, ६६, १०८,	वंक	११, ६८, ५१, ५८	वत्थु	२१, ५७
	१३५, १५६, २१, २,	वंकाणिकेय	४१, १६	वद	
	६०, १६६-३१, ५,	वता	२१, ५६, ३१, ५,	-वदति	४१, २०, ६१, २६,
	३८, ५८, ७०, ७७,		७१, ७८ ६१, ११		७६, ८८
	४१, १२, २०, २७, ३७,	वक्खाय	५१, २२१	-वदिस्सामि	६१, ११



वदंत	ना४२, ७५	वह		आयारो
वन्न	ना८२३	-वर्हति	११४०	विअंतिकारय ना८३,
वन्नाएसि	११५३	वह	२१६३, ३१४३, ४६;	१०६, १२६
वमन	६१४२		४४६; ६१७	विअंतिकारिय ना६०
वय (वड्)		वा	११२, ३, २४, ४७, ७८,	विड्य ना८५
-वयंति	११७२ ;		१०७, १३४, १५८,	विउंज
	२१६१ ; ४१६		२१२, ५०, ५६, ६५,	-विउंजति ना५
-वयासि	४१२२		६८, ७६, ७७, ८१ ;	विउकम्म ना२
वय (वयस्)	२१५, १२,		४३, ५१, ६३०,	विउक्कसे ६१८८
	२३ ; ना३०		८२, ८४, १०२,	विउट्ट
वय (व्रत)	२१५२		ना१, २, ५, १४, २०	-विउट्टंति ११५६
वय (वचस्)	५१६३		से २४, ४१, ४२,	विउत्ता ना२
वयण	४१२१, २४ ;		१०६, १२६; ना८७,	विउम्भ
	ना२२, ४१		६१३१३, ६१४६,	-विउम्भमे ना८१०
वयणिज्ज	६१८६		११, १३	विउसिज्ज ना८५, १३
व३हार	३११८	वाइय	६१७५, ७६	विउसिज्जा ६१३१
वस	३११०, ६१६५	वाउ	११५२, १५५,	विओवाय ६११३
वस			१६०, १६८, १६६	विक्रय २११०६
-वसह	ना२१	वाउकाय	६१११२	विगय ६१४१५
-वसे	२१२	वागरण	११३	विगिच
वसा	१११४०	वात	५१५	-विगिच २१८६,
वसित्ता	४१४४;	वाम	ना१०१	३१३४, ४१३४, ४३
	६१३०, ७८	वायस	६१४१०	-विगिचइ ३१७६, ६१५१
वसु	६१३०	वाया	ना५	विगिचमाण ३१७६
वसुम	१११७५, ५१५५,	वास	६१६६, ६११११,	विगाह ५१२१
	ना५७		६१२१२, ३, ४	विज्ज
वसुमंत	ना८१	वासग	६१२२	-विज्जइ ३११८, ८७,
				५११२३

-विज्जए	५।१३६	विदिता	१।६१, २।१२७,	विष्यमाय	२।१५२
-विज्जति	४।५३		१।५६, ३।२५	विष्यमुक्त	५।३०
विज्जहित	१।३५	विदिताण	८।८।२	विष्यक्कम	
विजहा		विदिमप्पन्न	५।५४	-विष्यक्कमति	६।४
-विजहिज्जा	८।८।१२	विदायमाण	६।८७	विप्परामुम	
विजाण		विद्धसण	५।२६	-विप्परामुमन्	२।१५०
-विजाणानि	५।१०४	विधार		-विप्परामुमनि	५।१, २
विड्ढम्भमाण	६।७६	-विधारण	६।७०	-विप्परामुमह	८।२५
विणएत्तु	५।११६	विधूणिया	८।८।२४	विप्परिणाम	
विणय	१।१७२	विधूतवप्य	३।६०, ६।५६	-विप्परिणामेति	६।८३
विणयण	२।११०;	विन्नाण	४।१३	विप्परियाम	२।६०, ६६,
	८।३६	विन्नाय (विज्ञान)	४।६,		८।५, १५१; ५।६
विणन्त			५।१०८	विण्यसाय	
-विणन्तड	२।८४	विन्नाय (विज्ञाय)	८।८।७	-विण्यसायए	३।५५
-विणन्तति	२।६८	विन्तु	४।२७	विप्पिय	६।१०६
विणा	२।३७	विपरवत्तम		विप्पिदमाण	४।३७
विणियट्टमाण	५।७०	-विपरवत्तमा	५।३४	विप्पन्न	६।६६
विणियिट्ट	२।३४०,	विपरिणाम	१।११३,	विपन्न	८।२
	६।६		५।२६	विपण	
विण्णाय	४।२०	विगणिट्ट	२।३६, ८।३	-विपण	६।१०१
विण्ह	६।६०	विग्गु	८।८।८	-विपणंति	२।६८, ८।४
विण्ह	२।७२, ८।८।७	विप्पज्ज	६।२७	विप्पमा	१।७८, २।६
वित्तिमिन्	६।१।६	विण्णित्त	८।६	विप्पुज्ज	८।३५
विन्न	५।२२	विन्नविद्वे		विप्पाम	८
विनिगित्ता	३।५४,	-विप्पविद्वेति	५।७५	विप्पो	८।८।१, ८।५
	५।६३	विन्नोत्त		विप्पामा	८।३१, ८।४
विनिच्छे	६।१।२	-विप्पामा	५।२६		१।१०, १।३०

वियक्खाय	५।११७	विरुवरुव	न।१०७,	-विहरे	न।न।२०
विगड	६।१।१८;		१११,११२,१२७,	विहरंत	६।३।६
	६।२।१५		६।२।१०; ६।३।१	विहरमाण	न।२।१,२३
वियाण	न।न।११	विलुप		विहारि	५।६६
वियाहित	२।१६५ ;	-विलुपति	२।६८,८४	विहि	६।१।२३;
	५।१०५; ६।४६,	-विलुपह	न।२५		६।२।१६; ६।३।१४
	६२,११२; न।१३	विलुपित	२।१४,१४२	विहिस	
वियाहिय	१।३।४,५४,	विवाद	४।२०	-विहिसइ	१।२६
	६६, ४।३८,४४;	विवित्त	२।२;	-विहिसति	१।१८,४१,
	५।२७,६१,११७;		न।न।१०,११		४६,७२,८०,१०२,
	६।६,६६,११३ ;	विवित्तजीवि	३।३८		१०६,१२८,१३६,
	न।१६,३४	विहिह	६।४।११		१५२,१६०
विरत	२।१६५, ३।४६,	विवेग	५।७३,७४, न।१३	-विहिसंति	न।न।१०
	५।३७,६१; ६।३६,	विसभणया	न।१०७,१२७	वीर	१।३६,६७, २।६४,
	६७; न।२२,८१	विसण्ण	६।६२,१०६		१०१,१२८,१६०,
विरति	६।१०२	विसाण	१।१४०		१६४,१६८,१७८,
विरत्त	२।५८	विसोग	६।१।१०		१८० ; ३।८,१६,
विरम		विसोत्तिया	१।३५,६।४६		४६,५०,५६,७८,
-विरमेज्ज	५।११८	विस्सेणि	६।६८		४।११,४१,४२,४४,
विरय	५।३०, ६।६६,	विह	न।५८		५२ , ५।२८,६०,
	७०; ६।४।३	विहण			११६; ६।६८,६६
विराग	३।५७	-विघातए	३।५३	वीरायमाण	६।६३
विरुवरुव	१।८,१८,२६,	-विघायए	५।१०२	वीरिय	५।४१
	४१,४६,७२,८०,	विहर		वुइय	६।१।२१
	१०१,१०६,१२८,	-विहर्हिंसु	६।१।३;	वुद्धि	३।२६
	१३६,१५२,१६०;		६।३।५	वुत्त	६।४७
	२।२६,४२,५५,१०४,	विहरित्था	६।१।१३	वेज्ज	५।७२
	६।६१,				

वेद	मकुचेमाण	५१७०	मजोग	३१७८; ४,३,४०,
वेदेति	३१७	संन्ति	६१११६	६१३०
वेद्य	५१७२	नन्वा	नानार	मजोगट्टि २१३,४०
वेद्यव	३१४	नन्वाण	६१४३,८०,	मजोग २११६६, ४१४५
वेद्यवि	४१५१; ५१७८,		६१११.१३	मंत नान१, ६११११
	११८, ६१०१	मन्वाय	२१५०, ६१०७,	नत्तमत्तर
वेद्यावडिय	नान१, २, २८,		नान२२	सत्ताणय
	२६, ७६, १२०, १२१	मग	११७८, २१४५,	नान०६, १२६
वेर	२१३५, ३१, ३२		३१६, ३२, ५१३३.	मनि ११४६, २१६६,
वेवड	६१		११७, १३३,	६११०२
वोवाम			६, ३८ १०८	मयर
-वोवकमिस्सामि	६१६०	मगथ'	२१२	-मयरे
वोमज्ज	६११४, २२,	मगक्र	५१८६	नाना७
	६१३१७	मगाम	६११३३,	-मयरेज्जा नान०६, १२६
वोमट्टकाय	६१३, १२		६१३१, १३	मयरेत्ता नान०६, १२६
वोमिर		सघट्टसि	४१५२	मयव ४११७
-वोसिरे	नाना२१	मंवाडी	६१२१४	मथुय २१२
वोच्छिद		मवाय	११८४, ८५,	सवा
-वोच्छिदेज्जा	५१८३		१६८, १६५	-सवाति २१५५
		मवर		-मविस्सामि ६१६०
स्व		-सचारेज्जा	नान०१	-मवेड ११८
स (तत्त)	५१०१, ६१३४	सचाय		मत्रि २१०६, १२७,
स (स)	६१२१२	-सचाएमि	नान४१, १११	३१५१, ५१२०,
सड	६११०, ६१४१५	सचिक्ख		३०, ४१, ६८
सकप्प	५११७	-सचिक्खति	६१४०	सवेमाण ६१७१
संकमण	२१६१, ८१७५	सजत	११६७	सगडिल्लहाए नान२४
सकुव		संजम		सपमार
-सकुवण	नाना१५	-सजमति	५१५१	-सपमारण ११२६, ५२,
				न३, ११२, १३६, १६३

संपय	सवस	सढ	५।१७
-सपयति १।८४, १६४	-संवसति २।७, १६,	सण्ण	५।१३५
सपल्लिमज्जमाण ५।७०	२०, ७६	सण्णिवेस	८।१०६, १२६
संपव्वयमाण ५।८६	सविद्धपह ५।५०	सतत	२।६३
संपसारय ५।८७	सविहूणिय ८।१०७,	सत्त (सत्त्व)	१।१२२,
संपाढम १।१६४	१२७	४।२०, २२, २३, २६,	
संपातिम १।८४	संवुड ५।८७; ८।८।२२,	२७, ६।१०३, १०४,	
संपुण्ण २।६०	६।३।१३	१०५, ८।२१ से	
संपेहाए २।६६, ४।३२,	संसप्यग ८।८।६, ६।२।७	२४; ६।१।१४,	
३४; ५।४४; ६।८	ससय ५।६	६।४।१०	
संफास ५।७१, ६।२।१४	संसार १।११६; ४।१३,	सत्त (सत्त)	१।१७४;
संबाहण ६।४।२	५।६	६।७, १६	
संबाहा ५।६५	ससिच्चियाण २।६५	सत्ता ५।१३७	
संबुज्झमाण १।२३, ४६,	ससिच्चमाण ३।३१	सत्तिहत्थ ६।२।८	
७७, १०६, १३३,	ससेयय १।११८	सत्थ १।१८, २१, २६, ३०,	
१५७, २।१४८,	संसोहण ६।४।२	३१, ३२, ४१, ४४,	
४।१२, १३; ८।१५,	सक्क ५।५८	४६, ५५, ५६, ५६,	
३०, ६।२।६	सक्ख	६१ से ६४, ७२, ७५,	
संभवंत ६।८७	-सक्खामो ६।२।१४	८०, ८६ से ८८,	
संभूय २।६७, ८३	सगडब्भि ३।७३, ८६	१०१, १०४, १०६,	
संमुच्छिम १।११८	सच्च ३।४०, ६५, ६६;	११४ से ११७, १२८,	
संलुंचमाण ६।३।६	४।५२, ५।६५,	१३१, १३६, १४१	
संवच्छर ६।१।४	८।१०७, १२७	से १४४, १५२, १५५,	
संवट्ट	सन्नवादि ८।१०७, १२७	१६०, १६६ से १६६,	
-संवट्टेज्जा ८।१०५,	सज्ज	१७७, १७८, २।३,	
१२५	-सज्जेज्जा ८।८।४	४०, १०४, ३।३, १७,	
	सङ्घि ३।८०; ५।६६	७२, ८२, ८५;	
		८।३६	

सत्थार	६।७६	समणस	८।२२	समभिजाणिया	५।११५;
सदा	४।५२, ५।८७,	समणजाण			८।५६, ७४, ८०,
	११६	-समणुजाणड	१।२१,		६६, १००, १०४,
सद्	१।६४, ६५;		४४, ७५, १०४, १३१,		११५, १२४
	२।१६१, ३।४, १५,	१५५, २।१०७, १०६			
	५।१३६, ६।४३,	-समणुजाणेज्जा	१।३२,	समय	३।३, ४।२५;
	६।२।६, ६।४।१५		६३, ८८, ११६, १४३,		५।६६; ८।१०५,
			१६८, १७७; २।४६,		१०६, १२५,
सद्दह			८।१८		६।१।१०, ६।४।१०
-सद्दहे	८।८।२४	समणुजाणमाण	६।४१;	समयण्ण	२।११०; ८।३६
सद्धा	१।३५		८।३	समया	३।५५;
सद्धि	२।७, १६, २०, ७६	समणुन्न	१।६, २।७४,	समहिजाणमाण	८।८१
सन्त	४।१४		१८६, ५।६६,	समादहमाण	६।२।१४
सन्ना	१।१, २।३३		३।७६, ८।१, २८, २६	समादा	
सन्नियय	२।१८, १०५	समणुप्स			
सन्निवेस	६।७	-समणुप्ससति	३।६७	-समादियति	६।७७
सन्निहाण	८।३६	-समणुपासह	५।६६	समादाय	२।१६३
सन्निहि	२।१८, १०५	समणुवास		समाधि	५।६३
सपज्जवसित	८।५	-समणुवासिज्जासि		समायाण	५।५६
सपेहिया	८।८।२३		२।२६, ५।८८,	समायाण	२।४२
सकल	४।५१		६।२६	समायाय	३।२२
सवलत्त	२।५४	-समणुवासेज्जासि		समायाय	१।६८, ५।५८
सभा	६।२।२		२।१०३	समारभ	१।७.११, १२,
सम	५।८६	समन्नागय	१।१७५,		१८, २६, ३३, ८१, ४६,
			५।५५, ६।६७,		६४, ७२, ८०, ८६, १०१,
समण	२।४१; ४।२०,		८।५७		१०६, ११७, १२८, १३६,
	६।६६, ८।२१,	समभिजाण			१४४, १५२, १६०, १६६,
	२२, ४१; ६।१।१;	-समभिजाणाहि	३।६५		१७८, २।१०४. ८।१७
	६।२।४. ६।३।४ ५,	-समभिजाणिज्जा	८।६७		
	६।४।११	-समभिजाणिया	८।६५		

समारंभ	समारम्भ	८२१ से २४	समुद्राह	२३,४०
-समारंभइ ११२१,७५,	समारम्भ		समुद्राण	११२३,४६,७७,
१०४	-समारंभेज्जासि	३१५०		६०,१०६,१३३,
-समारंभेति ८१६	समावन्त	५१६३		१५७; २३१,
-समारंभेति ११४४,	समासज्ज	८११,१७,२१		१४८; ६१३
१३१,१५५	समावि	५१६३	समुद्रित	८३०
-समारंभावेइ ११२१,	समाहि	६१७६; ८११५;	समुद्रिय	२१०,१०६;
७५,१०४,१३१	६१२११; ६१४७,१४			३४४; ६३,७१;
-समारंभावेज्जा ११३२,	समाहिय	६३३; ८१०५;		८१५
६३,८८,११६,		८१११४; ६१२४	समुद्रिस	८२१ से २४
१४३,१६८,१७७;	समिच्च	४२, ६१११६	समुप्यज्ज	
२१४६, ८१८	समित	२१५३; ३३८;	-समुप्यज्जंति	२१६,७५
-समारंभावेति ११४४,		४१५२	-समुप्यज्जे	८११८
१५५	समिय	४१४१; ५१७५;	समुप्याय	२१६,७५
-समारंभेज्जासि ८२०		६१२१०, ६१३१,	समुप्येहमाण	५३०
समारंभंत ११२१,३२,		६१४१६	समुत्सय	४१४४
४४,६३,११६,१४३,	समिय (सम्यक्)	५१६६	समुत्सिण	
१५५,१६८,१७७;	समिय (शमित)	५१७१,	-समुत्सिणाति	८२३,
२१४६; ८१८		८११४		२४
समारंभमाण ११२६,	समियवंसण	६१४६,१००	-समुत्सिणासि	८२२
३०,४१,४६,६१,	समिया (शमिता)	५१२७	-समुत्सिणोमि	८२१
७२,७५,८०,८६,	समिया (समता)	५१४०,	समे	
८८,१०१,१०४,		८१३२, ६१२१५	-समेति	६१२८
१०६,११४,१२८,	समिया (सम्यक्)	४१२६,	समेमाण	४११०, ८१२
१३१,१३६,१४१,		५१६६,६७,१०५	सम्म	२१२६; ४१४८,
१५२,१६०,१६६	समीर			५१३८,५७,६१,
समारंभमाण १११८,१०६	-समीरण	८११७		११५, ८१७

सम्मत	४, ६६५;	सर	५१२२	सन्वसो	२१७२, १८४;
	८५६, ७४, ८०,	सरण	२१८, १७, २१, ७७;		४३१, ५५१;
	६६, १००, १०४,		५१६, ६२८, १०५		८१२१, ६११२,
	११५, १२४	सरीर	४३२, ६१७,		१५, १६, १८
सम्मतदंसि	२१६४;		११३	सन्वावती	१७, ११;
	३२८;	सरीरग	२१६३; ५५६;		८१७, ३३
	४२६,		८१०५, १२५	सन्विदिय	८३७
	५६०	सल्ल	२१८७	सह	१८; २५५, ५८;
सम्मय	८११	सवंत	२१३०		३१७
सय	२१५१, १५२	सवयस	८२२	सह	
सय				-सहते	२१६०
-सय	८११३	सन्व	११४, ८, ११३, १७५;	सहसक्कार	२३, ४०
सय	११२१, ३२, ३८, ४४,		२१६३, ६४, १७६;	सहसम्मइयाए	१३;
	६३, ६५, ७५, ८८,		८५७		५११३, ८२४
	१०४, १०६, १३१,	सन्वलो	६२, ३६	सहसाकार	
	१४३, १५५, १६८,	सन्वतो	२१७५; ३७५,	-सहसाकारेह	८२५
	१७७; २४६,		४२०, ५६०, ११५,	सहि	२२
	८१८, ६१६, १७,		६३८, ६५, १११,	सहित	३३८, ६७, ६६,
	६१४८, १६		८१७, ५६, ७४, ८०,		४४१, ५२; ५७५
सयण (स्यजन)	२२		६६, १००, १०४,	सहिय	६११५
सयण (जयन)	६११६,		११५, १२४	साड	६१२५
	६१२१, ४, ७	सन्वत्त	६६५, १११;	साइम	८१२, २१२२४,
सयय	३१०, ५१७		८५६, ७४,		२८, २६, ७५, ६०१,
सया	१६७, ३१, ३८,		८०, ६६, १००,		११६ से १२१
	५६; ४११, ४१,		१०४, ११५, १२४	साडय	८५
	५४४, ७५; ६२६,	सन्वत्य	८११	सागारिय	५१०; ६११६
	५६, ६८, ६२१०;	सन्वया	५११५	सात	२५२, ३२७
	६३३१				
सर					
सरति	३५६				



साति	सिक्खं	सुक्क	६।४।१३
-सातिज्जेति ६।४।१	-सिक्खेज्ज	सुक्किल्ल	५।१२७
-सातिज्जिस्सामि	सिद्धिल	सुगर	६।१।८
दा७६, ७७, ११६ से	सिणाण	सुण	
११६, १२१	सिद्धि	सुणेति	१।६४
सामगिय ८।४६, ६८,	सिय (ध्रित)	सुणेह	६।८
६१	सिय (सित)	सुणमाण	१।६४
सामत्त २।५४		सुणय.	६।३।४, ६
सामास २।१०४	सिल्लिय	सुणिया	५।४४
साय २।२२, ६३, ७८;	सिलोय	सुणिसंत	८।३
४।२५, ५।२४, ५।२	सिसिर	सुणहा	२।२, १०४
सारक्खमाण ५।८६		सुत्त (सुस)	३।१
सारय ४।४१		सुत्त (सूत्र)	६।६०
सासय ४।२; ८।८।२४	सिस्स	सुद्ध	४।२; ६।५३;
साह	सीओसणिज्ज		८।८।५
-साहिस्सामो ४।५२	सीतोद	सुण्णगार	६।२।३
साहम्मिय ८।७६, १२०,	सीय	सुन्नागार	८।२१, २३
१२१		सुपडिबद्ध	५।३४
साहर		सुपडिलेहिय	४।२०,
-साहरे ८।८।१४	सीयापिड		५।११५; ६।२
साहारण ८।८।१५	सील	सुपणिहिय	६।३५
साहिय (स्वाहित)	सीलमंत	सुयन्नत्त	८।८
८।८।१२	सीव	सुपरिणाय	६।१११
साहिय (साधिक)	-सीवीस्सामि	सुब्भ (भू) भूमि	६।३।२
६।१।३, ४, ११,	सीस	सुब्भि	६।५५, ६।२।६
६।४।६		सुब्भिगंध	५।१२८
साहु ८।५	सुअक्खाय	सुय	१।१; ४।६, २०,
सिग १।१४०	सुकड !		५।३६

सुविमुद्ध	६१४६	सेवे	६११६, १८	हंत	२११४, १४२;
सुवय	६६३	सेवेज्जा	नानर३		३१५३; ५१०२,
सुसमाहितलेस	नान१	सेस	२११८		नान५
सुसाण	नान१, २३,	सोच्चा	१३, २४, ४७,	हतव्व	४१, २०, २२, २३,
	६१२३		७८, १०७, १३४,		५१०१, १०३
सुस्सुस			१५८; ५४०, ११३,	हंता	३३२, ६११५,
-सुस्सुस	६२४		६१७६, नान४, ३१		६३१०
सुस्सुसमाण	६१०२	सोणिय	११४०; ४४३;	हण	
सुह	२६३; नान६१, ८४,		६१६७. नान६	-हण	६६१, नान३
	११०, १३०	सोत	५११७	-हणह	नान५
सुहडि	२११५१	सोय (श्रोत्र)	२४, २५	-हणिया	३४६
सुहुम	नानर३	सोय		-हणे	२१७५
सुइ	६१६०	-सोयए	२१११५	हणय	६६१, नान३
सुइय	६१४१३	-सोयति	२१२४	हणुय	११२८, नान०१
सूणिय	६१८	सोय (स्रोतस्)	३६,	हत	२१५६
सूर	६१३१३		५०; ४४५, ५०,	हत्थ	११२८
सूवणीय	५१३४		५१८६, ११६;	हम्म	
सेज्जा	६१२१, ६१३१२		६१११६	-हम्मड	३१५८
सेय	२१७६; ३१६७,	सोय (शोक)	३४६	हय	६१४१
	नान५८	सोयविय	६११०२	हयपुव्व	६११८, ६१३१०
सेव		सोलस	६१८	हरय	५१८६, ६१६
-सेवड	६१२५	सोवट्टाण	५११०६	हरिय	नान०६, १२६;
-सेवए	३४४, ५११०	सोवहिय	४३, ६१११५		नान१३; ६१११२
-सेवति	२११६४, ५१६०	सोवाग	६१४११	हरिस	
-सेवती	६१११६	सोहि	६१४१६	-हरिने	२१५१
-सेविसु	६१३१२			हव्व	२१३४
-सेवित्था	६१२११,	ह	४१२५	हव्ववाह	५१३३
	६१४६	हं			

हस्त	२।६; ५।१२६	हित	नामा२५	हुरत्था (दि)	आयारौ
हालिद्	५।१२७	हिमग	६।२।१४		५।१२ ;
हास	३।३२, ६१	हिमवाय	६।२।१३	हेउ	ना२१, २३
हिस		हिय	ना६१, ८४, ११०,		१।१०, २०, ४३, ७४,
-हिसिसु	१।१४०;		१३०	हेमंत	१०३, १३०, १५४
	६।१।३; ६।३।३	हियय	१।२८, १४०		ना५०, ६६, ६२;
-हिसंति	१।१४० ;	हिरण्ण	२।५८	हो	६।१।१, २
	५।५१	हिरि	ना१११	होइ	५।६६
-हिसिस्संति	१।१४०	हिरी	६।४५	होउ	५।६६, १०७
हिच्चा	४।४०; ६।३०,	हीण	२।४६	होति	६।५२
	७७, ६३	हु	१।१२, १५४	होहु	१।२८

## आयार-चूला : शब्द-सूची

अ	अंड	अ१०, २६ से	अतल्लिखजाय	११८७;
अड्डरगय	११३६	३१, ३३, ३८, ४० से		२१८, १६;
अइपत		४५; ८१, २, २२,		५१३६ से ३८;
-अइपतति	२३०	२३, ६१, २,		६१३६ से ४१;
अइमत्त	१५६८	१०२, १४		७११ से १३
अईव	१५१२, १३	अत (अन्त)	२१७२;	अंतो १२६, ४१, १३५,
अक	१३१३६ से ७६;	८२६, ६१२;		१३६; २१२;
	१४३६ से ७६;	१५१२५		६१४५, ७२४,
	१५१४	अंत (अन्तस्)	१५१२८	८१२; १०१२
अककरेलुय	१११३	अतकड	१६१०, ११	अंताहिती ७२४
अकघाई	१५१४	अतरा	१४२, ४३, ५०,	अंतोअंत ५१२६, २७,
अगारिय	१११६		५३, १३६, ३१, ४,	६२७, २८
अंगुलिया	१६२,		५, ७, ८, १०, १२ से	अंव ७२६ से २८
	३१६, ४७		१४, ३४, ४१, ४३,	अंवचोयग ७२६ से ३१
अजण	१७२, ७३		४५, ४७, ४८, ५१,	अंबडाल ७२६ से ३१
अंजलि	३६१, ५१५०,		५३ से ६१; ५१४६,	अवपलब १११०८
	६१५८		५०, ६१५७, ५८	अवपाणग १११०४
अड	१२, ४३, ५१, ८२,	अतरिजग	५१६	अवपेसिय ७२६ से ३१
	८३, १०२, १३५;	अंतरिया	१५१३८	अबभित्तग ७२६ से ३१
	२११, २, ३१, ३२,	अंतरुच्छुय	११३३;	अंबवण ७२५; १०१२७
	५७ से ६१, ६८, ६६,		७३६ से ३८	अवसरडुय ११११०
	३५, ५१२८ से ३०,	अतल्लिख	४११७	अवसालग ७२६ से ३१
	३५, ६१२६ से ३१, ३८;			अंवा ४३२

अंबाडगपलव	१११०८	अवकोसति	५१५०; ६१५८;	अग्गपिड	१११६, ४६, ६१
अंबाडगपाणग	१११०४		७११६	अग्गवीय	११११५
अंबाडगसरडुय	११११०	-अवकोसंतु	२१२२.	अग्गलपासग	११५०;
अविल	१११००, १३८;	-अवकोसेज्ज	३१६, ११		३१४१, ४७,
	४३७	अवखाइ	२१४४		४१२१, २२
अंसुय	५११४	अवखाइयट्टाण	११११४;	अग्गला	११५०; ३१४१,
अकंत	१६१४		१२१११		४७; ४१२१, २२, २६
अकक्कस	४१११, १३, १५,	अक्खाय	११२६, ४१८;	अग्गि	१६१५
	२२, २४, २६, २८,		७१५७	अग्घा	
	३०, ३२, ३४, ३६	अग्गड	३१४८	-अग्घाइ (ति)	१५१७४
अकडुय	४१११, १३, १५,	अग्गडमह	११२४	अग्घाउ	१५१७४
	२२, २४, २६, २८,	अग्गट्ठिय	११५७	अग्घाय	१११०५
	३०, ३२, ३४, ३६	अग्गणि	११८४, ८५, ६५;	अचित्त	८१७ से २०,
अकरणिज्ज	११३२;		२१४६, ३१५५		१०१२८
	१५१३२	अग्गणिकाय	१६१४, ६५;	अचित्तमंत	४१८;
अकसिण	११५		२१२१, २३, २६,		१५१५७, ७१
			४१, ४२	अचेलया	१५११६
अकालपडिबोहि	३१८, ६	अग्गणिफंडणट्टाण	१०११६	अच्चाइण	३१२
अकालपरिमोइ	३१८, ६	अग्गणिय	२१४६	अच्चि	१५१२८
अकिच्चण	७११	अग्गरहिय	११२३	अच्चुय	१५१२५
अकिरिय	४१११, १३,	अग्गार	२१३६, ३७, ३६	अच्चुसिण	११६६
	१५, २२, २४,		से ४२, १५११,	अच्छ	११५२; ३१५६
	२६, २८, ३०,		२६; १६११	अच्छ	
	३२, ३४, ३६	अग्गारि	२१३६, ३७,	-अच्छाहि	६१२६
अक्कंत	११३५		३६ से ४२	अच्छि	२११८; ३१२८
अक्कोस		अग्गिद्ध	११५७	अच्छिद	
-अक्कोसति	२१२२,	अग्ग	१५१२८	-अच्छिदेज्ज	३१६, ११,
५१; ३१६१;		अग्गजाय	११११५		६१; ५१५०; ६१५८;

-अच्छिदेज्ज ३६, ११, ६१, ५५०, ६५८, ६१६; १३२६, ३३, ६३, ७०, १४२६, ३३, ६३, ७०	अज्झवसाण १५२८, १०	अट्ट (अष्ट) १५२६, गा० २, ५
-अच्छिदेति ५५०; ६५८	अज्झोववज्ज -अज्झोववज्जेज्जा १११६; १२१६, १५७२ से ७६	अट्ठमं १५३ अट्ठमी १२१ अट्ठासीति १५२६, गा० ३
अच्छिदित्ता १३२७, ३४, ६४, ७१, १४२७, ३४, ६४, ७१	अज्झोववज्जमाण १५७२-७६ अज्झोववन्न ११०५ अट्ठ १०१३, ११६; १२६	अट्ठि १३५ अट्ठिय ११०४, १३४, १३५
अच्छिमल १३३६, ७३; १४३६, ७३	अट्ठालय १०२१; ११६, १२६	अट्ठिरासि १३, ५१, १३५, ५३६, ६४२
अच्छुप्प १५२६	अट्ठ (अर्थ) १२०, ३०, ४१, ४८, ५६, ६०, ८६, १०३, १२०, १२१, १२३, १२६, १३७, १४६, १५३, २१२३, २६, २८, २६, ३८, ४३, ७७, ३२३, ४६, ६२, ४१८, ३६, ५२२, ४०, ५१; ६२१, ४३, ५६; ७६, २२, ५० से ५२, ५३, ५८, ८३१, ६१७, १०२६; ११२०; १२१७; १३१८०, १४८०; १५१३	अट्ठाइज्ज १५३३ अणंत १५१, ३८, ४०; १६२, ६ अणतरहिय १५१, १०२, ५३५, ६३८, ७१०; १०१४ अणंबिल १६६ अगगार ७१, १५७८ अणगारिया १५१ अणज्झोववण्ण १५७ अणणुन्त(ण)विय १५४, ७३; १५५६ अणणुवीड १५५८, ६२ अणणुवीड्भासि १५५१
अच्छेयगकरी ४११, १३, १५, २२, २४, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३६		
अजाण (अजानत्) ११३६, ४१		
अज्झत्यवयण ४३, ४		
अज्झत्तिय १३१; १४१		

अणहयंकरी ४१११, १३,	अणालोइय ११२७;	अणिस्सिय १६७
१५, २२, २४, २६, २८,	१५१४८	अणीहड ११२ से १६;
३०, ३२, ३४, ३६	अणावाय ११४४, ५६ से ५८,	२१३ से ७, ५१५ से ६;
अणत्तद्विय ११२ से १७,	१२३; १०१२८	६१४ से ८; १०१४, ६
२१, २४; २१३ से ८,	अणासाळं १५१७५	अणु १५१५७, ७१
१०, १२, १४, १६;	अणासायमाण २१७४;	अणुकंपय १५१५
५१५ से १०, १२;	३१२७, ३५, ५०, ५२;	अणुगच्छ
६१४ से ६, ११;	८१२८	अणुगच्छाहि ५१२२;
८१३ से ७, ८, १०,	अणासेविय(त) ११२ से	६१२१
१२, १४; ६१३ से ८,	१६, १७, २१, २४;	
१०, १२, १४;	२१३ से ८, १०, १२;	अणुजाण
१०१४ से ६	१४, १६; ५१५ से १०,	अणुजाणवेज्जा ७१२५
अगमिक्कंत ११४: ३१	१२; ६१४ से ६, ११;	अणुजाणावेज्जा
अगमिक्कंतकिरिया	८१२; ६१३:	७१३२, ३६
२१३७	१०१४ से ६	अणुजाणेसि १५१३१
अणल ५१२६: ६१३०	अणिकंप २१४६;	अणुण
अणहि १११३५	५१३६ से ३८;	अणुणविज्जा ७१२३
अणाइल १५१३४, ३७	६१३६ से ४१;	अणुणवेज्जा २१४७;
अणागय ४१७	७१११ से १३	७१४, ६, ४६
अणागयवयण ४१३, ४	अणिच्च १६११	अणुण(न्त)विय ११५४;
अणागाढ २११८	अणिमंतेमाण ११४१;	१५१५६; ७१३
अणाढायमाण ११२७	२१४८	अणुत्तर १५११, ३६, ३८,
अणापुच्छिता १११३०	अणिसट्ट ११२ से १७;	४०; १६११, ५
अणामंतिय १११२७	२१३ से ८; ५१५ से १०;	अणुहवणकरी ४१११, १३,
अणायरिय ४११	६१४ से ६; ८१३ से ८;	१५, २२, २४, २६, २८,
अणायार ४११	६१३ से ७;	३०, ३२, ३४, ३६
अणारिय ३१८, ६-	१०१४ से ६	अणुपत्त १५१२६
	अणिसिट्ट ११२६, १२८	

अणुपदा	अणुपेहा १४२, ४३;	अणुसणिज्ज ५१५ से १०,
-अणुपदेज्ज ७६	२४६ से ५६; ३१२,	१२, १४, १५, २२ से २५,
-अणुपदेज्जा ११११	३, ७१४ से २१	२८, २९; ६४ से ८,
अणुपदातव्व ११३६	अणुप्पसूय १११२	११, १३, १४, २१ से २६,
अणुपविट्ठ १११, ४ से ८,	अणुलिपि	२६, ३०, ४६; ७२६,
११ से १७, २१, २३,	-अणुलिपित्ति १५२८	२७, २९, ३०, ३३,
२४, ३६, ४२, ४३,	अणुलिपित्ता १५२८	३४, ३६, ३७, ४०,
४६, ५०, ५२, ५३,	अणुवय	४१, ४३, ४४;
५५, ५८, ६१, ६२,	-अणुवयति ५४७, ६१५	८१, ८१
८२ से ८४, ८७, ८९,	अणुवीड २४७, ४३, ५,	अणोग्गहणसील १५६०,
९०, ९२ से ९४, ९६	३८, ७४, ६, ८,	६१
से ९६, १०१, १०२,	२३, ४६, ४९;	अणोज्जा १५२३
१०४ से ११६, १२३	१५५८, ६२	अणोवयमाण २३७
से १२६, १२८, १३३	अणुवीड्भासि १५५१	अण्ण(न्त) १३५, १०५;
से १३६, १४४ से	अणूणा १५२६, गा०२	२३०; ४५, १६;
१४७, १५१ से १५४,	अणोगाह ३१२, १३	५२०, ४८; ६१६,
६४६	अणेलिस्स १६१२	५६; ७२, ५० से ५२;
अणुपविस	अणुसणिज्ज १११, ४, ६,	१५४३, ५०
-अणुपविसिस्सामि १४६	१२ से १७, २१, २४,	अणत्तर(यर) १३, २४,
-अणुपविसिस्सज्जा ११२३,	३५, ३६, ४१, ६९ से	३१, ५१, ८८, ९६,
२३०, ३५६, ६०,	८०, ८२ से ८५, ८७,	१०४, १०६ से
५४८, ४९; ६५६,	८८, ९० से ९६,	१११, ११३ से ११६,
५७, ८१	१०२, १०४, १०६ से	१२५, १२६, १३२,
अणुपविसित्ता १३३,	११६, १२१, १२३,	१४३, १५५;
४७, २१; ७२, ८१	१२८, १३३ से १३६,	२३३, ६४, ६७;
अणुपविसित्ता ११२३	२४८, ५७ से ६०;	५१४, १५, १८, २१,
अणुपविस्समाण १३५		२२, ३६, ३६; ६१३,
		१४, १७, २०, ३६, ४१;



अण्णतर(यर)	७५६;	अतिहि	१।१६, १७, २१,	अदिन्न(ण्ण)	७।२ ;
१०।४ से ८; ११।१ से			२४, ४६, ५५, ५८,		१५।५७ से ६२
१८; १२।१ से १६;			१४७, १५४ ; २।७,	अदीणमाणस	१५।३७
१३।८, ९, १७, १८,			८, ३६, ३७, ३९, ४०;	अदुगुंछिय	१।२३
२४ से २७, ३२, ३४			३।२ से ५ ; ५।९,	अदुट्ट	१६।३
अण्णत्थ	२।१७, ७३ ;		१०, २० ; ६।८, ९,	अदुवा	४।२
८।२६			१९; ८।७, ८; ९।७,	अदूरगय	१।१२७, १३६
			८, १०।८, ९	अदूरसामंत	१५।३८
अण्णमण्ण	१।३२; २।५।१	अतीत	४।७	अदीणमाणस	१५।३४
से ५४, ७४; ५।४६,		अतुरियभासि	४।३८	अद्धजोयण	१।२६; ३।१४;
४७, ४८ ; ६।५४ से		अतेण	२।३०		५।४; ६।३
५६; ७।९, १६ से १९;		अत्तद्वियं	१।१२ से १६, १८,	अद्धट्टम	१५।८
८।२८, ९।१६			२२; २।३, ७, ९, ११,	अद्धणवम	१५।३
अण्णमण्णकिरिया			१३, १५, १७ ; ५।५	अद्धमासिय	१।२१
१४।१ से ७८			से ९, ११, १३; ६।४	अद्धहार	२।२४; ५।२७;
अण्णयसी	२।२५		से ८, १०, १२; ८।३		१३।७६; १४।७६;
अण्णया	१५।८		से ७, ९, ११, १३, १५;		१५।२८
अण्णसंभोइय	७।७		९।३ से ७, ९, ११, १३,	अघारणिज्ज	५।२९;
अण्हयकर	१५।४५, ४६		१५; १०।४ से ८, १०		६।३०
अण्हयकरी	४।१०, १२,	अत्थ	१५।२६, गा० १	अधिकरणीय	१५।४५, ४६
१४, २१, २३, २५,		अत्थिय	१।११८	अधुव	४।२. ५।२९, ६।३०
२७, २९, ३१, ३३,		अथिर	५।२९ ; ६।३०	अनिट्ठुर	४।११, १३,
३५,		अदट्ठुं	१५।७३		१५, २२, २४, २६,
अतिरिच्छच्छिन्न	१।४;	अदत्तहारि	५।४८, ६।५६		२८, ३०, ३२, ३४, ३६
७।२७, ३०, ३४, ३७,		अदिट्ठ	११।१९, १२।१६	अन्नउत्थिय	१।८ से ११
४१, ४४		अदिण्णादाण	७।१,	अन्नत्थ	१।१२४
अतिथि	१।४२, ४३		१५।५७ ६३	अन्नमन्न	२।२२

अन्नयर १।२५, ३३, ६३, ८७, १०१, १०८, १०९, ११३, ११५, ११६, २।१८, १९, २१, ४६, ७१	अपरिभुत्त ६।४ से ९, ११; ८।३ से ८, १०, १२, १४, ६।३ से ८, १०, १२, १४, १०।४ से ९	अप्य(अल्प) २।२, ३२, ५१ से ६१, ६९, ७६; ३।५, ४०, ४४ ४५; ५।२, २६, ३०, ६।२, ३०, ३१, ७।२७, २८, ३०, ३४, ३५, ३७, ३८, ४०, ४१, ४२, ४४, ४५, ८।२, २३, ३०; ६।२; १०।३, २८; १५।५७, ७१
अन्नोन्नकिरिया- सत्तिक्कय १४	अपरिसाड २।७६, ८।३० अपरिहृगिता २।३४ अपरिहारिय १।८ से ११, १२७, १३६	
अन्नोन्न १।१५५.२।६७, ५।२१, ८।२०, ७।५६, ८।२१	अपलिउचमाण ५।४१	
अपच्छिम् १।५।२५	अपमु ७।१	अप्य (आत्मन) १।५७, १२१, २।२३, २८, २९, ३८, ३।२२, ४४, ५९ से ६१, ५।२२, ४६, ४९, ६।२१, ५४ से ५८; ७।९, ५३, १५।३, ३६, ४१, ४३, ५०, ५७, ६४, ७१
अपडिलेहिय १।१४, २।७१, ७।३, ८।२५	अपाणय १५।२६, ३८ अपारग १६।१० अपावय १५।४५ अपाविय १५।४६	
अपडिसुणमाण ४।१२ से १५	अमुत्त ७।१	
अपमज्जिय १।५४, ७।३	अपुरिसंतर १।१२ से १७, २१, २४, २।३ से ८, १०, १२, १४, १६, ५।५ से १०, १२; ६।४ से ९, ११, ८।३ से ८, १०, १२, १४, ६।३ से ८, १०, १२, १४, १०।४ से ९	
अपरिणय १।६९, ११२		अप्यडट्टिय १६।१२
अपरितावणकरी ४।११, १३, १५, २२, २४, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३६		अप्यजूहिय १।४४
अपरिभुत्त. १।१२ से १७, २१, २४, २।३ से ८, १०, १२, १४, १६, ५।५ से १०, १२;		अप्यडिहारिय २।५९
		अप्यतर ३।१४
		अप्यत्तिय ७।२४
		अप्यसावज्जकिरिया २।४२
		अप्याद्वण ३।३

अप्याण ११३३, ३६; ३१२२, २६, ४४, ५६, ६१	अवहिया ११७, २१, २४; २१८, १०, १२, १४, १६; ५१०, १२; ६१०, १२; ८३ से ८, १०, १२, १४; ६३ से ८, १०, १२, १४, १०४ से ८, १०	अभिकंख -अभिकंखसि १६३, ६६, १३५; ५१२२ से २४, ४६ से ४८; ६१२१ से २४, २६, ५४ से ५६
अप्पुस्सुय ३१२२, २६, ४४, ५६, ६०, ६१; ५१४८, ४६; ६१५६ से ५८, १५११५	अवहिलेस्स ३१२२, २६, ४४, ५६ से ६१; ५१४८, ४६; ६१५६ से ५८	-अभिकंखेज्ज ६३८ -अभिकंखेज्जा २१, २८, २९, ५७, ६८, ६९, ७२, ७३; ५११, ३५ से ३८, ६११, ३६ से ४१; ७२५, २६, ३२, ३६, ३९, ४३; ८११, २२, २३, २६, २७, ६११, २
अफासुय १११, ४, ६, १२ से १७, २१, २४, ३६, ४१, ६३ से ८०, ८२ से ८५, ८७, ८८, ९० से ९६, १०२, १०४, १०६ से ११६, १२१, १२३, १२८, १३३ से १३६; २१४८, ५७ से ६०; ५१५ से १०, १२, १४, १५, २२ से २५, २८, २९; ६४ से ८, ११, १३, १४, २१ से २६, २९, ३०, ४६, ७२६, २७, २९, ३०, ३३, ३४, ३६, ३७, ४०, ४१, ४३, ४४; ८११; ६११	अब्भंग -अब्भंगाहि ६१२२ -अब्भंगेज्ज २१२१; ६१३२, ३५; १३११४, ५१; १४११४, ५१ -अब्भगेति(इ) २१५२; ७१७, १५१२८ अब्भगेत्ता ६१२२; १५१२८ अब्भुवगय ३११ अमज्जिय ११४ अमासा ४१६ अभिकंख ४११० से १५, २० से ३६	अभिकंख -अभिकंखसि १६३, ६६, १३५; ५१२२ से २४, ४६ से ४८; ६१२१ से २४, २६, ५४ से ५६ -अभिकंखेज्ज ६३८ -अभिकंखेज्जा २१, २८, २९, ५७, ६८, ६९, ७२, ७३; ५११, ३५ से ३८, ६११, ३६ से ४१; ७२५, २६, ३२, ३६, ३९, ४३; ८११, २२, २३, २६, २७, ६११, २ अभिककंत ११५, ३१६ अभिककंतकिरिया २१३६ अभिकखण २१३३; १५१६१, ६५ अभिगिण्ह -अभिगिण्हइ १५१३४ अभिगिण्हेत्ता १५१३५ अभिग्गह १५१३४, ३५ अभिनिक्खमण १५१२६, गा० १, १५१२७ अभिणिचारिय ३१४४

अभिद्व	१६२	अभिहय	१३५	अरह	१५२६, गा० ६
अभिपवुदु	३१	अभीरु	१६१	अरहंत	४१७
अभिप्याय	१५२६, २७	अभूतोवधाइया	४१११,	अराय	३१०, ११
अभिमुह	१५२८, २९		१३, १५, २२, २४,	अरिह	१५३६
अभिरुव	४२०, २२, ३०		२६, २८, ३०, ३२,	अरोय	१५८ से ११
अभिसंवार			३४, ३६	अलं	५१३०, ६३१
-अभिसंघारेज्ज	१३५,	अभेयणकरी	४१११, १३,	अलंकार	१५२६
	४२, ४३		१५, २२, २४, २६,	अलकिय	२१२४, १११६,
-अभिसंघारेज्जा	१२६,		२८, ३०, ३२, ३४,		१२१३
	२८, २९, ३२, ३४,		३६	अलसग	२१२१
	५१४, ६३; ११११	अमणुण्ण	१५१७२ से ७६	अलाउपाय	६१
से १८, १२१ से १६		अमयवास	१५१०	अलाम	२१६५, ६६;
-अभिसंघारेति	६१६	अमाया	२१४४		७५४, ५५
अभिसंघारेमाण	१२९	अमिल	५११४	अलित्त	३१९
अभिसंभूय	३१	अमुग	४११३	अलूसय	१६१४
अभिसमेक्ख	१५१४१	अमुच्छिय	११५७	अल्लीण	१५२४
अभिसेय	१५१११	अम्मा	१५११८	अवउज्जिय	११८६
अभिहट्ठ	११३५, १३६	अम्मापित्त	१५१२६	अवंगुण	
अभिहड	१११२ से १७,	अम्मापित्तसतिय	१५११६	-अवंगुणिज्ज	११५४
	२९, २३ से ८,	अम्मापियर	१५१३, २५	-अवगुणेज्जा	२१३०
	५१५ से १०, ६४	अम्ह	११२१	अवकख	
	से ९, ८३ से ८,	अयपाय	६१३	-अवकंखति	११४७,
	६३ से ७; १०१४ से ९	अयववण	६१४		१५४; ५१२०; ६१९
अभिहण		अरइय	१३२८ से ३४,	अवकमेत्ता	५३६
-अभिहणेज्ज	११८८ ;		६५ से ७१; १४२८	अवक्कम	
	२११६, ४६, ७१ ;		से ३४, ६५ से ७१	-अवकमेज्जा	५३६
	८२५; १५१४४,	अरण्ण	१५१५७	-अवक्कमे	१०१८
	४७, ४८				

-अवकमेज्जा १२,३, ४४,५१,५६,५८, १२३,१३५; ३०१५, ६४४२; १०१२८	अवहर -अवहरंतु ३१४० -अवहरेति ५१५०, ६१५८ -अवहरेज्ज ३१६,११, ६१; ५१५०; ६१५८	अस -संति १३२,४६,१२१, १२२,१३०; २१४४ -सिया १२,२८,३४, ३६,५१,५७,८७, १०२,१२३,१३१, १३३,१३५,१३६, १४३; २१८,२८, ३१२ से १४,२५, २६,३०,३४,३७, ४४,६०; ५१२२,२३, २६,२७,४७,४६; ६१२७,४७,५५,५७, १५५२ से ५५,६०, ६१,६५ से ६७,६६
-अवकमेति १५१२८ अवकमेत्ता १२,३,४४, ५१,५६,५८,१२३, १३५, ३०१५; ६४४२; १५१२८	अवहार १५१५ अवहाराड १४६ अवि १११ अविदलकड ११४ अविद्वत्थ ११६६,११२; ३०७,१३	असई असईय १०११ असखेज्ज १५१२६,गा० ५, १५१२७ असंजय ११२६,१०२, ५११२ असथड ४३२ असंलोय ११४४,५६,५७, ५८,१२३; १०१२८
अवट्टिय १५१४६,५६, ६३,७०,७७	अविद्वत्थ ११६६,११२; ३०७,१३	असंविज्जमाण ५३ असंसट्ट ११८१,१४१, १४३,१४८
अवड्डमाय १११६	अविद्वत्थ ११६६,११२; ३०७,१३	
अवणीयउवणीयवयण ४३,४	अविद्याई ११५७,१२१, १३०, २१३८; ३१५४,५७, ५१२२, ४७, ६१५५	
अवणीयवयण ४३,४	अवुक्कंत ११११२	
अवमाण १३५	अवोच्छिन्न ७२७,३०, ३४,३७,४१,४४	
अवमाण्य ४११६	अवोच्छिन्न १५१३४, ३७	
अवयव २११८	अवोच्छिन्न १५१३४, ३७	
अवर १५१२८, गा० १३	अवोच्छिन्न १५१३४, ३७	
अवलब	अवोच्छिन्न १५१३४, ३७	
-अवलंबेज्जा ८१७ से २०	अवोच्छिन्न १५१३४, ३७	
बलंवि १६२; ३४२	अवोच्छिन्न १५१३४, ३७	
बल्लय ३१६	अवोच्छिन्न १५१३४, ३७	
बहुट्टु ११८८; ६४४४, ४५	अवोच्छिन्न १५१३४, ३७	

असञ्चामोसा ४।६, १०,	असिणाणय २।२७	अहापञ्जत्त १।१३०
११	असित १६।७	अहापरिग्गहिय ५।४१
असज्ज १६।७	अमुद्ध १३।७८; १४।७८	अहापरिण्णात्त २।४७,
असण १।१, ११ से १७,	अमुम १५।५	७।४, ६, ८, २३, २५,
२१, २३ से २५, ३६	अमुय ११।१६-१२।१६	३२, ३६, ४६, ४६
से ४१, ४४, ४५, ५६,	अमुर १५।२८, गा० १२,	अहाबद्ध २।६०, ६१
५७, ६३ से ८१, ८४,	१३, १५।२६, ३६	अहावादर १५।२७
८५, ८७ से ९८,	असोगलया १५।२८	अहामग्ग १५।७८
१२१, १२३, १२७,	असोगवण १०।२७	अहाराम १०।२८
१२६, १४१, १४२,	अस्स १५।२८	अहारिय ३।२२,
१४५, १४८, १४९,	अस्संजय १।८२, ८३, ८५,	३४ से ३६
१५२, २।२८, ४८,	८८, ८९, ९१, ९५,	अहारिह १५।२५
४।२, २३, २४ ;	९६, १०४, २।१०,	अहालंद २।४७, ७।४, ६,
६।२६ ; ७।५;	१२, १४, १६, २१,	८, २३, २५, ३२, ३६,
११।१८, १२।१५,	३।१४; ६।६; ८।१०,	४६, ४६
१५।१३	१२, १४ ; ९।१०,	अहावर १।१४२ से १५३;
असणवण १०।२७	१२, १४	२।६४ से ६६, ५।१८
असत्यपरिणय १।१०६	अस्सकरण १०।१८	से २०, ६।१७ से
से ११०, ११३ से ११६	अस्सजुद्ध ११।१२, १२।६	१६; ७।५० से ५५,
असमणुन्नाय १।१२८	अस्सट्ठाणकरण ११।११,	८।१८ से २०;
असमाहड १।३६	१२।८	१५।४५ से ४८,
असमिय १५।४४, ४७	अस्सादा	५०, ५२ से ५५, ५७,
असावज्ज ४।११, १३,	-अस्सादेइ १५।७५	५६ से ६२, ६४,
१५, २२, २४, २६,	अह(अथ) १।१८	६६ से ६९, ७१,
२८, ३०, ३२, ३४, ३६	अह(अहन) १५।१३	७३ से ७६
असासिय १।५	अहाकप्प १५।७८	अहासंथड २।६६; ७।५५
असिणाइ १।४६	अहाणुपुब्बी १५।१४	अहासमण्णागय २।६५,
		७।५४

अहासुय	१५।७८	आइणसलेख	७।२१	आउसंत	१।३२, ५७,
अहासुहुम	१५।२७	आईणपाउरण	५।१५		१०१, १२७,
अहिय	१५।२८	आईय	१५।२६, गा० २		१३०, १३५; २।४७;
अहियास		आउ	१५।३		३।१७ से २१, ४४,
-अहियासइस्सामि		आउकाय	१।६३; २।४१,		४५, ५१, ५३, ५४,
	१५।३४		४२; १५।४२		५६ से ५८, ६१;
-अहियासेइ	१५।३७	आउकखय	१५।३, २५		५।१३, २२, ४६ से
अहुणा	३।१	आउज्ज	१५।२८,		४८, ५०, ६।२१,
अहुणाधोय	१।६६		गा० १७		२६, ५४ से ५६;
अहे(अवस्) १।२, ३, ३२,		आउट्ट			७।४, ६, ८, २३, २५,
५१, १३५; ५।३६;		-आउट्टामो	१।३२		३२, ३६, ४६, ४८
१५।२७ : १६।१०		-आउट्टावेज्जा	२।२५;	आएस	१।१२४; २।७२;
अहेगामिणी	३।१४		१३।७८; १४।७८		३।४७; ८।२६
अहेसणिज्ज	२।४४; ३।२,	-आउट्टे	१३।७८;	आएसण	२।३६ से ४२;
३; ५।४१			१४।७८		४।२१, २२
अहो(अवस्) १५।३८		-आउट्टेज्जा	२।२५	आकस	
अहोगंध	१।१०५	आउट्टित्तए	२।२५	-आकसाहि	३।९७
अहोणिसी	१५।३२,	आउय	१५।३	-आकसिस्सामो	३।१८
गा० १६		आउस	१।२५, ६३, ६६,	आकसित्तए	३।१८
आइ(ति) १५।१३, ४२			१०१, १२३, १३०,	आगतार	१।१०५;
आइक्ख			१३५, १४३, २।३४,		२।३३ से ३५, ४७,
-आइक्खइ	१५।४२		४२, ४७, ६३, ६४;		७।४, ६, ८, २३, ४६,
-आइक्खह	३।५४ से ५८		४।१३, १५; ५।१८,		४६
-आइक्खेज्जा	३।४५,		२२ से २६, ६।१७,	आगति	१५।३६
	५४ से ५८		२१ से २७; ७।४;	आगय(त)	३।६, ११,
आइण	१।३५, ४२, ४३		६, ८, २३, २५, ३२,		४।२; १५।७२ से ७६
आइणसंलिख	२।५६		३६, ४६, ४६, ५७	आगर	१।२८, ३४, १२२,

आगर २।१, ३।२, ३, ४५, ५७, ५८, ७।२, ८।१	आदि ८।१७ से २०	आमोसग ३।६०, ६१; ५।४६, ५०;
आगरमह १।२४	आविष १३।७६;	६।५७, ५८
आगसह	१।४७६	आयकं ५।२; ६।२
-आगसह ३।४४	आभरण ५।१५; १।११८;	आयक ५।१४
-आगसेज्जा ३।४४	१।२।५; १।५।२८,	आयतण १।१३६; २।३६
आगाढ २।१८	गा० ६; १।५।२६	से ४२, ६२; ३।४७,
आघंस	आभरणविचित्त ५।१५	४।५, २१, २२;
-आघंसंति २।५३; ७।१८	आम १।११५ से ११६	५।१६; ६।१५;
-आघंसाहि ६।२३	आमंति ४।१२ से १५	७।४७; ८।१६
-आघसेज्ज २।२१;	आमंतेमाण ४।१२ से १५	आयरिय १।१३०, १३१;
५।३१, ३३, ६।३३, ३६	आमग १।१०६ से ११०, ११३, ११४	२।७२; ३।४६ से ५।१; ८।२६
आघंसित्ता ५।२३, ६।२३	आमज्ज	आया
आघा	-आमज्जेज्ज १।५१, ३।३१, ३२ से ३८, ३६, ६।४८, ४६,	-आयए १।१३१
-आघाएज्जा १।१०५	१३।२, १२, १६,	आयाए १।३७, ३८, ४०, ४४, ५१, ५६, ५७, १२३, १३०, १३१;
आजिणग ५।१४	२८, ३६, ४६, ५६,	३।१५, ४।१, ५।४५;
आणट्टग १।५।२८, गा० १७	६५, ७७, १।४२,	६।४७ से ५०, ५३
आणा १।१५५, २।६७, ५।२१, ६।२०	१२, १६, २८, ३६, ४६, ५६, ६५, ७७	से ५८; १०।२८, १५।२६
७।५६, ८।०१, १५।४६, ५६, ६३, ७०, ७७, ७८	आमज्जमाण १।८५	आयाण(आदान) १।२६, ३२, ३५, ५१, ५६, ८५, ८८, ६१, ६५, १२३; २।१६, २१ से २५, ४६, ७१,
आतंक १।३१, २।२१	आमडाग १।११२	
आदाए १।१२७, ५।३६, ६।४२, ७।६	आमय १।१११	
	आमलगवाणग १।१०४	
	आमोय १०।१७	



आयाण(आदान) ३१६, ११,१३,४२,४६; ५१२७; ६१२८,४५; ८१२५	आरामागार ११०५; २१३३ से ३५,४७; ७४,६,८,२३,४६, ४६	१२३,१२७,१३१, १३५,१३६,१३८, १४३; २६३,६४; ५१८,२२ से २६; ६१७,२१ से २७; ७६
आयाणभंडमत्त- णिकखेवणा १५१७	आराहिय " १५४६,५६, ६३,७०,७७,७८	७६
आयाम ११०१,१५१	आरुह १५१२८, गा १०	आलोय १६२
आयाय ११२	-आरुहइ १५१२८, गा १०	आलोयणा २१२५
आयार २१३६,३७,३६ से ४२; ४१	-आरुहेज्जा ११८८	आवज्ज ११३२; -आवज्जेज्जा ११३२; १५१७२ से ७६
आयाव	आलइय १५१२८, गा ६	आवज्जमाण १५१७२ से ७६
-आयावेज्ज ११५१; २१२१; ३१३१,३६; ५१३५ से ३६; ६१३८ से ४२,४८,४६	आलय १५१३४	आवडिय ११३५
आयावण १५१३८	आलिग ६११६	आवास १६११
आयाविय २१६६; ८१२३	-आलिगेज्ज ६११६	आविहत्ता १११२६
आयावेत्तए २१२६; ५१३५ से ३८, ६१३८ से ४१	आलिप १५१३२	आविघ १५१२८
आयावेमाण १५१३८	-आलिपेज्ज १३१८,१७, २४,३२,४५,५४, ६१,६६; १४१८, १७,२४,३२,४५, ५४,६१,६६	-आविधावेत्ति १५१२८
आयाहिण १५१२८	आलिक्ख १५१३२	आविधावेत्ता १५१२८
आरंम २१४१,४२, १६१	आलोहत्ता १५१२५	आवीकम्म १५१३६
आरंमकड ४१२२,२४	आलोइय १५१४८	आवीलियाण ११०४
आराम ११२,३२,१३५; १०१२०; १११८; १२१५; १३१७७; १४१७७	आलोएत्तए १५१६६	आस ११५२, ३१४५,५६
	आलोएमाण १५१६६	आसण ४१२६; १५१६६
	आलोय	आसम ११२८,३४,१२२; २११; ३१२,३,४५, ५७,५८; ७१२; ८११; १११७; १११४
	-आलोएज्जा ११२५,५७, ६३,६६,१०१,	

आसय	२।७५; ८।२६	-आहंसु	१।४६, १३८	-आहारेब्जा	१।३३, ४७,
आसव		-आहि	१६।१०		-१२३
-आसवति	३।२२	आहच	१।२, १३५, १३६,	-आहारेज्जासि	१।१३६
आसवमाण	३।२२		२।१८, ६।४७	आहारातिणिय	३।५१,
आसाढसुद्ध	१।५।३	आहट्टु	१।१२ से १७,		५२, ५३
आसाय	१।१०५		२५, २६, ५६, ५७,	आहारेत्तए	१।३३
आसाय			६३, ८६, ६५, १०२,	आहिज्ज	
-आसाएज्जा	२।७४,		१०४, १२३, २।३ से	-आहिज्जंति	१।५।६६,
	३।२७, ३५, ५०, ५२;		८; ५।५ से १०,		१७, १८, २३, २४
	८।२८		६।४ से ६, ४६;	आहिय	१६।११
आसित्ता	१।३१		८।३ से ७,	आहुय	१।५।१२ १३
आसेविय(त)	१।१२ से		१०।४ से ६	आहेण	१।४२, ४३
	१६, १८, २२, २।३	आहड	१।१२३		
	३ से ७, ९, ११, १३, १५,	आहय	१।१।१४, १२।११		
	१७, ५।५ से ६, ११,	आहर			
	१३; ६।४ से ८, १०,	-आहर	३।१८, ६१,	इ	१।१३१
	१२; ८।३ से ७, ६,		५।२२ से २५, ५०,	इ	
	११, १३, १५;		६।२१ से २५, ५८	-एइ	४।२
	६।३ से ७, ९, ११, १३,	-आहरई	१।१३२	-एहिति	४।२
	१५, १०।४ से ८,	-आहरह	१।१३८, १३६	इगालकम्मत्त	२।३६ से ४२,
	१०	आहाकम्मिय	१।२६,		३।४७, ४।२१, २२
आसोत्थयवाल	१।१०६		१२१, १२३, २।३८,	इगालजाह	१०।२३
आसोत्थयमथु	१।१११		६।२६	इदमह	१।२४
असोय	१।५।५	आहार	१।३३, ४७, १२३,	इंदिय	४।२६; १।५।६६
आह			१२७	इंदियजाय(त)	१।८८,
-आहिज्जंति	१।५।२३,	आहार			२।१६, ४६, ७१;
	२४	-आहरिस्सामि	१।१३६		८।२५

इक्कड २।६३, ६५; ७।५४	ईसाण १५।२८, गा० ११	उगह १।५४
इक्कागकुल १।२३	इसि १५।२८, २९	उच्चार १।५१; २।१८,
इच्छ १।१३०	ईहामिय १५।२८	३०, ७१; १०।१ से २८
-इच्छइ १।१३०	उ १।२१	उच्चार
-इच्छेज्जा ७।२६, ३३,	उउ १।२१	-उच्चारिज्जा १५।४६
४०; ८।१६	उंछ २।४४; ३।२, ३	उच्चारपासवणभूमि
इट्ट १।११६, १।२।६	उंवरमंथु १।१११	२।७०, ७१; ८।२४, २५
इट्टि १५।२७	उक्कंविय २।१०; ८।१०,	उच्चारपासवण-
इतरेतर १।३३, ४७;	६।१०	-सत्तिक्कय १०
३।३८ से ४०	उक्कस	उच्चावय २।२३ से २५;
इयराइयर २।४१।४२	-उक्कसाहि ३।१७	३।२६, ४४
इति १।२५	-उक्कसिस्सामो ३।१८	उच्छु १।११६; ७।३३ से
इत्थ १।४६	-उक्कसेज्जा ३।१४	३५
इत्थिय २।२०	उक्कसित्तए ३।१८	उच्छुगंडिय १।१३३,
इत्थिविगह १।३२	उक्किट्ट १५।२७	७।३६ से ३८
इत्थी ४।५, १४, १५;	उक्कुज्जिय १।८६	उच्छुचोयग १।१३३,
७।१४; ११।१८;	उक्कुट्ट १।८०	७।३६ से ३८
१२।१५; १५।६५,	उक्कुडुय २।६५, ६६;	उच्छुडगल १।१३३;
६६, ६७, ६९; १६।७	७।५४, ५५; १५।३८	७।३६ से ३८
इत्थीवयण ४।३, ४	उक्ख १।२१, २४	उच्छुमेरग १।११३
इदाणि १।१३६	उक्खलुंपिय १।६२	उच्छुमेला १।१३३
इम २।४४	उक्खित्त २।४४; १५।२८,	उच्छुवण ७।३२
इयर २।४१	गा १२	उच्छुसालग १।१३३;
इरिया १५।४४	उक्खिप्प ३।६	७।३६ से ३८
इहलोइय १।११६	उक्खिप्पमाण १।४६	उच्छोल
ईसर २।४७; ७।४, ६, ८,	उगिज्जिय ७।५, ७	-उच्छोल्लेति २।५४,
२३, २५, ३२, ३६,	उगकुल १।२३	७।१६
४६, ४९	उगय १५।२८	

-उच्छ्रोलेज्ज १।६३,	उज्झिम्य १।१३३, १३४,	उत्तिग २।१, २, ३१,
२।१८, २१; ५।३२,	१।४७, १।५४	३२, ५।७ से ६१, ६८,
३४, ६।३४, ३७,	उज्झिम्यवम्मिय ५।२०,	६६; ३।१, ४, ५, २१,
१३।७, १६, २३, ३२,	६।१६	२२, ५।२८, २६, ३०,
४४, ५३, ६०, ६६,	उट्ट ५।१५	३५; ६।२६ से ३१,
१।४।७, १६, २३, ३२,	उड्डवद्धिय २।३४, ३५	३८; ७।१०, २६
४४, ५३, ६०, ६६	उड्डुय २।७५; ८।२६	से ३१, ३३ से ३८,
-उच्छ्रोलेहि १।६३,	उड्डु १।५।२७, ३८,	४० से ४५; ८।१,
५।२४, ६।२४	उड्डुगामिणी ३।१४	२, २२, २३; ६।१, २;
उच्छ्रोलेत्ता १।६३,	उण्णमिय १।६२, ३।१६,	१०।२, ३, ४, २८
५।२४, ६।२४	उट्ट ४७	उदउल्ल १।६४, ६५,
उज्जुवाल्या १।५।३८	उत्तम १।५।२८, गा० १० ३	१०२, ३।३०, ३१,
उज्जाण ४।२६, ३०;	उत्तर	३७, ३८, ६।४८
१०।२०; ११।८,	-उत्तरेज्जा ३।४२	उदग ३।२५ से ३०, ३७,
१२।५; १३।७७,	उत्तर १।५।२७, २८	५५; ६।४७
१४।७७, १५।२६	गा० १३, १५।३८	उदगदोणि ४।२६
उज्जाल	उत्तरखत्तियकुण्डपुर	उदगपमूय ३।५५
-उज्जालेतु २।२३	१।५।५, २७, २६	उदगप्पसूय २।१४;
-उज्जालेज्ज २।२१, २३,	उत्तरगुण १।५।२५	८।१४; ६।१४
२६	उत्तरपुरत्तियम १।५।२७,	उदय(उदक) १।२, ४२,
उज्जालिया २।४०, ४१	३८	४३, ५।१, ८२, ८३,
उज्जालेत्ता २।२१	उत्तरिज्जग ५।१६	१०२, १३५; २।१,
उज्जुय १।५।०, ५२, ५३,	उत्तस	२, ३१, ३२, ४६, ५७ से
६१, २।४४; ३।६,	-उत्तसेज्ज ३।४६	६१, ६८, ६६; ३।१,
७, ४।१, ४३	उत्ताण १।१३१, ७।६	४, ५, ७, १३, १४, २०,
उज्जोय १।५।६, ४०	उत्तिग १।२, ४२, ४३, ५१,	२२, ३४ से ३६, ४५,
उज्झर १।१५; १।२२	८२, ८३, १०२, १३५;	५५, ५६, ६०;

उदय(उदक) ५।२८ से	-उद्वेतु २।२२	उन्भव १५।३
३०, ३५, ४८, ४९;	उद्वणकरी ४।१०, १२,	उन्भिन्न ३।१
६।२९ से ३१, ३८,	१४, २१, २३, २५,	उन्भिय १।८३, १३६
५६, ५७; ७।१०, १४,	२७, २९, ३१, ३३, ३५	उन्भिदमाण १।९१
२६ से ३१, ३३ से ३८,	उद्दिसिय १।६२; २।६३;	उन्मग ३।२८, ४०, ५६,
४० से ४५; ८।१, २,	३।४७; ५।१७; ६।१६	६०; ५।४८, ४९;
२२, २३; ९।१, २;	उद्देसिय १।२९;	६।५६, ५७
१०।२, ३, १४, २८	१०।४ से ९	उन्मिस्त १।१, २
उदय(उदय) १५।२६गार	उदघट्ट ३।६	उरत्य १३।७६; १४।७६;
उदर १।८८; २।१९, ४६,	उपासग ४।१३	१५।२८
७१; ३।२१; ८।२५	उप्यइत्ता १५।२७	उराल १५।१५, १६
उदरी ४।१९	उप्यज्ज	उल्लोयण १५।२८
उदाहु १।१३६	-उप्यजंति १५।३४	उल्लोल १५।२८
उदि १।१३६	उप्यण १५।४१, ४२	-उल्लोलज्ज १३।६, १५,
-उदेउ ४।१६	उप्यणि	२२, ३१, ४३, ५२,
उदीण १।२७, १२१,	-उप्यणिति १।८२	५६, ६८; १४।६, १५,
१४३, १५०;	-उप्यणिसु १।८२	२२, ३१, ४३, ५२,
२।३६ से ४२	-उप्यणिस्संति १।८२	५६, ६८
उदीरिय १६।३, ६	उप्यय	-उल्लोलेति १५।२८
उदूहल १।८८, २।१६	-उप्ययंति १५।२७	उल्लोलेत्ता १५।२८
उद्व १।८८, २।१६	उप्ययत १५।९, ४०	उवएस १।५६, ८५, ९१,
-उद्वंति ३।६१;	उप्यल १।११४; १।१५;	९५, १२३; २।१९,
५।५०; ६।५८	१।२।२	२१ से २५, २७ से ३०,
-उद्वेति २।२२ से ५१;	उप्यलनाल १।११४	४६, ७१; ३।९, ११,
७।१६	उप्यजलग १५।९, ४०	१३, ४९; ५।२७;
-उद्वेज्ज ३।९, ११;	उप्यील	६।२८, ४५; ८।२५
१५।४४, ४७, ४८	-उप्यीलावेज्जा ३।१४	
	उप्येस ३।२५	

उवकर	उवट्ट	उवरय
-उवकरेसु ६।२६	-उवट्टेज्ज १।५१;	१।१२१; २।२५,
-उवकरेज्ज १।१२३,	३।३१; ६।४८, ४९;	३८; १६।९
२।२८	-उव्वट्टेज्ज २।२१	उवट्टवरि ३।२२
-उवकरेहि १।१२३,	उवट्टाण २।३५	उवलित्त १।५१
६।२६	उवट्टिय १।१५५; २।६७,	उवल्लिय
उवकरेत्ता ६।२६	५।२१, ६।२०;	-उवल्लिएज्जा ३।१ से
उवक्खड ७।५६; ८।२१;		३; ७।५४
-उवक्खडावेति १।५।१३	१।५।२७	-उवल्लियइ २।३०
-उवक्खडेमु ६।२, ६	उवणिकित्त १।८७, १।४३	-उवल्लिस्तमि
-उवक्खडेज्ज १।१२३;	उवणिमंत	७।५० से ५२
२।२८	-उवणिमतेति १।५।१३	उवल्लोण २।५५; ७।२०
-उवक्खडेहि १।१२३,	-उवणिमतेज्जा १।१३५,	उववण १।५।२५
६।२६	७।५, ७	उववाय १।५।३९
उवक्खडावेत्ता १।५।१३	उवणिमतेत्ता १।५।१३	उवसंकम
उवक्खडिज्जमाण १।१२४	उवणीय १।५।२८, गा०७	-उवसंकमति १।४९
उवक्खडिय १।४५,	उवणीयअवणीयवयण	-उवसंकमामि १।४९
२।२८, ४।२३, २४	४।३, ४	उवसंकमित्तु १।३२, १२४,
उवक्खडेत्ता १।१२३;	उवणीयवयण ४।३, ४	३।२२, ६१; ५।४६,
६।२६	उवदसिय ३।१६	४७, ४८, ५०; ६।५४
उवगय(त) १।५।४, ७, ८,	उवदिट्ठ १।५६, ८५, ९१,	से ५६
२६, २९, ३८	९५, १२३; २।१९,	उवसंखडिज्जमाण १।४४
उवगरण ३।६०, ६१	२१ से २५, २७ से	उवसग्ग २।७६, ८।३०;
उवचरय २।३०, ३।९, ११	३०, ४६, ७१; ३।९,	६।५।३४, ३७
उवच्चिय ४।२६	११, १३, ४९,	उवसज्ज
उवज्जाय १।१३०, १३१	५।२७, ६।२८, ४५;	-उवसज्जेज्जा ८।१७
२।७२, ३।४९ से	८।२५	से २०
५१, ८।२६		

उवस्सय ११२, २६, ३२, १३५; २११ से ८, १०, १२, १४, १६, १८ से २५, २७ से ३२, ३८, ४५ से ५६, ६५; ४१२६; ७१४ से २१; १०१२८	उवागच्छिताए ७१२५, ३२, ३६ उवागच्छिता २१३८ से ४२; १५१२७ से २६ उवागत(य) ११४२; ४३; ३१२ से ५; १५१३, ५ उवातिणावित्ता २१३४, ३५ उवासिया ४११५ उवित्तु १११४३ उवे -उवेति १६११ उवेह -उवेहेज्जा ११५७, १२३; ३११७ से २१, २४, ५४ से ५८, ६१; ५१५०; ६१५८ उवेहमाए १६१४ उव्वट्ट -उव्वट्टेति २१५३; ७११८ -उव्वट्टेज्ज २१२१ उव्वत्तमाण ११८५ उव्वल -उव्वलेति २१५३; ७११८ -उव्वलेज्ज ११५१; २१२१; ३१३१, ३२, ३६;	-उव्वलेज्ज ६१४८, ४६; १३१६, १५, २३, ३१, ४३, ५२, ५६; १४१६, १५, २२, ३१, ४३, ५२, ५६ उव्वाय १५१२६, ३१ उव्वाह -उव्वाहेज्जा २१२१ उव्वाहिज्जमाण २१३०; १०११ उव्वेड्ड -उव्वेड्डिज्ज ३१२५ उस ११५१, ८२, ८३, १०२, १३५; २११, २, ३१, ३२, ५७ से ६१, ६८, ६९, ५१२८ से ३०, ३५, ६१२६, ३०, ३८; ७११०, २६ से ३१, ३३ से ३८, ४० से ४५; ८११, २, २२, २३, ६११, २; १०१२, ३, १४, २८ उसम ११५१२८ उसमदत्त ११५३, ६ उसिण ४१३७ उसिणोदग ११६२; २११८, २१, ५४;
---	--	--

उसिणोदग	५।२४, ३२,	उत्स	एगज्ज	१।३२	
३४; ६।२४, ३४, ३७;		-उत्ससेज्ज	२।७५;	एगतिथ	१।५७
७।१६; १३।७, १६,			८।२६	एगया	२।७६
२३, ३२, ४४, ५३,		ए		एगवयण	४।३, ४
६०, ६६; १४।७,		ए		एगाभोय	३।१५
१६, २३, ३२, ४४,		-एह	३।५१, ५३	एगावली	२।२४; ५।२७;
५३, ६०, ६६		एग	१।१२, १४		१।५।२८
उमुयाल	५।३६, ६।३६,		१।५।२६ गा० २	एगाह	३।१२; ५।४६;
७।११		एगइय	१।३१, ३२, ४६,		४७; ६।५४, ५५
उत्सविय	१।८८		४७, ५७, १२१ से	एज्ज	
उत्सास	१।५।२५		१२३, १३०, १३१,	-एज्जासि	६।२१
उत्सासमाण	२।७५;		१३२, १३८, १४३,	-एज्जाहि	५।२२
८।२६			१५०; २।३६ से ४२,	एताव	१।५।४६
उत्सिच			४४; ४।१६ से २१,	एत्ता	२।४७, ७।४, ६, ८,
-उत्सिचआहि	३।२०		३५, ३६; ५।४६,		२३, २५, ३२, ३६,
-उत्सिचेज्जा	३।१४		४७; ६।५४, ५५;		४६, ४६
उत्सिचण	३।२०, २१		१११ से १६,	एत्तो	१।२५, ६३, १०१,
उत्सिचमाण	१।८५		१२।१ से १३		१३८; २।६३, ६४,
उत्सिचियाण	१।१०१	एगंत	१।२, ३, ४४, ५१,		३।५४ से ५६, ५८,
उत्सुय	१।५।१५		५६, ५८, १२३,		५।१८; ६।१७
उत्सुयभूय	१।३३		१३५; ३।१४;	एत्थ	१।६८; २।३०;
उत्सेइम	१।६६		५।३६; ६।४२,		३।४५; ४।२
ऊ			१।५।२८	एय	१।२६
ऊ १।८८, २।१६, ४६,		एगंतगय	३।२२, २६, ४४,	एयप्पगार	१।१२१, १३५;
७१; ३।२१, ८।२५			५६ से ६१; ५।४८,		२।२५, ३६, ३।२२,
ऊत्त	१।६८, ६६		४६; ६।५६, ५७,		२५, ४५, ६१; ४।१२
ऊत्त	१।५७, २।१६,		५८; १०।२८		से १६, २० से ३६;
४।२४, ३४					



एयप्पगार ५१२२ से २५,४७,५०; ६१२१ से २५,५५,५८	एसिय ११३३,४६,१२३, ७५,७	ओघाययण १०१२४
एयाणि ५१२५	ओ	ओट्टुच्छिन्न ४१९६
एयारुव १५१३४	ओगाह	ओणमिय ११६२; ३१९६, ४७
एरिसिय २१२४	-ओगाहिस्सामि ३१२६	ओद्वट्ट १११०२
एव ११२	-ओगाहेज्जा ३११४	ओभास ११५८, ५६,१२४
एवं १११८	ओगिण्ह	ओमचेलिय ५१४१
एस ११५६	-ओगिण्हिस्सामि ७५० से ५३	ओमाण ११३५
एसणा ११६१; २१४४, ५१२२, ६१२१, १६१२	-ओगिण्हिस्सामो ७४, ६,८, २३, २५, ३२, ३६, ४६, ४९	ओमुय १५१२६
एसणिज्ज ११५, ७, १८, २२, २३, २५, ३६, ८१, १००, १०१, १२८, १४१ से १४६, १५१ से १५४; २१६१, ६३, ६४; ५१११, १२, १३, १७ से २०, ३०; ६११०, १२, १६ से १६, ३१, ७२८, ३१, ३५, ३८, ४२, ४५, ६११	-ओगिण्हेज्ज ७३, १० से २१	ओमुयह १५१२६
	-ओगिण्हेज्जा १५१६०, ६२	ओयंसि ४१२०
	ओगिण्हित्तए ७४८	ओयत्तियाणं १११०१
	ओगाह ७३ से २१, २३ से २६, ३२, ३३, ३६, ४०, ४६ से ५५, ५७, १५१६०, ६१	ओयस्सि २१२५
	ओग्गहणसीलय १५१६०, ६१	ओयारेमाण ११८५
एसमाण ५१२२, ६१२१	ओग्गहपड्डिमा ७	ओलिपमाण ११६१
एसित्तए २११, ५७, ६२; ५११, १६; ६११, १५	ओग्गहिय ७५५, ७, ६, २४, २६, ३३, ४०, ४७, १५१६०, ६१	ओलित्त ११६०, ६१
एसित्ता १११२३		ओवय २१३३
		-ओवएज्जा २१३३
		-ओवयंति २१३६, ३७
		ओवयंत १५१६, ४०
		ओवयमाण २१३०, ३६, ३७, १५१२७
		ओवाय ११५३
		ओविय १५१२८

ओस	१।२, ४२, ४३, ३।१, ४, ५	कंद	८।१४; ६।१४; १०।१२, १५, १३।७८, १४।७८	कज्जलाव	
ओसविकय	१।६५	कदर	१५।१४	-कज्जलावेति	३।२२
ओसत्त	१५।२८ गा० ७	कदरकम्मत्त	२।३६ से ४२, ३।४७, ४।२१, २२	कज्जलावेमाण	३।२२
ओसप्पिणी	१५।३	कदलया	१५।२८	कट्टु	१।२२, १३१, १३८, २।२१, २६; ३।६, ६, ११, १४, २२, ६१; ५।३१ से ३४, ४८, ५०, ६।३२ से ३७, ५६, ५८; ७।६; १५।५, १६, २६, ३१, ३२
ओसहि	१।४, ५, ४।३३, ३४	कदलीऊमुय	१।११६	कट्टु	१।५१
ओसित्त	१।१, ३५	कवल	३।६, ११, ६१	कट्टुकम्म	१।२।१
ओह	१६।१०	कंबलग	५।१४	कट्टुकम्मत्त	२।३६ से ४२; ३।४७, ४।२१, २२
ओहरिय	१।८६, ६५	कस (पाय)	६।१३	कट्टुकरण	१५।३६
क		कसतालसह	११।३	कट्टुसिला	७।५५
कओ	३।५१, ५३	कक्क	२।२१, ५३, ५।२३, ३१, ३३, ६।२३, ३३, ३६, ७।१८; १३।६, १५, २२, ३१, ४३, ५२, ५६, ६८; १४।६, १५, २२, ३१, ४३, ५२, ५६, ६८	कड	१।१२ से १८, २१, २२, २४, २।३ से १७; ५।५ से १३; ६।४ से १२, १५।३६
कख		कक्कस	४।१०, १२, १४, २१, २३, २५, २७, २६, ३१, ३३, ३५	कडग	२।२४; ५।२७
-कखेज्जा	३।४६, ५६, ६०, ५।४८, ४६, ६।५६, ५७	कक्कखड	४।३७	कडव	१०।१७
कचि	१।६३	कक्कखरोम	१३।३७, ७४, १४।३७, ७४	कडिय	२।१०, ८।१०; ६।१०
कटकवोदिय	१।५४	कच्छ	३।४८, ११।६; १२।३	कडुय	१।१३८; ४।१०, १२, १४, २१, २३, २५, २७, २६, ३१,
कंटय(ग)	१।५३, १३४, १३५, १३।१०, ४७, १४।१०, ४७				
कंत	११।१६; १२।१६, १५।२८				
कद	२।१४, ३।५५, ५।२५; ६।२५,				

कडुय	४३३, ३५, ३७	कणसोय	१११ से १८	कम्मकरी	२१२, २५, ३६ से
कडुवेयणा	१३१७६;	कणसोहणय	७६		४२, ५१ से ५५, ६४,
	१४१७६	कण्ह	४३७		५१८; ६१७,
कट्टावेत्तु	१३१७८;	कण्हराइ	१५१२६ गा० ५		७१६ से २०
	१४१७८	कन्न	११६६	कम्मभूमि	१५१२६ गा० ४
कड्ढेत्तु	१३१७८;	कण्जिलकरण	१०११८	कम्मार	१५३५
	१४१७८	कप्प		कय	१०१११; १५११६
कठिण	२१६३, ६५;	-कप्पइ	११२१, १२३,	कयाइ	१५१८
	७५४		१३५; २१२५, ३०,	कर	
कर्ण	११११६		३८; ५१२२, २५,	-अकासी	२३०
कर्णकुडग	११११६		६१२१, २५, २६	-करिस्तु	१५१११
कर्णग(य)	५११५;	-कप्पेज्ज	१३३७, ७४,	-करिस्संति	१५१२५
	१५१२६, २८		१४३७, ७४	-करिस्सामि	७१
कर्णगकत	५११५	कप्प	२३४, ३५, ३४, ५,	-करेइ	३४४; १५१२८,
कर्णगखडय	५११५		१५१२५, २६ गा० ५		३०, ३२
कर्णगपट्ट	५११५	कप्पखल्ल	१५१२८	-करेति	५४७; ६४५, १५१३
कर्णगफुसिय	५११५	कम	१५३६		
कर्णगावलि	२१२४;	कम्म	२४१, ४२; ७१;	-करेज्जा	१३३, ४६,
	५१२७		१५१११, २८		४६, ५७, ६१, १२३,
कर्णपूयलिय	११११६	कम्मकर	१२५, ४६, ६३,		१२५ से १२७, १३०
कर्णियारवण	१५१२८		१२१, १२२, १४३;		से १३२, १३८;
	गा० १५		२१२२, २५, ३६ से		२१२७, ७५; ३१५,
कर्णुय	१११४		४२, ५१ से ५५, ६४;		२५, २८, ४०, ५१ ;
कर्ण	३१२८		५११८; ६१७;		५४६ से ४८;
कर्णछिन्न	४११६		७१६ से २०		६४५ से ५६;
कर्णमल	१३३६, ७३;	कम्मकरी	१२५, ४६, ६३,-		७२४; ८२६;
	१४३६, ७३		१२१, १२२, १४३;		१५४३

-कारवेज्जा	१५।४३	कविट्टसरड्डय	१।११०	कामभोग	१५।१५
-कीरति	१।१३६	कवोयकरण	१०।१८	काय	१।३५, ५।१, ८८;
-कुञ्जा	१।२६, २।१२,	कवोयजुद्ध	१।११२,		२।१६, २।१, ४६, ७१,
	३।६१; ५।४६,		१२।६		७३, ७४, ३।१५, २।१,
	४८, ५०, ६।५४,	कवोयट्टाणकरण	१।१११,		२७, ३० से ३२, ३४
	८।१२; ९।१२		१२।८		से ३६, ५०, ५२, ५६,
करत्त	१५।४३	कव्वड	१।२८, ३४, १२२,		६०, ४।२५, २६,
करणिज्ज	३।६१; ४।२१,		२।१, ३।२, ३, ४५,		५।४८, ४६, ६।५६,
	२३, ५।५०, ६।५८,		५७, ५८, ७।२, ८।१		५७, ८।१७ से २०,
	७।६	कसाय	१।१२६, १३८,		२५, २७, २८, ९।१६,
करीरपणग	१।१०४		४।३७		१३।१२ से ३५, ४६
करेत्ता	३।१५, १५।५,	कसिण	१।४, १५।१, ३८		से ७२, १४।१२ से
	२८, ३२	कत्तेस्स	१।११३		३५, ४६ से ७२,
करेमाण	२।७५, ८।२६	कहइत्तए	१५।६५		१५।३४, ३५, ३७,
कलंकलीभाव	१६।१२	कहक्कह	१५।६, ४०		४३, ४६, ५०, ५६,
कलह	१।११५, १२।१२	कहमाण	१५।६५		५७, ६३, ६४, ७०,
कलिय	१५।२८	कहा	१५।६५		७१, ७७, ७८
कलुण	२।२१, ३।६१,	कहिं	३।५१, ५३	काय(पाय)	६।१३
	५।५०, ६।५८	कहिय	१५।३६	कायक	५।१४
कलोवाइ	१।२१, २।४	काणग	१।११६	काय(बिंघग)	६।१४
कल्लाण	४।२१, २३	काणिय	४।१६	कायव्व	१।१३६
कवाल	१।३५	काम	१।१३०, १३६;	कारण	१।५६, ८५, ९१,
कविजलजुद्ध	१।११२,		२।४७, ७।४, ६८,		९५ १२३; २।१८,
	१२।६		२३, २५, ३२, ३६,		१६, २१ से २५, २७
			४६, ४६		से २८, ४६, ७१;
कविजलट्टाणकरण		कामगुण	१६।७		३।६, ११, १३, ४६,
	१।१११; १२।८	कामजल	५।३६, ६।३६,		५।२७, ६।२८, ४५;
कविट्टाणग	१।१०४		७।११		८।२५

कारिय	१०।११	किरिया	२।३४, ३५;	कुक्कुडकरण	१०।१८
काल	१।३३, ४७, १०६;		१०।१	कुक्कुडजाइय	१।६१
	१५।१, ४, ८, २५,	किलाम		कुक्कुडजुद्ध	११।१२,
	२६, २८ गा० १४	-किलामेज्ज	१।८८,		१२।६
कालमाय	१५।२६		२।१६, ४६, ७१;	कुक्कुडट्टाणकरण	११।११;
कालमास	१५।२५		८।२५		१२।८
कालाइवकंत	२।३४	किलीब	१।३२	कुक्कुस	१।७६, ८०
कास		किवण	१।१६, १७, २१,	कुच्चग	२।६३, ६५, ७।५४
-कासेज्ज	२।७५; ८।२६		४२, ४३, १४७,	कुच्चमाण	२।४४
कासमाण	२।७५; ८।२६		१५४; २।७, ८, ३६,	कुच्छि	१५।३, ५, ६, १२,
कासवगोत्त	१५।५, १५,		३७, ३६, ४०; ३।२		१३
	१७, १६, २०, २१, २३	से ५; ५।६, १०, २०;		कुट्टि	४।१६
कासवणालिय	१।११८		६।८, ६, १६; ८।३	कुणिय	४।१६
किचि	१।१२६, १३१	से ८; ६।३ से ७,		कुपक्क	४।१२, १४
किच्च	२।४१, ४२	१०।८, ६; १५।१३		कुप्प	
किच्चा	३।१५, ३४;	किविण	१।२४, ४६	-कुप्पति	४।१६, २०
	१५।२५	कीय	१।१२, १७; २।३	कुमार	१५।१३
किट्टरासि	१।३, ५१,	से ८; ५।५ से १०,		कुमारी	२।२४
	१३५, ५।३६; ६।४२	१२; ६।४ से ६;		कुराइ	१।४१
किट्टिता	१५।७८	८।३ से ८; ६।३ से		कुल	१।१, ४ से ८, ११ से
किट्टिय	१५।४६, ५६,	७, १०।४ से ६			१७, १६, २१, २३,
	६३, ७०, ७७	कीयगह	१।२६		२४, ३३, ३६, ३७,
किण		कुजर	१५।२८, १६।२		४० से ४७, ४६, ५०,
-किणेज्ज	२।२६; ३, १४	कुंडल	२।२४, ५।२७,		५२ से ५५, ५८, ६१,
किण्हमिगाईणग	५।१५		१५।२६ गा० ३		६२, ८२ से ८४, ८७,
किम्	३।५१	कुमिपक्क	१।११८		८६, ६०, ६२ से ६४,
किरिकिरियसद्	१।१३	कंभीमुह	१।२१, २४		

कुल १।६६ से ६८, १०१,	कूरकम्म ३।२६	कोडिण्णागोत्त १५।२२
१०२, १०४ से ११६,	केयइवण १०।२७	कोयहा(वा?) ५।१४
१२२ से १२६, १२८,	केवडय ३।४५ ५७, ५८	कोलज्जाय १।८६
१३३ से १३६, १४४	केवलवरनाणदंसण	कोलपाणय १।१०४
से १४७, १५१ से	१५।१, ३८, ४०	कोलमुणय १।५२; ३।५६
१५४, २।२१, ३०,	केवलि १।२८, ३२, ३५,	कोलावास १।५१, ८२,
३३ से ३५, ४७ से	५१, ५६, ८५, ८८,	८३, १०२; ५।३५;
५०, ५।४२, ४५,	६१, ६५, १२३;	६।३८; ७।१०;
६।४४ से ४६, ५०,	२।१६, ४६, ७१;	१०।१४
५३, ७।४, ६, ८, १५,	३।६, ११, १३, ४२,	कोसग १।१४५, १५२
२३, ४६, ४६,	४६; ५।२७, ६।२८,	कोसियगुत्त १५।२४
१५।१२, १३, ३८	४५; ८।२५, १५।३६,	कोह ४।१, ३८, १५।५०,
कुलत्थ १०।१६	४४, ४७, ४८, ५१ से	५२
कुलिय ४।२६, ५।३७,	५५, ५८ से ६२, ६५	कोहण १५।५२
६।४०, ७।१२	से ६६, ७२ से ७६	कोहि १५।५२
कुविद ३।२१	केस ८।२०; १५।३१	
कुव्वमाण २।४४	कोउगभूइ १५।११	ख
कुस २।६३, ६५; ७।५४,	कोकतिय १।५२; ३।५६	खति १५।३६
१५।२५	कोट्ट	खंदमह १।२४
कुसपत्त ३।२१	-कोट्टित्ति १।८२	खंघ १।८७, २।१८;
कुसल १५।२८, १६।४	-कोट्टित्सि १।८२	७।३८; ६।४१;
कुसुम १५।२८ गा०७,	-कोट्टेसु १।८२	७।१३; १०।१३
१४, १५	कोट्टागक्क १।२३	खंघजाय १।११५
कुसुमिय १५।२८	कोट्टिमत्तल १५।१४	खघवीय १।११५
गा० १४	कोट्टियाओ १।८६	खच्चियंत १५।२८
कूडागार ३।४७,	कोडालसगोत्त १५।३, ६	खज्जरपाणग १।१०४
४।२१, २२	कोडि १५।२६ गा०२, ३	खज्जरिमत्यय १।११५

खणित्तु १३।७८; १४।७८	खाणी १०।२५	खेमपद १६।६
खत्तिय १।४१; १५।५	खाणु १।५३; १३।१०,	खेल १।५१; २।१८
खत्तियकुल १।२३	४७; १४।१०; ४७	खेल्लावणघाई १५।१४
खत्तियाणी १५।५, ६,	खाणुय १०।१७	खोमय ५।१४; १५।२८
८ से. १३	खारडाह १०।२३	गा० ६
खट्ट १।४६, ५७, १२४,	खिप्पामेव ३।२५, २६, ४०;	खोमिय ५।१, १७
१३०	१५।३२ गा० १८	खोल १।११२

खम	खिब-	चा
-खमइ १५।३७	-खिवाहि ३।१७	गंड १३।२८, ३४, ६५ से
-खमिस्सामि १५।३४	-खिविस्सामो ३।१८	७१; १४।२८ से ३४,
खय १५।३	खिवित्तए ३।१८	६५ से ७१
खरमुहिसइ ११।४	खोर १।४६	गंडागकुल १।२३
खलु १।१६	खोरघाई १५।१४	गंडी ४।१६, २६
खहचर ३।४६	खोरिज्जमाणी १।४४	गंतुं २।५०; ४।२६, ३०;
खाइम १।१, १।१ से १७,	खोरिणी १।४४, ४५	७।१५
२१, २३ से २५, ३६,	खोरिया १।४५	गंधिम १।२।१; १५।२८
४१, ४४, ४५, ५६,	खोगेयसायर १५।३१	गंध १।१०५; ४।३७;
५७, ६३ से ८१, ८४,	खुज्जिय ४।१६	१५।१५, ७४
८५, ८७ से ९८, १०१,	खुहु २।२०; ७।१४	गंधकसाय १५।२८
१२३, १२७, १२६,	खुडाय १।४६	गंधमंत ४।८
१४१, १४२, १४५,	खुड्डिया १।२६, २।१२,	गधवास १५।१०
१४८, १४९, १५२;	४५; ८।१२; ९।१२;	गच्छ
२।२८, ४८; ४।२,	११।१६; १२।१३	-गच्छवेज्जा १५।६४
२३, २४; ६।२६;	खुड्डु २।४५	-गच्छहिह ३।५१, ५३
७।५; ११।१८;	खेड १।२८, ३४, १२२,	-गच्छे १।२७
१२।१६; १५।१३	२।१; ३।२, ३, ४५,	
खाओवसमिय १५।३३	५७, ५८, ७।२; ८।१	

गच्छेज्जा ११५०, ५२, ५३, ५७, ६१, १२७, १३०, १३१, १३६; ३१६, ७, ४०, ४१, ४३, ५६ से ६१, ५४८ से ५०; ६१५ से ५८, ७६, १५१६४	गन्धिमय ४१३४	गहाय ११३५; ३१७, १८ २४ से २६, ४८, १०१८; १५१८
गच्छेत्ता ११५७, १२७, १३०, १३१, १३६, ७६	गमण ११२६, २८, २६, ३२, ३४, ३५, ४२, ४३, ३८ से १४, ५४, ६३; ६१, २, १६; ११११ से १८, १२११ से १६	गा ४१७, २८ गात(य) २१२१, ५२ से ५४ गाम ११२८, ३४, ४६, १२२; २११; ३१२, ३, ४५, ५७, ५८, ७१२, ८११, १११७, १२१४; १५१३५, ५७
गज्जदेव ४११६	गमणिज्ज ३१२२, १३	गामंतर ५४१
गज्जल ५११४	गय १५१३३, १६१२	गामवम्म ११३२
गङ्गा ३१४१, ४७, ४१२१, २२	गयजूहियट्ठाण ११११३, १२११०	गामपिडोलग ११५५, ५८, ३४५
गदिय १११०५	गयण १५१२८ गा० १४, १५, १६	गामरवक्खकुल ११२३
गण १७१२८	गरहिता १५१२५	गामससारिय ३१६१; ५१५०; ६१५८
गा० १४, १५	गग्निह -गरिहामि १५१४३, ५०, ५७, ६४, ७१	गामाणुगाम १११०, ३६, ४०, ४६, १२२, १३८ १३६; २१७०; ३११, ४ से १४, ३२ से ३४, ३६ से ४४, ४७ से ५०, ५२ से ६१; ५१४४ ४५, ४८ से ५०, ६१२, ५३, ५६ से ५८, = २४
गणराय ३११०, ११	गरुय २१५८	गामि १५१६६ ३८
गणहर १११३०, १३१, २१७२; ८१२६	गरुल १५१२८ गा० १२, १३	
गणावच्छेदय १११३०, १३१, २१७२, ८१२६	गवायणी १०१२५	
गणि १११३०, १३१ २१७२; ८१२६	गहण ३१४२, ४८, ५६, ६०, ५१४८, ४६, ६१५६, ५७, १११६; १२१३	
गति १५१३६	गह्णविदुग्ग ३१४८	
गन्ध १५११, ३, ५, ६ १२, १३		



गाय ७१७ से १६	गाहावइलोगह ७५७	गिरिकम्मंत २।३६ से
गायंत ११।१८; १२।१५	गाहावइणी १।३२, ४६,	४२; ३।४७;
गारत्थिय १।८ से ११	१२१, १२२, १४३;	४।२१, २२
गामी १।४४, ४५	२।२२, २५, ३६ से	गिरिमह १।२४
गाहावइ १।१, ४ से ८, ११	४२, ५० से ५५,	गिल
से १७, १६, २१,	७।१६ से २०	-गिलाइ १।१३८, १३६
२३ से २५, ३२, ३६,	गिज्झ	-गिलाएज्जा २।७६
३७, ४०, ४२ से ४६,	-गिज्झेज्जा ११।१६,	गिलाण १।१२४, १३८;
४६, ५०, ५२ से ५५,	१२।१६;	२।७२, ८।२६;
५८, ६१ से ६३, ८२	१५।७२ से ७६	१३।७८; १४।७८
से ८४, ८७, ८९, ९०,	गिज्झमाण १५।७२ से ७६	गिलासिणी ४।१६
९२ से ९४, ९६ से	गिण्ह	गिह २।४८; ४।२६
९६, १०१, १०२,	-गिण्हंति ५।४७, ६।५५	गिहेल्लुग ५।३६; ६।३६;
१०४ से ११६, १२१,	-गिण्हवेज्जा ७।२;	७।१०
१२२, १२४ से १२६,	१५।७१	गीय(ट्टाण) ११।१४;
१२८, १३३ से १३६,	-गिण्हहि १।१०१	१२।११
१४३ से १४७, १५१	-गिण्हिस्सामो २।४७	गुंजालिया ३।४८; ११।५;
से १५४; २।२१,	-गिण्हेज्ज ७।३	१२।२
२५, २७ से ३०, ३३	-गिण्हेज्जा १।१०१;	गुच्छ ३।४२
से ४२, ४७, ५०, ५५,	५।४६, ६।५४;	गुज्झाणुचरिय ४।१७
६४, ३।२२, २६, ६१,	७।२	गुण २।२४; ५।२७
५।१८, ४२, ४५, ५०;	गिण्हंत ७।२; १५।७१	गुणमंत १।१२१, २।२५,
६।४४ से ४६, ५०,	गिद्ध १।१०५	३८
५३, ७।४, ६, ८, ९,	गिद्धपिट्टट्टाण १०।१६	गुत्त १५।३४, ३७
१५ से २०, २३, ४६,	गिम्ह १५।३, ८	गुत्ति १५।३६
४७, ४९; १०।१२,	गिरि १५।१४; १६।३	गुम्म ३।४२
१५, १६, ३८		गुर्य ४।३७।

गुल	११४६	घ	चउत्य	१११४४, १५१,
गेणह		घंटा	१५१२८	२१६६, ४६; ५१२०,
गेण्हावेज्जा	१५१५७,	घडदास	४११२, १४	६१६, ७५२,
	७१	घट्ट	२११०, ५११२,	८२०, १५१३, ३८,
गेण्हाहि	३१२४		६१६, ८११०.	४७, ५४, ६८, ७०,
गेण्हिज्जा	१५१५७		६११०, १०१११	७५
गेण्हेज्जा	१५१५८, ६१,	घण	१५१२८ गा० १७	चउप्यय १११४७, १५४
	७१	घय	११४६; २१२१, ५२,	चउमुह १०१२२; १११२०
गेण्हंत	१५१५७		६१२२, ३२, ३५,	चउम्मुह १२१७
गेख्य	११७४, ७५		७११७, १३१५, १४,	चउयाह ३११२, ५१४६,
गेवेय	१३१७६, १४१७६		२१, ३०, ४२, ५१,	४७, ६१५४, ५५
गोण	११५२, ३१५४, ५६,		५८, ६७. १४१५, १४,	चउवग ६११६
	४१२५, २६		२१, ३०, ४२, ५१,	चंगवेर ४१२६
गोदोहिया	१५१३८		५८, ६७	चंदग १५१२८
गोपुर	१०१२१; १११६,	वसी	११५३	चदणिउयय ११६२
	१२१६	वाण	१५१७४	चंदप्पभा १५१२८, २६
गोप्पलेहिया	१०१२५	घात	३१२६, ४४	चदप्पहा १५१२६
गोमयरासि	११३, ५१,	घास	११६१	चपगवण १५१२८
	१३५, ५१३६,	घोस	१५१३२ गा० १८	गा० १५
	६१४२			चपय १५११४
गोयम	१५१४२			चक्क ३१८३, ५६
गोयर	२१३६, ३७, ३६ से	च	११४६	चक्कु १५१२८, ७३
	४२	चडत्ता	१५११, ३, २५	चक्कुदसण १२११ ने १६
गोरमिगार्डणग	५११५	चउ	११२१, २४: २१६२,	चक्कुर १०१२२ ११११०.
गोरह	४१२७		६७	१२१३
गोल	४१२२, १४	चउक्क	१०१२२;	चत १५१३४ ने ३६
गोसीस	१५१२८		११११०, १२१७	चमर १५१८८
गोहियसह	१११३			

चम्म	२।४६	चलाचल	२।४६; ५।३६	चित्तमंत	६।३८; ७।१०;
चम्मकोस	२।४६	से ३८; ६।३६ से ४१;		१०।१४; १५।५७, ७१	
चम्मकोसग(य)	३।२४,	७।११ से १३		चित्तचिल्लड	३।५६
	७।३, २४	चवल	१५।२७	चित्तचिल्लडय	१।५२
चम्मग	३।२४	चाउमासिय	१।२१	चिय	४।२६
चम्मछेदण	२।४६	चाउल	१।६, ७, ८, २,	चिराधोय	१।१००
चम्मछेदणग	३।२४;	११६, १४४		चिलिमिली	२।४६;
	७।३, २४	चाउलपिट्ठ	१।११६		३।२४, ७।३, २४
चम्मपाय	६।१३	चाउलोदग	१।६६	चीणमुय	५।१४
चम्मवधग	६।१४	चामर	१५।२८ गा० ११	चीवर	३।२५; ५।४२ से
चम्मय	७।३, २४	चार	३।४६		४५
चय		चारिय	४।१२, १४	चीवरधारि	३।२५
-चइस्सामि	१५।४	चारु	१५।२८	चुंब	
-चए	१६।१	चालिय	१।६२	-चुवेज	६।१६
-चएज्ज	१६।७	चिचापाणग	१।१०४	चुण्ण(न्त)	२।२१, ५३,
चयण	१५।३६	चिघ	१५।२७		५।२३, ३१, ३३;
चयमाण	१५।४	चिच्चा	१५।२६		६।२३, ३३, ३६,
चयोवचइय	४।८	चिट्ठ			७।१८; १३।६, १५,
चर		-चिट्ठेज्जा	१।४४, ५५,		२२, ३१, ४३, ५२, ५६,
-चरे	१६।६		५६, ५८, ६२, १२३;		६८, १४६, १५, २२,
चरंत	१६।२		३।३० से ३७;		३१, ४३, ५२, ५६, ६८
चरित्त	१५।३२, ३३		८।२७, २८	चुण्णवास	१५।१०
	गा० १८; १६।३३			चुय	
चरिम	१५।२५	चिट्ठमाण	१।५७, ८।२८	-चुएमि	१५।४
चरिया (चर्या)	२।४४	चित्त	१५।२८	चुय	१५।१, ३, २५
चरिया (चारिका)		चित्तकम्म	१२।१	चेइय	३।४७, १५।३८
	१०।२१, ११।६,	चित्तमंत	१।५१, ८२, ८३,	चेइयकड	३।४७; ४।२१,
	१२।६		१०२; ५।३५;		२२



જળ ૧૧૫૭; ૩૧૪૫; ૧૬૩૨	જલ્લ ૧૩૩૫, ૭૨;	-જાળેજ્ઞા ૧૧૬૬ જે
જળગ ૪૧૨, ૧૪	૧૪૩૫, ૭૨	૧૦૨, ૧૦૪, ૧૦૬
જળવય ૩૧૮ સે ૧૩	જવ ૧૦૧૬	સે ૧૧૬, ૧૨૨,
જત્ય ૧૧૨૮, ૪૬, ૧૩૬;	જવજવ ૧૦૧૬	૧૨૪ સે ૧૨૬,
૩૧૨ સે ૫	જવસ ૩૧૪૩, ૪૫, ૫૬	૧૨૮, ૧૩૩, ૧૩૪,
જન્ન ૧૫૧૨૬, ૩૧	જવોદગ ૧૧૧૦૧, ૧૫૧	૧૩૬, ૧૪૦, ૧૪૩ સે
જય	જસ ૧૬૧૫	૧૪૭, ૧૫૧ સે ૧૫૪;
-જણ ૧૧૨૦, ૩૦, ૪૧,	જસસ ૧૫૧૧૭	૨૧૧ સે ૧૮, ૨૦,
૪૮, ૬૦, ૮૬, ૧૦૩,	જસંસિ ૪૧૨૦	૩૧, ૩૨, ૪૫, ૪૮ સે
૧૨૦, ૧૨૬, ૧૩૭,	જસસ્તિ ૨૧૨૫	૬૨, ૬૮, ૬૯, ૩૧૨ સે
૧૫૬; ૨૧૨૬, ૪૩,	જસવતી ૧૫૧૨૪	૫, ૧૨, ૧૪, ૧૫, ૨૬,
૭૭; ૧૩૧૮૦;	જસોયા ૧૫૧૨૨	૩૦, ૩૨, ૩૭, ૩૯,
૧૪૧૮૦	જહાઠિય ૧૧૧૩૮	૬૦, ૪૧, ૨, ૬, ૬
-જણજ્ઞા ૬૧૧૭	જહેવ ૧૧૧૩૬	સે ૧૧; ૫૧૧, ૫ સે
-જણજ્ઞાસિ ૩૧૨૩,	જાહ ૧૫૧૫૮, ૬૨	૧૬, ૧૬, ૨૮ સે ૩૦,
૪૬, ૬૨; ૪૧૮, ૩૬;	જાહતા ૧૧૫૧; ૫૧૪૭,	૪૫, ૪૬; ૬૧૧, ૪ સે
૫૪૦, ૫૧; ૬૧૪૩,	૬૧૫૫; ૭૬	૧૩, ૧૫, ૧૮, ૨૬ સે
૫૬; ૭૧૨૨, ૫૮,	જાણ	૩૧, ૪૬, ૫૩, ૫૭,
૮૧૨૧; ૬૧૧૭;	-જાણહ ૧૫૧૪, ૭, ૪૬	૭૧૨ સે ૨૧, ૨૬
૧૦૧૨૬; ૧૧૧૨૦;	-જાણિજ્ઞા ૭૧૧૦, ૧૧	સે ૩૧, ૩૩ સે ૩૮,
૧૨૧૧૭	-જાણેહ ૧૫૧૪, ૩૩	૪૦ સે ૪૨, ૪૪, ૪૫,
જય	-જાણેજ્ઞા ૧૧૧, ૪ સે ૮,	૪૮; ૮૧૨ સે ૧૫,
-જયડ ૪૧૬	૧૨ સે ૧૬, ૨૧ સે ૨૫,	૨૩; ૬૧૧ સે ૧૪,
કરા ૧૫૧૨૮ ગાં ૭	૩૪, ૩૬, ૪૦ સે ૪૫,	૧૦૧૨ સે ૨૭,
જલ ૩૧૪, ૧૫, ૩૪;	૪૬ સે ૫૨, ૫૫, ૫૮,	૧૧૧૧૭, ૧૮;
૧૫૧૨૮ ગાં ૭	૫૬, ૬૧, ૬૪ સે ૮૪,	૧૨૧૧૪, ૧૫
જલચ(ય)ર ૩૧૪૬, ૫૪,	૮૭, ૮૬, ૯૦, ૯૨ સે ૯૪,	જાણ(જાનત્) ૧૧૧૩૬,
૪૧૨૫, ૨૬		૩૧૫૪ સે ૫૮, ૪૧

जाण (यान)	४२६, १५२७, २८	जाव	११३३, १४४; २३७ से ४२, ४७, ५१ से ५६, ५६ से ६१, ३२, ३, ३२, ४८, ४६, ६१; ४१२ से १५.२२ से ३६, ५२३, २५, ३०, ६२२, २३, २५, २६, ३१, ४६; ७४, ६, ८, १४ से २१.२३, २५, २८ से ४६, ८१; १०५ से ६	जीव	११२ से १७, ५१, ८२, ८३, ८५, ८८, १०२; २३ से ७, १६, ४६, ७१, ५१५ से १०, २२, ३५; ६१४ से ६, २१, ३८, ७१०; ८३ मे ८, २५, ६३ से ७, १०४ से ६, १४, १३७६; १४७६; १५२५, २६गा०६, १५३६, ४२, ४४, ४७, ४८, ७२ से ७६
जाणगिह	२३६ से ४२, ३४७, ४२१, २२				
जाणमाण	१५३६				
जाणसाला	२३६ से ४२; ३४७, ४२१, २२				
जाणु	१५३८				
जाणस्ता	३१५, १५१३, २७				
जातिमंत	४३०				
जाय		जावइय	११२७, १३०, १३५	जीविअ	२१६, ४६, ७१; ८२५
-जाइज्जा	१५१			जीहा	१५७५
-जाएज्जा	१२५, ६२, १४१ से १४५, १४७ से १५२, १५४; २४७, ६३, ६४, ६६, ३४२, ६१; ५१७ से २०, ४१, ४६, ५०, ६१६, १७, १६, ५४, ५८; ७४, ६, ८, २३, ४६, ४६, ५५; १०१	जावज्जीव	१५४३, ५०, ५७, ६४, ७१	जुगमाया	३६
जाय १११२, १५१, ३६		जिण	११५५; २६७, ५२१, ६२०; ७५६, ८२१, १५३६; १६६	जुगव	५२, ६२
जायणा	३६१; ५५०, ६५८	जिणवर	१५२६ गा०६ १५२८ गा० ७, ८	जुण्ण	१६६
जालंधरायण	१५३, ६	जिणवरिद	१५२६ गा० १	जुति	१५६७
		जिम्मा	१५७५	जुत्त	१५२८
		जीय	१५५	जुयल	१५२८
				जुवगव	४२८
				जुवराय	३१०, ११
				जूय	१२३८, ७५; १४३८, ७५
				जूहियट्ठाण	१११३ १२१०

जेठु	१५।२०, २१	ठेत्रेत्ता	७६; १५।२८, २९	णंगल	४।२६
जोड	१६।८	ठा		णंठिवद्धण	१५।२०
जोइसिय	१५।६, ११, २७, ४०	-ठाडस्सामि	८।१७ से २०	णक्क	३।२८
जोग	१५।३, ५, ८, २६, २८, २९, ३८	ठाइत्तए	८।१, १६	णक्खत्त	१५।२६, २९, ३८
जोग्ग	४।२७, २९, ३०	ठाण	१।८८; २।१ से २५, २७ से ३२, ४४, ४६,	णगर	१।२८, ३४, १२२; २।१, ३।२३, ४५, ५७, ५८; ७।२; ८।१;
जोयण	३।१४		४६ से ५६, ७१; ८।१ से २०; ९।३ से		११।७, १२।४; १५।२८, ३८, ५७
ञ			१५, १५।३६	णग्गोहपवाल	१।१०६
भक्ति	१५।२७	ठाणसत्तिक्कय	८	णग्गोहमथु	१।१११
भल्लरी	१५।२८ गा० १६	ठिडक्खय	१५।३, २५	णच्चंत	११।१८; १२।१५
भल्लरीसद्	११।१	ठिति	१५।३६	णच्चा	१।२६, ४०, ४२; ४३, ४४, ४५, ७५, २।५१; ३।१ से ५; ६।५३, ७।१४ से २१
भाणकोट्ट	१५।३८	ठिय	२।५५, ७।२०	णट्ट(ट्टाण)	११।१४, १२।११
भामथंडिल	१।३, ५।१, १३५, ५।३६; ६।४२, १०।२८	ड		णत	१६।५
भाय	१६।५	डमर	११।१५; १२।१२	णत्तुई	१५।२४
भिज्झिरिपलंव	१।१०८	डहर	११।१८; १२।१५	णदी(ई)	३।४८, १५।३८
भिमिय	४।१६	डागवच्च	१०।२६	णदीआययण	१०।२४
भूसिर	११।४; १५।२८ गा० १७	डाय	१।५७	णपुसक	४।५
ट		डिडिम	१।१४५, १५।२	णपुंसकवयण	४।३, ४
टाल	४।३१	डिब	११।१५, १२।१२	णमदेव	४।१६
ठ		ड		णम	
ठव		डंकुणसद्	११।२	-णमिज्जति	१६।७
ठवेति	१५।२८, २९	ण	१।२४		

णमस	णाम १।४६, १३८, १३९;	णिक्रमण १।४२, ४३;
-णमसंति १५।२८	२।२७; १५।१६, ३३	२।५०, ५३; ७।१४
णमसित्ता १५।२८	णामगोय २।४८	से २१
णमोक्कार १५।३२	णामवेज्ज १५।१३, १६	णिक्रममाण १।६, ३८;
णर १५।२८; १६।२	से १८, २३, २४	२।४५, ४६- ५।४३,
णव ५।३१, ३२; १५।८	णाय १५।५	६।५१
णवणीय १।४६; २।२१,	णायकुल १५।२६	णिक्रित्त १।८४, ८५;
५२, ६।२२, ३२, ३५;	णायपुत्त १५।२६	२।४४
७।१७	णायव १२।२	णिक्रिप्पमाण १।४६
णवय ६।३१ से ३४	णायसंड १५।२६	णिक्रिख
णवर १।३४	णालिएरपाणम १।१०४	-णि(नि)क्रिखवाहि
णविय १०।२५	णालिएरिमत्थय १।११५	३।६१, ५।५०;
णह ८।२०; ६।१६	णावा ३।१४ से २२,	६।५८
णहच्छेयणय ७।६	२५, २६	-णिक्रिखवेज्जा ३।६१;
णहमल १३।३६, ७३;	णावागत ३।१७ से २१,	५।५०, ६।५८
१४।३६, ७३	२४, २५	णिगच्छ
णाग १५।२८ गा० १३	णासा १५।७४	-णिगच्छड १५।२६
णागमह १।२४	णिकाय १५।२६ गा० ६	णिगच्छित्ता १५।२६
णागवण १०।२७	णिक्रम	णिगम १।२८, ३४, १२२;
णागिद १५।२८	-णिक्रमिस्सामि १।४६	२।१, ३।२३, ४५,
गा० १२	-णिक्रमेज्ज १।८, ६,	५।७, ५८; ७।२,
णाण १५।३३, ४१, ४२	१६, ३७, ३८, ४०,	८।१, ११।७.
णाणा १५।२८	४४, ४५, ५४, १२२,	१२।४
णाणि १६।३	१२३, २।४५, ४६,	णिगिण २।५५: ७।२०
णात १५।२६	५।४२, ४३, ४५,	णिगूह
णांति १५।१३, १४	६।४४, ४५, ५०,	-णिगूहेज्जा १।१३१
णाभि ४।२६	५१, ५३	



निगगंथ १।३५; ५।१; १५।४२, ४४ से ४८, ५१ से ५५, ५८ से ६२, ६५ से ६९, ७२ से ७६	निद्ध १।५७, ४।३७ निप्फज्ज -निप्फज्जउ ४।१६ निमंतेमाण १।४१; २।४८ निमग्गिय ३।२८ नियंदु १।२९, ३।२ नियंतिय १।३२ नियंसाव -नियंसावेड १५।२८ नियंसावेत्ता १५।२८ नियच्छ -नियच्छेज्जा २।२३, २४, ३।२६, ४४ नियत्तिय १।५९ नियत्थ १५।२८ गा०९ नियम -नियमेज्जा ६।४७ नियम १३।१ से ७८, १४।१ से ७८ नियाग २।४४ निरालवण १६।१२ निरावरण १५।३८ से ४० निरासस १६।९ निस्वसग्ग २।७६, ८।३० निल्लिह -निल्लिहेज्ज ३।३१, ३२, ३९; ६।४८, ४९	निलुक्क १५।३२ गा० १८ निवइय ४।१७ निवाय(त) १।२९; २।१२, ७२, ७६; ८।१२, २६, ३०; ९।१२ निविट्ठ १५।२८ गा०११ निव्वत्त १५।१३ निव्वाण १५।३६, ४० निव्वेड्ड -निव्वेड्डिज्ज ३।२५ निसम्म १।३३, १२१, १३५, २।२५, ३८; ३।२५; ४।१, ५।२२ से २५, ४७, ६।२१ मे २५, ५५ निजम्मभासि ४।३८ निसिट्ठ १।१२८ निसिर -निसिरामि १।१३६ -निसिरामो १।१२१; २।३८ -निसिराहि १।१३० -निसिरेति ५।४७, ६।५५
निगगथी ५।३ निग्घोस १।१२१, १३५; २।२५, ३८; ३।२५; ५।२२ से २५, ४७, ६।२१ से २५, ५५ निज्झर १।१५; १२।२ निज्झाडत्ताए १५।६६ निज्झाएमाण १५।६६ निज्झाय -निज्झाएज्जा १।६२, ३।१६, ४७ से ४९ निट्ठाभासि ४।३, ५, ३८ निट्ठिय १।१२१ निणाय १५।२८ गा० १६, १५।३२ गा० १८ निणक्खु -निणक्खु २।१२, १४, १६; ८।१२, १४, ९।१२, १४ नित्तिय १।१९ नित्तिउमाण १।१९ निदाण ५।४८; ६।५६		

-गिसिरेज्जा ११३०, ५१२६, ४६, ६१२७, ५४	गीसासमाण २१७५; ८१२६	णेत ५१२२ से २६; ६१२२ से २७
गिसीय -गिसीयड १५१२६	गीहट्ट ११३६, ६४६ गीहड ११२ से १८, २१, २२, २४, १२८, २१३ से १७, ५१५ से १३; ६४ से १२, ८३ से ७, ९, ११, १३, १५, ६३ से ७, ९, ११, १३, १५, १०४ से ८, १०	णेत्य १५१२७ णेतज्जिय २१६५, ६६, ७५४, ५५
गिसीयाव -गिसीयावेड १५१२८		णो १११
गिसीयावेत्ता १५१२८		त्त
गिसीहिय २३ से २५, २७ से ३२, ५० से ५६, ८२ से १५, ६१ से १५		त १११ तड्य ४१६ तज्जाय ६१३ तज्जवण ६१४ तज्जो ११२
गिसीहियावत्तिकय ६	गीहर	तज्जहा ११२३, २८, ४१, ४६, ६१, ६३, ६६, १०६, १११, १२१, १२२, १३०, १३८, १४३, १४५, १५१, २१८, १६, ३६, ४२, ४४, ६३ से ६६, ३१५४, ४३, ६, १६ से ३६, ५१, १४, १५, १७ से १६, ७५४, ५५, ५७, १११ से १८, १५१६
गिस्सकिय १६५	-गीहृति १०१२	
गिस्सयर १६६	-गी(नी)हरेज्ज १३१०, ११, ३४ से ३६, ३८, ४७, ६४, ७१ से ७३, ७५, १४१०, ११, ३४ से ३६, ३८, ४७, ६४, ७१ से ७३, ७५	
गिस्सास १५१२८		
गिस्सेणि ११८८, २१६		
गिहट्ट ११३३, १४३		
गीण -गीणज्जा ७१२४		
गीणज्जमाण १११६, १२१३	गीहरेत्ता १३१७६, १४७६	
गीपुरपवाल ११०६		
गील ४१३७	गूम ३४८, ११६, १२३	
गीलमिगाईणग ५११५		
गीसस -गीससेज्ज २१७५, ८१२६	गूमगिह ३४७, ४१२१, २२	तति (ट्टाण) १११४; १२११

तंवपाय	६।१३	तत्थ	५।१७; ७।४ से ६,	तत्संविचारि	२।३०
तंववंवण	६।१४		२३ से २६, ३२, ३३,	तह	१।६१
तक्कलिमत्थय	१।११५		३६, ४६, ४७, ४६,	तहप्पगार	१।१, ३, १२
तक्कलिसीस	१।११५		५४, ५५; १।५।७२	से १५, २१, २३ से	
तग्गंघ	२।२७		से ७६	२५, २६, ३२, ३५,	
तच्च	१।१४३, १।५०;	तम	१६।६	३६, ४२, ४३, ४६,	
	२।६५; ५।१६;	तम्हा	१।३२	५१, ६३ से ८१, ८२,	
	६।१८, ७।५१;	तया	३।५५; ५।२४;	८४, ८५, ८७ से ९६,	
	८।१६; १।५।५, ४६,		६।२५; १।३।७८;	१०१, १०२, १०४,	
	५३, ५७, ६०, ६३,		१।४।७८; १६।६	१०६ से १११, ११३	
	६७, ७४	तरच्छ	१।५२; ३।५६	से ११६, १२१ से	
तज्जिय	१।६२	तरुण	५।२; ६।२	१२३, १४१ से १५४,	
तडागमह	१।२४	तरुणिय	१।४, ५; २।२४	२।१ से ७, १०, १२,	
तण	१।५१; २।६३, ६५;	तरुपडणट्ठाण	१०।१६	१४, १६, १८ से २५,	
	३।४२, ७।५४	तल	१।५।२८ गा० १४	२७ से ३२, ३६, ३८	
तणपुंज	२।३१, ३२		से १६	से ४०, ४५, ४६, ४६,	
तत	१।१२; १।५।२८	तल (ट्ठाण)	१।१।१४;	५६, ६१, ६३, ६४,	
	गा० १७		१।२।११	६८, ७६; ३।२, ३, ६,	
तत्थ	१।२५, ३३, ४२, ४६,	तलाग	३।४८	११ से १४, ३२, ३६;	
	५१, ५७, ६३, ८८,	तव	१।५।३६; १६।५	४।१६; ५।१, ३, ५ से	
	१०५, १२३, १२७,	तवणीय	१।५।२८	१०, १२, १४, १५,	
	१३०, १३१, १३६,	तवस्सि	२।२५, ३०	१७ से १६, २३, २४,	
	१४८; २।१८, ३४ से	तस	१।४०; ३।६; ५।४५;	२८ से ३०, ३५ से	
	३६, ३६ से ४१, ४६,		६।५३; १।५।४३;	३६, ४६ से ४८;	
	४७, ६३, ६५, ७१;		१६।४	६।१, ४ से ८, ११, १३,	
	३।४२, ४६, ५१, ५३;	तसकाय	१।६१, ६८;	१४, १६ से १६, २२ से	
			२।४१, ४२	२६, २६ से ३१, ३८	
				से ४२, ४६, ५४, ५५,	

तहप्यगार ७।१० से २१,	तितिक्ष	तिलपप्यड	१।११६
२६; ८।३ से ७,	-तितिक्षइ १५।३७	तिलपिट्ट	१।११६
६।३ से ७; १०।२	-तितिक्षए १६।३	तिलोदग	१।१०१, १५।१
से २८; ११।१ से	तित्त ४।३७	तिवग्ग	६।१६
१८, १२।१ से १६;	तित्तय १।१३८; १५।२८	तिविह	१५।३४, ४३,
१५।४६; १६।३	तित्तिरकरण १०।१८		५०, ५७, ६४, ७१
तहा ४।१६	तित्तिरजुद्ध ११।१२,	तिव्वदेसिय	१।४०,
तहागय १६।२	१२।६		५।४५, ६।५३
तहाडिय १।१३८	तित्तिरट्टाणकरण	तिसरग	२।२४; ५।२७
तहेव १।१३६	११।११; १२।८	तिसला	१५।५, ६, ८, ९,
ता ३।१७	तित्तय १५।२६ गा० ६		१० से १३, १८
ताइ १६।६	तित्तययर १५।११, २६	तीयवयण	४।३, ४
ताल(ट्टाण) ११।१४,	गा० ४	तीर	३।३०, ३७
१२।११	तिन्नाण १५।४	तीरित्ता	१५।७८
तालसद् ११।३	तिमासिय १।२१	तीरिय	१५।४६, ५६, ६३,
तालपलंब १।१०८	तिय १०।२२, ११।१०,		७०, ७७
तालमत्थय १।११५	१२।७	तुंबवीणियसद्	११।२
तालियट १।६६	तियाह ३।१२, ५।४६,	तुच्छय	६।२६
ताव २।४७; ६।२६,	४७, ६।५४, ५५	तुट्ठि	१५।३६
७।४, ६, ८, २३, २५,	तिरिक्खजोणिय १५।५४	तुड्य	५।२७
३२, ३६, ४६, ४६	तिरिच्छ १।४०; ३।६,	तुड्यि	२।२४
तावइय १।१२७, १३०,	१५, ५।४५, ६।५३	तुडिय(ट्टाण)	११।१४,
१३५	तिरिच्छच्छिन्न १।५;		१२।११
ति १।२१	७।२८, ३१, ३५, ३८,	तुणयसद्	११।२
तिदुग १।११८	४२, ४५	तुड	
तिक्खुत्तो १।७, १५।२८	तिरिय १५।२७		
तिगुण २।३५	तिरियगामिणि ३।१४		
	तिल १।११६, १०।१६	-नुत्ति	१६।२

तुयट्टावित्ता	१३७६;	तेरसी	१५५, न	थिर	४२६, ३४, ५२,
	१४७६	तेरिच्छि	१५३४, ३७		३०, ४६ से ४८,
तुयट्टावेत्ता	१३३६ से	तेल्ल	१४६; २२१, ५२;		६२, ३१, ५४ से ५६
	७५, १४३६ से ७५		६२२, ३२, ३५,	थूण	५३६; ६३६,
तुरग	१५२८		७१७; १३५, १४,		७११
तुरिय	१५२७, ३२		२१, ३०, ४२, ५१,	थूम	३४७, ४२१, २२
	गा० १८		५८, ६७; १४५,	थूममह	१२४
तुसरासि	१३, ५१, १३५;		१४, २१, ३०, ४२,	थूल	४२५; १५५७, ७१
	५३६; ६४२		५१, ५८, ६७,	थेर	११३०, १३१,
तुसिणीय	१५७, १२३;		१५२८		२७२; ७५७;
	३१७ से २१, २४, ५४	तेल्लपूय	११२४		८२६; १११८;
	से ५८, ६१, ५५०,	तेसीहम	१५५		१२१५
	६५८	तोरण	१५०; ३४१,		
तुसोदग	११०१, १५१		४७; ४२१, २२, २६	द	
तूर	१५२८ गा० १६			दंड	१३५, २४६;
तूलकड	५११, १७				१५२८ गा० ११
तेइच्छ	१३७८, १४७८	थंडिल	१५१, १३५;	दंडग(य)	३२४, ७३, २४
तेउ	१६१		५३६, ६४२;	दंत	२११८; ६१६
तेउकाय	२४१, ४२,		१०१२ से २८	दंत(पाय)	६१३
	१५४२	थंम	१८७	दंतकम्म	१२११
तेज	१६६	थल	३१४, १५, ३४	दतवंचण	६१४
तेण (अ)	२३०, ४७;	थलचर	३४६	दतमल	१३३६, ७३;
	३६, ११, ४१२, १४	थलय	१५२८ गा० ७		१४३६, ७३
तेय	१६५	थाल	११४३; १५३१	दंस	२७६, ८३०
तेयसि	४२०	थालग	११३३	दंस	
तेयस्सि	२२५	थावर	१५४३; १६४	दंसैज्जा	३५४ से ५८
तेरसम	१५३८	थिगल	१६२	दसेह	३५४ से ५८

दंसण	१५४१, ४२	दरिसि	१५३६	-दाहामि	११३०
दग	३३७	दरी	३४१, ४७; ४२१,	-दाहामो	५२२, ६२१
दगछड्डुगमतय	१६२		२२, १०१७	-दाहिसि	१२५, ६३,
दगमवण	१६२	दल			१०१; २६३, ६४;
दगमट्टिय	१२, ४२, ४३,	-दलएज्जा	१२५, ५६,		५११; ६१७
	५१, ८२, ८३, १०२,		५७, ६३, ६५, ६६,	-दिज्जइ	१११६;
	१३५, २११, २३१,		१०२, १०४, १२३,		१५२६ गा०२
	३२, ५७ से ६१, ६८,		१३५, १३६, ५२३,	-देज्ज	६६ से १६; ७६
	६६; ३११, ४, ५,		२४; ६२२ से	-देज्जा	११११, २५, १०१,
	५२८ से ३०, ३५,		२६, ४६		१४१ से १४५, १४७,
	६२६ से ३१, ३८,	-दलयाहि	१६३, ६६,		१४८, १५२, १५४,
	७१०, २६ से ३१,		१३५, १४३, ५२२		२६३, ६४, ३६१,
	३३ से ३८, ४० से		से २४, ६२१ से		५११७ से २०, ४६,
	४५, ८१, २, २२,		२४, २६		४८, ५०, ६१६ से
	२३, ६१, २,	-दलाति	११३०		१६, ५४, ५६, ५८
	१०१२, ३, १४, २८			-देहि	३६१, ५१५०,
दगलेव	११४५, १५२	दलइत्ता	१५२६		६१५८
दट्ठण	३६	दविय	३४८	दाइय	११३१
दट्ठण	११३१	दव्वी	१६३ से ८१	दाउ	१६३, ६६, १३५,
दधि	१४६	दस	१५१३		५२२, २८, ६१७,
दढमकम्मत्	२३६ से ४२,	दसमी	१५२६, २६, ३८		७१ से २४, २६
	३४७, ४२१, २२	दसराय	५२२, ६२१	दाडिमपाणग	११०४
दम्भ	४२७	दस्सुगायतण	३८, ६	दाडिमत्तरड्डुय	१११०
दरिमह	१२४	दह	३४८	दाता(या)र	१५१३, २६
दरिसणिज्ज	२२५,	दहमह	१२४	दाय	१५१२, २६
	४२०	दा		दायच्च	१०५, १३१
दरिसणीय	४२०, २२,	-दासामो	५२३, २५,	दार	१२१; ११६:
	३०; १५२८		६२२ से २६		१२६

दारग	३।२४	दाहीण	२।३६ से ४२	दुक्खखम	१६।८
दारिग(य)	३।२४;	दाहिणद्धमरह	१५।३	दुक्खि	१६।४
	११।१६	दाहिणमाहणकुंडपुर		दुक्खुत्तो	१।७
दारिया	१२।१२		१५।३, ५, ६	दुग्गुण	२।३५
दारुपाय	६।१, १६, १७	दिज्जमाण	१।२६, ३५	दुगुल्ल	५।१४
दारुय	१।५१, ८२, ८३, १०२; २।२१, २८; ५।३५; ६।३८; ७।१०; १०।१४	दिट्ठ	११।१६; १२।१६	दुग्ग	३।५६, ६०; ५।४८, ४६; ६।५६, ५७
दालिय	१।२६; २।१२; ८।१२; ९।१२	दिण्ण	१।२५; ६।२६; १५।२६ गा० ३	दुग्गव	२।२७
दास	१।२५, ४६, ६३, १२१, १२२, १४३, २।२२, ३६ से ४२, ५१ से ५५, ६४; ५।१८; ६।१७, ७।१६ से २०	दिन्न	१।५६, १३६	दुग्गि(न्नि)क्खित्त	२।४६; ५।३६ से ३८; ६।३६, ४१, ७।११ से १३
दासी	१।२५, ४६, ६३, १२१, १२२, १४३; २।२२, २५, ३६ से ४२, ५१ से ५५, ६४, ५।१८; ६।१७; ७।१६ से २०	दिव्व	१५।२७, २८ गा० ७, ८; १५।३२ गा० १८, १५।३४, ३७, ६४	दुत्तर	१६।१०
दाह	३।३६	दिसा	१५।३; १६।६	दुपय	१।१४७, १५४
दाहिण	१।२७, १२१, १४३, १५०; २।२६ से ४२; १५।२८ गा० १३; १५।३०	दिसीमाय	१५।२७, ३८	दुप्पण्णवणिज्ज	३।८, ९
		दीव	१५।३, २७, ३३	दुब्बद्ध	२।४६; ५।३६ से ३८, ६।३६ से ४१; ७।११ से १३
		दीविय	१।५२; ३।५६	दुब्बि	१।१२५
		दीह	१३।३७, ७४; १४।३७, ७४	दुब्बिमागंघ	४।३७; ५।३३, ३४; ६।३५ से ३७
		दीहवट्ट	४।३०	दुम्मण	३।२६, ४४
		दीहिया	३।४८, ११।५; १२।२	दुयाह	३।१२; ५।४६, ४७; ६।५४, ५५
		दु	२।४१	दुस्सक	१।१११
		दुक्ख	१।३१, २।२१; १५।२५		

दुग्ध		दूड्ज्ज्ज्जा ३१, ४ से ७,	देवगड	१५१७
-दुग्धति	१५१२७	६, ११, १३, ३२, ३३,	देवच्छदय	१५१८
-दुग्धेज्ज	३११४	३६, ४०, ४२, ४४ से	देवता	१५१२५
-दुग्धेज्जा २१७३, ३११५,		४७, ४६ से ६१,	देवपरिसा	१५१३२
१६५६ ६०; ५१४८,		५१४४, ४५, ४८ से	देवराय	१५१२८, ३१
४६, ६१५६, ५७		५०; ६१५२, ५३,	देवलोग	१५१२६
दुग्धमाण ११८८, २१७३,		५६ से ५८	देवाणदा	१५१३, ६
३११६; ८१२७	दूड्ज्ज्ज्माण १११०, ३६,		देविद	१५१२८, ३१
दुग्धित्तए २१७३; ८१२७	४६, १२२, १३८,		देविदोमह	७५७
दुग्धित्ता १५१२५, २७	१३६, २१७०, ३६		देवी १५१६ से ११, २७,	
दुग्धेत्ता २१७३, ८१२७	से ८, १०, १२, १४,		४०	
दुग्ग	६११६	३३, ३४, ४०, ४१,	देसभाय	१५१२८
दुग्गयण	४३, ४	४३, ४७, ४८, ५० से	देसराग	५११४
दुवार २१४१, ४२, ४४	६१; ५१४४, ४६, ५०;		देह	१५१३४ से ३६
दुवारवाह ११५४, २३०	६१५२, ५७, ५८,		दो	११२१
दुवारसाहा ११६२	८१२४		दोच्च	१११४२, १४६;
दुवारिया ११२६; २११२,	दूस १११०४		२१६४; ५११८,	
४५, ८११२, ६११२	देव १५१५, ६ से ११.		६११७, ७५०,	
दुसद् ४३५, ३६	१६, २६ गा० ४, ६;		८११८, १५१८, २८,	
दुसममुसभा १५१३	१५१२७, २८ गा० १२,		३८, ४५, ५०, ५२,	
दुसन्नप्य ३१८, ६	१७, १५१२६, ३२		५६, ५६, ६६, ७३	
दुहसेज्ज १६१६	गा० १६; १५१३६	दोष्क	४१२७	
दुहि १६१४	से ४१	दोणमुह ११२८, ३४, १२२;		
दूड्ज्ज्ज्ज	देवकुल २१३६ से ४२,	३११ से ३, ४५, ५७,		
-दूड्ज्ज्ज्ज्जा १११०,	३१४७, ४१२१, २२,	५८; ७१२, ८१		
३६, ४०,	१०१२०, १११८,	दोच्चलिय ३१२६		
	१२१५	दोमासिय ११२१		



दोरज्ज ३।१०, ११; ११।१५; १२।१२	घाड(त्ति) २।२२, २५, ३६ से ४२, ५१ से ५५, ६४; ५।१८; ६।१७; ७।१६ से २०;	-धूवेज्ज १।४।६, १८, २५, ३२, ४६, ५५, ६२, ६६
दोस १५।५०, ७२ से ७६	१५।१४	धूवणजाय १३।६, १८, २५, ३२, ४६, ५५, ६२, ६६; १।४।६, १८, २५, ३२, ४६, ५५, ६२, ६६
घ	घण ५।१४; ६।१३, १४; १५।१२, १३, २६	घायइवण १०।२७
घण १५।१२, १३, २६	घार	घारेज्जा ५।२, ३, ४१; ६।२
घम्म १।१२१; २।२५, ३८; १५।६५ से ६६, ७२ से ७६	-घारेहि ३।२४	घेणु ४।२८
घम्मज्झाण १५।३८	घारणिज्ज ५।३०; ६।३१	घोय ५।१२, ४१; ६।६
घम्मपय १६।५	घारि १५।२८ गा० ६	घोय ५।४१
घम्मपिय ४।१३, १५	घारेत्तण ५।४६ से ४८; ६।५४ से ५६	घोएज्जा ५।४१
घम्माणुओर्गचित्ता १।४२, ४३, २।४६ से ५६, ३।२, ३; ७।१४ से २१	घिडम १६।८	घ्न
घम्मिय १।१३३, १३४, १४७, १५४, ३।६१; ४।१३, १५, ५।५०, ६।५८	धुव १।३३, ४।२, ५।३०; ६।३१	नंदीमुहंगसह ११।१
घर १५।२६ गा० ४, १५।४१, ४२	धूया १।२५, ४६, ६३, १२१, १२२, १४३; २।२२, २५, ३६ से ४२, ५१ से ५५, ६४, ५।१८; ६।१७, ७।१६ से २०; १५।२३	नक्कच्छिन्न ४।१६
घरणि १५।२८ गा० १६	धूव	नक्खत्त १५।३, ५, ८
घाड(त्ति) १।२५, ४६, ६३, १।२१, १।२२, १।४३;	-धूवेज्ज १३।६, १८, २५, ३२, ४६, ५५, ६२, ६६;	नालिय २।४६; ३।२४; ७।३, २४
		निडय २।४५
		निद
		-निदामि १५।४३, ५०, ५७, ६४, ७१
		निदिता १५।२५
		निकाय १५।२५, ४२
		निक्खमण २।४६; ३।२
		निक्खत्त १।१०२

निगम्य	६२	पङ्कणा(न्ना)	२।१६, २१	पंडिय	१६।७, १०
निट्टुर	४।१०, १२, १४, २१, २३, २५, २७, २९, ३१, ३३, ३५	से २५, २७ से ३०, ४६, ७१, ३।६, ११, १३, ४६, ५।७७, ६।२८, ४१, ८।२५	से २५, २७ से ३०, ४६, ७१, ३।६, ११, १३, ४६, ५।७७, ६।२८, ४१, ८।२५	पंत	१।१३१
निमित्त	१५।२५	पञ्च	२।२१, ५३; ५।२३, ३१, ३३, ६।२३, ३३	पंय	२।५०, ३।१, ७।१५
निरावरण	१५।१	पञ्च	२।२१, ५३; ५।२३, ३१, ३३, ६।२३, ३३	पक्क	४।३१, ३३
निवृज्जमाण	११।१६, १२।१३	पञ्च	२।२१, ५३; ५।२३, ३१, ३३, ६।२३, ३३	पक्क	२।४१; १५।३, ५, ८, २६, २६, ३८
निवृद्धदेव	४।१६	पञ्चमलया	१५।२८	पक्खल	
निव्वाण	१५।३८	पञ्चमसर	१५।२८ गा० १४	-पक्खलेज्ज	१।५१
निसाम		पञ्चोय	४।१७	पक्खलमाण	१।५१
-निसामिति	१५।३२	पंकाययण	१०।२४	पक्खि	३।४६, ५४; ४।२५, २६
गा० १६		पच	७।५३	पक्खिव	
निसिद्ध	१।५७	पंचदस	३।४५	-पक्खिवह	३।२५, २६
निसीहिय	२।१, २, ४४, ४६	पंचम	१।१४५, १५२; ७।५३; १५।५, ४८, ५५, ६२, ६६, ७६	-पक्खिवेज्जा	३।२६
निस्सिचमाण	१।८५	पंचमासिय	१।२१	पक्खेव	१५।५
नीलिय	४।३३	पंचमुट्टिय	१५।३०, ३२	पगणिय	१।१६, २।७, ३८, ५।६; ६।८; ८।७; १०।८
नीहर		पचराय	५।२२; ६।२१	पगत	१०।१७
-नीहरेज्ज	१३।२७	पंचवग्ग	६।१६	पगर	
पइट्टिय	१।५१, ८२, ८३, ६२ से ६५, ६७, ६८, १०२, ५।३५; ६।३८, ७।१०; १०।१४	पंचविह	७।५७	-पगरेज्जा	२।१८
पङ्कणा(न्ना)	१।५६, ८५, ६१, ६५, १२३,	पचाह	३।१२, ५।४६, ४७, ६।५४, ५५	पगरेमाण	२।१६
		पचेदिय	१५।३३	पगासय	१६।६
		पडग	१५।६६	पगिज्जिमाय	१।६२; ३।१६, ४७ से ४६
		पंडरग	१५।१३	पगिण्ह	
				-पगिण्हेज्ज	७।३, १० से २१

पग्गह	१५।३६	पच्चपिण	पज्ज		
पग्गहित(य)राग	२।७६; ८।३०	-पच्चप्पिणोज्जा	२।६८, ६६; ७।६; ८।२२,	-पज्जेहि	३।२४
पग्गहिय	१।१४६, १।५३		२३	पज्जत्त	१५।३३
पघंस		पच्चपिणिस्ताए	२।६८, ६६, ८।२२, २३	पज्जभाएत्ता	१५।१३, २६
-पघसंति	२।५३; ७।१८	पच्चाडक्ख		पज्जभाय	
-पघंसाहि	५।२३; ६।२३	-पच्चाडक्खिस्सामि	१।१२३	-पज्जभाएति	१५।१३
-पघंसेज्ज	२।२१; ५।३१, ३३; ६।३३, ३६	पच्चावाय	१।३२	पज्जवजाय	१।१४४, १।५१
पवसित्ता	५।२३; ६।२३, २४	पच्चोत्तर		पज्जाय	१५।३६
पच्चंत	१।११७, १।२।१४	-पच्चोत्तरति	१।५।२८	पज्जाल	
पच्चंतिक(य)	३।८, ६	पच्चोत्तरित्ता	१।५।२८	-पज्जालेतु	२।२३
पच्चक्ख		पच्चोयर		-पज्जालेज्ज	२।२१, २३, २६
-पच्चक्खार्डति	१।५।२५	-पच्चोयरड	१।५।२६	पज्जालेत्ता	२।२१
-पच्चक्खालेज्जा	३।१५, ३४	पच्चोयरित्ता	१।५।२६	पट्ट	१।५।२८
-पच्चक्खामि	७।१; १।५।४३, ५०, ५७, ६४, ७१	पच्छा	१।२६, ३२, ४२, ४३, ४६, १२१; २।२८, २६, ३८, ४५, ४६, ४८, ५।३, २२; ६।२१, १०।१, १।५।२८ गा० १२, १।५।४१	पट्टण	१।२८, ३४, १२२; २।१; ३।२, ३, ४५, ५७, ५८; ७।२, ८।१, ११।७, १२।४, १।५।२८
पच्चक्खवयण	४।३, ४	पच्छाकम्म	१।६१, १।४४, १।५१, २।२७	पड	
पच्चक्खाल्लत्ता	१।५।२५	पच्छासंथुय	१।४६, १२२, १३०	-पडड	४।१६
पच्चक्खाल्लत्ता	३।१५, ३४	पज्जहिय	१।४५	पडह	१।५।२८ गा० १६
				पडाय	१।५।२८
				पडिकूल	२।२७
				पडिकम्म	
				-पडिकम्मामि	१।५।४३, ५०, ५७, ६४, ७१

## शब्द-सूची

पडिक्कमिता १५।२५	पडिग्गह ६।२७, २८, ४७	पडिय १५।२६, ३१
पडिगाह	से ५०, ५३ से ५८	पडिया १।१, ४ से ११
-पडिगाहेज्जा १।४ से	पडिग्गह(य) १।१३५,	से १७, १६, २१, २३,
७, १२ से १८, २१	१३६, १४३, ६।२६,	२४, २६, २८, २९,
मे २५, ३६, ४१, ६३	२७, ४४ से ४६, ४९,	३२, ३४ से ३७,
से ८२, ८५, ८७ मे	५६, ५७	४०, ४२ से ४६,
१०२, १०४, १०६ से	पडिग्गहधारि १।१४३	४९, ५०, ५२, ५३,
११६, १२१, १२३,	पडिग्गहिय १।१४४,	५५, ५८, ६१, ६२,
१२८, १३३ से १३६.	१५१, ६।४७	८२ से ८५, ८७, ८९
१४१ से १४६, १५१	पडिग्गह	से ९६, १०१, १०२,
से १५४, २।४८,	-पडिगाहेज्जा १।१	१०४ से ११६; २।३
५७ से ६१, ६३, ७४,	पडिग्गाहिय २।२, १३३,	से ७, १०, १२, १४,
५।५ से १५, १७ से	१३६	१६, २१, २७ से २९;
२०, २२ से २५, २८	पडिच्छ	३।१४, ६०, ६१, ५।४
से ३०, ६।४ से १४,	-पडिच्छ १५।२६, ३१	से ८, १२, ४२ से ४५,
१६ से १९, २१ मे	पडिच्छित्ता १५।३१	४९, ५०, ६।४ से ७,
२६, २९ से ३१, ४६,	पडिणीय ७।२४	११, ४४, ४६, ५०,
७।२६ से ३१, ३३ से	पडिपह १।५२, ३।५४ से	५३, ५७, ५८, ७।५,
३६, ४० से ४५, ८।१	५९, ५।४८, ६।५६	७; ८।३ से ५, १०,
पडिगाहित्तए १।१३५,	पडिगुण ४।२६, १५।१,	१२, १४, ६।३ ४,
५।२५; ६।२५	८, ३८, ४०	५, १०, १२, १४,
पडिगाहिय १।३५, १।३५	पडिबद्ध २।५०, ७।५	१०।४ मे ६, ११;
पडिगाहेत्ता १।३३, ४७,	पडिवोह	१।११ से १८,
५७, १।२५ से १२८,	-पडिवोहेज्जा ७।२४	१२।१ से १६
१३० से १३२	पडिमा १।१५५, २।६२	पडिल्ल ४।२०, २२, ३०
पडिग्गह १।४६, १०१,	से ६७, ५।१६ से २१,	पडिल्लेह
१३१, १३७, ३।६,	६।१५ से २०, ७।४८	-पडिल्लेहिज्जा ५।२७,
११, २१,	से ५६, ८।१६ से २१	६।२८; ८।२४

-पडिलेहिस्सामि ५।२६; ६।२७	पडिवज्जित्तु १५।३२ गा० १६	पढम ६।१६; ७।४६; ८।१७; १५।८, २६, २६, ४४, ४६, ५१, ५८, ६५, ७२
-पडिलेहेज्जा २।७०, ७१; ३।१५, ४०, ८।२५	पडिवज्जेत्ता १५।३२ पडिवण्ण(न्त) १।१५५, २।४४, ६७; ५।२१; ६।२०, ७।५६; ८।२१, १५।३३	पणग (य) १।१, २, ४२, ४३, ५१, ८२, ८३, १०२, १३५; २।१, २, ३१, ३२, ५७ से ६१, ६८, ६९; ३।१, ४, ५, १३; ५।२८ से ३०, ३५, ६।२६ से ३१, ३८; ७।१०, २६ से ३१, ३३ से ३८, ४० से ४५; ८।१, २, २२, २३; ९।१, २, १०।२, ३, २४, २८
पडिलेहमाण १।३२ पडिलेहित्तए २।७२, ८।२६	पडिविसज्ज -पडिविसज्जेत्ति १५।३४ पडिविसज्जेत्ता १५।३४ पडिसवेद -पडिसवेदेइ १५।७६ पडिसुणित्तए ५।२२, ६।२१ पडिसुणेत्तए ५।२२ पडिसेविय १५।३६ पडिसेहिय १।५६ पडोण १।२७, १२१, १४३, १५०, २।३६ से ४२ पडुप्पन्न ४।७ पडुप्पन्नवयण ४।३, ४ पडुप्पवाइयट्टाण ११।१४ १२।११ पडोल १५।२८ पढम १।१४१, १४८; २।६३; ४।६; ५।१७,	
पडिलेहिता २।२, ६, ११, १३, १५, १७, ३२; ८।२, ६; ९।६, ११, १३, १५		
पडिलेहिय १।३, ५१, ५४, १३५; २।६६, ७२; ५।३६; ६।४२, ७३; ८।२३, २६		
पडिलेहेत्ता ३।१५ पडिलोम २।२७ पडिवज्ज -पडिवज्जइ १५।३२, ३२ गा० १८		पणवसइ ११।२ पणियगिह २।३६ से ४२, ३।४७, ४।२१, २२ पणियसाला २।३६ से ४२; ३।४७; ४।२१, २२ पणीय १५।६८ पणुवीस १५।७८ पण्ण १।४२, ४३, २।४६ से ५६, ७०, ७१; ३।२, ३; ७।१४ से २१; ८।२४, २५
पडिवज्जमाण १।१५५; २।६७; ५।२१, ६।२०; ७।५६; ८।२१		
पडिवज्जित्ता १५।२५ पडिवज्जित्ताणं १।१५५, २।६७; ५।२१; ६।२०; ७।५६; ८।२१		

पण्ण(न्त)त्त	७५७;	पघूव	पमज्जित्ता	२२,६,११,	
१५१४,६५ से ६६,		-पघूवेज्ज	१३१६,१८,	१३,१५,१७,३२;	
७२ से ७६		२५,३२,४६,५५,		८२,६; ६१६,११,	
पण्णरस १५३६ गा० ४		६२ से ६६; १४१६,		१३,१५	
पण्णव		१८,२५,३२,४६,	पमज्जिय	१३,५१,५४,	
-पण्णविंसु	४१७	५५,६२,६६		१३५; २१६६,७२,	
-पण्णविस्सति	४१७	पघोव		७३, ५३६;	
-पण्णवेति	४१७	पघोएज्ज	५३२,३४,	६१४२,४५; ७३;	
पण्णव	४१६	६३४,३७, १३१७,		८२३,२६	
पण्णहत्तरी	१५३	२३,३२,४४,६०,	पमज्जेत्ता	३१५,३४	
पण्णा	१६१५	६६, १४७,२३,३२,	पमाण	१५२६	
पतिरि		४४,६०,६६	पमेइल	४२५	
-पतिरिंसु	१०१६	-पघोवेति	२१५४,७१६	पयत्तकड	४२२,२४
-पतिरिति	१०१६	-पघोवेहि	५२४,	पयथ	१५३२ गा० १६
-पतिरिस्सति	१०१६	६२४		पयल	
पत्त(पत्र)	१५१,६६,	पघोवेत्ता	५२४, ६२४	-पयलेज्ज	१५१,८८,
२१४; ३५५;		पभिड	१५१२,१३	२१६,४६,७१;	
५२५; ६२५,		पमज्ज		३४२, ८२५	
८१४; ६१४,		-पमज्जेज्ज	१५१;	पयलमाण	१५१,८८,
१०१२,१५		३३१,३२,३८,३६,		२१६,४६,७१;	
पत्त(प्राप्त)	१५१२ से ५५	६४८,४६; १३२,		३४२; ८२५	
पत्तच्छेज्जकम्म	१२१	१२,१६,२८,३६,			
पत्तुण	५१४	४६,५६,६५,७७,		पयायसाला	४३०
पत्तोवय	१०२७	१४२,१२,१६,२८,		पयाव	
पदग्ग	१०१७	३६,४६,५६,६५,७७		-पयावेज्ज	१५१; २२१;
पवार				३३१,३२,३६;	
-पवारेज्जा	१५१४५	-पमज्जेज्जा	१८५	५३५ से ३६; ६३८	
				से ४२,४८,४६	

पयावेत्तए २।१६; ५।३५	परक्कमाण १।५१; ३।४२	परिट्टविय २।४१, ४२, ४४
से ३८, ६।३८ से ४१	परग १।१४३, २।६३,	परिट्टवेज्जमाण १।४६
पयाहिण १।५।२८	६५; ७।५४	परिट्टवेमाण २।७१;
पर १।१, २५, २६, ५६,	परदत्तभोइ ७।१	८।३५
५७, ६३, १०१, १२३	परम १।५।२८ गा० १६	परिणम
१२७, १२८, १३०,	परलोड्य ११।१६	-रिणमेज्जा १।३१
१३५, १३६, १४१ से	परय १६।१२	परिणय १।१००, १।५।१५
१५४, २।४७, ६३,	परिएसिज्जमाण १।२१	परिणाम २।२१, २६;
६४, ३।१४, १७, १८	से २४	३।१४, ५।४६ से
२१, २५, २६, ३३,	परिग्गह १।५।७१, ७७;	४८; ६।५४, ५५
३६, ४३, ४४, ५६;	१६।१	परिणिब्ब
५।४, १७ से २०, २२	परिघासिय १।३५	-परिणिब्बाडस्संति
से २६, ४६ से ४८;	परिजाण १।५।२५	
६।३, १६ से १६, २१	-परिजाणह १।५।४५,	परिणचारि १६।८
से २७, ४६ ५४ से	५२ से ५५	परिण्णा(न्ना) ३।१७ से
५६; ७।५, ७;	-परिजाणाहि १६।१०	२१, २४, ५४ से ५८;
१०।२८, १३।२ से	-परिजाणेज्जा ३।१७	१६।६
३६, ४१, ४६, ४४,	से २१, ५४ से ५८	परिण्णात(य) ७।४, ६, ८,
१६।७	परिजीविय ३।३३	२३, ३२, ३६, ४५, ४६
परकिरिया १३।१ से ७८	परिट्ठव	परितावणकारी ४।१०,
परकिरियासत्तिक्कय १३	-परिट्ठवेइ १।१२५,	१२, १४, २१, २३,
परक्कम १।२०, ५२, ५३,	१२७	२५, २७, २६, ३१,
६१, ३।६, ७, ४१,	-परिट्ठवेति ५।४७,	३३, ३५
४३	६।५५	परिनिब्बुय १।५।२
-परक्कम	-परिट्ठवेज्जा १।३, १२६,	परिपिहत्ता २।७५;
-परक्कमेज्जा १।५०,	१३५, ५।४६, ४८,	८।२६
५२, ५३, ६१, ३।६,	६।४७, ५४, ५६,	
७, ४१, ४३	१०।२८	परिपिहिय १।५४

परिपीलियाण ११०४	परिभुत्त ६१३ से ७६,	परियावसह ११०५,
परिभव	११, १३, १५,	२१३३ से ३५, ४७;
-परिभवेज्ज ३६, ११;	१४४ से ८, १०	७४, ६, ८, २३, ४६,
५१५०; ६१५८	परिमंडिय १५१२८	४६
-परिभवेति ३६१;	परियट्ट ११२१	परिवज्ज
५१५०; ६१५८	परियट्टण १४२, ४३;	-परिवज्जए १५१७२ से
परिभाइत ११११८,	२१४६ से ५६; ३२,	७६
१२११५	३; ७१४ से २१	परिवड्ड
परिभाइज्जमाण १४६	परिया	-परिवड्डइ १५११२, १३
परिभाइय २१४४	-परियाइंति १५१२७	परिवस
परिभाएत्ता ११३५,	परियाइत्ता १५१२७	-परिवसंति १४६,
१३६; ६१४६	परियाग(य) १५१५, २५,	१२२, ३१४५
परिभाएमाण ११५७	३८	परिवाइय ११३२
परिभाय	परियारणा ११३२;	परिवायय ११३२
-परिभाएज्जा ११५७	२१५५	परिवासिय १११
-परिभाएह ११५७,	परियारेमाण १५११५	परिवुड १५११४
१३६	परियाव	परिवुत्त १११६;
-परिभाएहि ११५७	-परियावेज्ज ११८८,	१२११३
परिभुजंत ११११८,	२११६, ४६, ७१;	परिवुसिय ३१४, ५
१२११५	८१२५; १५१४४,	परिवूढ ४१२५, २६
परिभुजमाण ११४६	४७, ४८	परिब्बय
परिभुत्त १११२ से १६,	परियावज्ज	-परिब्बए १६१७
१८, २२, ३५; २१३	-परियावज्जेज्ज ११५३	परिसड
से ६६, ११, १३,	-परियावज्जेज्जा ३१२८;	-परिसडड ११११३,
१५, १७, ४४, ५१५	६१४५	१२७
से ६, ११, १३; ६१४	परियावण्ण(न्) ११२७,	परिसा १५१२६
से ८, १०, १२; ८१३	१३६, १४५, १४६,	परिसाड २१७६, ८१३०
से ७, ६, ११, १३, १५;	१५२, १५३	
१५		



परिसाड	पलिमद्	पवाय(त) १।२६; २।१२,
-परिसाडिति १०।१५	-गलिमद्देज्ज १३।३, १३,	७२, ७६; ८।१२,
-परिसाडिस्संति	२०, २६, ४०, ५०,	२६, ३०; ६।१२
१०।१५	५७, ६६; १४।३,	पवाल १५।१२, १३
-परिसाडेति १५।२७	१३, २०, २६, ४०,	पवालजाय १।१०६
-परिसाडेसु १०।१५	५०, ५७, ६६	पविट्ठ १।५५, ५८
परिसाडेत्ता १५।२७	पलियंक १३।३६ से ७६	पविस
परिसर १।५२; ३।५६	पलोय	-पविसड २।३०
परिसह १५।१६	-पलोयए १६।१	-पविसिस्सामि १।४६
परिस्सावियाण १।१०४	पल्लल १।१५, १।२।२	-पविसेज्ज १।८, १६,
परिहरित्तए ५।४६ से	पव	३७, ३८, ४०, ४४,
४८; ६।५४ से ५६	-पवेज्जा ३।२६ से २८	४५, ५४, ५८, ५९,
परिहारिय १।८ से ११	पवज्ज	१२२, १२३; २।४५,
परुद्ध	-पवेज्जेज्जा ३।८ से १३	४६; ५।४२, ४३,
-परुवेद्द १५।४२	पवड	४५; ६।४४, ४५,
परोक्खवयण ४।३, ४	-पवडेज्ज १।५१, ८८;	५०, ५१, ५३
पलंब १।६, ७, ८२, ८४	२।१६, ४६, ७१;	पविसमाण १।६, ३८;
पलंबंत १५।२८	३।४२; ८।२५	२।४५, ४६; ५।४३;
पलंबजाय १।१०८	पवडमाण १।५१, ८८;	६।४४, ५१
पलाल २।६५, ७।५४	२।१६, ४६, ७१;	पविसितु(उ)काम १।८,
पलालग २।६३	३।४२; ८।२५	१६, ३७, ४४;
पलालपुज २।३१, ३२	पवत्ति १।१३०, १३१;	५।४२; ६।५०
पलिउंचिय १।१३८	२।७२; ८।२६	पविसेत्ता १३।७६;
पलिच्छाय	पवर १५।३, २८	१४।७६
-पलिच्छाएति १।१३१	पवा २।३६ से ४२;	पवुट्ठदेव ४।१६
पलिच्छदिय ५।४६ से	३।४७; ४।२१, २२,	पवेदित १६।६
४८; ६।५४ से ५६	१०।२०; ११।८;	
	१२।५	

पवेस १।४२, ४३, २।४६,	पहोय	पाण(पान) १।१, १।१ से
५०, ३।२, ३,	-पहोएज्ज १।६३,	१७, १६, २।१, २३ से
७।१४ से २१	२।१८, २१,	२५, ३६, ४१, ४४,
पवेस	१३।१६, ५३,	४५, ५६, ५७, ६३ से
-पवेसेज्जा ७।२४	१४।१६, ५३	८१, ८४, ८५, ८७ से
पव्वइय १५।१, ३४	-पहोएहि १।६३	९८, १०५, १२१,
पव्वत्त		१२३, १२७, १२६,
-पव्वत्तई १५।२६	पा	१४१, १४२, १४५,
गा०१	-पीएज्ज १।२, ५७, १३६	१४६, १५२, २।२०,
पव्वत्त १५।२६ गा०६	पाइम ४।२५	२८, ४८; ४।२, २३,
पव्वय ३।४८, ४।२६,	पाईण १।२७, १२१,	२४, ६।२६, ४७,
३०, ११।६	१४३, १५०; २।३६	७।५ १४; ११।१८,
पव्वयगिह ३।४७,	से ४२, १५।२६, ३८	१२।१५, १५।१३,
४।११, २२	पाड १।३२	४८, ५६, ६८
पव्वयदुग्ग ११।६, १२।३	पाउण	पाण(प्राण) १।१, २, १२
पव्वयविदुग्ग ३।४८	-पाउणेज्ज ३।१२	से १७, ४०, ४२, ४३,
पसंसित १५।३८	-पाउणेज्जा ३।२६	५१, ६१, ८२, ८३,
पसिण ३।४५	पाउणित्तए ३।३०, ३७	८८, १०२, ११२,
पसु २।२०, ३।५४,	पाएसणा ६	१३५; २।१ से ७,
४।२५, २६, ७।१४,	पाजोसिय १५।४५, ४६	१६, ३१, ३२, ४६,
१५।६६	पागार १५।४६	५७ से ६१, ६८, ६९,
पसुय ३।४६	पाडिपहिय ३।४२, ४५,	७१; ३।१, ४, ५, ७,
पसूय ४।३४, १५।८	५१, ५३ से ५६,	१३, ५।५ से १०,
से ११	५८ से ६१	२२, २७ से ३०, ३५,
पह १६।१२	पाडिहारिय २।६०, ६१,	४५; ६।४ से ६, २१,
पहेण १।४२, ४३	५।४६, ४७, ६।५४,	२६ से ३१, ३८, ४८,
पहोडत्ता १।६३	५५; ७।६	४५, ५३,

पाण(प्राण)	७।१०,	पामिच्च	८३ से ८,	पायच्छित्त	१५।२५
	२६ से ३१, ३३ से		६।३ से ७;	पायत्तए	१।१२१
	३८, ४० से ४५;		१०।४ से ६	पायपुंछण	३।६, ११, ६१;
	८।१ से ८, २२, २३,	पामिच्च			१०।१
	२५; ६।१ से ७;	-पामिच्चैज्ज	२।२६;	पायय	१०।२८
	१०।२ से ६, १४, २८,		३।१४	पायरास	१५।२६ गा०२
	१३।७६; १४।७६;	पामिच्चय	१०।११	पायव	१५।१४
	१५।३२ गा० १६,	पाय(पाद)	१।१, ३५,	पारय	३।३०, ३७
	१५।४४ से ४७, ४८		८८, १४६, १५३;	पारिताविय	१५।४५, ४६
पाणग	६।२६		२।१८, १६, ४५, ४६,	पालइत्ता	१५।३, २५
पाणगजाय	१।६६, १०१,		७१, ७३, ७४; ३।६,	पालंब	२।२४; ५।२७;
	१०२, १०४, १२६,		१५, २०, २१, २७,		१३।७६; १४।७६
	१५१ से १५४		३४ से ३६, ४०, ५०,	पालंबसुत्त	१५।२८
पाणाइवाडय	१५।४५,		५२, ८।२५ २७,	पालिता	१५।७८
	४६		२८; १३।२ से ११,	पालिय	१५।४६, ५६,
पाणाइवाय	१५।४३, ४६		३६ से ४८; १४।२		६३, ७०, ७७
पाणि	१।१४३, १४५,		से ११, ३६ से ४८;	पाव	७।१
	१४६, १५२, १५३;		१५।२८, गा०८	पावकम्म	२।४१, ४२,
	२।७५; ३।४२,	पाय(पात्र)	१।३५, १३५,		१५।३२
	७।६; ८।२६		१३६, ३।६१, ६।१	पावग(य)	५।४८; ६।५६;
पाणैसणा	१।१४०,		से ६, ११, १३ से १६,		१५।४५
	१४८ से १५५		२१ से २५, २६ से	पावार	५।१४
पादच्छिन्न	४।१६		४२, ४६	पाविय	१५।४६
पामिच्च	१।१२ से १७,	पायए	१।३, १२३, १३६;	पास	
	२६; २।३ से ८;		२।२८; ६।२६;	-पासइ	१२।१ से १३;
	५।५ से १०, ४६ से ४८,		७।२६, ३३, ३६, ४३		१५।७३
	६।४ से ६, ५४ से ५६;	पायखज्ज	४।३१	-पासह	३।५४ से ५८
				-पासेज्जा	४।१६ से २२

पास	१५२८	पिडवाय	११,४ से ८,	पिप्पलि	११०७
गा०	११,१३		११ से १७,१६,२१,	पिप्पलिचुण्ण	११०७
पासग	४२१		२३,२४,३३,३६,	पिवित्ता	१३१
पासमण	१५३६		३७,४०,४२ से ४७,	पियकारिणी	१५१८
पासवण	१५१; २१८,		४६,५०,५२,५३,	पियदंसणा	१५२३
	३०,७१; ८२५;		५५,५८,६१,६२,	पिया	१५१७
	१०१ से २८		८२ से ८४, ८७, ८९,	पिरिपिरियसद्	११४
पासाइ(दि)य	४२०,		९०,९२ से ९४, ९६	पिलुंखुपवाल	११०६
	२२,३०		से ९६, १०१, १०२,	पिलुंखुमथु	११११
पासाद	३४७, ४२१,		१०४, १०६ से ११६,	पिह	
	२२		१२४ से १२६, १२८,	-पिहेहि	३२१
पासादीय	१५२८		१३३, १३४ से १३६,	पिहण	२४१, ४२
पासाय	४२६, ३०;		१४४ से १४७, १५१	पिहय	३१६
	५३८, ६४१;		से १५४, २४४,	पिहाण	२४४
	७१३, १०१३		५४२, ४५, ६४४,	पिहुण	११६६
पासावच्चिज्ज	१५२५		४६, ५०, ५३	पिहुणहत्थ	१८२
पासित्ता	६२१	पिंडेसणा	१, ११४० से	पिहुय	१६, ७, ८२, १४४
पाह			१४७, १५५	पीढ	१८८; २१६,
-पाहामो	१५७,	पिट्ट	१७८, ७९		३२, ३, ४२६;
	११३, १२७	पिट्ठर	११४३		७७, १०१३;
पाहुड	२३८ से ४३	पिणिष्ठा			१५२८, गा०८
पाहुडिय	२४४	-पिणिवेज्ज	१३७६;	पीढसप्पि	४१६
पिड	११६, ४६, १३८		१४७६	पीय	१५३६
पिडणियर	१२४	पित्त	१५१, २१८	पुडरीय	१५३
पिड्य	१३२८ से ३४,	पित्तिय	१५१६	पुगल	१५५
	६५ से ७१; १४२८	पिप्पल	२६५; ७५४	पुच्छ	
	से ३४, ६५ से ७१	पिप्पल्लग(य)	२६३; ७६	-पुच्छेज्जा	३४५

पुच्छण १।४२, ४३; २।४६ से ५६; ३।२, ३, ७।१४ से २१	पुष्कोवय १०।२७ पुम ४।१२, १३ पुरओ ३।६, १६, २२, ६१; ५।५०; ६।५८; १५।२८ गा० १३	पुल्य १५।२८ गा० १२, १५।३२ गा० १६ पुव्व १।३५, ५५, ५६, ५८, ८५, ६१, ६५, १२१, १२३; २।१६, २१ से २५, २७ से ३०, ३८, ४१, ४२, ४४, ४६, ७१; ३।६, ११, १३, ४६; ४।१ से ६; ५।२७; ६।२८, ४५; ८।२५; १५।२६ गा० १, ४१
पुट्ट ३।४५ पुढविकाय १।६२, २।४१, ४२; १५।४२ पुढविसिला २।६६; ७।५५ पुढवी १।५१, १०२; ५।३५; ६।३८; ७।१०; १०।१४ पुढवीकाय १।६१ पुण १।१ पुण्ण ३।१४ पुण्णागवण १०।२७ पुत्त १।२५, ४६, ६३, १२१, १२२, १४३, २।२२, २५, ३६ से ४२, ५१ से ५५, ६४, ५।१८; ६।१७; ७।६, १६ से २०, ४७; १०।१२, १५, १६ ॠ १।१२६; २।१४; ३।५५; ५।२५; ६।२५, ८।१४; ६।१४; १०।१२, १५ न्तर १५।३	पुरत्त १५।२८, २६ पुरा १।४४, ४५, ४६, ५६, १२३; २।४५, ४६ पुराण १।११२ पुरिस ४।५; ११।१६, १८; १२।१३, १५ पुरिसन्तर १।१२ से १६, १८, २२; २।३ से ७, ६, ११, १३, १५, १७, ५।५ से ६, ११, १३; ६।४ से ८, १०, १२; ८।३ से ७, ६, ११, १३, १५; ६।३ से ७, ६, ११, १३, १५; १०।४ से ८, १० पुरिसवयण ४।३, ४ पुरे १।२६, ३२, ४२, ४३ पुरेकड १६।८ पुरेकम्मकय १।६३, ६४ पुरेसथुय १।४६, १२२, १३०	पुव्वकम्म २।२७ पुव्वामेव १।२५, ४६, ५१ ५४, ५७, ६३, ६६, १०१, १२२, १२३, १२७, १३१, १३५, १४३; २।४८, ६३, ६४, ७०, ७१, ७३ से ७५; ३।१५, २६, ३४, ४०; ५।१८, २२ से २७; ६।१७, २१ से २८, ४४, ४५; ७।३, ६ पुव्वकीलिय १५।६७ पुव्वरय १५।६७ पुव्वं १५।२८ गा० १२

पञ्चम	१६१३	पोतगणिणी	३१४८	फल्गुवग	१०१२७
पञ्चमिनाम	११११२	पोतगण	११११४	फाल्गुम	११४६
पनि	२११८	पोतगणविभग	११११८	फाल्गुम	५११४
पनिआनम	११११३	पोतगण १११३५. १५१२७		फाल्गुम	५११७६
पुन ११८६.५१. १३१११.		पोतग(य)	५११.१७	फाल्गुमन	४१८
२७.६४.७१.		पोतगकम्म	१२११	फाल्गुममय	१५१७६
१४१११.२७.६४.७१		पोतगजय	११११५	फाल्गुमना	१५१७८
पुनमि १२११. १५१२८		पोतगवीम	११११५	फाल्गुमय	१५१४६.५६.
पेन्ना	११८६	पोतगिमी	१५१२६.३८		६३.७०.७७
पेन्नागिज्ज	१५१२८	पोतगम	२१७५. ८२६	फाल्गुम	१५१.७.१८.२२.
पेन्ना	१५१२८	पोतगमि	१२२१		२३.२५.८१.१००.
पेन्ना	५११५				१०१.१२८.१४१
पेन्नाम	५११५	फ			से १४६.१५१ से
पेन्नाम	३१६	फमि	१५११५		१५३. २१४४.६१.
पेन्ना ११४.५.२१.२४.		फम	१६२. ४११.१०.		६३.६४.७२ से ७४.
२५.४०.४२ से ४५.			१२.१४.२१.२३.		३१२.३. ५१११ से
५२.५४ से ५६.५८.			२५.२७.२६.३१.		१३.१७ से २०.३०.
६१.६३.१२३.			३३.३५. १६१३		६१०.१२.१६ से
१२८. २१२४.६८.		फल	२११४. ३१५५.		१६.३१. ७१२८.
३१२२.४३.५६.			४१३२. ५१२५.		३१.३५.३८.४२.
४१२३ से ३४.			६१२५. ८११४.		४५. ६१२
५११८ से ४५.४८.			६११४. १०११२.	फुम	
६१७.४४.४५.५३.			१५. १११३६	-फुमाहि	११२६
५६. ११११६.		फलम(य)	११८८. २११६.	-फुमेज्ज	११६६
१२११३			३१२.३. ७१७	-फुमेज्ज	१११४.४१.
पोन्नासालियकुल ११२३		फलिह	४१२६. १११५.		१४४.४१
पोन्नावर १११५. १२१२			१२१२	फुमिता	११८२

व्व	वहिया	७२४; ८३ से	वायर	१५१४३	
बंध		७, ९, ११ से १५;	वारस	१५३४, ३८	
-बंधंति	२१२२, ५१;	६३ से ७, ९, ११ से	बाल	२१७२; ३६, ११,	
	३६१; ५१५०;	१५; १०४ से १०,		२६, ४४; ८२६;	
	६१५८; ७१६	१५३८		१५१५	
-बंधंतु	२१२२	बहु	११३, १५ से १७,	वासीति	१५१५
-बंधेज्ज	३६, ११		२४, ४२, ५७, ६१,	वाहा	१६२; ३२५, २६,
			१२७, १४५, १४७;		४४, ४७ से ४६
बंध	१६११		२१७, ३६, ३७, ३६,	वाहाओ	३१६, ४७
बंधण	६१४; १६११, १२		४०, ७२ से ७४;	वाहि	७२४; १०१२
बंध	१५१२६ गा० ५		३१ से ५, ४५, ६०;	बाहिरण	१४६
बंधचारि	११२२१;		४२६; ५६, ६, १०,	बाहु	१८८; २१६, ४६,
	२१२५, ३८		२०, ४६; ६१५, ७,		७१; ३२१; ८२५
बंधचेरवास	१५३६		८, ११, १६, ५७;	वित्तिय	५१२
बद्ध	५१२७; १६११		१०१५, ७, ८, ९;	विल	१८३, १३६
बद्धीसगसद्	१११२		१५१८, २५, ५७, ७१	वीय(वीज)	११२, ४२,
बल	३१२६; १५१२६, २७	यहखज्जा	४३३		४३, ५१, ८२, ८३,
बलत्र	५११; ६१२	बहुणिबद्धिम	४३२		१०२, १३५; २११,
बलाहग	४११७	बहुदेसिय	५१३१ से ३४;		२, १४, ३१, ३२, ५७
बहि	११२६, ४१; २११२		६१३२ से ३७		से ६१, ६८, ६९;
बहिया	११६, १२ से १६,	बहुफासुय	८२६ से २८		३११, ४, ५, ७, १३,
	१८, २२, ३८, ४०,	बहुमज्ज	१५१२८		५५; ५१२५, २७ से
	१२८; २३ से ६,	बहुरज	१६, ७, १४४		३०, ३५; ६१२५,
	९ से १३, १५, १७,	बहुरय	१८२		२६ से ३१, ३८, ४५,
	५१५ से ९, ११, ४३,	बहुल	१५१५, २६, २६		७१०, २६ से ३१,
	४५; ६१४ से ८, १०,	बहुवयण	४३३, ४		३३ से ३८, ४० से ४५;
	१२, ५१, ५३;	बहुसंभूय	१३१ से ३४		

बीय(बीज) ८१,२,१४, २२,२३; ६१,२, १४, १०२,३,१२, १४,१५,२८	-वेमि ४१८,३६; ५१४०, ५१; ६४३,५६, ७२२,५८; ८३१, ६१७; १०२६; ११२०; १२१७, १३८०, १४८०	भगव १२६; ७५७; १५१ से ४,७ से २६; १५२६ गा० ६, १५२७ से ३६, ३८,४०,४१,४२
वीय(द्वितीय) ४६०; ६१२ वीयग ११०४	बोदि १५२८ गा० ६ बोद्धव्व १५२६ गा० ५ बोह बोहिति १५२६ गा० ४,६	भगवई ४१५ भगवन्त ११२१; २१२५, ३८; ४७, ७५७ भगि(इ)णी १२५, ६३, ६६, १०१, १२३, १३५, १३६; २६३, ६४, ४१५; ५१८, २२ से २६; ६१७, २१ से २७, १५२१
बुद्ध २१७२, ८२६ बुद्ध बुद्धा १२८, ३२, ३५, ५१, ५६, ८५, ८८, ६१, ६५, १२३; २१६, २४, ४५, ७०; ३६, ११, १३, २२, ४२, ४६, ६१, ५२७, ६२८, ४५; ८२५, १५४४, ४७, ४८, ५१ से ५५, ५८ से ६२, ६५ से ६६, ७२ से ७६	भंग १६६ भंगिय ५१, १७ भंडग १३७ से ३६; ३१५ भंडभारिय ३२५ भते ७१, १५३१, ४३, ४६, ५०, ५७, ६४, ७१ भंस भंसेज्जा १५६५ से ६६, ७२ से ७६ भगंदल १३२८ से ३४, ६५ से ७१; १४२८ से ३४, ६५ से ७१	भज्जा १५२२ भज्जिज्जमाण ११२४ भज्जिम ४३३ भज्जिय १५ से ७, ८२ भण भणोज्जा ११३६ भत्त ११६, १२२, १२३; २१२०; ३१५, ३४, ४५, ७१४, १५२५, २८ गा० १०, १५२६, ३८ भत्ति १५२८ भट्टय ११३२; ४२४



भयुह ~ १३३७, ७४;	भवणगिह २३६ से ४२;	-भासेज्जा ३५३; ४३,
१४३७, ७४	३४७, ४२१, २२	५, १० से १६, १६
भय १५१६, ५०, ५४	भवणवइ १५६, ११,	से ३६, ३८; १५५०
भयंत १४६, १५५;	२७, ४०	भासंत १५५०
२३४ से ४२, ६७;	भविता १५१	भासजाय(त) ४६
५२१, ४७; ६२०,	भाय ११६; १५२०	भासज्जाय ४७
५५; ७५६; ८२१	भायण १६३ से ८१	भासमाण ३५१, ५३
भर १५२८ गा० १४,	भायणजाय ११४३	भासा ३५१, ५३; ४३,
१५	भारह १५३	५, ६ से १६, १६ से
भव	भारिया १२५, ६३;	३६, ३८
-भवइ (ति) १३५,	२६४; ५१८;	भासिज्जभाणी ४६
१२१; २२५, २७,	६१७	भासिय ४६
३४ से ४३;	भाव ३६१; ५१५०;	भासुर १५२८ गा० ६
३२५; ६२६;	६१५८; १५१५,	मिद
७५० से ५३;	३३, ३६; १६११	-मिदंति १८३
१५४६ से ५३, ५६,	भावणा १५४४ से ४८,	-मिदिपु १८३
६३, ७०, ७७, ७८	५१ से ५५, ५८ से	-मिदिस्संति १८३
-भवति १३२, १२१,	६२, ६५ से ६६,	-मिदेज्ज २२६
१४३, १५०; २२५,	७२ से ७६, ७८	मिक्खाग १४६, १३८,
२७, २६, ३६ से ४२,	१५३६	१३६
४४; ४८; १५४४,	भास	मिक्खायरिया १४६
५१, ५८, ६५, ७२	-भासइ १५४२	मिक्खु १११, ४ से ७, १६
विस्सामि ७१	-भासंति ४७	से २१, २३, २४, २६,
वेज्जा २७६; ८३०	-भासावेज्जा १५५०	२७, २६, ३०, ३२ से
१५३	-भासिसु ४७	३४, ३६ से ४४,
खय १५३, २५	-भासिस्संति ४७	४६ से ४६, ५२ से
	-भासेज्ज ३५१, ५३	५६, ५८,

मिक्खु ११६० से ६२,	मिक्खु ८११, २, ७, ८, १०.	मिक्खुणी ३१२, ३, ६ ने
८२ से ६६, १०१ से	१२, १४, १६, २२ ने	८, १०, १२, १४ ने
१२०, १२२ से १२६,	३१, ६१, २, ७, ८,	१६, २२, २३, २७,
१३३ से १४०,	१०, १२, १४, १७,	२६, ३१, ३३ ने ३६,
१४४ से १४७, १५१	१०१ से ६, ११ से	३८, ४०, ४१, ४३,
से १५४, १५६;	२६; १११ से २०;	४५ ने ४८, ५० ने
२११, २, ७, ८, १०,	१२१ से १७;	६२; ४१, ६ ने
१२, १४, १६, १८ से	१५१७२ से ७६,	३६. ५११, ४ ने
३२, ४३ से ४६, ४८	१६१२, ७, ८	१०, १२, १४, १५,
से ६६, ६८, ७७,	मिक्खुणी १११, ४ से १७,	१७ ने २०, २८ ने
३१२, ३, ६ से १६,	१६ से २१, २३, २४,	३८, ४० ने ४६, ४८,
२२, २३, २७ से २६,	२६, २७, ३०, ३६ से	४८ ने ५१, ६१, ३
३१, ३३ से ३६, ३८,	४२, ४४, ४६, ५०,	ने ६, ११, १३, १४,
४०, ४१, ४३, ४५ ने	५२ से ५५, ५८, ६०	१६ ने १६, २६ ने
६२; ४११, ६, ६ से	ने ६२, ८२ ने ८४	४१, ४३, ४६, ४८,
३६; ५११, ४ से १०,	८६, ८७, ८६, ८०,	८८, ९० ने ९२,
१२, १४ से २०, २७	६२ से ६४, ६६ ने	५४, ५६ ने ५६;
ने ३८, ४० ने ४४,	६६, १०१ ने १२०.	७११० ने २२, २५,
४६, ४८ से ५१;	१२२, १२४ से १२६,	२७ ने ३२, ३६ ने
६११, ३ से ६, ११.	१३३ ने १३७, १४४	३६, ४१ ने ४६, ५१,
१३ ने १६, २६ से	ने १४७, १५१ ने	५५, ५८; ८१, ८३,
४१, ४३ से ४६, ४८,	१५४, १५६; २११,	८, १०, १२, १४, २२
५० से ५२, ५४, ५६	२, १०, १२, १४, १६,	ने २६, २८ ने ३१
से ५६; ७१३, १० से	१८, २०, २६, ३० ने	६१, ६३, ६८, ७०,
२२, २५ से ४६, ४८,	३२, ४३, ४५, ४८ ने	१२, १४, १६, १८, २०
५० से ५५, ५८;	६१, ६३ ने ६६	ने ६१, ६३ ने ६६
	६८ ने ८८,	६१, ६३ ने ६६
		१२, १४, १६, १८, २०

भिच्छुडग	१५।१३	-भुजे	१।१२५	भूय(त)	६।४ से ६, २१;
भित्ति	५।३७; ६।४०;	-भुंजेज्ज	१।२, ५७, १३६		८।३ से ८, २५,
	७।१२; १५।२८	-भुंजेज्जा	१।२६, १२६,		६।३ से ७; १०।४
भिन्नमुक्क	२।२६		१३८, १३६;		से ६; १३।७६;
भिन्निसमाण	१५।२८		१५।५६		१४।७६; १५।३, ६,
भिल्ला		-भुंजेज्जासि	१।१२४		३२ गा० १६, १५।४०,
-भिल्लोज्ज	१३।५, २१,				४४, ४७, ४८
	३०, ४२, ५८, ६७;	भुजमाण	१।२५, ५७, ६३	भूयमह	१।२४
	१४।५, २१, २३, २२,	भुजावेत्ता	१५।१३	भूसण	१५।२८
	५८, ६७	भुजिय	४।२	भेद(य)	१५।६५ से ६६,
भिल्ला (य)	१।५३;	भुजंगम	१६।६		७२ से ७५
	१०।१७	भुज्जतर	३।१४	भेदकर	१५।४५, ४६
भिस	१।११४	भुज्जिय	१।६, ७, १४४	भेयणकरी	४।१०, १२,
भिसमाण	१५।२८	भुज्जो	२।३३, ३४		१४, २१, २३, २५,
भिसमुणाल	१।११४	भुत्त	१।३१; १५।३६		२७, २३, ३१, ३३, ३५
भिसिभिसित	१५।२८	भुया	१६।१०	भेरव	१५।१६
भिसिय	२।४६; ३।२४;	भूओवघाड्य	१५।४५, ४६	भेरि	१५।२८ गा० १६
	७।३, २४	भूओ(तो)वघाड्या		भो	१।३२
भीम	१५।१६		४।१०, १२, १४, २१,	भोइ	१५।४८, ५६, ६८
भीय	३।५६, ६०; ५।४८,		२३, २५, २७, २६,	भोगकुल	१।२३
	४६; ६।५६, ५७		३१, ३३, ३५	भोच्चा	१।४६, १२५,
भीरु	१५।५४	भूमिभाग	१५।२६		१३२, १३५
भीरुय	१५।५४	भूमी	६।४७; ७।६	भोत्तण	१।३, १२१, १२३,
भुंज		भूय(त)	१।१२ से १७,		१३६, २।२८,
-भुंजह	१।५७, १२७,		८८; २।३ से ७, १६,		६।२६; ७।२६, २६,
	१३६		४६, ७१; ४।३२;		३३, ३६, ४०, ४३
-भुंजावेत्ति	१५।१३		५।५ से १०;		

शब्द-सूची

१२५

भोयण ११३१, ६२६; मसु  
१५४८, ५६, ६८ मकर  
भोयणजात(य) १२५, मक्कड  
६३, १२५, १२७,  
१३१ से १३५, १३८,  
१३६, १४३, १४५ से  
१४६; २१८

क

मउड १३७६; १४७६,  
१५१८, १५१८  
गा० ६

मउय ४३७  
मंच १८७; २१८;  
५३८; ६४१,  
७१३; १०१३

मडावणघाई १५१४  
मंडिय १११६; १२१३  
मत २१५५; ७२०

मत -मंतेति २१५५, ७२०

मथु १६७, ८२, १४४

मंथुजाय ११११

मस १४६, १२४, १३४,  
१३५, ४२६

मंसखल १४२, ४३

मंसग ११३५

मंसादिय १४२, ४३

८२० मक्ख  
१५१८ मक्खेत्ता  
१२, ४२, ४३, मग १४२, ४३; ३१,  
५१, ८२, ८३, १०२, ४, ५, ४०, ५८ से  
१३५; २११, २, ३१, ६०; ५४८, ४६,  
३२, ५७ से ६१, ६८, ६५६, ५७, १५३६  
६६; ३१, ५, मगजो ३१६  
५१२८, २६, ३५; मगसिर १५१२६, २६  
६२६ से ३१, ३८; मच्छ ११२४, १३४  
७१०, २६ से ३१, मच्छखल १४२, ४३  
३३ से ३८, ४० से मच्छा ११३५  
४५, ८१, २, २२, मच्छादिय १४२, ४३  
२३; ६१, २; मज्ज १४६, ११२  
१०१२, ३, १४, २८ मज्जणघाई १५१४

मक्कडजुद्ध १११२,  
१२६ मज्जाव १५१८  
११११, -मज्जावेह १५१८  
१२८ मज्जावित्ता १५१८  
११११, मज्ज २१७२; ८२६,  
१२८ १५१२६, १५१२६  
गा० ५

मक्ख

-मक्खाहि ८२२

-मक्खेज्ज २१२१,

६३२, ३५; १३१५,

१४२१, ३०, ४२,

५१, ५८, ६७, १४१५,

१४, २१, ३०, ४२,

५१, ५८, ६७

-मक्खेत्ति २१२२, ७१७

मज्जमज्ज

२१५०,

७१५; १५१२६

मज्जतो ३१६

मज्जयार १५१२८ गा० ८

मज्जिम १११२८-१२११

मट्टियलाणिया १०१८

मट्टिया १६७, ६८, ६

६१; ३१७, १३, २

४०, १०१२, ३,

मट्टियाकड १०१४	मणुयपरिसा १५३२, ३६	मण्ण(न्त)माण ७२६, से
मट्टियापाय ६१, १६, १७	मणुस्स १५२; ३४५,	३१, ३३ से ३८, ४० से
मट्ट २११०, ५१२, ६६;	५४, ५६; ४२५, २६,	४५; ८१, ६१, २
८१०; ६१०;	१५३२ गा० १८,	मत्त १३२, ६३ से ८१,
१०११	१५४१	१०२, १४१ से १४३,
मड्य १२८, ३४, १२२,	मगोमाणसिय १५३६	१४८, १४६; २४६;
२११; ३२, ३, ४५,	मणोसिला १७१, ७२	३२०
५७, ५८; ७२; ८१	मणोहर १५६६	मत्तग(य) ३२४,
मड्यचेद्वय १०२३	मण्ण	७३, २४
मड्यडाह १०२३	-मण्णेज्जासि ६१७;	मन्न
मड्यथूमिय १०२३	१३८०; १४८०	-मन्नइ ५४८; ६५६
मण २२३, २४; ३२२,	मण्ण(न्त)माण ११, ४ से	मय ३४०
२६, ६१; ५५०,	७, १२ से १८, २१ से	मरण १५२८ गा० ७
६५८; १५३३,	२५, ३६, ४१, ६३ से	मल १६८
३४, ३७, ४३, ४५,	८५, ८७, ८८, ९० से	मलय ५१४
५०, ५७, ६४, ७१	१०२, १०४, १०६ से	मल्ल १५२८
मणपब्बवणाण १५३३	११६, १२१, १२३,	मल्लदाम १५२८ गा० ७
मणि २२४, ५२७, ६२,	१२८, १३३ से १३६,	मसग २७६; ८३०
१५१४, २८,	१४१ से १४६, १५१ से	मह २४१, ४२, ३२, ३,
१५२८ गा० ११	१५४; २४८, ५७ से	३६, ५६, ६०; ५१४
मणि(पाय) ६१३	६१, ६४; ५५ से	४८, ४६; ६१३,
मणिकम्म १२१	१०, १२ से १५, १७	१४, ५६, ५७;
मणिबंघण ६१४	से २०, २२ से २५,	१११४; १२११;
मणुण्ण(न्त) १५७, १३१	२८ से ३०, ६४ से	१५६, १०, २८, ४०
१३८, १३६; ४२४;	१४, १६ से १६,	महरिह १५२८ गा० ८
१५७२ से ७६	२१ से २६, २६ से	महल्ल ४२८ से ३०
मणुय १५२६	३१, ४६;	

महल्लिया ११२६; २११२; ८११२, ६११२	महिस ११५२, ३१५४ से ५६, ४१२५, २६	माणुस्सग १५१५
मह्वव्य ४१२८, १५१४२, ४३, ४६, ५०, ५६, ५७, ६३, ६४, ७०, ७१, ७७, ७८; १६१६	महिसकरण १०११८ महिसजुद्ध ११११२, १२१६	मातुल्लिमापाणग ११०४ माया ४११, ३८ मारणतिय १५१२५ माल ११८७; २११८; ५१३८; ६१४१; ७११३; १०११३, १५१२८ गा० ६
महागुरु १६१६	महिसद्वानकरण १११११, १२१८	माला १५१२८
महामह ११२४	महु ११४६, १११२	मालिणीय १५१२८
महामुणि १६१४	महुमेहुणि ४११६	मालोहड ११८७ से ८६
महालय ११४६; ३१३६, ५६, ६०, ४१३०; ५१४८, ४६; ६१५६, ५७	महुर १११३८, ४१३७ महुस्सव ११११८ मा ११५७, ६३ माड ४१२, १४	मास(मास) ३१४, ५, ५१२२, ६१२१, १५१३. ५, ८, २६, २६
महावज्जकिरिया २१३६	माड्डाण ११३३, ४६, ४६, ५७, १२३, १२५ से १२७, १३० से १३२, १३८; ३१४०, ५१४७; ६१५५	मास(माप) १०११६ मासिय ११२१
महावाय ११४०, ५१४५, ६१५३	माण ४११, ३८ माणव ४११६, २०; १६१११	माहण १११६, १७, २१, २४, ४२, ४३, ४६, ५५, ५८, १४७, १५४; २१७, ८, ३६, ३७, ३६, ४०, ४६; ३१२ से ५; ५१६, १०, २०; ६१८, ६, १६; ७१२४; ८१७, ८; ६१७, ८; १०१८, ६; १५१३, ६, १३; १६१६
महाविजय १५१३		
महाविदेह १५१२५		
महाविमाण १५१३		
महावीर १५११, ३, ४, ७ से ३६, ३८, ४० से ४२		
महासमुद् १६११०		
महासव १११७, १२११४	माणिक १५११२, १३	
महासावज्जकिरिया २१४१	माणुम्माणियद्वान ११११४, १२१११	
महिद्धिय १५१२६ गा० ४	माणुस १५१२८ गा० १२; १५१३४, ३७, ६४	
महिय ११४०; ५१४५; ६१५३	माणुसरंघण १०११८	

माहणी	१५३,६	मुणि	१६५,१०,११	मेहुण	११२१; २२५,
मिओ(तो)गह	१५५८,	मुत्तजाल	१५२८		३८; १५६४,७०;
	६२	मुत्तदाम	१५२८		१६६
मिग ३४६ ; ४२५,२६		मुत्तावली	२२४; ५२७	मेहुणवम्म	१३२; २५५;
मिच्छा ११५५; २६६,		मुत्ताहल	१५२८		७२०
५२१; ६२०;		मुत्ति	१५३६	मोत्ति	१५३६
७५६; ८२१		मुद्दियापाणग	११०४	मोत्तिय	२२४; ५२७,
मित्त	१५१३,३४	मुल्ल	६१३		१५१२,१३
मिरियचुण्ण	११०७	मुसा	१५५०	मोय	२२७
मिरिया	११०७	मुसावाइ	४१०,१४	मोरग	२६३,६५; ७५४
मिलक्खु	३८,६;	मुसावाय	१५०,५६	मोल्ल	५१४; १५२८
	१११८; १२१४	मुह	१६६; २१८; ३१८		गा० ६
मिहुण	१५२८	मुहुत्त	१५२६,३५,३८	मोसा	४६,१०;
मीसजाय	१२६	मुहुत्तग	५४६,४७,		१५५१ से ५५
मुङ्गसद्	१११		६२६,५४,५५	मोहत	१११८; १२१५
मुङ्ग	१५१	मूय	४१६	य	
मुगुंदमह	१२४	मूल	२१४; ३५५;	य	१२
मुग्ग	१०१६		५२५; ६२५;		२
मुक्क			८१४; ६१४;	रज्ज	
-मुक्किस्संति	१५२५		१०१२,१५;	-रज्जेज्जा	१११६;
मुच्छिय	११०५	मूलजाय	१११५		१२१६;
मुज्झ		मूलवीय	१११५		१५७२ से ७६
-मुज्जेज्जा	१११६;	मूलग	१०२६	रज्जमाण	१५७२ से ७६
	१२१६;	मूलगवच्च	१०२६	रज्जुया	३१७,१८
	१५७२ से ७६	मेरा	१२६; ३१४;	रत्त	५१२,४१; ६६;
मुज्जमाण	१५७२ से ७६		५४; ६३		१५२८
मुट्ठि	१३५	मेरुपडणट्टाण	१०१६	रमंत	१११८; १२१५

रम्म	१५।१४, २८	रहकम्म	१५।३६	रुंभ	
	गा० १६	राइ	१।४१, १५।६	-रुंभंति	२।२२, ५१; ३।६१; ५।५०; ६।५८; ७।१६
रय(रजस्)	१।३५, ४०, ५।४५, ६।४४, ४५, ५३	राइंदिय	१५।५, ८	-रुंभतु	२।२२
रय(रत्त)	२।४४	राइणकुल	१।२३	-रुंभेज्ज	३।६, ११
रय		राओ	१।३२, २।३०, ४५, ४६, ७१; ८।२५	रुक्ख	३।४२, ४७, ५६, ६०, ४।२१, २२, २६, ३०, ३७, ५।४८, ४६; ६।५६, ५७, १५।३८
-रएज्ज	१३।४, ४१; १४।४, ४१	राग	१५।७२ से ७६	रुक्खगिह	३।४७; ४।२१, २२
रयण	१५।२६, २८, १५।२८गा० ८, ११	रातिणिय	३।५२, ५३	रुक्खमह	१।२४
रयणवास	१५।१०	राय(रात्र)	३।४, ५	रुच	
रयणावली	२।२४; ५।२७	राय(राजन्)	४।१६	-रुचइ	५।२६, ३०; ६।३०, ३१
रयणी	४।१६, १५।१०, ११, २६	रायंसि	४।१६	-रुचिंति	१।८३
रस	४।३७, १५।१५, ६८, ७५	रायपेसिय	१।४१	-रुचिसु	१।८३
रसमत	४।८	रायसट्टिय	१।४१	-रुचिस्संति	१।८३
रसय	१।१	रायसंसारिय	३।६१, ५।५०; ६।५८	रुद्धमह	१।२४
रसवती	४।२८	रायहाणी	१।२८, ३४, १२२; २।१, ३।२, ३, ४५, ५७, ५८,	रुप्प	५।६८
रसिय	१।५७, ४।२४	रायगह	७।५७	रुह	५।२८
रसेसि	१।६१	रीय		रुद्ध	४।३४
रह	३।४३, ५६, ११।१७, १२।१४	-रीएज्जा	३।६, २२, ३४ से ३६	रुव	४।१६ से २२, ३२, ३७, १२।१ मे १३, १५।१५, २७, २८, १५।२८ गा० ८, १५।७३
रहजोग्ग	४।२७	रीयमाण	३।३५, ३६		
रहस्सिय	१।३२, २।५५, ७।२०	रीरियपाय	६।१३		
		रीरियवघण	६।१४		



रूवग	१५।२८	लमुणनाल	१।११७	लावयकरण	१०।१८
रूवसत्तिकय	१२	लमुणपत्त	१।११७	लावयजुद्ध	११।१२,
रोइज्जंत	५।२६, ३०;	लमुणवण	१।११७		१२।६
	६।३०, ३१	लहुय	२।५६ से ६१;	लावयट्ठाणकरण	
रोग	२।२१		४।३७		११।११; १२।८
रोम	१३।३७, ७४;	लाइम	४।३३	लिक्खा	१३।३८, ७५;
	१४।३७, ७४;	लाउयपाय	६।१६, १७		१४।३८, ७५
१५।२८ गा० १२		लाढ	३।८ से १३	लित्त	२।१०; ८।१०,
रोय	१।३१	लाभ	१।१, ४ से ७, १२		६।१०; १०।११
रोयमाण	२।३६, ३७,	से १८, २१ से २५,		लुक्ख	१।५७
	३६ से ४२	३६, ४१, ६३ से ८२,		लूस	
ल		८५, ८७ से १०२,		लूसेज्ज	१।८८; २।१६,
लंबूस	१५।२८	१०४, १०६ से ११६,			४६, ७१
लक्खण	१५।१५, २८, २९	१२१, १२३, १२८,		लेलु	१।३५; ५।३७;
लट्ठिय	२।४६; ३।२४;	१३३ से १३६, १४१			७।१२
	७।३, २४	से १४६, १५१ से		लेलुय	१।५१, ८२, ८३;
लत्तियसद्द	११।३	१५४; २।४८, ५७ से			५।३५; ६।३८, ४०;
लभ		६१, ६३ से ६६;			७।१०; १०।१४
लभिस्सामि	१।४६,	५।५ से १५, १७ से		लेवण	२।४१, ४२, ४४
	५।४८; ६।५६	२०, २२ से २५, २८		लेस	
लभेज्जा	१।३२, २।२५	से ३०, ६।४ से १४,		लेसेज्ज	१।८८; २।१६,
लभित्ता	१।१३८, १३६	१६ से १६, २१ से			४६, ७१, ८।२५;
लमिय	४।२-	२६, २६ से ३१, ४६;			१५।४४, ४७, ४८
लया	३।४२; १५।२८	७।२६ से ३१, ३३ से		लेसा	१५।२८ गा० १०
लविय	१५।३६	३८, ४० से ४५, ५४,		लेस्सा	१।३६; १५।२८
लमुणकंद	१।११७	५५; ८।१; ६।१, २		लोग	१६।७
लमुणचोयग	१।११७	लाल	१५।२८	लोगतिय	१५।२६
					गा० ४, ५

लोण	१।७३, ७४, ८३, १३६	व	वज्र	४।२५
		व(वा)	वट्ट	
लोद्ध	२।२१, ५३, ५।२३, ३१, ३३; ६।२३, ३३, ३६; ७।१८, १३।६, १५, २२, ३१, ४३, ५२, ५६, ६८, १४।६, १५, २२, ३१, ४३, ५२, ५६, ६८	व(व)	-वट्ट	१६।६
		वड	-वट्टति	२।३८ मे ४०
		६।५८; १५।४६, ५०	वट्टमाण	१।२८, २।२७, १।५।५, ३८
		वडवळ	वट्टयकरण	१०।१८
		१३।७८, १४।७८	वट्टयजुद्ध	११।१२, १२।६
		वडसाह	वट्टयट्टाणकरण	११।११; १२।८
		१५।३८	वडिया	१।१०५; ३।३६
		वंत	वट्ट	
		१।५१, २।१८	-वट्ट	१६।५
		वंता	वग	३।८८, ५६, ६०; ४।२८, ३०, ५।४८, ४८; ६।४३, ५६, ५७, १०।८०, ११।६, ८, १२।५
लोभ	४।१, ३८, ८।२०, १५।५३	वंद	३।१६	
		-वदति	१५।२८	
लोभणय	१५।५३	वदित्ता	१५।२८	
लोभि	१५।५३	वदिय	१।६२; ३।६१; ५।५०; ६।५८	
लोभ	८।८, १५।३२ गा० १६	वंस	३।१६	
		वंससद्	११।४	
लोय(ग)(लोक)	१।४६, १।३८, १५।३६, ४१; १६।१२	ववकंत	१५।१, ३	
		ववककम्मत्त	२।३६ मे ४२; ३।८७	
लोय(लोच)	१५।३०, ३२		४।२१, २७	
लोह	१५।५०	वग	१५।१३, ३४	
लोहिय	८।३७	वग	१।५२; ३।५६	
लहमुण	७।८० मे ४५		५।१५	
लहमुणवद	७।४३ मे ४५	वच्च	१।६२	
लहमुणनोय	७।८० मे ४५	वचंसि	४।२०	
लहमुणगान्ध	७।४३ मे ४५	वचन्मि	२।८	
लहमुणव	७।३६	वज्जतिरिप्पा	२।३८	

वणसंड १०२०, ११८८	वत्त	वद्धकम्मंत २३६ से ४२,
१२५; १५२८	-वत्तेज्ज १८८; २१६,	३१७; ४२१, २२
गा० १४	४६, ७१; ८२५;	वद्धमाण १५३, १३, १६
वणस्सइ १६१	१५४४, ४७, ४८	वप्प १५०; ३४१, ४७,
वणस्सइकाय १६७,	वत्तिय ३८ से १३	४२१, २२; ११५;
२४१, ४२, १५४२	वत्त २३८; ३६, ६१,	१२२
वणिमग १५१३	६१, ५१ से १०,	वम
वणीमग(य) ११६, १७,	१२, १४ से २०, २२ से	-वमेज्ज १३१
२१, २४, ४२, ४३,	३८, ४१, ४६ से ५०;	वय
४६, १४७, १५४,	१५२८ गा० ६	-वएज्जा १५७, ६२,
२१७, ८, ३६, ३७,	वत्थत ५१२७	१२७, १३०, १३५,
३६, ४०, ३२ से ५,	वत्थधारि ५१४१	१५५, २६७; ३१७
५१६, १०, २०, ६८,	वत्थरोम १३३७, ७४;	से १६, २१, २६, ४४,
६, १६; ८१७, ८,	१४३७, ७४	५१, ५५, ५६; ४४,
६१७, ८, १०८, ६	वत्थेसणा ५	१२ से १६, १६ मे
वण्ण(न्न) २२१, ५३,	वद	३६; ५२१ से २५;
४१६, ५२३, ३१,	-वदति २३०	६२० से २६; ७५६,
३३; ६२३, ३३, ३६,	-वदिस्सामि ४१४	८२१, ३०
७१८, १३, १५, २२,	-वदेति ५१४७, ६५५	-वयइ ११३०
३१, ४३, ५२, ५६,	-वदेज्जा ११५७, १०१,	-वयंति ४१
६८, १४१५, २२,	३२०, २४, २५, ४५,	-वयह १४६
३१, ४३, ५२, ५६,	५३, ५४, ५७, ५८,	वय(वच्चस्) १५४३, ५०,
६८; १५२८	६१; ५२२, ४६,	५७, ६४, ७१
वण्णमंत ४८; ५१४८,	४८, ५०; ६२१,	वयंत १६३, १२३, १२७,
६५६	५४, ५६, ५८	१३०, १३५; ३२६;
वणिग्या ११७५, ७६	वदंत १२५, ५७, १०१	५२२ से २४,
वतिमिस्स १३२	वदिस्सए २३०	६२१ से २६

वयण १५।३२ गा० १८, १५।३४, ३७, ५१ से ५५	वसा २।२१, ५२, ६।२२, ३२, ३५, ७।१७; १३।५, १४, २१, ३०, ४२, ५१, ५८, ६७, १४।५, १४, २१, ३०, ४२, ५१, ५८, ६७	वाय -वायति १५।२८ गा० १७ वाय(वात) १६।३ वायत ११।१८, १२।१५ वायण १।४२, ४३; २।४६ से ५६, ३।२, ३, ७।१४ से २१ वायणिसमा २।७५, ८।२६ वायस १।६१ वाया १६।२ वाल १३।३७, ७४, १४।३७, ७४ वालगा १।१०४ वावी ११।५, १२।२ वास -वासिसु १५।१० वास(वर्ष) १।४०, ३।४, ५, १३, ४।१६; ५।४५; ६।५३, १५।३, ५, २५, २६, ३४, ३८ वासमाण १।४०, ५।४५, ६।५३ वासावास ३।१ से ३ वासावासिय २।३४, ३५ वासि १५।२७
वदमत १।१२१, २।२५, ३८	वसित्ता १५।२६ वसुल ४।१२, १४ वह ३।२६, ४०, ४४, ११।१६; १२।१३ वह -वहति १५।२८, गा० १२, १३ -वा १।१, २ वाडय ११।१४, १२।११ वाड १।६१ वाडकाय २।४१, ४२, १५।४२ वाड ३।४६, ५६, ६०, ५।४८, ४६, ६।५६, ५७ वाणमतर १५।६, ११, २७, ४० वाणर १५।२८ वात १५।२८ वाम १५।३०, ३२ वाय(वाच्) ३।२२; ४।१	
वयरामय १५।३१		
वर १५।२८, २८ गा० ८, ६, १६		
वरग १।१४३		
वलय ३।१६, ४८		
वल्ली ३।४२		
ववरोव -ववरोवेज्ज १।७४; २।१६ से ४६, ७१, ८।२५		
वस -वसंति १।१२७, १३६ -वसामो ७।४, ६, ८, २३, २५, ३२, ३६, ४६, ४६ -वस्तिस्सामो २।४७ वसभकरण १०।१८ वसभजुद्ध ११।१२, १२।६ वसमट्टाणकरण ११।११, १२।८ वसमाण १।४६, १२२, १३८, १३६, २।७०, ८।२४		

वासिट्ट	१५५	विगट्टमिय	१११६	विज्ज	
वासिट्टमगोत्त	१५१८	विगिच		-विज्जड	१६१०
वाह		-विगिचिज्ज	३१२६	विज्जाहर	१५१८
-वाहेहि	३११६	विगिचिय	११२	विज्जुदेव	४१२६
वाहण	१५१२६	विगोव		विज्जभाव	
वाहिम	४१२७	-विगोवेति	१५१३	-विज्जभावंतु	२१२३
विआ(या)ल	११३२, ५२, २१३०, ४५, ४६, ७१, ३१५६; ८१२५	विगोव्यमाण	१११८,	-विज्जभावेज्ज	२१२३
विइक्कंत	४१६, १५१३८	विगोवित्ता	१५१३३, २६	विडिमसाला	४१३०
विउ(ट्ट)	५६१५, ११	विचिगिच्छ	११३६	विणिग्घाय	१५१७२ से ७६
विउज		विचित्त	१५१२८,	विणिद्धुणिय	२१६६,
-विउंजति	४११	२८१२८ गा० ११			८१२३
विउल	११११८, १२११५, १५११३	विच्छड्ड		विणियत्त	१५११५
विउव्व		-विच्छड्डंति	१५११३	विणिव्वत्त	१५१२६
-विउव्वति(इ)	१५१२८	विच्छड्डिता	१५११३	विणीयतण्ह	१६१५
विउव्विता	१५१२८	विच्छड्डियमाण	११११८,	विण्णव	
विउस			१२११५	-विण्णवेति	२१५५;
-विउसेज्जा	३१६, ५६, ६०; ५१४८, ४६, ६१५६, ५७	विच्छड्डेत्ता	१५१२६		७१२०
विउसिर		विच्छिद		विण्णाय	३११, १५११५
-विउसिरे	१६११	-विच्छिदेज्ज	६११६, १३१२६, ३३, ६३, ७०, १४१२६, ३३,	वित्त	११११, १५१२८ गा० १७
वेकुज्जिय	३१४०	विच्छिदित्ता	१३१२७, ३४, ६४, ७१; १४१२७, ३४, ६४, ७१	वित्तस	
वेग	११५२, ३१५६			-वित्तसेज्ज	३१४६
वेगओ(तो)दय	३१३२, ३६; ६१४६	विजय	१५१२६, ३८	वित्ति	११४२, ४३; ३१२, ३
				वित्तियार	५१३
				विदलकड	११५
				विदेह	१५१२६

विदेहजच्च	१५।२६	विमुक्क	१६।८	विरड्य	१५।२८
विदेहदिण्णा	१५।१८, २६	विमोक्ख	१६।११	विरस	१।१३२
विदेहसुमाल	१५।२६	वियट्ठत्तए	२।२८, २९	विराल	१।५२; ३।५९
विट्ठत्थ	१।१००	वियड	१।६३, २।१८, २१,	विरालिया	१।१०६
विन्नु	१६।१, २	५४, ५।२४, ३२, ३४,		विरुद्धरज्ज	३।१०, ११;
विपंचीसद्द	१।१२	३४, ६।२४, ३४, ३७,			११।१५; १२।१२
विपरिक्रम	८।१७ से २०	७।१९, १३।७, १६,		विरुक्ख	१।२४, १।४३;
विपरिणामधम्म	४।८	२३, ३२, ४४, ५३,			२।२८, २९, ४१, ४२,
विपुल	१५।१२, १३	६०, ६९; १४।७, १६			३।८, ९, २४, ४३, ५६;
विप्पजहिता	१५।२५	२३, ३२, ४४, ५३,			४।२७, २८; ५।१४,
विप्पमुक्क	१५।२८ गा० ७	६०, ६९			६।१३, १४, ११।१
विप्परियासियभूय	१।३२	वियत्त	१५।२९, ३३, ३८	से १८, १२।१ से १६	
विप्पवसिय	५।४६, ४७,	वियागर		विल्लिग	
६।५४, ५५		-वियागरेज्ज	३।५१, ५३	-विल्लिगेज्ज	६।१६
विफालिय	३।४०	-वियागर	२।४४	विल्लिप	
विभंग	१५।६५ से ६९,	वियागरेमाण	२।४४;	-विल्लिपेज्ज	१३।८, १७,
७२ से ७६		३।५१, ५३			२४, ३२, ४५, ५४,
विभा		वियारम्मि	१।९, ३८,		६१, ६९; १४।८
-विमाड	४।१६	४०, ३।२, ३, ५।४३,			१७, २४, ३२, ४५,
विभुसिय	२।२४;	४५; ६।५१, ५३			५४, ६१, ६९
१।११८, १२।१५		वियोस		विल्लेक्खजाय	१३।८, १७,
विमाण	१५।२६ गा० ५,	-वियोसेज्ज	३।२२, २६,		२४, ३२, ४५, ५४
१५।२७, २८		४४, ५९ से ६१,			६१, ६९, १४।८, १७,
विमाणवासि	१५।९, ११,	५।४८, ४९;			२४, ३२, ४५, ५४,
२७, ४०		६।५६, ५८			६१, ६९
विमुच्च		-वियोसेज्जा	६।५७	विल्लसरड्डुय	१।११०
-विमुच्चइ	१६।९, १२	वियाहिय	२।४४	विवग्घ	५।१५

विन्न (पग) १।१३२;	विस्साण	विहार २।७६; ३।८ से
५।४८; ६।५३	-विस्साणेति १।५।१३	१३; १।५।३६, ३८
विवेग ४।१	विस्साणित्ता १।५।१३,	विहारभूमि १।६, ३८,
विवेगभासि ४।२८	२६	४०; ३।२, ३; ५।४३,
विसमक्खणट्ठाण १०।१६	विह (दि०) ३।१२, ६०;	४५; ६।५।१, ५३
विमम १।२६, ५३;	५।४६; ६।५।७, १२।१	विहीय १।५।२८ गा० १७
२।१२, ७२, ७६;	विहग १।५।२८	विह्वण १।६६
८।१२, २६, ३०;	विहर	विड(नि)क्कंत ३।४, ५;
६।१२; १०।१७;	-विहग्ग १।५।१५, ३८,	१।५।३, ५, ८
१।५।७२ मे ७८	३३	वीणासद्द १।१२
विमुज्ज	-विहरंति १।१५५;	वीतिकममाण १।५।२७
-विसज्ज १।६।८	२।६७, ५।२१,	वीय
विमुज्जंत १।५।२८ गा०	६।२०; ७।५६;	-वीयति १।५।२८ गा०
१०	८।२१	११
विसूइया २।२१	-विह्वामि १।१५५;	वीर १।५।२६ गा० ६
विसोह	२।६७; ५।२१;	वीस १।५।३
-विसोहेज्ज ३।२६;	६।२०, ७।५६;	वीहि १०।१६
१।३।१०, ११, ३४,	८।२१	वुक्कंत १।१००
३५, ३६, ३८, ४७,	-विहरिस्साओ २।४७;	वुच्च
६४, ७१ से ७३, ७५;	७।४ से ६, ८, २३,	-वुच्चड १।६।१०, ११
१।४।१०, ११, ३४ से	२५, ३२, ३६, ४६,	वुट्ट ४।१७
३६, ३८, ४७, ६४,	४६	वुत्त १।१२१; २।२५, ३८
७१ से ७३, ७५	-विहरेज्जा २।६५, ६६,	वेउच्चिय १।५।२८
-विसोहेहि ५।२५;	७६; ३।२२, ६१;	वेग १।५।२७
६।२५	५।५०; ६।५८;	वेजयंतिय ६।१८
विसोहिता ५।२५; ६।२५	७।५४, ५५; ८।३०	वेडिम १।२।१; १।५।२८
विसोहिय १।२	विहरमाण १।५।३७, ३८	वेणुसद्द १।१।४

## शब्द-सूची

वेत्तग	१।११६	वोज्झ	१५।२८	संकाम	
वेद		वोसट्ठ	८।२०;	-संकामेज्ज	१।८८,
-वेदेति	१३।७६; १४।७६		१५।३४ से ३६		२।१६, ४६, ७१;
वेद(य)णा	१३।७६;	वोसिर			८।२५
	१४।७६	-वोसिरामि	१५।४३,	संकुलि	१।४६
वेयावत्त	१५।३८		५०, ५७, ६४, ७१	संख	१५।१२, १३, २८
वेरञ्ज	३।१०, ११,	-वोसिरेज्जा	१०।२ से		गा० १६
	११।१५; १२।१२		२८	सख(पाय)	६।१३
वेरमण	१५।४६, ५६,	क्व	१६।३	संखवंघण	६।१४
	६३, ७०, ७७			संखडि	१।२६ से २६,
धलुय	१।११८	च्च			३१ से ३५, ४२, ४३
वेलोचिय	४।३१	स(तत्त)	१।२०, ५१,	संखसद्द	१।१४
वेवइ	४।१६		१०४, १११	संखाए	१।३२
वेसमण	१५।२६ गा० ३;	स(स)	२।२०, ३१, ४६,	संखोमिय	१।३५
	१५।२६		६८; ५।२८, ३५,	सगतिय	६।१८
वेसिय	१।३३		६।२६; ७।१४,	संगाम	१६।२
वेसियकुल	१।२३		८।३०; १५।२८,	संगारवयण	५।२२;
वेहाणसट्ठाण	१०।१६		२८ गा० ८;		६।२१
वेहिम	१२।१		१५।२६, ३६	संघट्ठ	
वेहिय	४।३१	स(स्व)	१०।२८	-संघट्ठेज्ज	१।८८,
वोक्कत	१५।१३	सद्दं	१।६		२।१६, ४६, ७१;
वोक्कस		संक			८।२५
-वोक्कसाहि	३।१७	-संकति	२।३०	संघट्ठिय	१।३५
-वोक्कसिस्सामो	३।१८	संकम		संघयण	४।२६; ५।२
वोक्कसिताए	३।१८	-संकमेज्जा	३।५६, ६०;	संवस	
वोच्चिण्ण(न्)	१।५;		५।४८, ४६;	-संघसेज्ज	१।८८, २।१६,
	३।३२; ७।२८, ३१,		६।५६, ५७		४६, ७१; ८।२५
	३५, ३८, ४२, ४५				



संघाड(ति)म	१२११; १५१२८	संजय	७३; ८२, ९, १३, १५, २६, २६; ६१६,	संत	६१२१ से २६, २६ से ३१, ४३, ४६, ५४ से
संघाडी	५१३		११, १३, १५; १०१२८; १६१२		५६; ७१२६ से ३१, ३३ से ३८, ४० से
संचाय		संणिविखत्त	११४६		४५; ८११; ६११, २; १५१२६
-संचाएड	११३३	संणिविट्ठ	३१५६		
-संचाएज्जा	११३	संणिवेसं	१५१२६	संताण	११२, ५१
-संचाएति	१११३६	संणिहिय	३१५५	संताणग(य)	११४२, ४३; २११, २, ३१, ३२,
-संचाएसि	३११८	संठव			५७ से ६१, ६८, ६९; ३११, ४, ५; ५१२८ से
संचालिय	११३५	-संठवेज्ज	१३१३७, ७४; १४१३७, ७४		३०, ३५; ६१२६ से ३१, ३३ से ३८, ४० से
संचिज्जमाण	११३२				४५; ८११, २, २२, २३; ६११, २; १०१२, ३, १४, २८
संजम	१५१३६	संत	१११, ४ से ७, १२ से १८, २१ से २५, ३६, ४१, ६३ से ८२, ८५, ८७, १०२, १०४, १०६ से ११६, १२१, १२३, १२८, १३३, १३६, १४१ से १४६, १५१ से १५४; २१३६ से ४२, ४४, ४८, ५७ से ६१, ६३, ६४; ३१६ से ८; ५१५ से १२, १४, १५, १७ से २०, २२ से २५, २८ से ३०, ४६ से ४८; ६१४ से १४, १६ से १६,		
संजय	११२, ३, २६, ३२, ३५, ४५, ५०, ५२, ५३, ५६, ६१, १२१, १३५, १३६; २१२, ६, ११ से १७, २५, ३२, ३८, ४५, ४६, ६६, ७२ से ७६; ३११, ३, ५, ६, ७, ६, ११, १३, १५, २२, २६ से २८, ३०, ३२ से ३६, ३६ से ४४, ४७, ४६, ५० से ६१; ४३, ५, ३८; ५१३६, ४८ से ५०; ६१४२, ४४, ४५, ५६ से ५८;				
				संतारिम	३११४, २२, ३४ से ३६
				संति(अ)	१५१६५ से ६६, ७२ से ७६
				संतिकम्मंत	२१३६ से ४२; ३१४७; ४१२१, २२
				संतिय	५१२६; ६१२७
				संथड	११४०, ६१; ५१४५; ६१५३

संथर	सपन्वइय	७३	संलिह	
-संथरेज्जा १।२६,	संपाइ(ति)म १।४०;		-संलिहेज्ज १।५१;	
२।१२,७२; ८।१२,	३।१५; ५।४५,		३।३१,३२,३६;	
२६; ६।१२	६।५३		६।४८,४९	
संथरमाण ३।८ से १३	सपिडिय ३।६०,६१,		सलिहिय १।४६	
संथरेत्ता २।७३; ८।२७	५।४६,५०; ६।५७,		सलिहणा १।५२५	
संथार २।४१,४२,४४;	५८		संलोय १।५५,५६,६२	
१।५।२५	संफास		संवच्छर १।५।२६,२६	
संथारग(य) १।२६;	-सफासे १।३३,४६,		गा० १,३	
२।१२,५७ से ६४,	४६,५७,१२३,१२५		सवड्ड	
३।२,३; ७।७,	से १२७,१३० से		-संवड्ड १।५।१४	
८।१२,२२,२३,२६	१३२,१३८; ३।४०;		सवर १।५।३६	
से २८; ६।१२	५।४७, ६।५५		सवस	
संथारग(भूमि) २।७३;	संववि १।५।१३,३४		-सवसति २।३४,३५	
८।२६	संभोइय १।१२७,१३६,		-संवसे १६।४	
संधि १।६२	७।५,७		-संवसेज्जा २।४८,६५,	
संनिरुद्ध २।४५	संभोएत्ता १।१०२		६६, ७।५४,५५	
संपधूमिय २।१०, ५।१२;	संभड्डिय १।४६		सवसमाण २।२१ से २५	
६।६; ८।१०;	संमट्ट २।१०, ५।१२,		२८,२९	
६।१०; १०।११	६।६; ८।१०;		सवहण ४।२८	
संपदा १।५।२६ गा० १	६।१०. १०।११		सवाह	
संपण १।५।७८	संमिस्स १।११६		-संवाहेज्ज १।३३,१३,	
संपराइय २।२५	समुच्छिय ४।१७		२०,२६,४०,५०.	
संपरिहाव	संमेल १।४२,४३		५७,६६; १।४।३,	
-संपरिहावइ १।३३	संरंभ २।४१,४२		१३,२०,२६,४०,	
संपवेव	सरक्खण १।५।२५		५०,५७,६६	
-संपवेवए १।६।३				

संविज्जमाण	२।७६;	सच्चासोसा	४।६, १०	सण्णिहि	१।२१, २४
	८।३०	सज्ज		सत्त	१।१२ से १७, ८८;
संवुड	१।१२१; २।२५, ३८	-सज्जेज्जा	११।१६;		२।३ से ७, १६, ४६,
संवेदेड	१५।७६	१२।१६; १५।७२ से			७१; ३।४६; ५।५ से
संसत्त	१।१; १५।६६	७६			१०, २२; ६।४ से
संसार	४।३४	सज्जमाण	१५।७२ से ७६		६, २१; ७।४८, ५६;
संसीव		सङ्घा	१।१२१, १।४३, १।५०;		८।३ से ८, २५;
-संसीवेज्जा	५।३	२।३६ से ४२			६।३ से ७; १०।४ से
संसेइम	१।६६	सङ्घि	२।२५		६; १३।७६;
संसेसिय	१३।१, १।४।१	सणवग	१०।२७		१।४।६; १५।४४,
सकसाय	१।१०२	सणिय	१५।२८, २६		४७, ४८
सकिरिय	४।१०, १२, १।४,	सणग	३।१४	सत्तम	१।१४७, ७।५५
	२१, २३, २५, २७,	सण्णि	१५।३३	सत्थ	३।५६, ६०; ५।४८,
	२६, ३१, ३३, ३५;	सण्णिगचय	१।२१ से २४		४६; ६।५६, ५७
	१५।४५, ४६	सण्णिगुद्ध	८।२०	सत्थजाय	३।२४;
सक्क(शक्र)	१५।२८	सण्णिगवइय	१।६१		१३।२६।२७, ३३,
गा० ११; १५।३१,		सण्णि(न्नि)वयमाण			३४, ६३, ६४, ७०,
३२ गा० १८		१।४०; ५।४५;			७१; १४।२६, २७,
सक्क(शक्य)	१५।७२ से	६।५३			३३, ३४, ६३, ६४,
	७६	सण्णिवात	१५।६, ४०	सद	७०, ७१
सक्करा	१।५१	सण्णिबिठु	१।४१; ३।४३	सदति	१।१३८
सगड	३।४३, ५६;	सण्णि(न्नि)वेस	१।२८,	सद्	४।३५, ३६; ११।१ से
	११।१७; १२।२४	३४, १२२; २।१;			१७, १५।१५,
सगोत्त	१५।३, ५, ६	३।२, ३, ४५, ५७,			७२; १६।३
सचक्क	३।४३, ५६	५८; ७।२; ८।१;		सद्दसत्तिक्कय	११
सवित्त	१३।७८; १४।७८	११।७; १२।४;		सद्दहमाण	२।३६, ३७,
सक्का	४।६, १०, ११	१५।३, ५, ६, २७			३६ से ४२

सद्गुल	१५२८	समण	६८, ९, १६, २१ से	समहिट्टाय	२४७; ७४,
सद्धं	१३२		२६, ५४ से ५६, ५८,		६, ८, २३, २५, ३२,
सद्धि	१८ से १०, ४६,		७१, २४; ८१७, ८,		३६, ४६, ४६
	४७, २१२, २३ से		६१७, ८; १०८, ६,	समा	१५३
	२५, २८, २६, ३३३,		१५११, ३, ४, ७ से	समाण	११, ४ से ८,
	४६ से ५१; ७३		११, १३ से ३६,		११ से १७, २१, २३,
मपडिदुवार	१५५, ५६,		३८, ४० से ४२		२४, ३६, ४२, ४३, ४६,
	६२	समणाउस	१५१७		४६, ५०, ५२, ५३,
सप्पि	१११२	समणजाय	२४१		५५, ५८, ६१, ६२,
सभा	१०१२०; ११८,	समणिज्जमाण	१५१२६		८२ से ८४, ८७, ८६,
	१२१५	समणुजाण			६०, ६२ से ६४, ६६ से
सम	११२६, ५७, २१२,	-समणुजाणिज्जा			६६, १०१, १०२,
	७२, ७६, ८१२,		१५१५७, ७१		१०४ से ११६,
	२६, ३०; ६११२;	-समणुजाणेज्जा	७२;		१२२, १२४ से
	१०११७		१५१४३, ५०		१२६, १२८, १३३,
समण	१११६, १७, २१,	-समणुज्जाणेज्जा			१३४, १३६, १३८,
	२४, ३२, ४२, ४३,		१५१६४		१३६, १४४, १४७,
	४६, ५५, ५७, ५८,	समणुण्ण(न्त)	१११२७,		१५१ से १५४;
	१०१, १२१, १२७,		१३६; ७५, ७		२१७०; ६४६;
	१३०, १३५, १४७,	समणुन्नाय	१११२८, १३६		८१२४, १५१३४, ३७
	१५४; २१७, ८, २५,	समणुपत्त	१५१३५	समायार	२१२७
	३६ से ४०; ३१२ से	समणुसिट्ठ	१११३६	समारंभ	
	५, १७ से २१, २४,	समणोवासण	१५१२५	-समारंभेज्जा	१६१
	२५, ४४, ४५, ४६,	समतपइण्ण	१५१२६	समारंभ	२४१, ४२
	५१, ५३ से ५८, ६१;	समय	४६; १५११, ८,	समारब्ध	११२ से १७;
	५१६, १०, २०, २२ से		२६, २६; १६१६		२१३ से ८; ५१५ से
	२४, ४६ से ४८, ५०;	समवाय	११२४		१०, २२;

समारब्ध	६४ से ६, २१; ८३ से ८ ६३ से ७, १०४ से ६	समिय	५४०, ५१; ६४३, ५६; ७२२, ५८; ८३१; ६१७; १०१२६; १११२०; १२११७; १३१८०, १४१८०; १५१४४,	-समुपज्जेज्जा	१३१, ३५, ३८ -समुपज्जेज्जा २१२१ समुपपण्ण(न्ते) १५११, ३३, ३४, ३७, ३८, ४०
समालोक				समुवे	
-समालोकेति	१५१२८		४७	-समुवेति	१६१
समालोकेता	१५१२८			समोणय	१५१२८
समावण	१३६; १५४२	समियाए	२४४; ४३, ५, ३८	समोहण	
समावद		समीरिय	१६१८	-समोहणति	१५१२८
-समावदेज्जा	१५१५१ से ५५	समुग्घाय	१५१२८	समोहणित्ता	१५१२८
समाहि	११५५; २६७; ३१२२, २६, ४४, ५६ से ६१; ५१२१, ४८, ४६; ६१२०, ५६ से ५८; ७५६; ८२१	समुट्ठा		सम्मं	१३१, १२८, १५५; २६७; ५१२१; ६१२०, ७५६; ८२१; १५१३४, ३७, ४६, ५६, ६३, ७०, ७७, ७८
समाहिय(समाख्यात)	१६४	-समुट्ठेज्जा	३१२६, ४४	सम्मिस्सिभाव	१३२
समाहिय(समाहित)	१६५	समुट्ठाए	७१	सय	
समिति	१५१३६	समुदय	१५१२७	-सयति	११३८
समिय	११२०, ३०, ४१, ४८, ६०, ८६, १०३, १२०, १२६, १३७, १५६; २१२६, ४३, ७७; ३१२३, ४६, ६२; ४११८, ३६;	समुद्	१५१२७, ३३	सय	
		समुद्दिस्स	११२ से १७, १२८; २१३ से ८, ३६, ३७, ३६, ४१; ५१५ से १०, २२; ६४ से ६, २१; ८३ से ८; ६३ से ७; १०४ से ६	-सएज्जा	२१७३, ७४
		समुद्वय	१४०; ५४५; ६५३	सय(स्वक)	५१२२; ६१२१; १०११; १५१२७
		समुपज्ज		सय(शत)	१५१२६ गा० ३; १५१२८ गा० १७
		-समुपज्जिमु	१५१३७		

सयं १।२५, १०१, १३१, १४१, १४७, १५१ से १५४; २।६३, ६४, ३।१८, २६, ६१, ५।१७ से २०, ५०, ६।१६ से १६, ५८; ७।२, ५, ७, ६, १५।४३, ५०, ५७, ६४, ७१	सया १०।२६; ११।२०; १२।१७, १३।८०, १४।८० सर(सरस्) ३।४८; ११।५, १२।२ सर(शर) १६।२ सरक्ख १।५१ सरग १।१४३ सरङ्गुजाय १।११० सरण ३।४६, ५६, ६०, ५।४८, ४६, ६।५६, ५७ ३।४८; ११।१; १२।२ सरभ १५।२८ सरमह १।२४ सरमाण १५।६७ सरय १५।२८ गा० १४ सरसरपतिय ३।४८; ११।५; १२।२ सराव १।१४५, १५२ सरित्तए १५।६७ सरीर २।१८; १५।२५ सरीसिव ३।४६, ५४, ४।२५, २६ सलिल १६।१० सल्लडपलंब १।१०८	- सल्लड्ढपास १।१०६ सवियार ८।१७ से २०- सव्व - १।२० सव्वओ - १५।१ सव्वण्णु - - १५।३६ सव्वत्त १५।१ सव्वसह १६।४ ससंधिय ५।४६, ४७; ६।५४, ५५- ससरक्ख १।५१, ६६, ६७, १०२; २।७६;- ५।३५; ६।३८; ७।१०; ८।३०; १०।१४ ससणिद्ध ५।३५, ७।१० ससिणिद्ध १।५१, ६५, ६६, १०२; ३।३०, ३१, ३७, ३८; ६।३८, ४७, ४८; १०।१४ ससीसोवरिय २।७३; ३।१५, ३४; ८।२७ सस्स ४।१६ सह - -सहइ १५।१६, ३७- -सहिस्सामि १५।३४ सहसम्मुडय १५।१६ सहसा ३।२६
---	---	--

सहस्स	१५।२८	साइम	१।८५, ८७ से ९८,	-सातिज्जेज्जा	१।३२;
सहस्सपाग	१५।२८		१२१, १२३, १२७,		३।२६; ५।४६;
सहस्समालिणीया			१२९, १४१, १४२,		६।५४
	१५।२८		१४५, १४८, १४९,	सामगिय	१।२०, ३०,
सहस्सवाहिणी	१५।२८,		१५२; २।२८, ४८;		४१, ४८, ६०, ८६,
	२९		४।२, २३, २४;		१०३, १२०, १२९,
सहा	२।३६ से ४२;		६।२६; ७।५;		१३७, १५६; २।२६,
	३।४७; ४।२१, २२		११।१८; १२।१५;		४३, ७७, ३।२३,
सहिया	५।१४		१५।१३		४६, ६२; ४।१८,
सहिणकल्लाण	५।१४	साइय	१३।१ से ७८;		३९; ५।४०, ५१;
सहिय	१।२०, ३०, ४१,		१४।१ से ७८		६।४३, ५९; ७।२२,
	४८, ६०, ८६, १०३,	सागर	११।५; १२।२		५८; ८।३१; ९।१७,
	१२०, १२९, १३७,	सागरमह	१।२४		१०।२९; ११।२०,
	१५६; २।२६, ४३,	सागरोवम	१५।३		१२।१७; १३।८०;
	७७; ३।२३, ४६,	सागार	३।३४		१४।८०
	६२; ४।१८, ३९;	सागारिय	२।२० से २५,	सामाइय	१५।३२, ३३
	५।४०, ५१; ६।४३,		४९; ७।१४	सामाग	१५।३८
	५९; ७।२२, ५८;	सागारियओग्गह	७।५७	सामुदाणिय	१।३३, ४७,
	८।३१; ९।१७;	सागवच्च	१०।२६		१२३
	१०।२९; ११।२०;	साडग	१५।२९	साय	
	१२।१७; १३।८०;	साण	४।१२, १४	-साएज्जा	२।२४
	१४।८०	साणय	५।१, १७	साय	३।३६
साइ	१५।२	साणुवीय	१।१११	सार	१५।२६
साइम	१।१, ११ से १७,	सातिज्ज		सावदेज्ज	१५।२६
	२१, २३ से २५, ३६,			साल	१५।३८
	४१, ४४, ४५, ५६,	-सातिज्जंति	५।४७;	सालि	१०।१६
	५७, ६३ से ८१, ८४,		६।५५	सालुय	१।१०६

सावग	४१३	साहर	सिग्घ	१५२७
सावज्ज	४११, १०, १२, १४, २१, २३, २५, २७, २९, ३१, ३३, ३५; १५।४५, ४६	-साहरइ(ति) २।१४, १६, ८।१४; ९।१४; १५।५, ६, ३१	सिज्जा	१।२६; २।१२; ८।१२, ९।१२
सावज्जकड	४।२२, २४	-साहरंति १०।१२	सिज्झ	-सिज्झिस्संति १५।२५
सावज्जकिरिया	२।४०	-साहरिणमि १५।७	सिणाण	१।६२, २।२१, ५३; ५।२३, ३१, ३३, ६।२३, ३३, ३६; ७।१८
साविगा	४।१५	१५।७		
सासवणालिय	१।१०६	-साहरेज्जा ६।४७		
सासिय	१।४	साहरिज्जमाण १५।७, १४	सिणाव	
साह	१५।२८	साहरिय १५।१	-सिणावेति २।५४, ७।१९	
साहट्ट	३।६	साहा १।९६	-सिणावेज्ज २।२१	
साहट्ट	१५।२८ गा० १२, १५।३२ गा० १९	साहारण १।१३०	सिणेह ३।३२, ३६; ६।४९	
साहम्मिणी	१।१४, १५; २।५, ६, ५।७, ६।६, ७, ८।५, ६; ९।३, ४; १०।६, ७	साहिय १५।२८	सित १६।७	
साहम्मिय	१।१२, १३, १२७, १३०, १३६; २।३, ४, ३३, ४७; ५।५ से ८, ६।४, ५; ७।४ से ८, २३, २५, ३२, ३६, ४६ से ४९; ८।३, ४, ९।३, ४, १०।१, ४, ५; १५।६२	साहु ६।२६	सिद्ध १५।३२	
		साहुकड ४।२१, २३	सिद्धत्य १५।३, ५, १७	
		सिग(पाय) ६।१३	सिद्धत्यवण १५।२८ गा० १५	
		सिगववण ६।१४		
		सिगवेर १।१०७	सिय २।४४	
		सिगवेरचुण्ण १।१०७	सिया १५।५२ से ५५, ६०, ६१, ६५, ६७	
		सिघाण १।५१, २ १८	सिगाल १।५२, ३।५९	
		सिघाडग १।११३	सिर १५।३८	
		सिच	सिला १।५१, ८२, ८३, १०२, ५।३५, ३७	
		-सिचति २।५४; ७।१९		
		-सिचेज्ज २।२१		
		सिबली १।१३३		
		सिहासण १५।२८		



सिला	६३८,४०;	सीस	१३५,८८; २१६,	सुण्हा	१२५,४६,६३,
	७१०, १२,५५;		४६,७१; ३२१;		१२१,१२२,१४३;
	१०१४; १५१२,१३		८२५; १३७५;		२१२२,२५,३६ से
सिलिवय	४१६		१४७५		४२,५१ से ५५,६४;
सिविया	१५१२८; १५१२८	सीसगपाय	६१३		५१८; ६१७;
	गा०८; १५१२६	सीसगवंषण	६१४		७१६ से २०
सिहुर	१५१२८	सीह	१५२; ३४६,५६;	सुत्त	७२४
सिहुरिणी	१४६		१५३,२८	सुदंसणा	१५१२१
सिहा	१६५	सीहासण	१५१२८; १५१२८	सुद्ध	२४४; १३७८;
सिओ(तो)दय(ग)	११,		गा०८,११, १५१२६		१४७८; १५१८,३८
	३५,६३,१०२;	सुद्ध	२१२७	सुद्धवियड	११०१,१५१
	२११८,२१,४१,४२,	सुकड	४१२१,२३	सुद्धोदय	१५१२८
	५४; ५१२४,३२,	सुक्क	१५११	सुगस	१५११६
	३४; ६१२४,३४,	सुक्कज्झाण	१५१३८	सुन्नि	१११२५
	३७,४६; ७११६;	सुक्किल्ल	४३७	सुन्निगंध	४३७
	१३१७ से १६,२३,	सुचरिय	१५१३६	सुम	१५५,२८
	३२,४४,५३,६०,	सुचिभूय	१५११३	सुमण	३१६,४४
	६६; १४१७,१६,	सुट्ठ	६१२६	सुय	५१२२; ६१२१;
	२३,३२,४४,५३,	सुट्ठुकड	४१२१,२२		७५७; ११११६;
	६०,६६	सुण			१२११६
सीतय	१५१२८	सुणेइ	११११ से १६;	सुयतर	५१०२; ६१२१
सीय	४३७		१५७२	सुर	१५१२८ गा० १२
सीया	१५१२८	सुणेज्जा	४३५,३६		से १५
	गा०७,१०	सुणय	१५२; ३५६	सुरभि	११०५
	१११२१;	सुणिरुवित	१५१२८	सुरमिपलंब	१११०८
सीलवंत	२१२५,३८	सुणिसंत	२३६,३७,	सुख	१५१२८
			३६ से ४२	सुलभ	२४४; ३२,३

सुवर्ण २।२४; ५।२७, १५।१२, १३, २६	सेज्जा १।२६, २।१ से २५, २७ से ३२, ४४, ४६ से ५६, ७२ से	सेस १५।३, ३५ सेमवती १५।२४
सुवर्णपाय ६।१३	७४, ७६, ३।२, ३; ७।७, ८।२ से १५, २६ से २८, ६।३	मेह २।७२; ८।२६ सोउ १।१।७२
सुवर्णगवंधण ६।१४		सोंडा १।३२
सुवर्णसुत्त १३।७६; १४।७६		सोच्चं १६।१
सुवर्त्य १५।२६ गा० ५	से १५	सोच्चा १।३३, १२१.
सुव्वय १५।२६, ३८	सेज्जा(भूमि) २।७२; ८।२६	१३५, २।२५, ३=
सुसद् ४।३५, ३६	सेडिया १।७६, ७७	४।१; ५।२२ से २५, ४७; ६।२१, २५, ५५
सुसमदुसमा १५।३	सेगा ३।४४, ५६, ५६, ६०, ५।४८, ४६, ६।५६, ५७	सोणिय १।५१. २।१८, ४।२६; १३।११.
सुसममुसमा १५।३		२७, ६।७१
सुसमा १५।३	सेणागय ३।४८	१४।११, २७, ६।७१
सुसाणकम्मंत २।३६ से ४२; ३।४७; ४।२१, २२	सेय ६।१७, १३।३५, ७२, ८०; १४।३५, ७२, ८०	सोय १५।७२
सुस्समण १६।४		सोग्ठिया १।७७, ८=
सुहाकम्मंत २।३६ से ४२; ३।४७; ४।२१, २२	सेयणवह १०।२४	सोवत्थिय १५।३
सुट्ठम ४।११; १५।४, ४३	सेल(पाय) ६।१३	सोवीर १।१०५, १५१
सुई ७।६	सेलवंधण ६।१४	सोत्थिय १५।८५
सुणिय ४।१६	सेलोवट्टाणकम्मंत २।३६ से ४२; ३।४७, ४।२१, २२	मोह १५।२८ गा० १८, १५
सूयरजाइय १।६१		सोहण १५।२८ गा० १०
सूर १५।२६ गा० १, २	सेव	ह
सूरिय ४।१६	सेवति २।४१, ४२	हंत २.३०
सूव १।६६	सेवमाग १५।८६	हता १।८६, ४३; ३।८८.
से १।६३	सेवित्तए १५।८६	५।८८, ६।८.
सेज्जत्त १५।१७		

हंद	हरिय	हंस
-हंदह ११३८, १३६	२११, २, १२,	-हंसेज्जा १८५
हंस १५१२८, २६	१४, ३१, ३२, ५७ से	हिट्टिम १३१४०
हड २१३०	६१, ६८, ६९, ३१,	हित १५१३२ गा० १६
हत्थ १११, ३५, ६३ से	४, ५, ७ १३, ४०, ४२,	हिय १५१२६ गा० ६
८१, ८८, ९६, १३१,	५५: ५१२५, २७ से	हिरण १५१२६
१३५, १३६, १४१ से	३०, ३५; ६१२५,	हिरण्ण २१७४; ५१२७,
१४३, १४८, १४९;	२६, ३१, ३८, ४५;	१५१२२, १३, २६,
२११८, १९, ४५, ४६,	७१०, ७६ से ३१,	२६ गा० २
७४; ३१०, २१,	३३ से ३८, ४० से	हिरण्णमाय ६१३
२७, ३५ ५०, ५२;	४५; ८१, २, १२,	हिरण्णदंघण ६१४
५३; ६१४६; ७९;	१४, २२, २३; ६११,	हिरण्णवास १५११०
८१२५, २८	२, १२, १४; १०१२,	हीरमाण ११४२, ४३, ४६
हत्थंकरवच्च १०१२६	३, १२, १४, १५, २८;	हीलिय १६१३
हत्थच्छिन्न ४१९६	१३१७८; १४१७८	हुरत्या ११३२
हत्थि ११५२; ३१४५, ५६	हरियाल ११६६, ७०	हेउ ११५६, ८५, ९१, ९५,
हत्थिजुद्ध ११११२;	हरियावह ३१४०	१२३; २१९, २१
१२१६	हरिवंसकुल ११२३	से २५, २७ से ३०,
हत्थिद्वानकरण १११११,	हसत ११११८, १२११५	४६, ७१, ३९, ११,
१२१८	हम्स ४१२८	१३, ४६; ५१२७;
हत्थुत्तर १५११, ३, ५, ८,	हार २१२४, ५१२७;	६१२८, ४५; ८३५
२६, २९, ३८	१३१७६; १४१७६;	हेमंत ३१४, ५; १५१२६, २६
हम्मियतल १८७,	१५१२८	हो
२११८; ५१३८;	हारपूडगाय ६१३	-होउ १५११३
६१४१; ७११३	हारपूडदंघण ६१४	-होति १५१२६ गा० ३
हयजूहियद्वान ११११३;	हालिद् ४१३७	-होत्था १५११, ४, ७, ९,
१२११०	हास १५१५०, ५५	२५, २६, ४०
हरिओवय १०१२७	हासणय १५१५५	-होहिति १५१२६
हरिय १११, २, २६, ४२,	हासि १५१५५	गा० १
४३, ५१, १०२, १३५;	हि ११२१	होल ४११२; १४
	हिगुलय ११७०, ७१	
	हिमोल ११४२, ४३	

## शुद्धि और आपूरक पत्र-१ आयारो शब्द-सूची

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
२		अट्टिमिजा	अट्टिमिजा
३	अणुघम्मिय	६१११२	६११२
४	अणेलिस	६२	६२
४	अणेरुव	८२,	—
४	अतिअच्च	६११६	६११६
६	अप्पाण		+१००,
६	-आडक्खामो	२१२३	४१२३
११	आय	६१४६	६१४१६
१६		कव्वड ८११०६, १०६	—
१७	काम	५१३	५१२
१७	कुसल	१२१	१७१
१८			+१११११ ८२१ ७५
१९	गुरु	५१३	५१२
२०	छिद	—अच्छे ११२७ २८, ५०, ५१. ८१, ८२. ११०, १११, १३७, १३८, १६१, १६२	—
२१	—जाणई	११४७	११४७
२५		तिरियं	तिरियं
२६		दुक्खसह ६१३१२	—
२६	दुल्लह	४१४६	५१४६
२६	पडिलेहिय	६१	८१
२६	पन्नाणमंत	६१३, ०६	६१३, ७६
३०	परिघासेडं	८१३३	८१२३
३१		परिवदण	परिवंदण
३१	—परिवयंति	२१७६	२१७, ७३
३२	—परिहरति	२१०२	२१२०
३२	पवा	६१२११	६१२२

पृष्ठ	स्थल	अनुच्छेद	शुद्ध
३२	पसंसिअ	२।१९१	२।१०१
३३	पाण (प्राण)	८।७	८।८।७
३३		पाय (पात्र)	पाय (पात्र)
३५	बहिया	२।	१।
३५			+बहुतर ८।८।२३
३७	भो		+६।२४
४१		लूहदेसिया	लूहदेसिय
४४	-विहिसति	१०२	१०१
४६	संपव्वयमाण	८६	९६
४६			+संवट्टेत्ता ८।१०५, १२५
४६		सवस	संवस
४६	सत्त (सत्त्व)	४।२०	४।१, २०
४७			+सत्थपरिण्णा १
४७		सन्नियय	सन्नियय
४७	समणुन्न	३।७९	६।७९
४९	सयं	१०६	११६
४९		सययं	सयय
४९	सव्वतो	१७५	१७९
५०		सुब्भ (भृद्) भूमि	सुब्भ (भृद्) भूमि

## शुद्धि और आपूरक पत्र-२

### आचार-चूला शब्द-सूची

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
५७	अण्णतर (यर)	३६, ३९	३६ से ३९
५८	अण्णत्थ	२।१७	२।१८
५८		अत्तट्ठियं	अत्तट्ठिय
५९	अप्प (आत्मन्)	४६, ४९	४६ से ४९
६३	असण	३६ से ४१	३६, ४१
६४	आउस	२।३४, ४२	२।३४ मे ४२
६४	आउसंत	५।१३, २२	४।१३, ५।२२
६५		आगसह	आगस
६५		आविघ	आविघ
६८	इत्तरेतर	३।	२।
		उट्ट	उट्ट
७०	-उट्ठवेत्ति	से	,
७०		उदघट्टु	उट्ठवट्टु
७१	-उवक्खड्डेसु	६।२, ६	६।२६
७२		उवेहमाए	उवेणमाण
७२	-उव्वट्टेज्ज		+३।२१, ३९
७२	उसिणोदग	१।६२	१।६३
७३	एग	१४, १५।२६ गा० २	—
७३	एगंत	३।१४	३।१५
७३	एय्यगार	२।२५, ३६	२।२५, ३८
७४		ओद्धट्टु	ओद्धट्टु
७५	कट्टु	१।२२	१।२२
७५	कठ्ठसिल्ला		+२।६६
७६		कण्णूयल्लिय	कण्णूयल्लिया
७६	कण्णुय	१।१४	१।१०४
७८	-किण्णेज्ज	३.१४	३।१४

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
७८	कीय	११२, १७	११२ से १७
७८		कंभीमुह	कुंभीमुह
७९	खंथ	७३८	५३८
८०	खाइम	१२१६	१२१५
८०		खड्ड	खुड्ड
८०		खड्डाय	खुड्डाय
८०		खुड्डिया	खुड्डिया
८०		-गच्छवेज्जा	-गच्छवेज्जा
८९	गण	१७	१५१
८९		गति	गति
९०	गाहावड	२१२१, २५, ५०, ५५	२१२१ से २५, ५० से ५५
९१	चउत्थ १५१५४		+६१,
९२	चरित्त	१५१३२; ३३ गा० १८; १९१३३ १५१३२ गा०	१८, १९; १५१३३
९२		चिघ	चिघ
९२	-चिट्ठेज्जा	से	,
९४	-जएज्जासि	८१२१	८३१
९४	-जाणेज्जा	४९ से ५२	४९, ५२
९६	णगर	३१२३	३१२, ३
९७			+णाणत्त १११३४
९७		णांति १४	णाति ३४
९७	णावा		+६१५३
९७	णिगम	३१२३	३१२, ३
९८	णिरावरण	से	,
९८		णिजम्मभासि	णिसम्मभासि
९९		णिसीहियासत्तिकय	णिसीहियासत्तिकय
९९		णीपूरपवाल	णीपूरपवाल
९९	तंजहा	३६, ४२	३६ से ४२

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
१००	.	तक्कलिमतथय	तक्कलिमतथय
१००	तत्थ		+न१५;६१५
१००	तहप्पगार	२१४६,५६	२१४६ से ५६
१०१	तिरिक्खजोणिय	५४	६४
१०३		दम्म	दम्म
१०३	-देज्जा	१४८,१५२	१४८ से १५२
१०३	दाडं	५१२२,२४	५१२२ से २४
१०४		दुग्गध	दुग्गध
१०४	दुण्णि (न्नि)क्खित्त	३६,४१	३६ से ४१
१०५	दोणमुह	३१ से ३	२११,३१२,३
१०६	-पडिगाहेज्जा	२१७४	२१६४
१०६	पडिगाहिय	२१२	११२
१०६	पडिया	५१४२ से ४५	५१४२,४५
११०		पडिवज्जमाण	पडिवज्जमाण
११०		पडुप्पवाइयट्ठाण	पडुप्पवाइयट्ठाण
१११	-पधूवेज्ज	१३१६२ से ६६	१३१६२, ६६
१११			+पमज्जमाण ११८५
११२	पयावेत्तए	२११६	२१२६
११२	परिएसिज्जमाण	११२१ से २४	११२१, २४
११३	परियारणा	२१५५	२१२५
११५	पससित्त	१५१३८	१५१२८
११५	पाण (पान) १११४५,		+१४८,
११८	पुव्व	गा० १,४१	गा० १.१५१४१
११८		पुव्व	पुव्वि
१२०	वहुसभूय	११	४१
१२१	-वेमि	१५५	१५६
१२२		भासिज्जभाणी	भासिज्जभाणी
१२४		मिन्नुग (य)	मिन्नुगा (या)



पृष्ठं	स्थल	अनुद्ध	अनुद्ध
१२४	भूय (त)	५।५ से १०	५।५ से १०, २२
१२५	भोयणजात (य)	१३५	१३४
		१४६	१४७
१२६		मडंव	मडंव
१२६	मण्ण (न्त)माण २।६१,		+६३,
१२६			+मल्लीण १५।१४
१२८	मिलक्खु	११।१८	११।१७
१२८	मुसावाय	१।५०	१।५।५०
१२९		रहकम्म	रहोक्कम्म
१२९	रूप	५।६८	१६।८
१२९	रुह	५।२८	१५।२८
१३३			+वाइत्तवज्जा १२।२
१३३	वास (वर्ष) १५।३४,		+३६,
१३४	विउ (दु)	५६।५	१६।५
१३४	विचित्त	२८।२८ गा० ११	१५।२८ गा० ५
१३४			विज्जल १।५३
१३५	वियड	५।३४, ३४	५।३४
१३६		विसमक्खणट्ठाण	+विसमक्खणट्ठाण
१३६	विसम	१५।७२ से ७६	-
१३६			+विसय १५।७२ से ७६
१३७		संखोमिय	संखोमिय
१३८	सजय	८।२६, २६	८।२६ से २६
१३८	संताणग (य)		+७।१०
१३९		सपव्वइय	संपव्वइय
१४०	सगड	१२।२४	१२।१४
१४०	सत्थजाय	१३।२६।२७	१३।२६, २७
१४३	सयं	१४१, १४७	१४१ से १४७
१४३		सल्लइपवास	सल्लइपवाण
१४५	साहम्मिय	७।४६ से ४६	७।४६, ४६

# शुद्धि और आपूरक पत्र-२

७

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
१४५	सिया	६५, ६७	६५ से ६७
१४६		सिओ ७ से १६	सिओ ७, १६
१४७		सुइ	सूई
१४७		सुणिय	सूणिय
१४८	हरिय	६१२६, ३१	६१२६ से ३१
१४८		हिगुलय	हिगुलय
१४८		हिगोल	हिगोल
१४८	हेड	८३५	८३५

नोट -—शब्द-सूची में पृष्ठ ७६ के स्थान पर ८६ छपा है और पृष्ठ १३४ के स्थान पर २३४। कृपया सुधार करें।